THE TRUE STORY OF THE GREAT ESCAPE

STALAG LUFT III, MARCH 1944

JONATHAN F. VANCE

महान पलायन की सच्ची कहानी

महान पलायन की सच्ची कहानी

स्टालैग लुफ्ट **III,** मार्च **1944**

जोनाथन एफ. वैंस

महान पलायन की सच्ची कहानी: स्टालैग लुफ्ट III, मार्च 1944

ग्रीनहिल बुक्स, सी/ओ पेन एंड स्वॉर्ड बुक्स लिमिटेड,
47 चर्च स्ट्रीट, बार्न्सले, दक्षिणी यॉर्कशायर, S70 2AS, इंग्लैंड
हमारी पुस्तकों के बारे में अधिक जानकारी के लिए, कृपया देखें
www.greenhillbooks.com, ईमेल contact@greenhillbooks.com
या फिर ऊपर दिए गए पते पर हमें पत्र लिखें।

कॉपीराइट © जोनाथन एफ. वैंस, 2019

इस कृति के लेखक के रूप में जोनाथन एफ. वैंस की पहचान का अधिकार कॉपीराइट, डिजाइन और पेटेंट अधिनियम 1988 की धारा 77 के अनुसार सुनिश्चित किया गया है।

इस पुस्तक के लिए सीआईपी डेटा रिकॉर्ड ब्रिटिश लाइब्रेरी से प्राप्त किए जा सकते हैं।

ISBN 978-1-78438-438-8
ईआईएसबीएन 978-1-78438-439-5
मोबी ISBN 978-1-78438-440-1

अंतर्वस्तु

शब्दावली और संक्षिप्ताक्षरों के लिए मार्गदर्शिका
एमएपीएस
प्रस्तावना

1. सबसे पहले गिरने वाला
2. एस्केपिंग गेम सीखना
3. दुलैग हवाई सुरंग
4 वे सागन के पास आए
5 थ्रू द वायर
6 एक अंतर्राष्ट्रीय समुदाय
7 योजना तैयार की गई
8 नॉर्थ कंपाउंड खुलता है
9 जालों को डुबाना
10 जूँ हटाने वाली पार्टी
11 सुरंग निर्माण में सफलता और विफलता
12 X संगठन पुनर्समूह
13 यात्रा योजनाएँ बनाई गईं
14 फेरेट स्ट्राइक
15 बियॉन्ड द वायर
16 प्राकृतिक तत्वों से मुकाबला
17 ट्रेन यात्री
18 देवताओं का गोधूलि
19 ‘वायु मंत्रालय खेद व्यक्त करता है…’

उपसंहार
सुझाई गई पठन सामग्री

यह पुस्तक पचास लोगों की स्मृति को समर्पित है।

शब्दावली और संक्षिप्ताक्षरों के लिए मार्गदर्शिका

बीच में बंद करें	शौचालय
संबंध	ऑस्ट्रिया पर नाज़ी कब्ज़ा
निवेदन	उपस्थिति
पहचान	पहचान पत्र
शाहराह	हाइवे
बटद्रष्टि	बाधित दृष्टिकोण
बीईएफ	ब्रिटिश अभियान बल
बिग एस	ऑर्जहार्श का कोड नाम, जो भागने वाले संगठन के सुरक्षा प्रमुख थे।

बड़ोजर

X बुशेल का कोड नाम, जो भागने वाले संगठन का नेता था।

सर्किट शिविर की परिधि तार के चारों ओर एक रास्ता

सीओ कमान अधिकारी

शीतदंड अवरोध

डीन संगठन और के डॉसन जालसाजी अभियान से भाग निकलने के लिए चलाए जा रहे अभियान

डीएफसी विशिष्ट

फ्लाइंग क्रॉस

प्रसासुरंग से निकाली गई मिट्टी को छिपाने के साधन

डीएससीविशिष्ट सेवा क्रॉस

डीएसओविशिष्ट सेवा आदेश

दुलमूफ़्टवाफ़े एयर पारगमन शिविर

ड्यूटीकैदी पायलट को मुख्य द्वार से गार्डों की आवाजाही पर नजर रखने का काम सौंपा गया था।

फटीएसप्रारंभिक उड़ान प्रशिक्षण

विद्यालय

कृत्रिम विकल्प वस्तु

एफएक्यू फ्लीट

एयर आर्म

फेरेट्स भागने के प्रयासों को विफल करने के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित जर्मन गार्डों का उपनाम।

फ्लोरिडा फ्लाइट लेफ्टिनेंट

एफओएल फ्लाइंग ऑफिसर

एफटीएस फ्लाइंग ट्रेनिंग स्कूल

गेस्टापो गुप्त राज्य पुलिस, या राज्य सुरक्षा पुलिस

भूतपूर्व एक कैदी जो

भागने
का
नाटक
करता
है
और
फिर
छिप
जाता
है,
ताकि
बाद
में
जब
वह
सचमुच
भाग
निकले
तो
उसकी
अनुपस्थिति
किसी
को
पता
न
चले।

जारी रखें

जर्मन
गार्डों
का
उपनाम
टावर
कली
जर्मन
वर्दी
भागने
की
योजना
बना

गूनबॉक्स गार्ड

गुंजों की त्वचा कठोर

रहा
व्यक्ति
पैदल
यात्रा
करेगा
एचसीयूआरी
रूपांतरण
इकाई
घएमएसमहिम
का
जहाज
कुत्तेशिविर
का का
संचालक अधिकारी
पहरेदार
कुत्तों
के
लिए
जिम्मेदार
है
किटकैदी
का
सामान,
जिसमें
कपड़े
और
शौच
सामग्री
शामिल
हैं
कीवीन्यूजीलैंडवासी
चढ़नेरेड
क्रॉस
के
खाद्य
पार्सलों
में
डिब्बाबंद
पाउडर

दूध
भेजा
गया।
कमान्एक
ुख्यालय कारागार
शिविर
का
प्रशासनिक
भवन
रोन्युद्ध
-
बंदी
ग्समरीन्जर्मनी
नौसेना
पराधिक्आपराधिक
पुलिस पुलिस
लिटिल्प्रत्येक
एस झोपड़ी
के
लिए
एक
उप
सुरक्षा
अधिकारी
लिटिल्प्रत्येक
एक्स झोपड़ी
के
लिए
एक
बचाव
अधिकारी
नियुक्त
किया
गया
है।
वाय्जर्मन
सेना वायु
सेना
गोबशिविर

की के
गाड़ी शौचालय
से
मल-
मूत्र
निकालने
के
लिए
इस्तेमाल
की
जाने
वाली
गाड़ी
एनसीओ ऑन
-
कमीशन्ड
ऑफिसर
भंडारण ऑफ़िज़ियरलागर,
या
अधिकारियों
का
युद्धबंदी
शिविर
केडब्ल्यूबी हरमाख्त
का
उच्च
कमान,
या
सशस्त्र
बलों
का
उच्च
कमान
यवस्थित युद्धबंदी
शिविर
में
रखरखाव
कार्यों
के

लिए
जिम्मेदार
सैनिक
अनाथऑर्डनंगस्पोलिज़ी,
या
नियमित
वर्दीधारी
पुलिस
एकसारिचालन
प्रशिक्षण
इकाई
पेंगुइनसुरंग
की
मिट्टी
को
बिखेरने
में
लगा
व्यक्ति
स्थायीद्वीलैग
कर्मचारी लुफ़्ट
में
प्रशासनिक
मामलों
के
लिए
जिम्मेदार
युद्धबंदी
बाद्यायलट
अधिकारी
पाशुद्ध
-
बंदी
फ़ोटो-
टोही
इकाई
शुद्धयुद्धबंदियों
करना के
समूह

को
शिविर
में
ले
जाया
गया
या
शिविर
से
बाहर
निकाला
गया
रएएएएफ़ॉयल
ऑस्ट्रेलियाई
वायु
सेना
ारएएएफ़ॉयल
एयर
फोर्स
फवीआरॉयल
एयर
फोर्स
स्वयंसेवी
रिजर्व
सीएएएफ़ॉयल
कैनेडियन
वायु
सेना
समार्शलल्यूफ़्टवाफ़े
के
प्रमुख
के
रूप
में
हरमन
गोरिंग
के
लिए
विशेष

पद
सृजित
किया
गया।
रएफसीॉयल
फ्लाइंग
कोर
नेडएएफॉयल
न्यूजीलैंड
वायु
सेना
एसएचएीचसिकेरहाइट्सहाउप्टाम्ट,
या
रीच
मुख्य
सुरक्षा
कार्यालय
SAAFक्षिण
अफ़्रीकी
वायु
सेना
एसबीअेरिष्ठ
ब्रिटिश
अधिकारी
फटीएससेवा
उड़ान
प्रशिक्षण
विद्यालय
शोरिंगसुरंग
को
ढहने
से
बचाने
के
लिए
उसमें
लकड़ी
का
इस्तेमाल

किया गया था।

लघु सेवा आयोग

भारएएफ में सीमित अवधि का कमीशन

स्क्वाड्रन लीडर

स्टालैम

स्टैमलेगर, या अन्य रैंकों का युद्धबंदी शिविर

स्टैलाग

वायु एयर सेना का कारागार शिविर

कठपुतली

बाहर देखो

जाल का नेता

सुरंग के प्रवेश द्वार को नियंत्रित करने के लिए जिम्मेदार युद्धबंदी

संएएएफ

संयुक्त राज्य अमेरिका

की
सेना
वायु
सेना
खाकसेवा
सुविधाओं
से
युक्त
छोटा
अलग
परिसर
यूएएएफमहिला
सहायक
वायु
सेना
चेतावनीमुख्य
तार जेल
शिविर
की
बाड़
के
अंदर
लगा
नीचा
तार,
जो
खतरे
वाले
क्षेत्र
की
शुरुआत
को
दर्शाता
है।
डब्ल्यूओवारंट
अधिकारी
एक्सस्टालैग
संगठन लुफ्ट
III

के
भागने
के
संगठन
का
कोड
नाम

स्टालैग एयर III से भागने वालों के रास्ते

स्टालैग एयर III का स्थान

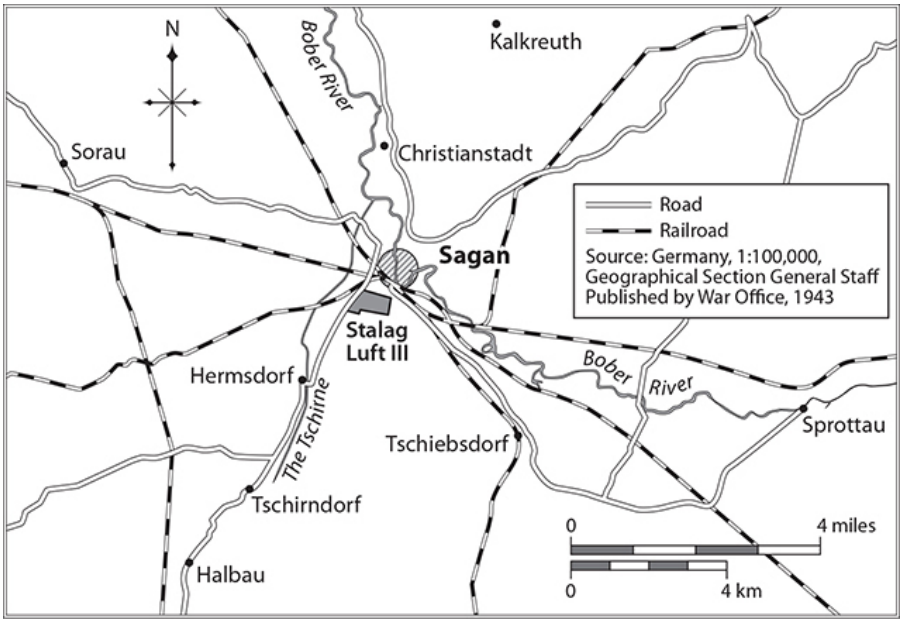

सागन और स्टैलाग लूफ़्ट III के आसपास परिवहन लिंक

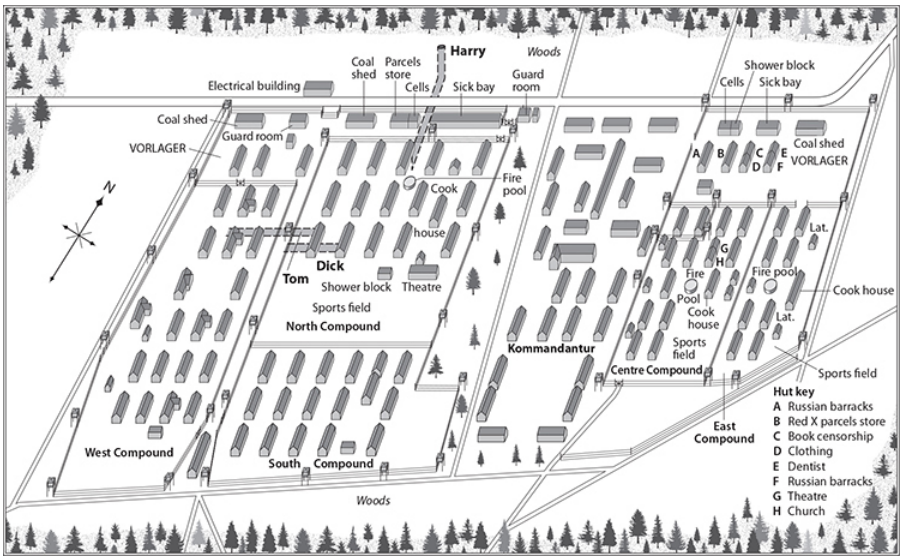

स्टालैग लुफ्ट III

प्रस्तावना

अधिकांश लोगों की तरह, मार्च 1944 में स्टालैग लुफ्ट III से हुए पलायन के बारे में मुझे पहली बार फिल्म के माध्यम से ही पता चला। मेरे गृहनगर वाटरडाउन, ओंटारियो में विक्टोरिया दिवस था और मैं शायद आठ या नौ साल का था। कनाडा में विक्टोरिया दिवस का मतलब आतिशबाजी होता है, और मेरा परिवार आतिशबाजी देखने के लिए पास के पार्क में जाने की योजना बना रहा था। लेकिन मैं टेलीविजन से चिपका हुआ था। मेरी माँ ने 'द ग्रेट एस्केप' फिल्म लगा दी थी, और मैं उसमें इतना खो गया था कि फिल्म खत्म होने तक मैंने घर से निकलने से इनकार कर दिया। शायद यह एल्मर बर्नस्टीन का जोशीला संगीत था, या डैनियल फैप की शानदार छायांकन। कलाकारों की बेहतरीन टोली ने निश्चित रूप से मेरा ध्यान खींचा, और वर्षों बाद, जिन पूर्व युद्धबंदियों से मैंने बात की, वे मेरी बात सुनकर अपनी आँखें घुमा लेते थे कि स्टीव मैकक्वीन की मोटरसाइकिल की सवारी ने मुझ पर गहरा प्रभाव डाला था। हालाँकि उस रात मैं आतिशबाजी नहीं देख पाया, लेकिन मेरे मन में एक ऐसा जुनून पैदा हो गया जो आज तक कायम है।

कुछ मायनों में, मुझे शायद हमेशा से ही पता था कि मैं यह किताब लिखूंगा, क्योंकि मैंने किशोरावस्था में ही इस पर 'शोध' करना शुरू कर दिया था। 'शोध' से मेरा मतलब है पूर्व युद्धबंदियों को पत्र लिखना और उनसे मन में उठने वाले सवाल पूछना - या यहाँ तक कि उनसे ऑटोग्राफ मांगना। वे बेहद दयालु थे, अक्सर पारिवारिक छुट्टियों के दौरान मुझे अपने यहाँ आने का न्योता देते थे या मुझे अपने मिलन समारोहों में शामिल होने देते थे। मेरे पहले संपर्कों में से एक थे मशहूर भगोड़े एच.एम.ए. 'विंग्स' डे, जिन्होंने मेरे परिवार को रस्टिंगटन स्थित अपने सेवानिवृत्ति गृह में आमंत्रित किया और वहाँ हमें अपने दोस्तों से मिलवाया, जो सभी पूर्व वायुसैनिक थे। मुझे उनमें से एक खास तौर पर याद है - सुदूर दक्षिण (शायद अलबामा) के एक अमेरिकी, जो प्रथम विश्व युद्ध के दौरान रॉयल फ्लाइंग कॉर्प्स में शामिल हुए थे और उन्हें इंग्लैंड इतना पसंद आया कि वे कभी वापस नहीं गए। विंग्स के पास एक प्यारी सी छोटी बिल्ली थी, जो दोपहर का अधिकांश समय उनके कंधों पर बैठी रहती थी।

मुझे सौभाग्य मिला कि मैंने ग्रेट एस्केप पर काम शुरू किया जब इसके कई मुख्य पात्र जीवित थे – उन्होंने मुझे पलायन और उसमें शामिल लोगों के बारे में कुछ उल्लेखनीय जानकारी दी, साथ ही वे अद्भुत मेज़बान भी थे, बेहद दयालु और उदार। पेर बर्ग्सलैंड ने मुझे और मेरी पत्नी को ग्रिल्ड सैल्मन मछली खिलाई जो कुछ ही घंटे पहले ओस्लो के बंदरगाह पर आई थी। मनमोहक और आकर्षक सिडनी डाउज़ ने हमें दक्षिणी फ्रांस के मेंटन में एक शानदार और महंगे डिनर पर दावत दी। उनका वहाँ एक विला था, और मैंने उनसे पूछा कि क्या उन्होंने फ्रेंच बोलना सीखा है। उनका जवाब था, 'अगर आपके पास पैसा है, तो आपको भाषा सीखने की ज़रूरत नहीं है।' बॉब स्टैनफोर्ड-टक मुझे इंग्लैंड के दक्षिणी तट पर घुमाते रहे, और गाड़ी चलाते हुए पुरानी यादें ताज़ा करते रहे, वो भी काफी तेज़ गति से – उस समय मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या उन्हें सड़क पर थोड़ा और ध्यान देना चाहिए। इवो टोंडर हमेशा मुस्कुराते रहते थे जब वे एक युवा के रूप में एक के बाद एक दुश्मन से भागते हुए बिताए अपने अनुभव को साझा करते थे। मैं पिकाडिली स्थित आरएएफ क्लब में एक नियमित सदस्य बनने में भी सक्षम था, एक बार तो वहां से भागे हुए लोगों के एक यादगार पुनर्मिलन रात्रिभोज के लिए गया था, जिसमें बिल 'टेक्स' ऐश और वुडन हॉर्स की प्रसिद्धि वाले ओलिवर फिलपॉट जैसे लोग शामिल थे।

जब मैंने फांसी पर चढ़ाए गए पचास भगोड़ों के रिश्तेदारों से संपर्क करना शुरू किया, तो वे भी उतने ही मित्रवत थे और इस बात से बेहद खुश थे कि कोई उनके दिवंगत लेकिन प्रिय रिश्तेदार में दिलचस्पी ले रहा है। शुरुआत में, मुझे पचास में से एक दर्जन के परिवारों का पता लगाने की उम्मीद थी - अंत में, मैं लगभग सभी के वंशजों से संपर्क करने में सफल रहा। मिमी मार्टिन-पिकार्ड ने बेल्जियम में अपने साफ-सुथरे घर में हमें कई दिनों तक ठहराया। वह एक साहसी रसोइया थीं और उन्होंने हम पर कई नए व्यंजन आजमाए - हमें 'लेस कोबेल्स' यानी 'गिनी पिग' कहा। डेविड और मैरी हेयटर ने कई मौकों पर अपने खूबसूरत घर किंगहैम्स के दरवाजे हमारे लिए खोल दिए और हमें अपने पूरे हेयटर परिवार से मिलवाया। सिल्विया स्वैन ने मुझे सिखाया कि स्टेक और किडनी पाई वास्तव में स्वादिष्ट हो सकती है। सर केनेथ क्रॉस ने सचमुच अपने भाई इयान के जीवन के सारे रहस्य मेरे सामने खोल दिए - क्योंकि परिवार ने जो कुछ भी बचाया था, वह एक जर्जर सूटकेस में रखा हुआ था।

इन अविस्मरणीय अनुभवों ने मुझे केवल शोध करने से कहीं अधिक करने का अवसर दिया। इन्होंने मुझे स्टालैग लुफ्ट III के सैनिकों के जितना संभव हो सके करीब आने का मौका दिया। मुझे सचमुच ऐसा लगा कि मैं उनमें से कुछ को जान पाया हूँ – कोई भी घंटों पारिवारिक कहानियाँ सुनने, फोटो एल्बमों को ध्यान से देखने और पत्रों और डायरियों को पढ़ने के बाद उनसे जुड़ाव महसूस किए बिना नहीं रह सकता। महान पलायन के सैनिक मेरे लिए बहुत वास्तविक हो गए, और मैं उनके प्रति बेहद सुरक्षात्मक हो गया। इस पुस्तक का पहला संस्करण निजी तौर पर प्रकाशित किया गया था, मुख्य रूप से केवल उन लोगों के लिए जिन्होंने मेरी मदद की थी, क्योंकि मैं इसे किसी संपादक को सौंपने का साहस नहीं कर पा रहा था, जो मुझसे सुझाए गए अंशों को हटाने पर विचार करने के लिए कह सकता था। दूसरा संस्करण कैलिफोर्निया में पैसिफिका मिलिट्री हिस्ट्री द्वारा प्रकाशित किया गया था, जो एरिक हैमेल नामक एक अद्भुत इतिहासकार का प्रकाशन है। एरिक को अमेरिकी मरीन कोर के बारे में अधिकांश लोगों की तुलना में कहीं अधिक जानकारी है, लेकिन उन्हें इन साहसी वायुसैनिकों की कहानी पसंद आई और उन्होंने मुझे वर्णन को बेहतर बनाने के लिए हर तरह से प्रोत्साहित किया। उन्होंने साइमन एंड शूस्टर द्वारा अपने पुनर्मुद्रण श्रृंखला में प्रकाशित तीसरे संस्करण की भी व्यवस्था की।

महान पलायन के नायक आज भी मेरे लिए बेहद जीवंत हैं, और मुझे खुशी है कि इस पलायन की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर इस पुस्तक का पुन: प्रकाशन हो रहा है। जब यह पुस्तक पहली बार 'ए गैलेंट कंपनी' शीर्षक से प्रकाशित हुई थी (यह वाक्यांश 'द टाइम्स' में प्रकाशित एक श्रद्धांजलि लेख से लिया गया था), तब से अन्य लेखकों ने पलायन के सामान्य इतिहास या व्यक्तिगत वायुसैनिकों की जीवनियों के माध्यम से इस विषय पर लेखन किया है। त्रुटियों को सुधारने या महत्वपूर्ण नए विवरण जोड़ने का अवसर मिलने के लिए मैं आभारी हूं, लेकिन इससे भी अधिक मैं पाठकों को इन नायकों से पुनः परिचित कराने और उन उल्लेखनीय घटनाओं को फिर से याद करने में सक्षम होने के लिए आभारी हूं, जिन्हें हॉलीवुड भी बेहतर नहीं बना सका। इन नायकों के सूझबूझ, दृढ़ संकल्प और साहस के बारे में पढ़ना सचमुच विस्मित करने वाला है।

प्रस्तावना

पलायन साहित्य लंबे समय से स्कूली बच्चों की पसंदीदा पठन सामग्री का एक अभिन्न अंग रहा है। प्रथम विश्व युद्ध के बाद के वर्षों में पले-बढ़े कई ब्रिटिश पुरुष प्रथम विश्व युद्ध के दौरान पलायन करने वालों से भली-भांति परिचित थे और वे स्वीकार करते हैं कि उन्होंने ए. जे. इवांस की 'द एस्केपिंग क्लब' या डंकन ग्रिनेल-मिल्ने की 'एन एस्केपर्स लॉग' जैसी क्लासिक कृतियों का नियमित रूप से अध्ययन किया था। 1920 और 1930 के दशक में युद्धकालीन पलायन करने वाले ब्रिटिश स्कूलों में लोकप्रिय अतिथि वक्ता भी हुआ करते थे, जो लड़कों को स्वतंत्रता की ओर भागने की रोमांचक कहानियाँ सुनाते थे। इस परंपरा ने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान पलायन के लिए बौद्धिक आधार प्रदान किया, लेकिन कई अन्य कारक युद्धबंदियों के लिए तात्कालिक प्रेरणा का काम करते थे। पलायन से अपनों के पास शीघ्र लौटने की आशा मिलती थी, या फिर यह जेल शिविर के नीरस जीवन का एक उपाय था। जिन पुरुषों को लगता था कि वे युद्ध में अपना योगदान नहीं दे रहे हैं, उनके लिए भाग निकलना एक अवसर था, भले ही सीमित पैमाने पर ही सही, लेकिन युद्ध में पुनः शामिल होने का और शायद कुछ और योगदान देने का। अन्य लोगों ने शायद ऐसा इसलिए किया क्योंकि इससे उनके बंदी बनाने वाले बेहद क्रोधित हो गए थे, या फिर इसलिए कि वे इस विचार से प्रेरित थे कि एक कैदी का कर्तव्य है कि वह भागने का प्रयास करे।

ये मकसद सभी सेनाओं के जवानों में समान थे, लेकिन ऐसे कई कारण थे जिनकी वजह से वायुसैनिक भागने वालों में अधिक संख्या में थे और उनके भागने में सफल होने की संभावना भी अधिक थी। शांति काल में वायु सेना में भर्ती होने वाले जवानों ने पाया कि कठोर चयन प्रक्रिया में उच्च स्तर की शिक्षा की आवश्यकता होती थी, और युद्धकाल में सबसे निचले स्तर के एयर गनर को भी अपनी योग्यता प्राप्त करने के लिए बौद्धिक क्षमता दिखानी पड़ती थी। साथ ही, वायुसैनिक सबसे कनिष्ठ सेना होने की भरपाई आम तौर पर अधिक आक्रामक होकर करते थे, और यह आक्रामकता जेल शिविर में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती थी। वायुसैनिक अपेक्षाकृत रोमांचक सेवा जीवन के आदी थे और संभवतः अन्य युद्धबंदियों की तुलना में जेल शिविर की निष्क्रियता से अधिक परेशान थे। वे अकेले या छोटे समूहों में काम करने के भी आदी थे, इस अनुभव ने उन्हें आत्मनिर्भरता और सहयोग का उत्कृष्ट प्रशिक्षण प्रदान किया, जिसकी भागने के लिए आवश्यकता होती थी। इसके अलावा, सभी मित्र देशों की वायु सेनाओं में, पद संरचना ने भागने की गतिविधियों को प्रोत्साहित किया। ऑपरेशनल एयरक्रू लगभग हमेशा अधिकारी या गैर-कमीशंड कमांडर होते थे, या ऐसे लोग होते थे जिनकी पहल और उत्साह ने उन्हें पहले ही पदोन्नति दिला दी होती थी; वही जोश उनके भागने के प्रयासों को बल देगा। जिन वायुसैनिकों ने पदोन्नति के लिए पर्याप्त पहल नहीं दिखाई थी, और इसलिए जिनके भागने की संभावना कम थी, वे आम तौर पर दुश्मन के हाथों में नहीं पड़ते थे क्योंकि उन्हें शायद ही कभी ऑपरेशनल ड्यूटी पर तैनात किया जाता था।

इसलिए, वह वायुसैनिक लगभग आदर्श भगोड़ा था। सुशिक्षित, आक्रामक, एकांत में काम करने का आदी, और उन सभी सामान्य प्रवृत्तियों से प्रेरित जो एक इंसान को स्वतंत्रता की तलाश करने के लिए प्रेरित करती हैं, वह अपने साथ भागने के कौशल का एक प्रभावशाली भंडार लेकर उस कारागार में पहुंचा जहां उसे कैद किया गया था। यह एक ऐसा संयोजन था जिसका कई

वायुसैनिकों ने बखूबी इस्तेमाल किया।

जर्मन वायु सेना, लूफ़्टवाफ़े की युद्धबंदी शाखा इस तथ्य से भलीभांति परिचित थी। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश विमान चालकों ने उन्हें काफी परेशान किया था (इवांस और ग्रिनेल-मिल्ने भी आखिरकार विमान चालक ही थे), और यह पूरी तरह संभव है कि सितंबर 1939 में लूफ़्टवाफ़े को आने वाली स्थिति का कुछ आभास हो गया था। जब तक 1941 के पतझड़ तक मित्र देशों के विमान चालकों के मारे जाने की संख्या कम रही, तब तक उनकी कैद से कोई खास परेशानी नहीं हुई। उन सभी को बाल्टिक तट पर स्थित बार्थ के एक ही शिविर, स्टालैग लूफ़्ट I में केंद्रित किया जा सकता था। हालांकि, विमान चालक तुरंत अपनी पुरानी चालों पर उतर आए, और लूफ़्टवाफ़े को लगा कि उन सभी को एक साथ रखना शायद अच्छा विचार नहीं था। इसलिए नीति में बदलाव किया गया: नए पकड़े गए विमान चालकों को कुछ शिविरों में बाँट दिया गया, इस तर्क के साथ कि यदि उन्हें अलग-अलग रखा जाए, तो वे कम परेशानी पैदा करेंगे। यह उम्मीद बेकार साबित हुई – एक समस्याग्रस्त शिविर के बजाय, इसने आधा दर्जन समस्याग्रस्त शिविर पैदा कर दिए – और 1942 की वसंत ऋतु तक लूफ़्टवाफ़े अपनी केंद्रीकरण की नीति पर लौट आया था। मित्र देशों की वायु सेना के सभी कैदियों को सिलेसिया के सागन में स्थित एक नए शिविर, स्टालैग लूफ़्ट III में स्थानांतरित कर दिया गया, जिसे संभावित भागने वालों को नाकाम करने के लिए विशेष रूप से बनाया गया था। मार्च 1942 में जब लूफ़्ट III खुला, तो इसने दो साल तक चलने वाली बुद्धि की लड़ाई की शुरुआत की, जिसमें सैकड़ों सुशिक्षित, प्रशिक्षित और अत्यधिक प्रेरित युद्धबंदियों का सामना उतने ही दृढ़ निश्चयी और चालाक गार्डों और सुरक्षा अधिकारियों के दल से हुआ। उस लड़ाई का अंत उस घटना में हुआ जो इतिहास में महान पलायन के नाम से जानी जाती है।

*

यह सैन्य इतिहास की सबसे बड़ी और सबसे सफल पलायन घटना नहीं थी। इससे भी अधिक साहसी पलायन हुए थे, और कुछ में इंजीनियरिंग संबंधी अधिक महत्वपूर्ण चुनौतियाँ थीं। लेकिन कोई भी योजना इतनी महत्वाकांक्षी नहीं थी, और न ही इतनी विपरीत परिस्थितियों में इसे अंजाम दिया जा सका। द्वितीय विश्व युद्ध पर किसी अन्य पलायन का इतना गहरा प्रभाव नहीं पड़ा, और न ही कुछ ही घटनाओं में इतनी जानें गईं।

वे मात्र पचास सैनिक थे। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान रॉयल एयर फोर्सेज को हुए कुल घातक नुकसानों की तुलना में यह संख्या छोटी और लगभग नगण्य प्रतीत होती है। 90,000 से अधिक सैनिकों में से केवल पचास सैनिक – आठ लैंकेस्टर क्रू से भी कम। यदि रणनीतिक बमबारी अभियान के किसी भी बड़े हमले में आरएएफ ने केवल आठ क्रू खोए होते, तो इस अभियान को बड़ी सफलता माना जाता। लेकिन इन पचास सैनिकों की मृत्यु किसी भी तरह से नगण्य नहीं थी। जब वे और छब्बीस अन्य वायुसैनिक 24-25 मार्च, 1944 की रात को स्टालैग लुफ्ट III से भाग निकले, तो घटनाओं की एक ऐसी श्रृंखला शुरू हुई जिसके दूरगामी परिणाम किसी की भी अपेक्षा से कहीं अधिक थे। और जब भागने के कुछ हफ्तों बाद हिटलर की गेस्टापो द्वारा इन पचास सैनिकों की हत्या कर दी गई, तो उनकी मृत्यु ने उस लड़ाई को जारी रखा जो उन्होंने भर्ती के समय शुरू की थी।

वे सुपरमैन नहीं थे। वे आम, साधारण व्यक्ति थे, उन हजारों अन्य वायुसैनिकों की तरह जो उनसे पहले और उनके बाद शहीद हुए। वे बैंक क्लर्क और किसान, छात्र और पेशेवर सैनिक, पत्रकार और इंजीनियर थे। वे दुनिया के कोने-कोने से आए थे: ऑस्ट्रेलिया के दूरदराज और धूल भरे कस्बों से, दक्षिण अफ्रीका के भीषण ताप और कनाडा की कड़ाके की ठंड से, लंदन की चहल-पहल और वारसॉ की सादगी से। एक असाधारण वकील से लड़ाकू पायलट बने व्यक्ति के नेतृत्व में, वे लुफ्ट III में एक साथ आए, और एक साझा मिशन में अपने कौशल और प्रतिभा

का इस्तेमाल किया। यह उनकी कहानी है।

अध्याय **1**

सबसे पहले गिरने वाला

8 सितंबर, 1939 की शाम ठंडी और सुहावनी थी, और युद्ध में दूसरी बार, पायलट ऑफिसर अल्फ्रेड बर्क थॉम्पसन ने इंग्लैंड के यॉर्कशायर में ड्रिफ़ील्ड स्थित 102 स्क्वाड्रन के बेस के रनवे पर अपने आर्मस्ट्रांग व्हिटवर्थ व्हिटली दो इंजन वाले बमवर्षक विमान को तैयार किया। कंट्रोलर की आश्वस्त करने वाली आवाज़ हेडफ़ोन में गूंजी और अपने पीछे तैयार हो रहे दूसरे व्हिटली विमान को इशारा करते हुए, 'टॉमी' थॉम्पसन ने उड़ान भरी। विमान के धड़ में पर्चों के बंडल रखे थे, जिनमें दुश्मन को स्पष्ट शब्दों में याद दिलाया गया था कि यह संघर्ष व्यर्थ है और सही की ताकतें समय आने पर विजयी होंगी। ये पर्चे बड़े-बड़े, डरावने ढेरों में रखे थे, बम बे में चिमनी से नीचे धकेले जाने का इंतज़ार कर रहे थे। टॉमी ने सोचा, यह कैसा बमबारी मिशन होगा!

जैसे ही वे इंग्लैंड के तट को पार करके उत्तरी सागर की ओर बढ़े, स्क्वाड्रन लीडर फिलिप मरे ने नेविगेटर की स्थिति से दिशा बताई और टॉमी ने व्हिटली को महाद्वीप की ओर मोड़ दिया। वह 'वैंक' मरे को दूसरी दिशा बताने के लिए कहने ही वाला था कि तभी किसी ने कॉकपिट में कागज का एक टुकड़ा ऊपर की ओर धकेल दिया। यह मरे के रफ नोट्स का एक पन्ना था, जिस पर लिखा था, 'इंटरकॉम खराब है - इसके बजाय नोट्स का उपयोग करें', और उसके बाद दिशा लिखी थी। टॉमी को संदेह हुआ, लेकिन सिस्टम ने ठीक-ठाक काम किया, और विमान बिना किसी घटना के जर्मन सीमा तक पहुँच गया। पर्चे पैराशूट से बाहर फेंके गए, और टॉमी ने व्हिटली को घर की ओर मोड़ दिया। बमवर्षक के स्थिर होते ही इंजन लड़खड़ाने लगे और तापमान गेज खतरनाक रूप से ऊपर चढ़ने लगे। कितना भी प्रयास करने पर भी इंजन सुचारू रूप से नहीं चलने लगे, और एक इंजन पूरी तरह बंद हो जाने पर अल्टीमीटर धीरे-धीरे नीचे गिरने लगा। जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि वे मित्र देशों के हवाई क्षेत्र तक नहीं पहुंच पाएंगे, इंग्लैंड तक पहुंचना तो दूर की बात है, इसलिए टॉमी ने अनिच्छा से वैंक को पैराशूट से कूदने का इशारा किया।

मरे के भाग निकलने के बाद, टॉमी इमरजेंसी एग्जिट से बाहर निकला और व्हिटली को अपने पास से गोता लगाते हुए देखने लगा। बमवर्षक विमान के इस तीव्र गोता से मंत्रमुग्ध होकर, उसे तब तक ज़मीन का पता ही नहीं चला जब तक कि ज़मीन ने उसकी सांसें नहीं रोक दीं। भोर हो रही थी और जर्मन सैनिकों ने गिरे हुए पायलटों को तुरंत पकड़ लिया। उन्हें एक छोटे से हवाई अड्डे पर बनी कोठरियों में ले जाया गया, उनसे हर वो चीज़ छीन ली गई जिससे वे खुद को नुकसान पहुंचा सकते थे, और उन्हें एक बेचैन सुबह बिताने के लिए छोड़ दिया गया। टॉमी थॉम्पसन के लिए यह एक ऐसी यात्रा की शुरुआत थी जो लगभग छह साल तक चली और जिसमें उसे याद करने से कहीं ज़्यादा जेल की कोठरियाँ शामिल थीं।

*

यह कहानी ओंटारियो के पेनेटांगुइशीन में शुरू हुई, जहाँ टॉमी का जन्म 8 अगस्त, 1915 को हुआ था। वे स्थानीय सांसद के बेटे थे। उन्होंने 1929 में हाई स्कूल में दाखिला लिया, लेकिन चार साल बाद टोरंटो की एक बीमा कंपनी में नौकरी करने के लिए पढ़ाई छोड़ दी। हालाँकि उनके पिता ने अपने प्रभाव का इस्तेमाल करके उन्हें यह नौकरी दिलवाई थी, लेकिन टॉमी को काम में रुचि नहीं थी और वे अपना समय हवाई जहाज उड़ाने के प्रशिक्षण में बिताना पसंद करते थे। एक

बार, जब उन्हें काम पर जाने का बहुत मन नहीं हुआ, तो उन्होंने छुट्टी ले ली। फिर उन्होंने स्की पहनी और अगले दो दिनों तक स्कीइंग करते हुए घर वापस आ गए। दुर्भाग्य से, कंपनी ने अपने बीमार कर्मचारी की देखभाल के लिए एक नर्स को भेजा, और जब उसे घर पर कोई नहीं मिला, तो टॉमी की नौकरी चली गई।

उन्हें बेरोज़गार होने की ज़्यादा चिंता नहीं थी और 1936 के अंत में वे एक विशेष भर्ती योजना के तहत RAF में शामिल होने के लिए इंग्लैंड चले गए। हैम्पशायर के हैम्बल स्थित फ्लाइंग स्कूल पहुँचने के तुरंत बाद, टॉमी को यकीन हो गया कि उन्होंने सही फैसला लिया है। उन्हें समान विचारधारा वाले साथियों की संगति बहुत पसंद थी, लेकिन प्रशिक्षण के दौरान कभी-कभी वे थोड़े ज़्यादा ही जोशीले हो जाते थे। एक बार थॉम्पसन पर पुल के नीचे से विमान उड़ाने का आरोप लगा और उन्होंने घर पत्र लिखकर कहा कि अगर RAF ने उन्हें इस घटना के लिए बर्खास्त कर दिया, तो वे स्पेन में गृहयुद्ध में लड़ने चले जाएँगे। सौभाग्य से, टॉमी को केवल फटकार ही मिली और 15 नवंबर, 1937 को उन्हें 102 स्क्वाड्रन में तैनात कर दिया गया। वे तब तक उसी यूनिट में रहे जब तक उनका विमान मार गिराया नहीं गया।

हवाई अड्डे की कोठरियों में बैठे हुए थॉम्पसन और मरे के पास अपने अतीत पर विचार करने के लिए काफी समय था, लेकिन थॉम्पसन के विचारों में तब खलल पड़ा जब एक दुभाषिया अंतिम इच्छाओं और लंबी यात्रा के बारे में कुछ अशुभ बातें कहते हुए प्रकट हुआ। घबराहट के एक क्षण के बाद, टॉमी और वैंक को पता चला कि उन्हें उसी दोपहर बर्लिन के लिए रवाना होना है और प्रस्थान से पहले वे कुछ जलपान करना चाहेंगे। उन्होंने कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार किया और सात घंटे की यात्रा के बाद बर्लिन के बाहरी इलाके में एक छोटे से अस्पताल में पहुँचे। दोनों से रात भर रुक-रुक कर पूछताछ की गई और वे थके हुए महसूस कर रहे थे जब अगली सुबह दो गार्ड उन्हें 'किसी अत्यंत महत्वपूर्ण व्यक्ति' से मिलवाने के लिए आए। अचंभित होकर, वे अपने अंगरक्षकों के पीछे-पीछे एक जंगल से होते हुए, एक रेलवे साइडिंग और एक रेलगाड़ी के यात्री डिब्बे से गुजरते हुए एक बड़े घास के मैदान में पहुँचे। मैदान के किनारे एक विशाल पेड़ के नीचे एक बड़ा चबूतरा था। उस पर एक विशाल मेज थी और मेज के पीछे, पदकों से सजी विशाल प्रतिमा हरमन गोरिंग की थी।

भारी-भरकम रीच्समार्शल को देखकर प्रभावित हुए बिना रहना नामुमकिन था। टॉमी और वैंक एक पल के लिए स्तब्ध रह गए, लेकिन वैंक ने खुद को संभाला और सलामी देने के लिए सीढ़ियों पर चढ़ गए। मरे और गोरिंग ने कुछ मिनटों तक सौहार्दपूर्ण बातचीत की, जिसके बाद टॉमी को साक्षात्कार में शामिल होने के लिए मंच पर बुलाया गया। रीच्समार्शल ने मज़ाक में उन दोनों को उनकी नींद में खलल डालने और उन्हें बम शेल्टर में शरण लेने के लिए मजबूर करने पर फटकार लगाई, लेकिन आसमान की आज़ादी खोने पर उनके प्रति सहानुभूति भी जताई। टॉमी की उपस्थिति से वे थोड़े हैरान दिखे, खासकर इसलिए क्योंकि कनाडा अभी तक युद्ध में शामिल नहीं हुआ था, लेकिन जल्दी ही उन्होंने इस विषय को छोड़कर कनाडाई आइस हॉकी की बारीकियों पर चर्चा शुरू कर दी। साक्षात्कार लगभग तीस मिनट तक चला और गोरिंग के इस वादे के साथ समाप्त हुआ कि आरएएफ के कैदियों के साथ अच्छा व्यवहार किया जाएगा। उन्होंने अपना ढीला हाथ हिलाया और टॉमी और वैंक को मंच से ले जाया गया।

सितंबर के अंत में, दो नए क्रीगी (यह शब्द जर्मन शब्द क्रीग्सगेफैंगेनन का बिगड़ा हुआ रूप है, जिसका अर्थ है युद्धबंदी) को हैम्बर्ग के पास इट्ज़ेहो में एक स्थायी शिविर में स्थानांतरित कर दिया गया। कुछ फ्रांसीसी वायुसैनिक और छह सौ पोलिश सैनिक उनके साथी थे, जब तक कि 6 सितंबर को एक न्यूज़ीलैंडर विमान दुर्घटना में घायल होकर उनके साथ शामिल नहीं हो गया। प्रत्येक के पास अपना निजी कमरा था और स्थितियाँ काफी आरामदायक थीं, लेकिन मनोरंजन के साधन बहुत कम थे। सौभाग्य से, एक फ्रांसीसी सैनिक के पास ताश का एक डेक था, इसलिए पाँचों ने घंटों ब्रिज के अंतहीन राउंड खेले। उनके आगमन के दो सप्ताह बाद, टॉमी, वैंक और न्यूज़ीलैंडर फिर से आगे बढ़ रहे थे, जब जर्मनों ने वायु सेना के अधिकारियों को पोलिश

सैनिकों से अलग करने का फैसला किया। पायलटों और उनके गार्डों को एक ट्रक में भरकर उनके नए शिविर के लिए लंबी यात्रा पर भेज दिया गया।

छत्तीस घंटे के लंबे सफर के बाद आखिरकार वे अपनी मंज़िल पर पहुँच गए। टॉमी ने ट्रक से बाहर झाँककर देखा तो उसे एक पहाड़ी की चोटी पर बना एक छोटा सा मध्ययुगीन किला दिखाई दिया। उसे केवल भूरे पत्थर की दीवारें और ढलान वाली स्लेट की छतें ही नज़र आ रही थीं, लेकिन जल्द ही एक जर्जर घंटाघर दिखाई दिया और किले के नीचे, टॉमी ने खाई की दीवारें देखीं। उसने वैंक से कहा, 'यह ज़्यादा आकर्षक नहीं लग रहा है।' स्पैंगेनबर्ग किला, जिसे ओफ्लैग IXA/H के नाम से जाना जाता था, निश्चित रूप से बहुत स्वागत योग्य नहीं लग रहा था, क्योंकि लूफ़्टवाफ़े का ट्रक पेड़ों से घिरी सड़क पर विशाल पत्थर के फाटकों की ओर बढ़ रहा था।

ट्रक से उतरकर और अपने थोड़े से सामान को थामे हुए टॉमी, वैंक और कीवी को पत्थर के आंगन में खड़े कुछ वायुसैनिकों को देखकर थोड़ी राहत मिली। उनमें गैरी बूथ और लैरी स्लैटरी भी थे, जो आरएएफ के पहले युद्धबंदी थे और 4 सितंबर को विल्हेमशेवन में जर्मन युद्धपोतों पर किए गए निम्न-स्तरीय हमलों में बच गए थे। थॉम्पसन और मरे के लिए यह कोई खास राहत की बात नहीं थी कि ये दोनों उनसे भी ज़्यादा समय तक कैद में रहे थे। अगले कुछ हफ्तों में, कई अन्य दुर्भाग्यशाली लोग धीरे-धीरे शिविर में आने लगे, जिनमें फ्लीट एयर आर्म के दो पायलट, कैप्टन गाय ग्रिफिथ्स और लेफ्टिनेंट डिक थर्स्टन भी शामिल थे, जो 14 सितंबर को उत्तरी सागर के ऊपर मार गिराए गए थे। कुछ अन्य लोग अक्टूबर की शुरुआत में आए, और जल्द ही जर्मन कैद में मित्र देशों की वायु सेना का मूल आधार तैयार हो गया।

स्पैंगेनबर्ग में हालात इट्ज़ेहो की तुलना में कहीं अधिक असुविधाजनक थे, जहाँ कैदी फल, शीतल पेय और अन्य आवश्यक वस्तुएँ खरीद सकते थे। नए शिविर में उन्हें जर्मन सेना के सबसे निम्न स्तर के राशन पर जीवन यापन करना पड़ता था, जिसमें आलू से बनी भारी, काली रोटी, मछली के उप-उत्पादों से बना लगभग न खाने योग्य पनीर, रेशेदार और अत्यधिक नमकीन बेकन वसा के छोटे टुकड़े, कोयले से निकाला गया शहद या जैम जिसे सैकरिन से मीठा किया गया था, और एक गाढ़ा स्टू जिसमें कभी-कभार किसी अज्ञात मांस का टुकड़ा होता था, जैसे बेस्वाद व्यंजन शामिल थे। इसे भुने हुए अनाज या शाहबलूत से बनी कॉफी के साथ परोसा जाता था, जो सबसे अधिक भूख लगने वाले व्यक्ति की भी भूख मिटाने के लिए काफी था।

ये आवास इट्ज़ेहो के निजी कमरों से बिलकुल अलग थे। ओफ्लैग IXA/H में, कैदी किले के भूतल पर बने एक लंबे शयनकक्ष में रहते थे और कमरे की सफ़ेद दीवारों के किनारे लगे लोहे के पलंगों पर पुआल से भरे गद्दों पर सोते थे। कमरे के बीच में बेंचों के साथ दो लंबी मेजें ही थीं। कैदी अपना ज़्यादातर दिन शयनकक्ष में आराम करते हुए बिताते थे, क्योंकि छोटे, पत्थर के आंगन में ज़्यादा समय बिताना बहुत ठंडा हो रहा था। मेजें ही सारी गतिविधियों का केंद्र थीं और उनका इस्तेमाल राशन बाँटने, ताश खेलने या कहानियाँ सुनाने के लिए किया जाता था। बातचीत आमतौर पर बत्ती बुझने के काफ़ी देर बाद तक चलती रहती थी, और गर्म और घुटन भरे शयनकक्ष में धीमी आवाज़ें नए कैदियों को अजीब तरह से सुकून देती थीं। भागने का विचार बहुत कम था, और ज़्यादातर कैदी आज़ादी खोने की आदत डालने में संतुष्ट थे। कुल मिलाकर, वे उन कठिन शुरुआती हफ्तों में काफी अच्छी तरह से तालमेल बिठाने में कामयाब रहे और यह जाने बिना कि उनकी कैद कितने समय तक चलेगी, एक दिनचर्या में ढलने लगे।

*

अक्टूबर के मध्य में एक दिन, एक बस किले के सामने आकर रुकी और उसमें से फ्रांसीसी वायु सेना के कई अधिकारी उतरे, जो बेहद साफ-सुथरे और भारी सामान से लदे हुए थे। उनके साथ एक लंबा, अधेड़ उम्र का व्यक्ति भी था जिसका चेहरा दुबला-पतला और सिर गंजा था। फ्रांसीसियों के विपरीत, इस अधिकारी के पास कोई सामान नहीं था और बढ़ती दाढ़ी और गंदी

पट्टियों के कारण वह काफी अस्त-व्यस्त दिख रहा था। दाढ़ी के ऊपर उसकी गहरी, चौकस आँखें थीं जो किले के प्रांगण में बंद कैदियों पर नज़र गड़ाए हुए थीं। सीधी पीठ और ऊँचा सिर लिए, विंग कमांडर हैरी मेलविल अर्बुथनोट डे आखिरकार लूफ़्टवाफ़े के स्थायी शिविर में पहुँच गए थे।

3 अगस्त, 1898 को सारावाक में जन्मे हैरी डे ने इंग्लैंड में शिक्षा प्राप्त की, जो उनके लिए एक अजीब अनुभव था क्योंकि वे बोर्नियो में पले-बढ़े थे, जहाँ क्रिकेट और रग्बी का कोई नामोनिशान नहीं था। प्रथम विश्व युद्ध शुरू होने पर, हैरी डे ने रॉयल मरीन लाइट इन्फैंट्री में कैडेट के रूप में भर्ती हुए और 1916 में उन्हें कमीशन प्राप्त हुआ। उनकी पहली तैनाती क्रूज़र एचएमएस ब्रिटानिया पर तैनात समुद्री टुकड़ी में हुई। युद्धविराम से दो दिन पहले, जिब्राल्टर के पास एक जर्मन पनडुब्बी ने ब्रिटानिया को टॉरपीडो से निशाना बनाया और परिणामस्वरूप हुए विस्फोटों में कई चालक दल के सदस्य डेक के नीचे फंस गए। लेफ्टिनेंट डे एक छोटे से हैच के रास्ते वार्डरूम में पहुँचे और वहाँ उन्हें दो घायल चालक दल के सदस्य मिले। उन्हें खुद हैच के रास्ते वापस खींचने की कोशिश करने के बजाय, हैरी ऊपर लौट आए और कुछ स्टीवर्ड्स से घायलों को सुरक्षित स्थान पर ले जाने में मदद मांगी। केबिन छोड़ने से पहले, उन्होंने आग को फैलने से रोकने के लिए सभी स्कटल और हैच को बंद कर दिया। यह बचाव कार्य व्यक्तिगत रूप से बहुत बड़ा जोखिम उठाकर किया गया था, और जनवरी 1919 में हैरी डे को अल्बर्ट मेडल से सम्मानित किया गया। बाद में उन्होंने दावा किया कि वह केवल वार्डरूम के शराब कैबिनेट की चाबी बचाने की कोशिश कर रहे थे।

इस वीरतापूर्ण कारनामे के बाद, डे ने मरीन में तेजी से तरक्की की और विभिन्न जहाजों पर टुकड़ियों की कमान संभाली। 1924 तक, उन्होंने मरीन के साथ मलाया से मेमेल और सिंगापुर से स्मिरना तक दुनिया का भ्रमण कर लिया था और एक नई चुनौती की तलाश में थे। जल्द ही उन्होंने उड़ान भरने का शौक पाल लिया। डे ने किसी तरह तबादला करवा लिया और दक्षिणी इंग्लैंड के नेदरवन स्थित फ्लाइंग स्कूल में अपनी पहली एकल उड़ान भरी। 1929 तक वे 23 स्क्वाड्रन में फ्लाइट लेफ्टिनेंट बन चुके थे और दो साल बाद उन्हें हेंडन एयर शो में सिंक्रोनाइज्ड एरोबैटिक टीम का नेतृत्व करने के लिए चुना गया। हैरी डे आरएएफ में लगातार आगे बढ़ते रहे, मिस्र में रहते हुए उन्हें स्क्वाड्रन लीडर के पद पर पदोन्नति मिली और जैसे-जैसे युद्ध नजदीक आता गया, उन्हें पता चला कि शत्रुता शुरू होने पर उन्हें एक स्टाफ की नौकरी करनी होगी। यह बात डे को रास नहीं आई, और कुछ जल्दबाजी में किए गए फोन कॉल और मुलाकातों के जरिए उन्होंने ब्रिस्टल ब्लेंहेम मीडियम बॉम्बर स्क्वाड्रन के विंग कमांडर के पद पर पदोन्नति हासिल कर ली। सितंबर 1939 में, पदोन्नति के बाद 'विंग्स' उपनाम प्राप्त कर चुके डे 57 स्क्वाड्रन को लेकर फ्रांस गए।

यूनिट का पहला अभियान बोचम-एसेन क्षेत्र का टोही अभियान था। शुक्रवार, 13 अक्टूबर, 1939 के अंतिम क्षण तेज़ी से बीत रहे थे, जब हैरी डे मेट्ज़ हवाई अड्डे के रनवे पर अपने ब्लेंहेम विमान को उतार रहे थे। 22,000 फीट की ऊंचाई पर उन्होंने नीचे देखा तो जर्मनी जाने वाले रास्ते को बादलों की घनी चादर ने ढक रखा था। जर्मन सीमा पार करते ही, बादलों की वह आरामदायक सफेद चादर गायब हो गई, जिससे अकेला विमान किसी भी जर्मन की नज़र में आ गया जो उसे देख रहा हो। हालात अचानक बेहद खतरनाक हो गए। जल्द ही इंटरकॉम पर एयर गनर की धीमी आवाज़ सुनाई दी, जिसमें एंटी-एयरक्राफ्ट गोले दागे जाने की चेतावनी दी गई थी। फिर, एंटी-एयरक्राफ्ट गोलों की दिशा में निर्देशित होकर, तीन मेसेरस्मिट बीएफ 109 लड़ाकू विमान हमला करने के लिए आगे बढ़े। विमान के पंखों ने अभी-अभी एक तेज़ मोड़ लेना शुरू ही किया था कि पहली गोलियां विमान से टकराईं, और देखते ही देखते कॉकपिट धुएं से भर गया क्योंकि पेट्रोल टैंक जलने लगे थे। यह सुनिश्चित करने के बाद कि गनर और नेविगेटर पहले ही पैराशूट से कूद चुके हैं, विंग्स ने ब्लेंहेम को एक ऊर्ध्वाधर मोड़ दिया और भागने का दरवाज़ा खोल दिया। एक ही लात से वह आज़ाद हो गया।

लैंडिंग के बाद सबसे पहले एक मुस्कुराता हुआ बूढ़ा वन रक्षक उसके पास पहुँचा, जिसने

केवल 'इंग्लैंडर' कहा और विंग्स का हाथ हल्के से दबाकर हिलाया। उसे थोड़ी दूर लैंगवीलर गाँव ले जाया गया, जहाँ एक बुजुर्ग लूफ़्टवाफ़े डॉक्टर ने उसके झुलसे हुए माथे का इलाज किया। अपने साथियों के बारे में जानने की उत्सुकता में, डे को एक ट्रक के पीछे उनके जले हुए शव दिखाए गए; दोनों ने जलते हुए पैराशूट के साथ छलांग लगाई थी। दुबले-पतले विंग कमांडर ने अपने साथियों को सलाम करने के लिए तुरंत सावधान की मुद्रा अपनाई और ले जाने से पहले एक पल के लिए रुके।

विंग्स की कैद के शुरुआती दिन एक जर्मन सेना के मेजर, उनकी पत्नी और उनकी छोटी बेटी के विला में बीते। उनका अगला पड़ाव स्थानीय सेना अस्पताल था, और वहाँ भी कैद का एकमात्र संकेत रात में ही मिलता था, जब विंग्स के वार्ड के दरवाजे पर एक अकेला संतरी पहरा देता था। अस्पताल में दो दिन बिताने के बाद उन्हें मेंज के पास एक कृषि अकादमी के परिसर में ले जाया गया। वहाँ केवल एक दर्जन फ्रांसीसी अधिकारी ही थे, और डे को सामान्य पूछताछ के दौरान बहुत अकेलापन महसूस हुआ। अगली सुबह एक बस उस छोटे से परिसर के बाहर आकर रुकी, जो कैदियों को दूसरे शिविर में ले जाने वाली थी। विंग्स ने अभी तक यह स्वीकार नहीं किया था कि वह युद्धबंदी हैं और स्पैंगेनबर्ग किले की खड़ी पहाड़ी पर बस के खड़खड़ाते हुए चढ़ने के दौरान वह काफी उदास थे। भीड़ में एक मुस्कुराता हुआ और जाना-पहचाना चेहरा देखकर उनका मूड तुरंत बदल गया। मुस्कुराता हुआ व्यक्ति माइक केसी था, जो 57 स्क्वाड्रन का उनका पुराना दोस्त था, और विंग्स को उसकी गर्मजोशी भरी आयरिश बोली सुनकर बहुत खुशी हुई। माइक ने खुले हाथ से आगे बढ़कर विंग्स का हार्दिक अभिवादन किया और फिर थॉम्पसन, मरे और आरएएफ की छोटी टुकड़ी के बाकी सदस्यों का परिचय कराया।

'तुम्हें देखकर अच्छा लगा,' केसी ने नए आए हुए सैनिक से कहा, 'लेकिन तुम्हारी भलाई के लिए, मुझे खेद है कि तुम यहाँ हो!' पीठ थपथपाकर, विंग्स को उसके स्क्वाड्रन के साथी द्वारा ब्रिटिश छात्रावास की ओर ले जाया गया।

*

विंग्स और मृदुभाषी लेकिन शक्तिशाली आयरिशमैन में काफी समानताएं थीं। डे की तरह, फ्लाइट लेफ्टिनेंट माइकल जेम्स ओ'ब्रायन केसी भी ब्रिटिश साम्राज्य की उपज थे, जिनका जन्म 19 फरवरी, 1918 को इलाहाबाद में भारतीय पुलिस महानिरीक्षक के पुत्र के रूप में हुआ था। केसी ने इंग्लैंड में शिक्षा प्राप्त की और स्कूल में अपनी मुक्केबाजी, रग्बी और क्रिकेट जैसी खेल प्रतिभाओं और धार्मिक कर्तव्यों के प्रति अपने समर्पण से प्रकट होने वाले नैतिक बल के लिए लोकप्रिय थे। माइक ने जुलाई 1936 में स्कूल की पढ़ाई पूरी की और आरएएफ में अल्पकालिक कमीशन के लिए आवेदन किया। युद्ध से कुछ समय पहले, केसी की बहन ने टाइनसाइड के एक प्रभावशाली और सम्मानित व्यवसायी के बेटे से शादी कर ली, जिसे माइक स्कूल के दिनों से जानते थे। इस विवाह के माध्यम से माइक की मुलाकात उस युवक की बहन मार्जरी से हुई, जिनसे उन्होंने अंततः 19 सितंबर, 1939 को बिसेस्टर में शादी कर ली। दुर्भाग्य से, इस जोड़े का साथ बहुत कम समय का रहा, क्योंकि महीना खत्म होने से पहले ही माइक के स्क्वाड्रन को फ्रांस में तैनात कर दिया गया था।

16 अक्टूबर, 1939 को माइक और उनके दल को वेसेल और बोचोल्ट के बीच मुख्य सड़क की टोही उड़ान भरने का आदेश दिया गया था। वे एमी स्थित अपने अड्डे पर वापस नहीं लौटे, लेकिन 21 अक्टूबर को द टाइम्स में छपी एक खबर के माध्यम से स्क्वाड्रन को पता चला कि ब्लेंहेम विमान का क्या हुआ था। 'एक हवाई दौड़' शीर्षक वाले इस लेख में एक जर्मन अखबार के उस विवरण का हवाला दिया गया था जिसमें एक जर्मन लड़ाकू विमान और एक ब्लेंहेम के बीच हुई मुठभेड़ का वर्णन था। जर्मन पायलट के अनुसार, ब्लेंहेम ने उसे बादलों के बीच से निकाला और फिर एम्डेन के आसपास के ग्रामीण इलाकों में उसका पीछा किया। केसी, जिन्हें 'एक

कुशल, निपुण और निपुण पायलट' बताया गया है, ने जमीन के हर गड्ढे, हर झाड़ी और हर पेड़ का इस्तेमाल आड़ के रूप में किया; वह छतों के ऊपर से उड़ते हुए गए और अपने पीछे शाखाओं को बिखेरते हुए अपने प्रतिद्वंद्वी के निशाने को बिगाड़ते रहे। वे उड़ते रहे, कभी-कभी तो जमीन से मुश्किल से छह फीट ऊपर, लेकिन अंततः जर्मन की गोलीबारी ने ब्लेंहेम के महत्वपूर्ण हिस्सों को निशाना बना लिया। अंडरकैरिज को नीचे करने का समय न होने के कारण, माइक ने विमान को एक खुले मैदान में उतार दिया। ब्लेंहेम के आग की लपटों में घिरने से कुछ क्षण पहले, चालक दल के सदस्य बाहर निकले और ऊपर चक्कर लगा रहे जर्मन पायलट को हार्दिक अभिवादन किया।

माइक ने विंग्स को अपनी आखिरी उड़ान की कहानी सुनाई, तो विंग्स मुस्कुराया और सिर हिलाया। उसने कहा, 'कम से कम तुमने कुछ लोगों को परेशान तो किया।' 'युद्ध में मेरा एकमात्र योगदान यही रहा है कि मैंने तीन मेसेरश्मिट विमानों को मुझ पर गोला-बारूद खर्च करने के लिए मजबूर किया!' माइक हँसा और विंग्स को चाय बनाने के लिए छात्रावास की सीढ़ियों से ऊपर ले गया।

*

डे के आगमन के बाद, छोटा आरएएफ समूह अपनी दिनचर्या में वापस लौट आया, जिसमें विंग कमांडर वरिष्ठ ब्रिटिश अधिकारी (एसबीओ) के रूप में कार्य कर रहे थे। 1939 के अंतिम महीनों में कुछ खास हलचल नहीं थी, इसलिए दिसंबर में बारह ब्रिटिश और फ्रांसीसी वायुसैनिकों को दूसरे शिविर में स्थानांतरित करने का आदेश मिलने पर उत्साह का माहौल था। जर्मनों ने विंग कमांडर माइक केसी और फ्लीट एयर आर्म के दो पायलटों, गाय ग्रिफिथ्स और डिक थर्स्टन को भर्ती के लिए चुना, और माइक के एयर गनर को अर्दली के रूप में नियुक्त किया गया।

जिस शिविर में उन्हें ले जाया गया था, वह फ्रैंकफर्ट-एम-मेन से दस मील दूर ओबेरर्सल कस्बे के पास स्थित डुलैग लुफ्ट या लूफ़्टवाफ़े ट्रांजिट कैंप था। शुरुआत में कैदियों को एक बड़ी, आकर्षक इमारत में रखा गया था जो कभी एक प्रायोगिक फार्म का हिस्सा थी। वे एक केंद्रीय गलियारे से सटे छोटे कमरों में रहते थे और शाम ढलते ही उन्हें बंद कर दिया जाता था, लेकिन दिन के उजाले में वे इमारत में घूमने के लिए स्वतंत्र थे। नए साल के ठीक बाद, कैदियों के लिए एक छोटा परिसर उपलब्ध कराया गया। अप्रैल 1940 में, उन्हें पास ही बने एक नए शिविर में स्थानांतरित कर दिया गया। इस परिसर में तीन बैरक थे: पूर्वी ब्लॉक, जिसमें एक मनोरंजन कक्ष और स्नानघर की सुविधाएँ थीं, साथ ही बारह डबल और दो सिंगल कमरे थे; मध्य ब्लॉक, जिसमें लगभग पैंसठ कैदियों के लिए कमरे थे; और पश्चिमी ब्लॉक, जिसमें भोजनालय, रसोई और खाद्य भंडार थे।

दुलैग लुफ़्ट पहुँचने के कुछ ही समय बाद कैदियों को यह स्पष्ट हो गया कि यह कोई सामान्य शिविर नहीं था। इसे पूरी तरह से एक पारगमन केंद्र के रूप में खोला गया था, जहाँ नए कैदियों से पूछताछ की जा सके और उन्हें कैद के माहौल में ढलने में मदद की जा सके। इस प्रक्रिया में सहायता के लिए जर्मनों ने कैदियों की एक समिति नियुक्त की जिसे स्थायी कर्मचारी कहा जाता था, जिसमें अंततः लगभग पच्चीस अधिकारी शामिल हो गए। ये अधिकारी शिविर में ही रहते थे और शिविर कर्मचारियों के साथ संपर्क, भोजन और वस्त्रों के वितरण, शिविर में अनुशासन बनाए रखने और नए कैदियों को सहायता और मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए जिम्मेदार थे। स्थायी कर्मचारी के लिए चुने गए अधिकारी अधिक उम्र के और सैद्धांतिक रूप से अधिक जिम्मेदार थे, जिनमें से कई अपने पारिवारिक पृष्ठभूमि में विशिष्ट थे। वास्तव में, कमांडेंट थियो रुम्पेल को उम्मीद थी कि वे ब्रिटिश शासक वर्ग के सार का प्रतीक बनेंगे, जैसा कि वह देखते थे।

विंग्स डे वरिष्ठ ब्रिटिश अधिकारी बने और उन्होंने अपने सहायक के रूप में लेफ्टिनेंट कमांडर जिमी बकले को चुना, जिन्होंने डार्टमाउथ के रॉयल नेवल कॉलेज में प्रशिक्षण प्राप्त किया था और

वे फ्लीट एयर आर्म के शुरुआती पायलटों में से एक थे। युद्ध से पहले जिमी ने विमानवाहक पोत एचएमएस ग्लोरियस पर फ्लाइट कमांडर के रूप में सेवा की थी और 29 मई, 1940 को कैलिस में जर्मन तोपखाने पर हमला करते समय उन्हें मार गिराया गया था। हजारों सैनिकों के साथ उन्हें भी बंदी बना लिया गया और रास्ते में वे कुछ समय के लिए भाग निकले थे। जिमी के एक पुराने मित्र, लेफ्टिनेंट कमांडर जॉन कैसन भी स्थायी स्टाफ में थे। दोनों ने माल्टा और ग्लोरियस पर एक साथ सेवा की थी, और जॉन को 13 अप्रैल, 1940 को ट्रॉनहेम फियोर्ड के ऊपर मार गिराया गया था। स्थानीय गांव में चर्च दल भेजने की व्यवस्था होने से पहले, जॉन शिविर में रविवार की सुबह की प्रार्थना सभाएं आयोजित करते थे। हालांकि, उन्होंने सशस्त्र बलों को दी जाने वाली पारंपरिक आशीर्वाद की रस्म को सेवा से हटाना ही समझदारी समझा, जिसके चलते शिविर में अक्सर यह मजाक सुनने को मिलता था, 'हमें अपना आशीर्वाद चाहिए - लेकिन जॉन हमें इसे लेने नहीं देगा!'

जब नए युद्धबंदियों को शिविर में लाया जाता था, तो उन्हें सबसे पहले पूछताछ केंद्र ले जाया जाता था, जहाँ कुशल खुफिया अधिकारी उनसे पूछताछ करते थे। पूछताछ पूरी होने पर, कैदी को स्थायी कर्मचारियों की देखरेख में छोड़ दिया जाता था। उन्हें एक टॉयलेट किट और रेड क्रॉस का पार्सल दिया जाता था और कहा जाता था कि जब उन्हें पता चल जाए कि उन्हें किस तरह की सामग्री की आवश्यकता है, तो वे कपड़ों की दुकान पर आएं। औपचारिकताओं के बाद, उन्हें अच्छा भोजन दिया जाता था। कुल मिलाकर, यह कैद में जीवन का एक सुखद परिचय था। वास्तव में, दुलैग लुफ्ट में युद्धबंदियों का जीवन थोड़े समय के लिए काफी अच्छा था। वे दो से चार लोगों के कमरों में रहते थे और उनके पास पर्याप्त मात्रा में भोजन के पार्सल होते थे। इसके अलावा, हर कुछ हफ्तों में एक अच्छा भोज आयोजित किया जाता था ताकि स्थायी शिविर में जाने से पहले सभी को अपनी भूख मिटाने का मौका मिल सके। शिविर के आसपास के जंगलों में कभी-कभी पैरोल पर सैर कराई जाती थी, और कभी-कभी समूहों को चर्च सेवाओं में भाग लेने के लिए शहर जाने की अनुमति दी जाती थी।

स्थायी कर्मचारियों के लिए भी हालात अच्छे थे। कमांडेंट एक बहुत ही मिलनसार मेज़बान थे जो कर्मचारियों के लिए समय-समय पर रात्रिभोज आयोजित करते थे। दोनों पक्षों के इस आलीशान जीवन के पीछे अपने-अपने मकसद थे। जर्मनों को उम्मीद थी कि उनकी मेहमाननवाज़ी से कैदी बेखबर हो जाएँगे और कोई ऐसी जानकारी दे देंगे जो उनके काम आ सके; उन्हें यह भी उम्मीद थी कि 'नरमी से पेश आने' की रणनीति से कैदियों की आक्रामक प्रवृत्ति दब जाएगी, जो कुछ मामलों में पूरी तरह से सफल भी नहीं हुई। दूसरी ओर, स्थायी कर्मचारी जर्मनों को यह विश्वास दिलाना चाहते थे कि कैदी नरम और आज्ञाकारी बन रहे हैं; इस धारणा को बढ़ावा देते हुए, उन्होंने भागने की योजनाएँ बनाईं।

*

विंग्स डे ने बकले को एक भगोड़ा संगठन का प्रभारी बनाया, और जिमी ने स्थायी स्टाफ में नए शामिल हुए एक अधिकारी को उसका डिप्टी और खुफिया प्रमुख चुना। वह लगभग छह फीट लंबा और अच्छी कद-काठी का था, लेकिन उसकी सबसे खास बात उसकी आंखें थीं। उसकी आंखें गहरे नीले रंग की थीं और उनके चारों ओर बने काले, भारी घेरे मानो सीधे आपको भेद देती थीं; इस प्रभाव को और भी मजबूत बनाने के लिए, उसकी बाईं आंख के बाहरी कोने में एक अजीब सा झुकाव था, जो स्कीइंग दुर्घटना का परिणाम था। कुल मिलाकर, स्क्वाड्रन लीडर रोजर जॉयस बुशेल एक प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला व्यक्ति था।

युद्धपूर्व जीवन कई मायनों में एवलिन वॉ के किसी पात्र से मिलता-जुलता था। 30 अगस्त, 1910 को दक्षिण अफ्रीका के ट्रांसवाल प्रांत के स्प्रिंग्स में जन्मे रोजर, एक अंग्रेज मूल के खनन इंजीनियर के पुत्र थे, जो दक्षिण अफ्रीका में आकर बस गए थे। युवा बुशेल ने पहले जोहान्सबर्ग

और फिर इंग्लैंड में शिक्षा प्राप्त की। नवंबर 1926 में उन्होंने कैम्ब्रिज के पेम्ब्रोक कॉलेज में ऑनर्स इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए आवेदन किया; लेकिन अक्टूबर 1929 में जब उनका दाखिला हुआ, तब तक रोजर ने इसके बजाय कानूनी पेशे को चुनने का फैसला कर लिया था।

कैम्ब्रिज में बुशेल वो बन गए जिन्हें वॉ ने 'प्रतिभाशाली युवा प्रतिभाओं' में से एक बताया था। उन्होंने स्विट्जरलैंड में विश्वविद्यालय की स्की टीम के साथ प्रतिस्पर्धा की और मूर्रेन के प्रसिद्ध कंधार क्लब के सदस्य थे। स्की ढलानों पर उनका साहस प्रसिद्ध था, क्योंकि उनकी रणनीति सरल थी: स्की को ढलान की ओर करके जितनी तेज़ी से हो सके, आगे बढ़ना। जहाँ दूसरे लोग हिचकिचाते या धीमे पड़ जाते, वहीं रोजर अपनी गति और बढ़ा देते थे; उन्हें व्यापक रूप से युद्ध-पूर्व वर्षों का सबसे तेज़ ब्रिटिश स्कीयर माना जाता था, और सेंट मोरित्ज़ में फ्लाइंग किलोमीटर का गति रिकॉर्ड उनके नाम था।

1932 में बुशेल रॉयल ऑक्सिलरी एयर फोर्स की मशहूर 601 स्क्वाड्रन के सदस्य बने, जिसे 'मिलियनेयर्स स्क्वाड्रन' के नाम से जाना जाता था। इस यूनिट के सदस्य इंग्लैंड में पहले से ही काफी मशहूर थे, हालांकि उनकी प्रतिष्ठा पूरी तरह अच्छी नहीं थी। जैसा कि मैक्स ऐटकेन ने लिखा, 'वे ऐसे नौजवान थे जिन्हें अभी तक स्कूल से निकाला नहीं गया था, जिनके बारे में माताएं अपनी बेटियों को चेतावनी देती थीं - लेकिन व्यर्थ - जो पार्टियों में देर रात तक जागते थे और फिर, जब बाकी सब थकान से अधमरे हो जाते थे, तो दूसरी पार्टियों में चले जाते थे।'

स्कीयर और पायलट के रूप में अपनी ख्याति के साथ-साथ, रोजर बुशेल एक वकील के रूप में भी नाम कमा रहे थे। नवंबर 1934 में उन्होंने वकालत शुरू की और कई सनसनीखेज मामलों में शामिल रहे। एक बार उन्होंने लंदन के एक कुख्यात अंडरवर्ल्ड सरगना का सफलतापूर्वक बचाव किया, जिस पर हत्या का आरोप था। जब फैसला सुनाया गया, तो आरोपी ने बुशेल से हाथ मिलाने की कोशिश की। रोजर ने जवाब दिया, 'नहीं, धन्यवाद। मैं हत्यारों से हाथ नहीं मिलाता। मैं सिर्फ वही करता हूं जिसके लिए मुझे पैसे मिलते हैं।' उनके मुवक्किल ने बिना विचलित हुए मुस्कुराते हुए कहा, 'ठीक है - लेकिन अगर कभी इस शहर में आपको कोई परेशानी हो, तो बस मेरा नाम ले लेना और सब ठीक हो जाएगा।' यह एक ऐसा एहसान था जिसका इस्तेमाल रोजर को कभी नहीं करना पड़ा, इसके लिए वे शुक्रगुजार थे। बुशेल आरएएफ कर्मियों के कोर्ट-मार्शल में भी एक सफल वकील के रूप में जाने गए, अक्सर खतरनाक उड़ान के आरोपों में। वास्तव में, वे इतने सफल थे कि आरएएफ कमांड ने सुझाव दिया कि उन्हें आगे के मामले लेने से हतोत्साहित किया जाए क्योंकि उनकी सफलता दर का उनके जनसंपर्क पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा था।

जब युद्ध छिड़ा, तब रोजर 601 स्क्वाड्रन में फ्लाइट लेफ्टिनेंट थे, और 12 अक्टूबर, 1939 को उन्हें टैंगमेरे में ब्लेंहेम नाइट-फाइटर यूनिट, 92 स्क्वाड्रन का गठन और कमान संभालने का जिम्मा सौंपा गया। वे एक नए स्क्वाड्रन के गठन के लिए नियुक्त होने वाले पहले सहायक वायु सेना अधिकारी थे। हालांकि, तीन दिन बाद जब वे स्टेशन पहुंचे, तो उन्होंने पाया कि उनके पास कोई उपकरण नहीं था, कोई अन्य अधिकारी नहीं थे, और ग्राउंड क्रू भी बहुत कम था। फिर भी, टैंगमेरे में तैनात दूसरे स्क्वाड्रन के अधिकारियों द्वारा उनका इतना गर्मजोशी से स्वागत किया गया कि, जैसा कि 92 स्क्वाड्रन की डायरी में लिखा है, रोजर 'देर रात अपने बिस्तर पर यह महसूस करते हुए सोए कि टैंगमेरे सबसे अच्छे देश में, सबसे अच्छे युद्ध में पाया जाने वाला सबसे अच्छा स्टेशन था।'

1940 की वसंत ऋतु तक, 92 स्क्वाड्रन स्पिटफायर विमानों में परिवर्तित हो चुके थे, और 23 मई, 1940 को, बुशेल ने ब्रिटिश अभियान बल की निकासी को कवर करने के लिए दो बार अपने स्क्वाड्रन का नेतृत्व करते हुए फ्रांस के समुद्र तटों पर उड़ान भरी। दूसरी उड़ान में, बुशेल का सामना मेसेरस्मिट Me 110 दो इंजन वाले लड़ाकू विमानों से हुआ। उन्होंने एक को मार गिराया और दूसरे का बहुत कम ऊंचाई पर पीछा कर रहे थे जब तीसरे ने उन पर हमला कर दिया; दुश्मन की पहली गोलीबारी में कई निशाने लगे, और रोजर के स्पिटफायर में आग लग गई।

उन्होंने सब कुछ बंद करके आग बुझाने में कामयाबी हासिल की, और आपातकालीन लैंडिंग करने के लिए बोलोग्ने की ओर मुड़ गए। वे शहर के ठीक पूर्व में उतरे और यह मानकर कि वे मित्र क्षेत्र में हैं, क्षतिग्रस्त विमान के पास इंतजार करने लगे और सिगरेट पीने लगे। कुछ देर बाद एक मोटरसाइकिल सवार दिखाई दिया; बुशेल ने सोचा कि वह फ्रांसीसी है लेकिन वह भारी हथियारों से लैस जर्मन निकला। भागना असंभव था, और रोजर ने सम्मानपूर्वक आत्मसमर्पण कर दिया, और अन्य तरीकों से लड़ाई जारी रखने का संकल्प लिया। दुलाग लुफ्ट में बचाव समिति में उनकी नियुक्ति ने उन्हें वह अवसर प्रदान किया।

*

बकले और बुशेल को तुरंत समझ आ गया कि डुलैग लुफ्ट से भागने की योजना बनाने में दिक्कतें आएंगी। शिविर के अधिकारियों की नज़र में वे इतने अच्छे से थे कि स्थायी कर्मचारी भेस बदलकर गेट से बाहर निकलने की कोशिश नहीं कर सकते थे, और परिसर का छोटा आकार बाड़ फांदने को बेहद खतरनाक बना देता था। न ही ट्रांजिट में मौजूद किसी कैदी को इन योजनाओं के लिए भर्ती किया जा सकता था, क्योंकि डुलैग लुफ्ट में उनका रहना हमेशा अनिश्चित होता था। ऐसे व्यक्ति के लिए भागने की योजना बनाने का कोई मतलब नहीं था जिसे अगले ही दिन कहीं और भेजा जा सकता था। सबसे आसान उपाय सुरंग खोदना ही लग रहा था। स्थायी कर्मचारियों के अलग-अलग सदस्य बारी-बारी से, अलग-अलग समय पर इस पर काम कर सकते थे ताकि उनकी अनुपस्थिति का पता न चले, और इच्छुक नए लोग दूसरे शिविर में भेजे जाने से पहले कुछ शिफ्ट में खुदाई कर सकते थे। जो भी सचमुच भागने में दिलचस्पी रखता, उसे यह अनुभव अच्छा लगता।

अपने पहले प्रयास में, बकले और बुशेल ने तार की बाड़ के ठीक बाहर एक खाई के ऊपर बने छोटे से पैदल पुल की ओर एक सुरंग खोदने का फैसला किया। उनका मानना था कि सावधानीपूर्वक सर्वेक्षण करके वे पुल के नीचे सुरंग खोद सकते हैं और अलार्म बजने से पहले काफी कैदियों को बाहर निकाल सकते हैं। रोजर और माइक केसी ने कुछ अन्य कैदियों के साथ इस सुरंग पर काम शुरू किया। अगर सुरंग खुल जाती, तो वे स्विस सीमा पर स्थित शाफहाउसेन की ओर भाग जाते, यह इलाका रोजर अपने स्कीइंग के दिनों से अच्छी तरह जानता था। दुर्भाग्य से, खोदने वालों को जल्द ही पता चला कि जिस खाई को उन्होंने निशाना बनाया था, वह पानी से भरी हुई थी, जिसका अधिकांश हिस्सा उनकी सुरंग में बह गया। छह सप्ताह तक कीचड़ में खुदाई करने के बाद, उन्होंने हार मान ली। कुछ समय बाद दो और सुरंगें खोदनी शुरू की गईं, लेकिन दोनों से कोई सफलता नहीं मिली।

*

इसी बीच, एक लंबा-चौड़ा और हट्टा-कट्टा सेना का मेजर स्थायी स्टाफ में शामिल हो गया। वह उम्रदराज था, उसके बाल झड़ रहे थे और उसकी छोटी सी मूंछें थीं, और वह एक परिष्कृत अमेरिकी लहजे में बोलता था। शुरू में किसी को समझ नहीं आया कि वह लूफ़्टवाफ़े शिविर में क्या कर रहा है, लेकिन आखिरकार पूरी कहानी सामने आ गई। और कैद में, जहाँ अजीबोगरीब कहानियाँ अपवाद से ज़्यादा आम थीं, जॉन बिगेलो डॉज ने विचित्र कहानियों के लिए एक नया मानक स्थापित किया।

15 मई, 1894 को न्यूयॉर्क में जन्मे जॉन डॉज का पालन-पोषण अंतरराष्ट्रीय समाज के उच्च वर्गों में हुआ। अब्राहम लिंकन के फ्रांस में मंत्री के पोते और विवाह के माध्यम से विंस्टन चर्चिल से संबंधित, उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका के सेंट मार्क स्कूल और मॉन्ट्रियल में शिक्षा प्राप्त की। 1914 में जब युद्ध शुरू हुआ, तो उनके एक प्रभावशाली रिश्तेदार ने नौसेना में अपने

प्रभाव का इस्तेमाल किया और युवा डॉज को रॉयल नेवल डिवीजन की हुड बटालियन में कमीशन मिल गया। उन्होंने युद्ध के दौरान वीरतापूर्वक सेवा की, पहले 1914 में एंटवर्प में और फिर 1915 में गैलीपोली में, जहाँ उन्हें विशिष्ट सेवा क्रॉस से सम्मानित किया गया। 1916 में जॉनी का तबादला सेना में हो गया और वे फ्रांस गए, जहाँ वे दो बार घायल हुए। 1918 तक, वे रॉयल ससेक्स रेजिमेंट की 16वीं बटालियन की कमान संभाल रहे थे और उन्हें विशिष्ट सेवा पदक और दो प्रशस्तियाँ प्राप्त थीं।

सन् 1915 से ब्रिटिश नागरिकता प्राप्त कर चुके डॉज ने सन् 1919 में युद्ध के कारण उत्पन्न व्यापारिक भीड़भाड़ की समस्याओं की पड़ताल करने के उद्देश्य से एक यात्रा शुरू की। ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और जापान का दौरा करने के बाद, उन्होंने चीन और मंगोलिया की यात्रा की और साइबेरिया में रेलमार्ग से परे सत्रह सौ मील की दूरी घोड़े पर तय की। मॉस्को न पहुँच पाने के कारण, जॉनी पूर्व की ओर लौट आए, बैंकॉक से मांडले तक एक नया मार्ग बनाया, और फिर अफगानिस्तान और मेसोपोटामिया का दौरा करने के बाद सन् 1921 के वसंत में फारस और जॉर्जिया की यात्रा की। हालांकि, बाटूम में सोवियत गुप्त पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया और उनके बैग में मिले कृषि उपकरणों के रेखाचित्रों से संदेह पैदा होने पर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। कुछ हफ्तों बाद रिहा होने पर, उन्होंने तुरंत उस स्थान के पास एक व्यापारिक केंद्र स्थापित करने का प्रयास किया जहाँ उन्हें गिरफ्तार किया गया था। अपनी यात्राओं के दौरान जॉनी डॉज एक कट्टर पूंजीवादी बने रहे, और इस बात को वे अपने साथी कैदियों को बार-बार याद दिलाते रहते थे।

अपनी यात्रा की इच्छा पूरी करने के बाद, जॉनी ने उस तरह का जीवन अपना लिया जिसके लिए वे पले-बढ़े थे। उन्होंने 1925 से 1931 तक माइल एंड के सदस्य के रूप में लंदन काउंटी काउंसिल में सेवा की, हालांकि संसद में इस निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने के उनके प्रयास दो बार असफल रहे, और वे लंदन स्टॉक एक्सचेंज के सदस्य बन गए। उन्होंने शादी की, उनके दो बेटे हुए, और उन्होंने न्यूयॉर्क के एक बैंक के निदेशक का पदभार संभाला। वे तेजी से लंदन समाज के प्रभावशाली लोगों में से एक बन रहे थे।

एक बार फिर, डॉज की योजनाएँ युद्ध के कारण बाधित हो गईं। इस बार, उन्होंने किसी तरह मिडलसेक्स रेजिमेंट में भर्ती होने का रास्ता बना लिया और उन्हें साउथ केंसिंग्टन रेजिमेंट में शामिल कर लिया गया। वे रेजिमेंट के साथ फ्रांस गए, लेकिन वहाँ भी वे सेंट वैलेरी की भीषण लड़ाई में फँस गए। 13 जून, 1940 को, वे समुद्र तट पर टहल रहे थे और अपनी डिवीजन के विघटन के बारे में सोच रहे थे, तभी उन्होंने तट से कुछ मील दूर एक छोटा स्टीमर देखा। जल्दी से अपने जूते उतारकर, वे उसकी ओर तैरने लगे और जब वे आधे रास्ते में थे, तभी किनारे पर मौजूद जर्मन तोपखाने के सैनिकों ने भी उसे देख लिया। गोले बरसाकर, जहाज तेजी से निकल गया, और जॉनी को तैरकर वापस किनारे पर लौटना पड़ा। कुछ घंटों बाद, डनकर्क की ओर तट के किनारे चलते समय उन्हें और कई अन्य अधिकारियों को पकड़ लिया गया।

हालांकि पथरीले समुद्र तट पर नंगे पैर चलने से जॉनी के पैर बुरी तरह से कट गए थे, फिर भी उसके मन में भागने का विचार था और 28 जून को उसे अपना मौका मिल गया, जब वह और कुछ सौ अन्य कैदी एक स्टीमर पर शेल्डट नदी के मुहाने की ओर जा रहे थे। सुबह-सुबह वह जहाज के पिछले हिस्से से कूद गया और जल्द ही अपने चारों ओर छोटी नावों के जाल में खो गया। हालांकि, भागना उतना आसान नहीं था जितना उसने सोचा था, और आधे घंटे बाद उसे पानी से बाहर निकाला गया और फिर से हिरासत में ले लिया गया। डॉज को गिरफ्तार करने वाले हैरान पुलिसकर्मी को समझ नहीं आ रहा था कि उसके साथ क्या किया जाए और उसने उसे पहले दिखाई देने वाले अधिकारी के हवाले कर दिया। वह अधिकारी संयोग से लूफ़्टवाफ़े (वामपंथी सेना) का था, और जॉनी खुद को वायु सेना के हाथों में पाया। जब रम्पेल डॉज से मिला, तो उसने फैसला किया कि यह बड़ा मेजर स्थायी स्टाफ के लिए बिल्कुल वैसा ही सम्मानित और जिम्मेदार व्यक्ति है जिसकी उसे जरूरत है। डॉज के युद्धबंदी पंजीकरण कार्ड में

कुछ बदलाव करके, उसे आरएएफ (ऑस्ट्रेलियाई वायु सेना) में स्थानांतरित कर दिया गया। हालांकि उस समय रम्पेल को इसका पता नहीं था, लेकिन लूफ़्टवाफ़े में अपने कार्यकाल के दौरान जॉनी डॉज परेशानी के अलावा और किसी चीज के लिए जिम्मेदार नहीं होगा।

अध्याय दो

एस्केपिंग गेम सीखना

फ्रांस के पतन के साथ ही, जर्मनों को अचानक हजारों नए कैदियों को रखने और खिलाने की चुनौती का सामना करना पड़ा, और उनका नवगठित युद्धबंदी संगठन जल्द ही अस्त-व्यस्त हो गया। सशस्त्र बलों के उच्च कमान (ओकेडब्ल्यू) के अंतर्गत एक केंद्रीय युद्धबंदी कार्यालय ने शिविरों के संचालन में सक्रिय भूमिका निभाई, लेकिन शिविरों का प्रशासन तीनों सेनाओं द्वारा किया जाता था। स्वाभाविक रूप से, इस व्यवस्था के कारण बहुत भ्रम और कुप्रबंधन हुआ। यदि यह सब काफी जटिल नहीं था, तो सुरक्षा सेवाओं की भी युद्धबंदी मामलों में भूमिका थी, क्योंकि वे भागे हुए कैदियों को पुनः पकड़ने के लिए जिम्मेदार थे। सुरक्षा सेवा की विभिन्न शाखाओं का संचालन बर्लिन स्थित रीच मुख्य सुरक्षा कार्यालय (आरएसएचए) से किया जाता था। आरएसएचए के अंतर्गत क्रिमिनलपोलिज़ी (क्रिपो) और गेहेइमेस्टाट्सपोलिज़ी (गेस्टापो) स्थित थे। पहले पक्ष की आधिकारिक जिम्मेदारी भागे हुए युद्धबंदियों की खोज और उन्हें पुनः पकड़ने की थी, जबकि दूसरे पक्ष की जिम्मेदारी, अन्य बातों के अलावा, 'राज्य के शत्रुओं' को गिरफ्तार करने की थी। पुलिस द्वारा भागे हुए कैदियों को पुनः पकड़ने के बाद, उन्हें तब तक हिरासत में रखा जाता था जब तक कि उन्हें सेना को वापस नहीं सौंप दिया जाता था; जेनेवा कन्वेंशन के अनुसार, भागे हुए कैदियों को दी जाने वाली कोई भी सजा सैन्य अधिकारियों द्वारा दी जाती थी।

*

बेशक, ये छोटी-मोटी बातें स्थायी स्टाफ की चिंताओं में सबसे कम थीं। 1940 के पतझड़ और सर्दियों के दौरान, लगातार नए लड़ाकू विमानों का आना-जाना लगा रहा, जिन्हें तैयार करके रवाना करना था। ब्रिटेन की लड़ाई को छोड़कर, पिछले कुछ महीने आरएएफ के लिए अच्छे नहीं रहे थे। फ्रांस की लड़ाई के दौरान बॉम्बर कमांड को भारी नुकसान हुआ था और बमबारी अभियान की समस्याओं को सुलझाने की कोशिश में अगले महीनों में भी उसे भारी क्षति झेलनी पड़ी। आरएएफ ने उन महीनों में कई अनुभवी क्रू खो दिए, और डुलैग लुफ्ट में पहुंचे कैदी युद्ध के शुरुआती वर्षों में आरएएफ की ताकत के मुख्य आधार का प्रतिनिधित्व करते थे।

इनमें फ्लाइट लेफ्टिनेंट पॉल गॉर्डन रॉयल थे, जो एक ऑस्ट्रेलियाई थे और मार्च 1939 में अल्प सेवा कमीशन पर आरएएफ में शामिल हुए थे। उन्होंने 53 स्क्वाड्रन के साथ उड़ान भरी और 19 मई, 1940 को कैंब्रई के दक्षिण में अपने ब्लेंहेम विमान की आपातकालीन लैंडिंग की। एक अन्य विशिष्ट पायलट थे फ्लाइट लेफ्टिनेंट रिचर्ड सिडनी एल्बियन चर्चिल, जो बीस वर्षीय पायलट थे और अगस्त 1938 में भर्ती हुए थे। 2-3 सितंबर, 1940 की रात को, डिक अपने 144 स्क्वाड्रन के हैम्पडेन विमान को लुडविग्सहाफेन में एक तेल संयंत्र पर हमला करने के लिए ले गए, लेकिन लक्ष्य तक पहुंचने से पहले ही उन पर एक रात्रि लड़ाकू विमान ने हमला कर दिया। विमान में आग लग जाने के कारण चालक दल पैराशूट से कूद गया, लेकिन केवल डिक और उनके नेविगेटर ही जीवित बचे। इनमें पायलट ऑफिसर बर्ट्राम आर्थर 'जिमी' जेम्स भी थे, जो पच्चीस वर्षीय 9 स्क्वाड्रन के वेलिंगटन ट्विन-इंजन बॉम्बर के दूसरे पायलट थे। जेम्स 1939 में आरएएफ में शामिल हुए और 5 जून, 1940 को रॉटरडैम के दक्षिण में उन्हें मार गिराया गया। लैंडिंग के दौरान उनके टखने में मोच आ गई और जब वे कुछ खाना लेने के लिए एक फार्महाउस

गए तो उन्हें पकड़ लिया गया।

रॉयल, चर्चिल और जेम्स जैसे दर्जनों अन्य लोग 1940 के उत्तरार्ध में जर्मन सेना के हाथों पकड़े गए। वे साम्राज्य के हर कोने से आए थे और युद्ध-पूर्व वायु सेना की रीढ़ थे। अब वे आरएएफ एस्केप क्लब की रीढ़ बनने वाले थे। हालाँकि, इन नए कैदियों के लिए एक बदलाव था। उन्हें स्पैंगेनबर्ग भेजने के बजाय, लूफ़्टवाफ़े ने अपने कैदियों को एक नए शिविर, स्टालैग लुफ़्ट I में केंद्रित करने का फैसला किया था, जो बाल्टिक तट पर बार्थ शहर के पास एक नीरस और निराशाजनक सुविधा थी।

यह शिविर एक ऐसी संरचना से बना था जो युद्धबंदियों के लिए धीरे-धीरे परिचित हो जाती थी: बंजर परिसर में लकड़ी की नीची झोपड़ियाँ; परिधि के चारों ओर मोटी कंटीली तारें; प्रत्येक कोने पर पहरेदारी मीनारें; और परिसर के ठीक अंदर एक गहरी खाई और तार की एक पतली पट्टी जो कैदियों के घूमने-फिरने के लिए बाहरी सीमा को चिह्नित करती थी। पास के एक छोटे परिसर, जिसे वोरलागर कहा जाता था, में एक ही इमारत में एकांत कारावास कक्ष (जिसे कूलर के नाम से जाना जाता था), बीमार कक्ष और पहरेदार घर थे; एक सटे हुए परिसर में गैर-कमीशन अधिकारियों के लिए छह झोपड़ियाँ थीं। अधिकारियों के परिसर से बाहर निकलने के लिए एक ही द्वार था, जिसका क्षेत्रफल लगभग एक सौ गज लंबा और सत्तर गज चौड़ा था।

लुफ़्ट I की स्थिति ही वास्तव में इसे निराशाजनक बनाती थी। बाल्टिक सागर के पास एक रेतीले टीले पर स्थित, शिविर हवादार और सुनसान था, जो केवल एक तरफ उदास चीड़ के पेड़ों के झुरमुट से घिरा हुआ था। हवा लगातार चलती रहती थी, और झोपड़ियों में रेत आने से रोकना मुश्किल था। यह एक उदास और अप्रिय शिविर था, और केवल वायुसैनिकों के मनोबल ने ही इसे सहनीय बना रखा था। हमेशा की तरह, उन्होंने अपनी सारी ऊर्जा यहाँ से निकलने का रास्ता खोजने में लगा दी।

*

अगस्त 1940 की शुरुआत में एक रात, बार्थ में पहला संगठित बचाव सम्मेलन लेफ्टिनेंट पीटर एवलिन फैंशॉ के नेतृत्व में आयोजित किया गया था, जिन्हें आमतौर पर 'हॉर्नब्लोवर' के नाम से जाना जाता था। फैंशॉ ने 1925 में तेरह वर्ष की आयु में डार्टमाउथ के रॉयल नेवल कॉलेज में प्रवेश किया था और 1940 तक वे विमानवाहक पोत आर्क रॉयल पर 803 स्क्वाड्रन के साथ थे। नॉर्वे में शार्नहोर्स्ट पर हमला करते समय जब उनका विमान दुर्घटनाग्रस्त हुआ, तब वे जॉन कैसन के नेविगेटर थे।

फैंशॉ और अन्य कैदियों ने तय किया कि सुरंग खोदना ही आगे बढ़ने का सबसे अच्छा तरीका है। सेंटर ब्लॉक के उत्तरी छोर पर स्थित एक कमरे के फर्श में पहले से ही एक गड्ढा खोदा गया था, और थोड़ी सी छानबीन से पता चला कि फर्श के नीचे मिट्टी बिखेरने के लिए काफी जगह है, साथ ही यह भी फायदा था कि झोपड़ी की दीवारों को लकड़ी के तख्तों से ढक दिया गया था ताकि कोई ताक-झांक न कर सके। इस उत्साहवर्धक जानकारी के आधार पर उन्होंने लगभग चार फीट नीचे तक खोदने और फिर जंगल की ओर बढ़ने का फैसला किया। अनुमान था कि सुरंग कम से कम 150 फीट लंबी होगी।

चूंकि पहरेदार भागने की कोशिशों को रोकने में उतने ही नए थे जितने कि कैदी, इसलिए सुरक्षा कोई समस्या नहीं थी; बस झोपड़ी के दरवाजे पर एक आदमी का खड़ा होना ही काफी था। वह मुख्य द्वार और उसके आगे तक देख सकता था और दुश्मन दलों के आने की आहट में काफी समय रहते जाल बंद करने की चेतावनी दे सकता था। एक मजदूर के शब्दों में, यह सुरंग 'अनाड़ी और बेहद खतरनाक' थी और नवंबर में जब इसका पता चला तब तक यह तारबंदी तक पहुंच चुकी थी, इसके बावजूद सुरंग का काम अच्छी तरह से आगे बढ़ा।

यह दोनों पक्षों के लिए एक सबक था और सुरंग के विस्फोट के बाद अधिकारियों को तीन

सप्ताह के लिए वोरलागर में निर्वासित किए जाने के दौरान शिविर की सुरक्षा में काफी बदलाव किए गए। झोपड़ियों के किनारों से झालरदार तख्तियां हटा दी गईं और नीले-भूरे रंग के ओवरऑल पहने नए लूफ़्टवाफ़े गार्ड परिसर में तैनात किए गए। वे सुरंगों की खोज के लिए जमीन में खोदने के लिए पतली धातु की छड़ें रखते थे और अंततः उन्हें 'फेरेट' नाम दिया गया।

बाड़ के दूसरी ओर, जर्मन सैनिक पहले से कहीं ज़्यादा बेताब थे और भागने की कोशिश कर रहे थे। अक्टूबर में छह लोगों की एक छोटी सुरंग खोदने का काम शुरू हुआ (लेकिन नाकाम रहा)। वोरलागर में थोड़े समय के लिए रहने के दौरान, मज़दूरों ने छत की मिट्टी को बिखेरते हुए एक और सुरंग खोदनी शुरू की। कुछ ही कदम आगे बढ़ने पर जर्मनों ने उन सभी को वापस मुख्य परिसर में भेज दिया। एक हफ़्ते बाद, दो और लोग गैर-कमीशन अधिकारियों के एक दल में छिपकर घुस गए, लेकिन ज़्यादा दूर नहीं जा पाए। सितंबर में तीन जर्मन सैनिकों ने तार काटकर अपना रास्ता बनाया। एक तीन दिन तक आज़ाद रहा, लेकिन बाकी लोग तार छुड़ाने की कोशिश में पकड़े गए। एक और साथी ने लूफ़्टवाफ़े के काम करने वाले ओवरऑल जैसे कपड़े बनाकर थोड़े समय के लिए आज़ादी हासिल की, और दो और लोग कुछ हफ़्ते बाद जर्मन मज़दूर बनकर गेट से बाहर निकल गए। इनमें से कोई भी कोशिश कामयाब नहीं हुई, लेकिन ये सभी उनके लिए सीखने का अनुभव साबित हुईं।

*

दुलैग लुफ़्ट में, जैसे-जैसे आरएएफ ने कब्ज़े वाले यूरोप में लक्ष्यों पर अपने हमले तेज़ किए, नए योद्धा आते रहे। एक नया योद्धा मध्यम कद का दुबला-पतला, बड़े कानों वाला और पतले चेहरे वाला था। उसने कमरे में मौजूद योद्धाओं का चौड़ी मुस्कान और हंसमुख नमस्कार के साथ अभिवादन किया और फिर मेज के पास से गुज़रते हुए कोने में एक खाली चारपाई पर अपना सामान फेंक दिया। उसने पास के योद्धा की ओर हाथ बढ़ाया।

'मेरा नाम ब्रायन इवांस है,' उसने धीमी आवाज़ में कहा। 'मैं कार्डिफ़ से हूँ।' बाकी कैदी भी आगे आए और उन्होंने उससे हाथ मिलाकर या पीठ थपथपाकर उसका अभिवादन किया, और जल्द ही उन्हें उसके बारे में और जानने का मौका मिल गया।

ब्रायन हर्बर्ट इवांस का जन्म 14 फरवरी, 1920 को डेवोन के शाल्डन में हुआ था। वे क्लैन लाइन स्टीमर्स के एक कुशल नाविक कैप्टन हर्बर्ट इवांस और उनकी ऑस्ट्रेलियाई मूल की पत्नी डोरोथी के बड़े बेटे थे। इवांस परिवार के दूसरे बेटे नोएल के जन्म के बाद, परिवार बर्केनहेड के पास अप्टन में बस गया, जो ब्रिटिश द्वीपों को छोड़ने से पहले क्लैन लाइन जहाजों का आखिरी लोडिंग बंदरगाह था। बंदरगाह शहर के पास का जीवन लड़कों के लिए बेहद सुखद था। हर तीन-चार महीने में, जब श्री इवांस का जहाज आता था, तो पूरा परिवार उनका स्वागत करने के लिए बंदरगाह पर इकट्ठा होता था। जैसे-जैसे वे बड़े होते गए, उन्हें कभी-कभी डेक पर रस्सी की सीढ़ी चढ़ने की अनुमति भी मिल जाती थी। फिर, एक हफ्ते बाद, चारों श्री इवांस को विदा करने के लिए उसी तरह बंदरगाह पर जाते थे, हालांकि वह अवसर उतना खुशी भरा नहीं होता था।

1933 में एलन कोभम का हवाई सर्कस इवांस के घर के पास एक छोटे से मैदान में आया, और ब्रायन के मन में एक नया जुनून पैदा हो गया: उड़ान भरना। उस दिन से, वह जितना संभव हो सके स्थानीय फ्लाइंग क्लबों में समय बिताने लगे, और बाद में किंग्स कप एयर रेस का समापन देखने में सफल रहे। लगभग इसी समय ब्रायन की मुलाकात संडे स्कूल में जोन कुक से हुई। वह उनसे तीन साल छोटी थीं, लेकिन दोनों जल्दी ही पक्की दोस्त बन गईं और अक्सर दोस्तों के साथ टेनिस खेलने या तैरने के लिए मिलती थीं।

1935 की गर्मियों में, इवांस परिवार कार्डिफ़ में बस गया। ब्रायन के पिता को दो साल पहले जहाज़ का कप्तान बनाया गया था, और उन्हें माल उतारने और चढ़ाने के दौरान अपनी पत्नी को साथ ले जाने का विशेषाधिकार प्राप्त था। कार्डिफ़ बंदरगाहों के लिहाज़ से एक आदर्श केंद्रीय

स्थान था। परिवार एक बड़े घर में रहने लगा, और लड़के जल्दी ही अपने नए माहौल में ढल गए।

ब्रायन के मन में नागरिक उड्डयन में करियर बनाने की प्रबल इच्छा थी, लेकिन उन्हें एहसास हुआ कि इसमें लगने वाला खर्च बहुत अधिक है, इसलिए फिलहाल उन्हें स्थानीय फ्लाइंग क्लब में जाकर विमानों की उड़ान देखने से ही संतोष करना पड़ा। जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि इस सपने को साकार करने का एकमात्र तरीका वाणिज्यिक विमानन में प्रवेश के लिए एक सीढ़ी के रूप में आरएएफ में शामिल होना था।

हालांकि, गणित की अनिवार्य परीक्षा में कठिनाई के कारण उन्हें काफी परेशानी हुई। एक आक्रामक व्यक्ति शायद परीक्षा के डर पर काबू पाने के लिए काफी आक्रामक हो जाता, लेकिन ब्रायन स्वभाव से बहुत सौम्य और विनम्र थे। कुछ समय के लिए वे निराश हुए; फिर उनकी शांत हास्य भावना ने उन्हें प्रेरित किया और उन्होंने इस बुरी स्थिति में भी सकारात्मकता लाने का रास्ता खोज निकाला। 1938 में हाई स्कूल की पढ़ाई पूरी करने के बाद, वे लिवरपूल चले गए और एक किराना थोक व्यापार में प्रशिक्षु बन गए और अप्टन में बस गए। उन्होंने जोन कुक से अपनी दोस्ती फिर से मजबूत की और लिवरपूल में थोड़े समय के दौरान ही जोन और उनके परिवार के बहुत करीब हो गए। जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि किराना व्यापार में भविष्य की संभावनाएं सीमित हैं, इसलिए ब्रायन कार्डिफ लौट आए, जहां उन्हें सौभाग्य से नीलामीकर्ताओं, सर्वेक्षकों और रियल एस्टेट एजेंटों की एक फर्म में प्रशिक्षु के रूप में काम करने का अवसर मिला। साथ ही, उन्होंने पत्राचार पाठ्यक्रमों के माध्यम से गणित में अपना संघर्ष जारी रखा।

आरएएफ में भर्ती होने के उनके प्रयास भले ही विफल रहे हों, लेकिन उड़ान भरने का उनका जुनून कम नहीं हुआ और उन्होंने पायलट लाइसेंस प्राप्त करने के लिए कार्डिफ़ एयरो क्लब में दाखिला लिया। उन्होंने अंशकालिक पढ़ाई जारी रखी और अंततः गणित में रियल एस्टेट एजेंट की परीक्षा उत्तीर्ण की, जिसे आरएएफ ने भर्ती के लिए आवश्यक परीक्षा के समकक्ष माना। अंतिम बाधा पार करने के बाद, ब्रायन अब सेना में शामिल हो सकते थे। उन्हें 8 अगस्त, 1939 से अल्पकालिक कमीशन दिया गया और उन्हें गैटविक स्थित सिविल फ्लाइंग स्कूल में तैनात किया गया।

आखिरकार अपना लक्ष्य हासिल करने के बाद, ब्रायन ने खुद को अपने प्रशिक्षण में झोंक दिया। अप्रैल 1940 तक वह कॉटेसमोर में 14 ऑपरेशनल ट्रेनिंग यूनिट (ओटीयू) में शामिल हो गए थे। उनकी पहली उड़ानें, जिन्हें वह 'किपर पेट्रोल' कहते थे, दो इंजन वाले एवरो एंसन विमानों में जहाज-रोधी टोही उड़ानें थीं। ब्रायन इन प्रशिक्षण अभियानों में खूब आनंद लेते थे, और यह स्पष्ट था कि उड़ान भरना उनके सपनों को साकार करने जैसा ही था। उन्होंने लिखा, 'मैंने अपने जीवन के सबसे सुखद दिन उन एंसन विमानों के साथ बिताए।' उन्होंने हैम्पडेन विमानों पर दूसरे पायलट के रूप में कुछ ऑपरेशनल उड़ानें भी भरीं ('शानदार पद... ऑपरेशनल उड़ानों में केवल नेविगेशन करना') और जल्द ही उस भारी-भरकम बमवर्षक विमान के प्रति सम्मान अर्जित कर लिया। उन्होंने लिखा, 'हैम्पडेन हवा में उड़ते ही जादुई मशीनें बन जाते हैं; उनका टेकऑफ रॉकेट की तरह होता है।' सितंबर 1940 तक ब्रायन ने अभ्यास उड़ानों में कप्तान के रूप में कुछ घंटे पूरे कर लिए थे, लेकिन ऑपरेशनल स्क्वाड्रन में पहले पायलट के रूप में तैनात होने से पहले उन्हें रात्रि अभियानों में दूसरे पायलट के रूप में चालीस घंटे पूरे करने थे। यह असाइनमेंट ब्रायन के दिमाग में सबसे ऊपर था ('तो चालीस घंटे बीत जाएं, नहीं तो यहीं रहो, जो मैं नहीं करना चाहता!'), और 30 सितंबर को उन्हें स्कैम्पटन में एक ऑपरेशनल यूनिट, 49 स्क्वाड्रन में भेजा गया।

ऑपरेशन के दौरान, ब्रायन को कभी-कभार सप्ताहांत की छुट्टी पर घर आने का मौका मिल जाता था, और वह अपने परिवार को हैम्पडेन बॉम्बर के किस्से सुनाता था। वह लंबी उड़ानों की असुविधा के बारे में बताता था, जिसके बाद कुछ क्रू सदस्यों को विमान से बाहर निकालना पड़ता था, और पैराशूट जंपिंग के प्रति अपनी नापसंदगी का जिक्र करता था; उसने नोएल से कहा कि वह पैराशूट से कूदने की बजाय क्रैश लैंडिंग का जोखिम उठाना ज्यादा पसंद करेगा। ब्रायन को

जल्द ही अपनी इस पसंद को आजमाने का मौका मिल गया। 16 अक्टूबर, 1940 को, बोर्डो हार्बर के ऊपर उसके हैम्पडेन विमान पर भारी गोलीबारी हुई, जिससे बम-बे के दरवाजे जाम हो गए। क्रू ने मैकेनिज्म को ठीक करने की कोशिश की, लेकिन ईंधन कम होने के कारण, ब्रायन ने घर लौटने का फैसला किया। उसने देखा कि इंग्लैंड का दक्षिणी तट कोहरे से ढका हुआ है और क्षतिग्रस्त हैम्पडेन को उतारने के लिए कोई हवाई अड्डा न मिलने पर, अंततः उसे आपातकालीन लैंडिंग करनी पड़ी। विमान बुरी तरह से नीचे उतरा, पीछे वाला गनर दूर जा गिरा और नेविगेटर के दोनों पैर टूट गए, और जैसे ही ब्रायन कॉकपिट से बाहर निकला, विमान के अंदर आग लग गई, जिससे रेडियो ऑपरेटर फंस गया। आधी दृष्टिहीन और गंभीर रूप से घायल इवांस, सार्जेंट को बचाने के लिए विमान की ओर लड़खड़ाते हुए वापस गए, लेकिन आग की लपटों ने उन्हें पीछे धकेल दिया। खेत में गिरकर, उन्होंने खून से लथपथ आँखों से अपने साथी को जलकर मरते हुए देखा।

ब्रायन को खुद भी गंभीर चोटें आई थीं, और नवंबर के अंत तक उन्हें ऑपरेशन से दूर रखा गया। दुर्घटना के बाद उनका पहला मिशन भी एक आपातकालीन लैंडिंग के साथ समाप्त हुआ, इस बार क्राइस्टचर्च में। 6 दिसंबर, 1940 को उनकी किस्मत बद से बदतर हो गई। फ्रांस में जर्मन हवाई अड्डों पर हमले के लिए एक अनुभवी दल के साथ दूसरे पायलट के रूप में उड़ान भरते समय, ब्रायन का विमान पेरिस के ऊपर एक बर्फीले तूफान में फंस गया। डीआइसिंग गियर फेल हो गया, दोनों इंजन जाम हो गए, और पायलट को कौरविले के पास एक खेत में हैम्पडेन विमान की आपातकालीन लैंडिंग करनी पड़ी। केवल रेडियो ऑपरेटर ही सुरक्षित था, और वह सहायता मांगने के लिए पास के एक खेत में गया। किसान ने दल को आश्रय देने के लिए सहमति जताई, लेकिन पुलिस को बुलाने के लिए एक अस्तबल के लड़के को भेजा; पुलिस ठीक उसी समय पहुंची जब चारों पायलट खलिहान में सोने की तैयारी कर रहे थे।

*

ब्रायन द्वारा अपनी आखिरी उड़ान की कहानी सुनाने के बाद, कुछ सैनिक अपने-अपने बिस्तरों पर लौट गए, और कुछ अन्य ठंड में बाहर निकलकर परिसर के चारों ओर चक्कर लगाने लगे। ब्रायन अपने बिस्तर पर लौट आया और अपना सामान व्यवस्थित करने के बाद परिचित चेहरों की तलाश में गलियारे की ओर चल पड़ा। जब तक उसने पूरे शिविर में लोगों को ढूंढा, तब तक उसे खबर मिली कि उसे बार्थ जाने वाले अगले समूह में शामिल होना है।

16 फरवरी, 1941 को, कैदियों का दल अपनी यात्रा शुरू करने के लिए स्टेशन की ओर चल पड़ा। वे एक स्थायी शिविर में जाने को लेकर खुश थे और जैसे ही ट्रेन फ्रैंकफर्ट स्टेशन से रवाना हुई, माहौल में उमंग मच गई। रेलगाड़ी के एक कोने में, कुछ कैदी ताश खेल रहे थे। एक गार्ड ने उन्हें कुछ देर तक देखा, लेकिन खेल इतना समझ से परे था कि वह सिर हिलाते हुए डिब्बे के दूसरे छोर पर चला गया। अपनी संवेदनशील आँखों को धूप से बचाने के लिए पहने हुए काले चश्मे के पीछे से, ब्रायन इवांस गार्ड की हरकतों को देखता रहा और कुछ मिनटों बाद, सामने बैठे नौसैनिक एयरमैन फिलमर को हल्का सा इशारा किया। उन्होंने अपने बगल में खड़े अधिकारी, फ्लाइट लेफ्टिनेंट हेनरी कुथबर्ट मार्शल, जिन्हें आमतौर पर जॉनी के नाम से जाना जाता था, को कोहनी मारी। जॉनी, 3 फोटो-रिकॉनेंस यूनिट (पीआरयू) के पायलट थे, जो 12 जनवरी, 1941 को लावल के ऊपर अपने स्पिटफायर विमान से पैराशूट से कूद गए थे। जॉनी मार्शल अन्य अधिकांश सैनिकों से उम्र में बड़े थे और आरएएफ में अपनी सेवा के सत्रहवें वर्ष में प्रवेश कर चुके थे। वे सांवले और आकर्षक थे, उनके बाल थोड़े कम हो रहे थे और उनके दांत एकदम सफेद थे।

गार्ड की नज़र से देखने पर, कैदी अभी भी ताश का एक हानिरहित खेल खेल रहे थे, लेकिन वास्तव में, जॉनी मार्शल धीरे-धीरे खिड़की से कीलें निकाल रहा था। वह इसके लिए धातु के एक चपटे टुकड़े का इस्तेमाल कर रहा था, जिसे समूह के चौथे सदस्य, बेन एवर्टन-जोन्स ने डुलैग

लुफ्ट से तस्करी करके बाहर निकाला था। काम धीमा था, लेकिन अंधेरा होते-होते मार्शल ने आखिरी कील भी निकाल दी। ताश का खेल धीरे-धीरे समाप्त हुआ, और कैदी धुंधलेपन में ऊंघने लगे। कार में सन्नाटा पसरा हुआ था, और ब्रायन ने देखा कि गार्ड ने इस शांति का फायदा उठाकर शौचालय जाने का फैसला किया है।

ठीक उसी क्षण, जब ट्रेन एक छोटी पहाड़ी की चोटी के पास पहुँची, भागने वालों ने अपना दांव खेला। पहले तीन लोग बिना किसी परेशानी के खिड़की से बाहर निकल गए, लेकिन तभी ट्रेन की रफ्तार फिर से बढ़ने लगी। जैसे-जैसे गति बढ़ी, चौथा व्यक्ति, ब्रायन इवांस, आखिरकार खिड़की से बाहर कूदने में कामयाब हो गया, लेकिन उतरते समय उसका पैर एक सिग्नल पोस्ट से टकरा गया। यह वही पैर था जो दुर्घटना में घायल हुआ था, और बड़ी मुश्किल से वह दर्द से कराहते हुए उस झाड़ी की ओर लंगड़ाते हुए बढ़ा जिसके पीछे बाकी लोग छिपे हुए थे। सौभाग्य से, कोई अलार्म नहीं बजा, और चारों को बर्लिन की ओर रेल पटरी पर चलने से पहले कुछ मिनटों के लिए सोचने का मौका मिल गया।

कुछ घंटों की पैदल यात्रा के बाद, यह स्पष्ट हो गया कि ब्रायन के लंगड़ाने के कारण समूह की गति धीमी हो रही थी, इसलिए चारों ने अलग होने का फैसला किया। फिलमर और इवांस को एहसास हुआ कि ब्रायन के लंगड़ाने से लोगों का ध्यान आकर्षित होगा, इसलिए उन्होंने रेल लाइन छोड़कर एक कम ध्यान खींचने वाला रास्ता खोजने का निर्णय लिया। उनका यह चुनाव गलत साबित हुआ और एक घंटे के भीतर ही उन्हें पकड़ लिया गया। हालांकि, मार्शल और एवर्टन-जोन्स की किस्मत बेहतर थी और वे गुजरती हुई मालगाड़ियों में लिफ्ट लेने में सफल रहे। कुछ ही दिनों में वे बर्लिन के उत्तरी बाहरी इलाके में पहुँच गए और पश्चिम की ओर चलना शुरू कर दिया। दो दिन बाद, भूखे और थके-हारे, उन्हें एक पुलिस गश्ती दल ने रोक लिया और गिरफ्तार कर लिया। जब वे आखिरकार बार्थ पहुँचे, तो उन्होंने पाया कि इवांस और फिलमर उनसे पहले ही वहाँ पहुँच चुके थे।

उन्होंने यह भी पाया कि लगभग उसी समय दो अन्य सैनिक उसी ट्रेन से भाग निकले थे। न्यूजीलैंड के एक शॉर्ट सर्विस कमीशन अधिकारी एच.डी. 'टिम' न्यूमैन और एक ऑस्ट्रेलियाई अधिकारी ट्रेन के दूसरे छोर की खिड़की से निकल गए थे। अपनी यात्रा के दूसरे दिन वे पासेवॉक पहुंचे, लेकिन शहर के चारों ओर जाने की कोशिश करते समय उन्हें दोबारा पकड़ लिया गया।

जब वे बार्थ पहुँचे, तो पकड़े गए इन भगोड़ों ने कई योजनाएँ बनते हुए पाईं। जिमी जेम्स और इयान 'मक्कल' मुइर नाम का एक स्कॉटिश व्यक्ति ईस्ट ब्लॉक से एक सुरंग पर काम कर रहे थे, जो कुछ हफ्तों तक चली। जब इसका पता चल गया, तो सारा ध्यान नए बने वेस्ट ब्लॉक में एक सुरंग खोदने पर केंद्रित हो गया। जून 1941 में, एक बैरक के कमरे के कोने में फर्श के नीचे लगभग पाँच फीट की गहराई तक सुरंग खोदी गई। मिट्टी इतनी मजबूत थी कि सहारा देने की ज़रूरत नहीं पड़ी, और वहाँ एक कच्चा वेंटिलेशन सिस्टम था जिसमें हवा की लाइनें वॉलपेपर से बनाई गई थीं, जिसे पानी और ईंटों से खुरची गई मिट्टी के मिश्रण से कड़ा किया गया था। जैसे-जैसे सुरंग अपनी तय 100 फीट की लंबाई की ओर बढ़ती गई, वैसे-वैसे अन्य भगोड़े भी भागने की कोशिश कर रहे थे। मई में एक प्रयास में, हैरी बर्टन नाम के एक कैदी ने अपनी कोठरी की खिड़की की सलाखें खोल दीं और गेट के नीचे से सुरंग खोदकर आज़ादी हासिल कर ली। महीने के आखिरी दिन वह स्वीडन पहुँच गया, जो युद्ध का पहला सफल आरएएफ भगोड़ा था।

20 अगस्त, 1941 को वेस्ट ब्लॉक सुरंग आखिरकार खुलने के लिए तैयार थी और जिमी जेम्स, मकल मुइर और टिम न्यूमैन सहित लगभग तीस मजदूर बाहर निकलने की तैयारी में जुट गए। पहले पांच लोग सुरंग में रेंगते हुए घुसे और पाया कि पूरे बचाव उपकरण के साथ आगे बढ़ना बहुत मुश्किल था। इसके अलावा, बाहर निकलने की कोशिश में उन्होंने इतना शोर मचाया कि एक गार्ड सतर्क हो गया और कई गोलियां चलाई गईं। इस अफरा-तफरी में केवल टिम न्यूमैन और दो अन्य ही बच पाए। एक और व्यक्ति सुरंग में फंस गया और गार्डों ने उसे खींचकर बाहर निकाला। बाकी लोग वेस्ट ब्लॉक की अपेक्षाकृत सुरक्षित जगह पर वापस पहुँचने में कामयाब

रहे। न्यूमैन तीन दिन बाद पकड़ा गया, लेकिन बाकी दो की किस्मत बेहतर थी। दोनों रॉस्टॉक के बंदरगाह पर पहुँचने में कामयाब रहे, जहाँ पहले व्यक्ति को एक स्वीडिश जहाज पर चढ़ने की कोशिश करते हुए पकड़ा गया। दूसरा जहाज पर चढ़ने में कामयाब रहा और एक कोयले के डिब्बे में छिप गया, और स्वीडन पहुँचने तक वहीं रहने की योजना बनाई। दुर्भाग्य से, वह अपनी मेहनत से इतना थक गया था कि उसे नींद आ गई और उसके खर्राटों ने चालक दल को सतर्क कर दिया। अनिच्छा से, उन्होंने थके-हारे भगोड़े को समझाया कि अगर उन्हें जर्मनी से किसी भगोड़े को तस्करी करके बाहर निकालने की कोशिश करते हुए पकड़ा गया तो इसके क्या परिणाम होंगे और कहा कि उन्हें उसे जर्मनों के हवाले करना होगा।

इस योजना की तुलनात्मक विफलता के बाद, जल्द ही एक और योजना पर काम शुरू हो गया। जॉन 'डेथ' शोर और जिमी जेम्स ने परिधि तार के पास स्थित एक छोटे ईंट के भस्मक पर अपनी नज़रें जमा लीं। उनका मानना था कि अगर भस्मक के नीचे एक जाल बिछा दिया जाए, तो तार के बाहर खेल के मैदान तक केवल पच्चीस फीट की खुदाई करनी होगी। दोनों ने जल्द ही डिक चर्चिल, पॉल रॉयल और लॉरेंस रीवेल-कार्टर सहित ध्यान भटकाने वालों के एक गिरोह के साथ काम शुरू कर दिया। रीवेल-कार्टर एक पूर्व ब्रिटिश ओलंपियन और एक हैम्पडेन विमान पर एयर गनर थे, जिसे जून 1940 में एक बारूदी सुरंग बिछाने के मिशन के दौरान मार गिराया गया था। इस योजना में शामिल होने वाला एक और व्यक्ति जॉन शोर का दूसरा पायलट, जेम्स लेस्ली रॉबर्ट लॉन्ग था, जो एक हट्टा-कट्टा और हंसमुख व्यक्ति था और जिसे अवैध शराब बनाने में उसकी कुशलता के कारण 'कुकी' उपनाम मिला था। लॉन्ग, एक लंबा-चौड़ा, दाढ़ी वाला व्यक्ति था जो जिमी जेम्स के कमरे में रहता था। वह मजबूत और भरोसेमंद था और भागने के काम में शामिल होने के लिए बहुत उत्सुक था।

लेस लॉन्ग का जन्म 21 फरवरी, 1915 को इंग्लैंड के दक्षिणी तट पर स्थित बॉर्नमाउथ में हुआ था। वे एक मिलनसार, मजबूत कद-काठी वाले, भरे हुए चेहरे, सांवले रंग और सीधे काले बालों वाले लड़के थे। उन्होंने समरसेट में शिक्षा प्राप्त की; जब उनके पिता सेसिल ने वहां एक बड़ी किराने की दुकान खरीदी, तो उनका परिवार टॉनटन में बस गया। लेस ने स्कूल में अच्छा प्रदर्शन किया और ग्यारह वर्ष की आयु में उन्हें एक निजी स्कूल में छात्रवृत्ति मिल गई। वे हमेशा शैक्षणिक रूप से शीर्ष छह छात्रों में शामिल रहते थे और खेल के मैदान में भी उन्होंने अपना नाम कमाया।

इस समय तक सेसिल लॉन्ग ने टॉनटन में दुकानों का एक ब्लॉक खरीद लिया था, और परिवार समृद्ध लॉन्ग्स ग्रोसर्स के ऊपर एक बहुत बड़े अपार्टमेंट में रहने लगा था। सेसिल लॉन्ग स्थानीय समाज में ऑक्टागन चैपल के सचिव के रूप में भी उतने ही प्रसिद्ध थे, जो प्लायमाउथ ब्रेथ्रेन का एक घनिष्ठ समुदाय था जहाँ चार्ल्स वेस्ली ने कभी उपदेश दिया था। लेस लॉन्ग भी चैपल समुदाय के एक सक्रिय सदस्य थे, और चर्च के माध्यम से ही उनकी मुलाकात डोरोथी ब्रूम नाम की एक युवती से हुई। उन दिनों प्रेम-प्रसंग मुश्किल थे, खासकर प्लायमाउथ ब्रेथ्रेन की सख्ती के कारण, और लेस और डोरोथी को फिल्म देखने के लिए भी पास के शहर जाना पड़ता था, जिसे चर्च के वरिष्ठ सदस्य पसंद नहीं करते थे। फिर भी, दोनों ने किसी तरह अपना रिश्ता बनाए रखा। दिसंबर 1939 तक उनकी सगाई हो गई।

स्कूल में पढ़ते समय, लेस ने ऑक्सफोर्ड प्रवेश परीक्षा सम्मान के साथ उत्तीर्ण की, लेकिन उस समय विश्वविद्यालय की शिक्षा बहुत महंगी थी, इसलिए उन्होंने इंस्पेक्टर के रूप में प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए जनरल एक्सीडेंट इंश्योरेंस कंपनी में प्रशिक्षु के रूप में काम करना शुरू कर दिया। लेस को एक छोटा सा वजीफा मिलता था और उनसे पत्राचार पाठ्यक्रम करने की अपेक्षा की जाती थी। 1939 तक उन्होंने अपने प्रशिक्षुता के लिए आवश्यक तीन परीक्षाओं में से दो उत्तीर्ण कर ली थीं। लेस को हमेशा से यांत्रिक चीजों में रुचि थी, वे अक्सर हवाई प्रदर्शन या स्थानीय मोटर रेस देखने जाते थे, जहां जर्मन ऑटो-यूनियन प्रतिस्पर्धा करती थीं, लेकिन युद्ध से कुछ साल पहले ही उनकी यह रुचि वास्तव में विकसित हुई। छुट्टियों में वे आयरलैंड गए और जब

वे अपनी 'जीवन भर की यात्रा' से लौटे, जैसा कि उन्होंने इसे कहा था, तो उन्होंने पायलट बनने का निश्चय कर लिया था। उन्होंने कनाडा में एक दिन बुश पायलट के रूप में काम करने के बारे में भी बात की थी। उनका पहला कदम सिविल एयर गार्ड में शामिल होना था, जो पायलटों को प्रशिक्षित करने वाला एक नागरिक संगठन था, और उन्होंने 1938 में अपना फ्लाइंग लाइसेंस प्राप्त किया। सप्ताह में एक दिन और सप्ताहांत में वे वेस्टन-सुपर-मेयर के पास लॉकिंग जाते थे, जहाँ वे सिंगल-सीटर विमानों का प्रशिक्षण लेते थे। सितंबर 1939 तक उन्होंने अपना अधिकांश प्रशिक्षण पूरा कर लिया था, लेकिन अभी तक उन्होंने अकेले उड़ान नहीं भरी थी।

जब जर्मनी द्वारा पोलैंड पर आक्रमण की खबर आई, तब लेस और उनके छोटे भाई नॉर्मन वेल्स में कैंपिंग ट्रिप पर थे और माउंट स्नोडन पर चढ़ाई करने के लिए पूरी तरह तैयार थे। उन्होंने आने वाले युद्ध के बारे में बात की, लेकिन फिर भी चढ़ाई करने का फैसला किया। आखिरकार, यह शायद काफी समय तक सामान्य जीवन का आखिरी दिन होगा। जब वे टॉनटन में अपने घर लौटे, तो लेस के भर्ती पत्र उनका इंतजार कर रहे थे। चूंकि उन्होंने अभी तक अकेले उड़ान नहीं भरी थी, इसलिए उनकी तैनाती स्थगित कर दी गई, और 19 अप्रैल, 1940 को ही उन्हें रॉयल एयर फोर्स वॉलंटियर रिजर्व (आरएएफवीआर) में शामिल किया गया। जून में उन्होंने प्रशिक्षण शुरू किया और दिसंबर तक उन्हें विंग्स से सम्मानित कर लिया गया। उन्होंने टॉरक्वे में अधिकारी प्रशिक्षण लिया, जहां डोरोथी एक सप्ताह के लिए उनसे मिलने आई थीं, और उनकी बड़ी बहन कैथलीन उनकी देखभाल कर रही थीं। क्रिसमस से ठीक पहले, लेस को कमीशन मिला और उन्हें 19 ऑपरेशनल ट्रेनिंग यूनिट में तैनात किया गया।

3 मार्च 1941 को पायलट ऑफिसर लॉन्ग का तबादला 9 स्क्वाड्रन में हो गया और दो सप्ताह से भी कम समय में उन्होंने अपना पहला ऑपरेशन पूरा किया। हालाँकि ऑपरेशन में उनका अनुभव बहुत कम था, लेकिन यह स्पष्ट था कि आरएएफ में उनके अनुभवों ने उन्हें बदल दिया था। उन्होंने डोरोथी से कहा कि वे उस संकीर्ण जीवन में वापस नहीं जाना चाहते जिसमें वे पले-बढ़े थे और बीमा का काम छोड़कर अर्थशास्त्र की पढ़ाई करना चाहते थे। उन्हें उम्मीद थी कि डोरोथी उनके नए जीवन का हिस्सा बनेंगी।

27 मार्च, 1941 को, 9 स्क्वाड्रन के पाँच वेलिंगटन विमानों को कोलोन पर हमले के लिए भेजा गया और रात 8:00 बजे से ठीक पहले, लॉन्ग, जॉन शोर और बाकी चालक दल ने होनिंगटन स्थित अपने अड्डे से उड़ान भरी। शुरू से ही यह स्पष्ट था कि इंजन ठीक नहीं थे, लेकिन जॉन ने फिर भी उड़ान जारी रखने का फैसला किया। वे लगभग एक घंटे की देरी से अपने लक्ष्य तक पहुँच गए और बम गिरा दिए। शोर ने वेलिंगटन को घुमाया और घर की ओर अपना रास्ता तय किया। रात 10:30 बजे के ठीक बाद, दायाँ इंजन अचानक बंद हो गया और फिर तुरंत चालू हो गया। कुछ ही सेकंड बाद, दोनों इंजन बंद हो गए और शोर के प्रयासों के बावजूद, उन्हें फिर से चालू नहीं किया जा सका। आठ हज़ार फीट की ऊंचाई पर उन्होंने चालक दल को पैराशूट से कूदने का आदेश दिया और पंद्रह सौ फीट की ऊंचाई पर उन्होंने खुद पैराशूट से छलांग लगा दी। चालक दल के अधिकांश सदस्य हॉलैंड के आइंडहोवन के पूर्व में उतरे। कुछ को तुरंत पकड़ लिया गया, लेकिन लेस, जिसके घुटने में रग्बी खेलते समय लगी पुरानी चोट फिर से उभर आई थी, ने अगली सुबह पकड़े जाने से पहले पूरी रात एक चर्च के बरामदे में शरण ली। सभी लोग ह्यूस्डन के पुलिस स्टेशन में मिले और उन्हें एम्स्टर्डम में लूफ़्टवाफ़े बैरक ले जाया गया, जिसके बाद उन्हें डुलैग लूफ़्ट में स्थानांतरित कर दिया गया।

*

हर सुबह लगभग साढ़े दस बजे, कूकी लॉन्ग बार्थ के भस्मक पर और उसके आसपास खड़े लोगों के समूह में शामिल हो जाती थी ताकि दिन के फुटबॉल मैच को बेहतर ढंग से देख सके। भीड़ की आड़ में, जॉन शोर और जिमी जेम्स भस्मक में चढ़ जाते और रेत के फर्श में एक गड्ढा बनाते,

जिसे हवा आने-जाने के लिए खुला रखा जाता था। वे मेज के चाकू से सुरंग की रेत खुरचते और उसे कटोरियों में भरकर वापस भस्मक में ले जाते, जहाँ उसे राख और कचरे के साथ मिला दिया जाता था। फिर, शाम लगभग 5:00 बजे, एक और मैच आयोजित किया जाता, और खोदने वाले भस्मक से बाहर निकलकर भीड़ में घुलमिल जाते। यह सब बहुत व्यवस्थित था। सुरंग केवल चार कार्यदिवसों में बनकर तैयार हो गई थी, लेकिन कई तलाशी अभियानों के कारण, उन दिनों को तीन सप्ताह की अवधि में फैलाना पड़ा, इसलिए सुरंग वास्तव में अक्टूबर से पहले तैयार नहीं हुई थी। शोर और जेम्स को सबसे पहले जाना था, अपने कमरों के फर्श में बने गड्ढों से रेंगते हुए और परिसर को पार करते हुए भस्मक तक जाना था। चार घंटे बाद, मकल मुइर, टिम न्यूमैन और दो अन्य लोगों को उनका पीछा करना था। भागने वालों ने हवाई हमले के दौरान जाने का फैसला किया था, इसलिए कई दिनों तक उन्हें कुछ मिनटों के नोटिस पर तैयार रहना पड़ा।

आखिरकार, 19 अक्टूबर, 1941 की रात को दूर से सायरन की आवाज़ सुनाई दी और उन छहों को समझ आ गया कि समय आ गया है। शोर सबसे पहले निकला और रेंगते हुए परिसर को पार करके भस्मक तक पहुँचा। कुछ देर बाद, कुकी लॉन्ग ने जिमी जेम्स को उसके जाल से निकलने में मदद की और वह शोर के पीछे-पीछे सुरंग की ओर चल पड़ा। दुर्भाग्य से, जेम्स के निकलने का समय शिविर में असामान्य रूप से हलचल भरे माहौल के साथ मेल खा गया, और उसने खुद को परिसर के बीचोंबीच पड़ा पाया जबकि पहरेदार अलग-अलग दिशाओं में भाग रहे थे। कुछ देर बाद हलचल शांत हुई और जिमी रेंगता हुआ आगे बढ़ा, तभी उसने शिविर के सुरक्षा अधिकारी को अपने सामने आते देखा। एक टॉर्च की रोशनी पड़ी और समझदारी से काम लेते हुए, जिमी वापस अपने ब्लॉक की ओर भागा। हालाँकि, उसे वह जाल नहीं मिला जो उसके कमरे तक जाता था और आखिरकार उसे अपमानजनक तरीके से झोपड़ी के नीचे से घसीट कर निकाला गया। हालाँकि, उस शाम की घटनाओं में एक अच्छी बात भी हुई। जॉन शोर किसी तरह सैस्निट्ज़ पहुँच गया और वहाँ से स्वीडन जाने वाली नौका पर सवार हो गया। वह बार्थ से सफलतापूर्वक भागने वाला दूसरा व्यक्ति बना।

*

भागने वालों को काम करने के लिए सुहावने मौसम का आखिरी मौका मिल गया था, और नवंबर तक परिसर में ठंडी पूर्वी हवाएँ चलने लगी थीं। सुबह धुंधली और ठंडी होती थी, और शिविर में मौजूद पक्षी वैज्ञानिकों ने पक्षियों के बड़े झुंडों को दक्षिण की ओर उड़ते हुए देखा। कुछ ही समय बाद बर्फ गिरी, और कैदियों ने बगीचे में एक छोटा सा आइस रिंक बना लिया। उन्हें स्केट के लिए लोहे के पलंग के टुकड़ों और हॉकी पक के लिए कोयले की ईंटों से काम चलाना पड़ा, लेकिन यह मनोरंजन और व्यायाम के लिए काफी था। ठंड के बावजूद, परिसर के नीचे विभिन्न सुरंगों पर काम जारी रहा। दिसंबर में विलियम जैक ग्रिसमैन और लेस्ली जॉर्ज बुल सहित खुदाई करने वालों की एक मिश्रित टीम ने एक नया गड्ढा खोदना शुरू किया, ये दोनों साथी हाल ही में बार्थ पहुंचे थे।

जैक ग्रिसमैन, एक डाकिया के सबसे बड़े बेटे, का जन्म 30 अगस्त, 1914 को इंग्लैंड के हेरेफोर्ड स्थित अपने पारिवारिक घर में हुआ था। शांत और शर्मीले स्वभाव के जैक स्कूल में तैराकी और रग्बी खेलने लगे तो उनका व्यक्तित्व जल्दी ही परिपक्व हो गया। बहिर्मुखी और मिलनसार स्वभाव के होने के बावजूद, हाई स्कूल छोड़ने तक उन्हें अपने क्षेत्र का सही चुनाव नहीं मिला। फिर, अपने परिवार को आश्चर्यचकित और प्रसन्न करते हुए, उन्होंने रॉयल एयर फ़ोर्स (आरएफ़) में शामिल होने की इच्छा जताई। वायु सेना में उन्हें वह सब कुछ मिल रहा था जो वे चाहते थे: इंजीनियरिंग में उत्कृष्ट प्रशिक्षण; खेलों के प्रति अपने प्रेम को पूरा करने के भरपूर अवसर; और दुनिया घूमने का मौका। 13 जनवरी, 1931 को, जैक विमान प्रशिक्षुओं के 23वें बैच के सदस्य के रूप में हैल्टन पहुंचे। उनकी उम्र अभी सत्रह वर्ष भी नहीं हुई थी।

उसी कक्षा के एक अन्य सदस्य, वॉली गार्डिनर, जैक को एक दृढ़ निश्चयी और बुद्धिमान

व्यक्ति के रूप में याद करते हैं, जिसने हैल्टन में जल्दी ही लोकप्रियता हासिल कर ली थी। दोनों वहाँ एक साल तक साथ रहे, रग्बी खेलते थे और पक्के दोस्त बन गए। दिसंबर 1933 में हैल्टन से स्नातक होने पर, दोनों का तबादला बोस्कोम्ब डाउन में हो गया, जैक को 10 स्क्वाड्रन के नए हैंडली-पेज हेफोर्ड बमवर्षक विमानों में और वॉली को 9 स्क्वाड्रन में, जो अभी भी पुराने विकर्स वर्जीनिया बमवर्षक विमानों से लैस था। बोस्कोम्ब डाउन में जीवन अच्छा था। जैक और वॉली रग्बी टीम में बने रहे, और जैक स्टेशन के लिए तैराकी करते थे, जैसा कि उन्होंने हैल्टन में किया था। जनवरी 1936 तक दोनों विमान चालक दल के प्रमुख बन चुके थे और विदेश में अपनी ड्यूटी शुरू करने वाले थे।

मध्य पूर्व में अपने पहले पड़ाव, इराक के बसरा तक का सफर काफी मुश्किलों भरा था। बिस्के की खाड़ी भयंकर तूफान की चपेट में थी, और विमानकर्मियों ने कई दिन अपने ओवरकोट में लिपटे हुए बिताए। वे बिना किसी नुकसान के पहुंचे और जल्द ही उन्हें हिनाइदी स्थित विमान डिपो में तैनात कर दिया गया। हालांकि जैक को इंजन फिटर के रूप में वर्गीकृत किया गया था, लेकिन उन्हें अस्थायी रूप से मोटर-ट्रांसपोर्ट सेक्शन में भेजा गया। अपने कई साथी विमानकर्मियों की तरह, उन्हें भी इराक में बिताया समय बहुत पसंद आया। वहां लगातार खेल मैच देखने या खेलने को मिलते थे, स्विमिंग पूल थे (जैक अब भी पानी में ज्यादातर प्रतिद्वंद्वियों को हरा सकता था), और फिल्में भी थीं, इसलिए स्टेशन पर सामाजिक जीवन अच्छा था; उनमें से जो अधिक साहसी थे, उनके लिए बगदाद पास ही था। जैक और वॉली समेत कुछ लोगों ने हाई स्कूल के समकक्ष शिक्षा के लिए कक्षाएं लेना शुरू किया, लेकिन उनकी रुचि जल्दी ही कम हो गई। वे युवा थे और किताबों के साथ समय बिताने के लिए बहुत जिज्ञासु थे, और पढ़ाई करने के लिए वहां बहुत गर्मी थी।

नवंबर 1936 में, जैक को बगदाद स्थित ब्रिटिश दूतावास में राजदूत के ड्राइवर के रूप में सात महीने के लिए अस्थायी नियुक्ति मिली। वॉली गार्डिनर की जैक से मुलाकातें धीरे-धीरे कम होती गईं और अंततः वह इंग्लैंड लौट गए, जबकि जैक धिब्बन स्थित विमान डिपो में चले गए। फिर, इराक में दो साल पूरे करने के बाद, अप्रैल 1938 में जैक को उत्तर-पश्चिम सीमांत प्रांत (जिसे आरएएफ की बोलचाल की भाषा में 'द ग्रिम' कहा जाता था) में सामान्य तैनाती मिली, जो अब पाकिस्तान में है। उन्हें 28 स्क्वाड्रन के बाइप्लेन पर एयर गनर, यानी 'रिगर और फिटर' के रूप में अस्थायी उड़ान ड्यूटी सौंपी गई।

इराक और भारत में बिताए साल जैक के लिए सुखद रहे, लेकिन एयरक्रू ड्यूटी के लिए स्वेच्छा से आवेदन करने के बाद दिसंबर 1938 में इंग्लैंड लौटने पर उन्हें कुछ राहत मिली। ऑब्जर्वर कोर्स पूरा करने के बाद, 27 जुलाई 1939 को उन्हें मिल्डेनहॉल में तैनात 99 स्क्वाड्रन में नियुक्त किया गया। इस दौरान जैक ग्रिसमैन ने अपनी हाई स्कूल की प्रेमिका मैरी मार्चेंट से फिर से दोस्ती की। उनके स्कूल के दिनों को कई साल बीत चुके थे, जब वे दोनों स्थानीय स्विमिंग पूल में मिलते थे और ग्रामीण इलाकों में लंबी सैर पर जाते थे, लेकिन दोनों में कोई खास बदलाव नहीं आया था। अगले दो सालों में जैक को कई जगहों पर जाना पड़ा, लेकिन मैरी के साथ उनका रिश्ता धीरे-धीरे और गहरा होता गया।

युद्ध शुरू होते ही, 99 स्क्वाड्रन को जर्मनी पर पर्चे बांटने के अभियान में भाग लेने का जिम्मा सौंपा गया। नेविगेशन कोर्स पूरा करने और सार्जेंट के पद पर पदोन्नति पाने के बाद, जैक ड्यूटी पर लौट आए और अभियानों में उन्होंने इतना अच्छा प्रदर्शन किया कि जून 1940 में उन्हें अधिकारी प्रशिक्षण के लिए भेज दिया गया। प्रशिक्षण की कठिनाइयों के बावजूद, जैक मैरी से मिलने का समय निकाल लेते थे और दोनों ने कई खुशनुमा, हालांकि थोड़े व्यस्त, दोपहर साथ बिताए। 2 अगस्त 1940 को उनका विवाह हुआ। शादी उनकी छोटी छुट्टी के आखिरी दिन हुई और हनीमून उसी शाम जैक के वापस बेस पर लौटने तक ही चला। वह जल्द ही वापस अभियानों में जुट गए और 6 अक्टूबर को उन्हें वीरता पुरस्कार मिला और 20 दिसंबर को उन्हें कमीशन प्राप्त हुआ।

सार्जेंट के रूप में एक ऑपरेशन पूरा करने के बाद, ग्रिसमैन दिसंबर में बॉस्कोम्ब डाउन में 109 स्क्वाड्रन के साथ वापस आ गए, जो नए रडार उपकरणों और रेडियो प्रतिउपायों के विकास में शामिल था। अपने काम की प्रकृति के कारण वे अपने ऑपरेशनों के बारे में बात करने से कतराते थे, लेकिन उन्हें नवीनतम तकनीकी विकास के साथ काम करने में आनंद आता था। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि बॉस्कोम्ब डाउन में बिताए समय के दौरान उनकी मुलाकात एक ऐसे व्यक्ति से हुई जिसने बार्थ सुरंग पर काम किया था: लेस बुल।

लेस्ली जॉर्ज बुल का जन्म 7 नवंबर, 1916 को लंदन के हाईबरी में हुआ था। स्कूल की पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने वास्तुकार बनने के इरादे से ब्रिक्सटन स्थित लंदन काउंटी काउंसिल स्कूल ऑफ बिल्डिंग में दाखिला लिया। लेस ने स्कूल में अच्छा प्रदर्शन किया, लेकिन तीन साल की पूर्णकालिक पढ़ाई के बाद उन्होंने फैसला किया कि भवन निर्माण का पेशा उनके लिए नहीं है। उन्हें रॉयल एयर फोर्स (आरएएफ) में शामिल होने का विचार अच्छा लगा और जुलाई 1936 में वे सेना में भर्ती हो गए। उन्होंने वायु सेना में अपने शुरुआती वर्ष 75 स्क्वाड्रन के साथ हैंडली-पेज हैरो बमवर्षक विमान उड़ाते हुए बिताए और एक दिन टेस्ट पायलट बनने की आशा रखते थे। 1938 में, ड्रिफ़ील्ड में तैनात रहते हुए, लेस ने कैथलीन ऑर्गन से शादी की, जिनके माता-पिता हवाई अड्डे के पास एक बेड-एंड-ब्रेकफास्ट चलाते थे। लेस और कैथलीन का एक बेटा हुआ, डेविड, जिसका जन्म 1940 में हुआ।

24 फरवरी, 1940 को बुल की तैनाती होनिंगटन स्थित 9 स्क्वाड्रन में हुई और उन्होंने यूनिट के साथ पांच अभियानों में वेलिंगटन विमान उड़ाए, जिनमें मुख्य रूप से संचार लक्ष्यों को निशाना बनाया गया था। जून में उन्हें कमीशन मिला और फिर उनका तबादला बॉस्कोम्ब डाउन स्थित ब्लाइंड अप्रोच ट्रेनिंग डेवलपमेंट यूनिट (BATDU) में कर दिया गया। BATDU बाद में वायरलेस इंटेलिजेंस डेवलपमेंट यूनिट बन गई और 1 दिसंबर, 1940 से 109 स्क्वाड्रन का हिस्सा बन गई। लेस और कैथलीन सैलिसबरी चले गए, और एक नए बेटे और यूनिट द्वारा की जाने वाली कई उड़ानों के कारण लेस बुल काफी व्यस्त हो गए। अब एक साथ क्रू बनाकर, लेस और जैक ग्रिसमैन अक्सर उड़ान भरते थे, अक्सर जर्मन रडार श्रृंखला की निगरानी करने या किसी नए उपकरण का परीक्षण करने के लिए। कभी-कभी वे एक दिन में दो या तीन चक्कर भी लगाते थे। जून में लेस बुल को फ्लाइंग ऑफिसर के पद पर पदोन्नत किया गया, और जुलाई में उन्हें अपने पहले ऑपरेशन टूर को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए विशिष्ट फ्लाइंग क्रॉस से सम्मानित किया गया।

5 नवंबर, 1941 की रात को, बुल, ग्रिसमैन और बाकी चालक दल के सदस्य अपने वेलिंगटन विमान में फ्रांस के पश्चिमी तट पर स्थित जर्मन रडार नेटवर्क की जांच करने के लिए रवाना हुए। यात्रा बिना किसी घटना के चल रही थी, तभी आधी रात से ठीक पहले, लोरिएंट के ऊपर, विमान का दाहिना इंजन खराब होने लगा। लेस ने नियंत्रणों से छेड़छाड़ की, लेकिन जल्द ही इंजन पूरी तरह से बंद हो गया, और बुल ने अपनी साइड विंडो से बाहर देखा तो पाया कि दाहिना प्रोपेलर उड़ान के दौरान ही टूटकर अलग हो गया था, जो ब्रिस्टल पेगासस रेडियल इंजन के साथ एक आम बात थी। बुल ने वेलिंगटन को स्थिर किया ताकि चालक दल के सदस्य बाहर निकल सकें, और सभी सातों सदस्य सुरक्षित बच निकले, जो पोंटिवी शहर के आसपास विभिन्न स्थानों पर उतरे। लेस को तुरंत बचा लिया गया, और चार चालक दल के सदस्यों को कुछ ही घंटों में पकड़ लिया गया, लेकिन जैक अधिक भाग्यशाली था। वह पूरी रात दक्षिण की ओर चलता रहा, भोर में एक खलिहान में शरण ली, और फिर शाम ढलते ही अपनी यात्रा फिर से शुरू की। लगभग पूरी रात चलते-चलते, जैक भूख और प्यास से बेहाल होकर मदद के लिए एक खेत के पास पहुँचा। वहीं उसका भाग्य साथ छोड़ गया। जब जैक खाना खा रहा था तभी किसान ने अधिकारियों को सूचित कर दिया और ग्रिसमैन खुद को एक थैले में पाया।

*

एक महीने की कैद के बाद, ग्रिसमैन, बुल और बाकी लोग सुरंग में अथक परिश्रम कर रहे थे, लेकिन काम बेहद मुश्किल हो रहा था। ज़मीन बेहद सख्त होने के अलावा, खुदाई करने वाले थोड़े-थोड़े समय के लिए ही काम कर पाते थे और फिर उन्हें अपने सुन्न शरीर को गर्म करने के लिए झोपड़ी में लौटना पड़ता था। छुट्टियों का मौसम बिताने के और भी सुखद तरीके हो सकते थे, लेकिन कम से कम वे जिमी जेम्स से बेहतर स्थिति में थे। जिमी जेम्स को उसके ब्लॉक के नीचे एक सुरंग में पाए जाने के बाद एक बार फिर जेल में समय बिताना पड़ रहा था।

क्रिसमस के दौरान माहौल काफी गर्म हो गया, क्योंकि कैदी पहली बार घर पर शराब बनाने की कोशिश कर रहे थे। आलू के छिलकों से शराब बनाने का उनका पहला प्रयास पूरी तरह विफल रहा, लेकिन बाद में रेड क्रॉस के पार्सल से मिले सूखे मेवों और एक गार्ड से प्राप्त खमीर का उपयोग करके किया गया प्रयास अधिक सफल साबित हुआ। एक पूर्व शराब भट्टी कर्मचारी की सावधानीपूर्वक देखरेख में, किण्वित मिश्रण को एक बड़े दूध के डिब्बे, एक पुराने फुटबॉल के हिस्से और एक ट्रॉम्बोन के टुकड़ों से बने उपकरण में आसवन किया गया। जो मिश्रण तैयार हुआ वह शुद्ध शराब थी, हालांकि कुछ कैदियों ने अपनी बनाई शराब को रम, व्हिस्की या जिन बताकर बेचने की कोशिश की। एक कैदी ने तो अपनी शराब को बड़े ही आकर्षक लेबल लगाकर बोतलों में भर दिया, जिन पर लिखा था 'ले ग्रैंड विन डू बोर्डेल'।

घर की बनी शराब से लबालब लदे कुछ सैनिकों ने एनसीओ के मनोरंजन कक्ष में क्रिसमस का मूक अभिनय प्रस्तुत किया। कमांडेंट और उनके स्टाफ को भी आमंत्रित किया गया था, और विंग्स डे उन्हें पहली पंक्ति में बैठाकर अंग्रेजी रंगमंच की बेहतरीन परंपरा के अनुरूप एक सुरुचिपूर्ण प्रदर्शन की उम्मीद कर रहे थे। लेकिन प्रदर्शन के शीर्षक, 'एलिस और उसकी मोमबत्ती', ने उनकी आशाओं पर पानी फेर दिया, और इसके बाद सैनिकों के हास्य का एक बेहद अश्लील प्रदर्शन देखने को मिला। विंग्स को लगा कि कमांडेंट किसी भी क्षण भड़क उठेंगे, लेकिन वे यह देखकर आश्चर्यचकित रह गए कि उन्होंने पूरा प्रदर्शन देखा और अंत में जब उन्होंने विनम्रतापूर्वक सैनिकों की प्रशंसा की तो वे और भी हैरान रह गए। जाहिर है, कमांडेंट को अंग्रेजी गालियों का कुछ ज्ञान नहीं था।

क्रिसमस का जश्न युद्धबंदियों के लिए तनाव कम करने का एक शानदार तरीका था, और हालांकि शराब बनाना तकनीकी रूप से प्रतिबंधित था, जर्मन आमतौर पर इस पर ध्यान नहीं देते थे। जब तक हालात बेकाबू नहीं होते थे, वे कैदियों को मौज-मस्ती करने देने के लिए तैयार रहते थे। और उन्हें थोड़ी मौज-मस्ती की ज़रूरत भी थी, क्योंकि युद्ध की खबरें उत्साहजनक नहीं थीं। जर्मन रूसी मोर्चे पर अपनी सफलताओं की खबर देने में तत्पर थे, और मलाया के पास प्रिंस ऑफ वेल्स और रिपल्स के डूबने की खबर ने अमेरिका के युद्ध में शामिल होने की उत्साहवर्धक खबर को भी फीका कर दिया। कुछ युद्धबंदियों ने दुश्मन के सूत्रों से आने वाली किसी भी खबर पर विश्वास करने से इनकार कर दिया, लेकिन क्रिसमस के समय बार्थ पहुंचे नए कैदियों (अन्य शिविरों से स्थानांतरित किए गए लोग) ने जर्मन दावों की पुष्टि कर दी।

*

नवीनतम समूह में फ्लाइट लेफ्टिनेंट रॉय ब्रौअर्ड लैंगलोइस भी शामिल थे, जो सांवले रंग के, चौबीस वर्षीय चैनल आइलैंडर थे। रॉय मई 1936 में आरएएफ में शामिल हुए और 5 अगस्त 1941 को 12 स्क्वाड्रन के साथ उड़ान भर रहे थे, जब आचेन पर हमले के बाद उनका वेलिंगटन विमान एंटवर्प के पास आपातकालीन लैंडिंग करने में विफल रहा। वह विमान के मलबे से निकलने में कामयाब रहे और प्रतिरोध आंदोलन से जुड़ गए, लेकिन अंततः 2 अक्टूबर को ब्रुसेल्स में गिरफ्तार कर लिए गए।

सहायक अधिकारी ने नए आए लोगों को अलग-अलग झोपड़ियों की ओर निर्देशित किया, और लैंगलोइस अपना कमरा ढूंढने के लिए निकल पड़ा। जैसे ही वह कमरे में पहुँचा, उसकी नज़र

तुरंत सबसे दूर वाले कोने पर पड़ी, जहाँ एक पुराने ग्रामोफोन से क्यूबा के लोक संगीत की मधुर धुनें सुनाई दे रही थीं। ऊपर, रंग-बिरंगे फूलों से सजी चारपाई पर, घने काले बालों और काली मूंछों वाला एक दुबला-पतला, बेहद आकर्षक आदमी लेटा हुआ था। उसने चमकीले रंग की धारियों वाला कफ्तान और पीले रेशमी चप्पल पहने हुए थे और 'द सेक्सुअल लाइफ ऑफ सैवेजेस' नामक पुस्तक में मग्न था। वह रॉय की उपस्थिति से इतना बेखबर लग रहा था कि जब रॉय ने बात की तो वह चौंक गया।

'सुकून देने वाला है ना?' उस आकृति ने कहा। 'मुझे हमेशा व्यस्त सुबह के बाद इससे अपना संतुलन वापस पाने में मदद मिलती है। आप नए हैं, है ना?' उसने पहली बार ऊपर देखते हुए पूछा। लैंगलोइस ने सिर हिलाया और अपना परिचय दिया।

'आप भी एक तरह के विदेशी हैं!' उस शख्स ने मुस्कुराते हुए कहा। 'आपसे मिलकर खुशी हुई। मैं टॉम किर्बी-ग्रीन हूं, जो पहले टैंजियर में रहता था।'

*

बार्थ में स्क्वाड्रन लीडर थॉमस ग्रेशम किर्बी-ग्रीन को सबसे असाधारण अधिकारियों में गिना जा सकता था, क्योंकि उनका जीवन किसी बच्चों की रोमांचक कहानियों की किताब से लिया गया लगता था। 27 फरवरी, 1918 को न्यासालैंड (अब मलावी) के डोवा में जन्मे, वे न्यासालैंड के जिला गवर्नर सर विलियम किर्बी-ग्रीन और उनकी प्रतिभाशाली लेकिन विलक्षण पत्नी एडा के पुत्र थे। टॉम के जन्म की परिस्थितियाँ भी असामान्य थीं। एडा की गर्भावस्था के दौरान, सर विलियम ग्रामीण क्षेत्र में थे, जहाँ उनके दल को जंगल में एक नवजात शिशु मिला जिसे छोड़ दिया गया था। यह एक बहुत ही असामान्य घटना थी, और सर विलियम उस बच्चे को घर ले आए, जहाँ उन्हें पता चला कि टॉम का जन्म उसी रात हुआ था जिस रात उस नवजात शिशु का शव मिला था। उस नवजात शिशु का नाम पुट्टी रखा गया, और दोनों भाइयों को भाई-भाई की तरह पाला गया।

न्यासालैंड में पले-बढ़े किर्बी-ग्रीन को अपनी आगे की शिक्षा के लिए डोवर कॉलेज के बिल्कुल अपरिचित वातावरण में भेजा गया। अंग्रेजी निजी स्कूल के तौर-तरीकों से अपरिचित होने के कारण टॉम को तालमेल बिठाने में कुछ कठिनाइयाँ हुईं। वहाँ पहुँचते ही उन्होंने सबसे पहले स्कूल के तालाब में अपनी बंदूक से बत्तखों का शिकार किया, जिस पर प्रधानाध्यापक बहुत नाराज़ हुए। हालाँकि, टॉम डोवर के माहौल में ढल गए और अंततः एक हाउस प्रीफेक्ट और रग्बी टीम के एक सम्मानित, बल्कि कहें तो खौफनाक सदस्य बन गए। टॉम ने 1935 में स्कूल की पढ़ाई पूरी की और टैंजियर में अपने माता-पिता के साथ रहने चले गए, लेकिन अगस्त 1936 में अल्पकालिक सेवा कमीशन पर आरएएफ में शामिल होने के लिए वापस इंग्लैंड आ गए। अपना निजी पायलट लाइसेंस प्राप्त कर लेने के बाद, उन्होंने प्रशिक्षण तेजी से पूरा किया और 27 मई, 1937 को उन्हें 216 स्क्वाड्रन में तैनात कर दिया गया। अगले जनवरी में, पायलट ऑफिसर किर्बी-ग्रीन का तबादला मिल्डेनहॉल स्थित 99 स्क्वाड्रन में कर दिया गया, जहाँ वे 1939 तक रहे। गनरी कोर्स पूरा करने के बाद, जनवरी 1940 में उन्हें ऑपरेशन शुरू करने के लिए 9 स्क्वाड्रन में तैनात कर दिया गया।

1940 के पहले छह महीनों में स्क्वाड्रन लगातार सक्रिय रहा। जुलाई के अंत तक टॉम ने सत्ताईस हवाई हमले पूरे कर लिए थे, जिनमें से अधिकांश फ्रांस और नीदरलैंड्स में सड़क और रेल ठिकानों पर किए गए थे। होनिंगटन स्थित स्क्वाड्रन के बेस पर वे एक जाने-माने व्यक्ति थे। अब एक वरिष्ठ फ्लाइंग ऑफिसर बन चुके टॉम का व्यवहार गरिमामय और पेशेवर था और उन्हें अक्सर मेस में बैठकर द टाइम्स अखबार पढ़ते हुए देखा जा सकता था। सितंबर में, आराम के लिए किर्बी-ग्रीन को नवगठित 311 (चेक) स्क्वाड्रन में उड़ान प्रशिक्षक के रूप में तैनात किया गया। वे प्रतिभाशाली और उत्साही चेक सैनिकों के बीच लोकप्रिय थे और दुश्मन के प्रति अपने

तिरस्कार के लिए उनका बहुत सम्मान किया जाता था। ऐसे समय में जब जर्मनों द्वारा पकड़े गए महाद्वीपीय वायुसैनिकों के भाग्य के बारे में अफवाहें फैली हुई थीं, टॉम हमेशा अपने छात्रों को प्रेरित करने के लिए चेक प्रतीक चिन्ह पहनने पर जोर देते थे। सितंबर 1941 में जब उन्हें वापस एक ऑपरेशनल यूनिट में तैनात किया गया, तो टॉम ने 311 स्क्वाड्रन को चेक सैनिकों के बीच कई नए दोस्तों के साथ छोड़ा।

टॉम को 40 स्क्वाड्रन में भेजा गया, जिसके वेलिंगटन विमान लगभग हर रात महाद्वीप पर हवाई हमले करते थे। स्क्वाड्रन लीडर के पद पर पदोन्नत होने के बाद, उन्होंने जल्द ही पाया कि ये ऑपरेशन 9 स्क्वाड्रन के ऑपरेशनों से थोड़े अलग थे। 10 सितंबर को यूनिट को उत्तरी इटली के ट्यूरिन की लंबी यात्रा पर भेजा गया। वह रात बेहद धुंधली थी, और टॉम स्क्वाड्रन के एकमात्र पायलट थे जो लक्ष्य तक पहुँचकर उस पर बमबारी करने में सफल रहे। यह उनकी असाधारण सहनशक्ति का प्रमाण था, जिसके लिए उन्हें वीरता पुरस्कार मिला। एक महीने बाद, वह और उनका दल लक्ष्य का सटीक पता लगाने की कोशिश में नूर्नबर्ग के ऊपर नब्बे मिनट तक चक्कर लगाते रहे। अंततः उन्होंने लक्ष्य का पता लगाने की कोशिश छोड़ दी और पहली संभावित जगह पर ही बम गिरा दिए।

17 अक्टूबर 1941 को टॉम और उनके दल को डुइसबर्ग पर हमले का आदेश दिया गया था। यह किर्बी-ग्रीन का सैंतीसवाँ अभियान था। हालाँकि, बेस से उड़ान भरने के बाद वेलिंगटन विमान से कोई संपर्क नहीं हो पाया और यह मान लिया गया कि लोकप्रिय स्क्वाड्रन लीडर लापता हो गए हैं। टॉम के अच्छे दोस्त और कमांडिंग ऑफिसर, विंग कमांडर पिकार्ड, तुरंत सेल्सी के लिए रवाना हुए, जहाँ टॉम की पत्नी मारिया रहती थीं, और उन्हें यह खबर दी, साथ ही कहा कि उन्हें पूरा यकीन है कि टॉम को बंदी बना लिया गया है। और सच में, 16 नवंबर को, लॉर्ड हॉ-हॉ, नाज़ियों के लिए रेडियो प्रसारण करने वाले ब्रिटिश गद्दार ने प्रतिष्ठित स्क्वाड्रन लीडर किर्बी-ग्रीन की गिरफ्तारी पर खुशी जताई; इस समय तक वह डुलैग लुफ्ट से होते हुए बार्थ पहुँच चुके थे।

स्टालैग लुफ्ट I में, टॉम ने अपनी अनोखी पोशाक के कारण ही नहीं, बल्कि एक विशिष्ट व्यक्तित्व के रूप में भी जल्दी ही ख्याति अर्जित कर ली। उन्हें लैटिन संगीत का बहुत शौक था और वे अक्सर अपने रिकॉर्ड के साथ घर में बने बोंगो ड्रम बजाते थे। उनके निजी पार्सल में अंजीर, गरबांजो, अतून और बाकालाओ जैसे अजीब और स्वादिष्ट व्यंजन होते थे। ये सभी को पसंद नहीं आते थे, लेकिन निश्चित रूप से एक ही तरह के भोजन से कुछ राहत देते थे। किर्बी-ग्रीन शिविर के व्याख्यानों की सूची में एक लोकप्रिय वक्ता भी थे। बार्थ पहुँचने के कुछ ही समय बाद उन्होंने युद्ध की स्थिति का विस्तृत और मनोरंजक वर्णन किया, जिसकी कई वरिष्ठ सैनिकों ने सराहना की। अपने भाषण के अंत में मुस्कुराते हुए उन्होंने कहा, 'आप जानते हैं, मैं नियमित रूप से द टाइम्स पढ़ता हूँ।'

*

जैसे-जैसे बार्थ में और अधिक युद्धबंदियों का आगमन हुआ, भागने के प्रयासों की गति बढ़ती गई। 5 जनवरी, 1942 को निक टिंडल ने शिविर के शौचालयों से पानी निकालने के लिए इस्तेमाल होने वाली गाड़ी के नीचे छिपकर भागने की कोशिश की, लेकिन वह गेट पर ही पकड़ा गया। चौदह तारीख को दो कैदी नकली जर्मन वर्दी (कैदियों द्वारा बनाई गई नकली वर्दी को दिया गया उपनाम) पहनकर गेट की ओर बढ़े, लेकिन सर्चलाइट की तेज रोशनी में उनकी पहचान उजागर हो गई। एक युद्धबंदी ने खेल के मैदान में बर्फ में खुद को छिपा लिया, लेकिन एक संतरी ने उसे देख लिया, जिसने उसके शरीर से भाप निकलते हुए देखा। कुछ दिनों बाद उसी व्यक्ति ने चार्ली फेल्ज़ नामक नेवले का वेश बनाकर फिर से कोशिश की। टॉम किर्बी-ग्रीन ने वोरलागर में पार्सल स्टोर से जर्मन वर्दी पहनकर भागने वाले एक वायुसैनिक के लिए एक नकली टॉर्च बनाई; वह

सास्निट्ज़ तक पहुँच गया, जहाँ उसे फिर से पकड़ लिया गया और कोल्डिट्ज़ भेज दिया गया, जो कुख्यात किला जेल थी जहाँ जर्मन बार-बार भागने की कोशिश करने वालों को कैद करते थे। पैट लीसन ने चिमनी साफ करने वाले के रूप में अच्छा प्रयास किया और फिर बाद में दो अन्य लोगों के साथ लूफ़्टवाफ़े के एक कॉर्पोरल और दो कैदियों के रूप में दोबारा कोशिश की। इसके बाद, जिमी जेम्स ने सीधा प्रयास किया। उसने तब तक इंतज़ार किया जब तक किसी गड़बड़ी के कारण बत्तियाँ नहीं चली गईं, फिर उसने एक गुंडे की खाल पहनी और 'लोस! लोस!' ('जाओ! जाओ!') चिल्लाते हुए मुख्य द्वार की ओर भागा, इस उम्मीद में कि गड़बड़ी में गार्ड उसे अंदर जाने देगा। लेकिन अपने गंतव्य तक आधे रास्ते में ही बत्तियाँ फिर से जल उठीं और जिमी दौड़कर अपनी झोपड़ी में वापस गया और वर्दी छिपा दी।

उस सर्दी में एक दुखद घटना भी घटी। एनसीओ के परिसर में, सार्जेंट जॉनी शॉ, ब्रायन इवांस के पायलट और एक अन्य सैनिक ने भारी बर्फ़ीले तूफ़ान में तारबंदी पर हमला किया। उन्होंने जैसे ही तारबंदी को काटना शुरू किया, एक गार्ड ने उन्हें देख लिया और चेतावनी देते हुए चिल्लाया। जॉनी शॉ खड़े हो गए और अपने हाथ ऊपर उठा लिए, लेकिन गार्ड ने उनकी बात अनसुनी कर दी और एक गोली चला दी, जिससे उनकी मौत हो गई। जॉनी उस बचाव अभियान में मरने वाले पहले व्यक्ति थे।

अध्याय 3

दुलाग हवाई सुरंग

स्टालैग लुफ़्ट I, लूफ़्टवाफ़े के लिए मुख्य चुनौती था, लेकिन अपने बंदी बनाने वालों के खिलाफ़ RAF का अभियान केवल एक मोर्चे तक सीमित नहीं था। बार्थ के अस्तित्व के पहले वर्ष के दौरान, जर्मनों के हाथों पकड़े गए मित्र देशों के वायुसैनिकों की संख्या इतनी अधिक हो गई थी कि अन्य शिविरों में वायु सेना की टुकड़ियाँ बनानी पड़ीं। लुफ़्ट I सभी पकड़े गए वायुसैनिकों को संभालने के लिए बहुत छोटा साबित हुआ, इसलिए पायलटों के समूहों को विभिन्न शिविरों में भेजा गया, जिनमें से प्रत्येक RAF के भागने के प्रयासों का केंद्र बन गया। और प्रत्येक शिविर जर्मनी के लिए एक काँटे के समान था।

*

दुलाग लुफ्ट में बसने के बाद पहली सर्दी बीतने पर, स्थायी कर्मचारियों ने अपना सारा ध्यान पलायन की ओर लगाया और सुरंग खोदने का काम फिर से शुरू कर दिया। 1940 की गर्मियों में पूर्वी ब्लॉक के एक शौचालय से सुरंग खोदना शुरू किया गया था, लेकिन बाढ़ के कारण अक्टूबर में इसे बंद कर दिया गया था। मार्च 1941 में यह तय किया गया कि सुरंग को फिर से खोला जाए ताकि यह देखा जा सके कि इसका उपयोग किया जा सकता है या नहीं। नीचे जाने वाले पहले श्रमिकों ने पाया कि सुरंग आंशिक रूप से जमे हुए पानी से भरी हुई थी, लेकिन उन्होंने एक बड़े पत्थर के पास जल निकासी छेद खोदकर पानी को काफी हद तक निकाल दिया, जिसने पिछले वर्ष काम में बाधा डाली थी। अप्रैल तक सुरंग फिर से पूर्ण पैमाने पर काम के लिए तैयार हो गई थी।

पहले से तय योजना के अनुसार, खुदाई का अधिकांश काम स्थायी कर्मचारियों ने किया, साथ ही रास्ते में मौजूद कैदियों ने भी मदद की जो सहयोग करना चाहते थे। ठोस मिट्टी में खुदाई का काम सुचारू रूप से चलता रहा और योजनाकारों ने आराम से काम करने का फैसला किया, क्योंकि उन्हें उम्मीद थी कि सुरंग का उपयोग शरद ऋतु में किया जाएगा, जब भागने वाले खेतों में भोजन की तलाश कर सकेंगे। हालांकि, काम इतना सुचारू रूप से चला कि सुरंग मई में ही बनकर तैयार हो गई और इसे अगली अमावस्या की अवधि, यानी जून के पहले सप्ताहांत में तोड़ने का निर्णय लिया गया। अठारह मजदूर भागने की तैयारी में जुट गए।

रोजर बुशेल ने अपने लिए एक अलग योजना बनाई थी। चूंकि उसे फ्रैंकफर्ट से स्विस सीमा तक जाने वाली ट्रेन पकड़नी थी, इसलिए उसने मनोरंजन मैदान के पास एक बकरी के बाड़े में छिपने और शाम होते ही चुपके से निकल जाने की योजना बनाई। गार्डों द्वारा बाड़े की तलाशी को रोकने के लिए, एक तेज रोशनी ने संकेत दिया कि बुशेल बकरी के गोबर के ढेर में छिप जाए।

'लेकिन गंध का क्या?' रोजर ने विरोध जताया।

'ओह, मुझे नहीं लगता कि बकरियों को कोई आपत्ति होगी,' जवाब आया।

बुशेल का निकलना एकदम योजनाबद्ध तरीके से हुआ और वह अगले दिन दोपहर बाद स्विस सीमा पर स्थित स्टुहलिंगेन गाँव पहुँच गया। उस समय उसके सामने एक दुविधा थी: या तो वह रात होने तक इंतज़ार करे और अंधेरे में मुश्किल सीमा पार करने की कोशिश करे या फिर दिन के उजाले में ही कोशिश करे। आत्मविश्वास ने विवेक पर विजय प्राप्त की और रॉजर ने दूसरा रास्ता

चुना। वह गाँव से गुज़र ही रहा था कि वही हुआ जो होना ही था: एक आदमी घर से निकला और उसे रोक लिया। अपनी जानी-पहचानी भूमिका निभाते हुए, रॉजर ने पास के गाँव से घर लौट रहे एक शराबी स्की प्रशिक्षक होने का नाटक किया। वह आदमी लगभग मान ही गया था, लेकिन उसने कहा कि रॉजर की पुलिस द्वारा जाँच की जानी चाहिए, जिस पर बुशेल ने मासूमियत भरी मुस्कान के साथ भाग निकला। वह कोने से मुड़ा और एक बंद गली में घुस गया; उसका भागने का प्रयास वहीं समाप्त हो गया।

शोरगुल भरे माहौल में, बाकी भागे हुए लोग उस गर्म जून की रात में सुरंग के प्रवेश द्वार तक पहुँचे और आज़ादी की ओर रेंगना शुरू किया। उनमें से कुछ ही शिविर से दूर जा पाए। विंग्स डे को दूसरे दिन एक वन रक्षक ने पकड़ लिया, जबकि जिमी बकले मिंडेन पहुँच गया, इससे पहले कि एक ट्रेन गार्ड उसे देख पाता। गाय ग्रिफ़िथ्स और उसके साथी ने एक मोटरसाइकिल देखी जिसे वे चुराना चाहते थे, लेकिन तभी उनकी नज़र उस पर बंधे एक खूंखार दिखने वाले कुत्ते पर पड़ी। वे तुरंत वहाँ से भाग निकले और बाद में डार्मस्टेड के पास एक मार्शलिंग यार्ड में उन्हें पकड़ लिया गया। जॉनी डॉज और उसका साथी पैदल यात्रियों के लिए मनाही होने के बावजूद साहसपूर्वक ऑटोबान पर दक्षिण की ओर चलते रहे। दिन के उजाले में वे एक एंटी-एयरक्राफ्ट बैटरी के पास से गुज़रे, जहाँ एक ऊबा हुआ सा दिखने वाला गार्ड उन्हें बस घूरता रहा, यहाँ तक कि जब जॉनी ठोकर खाकर सड़क पर गिर पड़ा तो उसने मुस्कुराया भी नहीं। सदमे से सतर्क होकर वे बाकी दिन के लिए ज़मीन में ही छिपे रहे। अंधेरा होने के बाद दोनों फिर से निकल पड़े, उन्होंने अपने खाने के पैकेट खा लिए थे, लेकिन प्यास बुझाने के लिए उनके पास कुछ नहीं था। ऑटोबान पर पकड़े जाने का जोखिम न उठाते हुए, उन्होंने कम आवाजाही वाले इलाके में जाने के लिए सबसे पहले उपलब्ध पुल की तलाश की। दुर्भाग्यवश, पुल पर सुरक्षाकर्मी तैनात थे, और उनकी यात्रा वहीं समाप्त हो गई।

सबसे आखिर में निकलने वाले माइक केसी और उनके साथी थे। सुरंग से बाहर निकलकर वे दक्षिण की ओर बढ़े, पुल से मेन नदी पार की और भागने के बाद अगली रात एक जंगल में शरण लेने से पहले पूरे चौबीस घंटे पैदल चले। अगली सुबह जल्दी निकलकर वे डार्मस्टेड से कुछ मील उत्तर में एक छोटे से गाँव पहुँचे, जहाँ एक स्थानीय पुलिसकर्मी ने उन्हें रोक लिया। उसने तुरंत उनके कागजात दिखाने को कहा और जब वे कुछ भी पेश नहीं कर सके, तो उसने दोनों को गिरफ्तार कर लिया। स्थानीय जेल में कुछ घंटे बिताने के बाद, उन्हें बस से फ्रैंकफर्ट की नागरिक जेल ले जाया गया और वहाँ से सीधे बार्थ ले जाया गया।

भागने की घटना के बाद कमांडेंट रुम्पेल को उनके पद से हटा दिया गया, लेकिन उन्होंने इसे सहजता से स्वीकार किया। जब पकड़े गए भगोड़े लुफ्ट I ले जाने वाली ट्रेन में चढ़े, तो उन्हें अपने डिब्बे में रुम्पेल की ओर से भेंट के रूप में शैंपेन की एक पेटी मिली।

*

दुलैग लुफ्ट और बार्थ के अलावा, अन्य शिविरों में भी आरएएफ की टुकड़ियाँ थीं। जुलाई 1941 में, लगभग पचास बदकिस्मत लोगों को बार्थ से निकालकर ल्यूबेक के स्टालैग एक्ससी में भेज दिया गया, जहाँ ज्यादातर क्रेते में पकड़े गए ब्रिटिश अधिकारियों को रखा गया था। यह शिविर गंदा और आदिम था, और ऐसा लगता था कि वहाँ भोजन की लगातार कमी थी। स्थिति और भी बदतर हो गई क्योंकि आरएएफ वहाँ लोकप्रिय नहीं था, क्योंकि हाल ही में एक वेलिंगटन विमान ने जर्मन अधिकारियों के भोजनालय पर बम गिरा दिया था। बुशेल और फिल्मर ने वहाँ एक सुरंग खोदनी शुरू की, लेकिन अक्टूबर में जब दुलैग से आए लोगों के एक समूह सहित पूरे शिविर को वारबर्ग के ओफ्लैग वीआईबी में स्थानांतरित कर दिया गया, तो वे बहुत खुश हुए।

बुशेल कभी भी मौका नहीं छोड़ते थे, इसलिए उन्होंने वायुसैनिकों को संगठित किया और डिब्बों से बाहर निकलने के लिए एक टीम बनाई। हर डिब्बे में लगभग तीस लोग थे और दरवाजे

के पास तीन गार्ड तैनात थे, इसलिए बुशेल ने कुछ सैनिकों को ताश खेलने के लिए इकट्ठा किया। बीच में, वह और फिलमर एक धारदार टेबल चाकू से फर्श की पट्टियों को काटते रहे। घंटों बाद, उनकी उंगलियां छिल गई थीं और खून बह रहा था, आखिरकार उन्हें इतना बड़ा छेद मिल गया जिससे वे बाहर निकल सके।

फिलमर सबसे पहले गया और ढलान पर ट्रेन के धीमा होने का इंतज़ार किया, फिर धीरे से पटरियों पर उतर गया। इसके बाद उसे बस पहियों के बीच से लुढ़क कर पटरियों से बाहर निकलना था। बुशेल और एक चेक अधिकारी, जैक ज़ाफ़ूक, उसके बाद गए, और फिर एक और जोड़ी। वे सभी सुरक्षित बच निकले, हालांकि एक राइफल की गोली की आवाज़ से थोड़ा घबरा गए थे, जो बाद में उन्हें पता चला कि ट्रेन के दूसरे हिस्से से भाग रहे दो लोगों पर चलाई गई थी। फिलमर ज़्यादा दूर नहीं जा पाया, लेकिन भागने वालों की एक जोड़ी स्टैटिन तक पहुँच गई, जहाँ बंदरगाह के आसपास छिपते हुए उन्हें पकड़ लिया गया। बुशेल और ज़ाफ़ूक के भाग्य के बारे में बाकी सैनिकों को पता चलने में कई महीने लग गए।

जब ये सब हो रहा था, उसी दौरान वायुसैनिकों का एक और दल स्पैंगेनबर्ग से वारबर्ग की ओर रवाना हुआ। वे 10 अक्टूबर, 1941 को वहाँ पहुँचे और पाया कि शिविर में पच्चीस सौ ब्रिटिश सेना अधिकारी रह रहे थे। यह एक विशाल, विचित्र आकार का परिसर था, जो लगभग एक मील लंबा था और एक सुनसान ढलान पर एक ग्रामीण सड़क के किनारे स्थित था। इसकी लकड़ी की झोपड़ियाँ दयनीय हालत में थीं। वे नम और पिस्सू से भरी हुई थीं, कई में रोशनी नहीं थी, और खाना पकाने और स्वच्छता की व्यवस्था बेहद अपर्याप्त थी। कुल मिलाकर, स्थिति बहुत उत्साहजनक नहीं थी।

फिर भी, मनोबल ऊंचा था, और जब कुछ दिनों बाद ल्यूबेक का दल, जो अब काफी कम हो चुका था, पहुंचा, तो आरएएफ की टुकड़ी ने खुद को व्यवस्थित करना और व्यवस्थित होना शुरू कर दिया। जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि उन्हें अपने नए साथियों से बहुत कुछ सीखना था। सेना के अधिकारी लगभग डेढ़ साल तक कैद में रहे थे और उन्होंने उस समय का सदुपयोग अपनी भागने की तकनीकों को सुधारने में किया था। उनके पास वायुसैनिकों के साथ सुरंग खोदने, सर्वेक्षण करने, मानचित्र बनाने और जालसाजी के बारे में साझा करने के लिए बहुत कुछ था। आरएएफ ने भी मनोबल बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे हमेशा उत्साहित रहते थे और जर्मन सेना के सदस्यों को चुन-चुनकर उनका मजाक उड़ाने का बड़ा खेल खेलते थे। दूसरे नंबर का कमांडर, एक मोटा और घमंडी व्यक्ति जिसे 'बल्क इश्यू' कहा जाता था, उनका पसंदीदा निशाना था। जब भी वह शिविर से लड़खड़ाते हुए गुजरता था, तो पायलटों में से एक हमेशा यातायात पुलिसकर्मी की भूमिका निभाने का जिम्मा उठा लेता था, और 'वहाँ रास्ता दो - उस आदमी को थोड़ी जगह दो' जैसी चेतावनियों के साथ थोक माल की आवाजाही को निर्देशित करता था, जबकि अन्य पायलट संकरी गली से ट्रक के आने पर जिस तरह से खुद को झोपड़ियों की दीवारों से चिपका लेते थे।

शिविर के कर्मचारियों को परेशान करने के अलावा, वायुसैनिक सेना के अधिकारियों से भागने के गुर सीखते थे, और नवंबर में आरएएफ की टुकड़ी ने अपना पहला प्रयास किया। मोटे तौर पर सिले हुए जर्मन वर्दी पहने पीटर स्टीवंस ने ग्यारह अधिकारियों का एक समूह इकट्ठा किया और एक जाली गेट पास लेकर उन्हें परिसर से बाहर ले जाने की तैयारी की। संतरी ने स्टीवंस को बताया कि पास पर हस्ताक्षर नहीं हैं, इसलिए पीटर समूह को वापस बैरक की ओर ले गया और आवश्यक हस्ताक्षर लेने के लिए सीधे जाली पास बनाने वालों के पास गया। कुछ मिनट बाद वह फिर से गेट पर था, लेकिन उसे बताया गया कि इतने बड़े समूह को ले जाने के लिए दो गार्ड और एक गैर-कमीशन अधिकारी की आवश्यकता है। स्टीवंस ने स्पष्टीकरण देना शुरू किया, लेकिन संतरी आश्वस्त नहीं हुआ और चिल्लाने लगा। तुरंत ही समूह तितर-बितर हो गया और स्टीवंस के पीछे-पीछे बैरक की ओर भाग गया। अभी भी थोड़ा भ्रमित संतरी ने भाग रहे कैदियों को पकड़ने के लिए कुछ गार्डों को बुलाया। वे बारह में से केवल दो को ही पकड़ पाए, लेकिन उन्होंने एक

बहुत ही साहसी भागने के प्रयास को विफल कर दिया था।

इसी बीच, कनाडाई, ब्रिटिश, पोलिश और चेक वायुसैनिकों के एक मिश्रित समूह ने एक ऑर्डरली की झोपड़ी से सुरंग खोदनी शुरू कर दी थी। कुछ सेना सर्वेक्षकों की मदद से, उन्होंने सर्चलाइटों की चकाचौंध से ठीक बाहर एक निकास बिंदु चुना था और अनुमान लगाया था कि दो सौ फुट लंबी सुरंग उन्हें अंधेरे में ऊपर ले आएगी। सुरंग को सहारा देने की कोई आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि मिट्टी चिपचिपी चिकनी मिट्टी थी, लेकिन भोजन कक्षों में से एक से ली गई तख्तियों से इसे फर्श करना आवश्यक था। फैलाव के लिए, खोदने वालों ने मिट्टी को झोपड़ी के अटारी में छिपा दिया। 19 अप्रैल, 1942 को, सुरंग अंततः उपयोग के लिए तैयार हो गई, और एक चेक अधिकारी अंतिम छह फुट खोदने के लिए नीचे गया, इस काम में उसे लगभग चार घंटे लगे। जब उसने इसे खोला, तो उसने पाया कि सर्वेक्षण गलत था और सुरंग एक फ्लडलाइट वाले क्षेत्र के बीच में खुलती है। कुछ अधिकारियों ने फैसला किया कि जोखिम बहुत अधिक है और उन्होंने निकास क्रम में अपना स्थान छोड़ दिया, लेकिन पांच साहसी लोगों ने कोशिश करने का फैसला किया। वे रोशनी से जगमगाते हुए उस स्थान से रेंगते हुए निकले और रात के अंधेरे में गायब हो गए। चेक नागरिकों में से एक, जोसेफ ब्रिक्स, 5 मई तक फरार रहा, जब उसे एरबाख के पास पकड़ा गया, लेकिन दूसरा चेक नागरिक, एक पोलिश अधिकारी, और मॉन्ट्रियल में जन्मा एक फ्लाइट लेफ्टिनेंट एडी एसलिन कुछ ही दिनों में पकड़े गए।

पांचवें भगोड़े, स्टैनिस्लाव ज़िगमुंट (डैनी) क्रोल को भी शिविर से कुछ ही दूरी पर पुनः पकड़ लिया गया। काले बालों, चौकोर चेहरे और ठुड्डी में गड्ढा वाले क्रोल का जन्म 22 मार्च, 1916 को पोलैंड के ज़ागोरज़ीस में हुआ था और उन्होंने 21 सितंबर, 1937 को पोलिश वायु सेना में भर्ती हुए थे। उन्होंने डेबलिन स्थित अधिकारी कैडेट केंद्र में लड़ाकू विमान तकनीकों का प्रशिक्षण लिया और 1 सितंबर, 1939 को उन्हें कमीशन प्राप्त हुआ। हालांकि, अगले ही दिन डेबलिन के विमानों पर बमबारी हुई और डैनी और उनके साथी अभियान के शेष समय के लिए केवल दर्शक बनकर रह गए; एक सप्ताह बाद, कैडेटों ने रोमानिया की यात्रा शुरू की, जहाँ वे 17 सितंबर को पहुँचे। अगले महीने वे फ्रांस पहुँचे, जहाँ जनरल सिकोरस्की ने पोलिश सरकार का पुनर्गठन किया था। फरवरी 1940 में, सिकोरस्की ने ल्योन-ब्रॉन में पोलिश वायु सेना का एक केंद्र स्थापित किया, और अधिकांश पोलिश सैनिक फ्रांसीसी उपकरणों के साथ लड़ाई जारी रखने की उम्मीद में वहाँ बस गए। डेबलिन कैडेट फिनिश समूह का हिस्सा थे, जिसका नाम इसलिए ऐसा रखा गया था क्योंकि उस देश को सहायता देने के समझौते के तहत इसे फिनलैंड भेजा जाना था। हालांकि, फ्रांसीसी सरकार ने फिनिश समूह को अपने पास रखने का फैसला किया, और यह अपने मोरेन लड़ाकू विमानों के साथ ल्योन-ब्रॉन में ही रहा।

जर्मनी द्वारा फ्रांस पर आक्रमण करने से पोलैंडवासियों को और भी भीषण लड़ाई लड़नी पड़ी। 10 मई, 1940 को ल्योन-ब्रॉन पर बमबारी हुई और अगले महीने भर डेबलिन समूह रक्षा क्षेत्र में मौजूद कमियों को पूरा करने के लिए फ्रांस के विभिन्न हिस्सों में तैनात होता रहा। अंततः अधिकांश पोलैंडवासियों को इंग्लैंड भेज दिया गया और उन्हें आरएएफ में भर्ती कर विभिन्न प्रशिक्षण केंद्रों में भेजा गया, जिनमें डैनी को 57 ओटीयू में भेजा गया। फिर उन्होंने युद्ध का अपना तीसरा अलग अभियान शुरू किया, हालांकि यह भी छोटा ही रहा। 2 जुलाई, 1941 को ग्रेवसेंड से 74 स्क्वाड्रन के स्पिटफायर विमान को उड़ाते समय, महाद्वीप पर अपने ग्यारहवें चक्कर के दौरान क्रोल का विमान मार गिराया गया।

डैनी क्रोल वारबर्ग में एक जाना-पहचाना चेहरा थे। गर्मियों में वे खेल के मैदान में अपने चैम्पियनशिप फेंसिंग दांव-पेच का अभ्यास करते नज़र आते थे, जबकि सर्दियों में उन्हें अक्सर अपनी झोपड़ी के बाहर नग्न अवस्था में बर्फ से नहाते हुए देखा जा सकता था। उनका हमेशा यही मानना था कि इससे उनकी सहनशक्ति और स्टेमिना बढ़ता है। जाहिर है, इसमें कुछ सच्चाई भी थी, क्योंकि डैनी एक छोटे कद के लेकिन मजबूत और ताकतवर व्यक्ति थे, जिनकी लंबाई पाँच फीट से थोड़ी ही अधिक थी, लेकिन उनके छोटे से शरीर में अपार शक्ति समाई हुई थी।

क्रोल उन पहले पोलिश वायुसैनिकों में से एक थे जो आरएएफ में सेवा करते हुए जर्मन सेना के हाथों पकड़े गए थे। हालांकि, बड़ी संख्या में पोलिश सैनिकों के शिविरों में पहुंचने में कई महीने लग गए। 1941 की शरद ऋतु में, बंदी बनाए गए अधिकांश वायुसैनिक अभी भी ब्रिटेन और ब्रिटिश साम्राज्य से थे। वास्तव में, उन्होंने शिविरों में जगह की इतनी कमी कर दी कि स्पैंगेनबर्ग में आरएएफ समुदाय को फिर से स्थापित करना आवश्यक हो गया, और जनवरी 1942 से, डुलैग से गुजरने वाले अधिकांश अधिकारियों को कैसल के पास स्थित इस किले में स्थानांतरित कर दिया गया। फरवरी में पहुंचने वालों में से एक कनाडाई फ्लाइट लेफ्टिनेंट जॉर्ज मैकगिल थे। दुर्भाग्य की कहानियों में, जॉर्ज की आखिरी उड़ान की कहानी का स्थान निश्चित रूप से बहुत ऊंचा होगा।

*

जॉर्ज एडवर्ड मैकगिल का जन्म 14 अप्रैल, 1918 को टोरंटो, ओंटारियो में हुआ था। वे पाँच बच्चों में दूसरे थे। 1936 में हाई स्कूल से स्नातक होने के बाद, जॉर्ज ने टोरंटो विश्वविद्यालय में एक वर्ष तक अनुप्रयुक्त विज्ञान और इंजीनियरिंग का अध्ययन किया, लेकिन अंततः पारिवारिक कोयला व्यवसाय में काम करने के लिए पढ़ाई छोड़ दी। उन वर्षों में उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि एथलेटिक्स में थी; वे एक मजबूत और सक्षम एथलीट थे और उन्होंने क्वार्टर-मील दौड़ में ओंटारियो चैंपियनशिप जीती थी। हालाँकि, उनका अधिकांश समय टोरंटो द्वीप पर बीता, जो ओंटारियो झील में एक कॉटेज क्षेत्र था जहाँ वे अपने दादा-दादी के साथ रहते थे। यह द्वीप दौड़ने के लिए एक आदर्श स्थान था, और जॉर्ज को डोंगी चलाना भी बहुत पसंद था। यहीं पर मैकगिल की मुलाकात बेट्टी गुडमैन से हुई, जो सितंबर 1940 में उनकी पत्नी बनीं। उनका एक बेटा, पीटर, पैदा हुआ, जो जॉर्ज के विदेश जाने से दो महीने पहले हुआ था।

हालांकि उनके कई दोस्त सेना में भर्ती हो गए थे, जॉर्ज ने आरसीएएफ (रेजिडेंट एयर फोर्स) को चुना और 9 दिसंबर, 1940 को माल्टन, ओंटारियो में अपना नेविगेशन प्रशिक्षण शुरू किया। शांत और दृढ़ निश्चयी मैकगिल को यह काम बहुत पसंद आया और उन्हें इसमें कोई कठिनाई नहीं हुई। मई 1941 में कमीशन मिलने तक, जॉर्ज ने पर्यवेक्षक के सभी क्षेत्रों में उच्च रेटिंग प्राप्त कर ली थी। 16 जुलाई, 1941 को मैकगिल गैंडर, न्यूफ़ाउंडलैंड से ब्रिटेन के लिए लंबी उड़ान पर रवाना हुए। अगले महीने वे ऑपरेशनल प्रशिक्षण शुरू करने के लिए 21 ओटीयू गए। 17 अक्टूबर को उन्हें एल्शम वोल्ड्स स्थित 103 स्क्वाड्रन में तैनात किया गया।

10 जनवरी 1942 को, जॉर्ज और उनके दल अपने पांचवें ऑपरेशन के लिए वेलिंगटन विमान में विल्हेमशेवन की ओर जा रहे थे। बमबारी शुरू होने तक सब कुछ ठीक चल रहा था, लेकिन तभी पायलट ने बताया कि पहले प्रयास में एक बम अटक गया है। उन्होंने वेलिंगटन को घुमाकर दोबारा कोशिश करने का फैसला किया। दूसरे प्रयास में, दुर्भाग्यवश, एक फ्लेयर बम बे में घुस गया, जिससे विमान के धड़ में भीषण आग लग गई। दल के सदस्यों ने आग बुझाने की कोशिश की, लेकिन जलती हुई फ्लेयर ने उन्हें पीछे धकेल दिया। जैसे-जैसे धड़ में आग बढ़ती गई, पायलट ने पैराशूट से कूदने का आदेश दिया। जॉर्ज मैकगिल और तीन अन्य दल के सदस्य कूद गए; फिर सह-पायलट ने फ्लेयर को बुझाने की कोशिश करने का फैसला किया। उन्होंने अग्निशामक यंत्र से उस पर प्रहार किया, और अंततः स्प्रे के बल से वह विमान की बाहरी परत में बने एक छेद से बाहर गिर गया। फिर उन्होंने दस्ताने पहने हाथों से जलते हुए कपड़े को बुझाने का काम शुरू किया और कॉकपिट में लौट आए। वेलिंगटन विमान लड़खड़ाते हुए वापस इंग्लैंड में उतरने में कामयाब रहा, और पायलटों को तुरंत वीरता पुरस्कार (डीएफसी) से सम्मानित किया गया। हालांकि, जॉर्ज और अन्य चालक दल के सदस्य दुश्मन के हाथों में फंसे रह गए।

*

फरवरी 1942 में स्पैंगेनबर्ग पहुँचने पर मैकगिल को जल्द ही पता चल गया कि वहाँ लगातार भागने की योजनाएँ बनाई जा रही थीं। एक महत्वाकांक्षी योजना तीन अन्य हाल ही में आए कैदियों की थी, जो सभी 3 पीआरयू के थे: टोनी बार्बर, जो जनवरी 1942 की शुरुआत में विमान दुर्घटना में मारे गए; टॉमी कैलनन, जिन्हें 30 दिसंबर 1941 को पकड़ा गया; और फ्लाइट लेफ्टिनेंट चार्ल्स पियर्स हॉल (जन्म नाम सी. पी. एगर्टन-हॉल), जो यूनिट के साथ अपनी तीसरी उड़ान के दौरान 28 दिसंबर को विमान दुर्घटना में मारे गए। बर्मिंघम में जन्मे लेकिन केंट के सेवनोक्स के पास हैलस्टेड में रहने वाले 'चाज़' हॉल एक शांत और अंतर्मुखी युवक थे, जो हैल्टन के पूर्व फोटोग्राफर थे और कभी आर्क रॉयल पर सेवा दे चुके थे। वह बुरी तरह से भागना चाहते थे लेकिन उन्हें यकीन नहीं था कि यह संभव है। फिर भी, वह व्यावहारिक और व्यवस्थित थे और अपने हाथों से लगभग कुछ भी बना सकते थे।

तीनों ने जल्द ही भागने की एक योजना बनाई जिसमें पलक झपकते ही सटीक निशाना लगाने और असाधारण शारीरिक कौशल की आवश्यकता थी। किले की खाई का इस्तेमाल व्यायाम के मैदान के रूप में किया जाता था, जबकि खाई के दूसरी ओर एक व्यायामशाला थी, जिसका इस्तेमाल कैदी भी करते थे। उचित व्यवस्था करके, व्यायामशाला में मौजूद किसी व्यक्ति ने तीनों पायलटों के लिए एक रस्सी नीचे गिरा दी, जिससे वे व्यायामशाला तक चढ़ सकें। वहां वे अंधेरा होने तक छिपे रहते, और फिर किले से निकल जाते। कागज़ पर यह योजना काफी सरल लग रही थी, लेकिन उपकरण और ध्यान भटकाने की समस्या को हल्के में नहीं लिया जा सकता था। आवश्यक उपकरण ढूंढना आसान साबित हुआ। एक ग्रैपलिंग हुक एक खोखले मेज के पैर में मिला, जिसे शायद किसी पिछले कैदी ने छोड़ दिया था, जबकि कैलनन और हॉल ने एक भंडारगृह में सेंध लगाकर पचास गज लंबी रस्सी चुरा ली। सामग्री प्राप्त होने के बाद, अब स्वतंत्रता के प्रयास की योजना अंतिम क्षण तक बनानी बाकी थी। सबसे बड़ी समस्या खाई से बिना गोली खाए बाहर निकलना था, और कई दिनों तक रेखाचित्र बनाने, पहरेदारों के समय का आकलन करने और छिपे हुए स्थानों की गणना करने के बाद, यह तय किया गया कि कम से कम दो गार्डों को कुछ मिनटों के लिए दूसरी तरफ लगाना होगा। चूंकि हॉल और कैलनन दोनों ने पहले कभी रस्सी चढ़ाई नहीं की थी, इसलिए ध्यान भटकाने का समय जितना लंबा हो, उतना ही बेहतर था।

सेना के कुछ अधिकारी खुशी-खुशी खाई के व्यायामशाला वाले हिस्से में कुछ ऐसा आयोजन करने के लिए सहमत हो गए जिससे पहरेदारों का ध्यान उस ओर आकर्षित हो सके, और एक अन्य वायुसैनिक ने संतरियों को व्यस्त रखने के लिए रग्बी मैच आयोजित करने का प्रस्ताव रखा। अफसोस, सारी योजनाएँ व्यर्थ हो गईं, क्योंकि अप्रैल के अंत में जब योजना को अमल में लाने की तैयारी चल ही रही थी, तभी आरएएफ समूह को स्पैंगेनबर्ग से स्थानांतरित कर दिया गया। रास्ते में, तीनों ने ट्रेन से बाहर निकलने का रास्ता काटकर अपनी कुंठा निकाली, लेकिन रेलगाड़ी के डिब्बे की कठोर, मोटी लकड़ी में कई आरी तोड़ने के बाद बार्बर और हॉल को हार माननी पड़ी। हालांकि, आगे और भी बड़ी चुनौतियाँ थीं, क्योंकि लूफ़्टवाफ़े अपने युद्धबंदियों को एक जगह इकट्ठा करने की प्रक्रिया में था। उन सभी को एक नए शिविर और युद्ध से बचने के एक नए चरण के लिए भेजा जाना था।

अध्याय 4

वे सागन आए

कंटीले तारों के पीछे बिताए ढाई वर्षों के दौरान, इन वायुसैनिकों को कोई खास सफलता नहीं मिली थी। उनमें से केवल दो ही तटस्थ क्षेत्र तक पहुँचने में कामयाब हुए थे (या यूँ कहें कि युद्धबंदियों की बोलचाल की भाषा में 'होम रन' कहा जाता था), जबकि सैकड़ों अन्य भागने के प्रयासों के विभिन्न चरणों में फिर से पकड़े गए थे। फिर भी, युद्ध से बचने के पहले चरण ने उनका मनोबल ऊँचा रखा था। हैरी बर्टन और जॉन शोर की सफलताओं से उत्साहित होकर, उनमें से कुछ ही निष्क्रियता और उदासी में डूबे थे, जो अक्सर कैद की गहरी मनोवैज्ञानिक कठिनाइयों की शुरुआत का संकेत देती है। इसके अलावा, वायुसैनिकों ने अपने बंदी बनाने वालों के लिए अपनी संख्या के अनुपात से कहीं अधिक समस्याएँ खड़ी कर दी थीं और जर्मनों को उनकी सुरक्षा और खोज में संसाधनों का अत्यधिक हिस्सा लगाने के लिए मजबूर करके युद्ध प्रयासों में स्पष्ट रूप से योगदान दे रहे थे। और कैद में वायुसैनिकों की संख्या बढ़ रही थी। रणनीतिक बमबारी अभियान तेज होने और महाद्वीप पर लड़ाकू विमानों की उड़ानें तीव्र होने के साथ ही गिरफ्तारियों की संख्या बढ़ गई थी, और 1942 में अमेरिकी वायुसेना के पहले सदस्य भी कैद में आ गए। जर्मनों के पास वायुसेना के उन कैदियों की बढ़ती संख्या से निपटने के लिए नए और बड़े कारागार शिविर बनाने के अलावा कोई विकल्प नहीं था, जो भागने के लिए इतने बेताब दिख रहे थे।

*

नए शिविरों में सबसे बड़े शिविर के लिए, लूफ़्टवाफ़े पूर्वी जर्मनी के सिलेसिया में गया और बर्लिन और ब्रेस्लाउ के लगभग मध्य में स्थित सागन शहर के पास निर्माण कार्य शुरू किया। शहर से एक मील दक्षिण में, बोबर नदी और त्शिर्ने नामक एक मैली धारा द्वारा निर्मित उल्टे वी के शीर्ष पर, उन्होंने घने चीड़ के जंगल से एक छोटा, खुला स्थान काटकर दो नए परिसर बनाए, एक अधिकारियों के लिए और दूसरा गैर-कमीशन प्राप्त सैनिकों के लिए।

दो साल से अधिक समय तक अनिच्छुक मेहमानों की निगरानी करने से जर्मनों ने काफी सबक सीखे थे और उन्होंने अपने सारे ज्ञान को नए शिविर में लागू किया। प्रत्येक परिसर में छह-छह झोपड़ियाँ थीं, जिन्हें खंभों पर बनाया गया था ताकि नीचे की मिट्टी का निरीक्षण किया जा सके, और फर्श और छत में बने गुप्त दरवाजों से निरीक्षण के लिए आसानी से पहुँचा जा सकता था। यदि कोई सुरंग खोदने की कोशिश करता, तो झोपड़ियाँ परिसर से काफी पीछे बनाई गई थीं ताकि उसे खोदना और भी मुश्किल हो जाए। इसके बाद दस फीट ऊँची और छह फीट की दूरी पर दो कांटेदार तार की बाड़ें थीं। बीच का गैप कंटीले तारों से भरा हुआ था, और एक ढलान परिसर की ओर थी ताकि कोई भी चढ़ने की कोशिश न करे। अंत में, मुख्य बाड़ के लगभग दस गज अंदर परिसर की परिधि के चारों ओर एक तार की पतली सी लड़ी थी। अठारह इंच ऊँची इस तार को चेतावनी तार के नाम से जाना जाता था, और जो भी इसे पार करता, उसे गोलियों की बौछार का सामना करना पड़ता था। जमीन से पंद्रह फीट ऊपर, सौ गज के अंतराल पर, लकड़ी के पहरेदार बुर्ज बने हुए थे, जिन पर स्वचालित हथियारों और सर्चलाइटों से लैस संतरी तैनात थे। उनकी सुविधाजनक स्थिति से ऐसा प्रतीत होता था मानो वे रेतीले शिविर के हर इंच पर नजर रख

सकते हों।

*

नए स्टालैग लुफ्ट III के परिसर वसंत ऋतु की शुरुआत में बनकर तैयार हो गए थे, और पहले अधिकारी 21 मार्च, 1942 को बार्थ से आकर वहाँ रहने लगे। हालाँकि, वे निश्चित रूप से वे युवा और हाल ही में पकड़े गए वायुसैनिक नहीं थे जो इतनी अधिक संख्या में आ रहे थे कि जर्मनों के संसाधनों पर दबाव पड़ रहा था। ये लूफ़्टवाफ़े के सबसे ज़्यादा उपद्रवी सैनिकों में से कुछ थे, और वे जर्मनी भर के शिविरों से आए थे। स्पैंगेनबर्ग से चाज़ हॉल और कनाडाई सैनिक टॉमी थॉम्पसन और जॉर्ज मैकगिल आए थे। डैनी क्रोल और दिग्गज पैरविहीन लड़ाकू पायलट डगलस बैडर सहित एक और समूह को वारबर्ग के ओफ्लैग VIB से छाँटा गया था। लेकिन सबसे बड़ी संख्या बार्थ से आई थी, और बाल्टिक तट शिविर में ट्रेन पर सवार होने वाला समूह वायु सेना से भागे हुए सैनिकों का एक जीता-जागता गिरोह था। इनमें दो नौसैनिक सैनिक, जिमी बकले और पीटर फैंशॉ, और दो मूल लड़ाकू सैनिक, विंग्स डे और माइक केसी शामिल थे। वेस्ट ब्लॉक सुरंग खोदने वाले अधिकांश लोग वहाँ मौजूद थे, जिनमें टिम न्यूमैन, जिमी जेम्स और मकल मुइर शामिल थे। कुकी लॉन्ग (जिसने रास्ते में भागने की असफल कोशिश की), जॉनी डॉज - सूची लंबी होती चली गई। बार्थ के कमांडेंट को पता था कि वह एक खतरनाक समूह को भेज रहे हैं और उन्होंने अपने विदाई भाषण का समापन यह कहते हुए किया, 'आप सभी नए शिविर में पहुँचेंगे - चाहे जिंदा हों या मुर्दा!' और फिर एक बड़ी सी मुस्कान बिखेरी।

माइक वुड और 'स्क्रफ़ी' वियर इस धमकी से ज़रा भी प्रभावित नहीं हुए और रेलगाड़ी के डिब्बे में मौजूद दोनों गार्डों के व्यस्त होने का फ़ायदा उठाते हुए बारी-बारी से खिड़की की जाली से कीलें निकालने लगे। एक मोटे-मोटे नक्शे की मदद से उन्होंने अंदाज़ा लगाया कि ट्रेन स्टैटिन से होकर या उसके पास से गुज़रेगी और उन्होंने सबसे नज़दीकी जगह पर कूदने की योजना बनाई। स्टेशन बोर्ड पर लिखे नामों को पढ़कर उन्होंने नक्शे से अपनी प्रगति का मिलान किया, जब तक कि ट्रेन स्टैटिन से लगभग बीस मील दक्षिण में एक छोटे से स्टेशन पर नहीं पहुँच गई। माइक और स्क्रफ़ी ने तुरंत ध्यान भटकाने का इंतज़ाम किया और पहले से तय संकेत मिलते ही खिड़की नीचे करके बाहर निकल गए। स्क्रफ़ी पहले कूदा, और गार्डों पर एक नज़र डालने के बाद माइक भी उसके पीछे कूद गया। घास के टीले पर लुढ़कते हुए वे कुछ पल के लिए वहीं पड़े रहे और ट्रेन के अंधेरे में गायब हो जाने पर उन्होंने राहत की साँस ली। यह एक साहसी और खतरनाक भागने की कोशिश थी, जिसे उन्होंने बखूबी अंजाम दिया, लेकिन सब व्यर्थ गया। पांच दिन बाद, स्टैटिन में खाना चुराने की कोशिश करते समय दोनों को पकड़ लिया गया और उन्हें सागन भेजे जाने से पहले दस दिन पुलिस लॉकअप में बिताने पड़े। जब वे वहाँ पहुँचे, तब तक जिमी बकले ने पहले ही एक भागने की समिति बना ली थी और भविष्य की योजना बनाना शुरू कर दिया था।

इस बार समिति को तीन भागों में बाँटा गया था ताकि भागने के विभिन्न तरीकों को नियंत्रित किया जा सके: ऊपर से (तार के रास्ते), नीचे से (सुरंगों से) और फाटकों के बीच से (द्वार से)। नक्शे बनाने और उनकी नकल करने, साथ ही सुरंगों के लिए एयर पंप से लेकर पैदल भागने के लिए जर्मन प्रतीक चिन्ह तक, औजार और बचाव सामग्री तैयार करने के लिए विशेष विभाग बनाए गए थे। एक सिलाई विभाग था; नौसेना के विमान चालक और पोषण विशेषज्ञ डेविड लुबॉक के नेतृत्व में एक खाद्य विभाग था; और एक पूरी तरह से सुसज्जित जालसाजी शाखा थी, जिसे डीन एंड डॉसन ट्रैवल ब्यूरो के नाम से जाना जाता था, जिसकी देखरेख फ्लाइट लेफ्टिनेंट गिल्बर्ट विलियम वालेन करते थे।

टिम वालेन एक बेहद खुशमिजाज, निश्चिंत और हंसमुख इंसान थे, जिनका स्वभाव शांत और व्यवहार हमेशा विनम्र था। भीतर से वे दृढ़ निश्चयी, आत्म-अनुशासनशील और दृढ़ संकल्पी थे। युद्धबंदी के रूप में अपने पूरे जीवन में उन्होंने धूम्रपान नहीं किया और अपने शरीर को कम तरल

पदार्थों के सेवन पर जीने के लिए प्रशिक्षित करने का प्रयास किया, ताकि वे उस पलायन के लिए तैयार रहें जो उन्हें पता था कि वे एक दिन जरूर करेंगे।

24 फरवरी, 1916 को लंदन में जन्मे टिम को अपने पिता से दो गुण विरासत में मिले थे। उनके पिता एक व्यावसायिक कलाकार थे जिन्होंने प्रथम विश्व युद्ध के दौरान रॉयल फ्लाइंग कॉर्प्स में सेवा की थी: असाधारण कलात्मक प्रतिभा और उड़ने की तीव्र इच्छा। बचपन में उन्हें हेंडन एयर डिस्प्ले देखना बहुत पसंद था और वे घंटों तक वहाँ देखे गए विमानों के चित्र बनाते रहते थे; वास्तव में, टिम विमान डिजाइन में अपना करियर बनाना चाहते थे। हालाँकि, उस समय विमान उड़ाना एक महंगा और अनिश्चित पेशा था, इसलिए वालेन ने लंदन में अपने चाचा के सिल्वर डिज़ाइन स्टूडियो में प्रशिक्षु के रूप में काम करना शुरू किया, जहाँ उन्होंने वॉलपेपर और कपड़े के डिज़ाइन पर काम किया। बाद में, जब उन्हें एहसास हुआ कि डिज़ाइन उनके लिए करियर नहीं है, तो टिम ने अपनी पहली पसंद, विमान उड़ाने के लिए पर्याप्त धन बचाने की उम्मीद में मिडलैंड बैंक में क्लर्क की नौकरी कर ली।

1936 की शुरुआत में उन्होंने बैंक प्रबंधन के सामने ग्लाइडिंग क्लब बनाने का प्रस्ताव रखा, और कर्मचारियों की प्रतिक्रिया इतनी ज़बरदस्त थी कि ग्लाइडिंग क्लब के बजाय फ्लाइंग क्लब शुरू करने का निर्णय लिया गया, जिसके लिए बैंक के निदेशकों ने क्लब के खर्चों के लिए अनुदान दिया। इस प्रकार, 1937 में मिडलैंड बैंक फ्लाइंग क्लब की स्थापना हुई, और इस विचार के जनक टिम को क्लब का मानद सचिव बनाया गया। शुरुआत में सौ से अधिक आवेदन आए, हालांकि पहले चरण में केवल बत्तीस लोगों को ही चुना जा सका। बैंक ने टिम वालेन को फ्लाइंग प्रशिक्षक के रूप में प्रशिक्षण लेने के लिए छह महीने की छुट्टी दी और उसके बाद उन्होंने सप्ताहांत में अन्य कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया।

टिम दिसंबर 1937 में रॉयल एयर फ़ोर्स (RAFVR) में शामिल हुए और युद्ध से पहले के वर्षों में बैंक कर्मचारियों को प्रशिक्षण देना जारी रखा; मार्च 1939 तक उनका तबादला 97 स्क्वाड्रन में हो गया था। जब युद्ध शुरू हुआ, तो टिम ने 10 एलीमेंट्री फ्लाइंग ट्रेनिंग स्कूल (EFTS) में फ्लाइंग इंस्ट्रक्टर के रूप में तैनाती की तैयारी में कुछ रिफ्रेशर कोर्स किए। वे अपने बेहद दयालु स्वभाव और धैर्य के कारण एक लोकप्रिय शिक्षक थे, और अपने हास्यबोध के लिए भी उतने ही प्रसिद्ध थे। एक बार प्रशिक्षण के दौरान एक दुर्घटना में उनका पैर टूट गया और उन्हें बैसाखियों के सहारे चलना पड़ा। एक दिन अपनी बहन जॉय के साथ फिल्म देखने जाते समय, टिम ने उस बस को देखा जिसमें उन्हें जाना था, और जॉय को एहसास हुआ कि वे समय पर स्टॉप तक नहीं पहुँच पाएँगे। टिम ने बेपरवाही से कहा, 'कोई बात नहीं,' और तुरंत सड़क के बीचोंबीच जाकर बस के रास्ते में खड़े हो गए और अपनी बैसाखियाँ लहराने लगे। बस अचानक रुक गई और कंडक्टर घायल हीरो की मदद के लिए तुरंत बाहर आया और उसे बस में चढ़ाया; उसने वैलेंस को किराया देने से भी मना कर दिया। बाद में टिम ने मुस्कुराते हुए कहा, 'देखा? यह दौड़ने से कहीं ज्यादा आसान था, है ना?'

एक वर्ष से अधिक समय तक प्रशिक्षण देने के बाद, टिम कार्रवाई में शामिल होने के लिए उत्सुक थे और उन्होंने एक ऑपरेशनल यूनिट में तैनाती के लिए आवेदन किया। अंततः, कई आवेदनों और देरी के बाद, अगस्त 1941 में उन्हें 25 OTU में तैनात किया गया। उनकी प्रशिक्षण उड़ानें सामान्य रूप से चल रही थीं, लेकिन 9-10 सितंबर, 1941 की रात को, टिम ने उत्तरी इंग्लैंड में स्थित अपने बेस से एक नए दल को अभ्यास बमबारी के लिए ले गए। उन्होंने दो बम गिराए और फिर कंट्रोल टावर से वापसी का निर्देश प्राप्त किया। टिम के दल से आगे कोई संदेश प्राप्त नहीं हुआ। पहले तो यह माना गया कि विमान किसी तरह अपने मार्ग से भटक गया और समुद्र में गिर गया। इसलिए स्क्वाड्रन को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि टिम का विमान सैकड़ों मील दूर भटक गया था और अंततः रॉटरडैम के पास दुर्घटनाग्रस्त हो गया। टिम वालेन युद्धबंदी बन गए।

अपने पंख अस्थायी रूप से कट जाने के बाद, टिम ने अपने दूसरे शौक यानी कला की ओर

रुख किया। अब एक विशाल, घनी मूंछों के साथ, जो उन्हें कार्टूनों में मशहूर ब्रिटिश विमान चालक पायलट ऑफिसर प्रून से मिलती-जुलती बनाती थी, उन्होंने जालसाजी विभाग के संचालन को व्यवस्थित करने का काम शुरू कर दिया।

*

भागने की योजना में सबसे बड़ा विभाग सुरंग खोदने वाला था, जिसका नेतृत्व छोटे कद और मजबूत शरीर वाले रॉबर्ट 'क्रम्प' केर-रामसे कर रहे थे, जो सितंबर 1940 से कैदी थे, और वॉली फ्लॉडी कर रहे थे, जो एक लंबे कद के कनाडाई लड़ाकू पायलट थे और युद्ध से पहले उत्तरी ओंटारियो में खनन इंजीनियर थे। खुदाई करने वालों को जल्द ही पहली समस्या का पता चला। जिस धूसर रेतीली मिट्टी पर जर्मनों ने शिविर बनाया था, उसके नीचे छह या आठ इंच की गहराई पर पीली रेत छिपी हुई थी। इसे फैलाना मुश्किल था और उससे भी ज्यादा खतरनाक था इस पर काम करना, क्योंकि यह बहुत अस्थिर थी और बिना किसी चेतावनी के कभी भी ढह सकती थी।

पहली सुरंगें बार्थ में बनाई गई सुरंगों जैसी ही थीं – काफी उथली, बिना सहारे वाली और छत में पतली लकड़ी की छड़ से किए गए छोटे छेदों से हवादार। एक हफ्ते के अंदर कई शाफ्ट खोदे जा चुके थे और काम तेजी से आगे बढ़ रहा था। माइक केसी ने एक सुरंग खोदने का नेतृत्व किया, पीटर फैंसहावे ने दूसरी और मकल मुइर ने तीसरी। हालांकि बाद वाली दोनों सुरंगें लगभग पंद्रह फीट गहरी थीं, फिर भी उनमें कई बार धंसने की घटनाएं हुईं, जिनमें से कुछ तो लगभग जमीन तक पहुंच गईं। एक-एक करके इन सुरंगों का पता अलग-अलग तरीकों से चला। कुछ सुरंगें तब ढह गईं जब गुंडों ने आग बुझाने वाले पंप से परिसर में पानी भर दिया, और कुछ तब धंस गईं जब शिविर के चारों ओर भारी ट्रक या वैगन चलाए गए। कुछ सुरंगें तो अपने आप ही गिर गईं, जिससे तार की ओर इशारा करती हुई एक संदिग्ध सी दरार बन गई।

दरअसल, जब सागन में गर्मी का मौसम आया, तब तक इन मूल सुरंगों में से केवल दो ही बची थीं: फैंसहावे की सुरंग और हट 67 से फ्लॉडी की नई सुरंग, दोनों को नकली जालों की एक अनूठी प्रणाली द्वारा सुरक्षित किया गया था। पहली सुरंग आठ फीट की गहराई तक खोदी गई थी और यह लगभग चालीस फीट तक क्षैतिज रूप से फैली हुई थी। फिर, उस सुरंग के तल में, एक और सुरंग बीस फीट की गहराई तक खोदी गई और मुख्य सुरंग वहीं से आगे बढ़ी। इस तरह, यदि पहली सुरंग मिल जाती, तो मुख्य सुरंग से जोड़ने के लिए बस एक और सुरंग खोदना ही काफी होता। फैंसहावे की सुरंग, जो दोनों में से कम गहरी थी, तीन महीने बाद खोजी गई, लेकिन दूसरी सुरंग फ्लॉडी, जॉनी मार्शल और क्रम्प केर-रामसे की देखरेख में आगे बढ़ती रही। यह निश्चित रूप से एक महत्वाकांक्षी प्रयास था। हट 67 छिपने की जगह से लगभग चार सौ फीट दूर थी, लेकिन इसे इसलिए चुना गया था क्योंकि जर्मन इसे सुरंग खोदने के लिए कम संभावित शुरुआती बिंदु मानते। इसके बावजूद, नकली शाफ्ट मिल गया, जिससे खुदाई करने वालों को एक जोड़ने वाला शाफ्ट खोदना पड़ा। फिर झोपड़ी के फर्श के नीचे का फैलाव क्षेत्र भर गया, जिससे उन्हें अगली झोपड़ी तक एक सुरंग खोदनी पड़ी, जहाँ शेष रेत फैलाई गई।

जब ये सब सुरंग खोदने का काम चल रहा था, तब भागने के दूसरे तरीके भी आजमाए गए। सिले-सिलाए जर्मन वर्दी पहने और पैसे, नक्शे और जाली कागजात लेकर विंग्स डे, निक टिंडल और एक चेक वायुसैनिक ने लेखाकारों के एक दल का वेश बनाकर गेट से बाहर निकलने की कोशिश की। गार्ड ने उनके पास पर मुश्किल से ही नज़र डाली और वे आधी सड़क पार कर चुके थे कि टावर के एक संतरी ने विंग्स को पहचान लिया और चिल्ला उठा। अन्य कैदी वोरलागर में बने स्नानघर के लिए परिसर से बाहर जाने वाले लोगों की गिनती में हेराफेरी करके भाग निकले। एक कैदी जर्मनों के हवाले होने से पहले एक स्वीडिश जहाज पर चुपके से चढ़ने में कामयाब हो गया। इसी तरह की चाल का इस्तेमाल करते हुए, जिमी जेम्स और एक अन्य कैदी ने टाइफस के टीके लगवाने के लिए शिविर से बाहर जाने वाले लोगों की गिनती में हेराफेरी की और वोरलागर

में कोयले के शेड में छिप गए। उन्हें उम्मीद थी कि वे वहाँ से तार काट लेंगे, लेकिन संगठन के पास तार काटने की मशीन उपलब्ध नहीं थी, और दोनों को सुरंग खोदकर बाहर निकलना पड़ा। उन्होंने एक छोटी सी सुरंग खोदी और तार की ओर बीस फीट तक खुदाई कर ली थी, तभी एक गार्ड आंधी से बचने के लिए शेड में आया और संयोग से उसने उन्हें कोयले के ढेर के पीछे देख लिया।

*

1942 के वसंत के उत्तरार्ध में युद्ध के विभिन्न मोर्चों पर कई महत्वपूर्ण घटनाएँ घटीं, जिनकी अफवाहें अंततः लूफ़्ट III के सैन्य बलों तक पहुँचीं। मई की शुरुआत में कोरेगिडोर स्थित अमेरिकी चौकी ने जापानियों के सामने आत्मसमर्पण कर दिया, और एक सप्ताह बाद सोवियत संघ ने खार्कोव क्षेत्र में आक्रमण शुरू किया, जिसके परिणामस्वरूप कुछ ही हफ्तों में सोवियत संघ को एक और बड़ी हार का सामना करना पड़ा। 30 मई को आरएएफ ने अपने बहुप्रतीक्षित ऑपरेशन मिलेनियम को अंजाम दिया, जिसमें कोलोन पर एक हजार विमानों का हमला शामिल था। हालाँकि मिलेनियम द्वारा पहुँचाया गया तात्कालिक नुकसान निर्णायक नहीं था, फिर भी इस हमले ने बॉम्बर कमांड की बढ़ती ताकत को प्रदर्शित किया। मिलेनियम से विमानकर्मियों का मनोबल बढ़ा, और बाद के हमलों में यह स्पष्ट हो गया कि उन्होंने अंततः सफलता प्राप्त कर ली है।

हमेशा की तरह, 8-9 जून, 1942 की रात को हैप्पी वैली (जिसे क्रू रूर कहते थे) में काफी चहल-पहल थी। आरसीएएफ की 405 स्क्वाड्रन का हैलिफ़ैक्स चार इंजन वाला बमवर्षक एच-हैरी दो सौ अन्य भारी बमवर्षकों के साथ एसेन में क्रुप्स कारखाने की ओर बढ़ रहा था। रात साफ थी और एक हफ्ते पहले ही शहर पर हमला कर चुके क्रू को पूरा भरोसा था कि यह मिशन भी आसान होगा। बमवर्षक के धड़ में, नेविगेटर जिम वर्नहम रेडियो ऑपरेटर बिल केर के साथ कुछ मज़ाक कर रहे थे और दोनों दोस्त आरएएफ की 77 स्क्वाड्रन के साथ किए गए हमलों को याद कर रहे थे। जिम ने छोटी सी खिड़की से बाहर देखा और नीचे नाचती हुई लाल और पीली बत्तियाँ देखीं जो लक्ष्य क्षेत्र के पास पहुँचने का संकेत दे रही थीं। वह हमेशा की तरह यह कहने ही वाले थे कि आग की लपटों में एक अलग ही खूबसूरती है, तभी एक सर्चलाइट की तेज़ रोशनी से उनकी आँखें चौंधिया गईं। खिड़की से आती तेज सफेद रोशनी के साथ, जिम और उसके साथी आने वाले भीषण हमले के लिए तैयार हो गए। उन्हें ज्यादा देर इंतजार नहीं करना पड़ा।

पहले धमाके से हैलिफ़ैक्स एक तरफ़ पलट गई, और जब तक पायलट उसे गोता लगाने से रोक पाता, तब तक वह हज़ारों फ़ीट नीचे गिर चुकी थी। स्थिति और भी बदतर हो गई क्योंकि एयलरॉन बाएँ मुड़ने की स्थिति में जाम हो गए थे, जिससे पायलट विमान को नियंत्रित करने में असमर्थ हो गया था। उसने द्वितीयक लक्ष्य पर भार गिराने का आदेश दिया और नियंत्रण मुक्त करने के लिए जी-जान से संघर्ष किया। उसकी इस जद्दोजहद के दौरान, तेज़ पश्चिमी हवाओं के कारण हैलिफ़ैक्स जर्मनी के भीतर और गहराई में चली गई। वह एंटी-एयरक्राफ्ट पोस्ट के ऊपर से गुज़री, बाल-बाल और ज़्यादा नुकसान से बची, इससे पहले कि पायलट नियंत्रण मुक्त कर पाता और इंग्लैंड की ओर मुड़ पाता। ऐसा लग रहा था कि सब कुछ ठीक हो जाएगा, इसलिए जिम वर्नहम ने थोड़ा आराम किया और बेस पर वापस जाने का रास्ता तय करने में जुट गया। विन्निपेग, मैनिटोबा में एक सामान्य परवरिश से लेकर कब्ज़े वाले यूरोप के ऊपर एक क्षतिग्रस्त हैलिफ़ैक्स में नेविगेटर की कुर्सी तक का उसका सफ़र बहुत लंबा था।

*

जेम्स क्रिस्टल वर्नहम का शुरुआती जीवन उस पीढ़ी के युवा कनाडाई पुरुषों जैसा ही था। उनके

माता-पिता प्रथम विश्व युद्ध से पहले कनाडा में आकर बस गए थे, लेकिन 1914 में अपने पैतृक देश स्कॉटलैंड लौट गए, जहाँ 15 जनवरी, 1917 को जिम का जन्म हुआ। युद्धविराम के बाद परिवार वापस कनाडा आ गया और अंततः विन्निपेग में बस गया। वर्नहम परिवार के बड़े सदस्य कैनेडियन पैसिफिक रेलवे में काम करते थे, और युवा जिम और उनकी बड़ी बहन फ्लोरेंस, कनाडा के पश्चिमी भाग के एक युवा और चहल-पहल भरे शहर में पले-बढ़े। गर्मियों की छुट्टियों में जिम और फ्लोरेंस अक्सर उत्तरी ओंटारियो के माइन सेंटर जाते थे, जहाँ उनके चाचा-चाची एक जनरल स्टोर चलाते थे। वर्नहम बच्चों के लिए गर्मियाँ बहुत आनंददायक होती थीं; दिन लंबे और गर्म होते थे, और माइन सेंटर के आसपास के समुद्र तटों, खेतों और जंगलों में घूमने-फिरने की जगहों की कोई कमी नहीं थी।

विन्निपेग में हाई स्कूल से स्नातक होने के बाद, जिम वर्नहम को महामंदी की वास्तविकता का सामना करना पड़ा। अपने गृहनगर में काम न मिलने के कारण, वे माइन सेंटर लौट आए और दुकान में मदद करने लगे। हालाँकि, वे एक महत्वाकांक्षी युवक थे और जल्द ही विन्निपेग लौट आए, जहाँ उन्हें जॉन डीरे प्लॉ के लेखा विभाग में नौकरी मिल गई। जब युद्ध शुरू हुआ, तो जिम वर्नहम को यह तय करने में कुछ समय लगा कि वे किस सैन्य शाखा में शामिल हों, लेकिन 10 अक्टूबर, 1940 को उन्होंने वायु सेना में शामिल होने का निर्णय लिया। जुलाई 1941 में उन्हें वायु पर्यवेक्षक के रूप में कमीशन मिला। उसी महीने बाद में वर्नहम इंग्लैंड के लिए रवाना हुए और अक्टूबर के अंत तक वे 77 स्क्वाड्रन के साथ ऑपरेशनल हो गए। उन्होंने 77 स्क्वाड्रन के साथ सोलह हवाई हमले किए और अप्रैल 1942 में, हैलिफ़ैक्स विमानों में प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद, उनका तबादला आरसीएएफ के 405 स्क्वाड्रन में कर दिया गया।

वर्नहम का अपने नए स्क्वाड्रन के साथ पहला अभियान कोलोन पर 'हजारों का हमला' था। जिम और उनके दल को कोई चोट नहीं आई और अगले दिन उनकी तस्वीर सभी अखबारों में छपी। कैप्शन में लिखा था, 'घर लौट आए, अब तक के सबसे बड़े कोलोन हमले से वापस।' दल के लिए यह अच्छी पब्लिसिटी थी और इससे उन्हें कुछ दिनों तक स्टेशन मेस में खूब ड्रिंक्स मिलती रहीं। एसेन लौटने से पहले अगले हफ्ते तीन और अभियान हुए।

जैसे ही घायल हैलिफ़ैक्स विमान रूर सागर से एसेन को पीछे छोड़ते हुए आगे बढ़ा, जिम वर्नहम को धीरे-धीरे यह विश्वास होने लगा कि वे क्रुप्स कारखाने पर तीसरी बार हमला करने के लिए वापस आ सकते हैं। हॉलैंड के ऊपर, तोप के गोलों की गड़गड़ाहट ने विमान को फिर से झकझोर दिया। तोपचियों ने एक जर्मन लड़ाकू विमान को मार गिराया, लेकिन तब तक नुकसान हो चुका था। मेसेरश्मिट मिसाइलों ने हैलिफ़ैक्स की ईंधन लाइनों को निशाना बना लिया था, और दोनों बाएँ इंजन लड़खड़ा गए और अंततः पूरी तरह बंद हो गए। पायलट ने बड़े बमवर्षक विमान को यथासंभव लंबे समय तक हवा में रखने की कोशिश की, लेकिन यह एक हारी हुई लड़ाई थी। क्षतिग्रस्त विमान को गिरने से रोकने के लिए कुछ भी काम नहीं आ रहा था और कुछ ही समय में यह सोलह हज़ार फीट से गिरकर एक हज़ार फीट से थोड़ा ऊपर आ गया। इंटरकॉम टूट गया था, इसलिए कप्तान ने अनिच्छा से चालक दल को पैराशूट से कूदने का इशारा किया। जिम वर्नहम भागने के द्वार की ओर चढ़े, उनका भारी पैराशूट विमान के भीतर से निकलने में मुश्किल पैदा कर रहा था, उन्होंने दरवाजे पर खुद को घुमाया और अंधेरे में गिर गए। हवा की कान फाड़ देने वाली गड़गड़ाहट लगभग तुरंत ही थम गई, और जिम ने मंत्रमुग्ध होकर बमवर्षक विमान को उससे दूर जाते हुए देखा। वह एक जोते हुए खेत के किनारे पर ज़ोर से उतरा। जैसे ही वह उतरा, जर्मन सैनिक पहले से ही उसकी ओर दौड़ रहे थे।

*

जब जिमी वर्नहम लुफ्ट III पहुंचे, तब तक नई सुविधा में व्याप्त अधिकांश समस्याओं का समाधान हो चुका था। शुरुआती कुछ हफ्तों में कैदियों ने अपर्याप्त सुविधाओं और खराब

परिस्थितियों के बारे में कई शिकायतें की थीं, और शिविर के कर्मचारियों ने समस्याओं को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया था। कमांडेंट, इकसठ वर्षीय कर्नल फ्रेडरिक विल्हेम वॉन लिंडिनर-विल्डौ, पुराने जमाने के एक पूर्व घुड़सवार अधिकारी थे, जिन्हें प्रथम विश्व युद्ध के दौरान सात घाव लगे थे और उन्हें आयरन क्रॉस (प्रथम श्रेणी) से सम्मानित किया गया था। वे एक समय गोरिंग के निजी कर्मचारियों में सेवा दे चुके थे और एक दृढ़ लेकिन मानवीय अधिकारी के रूप में अपनी प्रतिष्ठा के कारण रीचमार्शल द्वारा विशेष रूप से चुने गए थे। जब भी कोई कैदी भागने की कोशिश करता, तो वे अक्सर क्रोधित हो जाते थे, लेकिन आम तौर पर उन्हें एक बहुत ही समझदार व्यक्ति माना जाता था।

शिविर के बाकी कर्मचारियों में से तीन ऐसे थे जिनका कैदियों से नियमित संपर्क रहता था। ड्यूटी अधिकारियों में से एक हंस पीबर एक पूर्व स्कूल शिक्षक थे, जो बार्थ में वायुसैनिकों के साथ काम कर चुके थे। ऑस्ट्रियाई नाज़ी पार्टी के शुरुआती सदस्यों में से एक, पीबर को नाज़ी रक्त पदक से सम्मानित किया गया था, लेकिन ऑस्ट्रिया पर जर्मन कब्जे (एन्स्क्लस) के बाद उन्होंने इसे पहनने से इनकार कर दिया था। वह एक चतुर व्यक्ति थे, जो अपने फायदे के लिए रंग बदलने से भी नहीं हिचकिचाते थे। फिर भी, उनका युद्धबंदियों के साथ अच्छा तालमेल था और उनमें से अधिकांश उन्हें पसंद करते थे।

परिसर में नियमित रूप से मौजूद रहने वाले दो अन्य जर्मन अधिकारी थे, मुख्य जासूस, कॉर्पोरल कार्ल ग्रीसे, जिसे रबरनेक उपनाम दिया गया था, और स्टाफ सार्जेंट हरमन ग्लेम्निट्ज़, जिसे मंदबुद्धि कहा जाता था। ग्रीसे एक बेहद अप्रिय चरित्र था, जो अपराधियों को तुरंत पहचान लेता था और उसमें हास्यबोध बिल्कुल नहीं था। शिविर के कुछ कर्मचारियों सहित सभी उससे घृणा करते थे, और भागने की साजिशों का पर्दाफाश करने की उसकी लगभग सनकी इच्छा के कारण वह एक खतरनाक व्यक्ति था। वह वायुसैनिकों से बेहद नफरत करता था और पूरी तरह से ईमानदार था।

जुलाई 1940 से वायुसैनिकों की रखवाली कर रहे ग्लेम्निट्ज़ एक बिल्कुल अलग तरह के व्यक्ति थे। युवावस्था में उन्होंने यॉर्कशायर की एक इंजीनियरिंग कंपनी में काम किया था और वर्षों के दौरान अंग्रेजों के तौर-तरीकों की गहरी समझ विकसित कर ली थी। उनकी तेज़ बुद्धि और अवलोकन क्षमता ने उन्हें एक बेहद सक्षम प्रतिद्वंद्वी बना दिया था, भले ही उनका उपनाम अनुचित था। ग्लेम्निट्ज़ ने वर्षों में दर्जनों सुनियोजित भागने की योजनाओं को नाकाम कर दिया, फिर भी कैदी हमेशा उनका सम्मान करते थे और उन्हें पसंद भी करते थे।

रबरनेक और ग्लेम्निट्ज़ उपनामों से जाने जाने वाले कुछ चालाक जासूसों की देखरेख करते थे। इनमें से एक था कीन टाइप, जिसे उसके कर्तव्यनिष्ठापूर्ण निर्वाह के कारण यह नाम दिया गया था, और दूसरा था एडॉल्फ, जिसे फ्यूहरर से मिलती-जुलती शक्ल के कारण यह उपनाम मिला था। रूडी एक और जासूस था जो अपना अधिकांश समय परिसर में उपद्रवियों की तलाश में घूमता रहता था। शुरू से ही, भागने की योजना बनाने वालों को पता था कि उन्हें इन चालाक जासूसों पर कड़ी नज़र रखनी होगी।

बाकी पहरेदार अपेक्षाकृत कम खतरनाक थे। फेरेट्स उन्हें निकम्मे और सुस्त समझते थे, और उनके वरिष्ठ अधिकारी भी उन्हें तुच्छ समझते थे। शिविर के एक सुरक्षा प्रमुख ने पहरेदारों की टुकड़ी का वर्णन करते हुए कहा, 'ये लंगड़े, अपंग, अंधे और कुछ मानसिक रूप से विक्षिप्त लोगों का झुंड था, जिनका एकमात्र मकसद कैदियों से सिगरेट हासिल करना था।' इनमें से अधिकतर अधिक उम्र के सैनिक थे जो कहीं और सेवा के लिए अयोग्य थे, और कुछ मामलों में तो जेल शिविरों में सेवा के लिए भी अयोग्य थे। जैसे-जैसे युद्ध आगे बढ़ा, उनमें से कई कैदियों से तंबाकू और साबुन जैसी विलासिता की वस्तुएं हासिल करने के लिए और भी दृढ़ हो गए, जो जर्मनी में कहीं और लगभग अनुपलब्ध थीं। इसी कारण से भागने वाले संगठन को उन्हें आसानी से भ्रष्ट करना आसान लगता था।

नए परिसर में शुरुआती कुछ हफ्तों के बाद, चीज़ें धीरे-धीरे व्यवस्थित होने लगीं। एक थिएटर

मंडली का गठन किया गया और विभिन्न अधिकारियों ने रेड क्रॉस या वाईएमसीए द्वारा उपलब्ध कराए गए उपकरणों के साथ खेल आयोजनों का आयोजन शुरू किया। रेड क्रॉस ने लिस्बन और जिनेवा स्थित डिपो से शिविर में जीवन रक्षक खाद्य सामग्री के पार्सल भी भेजे। वोरलागर में स्थित पार्सल कार्यालय ने लॉरेंस रीवेल-कार्टर और कीथ ओगिल्वी (ब्रिटेन की लड़ाई के दौरान स्पिटफायर उड़ाने वाले एक कनाडाई लड़ाकू पायलट) की कड़ी निगरानी में इन पार्सलों के वितरण का काम संभाला। जर्मन कर्मचारियों की सराहना करनी होगी कि पार्सलों की कभी कोई चोरी नहीं हुई।

रेड क्रॉस के खाद्य पार्सलों की मदद से कुछ स्वादिष्ट भोजन बनाना संभव था। फिर भी, भोजन के बाद कभी भी पूरी तरह संतुष्ट होने का सुखद एहसास नहीं होता था। स्पैंगेनबर्ग के दिनों से जर्मन राशन में बहुत कम बदलाव आया था: मार्जरीन और एक तरह के रासायनिक जैम के साथ काली रोटी, जिसे नकली जैम कहा जाता था; भुने हुए शाहबलूत या बलूत से बनी कॉफी; पतला सब्जी का सूप; और एक अजीब 'लक्जरी' वस्तु, जैसे मछली पनीर, एक तीखा और लगभग न खाने योग्य पदार्थ जिसका उस डेयरी उत्पाद से कोई लेना-देना नहीं था जिसके नाम पर इसका नाम रखा गया था। रेड क्रॉस के पार्सलों से पर्याप्त कच्चा माल मिल जाता था जिससे हर हफ्ते अच्छा भोजन तैयार किया जा सकता था। रविवार के खाने में सूप, कॉर्नड बीफ, कटे हुए आलू, मटर और तली हुई मैकरोनी और पनीर, उसके बाद पुडिंग और कॉफी शामिल हो सकती थी। शाम के नाश्ते में रेड क्रॉस बिस्कुट पाउडर, मार्जरीन, ब्रेड क्रम्ब्स, मिल्क पाउडर (जिसे क्लिम कहा जाता था) और किशमिश से बना केक शामिल हो सकता था। नाश्ता कुछ कम दिलचस्प होता था, सैनिक राशन में मिलने वाली रोटी, जैम और एक कप चाय से ही काम चलाते थे। हालांकि, ऐसे भी समय थे जब दलिया बनाने की सामग्री आसानी से मिल जाती थी।

जब दलिया बनाने की बात आती थी, तो ज़्यादातर क्रीगी (छोटे लड़के) 'सैंडी' गन से सलाह लेते थे, जिन्हें स्कॉटिश विरासत के कारण इस व्यंजन को बनाने की कला आती थी। वह एक हट्टे-कट्टे, सांवले रंग के, तीक्ष्ण निगाहों वाले व्यक्ति थे और कभी-कभी गंभीर और लगभग चुप रहते थे। हालांकि, उकसाने पर उनके चेहरे पर एक प्यारी सी मुस्कान आ जाती थी और एक बार जब उनका रूखा बाहरी रूप पिघल जाता था, तो वे दयालु और विनोदी हो जाते थे। उनमें न्याय और निष्पक्षता की गहरी भावना भी थी। बचपन से ही वे अपने या किसी भी दूसरे लड़के के साथ होने वाले अन्याय को बर्दाश्त नहीं कर पाते थे और अन्याय होते ही तुरंत कार्रवाई करते थे।

स्कॉटलैंड के एक चिकित्सक के दूसरे पुत्र, एलास्टेयर डोनाल्ड मैकिंटोश गन का जन्म 27 सितंबर, 1919 को पर्थशायर के औचटरार्डर स्थित पारिवारिक घर में हुआ था। वे स्कूल में एक प्रतिभाशाली खिलाड़ी थे, लेकिन 1938 में टाइटैनिक का निर्माण करने वाले जहाज निर्माता हार्लैंड एंड वोल्फ में प्रशिक्षु के रूप में काम करने के लिए उन्होंने जल्दी ही स्कूल छोड़ दिया। अगले वर्ष उन्होंने कैम्ब्रिज के पेम्ब्रोक कॉलेज में आवेदन किया और डीजल इंजीनियर बनने के इरादे से यांत्रिक विज्ञान का अध्ययन करने के लिए उनका चयन हो गया। उनकी खेल प्रतिभा ने उन्हें रग्बी टीम के लिए भी ट्रायल का अवसर दिलाया, और यदि युद्ध के कारण उनकी शिक्षा बाधित न हुई होती तो वे कॉलेज के लिए अच्छा प्रदर्शन करते।

सैंडी गन 22 फरवरी, 1940 को रॉयल एयर फोर्स (RAFVR) में भर्ती हुए और जब मार्च में छुट्टियों के लिए कैम्ब्रिज से निकले, तो उन्हें अंदाज़ा था कि वे कुछ समय तक वापस नहीं लौटेंगे। उनका अनुमान सही निकला, क्योंकि 22 जून को उन्हें प्रशिक्षण के लिए बुलाया गया। सितंबर के अंत में उन्होंने प्रशिक्षण शुरू किया और 18 जनवरी, 1941 को उन्हें पायलट का दर्जा प्राप्त हुआ। एक हफ्ते बाद वे टोही प्रशिक्षण के लिए रवाना हुए और जून 1941 में तटीय कमान के 48 स्क्वाड्रन के साथ अपनी पहली ड्यूटी पर तैनात हुए। यह स्क्वाड्रन ब्रिटिश द्वीपों के विभिन्न हवाई अड्डों से टोही और संचार मिशनों के लिए एंसन विमान उड़ाता था। यह उड़ान बहुत रोमांचक तो नहीं थी, लेकिन कम से कम सैंडी कुछ उपयोगी काम तो कर रहे थे। फिर, सितंबर के पहले दिन, उन्हें बेन्सन स्थित 1 पीआरयू में तबादले के रूप में एक सुखद आश्चर्य मिला। अब

उन्हें उन मित्रवत लेकिन धीमे एंसन विमानों को उड़ाने की ज़रूरत नहीं थी। सैंडी गन अब नीले रंग के चिकने, बिना हथियारों वाले, निहत्थे स्पिटफायर विमानों को उड़ाने की ओर अग्रसर हो रहे थे, जिन्हें विशेष रूप से उच्च ऊंचाई पर उड़ान भरने के लिए संशोधित किया गया था। अंततः, उन्हें असली उड़ान भरने का मौका मिलने वाला था।

फरवरी 1942 में सैंडी को एक हफ्ते की छुट्टी मिली और उन्होंने कुछ समय औचटरार्डर में बिताया, जहाँ उन्होंने अपने नए खरीदे 1928 मॉडल के लैगोंडा हेलीकॉप्टर में सैर की और पर्थशायर की तेज़ बहने वाली नदियों में सैल्मन मछली पकड़ी। हालाँकि, यह छुट्टी बहुत छोटी थी और वे जल्द ही वापस ड्यूटी पर आ गए। उन्हें नॉर्वेजियन फियोर्ड्स में जर्मन नौसैनिक इकाइयों की निगरानी के लिए तैनात तीन विमानों की टुकड़ी के हिस्से के रूप में विक में भेजा गया। नए संशोधनों के साथ, स्पिटफायर विमानों की मारक क्षमता पहले से कहीं अधिक हो गई थी; वे लड़ाकू विमानों की सुरक्षा के ऊपर से उड़ते थे, और उनके एकमात्र दुश्मन एंटी-एयरक्राफ्ट गन और यांत्रिक खराबी थे। हालाँकि, उत्तरी स्कॉटलैंड में अक्सर रहने वाले भयानक मौसम में उड़ान भरना मुश्किल था। एक दिन बेस पर लौटते समय, सैंडी ने पाया कि पूरा इलाका घने कोहरे से ढका हुआ है और उन्हें कोई भी निशान दिखाई नहीं दे रहा था। यह सोचकर कि वे अभी भी समुद्र में बहुत दूर हैं, वे पश्चिम की ओर बढ़ते रहे, इस उम्मीद में कि स्कॉटलैंड पहुँचने पर उन्हें रेडियो सिग्नल मिल जाएगा। तभी अचानक, गन ने नीचे देखा और स्कॉटलैंड के उत्तर-पश्चिमी कोने पर स्थित केप रैथ की रूपरेखा देखी। विमान को तेज़ी से घुमाते हुए, उन्होंने बादलों के बीच से निकले खुले स्थान के लिए संक्षेप में धन्यवाद कहा। यदि उन्हें ज़मीन दिखाई न देती, तो वे पश्चिम की ओर उड़ते रहते और अंततः ईंधन समाप्त होने पर उत्तरी अटलांटिक में दुर्घटनाग्रस्त हो जाते।

5 मार्च, 1942 की सुबह, सैंडी गन ने नॉर्वेजियन तट के किनारे जर्मन जहाजों की तस्वीरें लेने के लिए विक से उड़ान भरी। स्कैंडिनेविया के उस हिस्से में खतरनाक एंटी-एयरक्राफ्ट फायरिंग कम थी, इसलिए गन को एक शांतिपूर्ण उड़ान की उम्मीद थी। लगभग तीस हजार फीट की ऊंचाई पर उन्होंने तीन Me 109 विमानों को अपनी ओर आते देखा और एहतियात के तौर पर थोड़ा और ऊपर चढ़ने का फैसला किया। मेसेरश्मिट विमानों ने जल्द ही पीछा करना छोड़ दिया, लेकिन इससे पहले उन्होंने बेहद लंबी दूरी से कुछ गोले दागे। हैरानी की बात यह थी कि एक गोला निशाने पर लगा, और स्पिटफायर का इंजन अत्यधिक गर्म होकर खतरनाक तरीके से खांसने लगा। जब इंजन के कवर से आग की लपटें निकलने लगीं, तो सैंडी ने जहाज छोड़ने का फैसला किया। उन्होंने अपने पैराशूट का सहारा लिया और एक छोटे से कस्बे से कुछ ही दूरी पर एक पहाड़ी की ढलान पर गहरी बर्फ में उतरे। सबसे पहले उन तक पहुंचने वाले नॉर्वेजियन ग्रामीणों का एक समूह था, और सैंडी ने उनसे उन्हें सीमा पार स्वीडन ले जाने का अनुरोध किया। दुर्भाग्य से, कस्बे में तैनात छोटी जर्मन चौकी ने उनके उतरने पर नजर रख ली थी; ग्रामीणों के पहुंचने के कुछ मिनट बाद ही सैनिक भी वहां पहुंच गए।

सैंडी को पकड़ने वाले लोग उसकी मौजूदगी से उत्सुक थे और यह सोचकर कि वह उत्तरी नॉर्वे के किसी गुप्त हवाई अड्डे से काम कर रहा था, उन्होंने उससे तीन सप्ताह तक पूछताछ की। जब उन्होंने आखिरकार यह तय कर लिया कि उस पर और समय बर्बाद करने का कोई फायदा नहीं है, तो उन्होंने सैंडी को डुलैग लुफ्ट भेज दिया और वहाँ से सागन। वहाँ उसे कुछ अन्य स्कॉटिश लोगों, एक यॉर्कशायर निवासी और एक लिवरपूल निवासी के साथ एक कमरे में एक बिस्तर मिला और वह धीरे-धीरे एक लड़ाकू होने की रस्मों में ढल गया।

*

स्टालैग लुफ्ट III में पहली गर्मियों के दौरान ही सागन की नई पलायन समिति को पहली सफलता मिली। बार्थ में, उनके साथी हेनरी लैमंड और बिल गोल्डफिंच ने पलायन समिति के सामने एक योजना रखी थी जिसमें तीन लोगों को तार के पास खुद को दफनाना और सुरंग

खोदकर बाहर निकलना शामिल था; इस तरह प्रसिद्ध 'मोल एस्केप' का विचार पैदा हुआ। सागन में स्थानांतरित होने पर, बिल और हेनरी ने जैक बेस्ट नामक एक तीसरे व्यक्ति को अपने साथ शामिल किया और अपनी योजना को अमल में लाने में जुट गए। पहली समस्या यह थी कि खुद को तार के इतने करीब दफनाने का कोई तरीका ढूंढना था ताकि वे आसानी से बाहर निकल सकें। जाहिर है, उन्हें गुंडों के सामने खुदाई करने का कोई ठोस कारण चाहिए था। उन्होंने कुछ विचारों पर चर्चा की, जैसे कि सब्जी का बगीचा या गोलपोस्ट के लिए गड्ढे खोदना, लेकिन सभी विचार निराधार साबित हुए।

तीनों कुछ देर चुप रहे और फिर बिल बोला, 'कैसा रहेगा ये? हम कपड़े धोने की झोपड़ी के लिए एक नाली खोद लें, ताकि अतिरिक्त पानी निकल जाए – गुंडे हमें उसे कुछ दिनों के लिए खुला छोड़ने देंगे!'

जैक ने कहा, 'अच्छा लग रहा है, लेकिन इतना सारा अतिरिक्त पानी हम कहाँ से लाएँगे? हनी, हमारी पाइपलाइन इतनी भी खराब नहीं है!'

'ऐसा तभी होगा जब मैं उन नालियों को जाम कर दूंगा,' बिल ने एक शैतानी मुस्कान के साथ जवाब दिया।

जिमी बकले ने तुरंत योजना को मंजूरी दे दी, और अगले दिन, कुछ सौ सैनिकों द्वारा सुबह की सफाई करने के बाद, झोपड़ी में बाइबिल में वर्णित बाढ़ जैसी बाढ़ आ गई। पीबर ने स्थिति का जायजा लेते हुए दुख से सिर हिलाया।

'ऐसा क्यों होना चाहिए? यह एक नया शिविर है – यहाँ इस तरह की कोई समस्या नहीं होनी चाहिए,' उन्होंने निराशापूर्वक कहा।

विंग्स डे ने बिना पलक झपकाए पीबर को देखा। 'शायद ये घटिया जर्मन पाइपों की वजह से है। खैर, इस गंदगी को साफ करना ही होगा - इस झोपड़ी में इतना सारा रुका हुआ पानी पड़ा है, जिससे यह बीमारियों का अड्डा बन गई है।'

'लेकिन मेरे पास इस समस्या का समाधान करने के लिए पर्याप्त लोग नहीं हैं - आप लोगों को देखते रहने में ही हम काफी व्यस्त रहते हैं,' पीबर ने विलाप करते हुए कहा।

'ठीक है, औजार ले आओ और फिर हम इसे करेंगे - यह कुछ लड़कों के लिए अच्छा व्यायाम होगा,' विंग्स ने सुझाव दिया।

पीबर कमांडेंट से इस बारे में बात करने का वादा करके चला गया और अगले दिन एक गुंडे के साथ लौटा, जिसके हाथ में फावड़ों का गट्ठा था। उसने कहा, "कमांडेंट आपके प्रस्ताव के लिए धन्यवाद देते हैं और आपको याद दिलाना चाहते हैं कि हमने आपको दिए गए फावड़ों की सावधानीपूर्वक गिनती कर ली है – सभी फावड़े सही सलामत वापस करने होंगे।" उसने गंभीरता से सिर झुकाया और परिसर से चला गया।

ज़्यादा चिंतित न दिखने के लिए, गोल्डफिंच, लैमंड और बेस्ट ने दोपहर के भोजन के बाद काम शुरू करने का इंतज़ार किया। उन्होंने एक गहरी खाई खोदने की योजना बनाई थी जो जल निकासी का काम करेगी और खाई के तल से अपनी सुरंग बनाने का इरादा था। पहले कुछ दिनों तक वे खुशी-खुशी अपना काम करते रहे, थोड़ी-थोड़ी खुदाई करते और फिर टावर के किसी कर्मचारी को हाथ हिलाकर अभिवादन करते या किसी गुजरते हुए नेवले से बात करते। फिर, जब कर्मचारियों को आखिरकार यकीन हो गया कि वे सही रास्ते पर हैं, तो सुरंग खोदने वालों ने जल निकासी की नींव से, सतह से कुछ फीट नीचे, अपनी सुरंग बनाई। इसे तार के नीचे दबे दो भूकंपमापी माइक्रोफोन के बीच से होकर गुजरने के लिए डिज़ाइन किया गया था।

खुदाई के पहले दिन उन्हें थोड़ी घबराहट हुई। लगातार आने-जाने वाले कैदी, जो नेवलों की हलचल की रिपोर्ट देने के लिए इधर-उधर घूम रहे थे, ने जाहिर तौर पर कुछ लोगों का ध्यान खींचा, और एक जर्मन ड्यूटी ऑफिसर यह देखने के लिए आया कि क्या हो रहा है। बेस्ट ने उसे आते देखा और खुदाई कर रहे लैमंड को इशारा करके जल्दी से सुरंग भरने लगा। जब ऑफिसर पास आया, तब तक गड्ढा पूरी तरह से भरा नहीं था, इसलिए जैक उस पर लेट गया और 'सेहर

हीस!' (बहुत गर्म!) कहते हुए एक गंदे कपड़े से अपना माथा पोंछा। ऑफिसर ने विनम्रता से मुस्कुराया, और जैक ने भी मुस्कुरा दिया। वे एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराते रहे, और यह स्पष्ट था कि जर्मन ऑफिसर थोड़ी देर और रुकना चाहता था। अपनी सबसे खुशमिजाज आवाज में, जैक ने पास से गुजर रहे एक सैनिक को आवाज दी और खुशी से कहा, 'भगवान के लिए, किसी जर्मन बोलने वाले को ढूंढो और इस कमीने को यहाँ से बाहर निकालो!' खेल में शामिल होते हुए, दूसरे सैनिक ने उस बदमाश पर हँसा और मुस्कुराया, फिर बिना किसी जल्दी के चला गया।

कुछ मिनट बाद, एक और सैनिक टहलते हुए आया और अधिकारी के बगल में रुक गया। उसने जैक को आँख मारी और जर्मन सैनिक से बातचीत शुरू कर दी। कुछ देर बाद वे दोनों चले गए, जर्मन सैनिक खुशी से बातें कर रहा था और तार के उस पार जंगल की ओर बड़े-बड़े इशारे कर रहा था। अगले दिन यह तय किया गया कि उन सैनिकों को हटा दिया जाए क्योंकि वे बहुत ज्यादा ध्यान आकर्षित कर रहे थे, और कुछ दिनों तक वे बिना किसी रुकावट के काम कर पाए। रविवार, 30 जून को, हेनरी, जैक और बिल दोपहर के भोजन के बाद नीचे गए और पचास फीट और खोदा; जब वे हाजिरी के लिए तैयार हो रहे थे, तो हर कोई जानता था कि अगली बार जब वे नीचे जाएंगे तो वह हमेशा के लिए होगा।

एपेल के पीछे-पीछे वे वापस गड्ढे में गए और खुद को अंदर बंद कर लिया। जब उन्हें उनकी दबी हुई सहमति मिली, तो एक साथी ने सोकवे में पानी वापस छोड़ दिया और तीनों अंदर दब गए। उस शाम उन्होंने और पच्चीस फीट खोदा और फिर रात के लिए काम रोक दिया ताकि उनके काम की आवाज़ें सुनाई न दें। वे एक-दूसरे के ऊपर लेटकर गर्मी पाने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन नींद आसानी से नहीं आई। तीनों को तब राहत मिली जब उन्होंने मेज के चाकू से बनाए गए हवा के छेदों से दिन का उजाला देखा। उन्होंने फिर से खोदना शुरू कर दिया। आगे वाला आदमी कोयले के फावड़े के कटोरे से सतह को खुरचता और फिर रेत को अपने पीछे धकेलकर अगले आदमी को दे देता। बीच वाला आदमी उसे अपने पीछे धकेलकर आखिरी आदमी तक पहुँचाता, जो उसे जितना हो सके कसकर अपने पीछे दबा देता। उन्होंने तेज़ी से खुदाई की और उस दिन पचहत्तर फीट खोदा, लेकिन हालात बहुत ही भयानक थे।

शाम होते-होते वे तार से लगभग बारह फीट आगे निकल चुके थे और उन्होंने बाहर निकलने से पहले कुछ घंटे इंतजार करने का फैसला किया। घबराए हुए दोस्तों ने बाड़े पर नजर रखी और हवा के छेदों से भाप के छोटे-छोटे स्तंभ उठते देखकर चौंक गए। एक रखवाली करने वाले कुत्ते ने वास्तव में इनमें से एक छेद को देख लिया, लेकिन उसने सूंघने के अलावा कोई और दिलचस्पी नहीं दिखाई। आखिरकार, सुबह 3:00 बजे, मोलरों ने एक हवा के छेद की ओर देखा और फैसला किया कि अब काफी अंधेरा हो चुका है। वे सतह तक बिल खोदकर निकले और जंगल की ओर तेजी से भाग गए।

पहला दिन उन्होंने भीषण गर्मी में स्थानीय हवाई अड्डे पर एक काले ग्लाइडर ट्रेलर में छिपकर बिताया। अंधेरा होने के बाद बाहर निकलने पर उन्हें निराशा हुई क्योंकि हवाई अड्डे पर उनके उड़ान भरने लायक कुछ भी नहीं था। कुछ पल के लिए हतोत्साहित होकर वे कुछ और करने की कोशिश करने निकल पड़े। आरएएफ की युद्ध वर्दी पहने हुए, उन्होंने केवल रात में ही यात्रा की और एक बड़े रेलवे मानचित्र की सहायता से दिशा का पता लगाया। वे थोड़ा-बहुत खाना लाए थे, लेकिन मुख्यतः खेतों से इकट्ठा किए गए आलूओं से ही उनका गुजारा हुआ था।

कुछ और चलने के बाद तीनों ओडर नदी पर पहुँचे और चोरी करने के लिए नाव की तलाश में उसके किनारों की छानबीन करने लगे। आखिरकार उन्हें एक खुली नाव मिल गई और वे बाल्टिक सागर की ओर जाने के इरादे से नदी में आगे बढ़ गए। उस दिन उन्होंने अच्छी प्रगति की, लेकिन शाम को बारिश शुरू हो गई, इसलिए वे किनारे पर लौट आए और अपनी पलटी हुई नाव के नीचे शरण ली। कुछ ही देर में नाव को ऊपर उठा लिया गया और जैक, बिल और हेनरी का सामना नाव के मालिक से हुआ, जो अपनी बात पर ज़ोर देने के लिए कुछ पुलिसकर्मियों को भी साथ लाया था। इस तरह एक साहसी भागने की कोशिश का अंत हो गया।

शिविर के कर्मचारियों ने तीनों को उनके प्रयास के लिए बधाई दी; छत्तीस घंटे से भी कम समय में 150 फीट की दूरी तय करना वाकई एक उपलब्धि थी, और कर्मचारी अच्छे काम की सराहना करने को तैयार थे, बशर्ते वह पूरी तरह सफल न हो। हालांकि, भविष्य में इस तरह की घटनाओं को रोकने के लिए बदलाव किए गए। भूकंपमापी यंत्रों की संख्या दोगुनी कर दी गई और साल के सबसे गर्म सप्ताह के दौरान, गार्डों की एक टुकड़ी ने चेतावनी तार के पास आठ फीट गहरी 'एंटीमोल' खाई खोदी। बेस्ट, गोल्डफिंच और लैमंड को इन बदमाशों को पसीना बहाते देखकर खास मजा आता था।

ज़ाहिर है, कैदियों ने जल्द ही नए सुरक्षा उपायों का फ़ायदा उठा लिया। कनाडाई कैदी 'रेड' नोबल और उसके एक दोस्त ने नई खाई से सुरंग खोदने की कोशिश की, लेकिन पहले हिस्से को खोदने के बाद वे पूरी तरह थक गए थे, इसलिए उन्हें अपनी झोपड़ी में लौटना पड़ा। कुछ दिनों बाद टॉमी कैलनन और टोनी बार्बर ने भी यही कोशिश की, और मदद के लिए अपने साथ एक और साथी को ले आए। ये तीनों कामयाब हो जाते, अगर पहरेदार कुत्ते ने परिसर से उठती भाप का मतलब न समझ लिया होता। उस छेद को सूंघने वाले अल्सेशियन कुत्ते ने ज़ोर-ज़ोर से भौंकना शुरू कर दिया, और नेवलों का एक झुंड तीनों को खोदकर निकालने के लिए आ गया। उन्हें बुरी तरह थके-हारे ठंडे कमरे में ले जाया गया। कुछ दिनों बाद, सुरंग खोदने वाले तीनों को और भी मज़ा आया। उन्होंने देखा कि पहरेदारों का वही दस्ता फावड़े लेकर खाई में लौटा और उसे फिर से भरने लगा। उन्हें इस तरह काम करते देखना लगभग पकड़े जाने के लायक था।

*

जासूस के भागने के कुछ ही समय बाद, रोजर बुशेल वापस लौट आया। वह थोड़ा दुबला और थका हुआ लग रहा था, लेकिन उसकी आँखें पहले की तरह ही तीखी और तीव्र थीं। शिविर में कुछ लोगों ने तो ट्रेन से भागने के बाद उसे मरा हुआ मान लिया था। वहीं कुछ अन्य लोगों को पूरा यकीन था कि वह ज़रूर आज़ादी तक पहुँच गया होगा। लेकिन जब उन्होंने रोजर से सच उगला, तो वह बिलकुल अलग निकला।

रोजर और जैक ज़ाफ़ूक ने अपनी वर्दी के नीचे आम नागरिकों के कपड़े पहने हुए थे और उनके पास चेकोस्लोवाकिया तक ट्रेन से यात्रा करने के लिए ज़रूरी कागज़ात थे। वहाँ पहुँचने पर ज़ाफ़ूक ने कमान संभाली। वे प्राग में अपने भाई से मिलने गए, जिसने उन्हें कुछ पैसे और रहने के लिए एक सुरक्षित ठिकाना दिया। फिर उसने भूमिगत संगठन से संपर्क किया और उनके लिए भागने का रास्ता खोजने की कोशिश की। इंतज़ार करना सबसे मुश्किल था। दोनों में से कोई भी उस छोटे से अपार्टमेंट से बाहर नहीं निकल सकता था, रोजर इसलिए क्योंकि उसे चेक भाषा नहीं आती थी और जैक इसलिए क्योंकि वह किसी परिचित द्वारा देखे जाने का जोखिम नहीं उठा सकता था। दिन-रात वे अंदर बैठे रहते, कभी बातें करते, कभी पढ़ते, लेकिन ज़्यादातर बस बैठे रहते। आखिरकार खबर आई कि युगोस्लाविया भागने का इंतज़ाम हो गया है, और रोजर और जैक जाने के लिए तैयार हो गए। लेकिन उनके तय प्रस्थान से एक दिन पहले, गेस्टापो ने भागने के रास्ते को तोड़ दिया और दोनों फिर से वहीं पहुँच गए जहाँ से शुरू किया था। कई हफ़्तों तक इंतज़ार करना पड़ा, फिर खबर आई कि एक और रास्ता तय किया गया है, इस बार तुर्की के लिए। उन्होंने फिर से जाने की तैयारी की और वास्तव में चेक सीमा तक पहुँच गए थे, इससे पहले कि घुसपैठियों ने रास्ता तोड़ दिया। वे वापस प्राग चले गए।

अब किस्मत ने अपना खेल खेला। 27 मई, 1942 को, बोहेमिया-मोराविया के रीच प्रोटेक्टर रेनहार्ड हेड्रिच पर प्राग के एक उपनगर में चेक एजेंटों ने हमला किया; एक हफ्ते बाद उनकी मृत्यु हो गई। गेस्टापो ने चेकोस्लोवाकिया पर धावा बोल दिया और हर उस व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया जिस पर जरा भी शक था। हजारों लोगों को गिरफ्तार किया गया, जिनमें से ज्यादातर का फिर कभी पता नहीं चला। अपनी जान बचाने के लिए, लोगों ने अपने दोस्तों और पड़ोसियों की

सूचना पुलिस को दे दी, और यही रोजर और जैक के पतन का कारण बना। जिस अपार्टमेंट ब्लॉक में वे रह रहे थे, उसके चौकीदार ने उनकी मौजूदगी की सूचना पुलिस को दे दी, और दोनों को तुरंत गिरफ्तार कर लिया गया। जिस परिवार ने उन्हें शरण दी थी, उसके एक-एक सदस्य को मार डाला गया। रोजर और जैक को अलग कर दिया गया, जैक से कड़ी पूछताछ की गई और अंततः उसे कोल्डिट्ज़ भेज दिया गया। रोजर ने अपने अनुभवों के बारे में कभी ज्यादा बात नहीं की। कुछ लोग कहते हैं कि केवल उनके आकर्षण और एक वकील के रूप में उनके कौशल ने ही उन्हें बचाया, जबकि अन्य मानते हैं कि उनके जर्मन स्कीइंग मित्रों ने उनकी ओर से हस्तक्षेप किया था। यह भी संभव है कि शिविर के सेंसर, जो रोजर को जानते और पसंद करते थे, ने उनके भाई, जो लूफ़्टवाफे के जनरल थे, से हस्तक्षेप करने के लिए कहा हो।

अब सैगन में, यह स्पष्ट था कि रॉजर जर्मनों से पहले से कहीं अधिक घृणा करता था। शिविर में पहुँचने के कुछ ही समय बाद, वह डगलस बैडर के साथ परिधि का चक्कर लगा रहा था जब वे मोलरों की सोकवे खाई के पास पहुँचे। वहाँ एक सशस्त्र गार्ड खड़ा था और एक चेतावनी का बोर्ड लगा था जिस पर पैदल चलने वालों को दूर रहने की चेतावनी दी गई थी। रॉजर और डगलस ने गार्ड और बोर्ड दोनों को अनदेखा किया और खाई पार करने के लिए आगे बढ़े, तभी संतरी ने अपनी राइफल कंधे से उतार ली और उन दोनों पर चिल्लाया कि वे दूसरे रास्ते से जाएँ अन्यथा परिणाम भुगतने होंगे। रॉजर सीधा खड़ा हुआ और एकदम सही जर्मन में चिल्लाया, 'यदि आप किसी ब्रिटिश अधिकारी से बात करते हैं, तो आपको पहले उन्हें "सर" कहकर संबोधित करना होगा। अब हमें जाने दीजिए!' अचंभित होकर गार्ड ने अपनी राइफल नीचे कर ली और एक तरफ हट गया, और रॉजर और डगलस आगे बढ़ गए, अपनी बातचीत जारी रखते हुए जैसे कुछ हुआ ही न हो।

अध्याय 5

तार के माध्यम से

1942 की गर्मियों के बीतने के साथ ही, कई युद्धकर्मियों के मन में लंबे समय से प्रतीक्षित दूसरे मोर्चे को लेकर चिंताएं बढ़ने लगीं और आक्रमण की तारीख पर सट्टेबाजी ज़ोरों पर थी। टॉम किर्बी-ग्रीन और उनके एक मित्र ने साल के अंत तक युद्ध समाप्त होने पर दस पाउंड का दांव लगाया था, और टॉम ने बराबर की शर्त लगाई थी कि अगर ऐसा नहीं हुआ, तो आक्रमण अगले जून में होगा और युद्ध 1943 के अंत तक समाप्त हो जाएगा। अगस्त 1942 में, आशावादियों की उम्मीदें तब और बढ़ गईं जब कनाडाई सैनिकों और ब्रिटिश कमांडो ने फ्रांस के तटीय रिसॉर्ट डिएप्पे में लैंडिंग की। यह लैंडिंग एक निराशाजनक विफलता साबित हुई, जिसमें कनाडाई सैनिकों को भारी नुकसान हुआ, लेकिन इस हमले की खबर से दूसरे मोर्चे की तारीख पर सट्टेबाजी में तेज़ी आ गई। आशावादियों ने कहा, "अगर हम इस तरह का ऑपरेशन कर रहे हैं, तो निश्चित रूप से बड़ा आक्रमण निकट ही होगा।" उन्होंने अपने दांव कम कर दिए, लेकिन साथ ही, अपने जोखिम को कम करने के लिए, सट्टेबाजी जारी रखी।

*

अगस्त के अंत में, ऑस्ट्रेलियाई पॉल रॉयल ने हट 68 से एक सुरंग खोदी जो लगभग वैली फ्लॉडी के गड्ढे के समानांतर चलती थी। इस काम के लिए रॉयल ने कई ऐसे लोगों को भर्ती किया जो पहली बार खुदाई कर रहे थे, जैसे कि एक लंबा, पतला दक्षिण अफ्रीकी जिसके बाल थोड़े कम हो रहे थे और चेहरे पर सौम्य मुस्कान थी।

17 फरवरी, 1919 को लंदन में जन्मे रूपर्ट जॉन स्टीवंस का पालन-पोषण केप टाउन में हुआ, हालांकि उनके माता-पिता इंग्लैंड में इतने समय तक रहे कि जॉन का सेंट पॉल कैथेड्रल में बपतिस्मा हो सके। युवा स्टीवंस ने केप में एक सामान्य बचपन बिताया, जिसमें टेबल माउंटेन पर चढ़ाई करना और अटलांटिक तट पर स्थित क्लिफ्टन में घुड़सवारी करना शामिल था। उन्होंने साउथ अफ्रीकन कॉलेज स्कूल में पढ़ाई की और टेनिस, क्रिकेट और रग्बी में उनकी गहरी रुचि हो गई। दिसंबर 1936 में स्नातक होने के बाद जॉन ने यूनाइटेड टोबैको कंपनी के विज्ञापन विभाग में नौकरी शुरू की।

हालांकि, उस नौजवान के मन में कुछ और ही था, और 1938 में उसने नवस्थापित प्यूपिल पायलट ट्रेनिंग स्कीम में दाखिला लिया और युद्ध शुरू होने के तुरंत बाद उसे पायलट का लाइसेंस मिल गया। 24 नवंबर, 1939 को जॉन को दक्षिण अफ्रीकी वायु सेना में भर्ती कर लिया गया और उसे तुरंत पोर्ट एलिजाबेथ से एंसन विमान उड़ाने का पहला कार्य सौंपा गया। लगभग पाँच महीने बाद, उसे पश्चिमी रेगिस्तान में 12 स्क्वाड्रन में शामिल होने के लिए तैनात किया गया। 14 नवंबर, 1941 को स्टीवंस और उसके दल को आठ अन्य मार्टिन मैरीलैंड हल्के बमवर्षक विमानों के साथ डेरना में दुश्मन के विमानों पर हमला करने का आदेश दिया गया। उड़ान भरने से ठीक पहले, दल ने आपातकालीन प्रक्रिया पर चर्चा की कि अगर किसी को टोब्रुक के घिरे हुए किले में आपातकालीन लैंडिंग करनी पड़े तो क्या करना है। मित्र देशों के विमानों को शहर के पास एक हजार फीट की ऊंचाई पर, विमान के निचले हिस्से को नीचे करके और अपने फ्लेयरगन से उस दिन का झंडा फहराते हुए आना चाहिए। जॉन ने मजाक में कहा कि अगर उसे विकल्प दिया जाए

तो वह इस तरह से अपमानजनक तरीके से लैंडिंग करने से इनकार कर देगा।

हमला सफल रहा, लेकिन तट पार करने के बाद, स्क्वाड्रन को भारी गोलाबारी का सामना करना पड़ा और जॉन के विमान के बाएँ पंख में गोला लगा। टैंक फट गए और पंख से पेट्रोल बहने लगा, जो टैंक खाली होने पर ही रुका; कुछ सेकंड बाद, क्रॉस-फीड वाल्व ने सही टैंकों से फटे हुए टैंकों में पेट्रोल पहुँचाया और फिर सीधे पंख के छेदों से बाहर निकलने लगा, जिससे प्रवाह फिर से शुरू हो गया। स्थिति को समझते हुए, जॉन के स्क्वाड्रन साथियों ने उसे वाल्व बंद करने का संकेत देने की कोशिश की, लेकिन उसके नियंत्रण पैनल बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए थे और कुछ नहीं किया जा सका। मैरीलैंड विमान लगातार नीचे गिरता रहा और जैसे ही स्क्वाड्रन दुश्मन के कब्जे वाले बार्डिया बंदरगाह के पास पहुँचा, घायल बमवर्षक को शहर की ओर मुड़ते हुए देखा गया, जिसका निचला हिस्सा नीचे था और वह उस दिन का झंडा फहरा रहा था। एक्सिस की गोलाबारी शुरू होने पर ही चालक दल को एहसास हुआ कि उन्होंने बार्डिया को टोब्रुक समझ लिया था। गोलाबारी की पहली बौछार कॉकपिट में घुस गई और जॉन को घायल कर दिया, जिससे वह बेहोश हो गया, इसलिए नेविगेटर ने विमान का नियंत्रण संभाला और उसे क्रैश-लैंडिंग के लिए निर्देशित किया। उन्होंने मैरीलैंड विमान को एक नमक के मैदान पर उतारा, लेकिन बमवर्षक के रास्ते में आने वाले एक छोटे रेत के टीले से नहीं बच सके। टीले से टकराने पर मैरीलैंड का निचला हिस्सा टूट गया और विमान का अगला हिस्सा कुचल जाने से नेविगेटर की मौत हो गई। जॉन और दोनों तोपचियों को गंभीर चोटों के साथ बचा लिया गया और उन्हें एक जर्मन अस्पताल में भेज दिया गया।

स्टीवंस जल्दी ही ठीक हो गए और दुर्घटना के ठीक एक महीने बाद बार्थ में पहुँच गए। बाद में वे लुफ़्ट I के पहले दल के साथ ईस्ट कंपाउंड पहुँचे। भागने का उनका पहला प्रयास असफल रहा, हट 68 सुरंग भी अपने से पहले की अधिकांश सुरंगों की तरह ही नष्ट हो गई। लेकिन जॉन निराश नहीं हुए; उन्होंने दोबारा कोशिश करने का अपना संकल्प और भी दृढ़ कर लिया।

*

सन् 1942 की शरद ऋतु में एक दिन दोपहर के भोजन के ठीक बाद, खेल के मैदान में चहल-पहल बढ़ने लगी ताकि लोग तेज धूप और सुहावनी हवा का आनंद ले सकें। सितंबर की वह दोपहर बहुत खूबसूरत थी, और सैनिक निर्धारित मुक्केबाजी मैच के रोमांच का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। दोपहर 2:00 बजे तक मैदान में चहल-पहल मच गई, क्योंकि मुक्केबाज जॉर्ज मैकगिल और एडी एसलिन मैदान में आ गए। उन्होंने अपने वाईएमसीए ग्लव्स पहने और अस्थायी रिंग में उतरकर खुद को तैयार करने के लिए इधर-उधर उछलने लगे। घंटी बजते ही दोनों योद्धा अपने-अपने कोनों से उछल पड़े और पूरे जोश के साथ एक-दूसरे पर टूट पड़े, जिससे वहां मौजूद भीड़ बेहद खुश हो गई। धीरे-धीरे टावरों में तैनात गार्डों का ध्यान रिंग की ओर गया और देखते ही देखते वे भी मुस्कुराने लगे क्योंकि दोनों कनाडाई मुक्केबाज एक-दूसरे पर जमकर प्रहार कर रहे थे।

थोड़ी दूरी पर, विंग्स डे और जिमी बकले एक झोपड़ी की छाया में बैठे थे, कभी-कभार रिंग की ओर बस यूँ ही नज़र डाल रहे थे। कुछ मिनटों तक चारों ओर देखने के बाद, जिमी ने झोपड़ी की ओर हल्का सा इशारा किया। कुछ ही सेकंड में, पुराने खाकी शॉर्ट्स, विंडब्रेकर और मुलायम कपड़े की टोपी पहने दो लोग दिखाई दिए। वे लगभग बीस गज तक रिंग के किनारे-किनारे चले और फिर अचानक, बिना इधर-उधर देखे, चेतावनी वाले तार को पार करके मुख्य बाड़ के पास लेट गए। उनमें से लंबे वाले ने बकले की ओर देखा, जिसने फिर से हल्का सा इशारा किया। फिर उन्होंने तार काटने वाला औजार और कुछ मजबूत लकड़ी के खूंटे निकाले। धीरे-धीरे और सावधानी से, दोनों ने तार के हर एक टुकड़े को काटा, छेद से रेंगकर अंदर गए और फिर बीच में लकड़ी के खूंटों से कांटेदार तार के रोल को सहारा दिया। वे रोल के नीचे से रेंगकर बाहरी बाड़ पर

काम करने लगे, केवल तभी रुके जब गश्त कर रहे संतरियों में से एक उनके काम करने की जगह के पास आया। जैसे ही उन्होंने तार के आखिरी टुकड़े काटे, एक सैनिक सर्किट पर उनके पास से धीरे-धीरे गुज़रा और उन्हें सब ठीक होने का संकेत दिया। आखिरी टुकड़ा कट गया और दोनों उस खाई से रेंगते हुए निकले, अपने कपड़े झाड़े और शांति से जंगल की ओर चल पड़े। पूरी कार्रवाई में दस मिनट से ज़्यादा समय नहीं लगा और देखने में यह बेहद आसान लग रही थी।

शुरुआत में ऐसा नहीं लग रहा था, जब आयरलैंड के केन टॉफ्ट और आरएएफ ईगल स्क्वाड्रन के एक अमेरिकी सैनिक विलियम 'रेड' निकोल्स ने भागने की समिति को बताया कि बाड़ में तारों की सघनता और पहरेदार टावरों की स्थिति के कारण एक ऐसा स्थान है जहाँ से दिखाई नहीं देता। सर्वेक्षकों ने इस दावे की जाँच की और जल्द ही साबित कर दिया कि वास्तव में कोई व्यक्ति बाड़ के एक निश्चित बिंदु पर खड़ा हो सकता है और किसी भी टावर से दिखाई नहीं देगा। अगर संगठन कोई ध्यान भटकाने का इंतजाम कर पाता, तो केन और रेड बाड़ काटकर आज़ादी पाने की कोशिश करना चाहते थे। मुक्केबाजी मैच को गायन अभ्यास के बजाय चुना गया क्योंकि यह सोचा गया था कि गुंडे अपने दुश्मनों को एक-दूसरे को चोट पहुँचाते हुए देखने में उनके गाने सुनने से ज़्यादा दिलचस्पी लेंगे। यह नज़दीकी टावरों में तैनात संतरियों का ध्यान भटकाने का मुख्य तरीका था। गश्त कर रहे पहरेदारों को अलग-अलग कैदियों द्वारा सुरक्षा दी जानी थी, जो भागने वालों के शिविर से बाहर निकलने तक उनसे बातचीत करते रहेंगे। यह सब आखिरी पल तक योजनाबद्ध तरीके से किया जाना था, वरना केन और रेड पर गोलियों की बौछार होने का खतरा था।

जिमी बकले के कुशल मार्गदर्शन में भागने का पहला चरण बिना किसी रुकावट के सुचारू रूप से चला, लेकिन जैसे ही केन और रेड जंगल की ओर बढ़े, खतरे का पहला संकेत दिखाई दिया। टावर के एक गार्ड ने अपना सिर घुमाया, दोनों को देखा और अपनी राइफल उठा ली। विंग्स डे उठने लगा, लेकिन जिमी ने सावधानी बरतते हुए हाथ ऊपर कर लिया। काफी देर बाद, गार्ड ने धीरे से अपनी राइफल नीचे की और लड़ाई देखने के लिए वापस मुड़ गया। बकले का शांत स्वभाव और अचूक अंतर्ज्ञान एक बार फिर कारगर साबित हुआ। बाद में उसने विंग्स को समझाया कि गार्ड ने गोली चलाने और भागने की घटना को पहले न देख पाने के लिए डांट खाने के बजाय, शायद घटना को अनदेखा करना और किसी भी चीज़ के लिए दोषी न ठहराए जाने का विकल्प चुना। कम से कम जिमी यही जोखिम उठाने को तैयार था, और ऐसे बहुत कम लोग थे जो ऐसा करते।

यह एक शानदार पलायन था, लेकिन कई अन्य पलायनों की तरह, यह भी असफल रहा। फ्रैंकफर्ट-एन-डेर-ओडर से गुजरते समय, केन और रेड को रोककर गिरफ्तार कर लिया गया क्योंकि उनके कागजात पुलिसकर्मी की नजर में सही नहीं थे। जब वे सागन वापस पहुंचे तो उन्हें एकांत कारावास में डाल दिया गया, लेकिन एक उदार भाव दिखाते हुए, वॉन लिंडिनर ने उनकी बहादुरी को पहचानते हुए उन्हें व्हिस्की की एक बोतल भेंट की।

*

जिस समय टॉफ्ट और निकोल्स भाग निकले, उसी समय यह तय किया गया कि तीन अन्य सैनिकों को भी छिपने के लिए कहा जाए – या कहें कि 'भूत बनकर भागने' के लिए – ताकि जर्मनों को यकीन हो जाए कि वास्तव में पाँच लोग भाग निकले हैं। फिर, पहले भागने की घटना के बाद जब हंगामा शांत हो जाए, तो बाकी तीन लोग शिविर से चुपके से निकल सकें। इस तरह, भागने वालों को फंसाने वाले उस व्यापक जाल से बचा जा सकता था और इन तीनों के बच निकलने की अच्छी संभावना थी।

इस काम के लिए माइक केसी, नॉर्मन 'कॉन्क' कैंटन और जॉनसन नाम के एक वारंट ऑफिसर ने स्वेच्छा से आगे आए। पहले पांच हफ़्ते तो सब ठीक-ठाक चलता रहा। कैंप में मौजूद

सैनिकों की संख्या ज़्यादा होने के कारण, तीनों को बस जितना हो सके छुपकर रहना था और सबसे ज़रूरी था कि वे किसी भी ऐसे गुंडे से बचें जो उन्हें पहचान ले। लेकिन छिपकर रहने के दूसरे महीने के बीच में ही माइक केसी को एक खोजी कुत्ते ने देख लिया। वह तुरंत पकड़ा तो नहीं गया, लेकिन जर्मनों को यकीन हो गया कि वे तीनों अभी भी कैंप में ही हैं। कोई बड़ी तलाशी नहीं हुई, लेकिन जब चौकसी बढ़ाई गई, तो एक बैरक में उसी खोजी कुत्ते ने माइक को चौंका दिया। झोपड़ियों के आसपास एक हास्यास्पद दौड़ के बाद, आखिरकार उसे हिरासत में ले लिया गया। हालांकि, कैंटन और जॉनसन पकड़े नहीं गए और कैंप के टमाटर के खेतों में से एक से रेंगते हुए तार काटने में कामयाब हो गए। वे भाग निकले, लेकिन एक हफ्ते के अंदर ही पकड़े गए और वापस कैंप में लाए गए।

*

ये सभी प्रयास शिविर कर्मचारियों के लिए एक बेहद खराब सितंबर का हिस्सा बन रहे थे। कुछ ही समय बाद, आरएएफ का एक डच सैनिक एक गुप्त वर्दी में गेट से बाहर निकल गया, लेकिन हीडलबर्ग में उसे फिर से पकड़ लिया गया और कोल्डिट्ज़ भेज दिया गया। फिर, इसके पूरा होने से कुछ ही सप्ताह पहले, वैली फ्लॉडी की सुरंग का पता चला। यह तीन सौ फीट से अधिक लंबी थी, और जर्मन यह देखकर दंग रह गए कि यह सफलता के कितने करीब पहुँच गई थी। वे इसकी बेहतरीन इंजीनियरिंग देखकर भी चकित थे। फ्लॉडी की सुरंग की खोज ने शिविर कर्मचारियों को आश्वस्त कर दिया कि गोरिंग के 'परिपूर्ण' शिविर के पहले छह महीने, सीधे शब्दों में कहें तो, उनकी उम्मीदों से कम सफल रहे थे। सागन में भागने से संबंधित बढ़ती हुई गड़बड़ियों का सामना करते हुए, अधिकारियों को यह सोचने पर मजबूर होना पड़ा कि क्या सभी वायुसैनिकों को एक ही स्थान पर रखना वास्तव में इतना अच्छा विचार था। जाहिर तौर पर इसने जर्मन सैनिकों को और अधिक शरारत करने के लिए प्रोत्साहित किया था। इस तर्क के तहत कि कोई भी बदलाव बेहतर के लिए होगा, लूफ़्टवाफ़े ने बड़ी संख्या में कैदियों को शुबिन स्थित एक सेना शिविर, ओफ्लैग XXIB में स्थानांतरित करने का निर्णय लिया।

नवंबर 1942 में सैगन से निकले समूह में विंग्स डे, जिमी जेम्स, पीटर फैंशॉ, डिक चर्चिल, टॉमी कैलनन और जिमी बकले जैसे कुछ ऐतिहासिक उपद्रवी शामिल थे। जॉनी डॉज भी किसी तरह इस समूह में शामिल हो गया, हालांकि उसका इरादा अपने गंतव्य तक पहुंचने का नहीं था। जब ट्रेन एक पहाड़ी की चोटी पर पहुंचने के लिए धीमी हुई, तो डॉज एक छोटी खिड़की से बाहर निकला और छलांग लगा दी। चूंकि दिन का उजाला था, जॉनी को तुरंत देख लिया गया और एक तलाशी दल ने मुस्कुराते हुए मेजर डॉज को बंदूक की नोक पर वापस ट्रेन में ले आया। उसने मासूमियत से कहा, 'कोशिश करने में कोई हर्ज नहीं है।'

*

पहली नज़र में, शुबिन का शिविर काफी सुखद लग रहा था। 1940 तक यह एक लड़कियों का स्कूल था, और इसमें एक ग्रामीण जागीर का माहौल बरकरार था; यहाँ खेल के मैदान, पेड़, एक ग्रीनहाउस और कई अन्य सुविधाएं थीं। कैदी खेल के मैदानों के पास एक अलग परिसर में बनी बारह ईंटों की बैरकों में रहते थे और तार की बाड़ के पार से खेतों का एक विस्तृत विस्तार दिखाई देता था, न कि सागन के शिविर के चारों ओर फैली काले देवदार के पेड़ों की अभेद्य दीवार। कुल मिलाकर, पहुँचने वाला पहला समूह खुश था। हालाँकि, बैरकें खलिहानों से कुछ खास बेहतर नहीं निकलीं। उनमें न तो छतें थीं और न ही विभाजन, और पुरुषों को सीमित फर्नीचर का उपयोग करके छोटे-छोटे कमरे बनाने पड़े। हालाँकि, इन सब बातों को नज़रअंदाज़ कर दिया गया, जब युद्धबंदियों को एहसास होने लगा कि शिविर भागने के लिए आदर्श है। ग्लेम्निट्ज़ की चेतावनियों

के बावजूद, जर्मन सेना के अधिकारियों को सुरक्षा की कोई खास चिंता नहीं थी और उन्होंने सभी सुझावों को घमंड से खारिज कर दिया। संभावनाएं बहुत अच्छी थीं, और जिमी बकले ने बड़ी उम्मीदों के साथ भागने वाली समिति का नेतृत्व संभाला।

सैगन से आए नए सैनिक और वारबर्ग से आए वायुसैनिकों का एक और समूह जल्द ही यह पता लगाने में जुट गया कि वे क्या गड़बड़ी पैदा कर सकते हैं। पहला प्रयास टॉमी कैलनन और रॉबर्ट की ने किया, जिन्होंने तार के पास शतावरी के खेत से साठ फुट लंबी सुरंग खोदने की योजना बनाई। उनकी मदद के लिए, उन्होंने इयान क्रॉस नाम के एक चुस्त-दुरुस्त और मजबूत स्क्वाड्रन लीडर को भर्ती किया, जो पहले ही सैगन से भागने के दो प्रयास कर चुका था। तीनों ने बगीचे में इधर-उधर काम करना शुरू किया, मिट्टी के ढेर इधर-उधर करते रहे जब तक कि गार्ड उन्हें देखते-देखते थक नहीं गए। फिर कैलनन ने चार फुट गहरा गड्ढा खोदा, और सुरंग जल्द ही तार की ओर बढ़ने लगी। तीनों बारी-बारी से खुदाई करते रहे, मिट्टी को सतह पर लाते और फैलाते रहे। कुछ ही दिनों में उन्होंने लगभग पंद्रह फुट की खुदाई पूरी कर ली थी और खुद को बंद करने से पहले उन्हें बस इतनी ही दूरी दोबारा खोदनी थी।

एक दिन खदान में काम करते समय, टॉमी कैलनन को कागज का एक धुंधला टुकड़ा मिला और जिज्ञासावश उसने सुरंग में वापस जाकर उसे नीचे आ रही धुंधली रोशनी में पढ़ने का फैसला किया। वह शाफ्ट की ओर आधा ही लौटा था कि सुरंग ढह गई। शाफ्ट के तल पर, इयान क्रॉस ने एक दबी हुई धमक सुनी और तुरंत सुरंग से ऊपर की ओर रेंगने लगा, लेकिन वहाँ पहुँचते ही कैलनन के जूतों के तलवे मिट्टी की एक ठोस दीवार से बाहर निकले हुए दिखाई दिए। उसने टॉमी के पैर पकड़े और जोर लगाया, लेकिन रेत का भार और सुरंग की तंगी उसके लिए बाधक साबित हुई। समय को महत्वपूर्ण समझते हुए, इयान सुरंग से बाहर निकला और रॉबर्ट के पास चढ़ गया, जो घबराकर शाफ्ट में नीचे झाँक रहा था।

क्रॉस हांफते हुए बोला, “गिर गया है। हमें उसे खोदकर निकालना होगा, क्योंकि हम उसे खींचकर नहीं निकाल सकते।” उसने एक फावड़ा उठाया और खोदना शुरू कर दिया, जबकि की ने राहगीरों को बचाव कार्य में मदद के लिए बुलाया। उन्होंने तेज़ी से खोदना शुरू किया और कुछ ही मिनटों में टॉमी के पैर ज़मीन से बाहर आ गए। इयान और रॉबर्ट ने एक-एक पैर पकड़ा और खींचना शुरू कर दिया। चौथे प्रयास में, नीले पड़े और हांफते हुए टॉमी कैलनन को बाहर निकाला गया, और उसके बचावकर्मी उसके चारों ओर फैली शतावरी पर लेट गए। परिधि रक्षक, जो पूरे अभियान को देख रहा था, बस हैरानी से देखता रह गया।

मजबूत और सुगठित इयान क्रॉस को देखकर कोई यह नहीं कह सकता कि वे हमेशा से इतने ताकतवर नहीं थे। लंदन के एक रियल एस्टेट एजेंट के बेटे, इयान किंग्स्टन पेम्ब्रोक क्रॉस का जन्म 4 अप्रैल, 1918 को पोर्ट्समाउथ के पास ईस्ट कोसम में हुआ था। वे पाँच बच्चों में सबसे छोटे थे। वे दुबले-पतले और बीमार रहने वाले बच्चे थे, जिनकी लगातार खराब सेहत ने पूरे परिवार में उदासी का माहौल बना दिया था। यहाँ तक कि उन्हें एक निजी ट्यूटर की ज़रूरत पड़ी क्योंकि उनमें स्कूल में समय बिताने की हिम्मत नहीं थी। आठ या नौ साल की उम्र में जाकर इयान की सेहत में सुधार होना शुरू हुआ और तब जाकर वे बचपन के सभी मज़े में शामिल हो पाए।

प्रथम विश्व युद्ध के बाद, क्रॉस परिवार साउथेम्प्टन के पास हेलिंग द्वीप में बस गया। यहीं इयान और उनके भाई-बहन पले-बढ़े और यहीं उन्हें धरती पर अपनी सबसे पसंदीदा जगह मिली: सैंडी पॉइंट क्षेत्र के चौड़े, मुलायम समुद्र तट और विशाल तटीय क्षेत्र। इयान अक्सर छुट्टी के दौरान हेलिंग लौटते थे और अपने बचपन के खेल के मैदानों में घूमते हुए बिताए दिन उन्हें हमेशा तरोताज़ा कर देते थे। आखिरकार इयान को स्कूल जाने के लिए पर्याप्त स्वस्थ माना गया और उन्हें पीटर्सफील्ड के चर्चर्स कॉलेज में बोर्डिंग छात्र के रूप में दाखिला दिलाया गया। उन्होंने स्कूल में बिताए वर्षों का भरपूर आनंद लिया और उनकी शारीरिक स्थिति में बहुत सुधार हुआ। जब उन्होंने 1936 में चर्चर्स कॉलेज छोड़ा, तब तक इयान ने स्प्रिंटर और जम्पर के रूप में, और विशेष

रूप से रग्बी खिलाड़ी के रूप में काफी नाम कमा लिया था। कद में छोटे होने के बावजूद, उन्होंने अपनी ताकत से इसकी भरपाई कर दी।

इयान ने चर्चर्स में अधिकारी प्रशिक्षण कोर में कुछ समय बिताया था, इसलिए जब उन्होंने अपने बड़े भाई केनेथ की तरह रॉयल एयर फ़ोर्स में शामिल होने का फैसला किया, तो परिवार को कोई आश्चर्य नहीं हुआ। 12 अक्टूबर, 1936 को इयान ने अल्पकालिक सेवा कमीशन लिया और उन्हें हैनवर्थ स्थित नागरिक उड़ान विद्यालय में तैनात किया गया, जहाँ उन्होंने अपनी पहली उड़ान के एक महीने से भी कम समय में एकल उड़ान भरी। 1937 की गर्मियों में उन्हें हेंडन मध्यम बमवर्षक विमानों से लैस मारहम स्थित 38 स्क्वाड्रन में नियुक्त किया गया। जब युद्ध शुरू हुआ, तब तक इयान क्रॉस फ्लाइंग ऑफिसर के पद पर पहुँच चुके थे और वेलिंगटन विमानों पर नौ महीने से उड़ान भर रहे थे।

युद्ध के शुरुआती महीने बॉम्बर कमांड के लिए बेहद अनिश्चितता भरे थे। स्क्वाड्रनों को मिशन के लिए अलर्ट और ब्रीफ किया जाता था, लेकिन आखिरी समय में उन्हें रद्द कर दिया जाता था। कई बार वे घंटों स्टैंडबाय पर रहते थे, उस ऑपरेशन के आह्वान का इंतजार करते हुए जो कभी नहीं आया। इयान के लिए ये महीने बेहद कठिन थे। कमांडरों की टालमटोल से उन्हें बहुत चिढ़ थी और वे दुश्मन पर हमला करने के लिए बेताब थे। इस दौरान वे दौड़कर और स्टेशन की रग्बी टीम की कप्तानी करके खुद को चुस्त-दुरुस्त रखते थे, और मनोरंजन के लिए गोल्फ भी खेलते थे। उन्होंने वेलिंगटन के लिए बीम गन विकसित करने में भी काफी समय बिताया। हालांकि वायु मंत्रालय ने अपर्याप्त संसाधनों के कारण उनकी योजनाओं को अस्वीकार कर दिया, फिर भी इयान ने अपने विमान के लिए प्रोटोटाइप को संभाल कर रखा।

अंततः, तीन महीने की असफल कोशिशों के बाद, इयान ने 3 दिसंबर, 1939 को हेलिगोलैंड में जहाजों पर हमले के रूप में अपना पहला ऑपरेशन अंजाम दिया। इसके बाद के महीनों में स्क्वाड्रन की हवाई गतिविधियाँ काफी बढ़ गईं। 1940 की शुरुआत में एक रात हेलिगोलैंड से लौटते समय, जब वे इंग्लैंड पहुँचे तो पूरा देश घने कोहरे से ढका हुआ था, जिससे इयान और उनके दल बाल-बाल बचे। वे घंटों तक उतरने की जगह की तलाश में चक्कर लगाते रहे, लेकिन किसी भी दिशा में दृश्यता शून्य थी। अंततः, लगभग दस घंटे हवा में रहने के बाद, उन्हें विमान छोड़कर पैराशूट से सुरक्षित उतरना पड़ा। कार्रवाई के इन शुरुआती महीनों के दौरान, इयान को उस समय के बॉम्बर कमांड क्रू के जीवनकाल के बारे में कोई भ्रम नहीं था: 'यह संभावना नहीं है कि मैं जून या जुलाई के अंत तक जीवित रह पाऊँगा,' उन्होंने जनवरी 1940 में अपनी डायरी में लिखा।

इयान क्रॉस ने जुलाई का अंत देखा और छब्बीस तारीख को उन्हें ऑपरेशन से हटाकर कैम्ब्रिज के पास बेसिंगबोर्न स्थित 11 ओटीयू में तैनात कर दिया गया; उन्होंने चौंतीस मिशन पूरे किए थे, जिनमें से आधे से अधिक में वे प्रथम पायलट थे। प्रशिक्षक के रूप में काम करने में शुरुआत में तालमेल बिठाना मुश्किल था, जिसका मुख्य कारण इयान का स्वभाव था। उन्होंने अपने लिए बहुत ऊंचे मानक तय किए थे और जो लोग खुद से कम उम्मीद रखते थे, उनके प्रति उनमें धैर्य नहीं था। हालांकि, बेसिंगबोर्न में अपने पहले सप्ताह के दौरान दो दुर्घटनाओं के बावजूद, उन्हें जल्द ही प्रशिक्षक के रूप में काम करने में आनंद आने लगा। सितंबर 1940 में खबर आई कि इयान को डीएफसी (उनके भाई केनेथ के साथ ही) से सम्मानित किया गया है। अपनी स्वाभाविक विनम्रता के साथ, इयान ने कहा कि वे अपने लिए उत्साहित नहीं हैं। उन्होंने लिखा, 'मुझे सबसे ज्यादा खुशी इस बात से है कि परिवार कितना प्रसन्न होगा।' यहां तक कि विनम्र क्रॉस को भी सम्मान समारोह में राजा के सामने खुद को पाकर गर्व का अनुभव हुआ।

अगस्त 1941 में, काफी मशक्कत के बाद, इयान को आखिरकार एल्शम वोल्ड्स स्थित 103 स्क्वाड्रन में एक सक्रिय इकाई में पुनः तैनाती मिल गई। उनकी एकमात्र निराशा यह थी कि स्क्वाड्रन में चार इंजन वाले बमवर्षक विमानों के बजाय दो इंजन वाले वेलिंगटन विमान थे, जिन्हें उड़ाने की उन्होंने आशा की थी। अब ऑपरेशन युद्ध के शुरुआती महीनों की तुलना में कहीं अधिक

बार होते थे, और लक्ष्य भी अधिक चुनौतीपूर्ण हो गए थे। उत्तरी इटली के ट्यूरिन की एक लंबी यात्रा थी (एक ऐसा हमला जिसका इयान ने आल्प्स पर्वतमाला के शानदार दृश्यों के कारण भरपूर आनंद लिया), और स्टैटिन के बंदरगाहों की तस्वीरें लेने के लिए एक एकल उड़ान भी थी।

सर्दियों के महीनों में चलाए गए अभियानों में अधिकतर कब्ज़े वाले यूरोप के बंदरगाहों पर हवाई हमले शामिल थे। इनमें से कई अभियानों का निशाना शार्नहोर्स्ट और ग्नीसेनाउ युद्धपोत थे, जो फ्रांस के ब्रेस्ट बंदरगाह में शरण लिए हुए थे। जब ये युद्धपोत आखिरकार लंबे समय से प्रतीक्षित इंग्लिश चैनल से होते हुए जर्मनी की ओर बढ़ने लगे, तो रॉयल एयर फ़ोर्स (आरएफ़) को उन्हें रोकने के लिए हर संभव प्रयास करने का आदेश दिया गया। 12 फ़रवरी, 1942 की दोपहर को, इयान क्रॉस, चार अन्य वेलिंगटन विमानों के साथ, ठंडे और भीगे हुए एल्शम वोल्ड्स से इन जहाजों पर हमला करने के लिए उड़ान भरी। प्रत्येक बमवर्षक विमान में 500 पाउंड के बम लदे थे, जो दुर्भाग्यवश इस कार्य के लिए अपर्याप्त थे, और वे खराब मौसम में दुश्मन के संभावित ठिकाने की ओर रवाना हुए। बर्फ जमना तुरंत एक समस्या बन गई और स्थिति को और भी बदतर बनाने के लिए, वेलिंगटन विमान अंग्रेजी तट छोड़ने के तुरंत बाद घने कोहरे में फंस गए। दोनों समस्याओं को हल करने के प्रयास में, इयान ने विमान को नीचे उतरने का आदेश दिया, लेकिन तीन सौ फीट की ऊंचाई पर भी वे घने बादलों में घिरे रहे।

उन्हें क्रूज़र कभी नहीं मिले, और घंटों तक घने कोहरे से जूझने के बाद, वेलिंगटन विमानों ने हार मान ली और बेस पर लौट आए। एल्शम वोल्ड्स में, 103 स्क्वाड्रन अपने विमानों के लौटने का इंतज़ार कर रहा था, जो अंततः एक-एक करके कोहरे से बाहर निकले। हालांकि, केवल चार ही वापस आए। पचास ऑपरेशन पूरे करने और पायलट के रूप में 1,330 घंटे से अधिक उड़ान भरने के बाद, इयान क्रॉस वापस नहीं लौटे थे। कुछ हफ़्ते बाद, क्रॉस परिवार को यह जानकर बेहद खुशी हुई कि इयान बंदी हैं। उनका विमान रॉटरडैम के पास समुद्र में दुर्घटनाग्रस्त हो गया था और चालक दल के सभी सदस्य विमान से सुरक्षित निकल गए थे, हालांकि पांच में से दो लाइफ राफ्ट तक नहीं पहुंच पाए और लापता हो गए। बाकी लोगों को लगभग चौबीस घंटे तक छोटी नाव में रहने के बाद एक जर्मन जहाज ने बचा लिया। सभी को हल्की ठंड लगी थी, लेकिन अन्यथा वे unharmed थे।

*

इयान क्रॉस दुश्मन के खिलाफ अपनी जंग जारी रखे हुए था, हालांकि कुछ रातों बाद जब तीनों ने शतावरी के खेत में हुई उस घटना के बारे में बात की तो वह हास्य नाटक जैसी लगने लगी। इस प्रयास की विफलता ने उन्हें अन्य योजनाओं के लिए समय दिया और जल्द ही उन्हें शुबिन में बनाई जा रही एक नई और अनोखी योजना में शामिल कर लिया गया। इस योजना में शौचालय ब्लॉक से एक सुरंग बनाना शामिल था, जो बाहरी तार के काफी करीब था। शौचालय एक बड़े कंक्रीट के चबूतरे पर बना था और दो हिस्सों में बंटा हुआ था, एक में मूत्रालय और दूसरे में शौचालय। ब्लॉक का जल्दी से निरीक्षण करने पर पता चला कि शौचालयों के नीचे एक बड़ा गंदा गड्ढा था, लेकिन मूत्रालय कक्ष का फर्श ठोस मिट्टी पर था। यहीं इस योजना का रहस्य छिपा था।

सुरंग खोदने वालों ने आखिरी शौचालय चुना और बेंच को इस तरह काटा कि उसे छिपे हुए कब्जों की मदद से बगल से उठाया जा सके। फिर, सीवेज के स्तर से ठीक ऊपर, अपशिष्ट गड्ढे के किनारे ईंटों में एक जाल बनाया गया। जाल काटने के लिए, एक बदकिस्मत मजदूर को शौचालय की बेंच में बने छेद से उसके टखनों के बल लटका दिया गया और तब तक काम करवाया गया जब तक कि उसके सिर में इतना खून नहीं चढ़ गया कि वह सीधा देख भी न सके। जब जाल पूरा हो गया, तो मूत्रालयों के फर्श के नीचे एक बड़ा कक्ष खोदा गया, जिसकी कंक्रीट की पटिया छत का काम करती थी। औजारों और सामग्रियों के भंडारण के लिए इस्तेमाल होने वाले इस कक्ष से सुरंग तार की ओर बढ़ती। इस योजना के दो संस्थापक, एडी एसलिन और

विलियम 'टेक्स' ऐश, सुरंग के निर्माण के लिए जिम्मेदार थे, जबकि अन्य दो, 'प्रिंस' पामर और 'ड्यूक' मार्शल, सहारा, जाल, वेंटिलेशन और प्रकाश व्यवस्था, और संगठन और आपूर्ति का ध्यान रखते थे। टॉमी कैलनन सुरक्षा का नियंत्रण संभालते थे।

सुरक्षा कारणों से सभी पाँचों इस बात को लेकर चिंतित थे कि श्रमिकों की संख्या न्यूनतम रखी जाए। उनके पहले संपर्कों में से एक फेसलर नाम का एक अमेरिकी इंजीनियर था, जो अपने स्लाइड रूल के बिना कहीं नहीं जाता था। फेसलर सर्वेक्षण के लिए जिम्मेदार था, और उसने गणना की कि यदि सुरंग को लगभग पैंतीस डिग्री के कोण पर ऊपर की ओर झुकाया जाए, तो यह एक जल निकासी खाई में टूट जाएगी जो तार के समकोण पर चलती है और सीधे जंगल की ओर जाती है। इससे सुरंग से बाहर निकलने का काम बहुत कम जोखिम भरा हो जाएगा। इसके बाद, खुदाई करने वाली टीमों का चयन करना बाकी था, और शतावरी के खेत में अपने अनुभव के आधार पर, रॉबर्ट की और इयान क्रॉस स्वाभाविक रूप से चुने गए। सुरंग को सहारा देने के लिए, योजनाकारों ने 'डची' स्वैन नाम के एक गोरे व्यक्ति को नियुक्त किया।

*

15 दिसंबर, 1911 को श्रॉपशायर के वेम में जन्मे सिरिल डगलस स्वैन अपने दो भाइयों और दो बहनों के बीच थोड़े अलग थे। बचपन में उनसे घुलना-मिलना आसान नहीं था, क्योंकि वे थोड़े चिड़चिड़े और एकांतप्रिय स्वभाव के थे। युवावस्था में वे अधीर और कम बोलने वाले थे, और अपनी समस्याओं को दूसरों से साझा करने के बजाय अपने अंदर ही दबाकर रखना पसंद करते थे। 1922 से 1929 तक मिल हिल स्कूल में पढ़े सिरिल डगलस स्वैन को वहां की पढ़ाई-लिखाई में कोई खास दिलचस्पी नहीं थी, क्योंकि उन्हें वहां के नियम-कानून तुच्छ और परेशान करने वाले लगते थे। स्कूल में उन्हें सिर्फ रग्बी में ही रुचि थी।

फिर भी, सिरिल स्वेन, जिसे इलाके में सिड के नाम से जाना जाता था, में कई ऐसी बातें थीं जो उसे खास बनाती थीं। वह संवेदनशील और ईमानदार था और बचपन से ही उसके दोस्त उस पर भरोसा करते थे, क्योंकि वे जानते थे कि मुसीबत में पड़ने पर वे उसकी मदद कर सकते हैं। उसे आम लड़कों की तरह रोमांच का शौक था और जब वह अपनी मोटरबाइक पर नहीं होता था, तो अक्सर उसे वेम के आसपास के ऊंचे पेड़ों की चोटी पर देखा जा सकता था। सिड अपने भाई-बहनों में इकलौता ऐसा था जिसके पास अपनी छोटी बहन, सिल्विया के लिए समय होता था। दोनों साथ में तैरने या टहलने जाया करती थीं और घंटों घोड़ों और मोटरबाइकों की खूबियों पर बहस करती रहती थीं। जब आखिरकार सिल्विया के पसंदीदा ट्रू पर सवारी करने के लिए राजी हो गया, तो सिड ने बस इतना ही कहा कि उसकी मोटरबाइक के ब्रेक कहीं बेहतर हैं।

1929 में, सिड के पिता ने फैसला किया कि सिड को कोई हुनर सीखना चाहिए और बर्मिंघम में एक इंजीनियरिंग कारखाने में उसके लिए नौकरी का इंतजाम किया। दुर्भाग्य से, सिड को वह नौकरी बिल्कुल पसंद नहीं आई और जब उसके एक चाचा ने उसके पिता को मना लिया कि वह उसे गर्मियों में पश्चिमी कनाडा में अपने खेत में काम करने दे, तो वह बहुत खुश हुआ। यह नौकरी कुछ ही महीनों तक चली, लेकिन चाचा फ्रैंक से प्रथम विश्व युद्ध में रॉयल एयरक्राफ्ट फोर्स (आरएफसी) के साथ उड़ान भरने की कहानियाँ सुनने में बिताई गई शामों ने सिड को एक अलग राह पर डाल दिया। इंग्लैंड लौटने पर, उसने तुरंत रॉयल एयर फोर्स (आरएएफवीआर) में शामिल होने के लिए आवेदन किया और अपने पिता के विरोध के बावजूद, 17 सितंबर, 1934 को सेवा में शपथ ली।

ब्रिस्टल में प्रशिक्षण शुरू हुआ और सिड को अल्पकालिक कमीशन मिलने के बाद नेदरवन में जारी रहा। 11 जनवरी, 1937 को पायलट ऑफिसर स्वेन को टर्नहाउस स्थित 83 स्क्वाड्रन में तैनात किया गया। वहाँ का मौसम उड़ान के लिए अनुकूल नहीं था, और कई बार जब अभ्यास बमबारी और हवाई फायरिंग रद्द हो जाती थी, तो सिड रग्बी या गोल्फ खेलते थे या स्थानीय

मोटरसाइकिल रेस देखने जाते थे। जुलाई 1937 में उन्हें कुछ और दिलचस्प कार्य सौंपे गए। स्वेन ने उन छह विमानों में से एक को उड़ाया, जिन्होंने कैम्बर्ली स्थित स्टाफ कॉलेज के लिए एक सफल बमबारी प्रदर्शन किया, और उसी महीने बाद में वे उत्तरी आयरलैंड गए, जहाँ उन्होंने राजा की बेलफास्ट यात्रा के उपलक्ष्य में आयोजित फ्लाईपास्ट में भाग लिया। इस कार्यक्रम से लौटते समय, सिड को थॉर्नबी में आपातकालीन लैंडिंग करनी पड़ी, जिससे उनकी आँख में चोट लग गई। आँख का तुरंत इलाज कर दिया गया, लेकिन धुंधली दृष्टि को ठीक होने में अधिक समय लगा और सिड को उड़ान के लिए अनुपयुक्त घोषित कर दिया गया। अपनी किस्मत को कोसते हुए, उन्होंने नवंबर में टर्नहाउस छोड़ दिया और टर्न हिल स्थित 10 एफटीएस में नेविगेशन प्रशिक्षण कार्य में लग गए।

कुछ ही महीनों में उड़ान के लिए योग्य घोषित होने के बावजूद, सिड टर्न हिल में ही निष्क्रिय पड़ा रहा। उसे प्रशिक्षण देना बिल्कुल पसंद नहीं था और वह फिर से उड़ान भरने के लिए तरस रहा था; उसने अपने परिवार को बताया था कि वह आरएएफ में शिक्षक बनने के लिए भर्ती नहीं हुआ था। आखिरकार, फरवरी 1940 में स्वैन को परिचालन प्रशिक्षण के लिए बेन्सन में तैनात किया गया। टर्न हिल में जिन युवा सैनिकों को उसने प्रशिक्षित किया था, उनके अधीन रहने का दर्द उसे सता रहा था, लेकिन उसने किसी परिचालन इकाई में भेजे जाने की उम्मीद में इसे सहन किया। 10 मई 1940 को, उसके धैर्य का फल मिला और उसे फ्रांस जाने का आदेश मिला। सिड को नैनटेस ले जाया गया, लेकिन महाद्वीप पर उसका समय स्थानांतरण और उलझनों से भरा रहा। 14 मई को 105 स्क्वाड्रन में स्थानांतरित होने के बाद, उसने दक्षिणी फ्रांस में यूनिट का पीछा किया, इस दौरान उस पर बमबारी भी हुई, और अंत में वह एचेमिन्स में उससे मिला। वहां आगे के प्रशिक्षण के बाद यूनिट को वापस इंग्लैंड जाने का आदेश दिया गया। सिड ने अपना पहला मिशन, गेल्सेंकिर्चेन तेल रिफाइनरी की फोटो टोही, 25 अगस्त को शुरू किया, लेकिन बादलों की कमी के कारण मिशन रद्द करना पड़ा। दो रात बाद, रेनेस हवाई अड्डे की यात्रा भी इसी कारण से रद्द कर दी गई। अंततः 15 सितंबर को ही वह एक मिशन पूरा कर सका, जो कैप ग्रिस नेज़ पर तोपखाने की चौकियों पर छापा था।

अगले कुछ महीनों में, स्वैन ने आठ और ऑपरेशन किए, जिनमें से तीन खराब मौसम के कारण रद्द करने पड़े। नवंबर के अंत में उन्हें एक और दुर्भाग्यपूर्ण घटना का सामना करना पड़ा। ड्रेम में नई रात्रि लैंडिंग प्रणाली का अध्ययन करते समय, सिड ने अपने ब्लेंहेम विमान को एक ऐसे एंसन विमान से टकरा दिया जो बिना बत्तियों के हवाई अड्डे पर खड़ा था। कोई घायल नहीं हुआ, लेकिन दोनों विमानों को काफी नुकसान पहुंचा। 28 नवंबर तक सिड और उनका दल फिर से ऑपरेशन के लिए तैयार थे। देर दोपहर में उन्होंने डसेलडोर्फ के लिए उड़ान भरी। जब सुबह तक विमान का कोई पता नहीं चला, तो उसे लापता घोषित कर दिया गया। कुछ हफ्तों बाद स्क्वाड्रन को खबर मिली कि ब्लेंहेम विमान को मार गिराया गया है और सिड बार्थ में कैदी हैं। अंततः उन्हें सागन भेज दिया गया और वहां से पहले दल के साथ शुबिन भेज दिया गया।

*

स्वैन उन बढ़ईयों की टीम का हिस्सा थे जो भूमिगत कक्ष में काम कर रहे थे, बिस्तर की पट्टियों को काट-छाँट कर तैयार कर रहे थे ताकि उन्हें सुरंग में जोड़ा जा सके। कक्ष में पर्याप्त जगह थी (यह लगभग पंद्रह फीट लंबा, दस फीट चौड़ा और छह फीट ऊँचा था), लेकिन शुरुआत में उन्हें बिस्तर की पट्टियों की कमी का सामना करना पड़ा। हालांकि, आपूर्ति की समस्या तब हल हो गई जब कुछ श्रमिकों ने जर्मन भंडारगृह में सेंध लगाई और पट्टियों का एक विशाल भंडार खोज निकाला, जो पूरी सुरंग को सहारा देने के लिए पर्याप्त से अधिक था। इस समस्या के दूर होने के बाद, सुरंग का काम आगे बढ़ा दिया गया। मिट्टी बहुत सख्त थी, इसलिए काम की गति धीमी थी, लेकिन कम से कम मिट्टी का फैलाव आसान था। मिट्टी को धातु के जगों में भरकर शौचालय वाले

हिस्से में पहुँचाया जाता था और फिर अलग-अलग छेदों के माध्यम से सीवेज के गड्ढे में डाल दिया जाता था ताकि मिट्टी का ढेर न लगे। नियमित अंतराल पर, एक पोलिश मजदूर टैंकर गाड़ी लेकर आता और गड्ढे से मिट्टी निकालता था। यह व्यवस्था मिट्टी फैलाने वालों के लिए किसी सपने से कम नहीं थी।

दुर्भाग्यवश, अबॉर्ट सुरंग की शुरुआती सफलता दो त्रासदियों से धूमिल हो गई। शुबिन पहुँचने के कुछ ही हफ़्तों बाद, एडवर्ड्स नामक एक युवा अधिकारी कैद के दबाव में आकर दिन दहाड़े, पहरेदार टावर की निगरानी में, तार पर चढ़ने की कोशिश करने लगा। भयभीत दर्शकों की गुहार के बावजूद, पहरेदार ने गोली चला दी और एडवर्ड्स की मौके पर ही मौत हो गई। फिर, दो महीने से भी कम समय बाद, एक अन्य युवा वायुसैनिक, पीटर लवग्रोव, शुबिन की मुख्य इमारत की सबसे ऊपरी मंजिल से गिरकर मर गया। एडवर्ड्स और लवग्रोव दोनों की उम्र केवल बाईस वर्ष थी, और उनकी मृत्यु ने शिविर में लंबे समय तक शोक का माहौल बनाए रखा।

अध्याय 6

एक अंतर्राष्ट्रीय समुदाय

स्टैलाग लुफ्ट III में वापस आकर, जिमी बकले के जाने के बाद रोजर बुशेल ने भागने की योजना का जिम्मा संभाल लिया था। हालांकि, भागने की योजना के कई पुराने नेता सागन में ही रह गए थे, इसलिए रोजर अपने आसपास एक अनुभवी समिति जुटाने में कामयाब रहे। क्रम्प केर-रामसे को सुरंग खोदने के अभियानों का समग्र प्रभार दिया गया, जबकि सुरक्षा का जिम्मा हाल ही में आए अमेरिकी कर्नल 'जूनियर' क्लार्क को सौंपा गया, जो लंबे और फुर्तीले थे। टिम वालेन ने जालसाजी का काम संभाला, निक टिंडल ने संपर्कों और खुफिया जानकारी की देखरेख फिर से शुरू की, और कॉक कैंटन को वायर सिस्टम का विशेषज्ञ बनाया गया।

राल्फ अब्राहम ने कपड़ों के निर्माण और वितरण का कार्यभार संभाला, जिसमें महाद्वीपीय अधिकारियों के एक दल ने उनकी कुशलतापूर्वक सहायता की। वे अधिकांश नाप-जोख, कटाई, फिटिंग और इस्त्री का काम करते थे, जबकि राल्फ सिलाई का काम संभालते थे। उन्हें रेड क्रॉस पार्सल स्टोर में लॉरेंस रीवेल-कार्टर से भी कभी-कभार मदद मिलती थी, जो इधर-उधर पड़ी कोई भी उपयोगी चीज़ खुशी-खुशी उठा लेते थे। सितंबर में एक दिन संयोग से उन्हें जर्मन कपड़ों का गोदाम खुला मिला और उन्होंने चार पूरे नागरिक सूट और तीन रेनकोट ले लिए। बेशक, ऐसा सौभाग्य हर दिन नहीं मिलता था। अधिकांश समय राल्फ को आवश्यक सामान उपलब्ध कराने के लिए इवो टोंडर और उनके अन्य मेहनती दर्ज़ियों पर निर्भर रहना पड़ता था।

*

फ्लाइट लेफ्टिनेंट इवो टोंडर के लिए भाग निकलना कोई नई बात नहीं थी; उनके वयस्क जीवन का अधिकांश हिस्सा जेलों और भागने की घटनाओं में ही बीता था। 16 अप्रैल, 1913 को प्राग में जन्मे इवो ने राष्ट्रीय सेवा दायित्वों को पूरा करने के लिए चेक वायु सेना में भर्ती हुए और एक हवाई प्रदर्शन दल में तैनात होने से पहले अपना पायलट प्रशिक्षण पूरा किया। इवो की दो साल की सेवा अवधि मई 1938 में समाप्त हो गई, लेकिन उन्होंने अपनी प्रतिबद्धता बढ़ा दी और वायु सेना में बने रहे। बाद में, जब हंगेरियन विमान-रोधी तोपचियों ने उनके ईंधन टैंक को भेद दिया, तो वे लगभग मार गिराए गए थे, लेकिन वे बाल-बाल बच गए। हालांकि, यह आने वाली घटनाओं का संकेत था।

टोंडर की कई भागने की घटनाओं में से पहली घटना नवंबर 1939 में हुई, जब वह और दो अन्य वायुसैनिक जर्मन-कब्जे वाले चेकोस्लोवाकिया से भाग निकले। उन्हें हंगरीवासियों ने पकड़ लिया और कैद कर लिया, लेकिन एक हफ्ते बाद उन्हें ऑस्ट्रियाई सीमा पर ले जाकर रिहा कर दिया गया, साथ ही यह चेतावनी भी दी गई कि वे दोबारा हंगरी में प्रवेश न करें। तीनों कुछ दिनों तक छिपे रहे और फिर सीमा पार करके बुडापेस्ट के लिए एक टैक्सी किराए पर ली, जहाँ उन्हें एक यहूदी परिवार ने शरण दी। इवो और उनके दोस्तों को युगोस्लाविया में प्रवेश करने की अनुमति देने वाले कागजात मिल गए, इसलिए उन्होंने सुबोटिका के लिए एक ट्रेन ली और पैदल सीमा पार करके बेलग्रेड के लिए एक और ट्रेन पकड़ी। वहाँ पहुँचने के बाद, भागना आसान हो गया। उन्होंने आलीशान तरीके से सैलानिका और इस्तांबुल की यात्रा की, फिर बेरूत गए, जहाँ इवो को फ्रांसीसी विदेशी सेना में सार्जेंट के रूप में भर्ती कर लिया गया।

कुछ सप्ताह बाद उन्होंने अपनी यात्रा जारी रखी और अंततः मोरक्को होते हुए फ्रांस पहुंचे। हालांकि, पहुंचते ही टोंडर को अग्डे स्थित एक शरणार्थी शिविर में डाल दिया गया और उन्हें केवल पीलिया होने के कारण ही वहां से निकाला गया, जिसके बाद उन्हें पेरिस के एक अस्पताल में भर्ती कराया गया। छह सप्ताह के स्वास्थ्य लाभ के दौरान, इवो को अपेंडिसाइटिस की गंभीर बीमारी हो गई और उन्हें आराम के लिए रिवेरा के एक क्लिनिक में ले जाया गया। जब फ्रांस का पतन हुआ और विची शासन ने देश के दक्षिणी भाग पर कब्जा कर लिया, तब भी वह वहीं थे। नए शासक उन्हें संभावित दुश्मन मानते हुए इवो टोंडर को रिहा करने के इच्छुक नहीं थे, इसलिए वह अस्पताल से भाग निकले और पैदल ही अग्डे वापस चले गए, लेकिन शरणार्थी शिविर को वीरान पाया। फिर उन्होंने एक कार चुराई और दक्षिणी फ्रांस के पोर्ट वेंड्रेस चले गए, जहां वह लिवरपूल जाने वाले एक जहाज पर सवार होने में कामयाब रहे और अगस्त 1940 में वहां पहुंचे। उन्होंने तुरंत आरएएफ में आवेदन किया और उन्हें स्वीकार कर लिया गया और स्पिटफायर विमानों के प्रशिक्षण के लिए बेन्सन में तैनात किया गया। इसके बाद इवो का तबादला 312 (चेक) स्क्वाड्रन में हो गया और उन्होंने लगभग तुरंत ही परिचालन शुरू कर दिया।

3 जून 1942 को, अठारह महीने के ऑपरेशन के बाद, इवो अपने स्क्वाड्रन के साथ एस्कॉर्ट ड्यूटी के लिए वार्मवेल से रवाना हुए। उन पर चार FW 190 विमानों ने हमला किया; एक विमान इवो की तोपों का शिकार हुआ, लेकिन चेक पायलट के विमान के संवेदनशील हिस्सों में भी कुछ गोले लगे। घर लौटते समय इंग्लिश चैनल के आधे रास्ते में, अचानक उनके कॉकपिट में आग लग गई और टोंडर ने पैराशूट का सहारा लिया। उन्होंने रिपकॉर्ड खींचा और नीचे उतरना शुरू किया, अपने पायलट रहित स्पिटफायर की आखिरी झलक देखी, जिसकी सारी आग बुझ चुकी थी और वह बहादुरी से इंग्लैंड की ओर उड़ रहा था। इवो लगभग पाँच घंटे तक अपनी छोटी नाव में तैरते रहे, जब तक कि 190 विमानों के एक समूह ने उन्हें नहीं देख लिया। एक घंटे बाद एक जर्मन सीप्लेन उन्हें लेने और चेरबर्ग ले जाने के लिए उतरा। जब वह अंततः जून 1942 के मध्य में सागन पहुँचे, तो वह दावा कर सकते थे कि वह पहले ही तीन बार जान बचा चुके थे।

दर्ज़ियों में से एक गंजा, मूंछों वाला पोलिश नागरिक, फ़्लाइट लेफ्टिनेंट जेरज़ी टोमाज़ मोंडशाइन था। 1909 में वारसॉ में जन्मे मोंडशाइन ने युद्ध से पहले पोलिश वायु सेना में सेवा की थी और अपने देश का वीरता पुरस्कार और दो पदक अर्जित किए थे। दर्ज़ी के अलावा, जेरज़ी के पास एक और प्रतिभा थी जो आगे चलकर बहुत उपयोगी साबित हुई। अपनी युवावस्था में, उन्होंने एक निर्माण कंपनी में काम किया था और कंक्रीट के साथ एक असाधारण कौशल विकसित किया था। वह लगभग किसी भी आकार का एक टुकड़ा काट सकते थे और उसे इतनी सटीकता से वापस जोड़ सकते थे कि यह बताना असंभव था कि वहाँ कभी कोई छेद था। किसी तरह उनकी यह विशेषज्ञता बुशेल के ध्यान में आई और उन्होंने इसे उपयोगी जानकारियों के अपने विशाल भंडार में सहेज लिया।

जब मोंडशाइन सिलाई-कढ़ाई में व्यस्त नहीं होते थे, तो अक्सर उन्हें जर्मन अखबारों को ध्यान से पढ़ते हुए देखा जा सकता था। वे अखबारों से खुफिया जानकारी इकट्ठा करने का काम करते थे। शिविर में आने वाले सभी अखबार संगठन द्वारा एकत्र किए जाते थे और प्रशिक्षित पाठकों की टीम द्वारा उनका सावधानीपूर्वक अध्ययन किया जाता था। म्यूनिख में एक पुलिस अधिकारी की नियुक्ति से लेकर स्टैटिन में एक कारखाने के फोरमैन के नाम तक, कोई भी उपयोगी जानकारी नोट की जाती थी और यूरोप के विभिन्न क्षेत्रों की खुफिया जानकारी इकट्ठा करने के लिए जिम्मेदार अधिकारियों को भेज दी जाती थी। जर्मनी की स्थितियों की जानकारी रोजर बुशेल की विशेषज्ञता थी, जबकि नीदरलैंड और बाल्टिक तट लिथुआनियाई हवाई लेफ्टिनेंट रोमुआल्डस मार्सिंकस के अधिकार क्षेत्र में थे।

रेने, जैसा कि उन्हें जाना जाता था, का जन्म 22 जुलाई, 1907 को जुरबार्कस में हुआ था और 1927 में हाई स्कूल से निकलने के बाद उन्होंने लिथुआनियाई सैन्य अकादमी में दाखिला लिया। दो वर्षीय पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद, उन्हें पांचवीं इन्फैंट्री रेजिमेंट में लेफ्टिनेंट के पद पर

तैनात किया गया। हालांकि, रेने की आकांक्षाएं कहीं अधिक थीं और छह महीने बाद उन्होंने सैन्य विमानन विद्यालय में स्थानांतरण का अनुरोध किया। कुछ समय बाद उन्होंने ऑब्जर्वर का लाइसेंस प्राप्त किया और उन्हें कौनास में दूसरी टोही स्क्वाड्रन में तैनात किया गया। वे तेजी से तरक्की करते हुए जल्द ही पायलट के रूप में योग्य हो गए और कप्तान के पद के साथ-साथ मानद बैज प्लीनो स्पार्नाई (स्टील के पंख) से सम्मानित हुए।

1934 में मार्सिंकस को प्रसिद्ध यूरोप-व्यापी उड़ान में भाग लेने के लिए चुना गया। तीन छोटे लड़ाकू विमानों में उड़ान भरते हुए, रेने और दो अन्य पायलटों ने छह हज़ार मील से अधिक की यात्रा की और यूरोप के दर्जनों शहरों का दौरा किया। हमेशा जिज्ञासु और उत्सुक रहने वाले रेने ने जितना हो सका उतना देखा और अपनी अद्भुत स्मृति में ढेर सारी जानकारी संजो कर रखी। इस दौरे के बाद, रेने सैन्य विमानन विद्यालय में मुख्य प्रशासक बनने के लिए वापस आ गए। इस समय वे स्टंट पैराशूटिंग से ख्याति अर्जित कर रहे थे; वे लिथुआनिया के पहले स्टंट जम्पर थे, और वे सैन्य विद्यालय में पैराशूटिंग सिखाते थे। रेने लिथुआनियाई राष्ट्रीय फुटबॉल टीम के भी एक स्टार खिलाड़ी थे और टीम के साथ अपने समय के दौरान उन्होंने कई और यूरोपीय शहरों का दौरा किया।

1939 में मार्सिंकस ने सेना से सेवानिवृत्त होने का फैसला किया, जिसके कारण पूरी तरह स्पष्ट नहीं हैं। बाद में, संभवतः वह फ्रांस की रक्षा में सहायता के लिए लिथुआनियाई पायलटों के एक स्क्वाड्रन की आपूर्ति करने की योजना में शामिल थे। अंततः वह एक फ्रांसीसी लड़ाकू स्क्वाड्रन में शामिल हो गए और फ्रांस पर जर्मन आक्रमण के दौरान उन्हें कुछ सफलता मिली, उन्होंने तीन दुश्मन विमानों को मार गिराया और क्रोइक्स डे गुएरे पुरस्कार जीता। फ्रांस के पतन के बाद, वह फिर से भाग निकले और उत्तरी अफ्रीका चले गए, जहाँ 12 अगस्त, 1940 को उन्हें फ्रांसीसी वायु सेना से मुक्त कर दिया गया। वह तुरंत टैंजियर में ब्रिटिश अटैची से मिलने गए और आरएएफ में शामिल होने की इच्छा व्यक्त की। उन्हें फ्रांसीसी लोगों के एक समूह के साथ जिब्राल्टर भेजा गया और अक्टूबर में वे लिवरपूल के लिए रवाना हुए। 1,480 घंटे की उड़ान के साथ, रेने को तुरंत आरएएफ में भर्ती कर लिया गया, हालाँकि उन्हें आयु मानक को पूरा करने के लिए अपनी उम्र में तीन साल कम करने पड़े।

आरएएफ विमानों के प्रशिक्षण के लिए उन्हें उसवर्थ स्थित 55 ओटीयू भेजा गया और 4 मई, 1941 को उन्हें रेडहिल से हरिकेन विमान उड़ाने वाली 1 स्क्वाड्रन में तैनात किया गया। यह यूनिट गर्मियों के अधिकांश समय तक सक्रिय रही, चैनल गश्ती और बमवर्षक विमानों की सुरक्षा मिशनों में लगी रही, लेकिन अगस्त में उन्होंने रात्रि लड़ाकू विमानों के लिए प्रशिक्षण शुरू किया। हालाँकि उनका समय अच्छी तरह से व्यतीत हो रहा था, फिर भी रेने इंग्लैंड में अकेलापन महसूस कर रहे थे। स्क्वाड्रन के नए अड्डे, टैंगमेरे में कोई अन्य लिथुआनियाई नहीं था, और मार्किंकस को अपने वतन के बारे में बात करने की कमी खल रही थी। इसलिए एक दिन जब उन्हें पास में तैनात एक लिथुआनियाई व्यक्ति का पत्र मिला तो उन्हें बहुत खुशी हुई। रेने ने लिखा, 'आपका पत्र पाकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई, क्योंकि यहाँ इंग्लैंड में मैं असहनीय अकेलापन महसूस कर रहा हूँ... लगभग तीन वर्षों के इस दौरान मुझे घर से कोई खबर नहीं मिली।' दोनों लिथुआनियाई लोगों ने मिलने की योजना बनाई और मार्किंकस अपने घर से इस संपर्क का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे।

ऐसा होना तय नहीं था। 12 फरवरी, 1942 को, मार्सिंकस और स्क्वाड्रन के पांच अन्य पायलटों को युद्धपोत शार्नहोर्स्ट और ग्नीसेनाउ के खिलाफ कम ऊंचाई पर उड़ान भरने का आदेश दिया गया था, ये वही लक्ष्य थे जिन पर इयान क्रॉस ने हमला करने की कोशिश की थी। दोपहर के भोजन के तुरंत बाद, हरिकेन विमानों ने अपने कवरिंग स्पिटफायर विमानों से मुलाकात की और फ्रांसीसी तट की ओर बढ़े। जहाजों की पहली पंक्ति जो उन्हें मिली, वह मित्रवत निकली, लेकिन दूसरी पंक्ति, विध्वंसक जहाजों के एक समूह ने हरिकेन विमानों पर गोलीबारी शुरू कर दी, जिसके बाद हरिकेन विमानों ने तुरंत उन पर हमला करने के लिए मोर्चाबंदी कर ली। रेने का

साथी विमान एंटी-एयरक्राफ्ट गोले की चपेट में आ गया, लेकिन बाकी सभी बाल-बाल बच गए और घर की ओर चल पड़े। हालांकि, यात्रा के कठिन हिस्से से बच निकलने के बाद, रेने का हरिकेन विमान सीधे समुद्री पक्षियों के झुंड से टकरा गया, जिससे उसका कॉकपिट कवर टूट गया और उसका इंजन अचानक बंद हो गया। उसने फ्रांसीसी तट पर आपातकालीन लैंडिंग की और जर्मन सैनिकों ने उसे बचा लिया। उसकी बयालीसवीं उड़ान ही उसकी आखिरी उड़ान साबित हुई।

सागन में रेने एक कुशल भाषाविद् के रूप में प्रसिद्ध हुए और जाली सामग्री बनाने की कार्यशाला में भाषा सलाहकार के रूप में काम करते थे। उनकी जर्मन भाषा प्रशियाई लोगों से लगभग समान थी, और वे पोलिश, रूसी, फ्रेंच और अंग्रेजी भी धाराप्रवाह बोलते थे। रेने अक्सर मजाक में कहते थे कि वे बाल्कन से लेकर स्कैंडिनेविया तक कहीं भी खा-पी सकते हैं और प्रेम कर सकते हैं। उनमें अपार आकर्षण था, और वे अपने वंशज लिथुआनियाई कुलीन वर्ग की उत्तम परंपराओं का पालन करते थे। वे अपनी दिखावट को लेकर भी बहुत सतर्क थे, खासकर अपने झड़ते बालों को लेकर। हर बार बाल धोते समय, मार्किंकस थोड़ी मात्रा में रेड क्रॉस के नींबू के अर्क का इस्तेमाल कुल्ला करने के लिए करते थे। वे कहते थे, 'हूणों के सामने हमेशा सबसे अच्छे दिखना चाहिए।'

मार्किनकस और खुफिया संगठन के बाकी सदस्यों द्वारा दी गई सटीक जानकारी बेशक बेहद महत्वपूर्ण थी, लेकिन भागने वाले के लिए यह जानना भी उतना ही जरूरी था कि वह कहाँ जा रहा है और वहाँ पहुँचने पर वह कहाँ होगा। इसके लिए उसे नक्शे की जरूरत थी। ट्रेन से भागने वाले लोग मुख्य यात्रा मार्गों और सीमा चौकियों जैसे संवेदनशील क्षेत्रों के विस्तृत नक्शे से काम चला सकते थे। लेकिन पैदल यात्रा करने वाले 'हार्डर्सर' के लिए कहीं अधिक विस्तृत नक्शे की आवश्यकता थी, जिसमें सभी छोटे गाँव, जलमार्ग, जंगल, पहाड़ियाँ, दर्रे और अन्य भू-आकृतियाँ दिखाई गई हों। आसपास के ग्रामीण इलाकों की स्पष्ट जानकारी हार्डर्सर की सफलता और विफलता के बीच का अंतर तय कर सकती थी।

मानचित्र विभाग का ज़िम्मा डेसमंड लैंसलॉट प्लंकेट के पास था, जो चमकीले लाल बालों और हास्यबोध से भरपूर एक रंगीन व्यक्तित्व थे। फ्लीट एयर आर्म के लेफ्टिनेंट अलेक्जेंडर डेसमंड 'सेलर' नीली और कुछ अन्य लोगों के साथ काम करते हुए, डेस लगभग हर जगह का नक्शा बना सकते थे, और वे अपने विलक्षण व्यवहार के लिए भी उतने ही प्रसिद्ध थे। वे अक्सर भुलक्कड़ और दुर्घटना-प्रवण थे। उनके रूममेट अक्सर मज़ाक करते थे कि बर्तन धोते समय वे एक ही कप को छह बार सुखाकर तोड़ देंगे। वे गठीले शरीर वाले, बहुत मजबूत और हमेशा व्यस्त दिखते थे, शिविर में हंसमुख अंदाज़ में इधर-उधर भागते रहते थे।

*

1915 में जन्मे डेस प्लंकेट को पहली बार हवाई यात्रा का अनुभव 1925 की गर्मियों में हुआ, जब दो बाइप्लेन उनके माता-पिता के घर के पास एक खेत में उतरे। उन्होंने पाँच शिलिंग प्रति उड़ान का विज्ञापन दिया था, और उस नन्हे लड़के ने अपने पिता से पैसे के लिए ज़िद की। उन दिनों यह अच्छी-खासी रकम थी, लेकिन अपनी माँ के विरोध के बावजूद, डेस आखिरकार मान गए। उस लड़के को दिन की आखिरी उड़ान मिली और वह बिना पट्टियों या चश्मों के लगभग तीस मिनट तक हवा में रहे। ज़मीन पर वापस आने के बाद भी, प्लंकेट का मन अभी भी हवाई यात्रा में मग्न था।

1933 में उन्हें एक प्रशिक्षु विमान अभियंता के रूप में नौकरी मिली, और अगले चार वर्षों तक वे विमान उद्योग में विभिन्न कंपनियों के लिए काम करते हुए उड़ान भरना सीखते रहे, और 1937 में उन्हें एक ड्राफ्ट्समैन की नौकरी मिल गई। उसी वर्ष प्लंकेट आरएएफवीआर में शामिल हो गए, और मई 1939 में उन्होंने प्रशिक्षक के रूप में योग्यता प्राप्त की और विमान अभियांत्रिकी का काम छोड़कर हैनवर्थ में विमान उड़ाना सिखाने लगे। नवंबर 1941 में उन्होंने

वेलिंगटन विमानों को उड़ाना शुरू किया और परिचालन में आ गए। उन्हें 218 स्क्वाड्रन में तैनात किया गया, जहाँ उन्होंने शॉर्ट स्टर्लिंग भारी बमवर्षक विमान उड़ाए।

20 जून 1942 को, बीस सौ घंटे से अधिक उड़ान का अनुभव रखने वाले डेस प्लंकेट को एम्डेन पर हमले के लिए सह-पायलट नियुक्त किया गया। लक्ष्य क्षेत्र से निकलने के बाद, विमान पर एक रात्रि लड़ाकू विमान ने हमला किया और दाहिने पंख के टैंक में आग लग गई। इंटरकॉम काम न करने के कारण, पायलट ने चालक दल को पैराशूट से कूदने का संकेत दिया। प्लंकेट हॉलैंड के स्पियरडिज्क कस्बे के बाहर उतरे और अगले दिन के लिए छिप गए, रात में भागने की योजना बना रहे थे। रविवार का दिन था, इसलिए उन्होंने सोचा कि सड़कें काफी सुनसान होंगी। हालांकि, निकलने के कुछ ही समय बाद, उन्होंने घबराकर महसूस किया कि पूरा गांव रविवार की सैर पर निकला हुआ प्रतीत हो रहा था, और कुछ ही मिनटों में वे स्थानीय लोगों से घिर गए जो पूछ रहे थे कि आक्रमण कब होगा। डेस ने बड़ी सावधानी से भागने की बात कही, लेकिन ग्रामीणों ने उन्हें हतोत्साहित किया, जिन्होंने कहा कि इलाका जर्मनों से भरा हुआ है। शायद गलती से, डेस ने उनकी सलाह मान ली और आत्मसमर्पण कर दिया। उन्होंने कस्बे में दो-तीन जर्मनों के अलावा और कुछ नहीं देखा।

सैगन पहुँचने के कुछ ही समय बाद, रोजर बुशेल ने डेस को मानचित्रण विभाग का कार्यभार संभालने के लिए कहा। प्लंकेट ने युद्ध से पहले हवाई सर्वेक्षण का काफी काम किया था और उन्होंने तुरंत मानचित्रों के त्वरित और आसान पुनरुत्पादन के लिए एक प्रणाली की योजना बनाना शुरू कर दिया। सौभाग्य से, डेस की भुलक्कड़ता नक्शों पर काम करते समय चमत्कारिक रूप से गायब हो जाती थी।

*

सन् 1942 के पतझड़ में लगातार बढ़ते खुफिया नेटवर्क में कुछ नए सदस्य भी शामिल हुए, जिनमें डेनमार्क पर एक बेहद ज़रूरी विशेषज्ञ भी शामिल था। जन्म से न्यूज़ीलैंडवासी होने के बावजूद, अर्नोल्ड जॉर्ज क्रिस्टेंसन अपने पूर्वजों की जन्मभूमि डेनमार्क और अपने पिता द्वारा अपनाए गए देश, दोनों की ही देन थे। 18 अप्रैल, 1922 को अर्नोल्ड के जन्म से एक दशक पहले, उनके पिता, एंटोन, डेनमार्क के रैंडर्स में स्थित अपने पारिवारिक घर को छोड़कर दूर न्यूज़ीलैंड में एक नया जीवन शुरू करने चले गए थे। 1920 तक, बड़े क्रिस्टेंसन ने एक युवा विधवा से शादी कर ली थी और दंपति ने हेस्टिंग्स में एक छोटा सा घर खरीदा था। एंटोन को अपनी विरासत पर गर्व था, और युवा अर्नोल्ड और उनकी सौतेली बहन, हेज़ल, अक्सर एंटोन की जन्मभूमि की कहानियाँ सुनते थे, जिन्हें लड़का बड़े चाव से सुनता था।

छोटी उम्र से ही अर्नोल्ड ने तीव्र बुद्धि और सीखने की तीव्र क्षमता का प्रदर्शन किया। स्कूल में उन्हें खेलों से बहुत लगाव था और पढ़ाई में भी वे उत्कृष्ट थे, उन्होंने सभी परीक्षाओं में उत्कृष्ट अंक प्राप्त किए। युवावस्था में अर्नोल्ड ने द्वितीय हेस्टिंग्स स्काउट ट्रूप में भी उच्च सम्मान प्राप्त किया, जिसके लिए उन्होंने 'द टोटेम' नामक एक छोटी पत्रिका का संपादन और प्रकाशन किया। पत्रकारिता में अर्नोल्ड की रुचि को देखते हुए, जब उन्होंने स्नातक होने के बाद हॉक्स बे डेली मेल में नौकरी की, तो क्रिस्टेंसन परिवार को आश्चर्य नहीं हुआ। गोरे रंग के लेकिन हमेशा हंसमुख रहने वाले इस युवक को अपने काम से बेहद प्यार था, और उनकी लगन और हास्यबोध ने धीरे-धीरे उन्हें स्थानीय प्रेस जगत में सम्मान दिलाया। उन्होंने जोन रिवर्स नाम की एक सुंदर और हंसमुख युवती के साथ समय बिताना शुरू किया, और इस जोड़े को जानने वाले कई लोग यह सोचने लगे कि वे कब सगाई करेंगे। हालांकि, शुभचिंतकों को इंतजार करना पड़ा, क्योंकि 19 जून, 1940 को अर्नोल्ड क्रिस्टेंसन ने आरएनजेडएएफ में सेवा के लिए आवेदन किया। उन्होंने अभी-अभी अपना अठारहवां जन्मदिन मनाया था।

14 जून, 1941 को अर्नोल्ड को प्रारंभिक प्रशिक्षण के लिए बुलाया गया। उन्होंने उत्कृष्ट

प्रदर्शन के साथ पाठ्यक्रम पूरा किया और उन्हें न्यू प्लायमाउथ में तैनात किया गया, जहाँ टाइगर मॉथ विमानों पर उड़ान प्रशिक्षण शुरू हुआ। 20 अक्टूबर को अर्नोल्ड आगे के प्रशिक्षण के लिए कनाडा रवाना हो गए। क्रिस्टेंसन और जोन (जिनकी कुछ समय पहले ही अर्नोल्ड से निजी सगाई हो गई थी) उस नौजवान को जाते देखकर दुखी थे, पाँच फुट छह इंच का उनका कद एयरमैन की वर्दी में बहुत आकर्षक लग रहा था, लेकिन अर्नोल्ड गर्व और उत्साह के साथ अपनी सेवा के लिए तत्पर थे, और घर लौटने के दिन के बारे में आत्मविश्वास से बात कर रहे थे। वह अभी केवल उन्नीस वर्ष के थे, और यह उनका पहला बड़ा साहसिक कार्य होने वाला था।

जहाज से अर्नोल्ड के पत्रों से पता चलता है कि वे इस शानदार क्रूज यात्रा को लेकर कितने उत्साहित थे। खाना लाजवाब था, रहने की व्यवस्था शानदार थी और जहाज पर दिखाई जाने वाली फिल्में नवीनतम थीं। तट पर छुट्टी का समय और भी रोमांचक था। वहां के विदेशी लोग अनोखे स्मृति चिन्ह बेच रहे थे और होनोलूलू में न्यूजीलैंडवासियों को हुला नृत्य का प्रदर्शन और हॉट डॉग, शीतल पेय और ताजे फलों की पिकनिक का आनंद मिला। जब जहाज लॉस एंजिल्स पहुंचा, तो वार्नर ब्रदर्स स्टूडियो ने अर्नोल्ड और अन्य लोगों का स्वागत किया। स्टूडियो ने मुफ्त आइसक्रीम और सिगरेट दीं, अपनी नई अभिनेत्रियों को दिखाया और यहां तक कि पायलटों को कैमरे चलाने का मौका भी दिया। हालांकि, यह वीआईपी सुविधा ज्यादा देर तक नहीं चली और वे जल्द ही सैन फ्रांसिस्को जाने वाले दूसरे जहाज पर सवार हो गए, जहां से उन्होंने ट्रेन से कनाडा के लिए प्रस्थान किया। दो रात बाद, वे वैंकूवर पहुंचे और उन्हें तुरंत सस्केचेवान के सास्काटून में स्थित 4 सर्विस फ्लाइंग ट्रेनिंग स्कूल (एसएफटीएस) भेज दिया गया।

नवंबर का महीना कनाडाई मैदानों तक पहुँचने के लिए निराशाजनक होता है; दिन सुस्त और ठंडे होते हैं, और रातें लंबी और उससे भी ज़्यादा ठंडी होती हैं। हालाँकि, अर्नोल्ड का उत्साह कम नहीं हुआ, क्योंकि यह सब उसके लिए नया था। उसे लगातार दिखाई जाने वाली फ़िल्में, वाईएमसीए में तीरंदाजी और शनिवार रात को आइस स्केटिंग का आनंद मिला। खाना थोड़ा कमज़ोर था, लेकिन कनाडाई आतिथ्य सत्कार ने इसकी भरपाई कर दी। एक दयालु पुलिसकर्मी ने अर्नोल्ड को क्रिसमस के रात्रिभोज पर आमंत्रित किया और वह कुछ समय के लिए ही सही, पारिवारिक माहौल में लौटकर खुश था। उड़ान प्रशिक्षण कठिन था, लेकिन उस नौजवान को यह सब बहुत पसंद आया। उसने प्रिंस अल्बर्ट और मूस जॉ की उड़ान भरी और पक्की सड़कों और अनाज गोदामों की संख्या से कस्बों के आकार का अंदाज़ा लगाना सीखा। उस युवा न्यूज़ीलैंडवासी ने अच्छा प्रदर्शन किया, और जब जनवरी 1942 में परीक्षा परिणाम आए, तो अर्नोल्ड अपने वर्ग में शीर्ष पर रहा। घर भेजे गए उसके पत्रों में बढ़ती परिपक्वता के संकेत दिखने लगे। वह लंबी क्रॉस-कंट्री उड़ानों और उन विमानों के बारे में ज़्यादा लिखने लगा जिन पर उसने प्रशिक्षण लिया था, और सामाजिक जीवन और भोजन के बारे में कम। उनकी युवावस्था का जोश बरकरार रहा, लेकिन अब उनमें अधिक संयम और गंभीरता आ गई थी। अंततः, 27 फरवरी 1942 को अर्नोल्ड को स्नातक की उपाधि और कमीशन प्राप्त हुआ। उनकी आयु अभी बीस वर्ष भी नहीं हुई थी।

मार्च की शुरुआत में, क्रिस्टेंसन इंग्लैंड के लिए रवाना हुए। देश का पहला अनुभव उन्हें बेहद आकर्षक लगा; और अधिक अवकाश लेकर उन्होंने लंदन के दर्शनीय स्थलों और थिएटरों, लेक डिस्ट्रिक्ट के साइकिल मार्गों और दक्षिणी काउंटी के गिरजाघरों का भ्रमण किया। अपेक्षाकृत युवा देशों में अपना पूरा जीवन बिताने के कारण वे अपने आसपास के ऐतिहासिक परिवेश से बेहद प्रभावित हुए। बॉर्नमाउथ में ही क्रिस्टेंसन को अपने पिता के निधन की सूचना मिली। उनकी पहली चिंता अपनी माता की भलाई थी, और अर्नोल्ड हेस्टिंग्स में स्थिति के बारे में खबर का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। हैरोगेट में बसने से उन्हें सुखद बदलाव मिला और व्याख्यानों के बीच, उन्हें यॉर्कशायर के महान स्थलों, जैसे रिपन कैथेड्रल और यॉर्क मिनस्टर में सुकून मिला। टेनिस, नौका विहार और स्थानीय एस्टेट में आयोजित गार्डन पार्टियों ने भी उनकी चिंता को कम करने में मदद की।

2 जून, 1942 को, लंबे समय से प्रतीक्षित एकल-इंजन प्रशिक्षण केंद्र में तैनाती का समय आ गया, और जल्द ही अर्नोल्ड को हार्वर्ड एकल-इंजन प्रशिक्षक विमानों और मस्टैंग लड़ाकू विमानों के प्रशिक्षण के लिए विल्टशायर के ओल्ड सारम स्थित 41 ओटीयू में तैनात कर दिया गया। जैसे-जैसे युद्ध में भाग लेने की संभावना बढ़ती गई, क्रिस्टेंसन ने अपने प्रशिक्षण में खुद को पूरी तरह झोंक दिया। उन्हें नौवहन अभ्यासों में आनंद आया, जो कनाडा की तुलना में इंग्लैंड में अधिक चुनौतीपूर्ण साबित हुए, और उन्होंने फोटो टोही में अतिरिक्त प्रशिक्षण लिया। अंततः, 13 अगस्त को, इस कीवी सैनिक को सरे के गैटविक स्थित 26 स्क्वाड्रन में परिचालन तैनाती मिल गई। वह इस इकाई में तैनात होने वाले पहले डोमिनियन अधिकारी थे, और अंततः एक परिचालन स्क्वाड्रन में पहुँचकर वे बेहद खुश थे।

19 अगस्त को स्क्वाड्रन को डाइपे के समुद्र तटों पर टोही मिशन पर भेजा गया। आम तौर पर एक नए पायलट को ऑपरेशन पर भेजने से पहले कुछ दिन आराम करने का समय दिया जाता है, लेकिन उस दिन अधिकतम हवाई हमले की आवश्यकता थी, और क्रिस्टेंसन को युद्ध में भेजा गया। उन्होंने और एक अन्य पायलट ने दिन का आखिरी मिशन पूरा किया और युद्ध क्षेत्र के संक्षिप्त बीस मिनट के दौरे के दौरान, दोनों विमानों पर जर्मन छोटे हथियारों से गोलीबारी हुई। अर्नोल्ड के साथी पायलट को सबसे ज्यादा नुकसान हुआ और वह तट से कुछ मील दूर पानी में गिर गया, जिससे न्यूजीलैंड के अर्नोल्ड को अपने क्षतिग्रस्त मस्टैंग विमान को अकेले ही संभालना पड़ा। इंग्लिश चैनल के आधे रास्ते में, लड़खड़ाता इंजन आखिरकार बंद हो गया और अर्नोल्ड को विमान को पानी में उतारने के लिए मजबूर होना पड़ा, एक मुश्किल पैंतरेबाज़ी जिसे उन्होंने बड़ी कुशलता से अंजाम दिया। गुस्से में, लेकिन बिना किसी चोट के, उन्होंने खुद को छोटी नाव में खींचा और सहायता की प्रतीक्षा में बैठ गए। हिटलर के जर्मनी के खिलाफ उनका हवाई युद्ध तीस मिनट से थोड़ा अधिक समय तक चला। लगभग दो दिन और दो रात बीतने के बाद, छोटी नाव बहकर फ्रांसीसी तट पर पहुँची, जहाँ अर्नोल्ड को जर्मन सैनिकों ने पकड़ लिया। पेरिस की एक जेल में कुछ दिन बिताने के बाद, उन्हें ड्युलैग लुफ्ट और फिर स्टालैग लुफ्ट III में भेज दिया गया। उनके अपने शब्दों में, यह युद्ध के शेष समय के लिए उनका 'स्थायी पता' था।

सागन पहुँचने के तुरंत बाद, अर्नोल्ड ने डेनमार्क में अपने रिश्तेदारों से दोबारा संपर्क स्थापित किया और धीरे-धीरे उसे अपने पिता के वतन से पार्सल मिलने लगे। डेनमार्क के जीवन के बारे में जानकारी जुटाने के लिए किताबों और चिट्ठियों की सावधानीपूर्वक छानबीन की गई, और हर पार्सल से कुछ खाने-पीने की चीज़ें बचाकर भागने वाले संगठन के भंडार में जोड़ दी गईं। डेनिश क्रैकर्स का एक पैकेट शायद भविष्य में किसी पुलिस अधिकारी को यह यकीन दिलाने के लिए काफी हो कि जिस भगोड़े से वह पूछताछ कर रहा है, वह वास्तव में वही डेनिश नागरिक है जो होने का दावा कर रहा है।

*

डिएप्पे के ऊपर दुर्घटना में मारे गए लोगों में पेर बर्ग्सलैंड भी थे, जो नॉर्वे के रहने वाले थे और ओस्लो में अपने परिवार की सुरक्षा के लिए पीटर रॉकलैंड के नाम से काम करते थे। पेर ने नाविक के रूप में अपना करियर शुरू किया था, लेकिन समुद्री बीमारी से ग्रस्त होने का पता चलने पर उन्होंने यह काम छोड़ दिया। वे वापस स्कूल गए, पहले नॉर्वे में और फिर जर्मनी के एक वाणिज्यिक अकादमी में। 1938 में जर्मनी में रहते हुए उन्होंने अपनी आँखों से यहूदी पूजा स्थलों को जलते देखा और यहूदियों पर हो रहे अत्याचारों का विरोध किया, लेकिन अपनी मुखरता के कारण उन्हें स्कूल से निकाल दिया गया। अपने माता-पिता को निष्कासन के बारे में बताने के बजाय, उन्होंने ओस्लो लौटने और बसने से पहले एक खेल की दुकान में नौकरी कर ली।

9 अप्रैल, 1940 को जब जर्मनों ने नॉर्वे पर आक्रमण किया, तो पेर ने तुरंत शिपिंग कार्यालय में अपनी नौकरी छोड़ दी और सेना में भर्ती हो गए। लेकिन यह अभियान केवल छह

सप्ताह तक चला, और इस संक्षिप्त संघर्ष के अंत में पेर को बेकार की स्थिति का सामना करना पड़ा। 1940 के अंत तक उन्होंने फिर से सक्रिय होने की योजना बनाई और छह अन्य लोगों के साथ एक छोटी नाव में शेटलैंड द्वीप समूह भाग गए। उन्होंने स्कॉटलैंड के डम्फ्रीज़ में नॉर्वेजियन सेना में भर्ती हुए, लेकिन निष्क्रियता से निराश होकर उन्होंने वायु सेना में स्थानांतरण के लिए आवेदन किया। प्रशिक्षण के लिए, पेर कनाडा के टोरंटो में स्थित लिटिल नॉर्वे गए, जो नॉर्वेजियन वायुसैनिकों का स्वागत केंद्र था, और वहाँ से सस्केचेवान के मूस जॉ स्थित फ्लाइंग स्कूल गए। लिटिल नॉर्वे में अमेरिकी निर्मित लड़ाकू विमानों पर एक संक्षिप्त प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के बाद, बर्ग्सलैंड स्पिटफायर विमानों पर प्रशिक्षण लेने के लिए इंग्लैंड लौट आए और अंततः उन्हें उत्तरी इंग्लैंड में स्थित 332 स्क्वाड्रन में तैनात किया गया।

एक महीने के भीतर ही यह यूनिट फ्रांसीसी तट के विरुद्ध अभियानों में भाग लेने के लिए दक्षिण की ओर बढ़ गई। 19 अगस्त, 1942 को बर्ग्सलैंड एक अन्य पायलट के साथ डाइपे के लिए रवाना हुए, लेकिन समुद्र तटों पर हुई झड़प में उनका साथी पायलट उनसे बिछड़ गया। पेर खुद को एक बादल के चारों ओर एक FW 190 का पीछा करते हुए पाए और कुछ चक्कर लगाने के बाद, उन्होंने अपने स्पिटफायर को घुमाकर 190 से आमने-सामने की टक्कर लेने का फैसला किया। दोनों विमान, पूरी ताकत से गोलियां बरसाते हुए, एक-दूसरे से कुछ ही गज की दूरी से गुजरे, लेकिन स्पिटफायर को भारी नुकसान हुआ। विंडशील्ड पर तेल छलक गया और बर्ग्सलैंड को एहसास हुआ कि विमान को छोड़ना ही उनकी एकमात्र उम्मीद है। स्पिटफायर को उल्टा करके, उन्होंने शांति से छलांग लगाई और रिपकॉर्ड खींच दिया। पेर ने अपने उतरने का भरपूर आनंद लिया और जल्द ही उन्हें एक जर्मन जहाज ने बचा लिया। उनकी ओर ताने हुए दो स्वचालित हथियारों के बीच, पेर रेलिंग तक सीढ़ी चढ़े, अपनी पिस्तौल को इंग्लिश चैनल में गिराने के लिए कुछ देर रुके, और उन्हें कप्तान के साथ उनके केबिन में जाने का आदेश दिया गया।

“बैठ जाओ,” कप्तान ने गरजते हुए कहा, उसकी कठोर निगाहें उस बदहाल सिपाही को घूर रही थीं। फिर उसी लहजे में उसने पूछा, “क्या चाहिए, कॉन्यैक या लिकर?”

कप्तान के चेहरे पर खिलखिलाहट देखकर पेर हँस पड़ा। भीगे हुए नॉर्वेजियन के लिए नाविक की वर्दी मंगवाई गई और दोनों के बीच लंबी बातचीत शुरू हुई, जो मित्र देशों के विमानों द्वारा जहाज पर हमले के कारण ही रुकी। जब जहाज तट पर पहुँचा, तो पेर को सेंट ओमर में एक अस्थायी पिंजरे में रखा गया, जहाँ उसकी मुलाकात अर्नोल्ड क्रिस्टेंसन से हुई। वर्साय में एक सप्ताह तक साधारण से आवास में रहने के बाद, उसे डुलैग लुफ्ट भेज दिया गया। उसके पूछताछकर्ता उसका स्क्वाड्रन नंबर जानने के लिए उत्सुक थे, जो दर्ज नहीं किया गया था क्योंकि किसी ने भी उसके विमान को दुर्घटनाग्रस्त होते नहीं देखा था। दो सप्ताह तक तरह-तरह के समझाने-बुझाने के बाद, एक जर्मन अधिकारी पेर के बिस्तर पर बैठ गया और दयालुतापूर्वक उसके स्क्वाड्रन नंबर के बदले उसके परिवार को संदेश पहुँचाने की पेशकश की। नॉर्वे में अपने परिवार को अपनी झूठी पहचान से सुरक्षित रखते हुए, पेर ने अधिकारी को खाली निगाहों से देखा और झूठ बोला कि उसके माता-पिता लंदन पर हुए हवाई हमले में मारे गए थे। देखते ही देखते, वह डुलैग लुफ्ट से निकलकर सागन के लिए रवाना हो गया।

पेर बर्गस्लैंड और अर्नोल्ड क्रिस्टेंसन जिस स्टालैग लुफ्ट III में आए थे, वह एक समुदाय के रूप में काफी सुचारू रूप से चल रहा था। वहाँ शौकिया रंगमंच था, जिसमें 'द डोवर रोड' पर आधारित एक नाटक का मंचन चल रहा था, और कई तरह के खेल उपलब्ध थे। पुस्तकालय में किताबों का अच्छा संग्रह बन रहा था, इसलिए पढ़ने की सामग्री की कमी शायद ही कभी होती थी। हालाँकि, कुछ लोग पुस्तकालय को दूसरों की तुलना में अधिक गंभीरता से लेते थे। एक दिन, डेस प्लंकेट रूसी व्याकरण का अध्ययन कर रहे थे, तभी उनकी नज़र पुस्तकालय में तैरते हुए कागज़ के दर्जनों छोटे-छोटे टुकड़ों पर पड़ी। उत्सुकता से उन्होंने उन्हें अपने सिर के चारों ओर उड़ते हुए देखा और अंत में, एक टुकड़ा उनके सामने मेज पर गिर गया। ध्यान से देखने पर उन्हें

पता चला कि कागज़ एक धागे से मक्खी के पिछले पैरों से बंधा हुआ था। कागज़ को पलटकर देखने पर उन्होंने पाया कि किसी ने उस पर 'जर्मनी बर्बाद!' लिखा था।

डेस ने कमरे में चारों ओर देखा और पाया कि एक फ्लाइट लेफ्टिनेंट कुर्सी पर खड़ा होकर खिड़की पर मक्खियाँ पकड़ रहा है। उसने सावधानीपूर्वक प्रत्येक मक्खी से एक ड्रोग (कीड़ा) बाँधा और उन्हें शिविर में संदेश पहुँचाने के लिए छोड़ दिया, इस उम्मीद में कि उनमें से कोई एक पीबर या रबरनेक पर बैठ जाएगी। जैसे ही हवा कागज के छोटे-छोटे टुकड़ों से भरनी शुरू हुई, एक वरिष्ठ सहयोगी अधिकारी अंदर आया और संदेशों की इस बौछार को देखकर उस व्यक्ति को कीड़ों के प्रति क्रूरता दिखाने के लिए फटकार लगाई।

'बिल्कुल नहीं, महोदय,' तुरंत जवाब आया। 'आखिरकार, वे हूण मक्खियाँ हैं!'

*

नए आने वालों को यह शिविर सिलेसियाई जंगलों में बसी एक अपेक्षाकृत सभ्य बस्ती जैसा लगा। हालांकि, सागन की यात्रा के दौरान उन्होंने इससे कहीं बेहतर की उम्मीद की थी। इसलिए शिविर में शुरुआती कुछ दिन उनके लिए एक चौंकाने वाला अनुभव साबित हुए। सभी लोग काफी मिलनसार थे, लेकिन जर्मन जासूसी सामग्री के खतरे के कारण वरिष्ठ अधिकारियों ने नए आने वालों के साथ तब तक सावधानी बरतने को कहा जब तक शिविर में कोई उनकी पहचान की पुष्टि न कर दे। इसके बाद स्वागत का पूरा तरीका बदल गया। नए आने वाले को दावत दी गई और उनसे घर के बारे में सब कुछ बताने को कहा गया: नए नाटक और फिल्में, खेलों के नवीनतम परिणाम और यहां तक कि कॉमिक स्ट्रिप की नायिका जेन के कारनामे भी। इस पल से, नया व्यक्ति शिविर समाज का एक पूर्ण सदस्य बन गया।

स्ट्रीथम के फ्लाइट लेफ्टिनेंट हेरोल्ड जॉन मिलफोर्ड अक्टूबर 1942 में सागन पहुंचे। 22 सितंबर, 1942 को चोक्स पावर स्टेशन पर हमले के दौरान उनका बोस्टन मीडियम बॉम्बर विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। चालक दल के सदस्य पैराशूट से कूद गए, अपने पैराशूट जमीन में गाड़ दिए और अलग-अलग हो गए। नेविगेटर मिलफोर्ड और रेडियो ऑपरेटर-एयर गनर एक तरफ गए, जबकि पायलट दूसरी तरफ। बाद में पता चला कि पायलट ने सही फैसला लिया था। वह पकड़े जाने से बच गया और आखिरकार इंग्लैंड लौट आया, जबकि मिलफोर्ड और गनर को एक गुप्त जगह से निकालकर कैद कर लिया गया। अब मिलफोर्ड स्टालैग लुफ्ट III के गेट के ठीक अंदर खड़े थे, यह सोच रहे थे कि आगे क्या होगा। अपना कमरा मिलने के बाद, मिलफोर्ड परिसर पार करने ही वाले थे कि तभी एक आवाज ने उन्हें पुकारा। यह आवाज घने काले बालों और मूंछों वाले एक दुबले-पतले अधिकारी की थी, जो उन्हें कुछ जाना-पहचाना सा लग रहा था।

'हैरोल्ड मिलफोर्ड, है ना?' उसने खुशी से पूछा। 'शायद आपको मैं याद न रहूँ – फ्लाइट लेफ्टिनेंट जॉन फ्रांसिस विलियम्स। मैंने जनवरी में लगभग एक महीना आपकी स्क्वाड्रन के साथ बिताया था, जब मैं 13 OTU से अभी-अभी निकला था।'

बात समझ में आ गई। 'बेशक - आपको फिर से देखकर अच्छा लगा। मुझे उम्मीद थी कि कोई जाना-पहचाना चेहरा देखने को मिलेगा,' मिलफोर्ड ने ईमानदारी से कहा।

विलियम्स हंस पड़ीं। 'हां, हम सभी को पहले ऐसा ही लगता है! तो आप यहां क्यों आए हैं?'

हैरोल्ड ने अपनी पिछली यात्रा की कहानी सुनाई और फिर विलियम्स की दुर्भाग्यपूर्ण घटना के बारे में पूछा। विलियम्स 27 अप्रैल, 1942 को लिले-सेक्वेडिन पावर स्टेशन के ऊपर 190 मिसाइलों की चपेट में आकर घायल हो गए थे। बोस्टन विमान पर पर्यवेक्षक के रूप में तैनात विलियम्स का यह केवल दूसरा ऑपरेशन था। बातचीत के दौरान उन्हें पता चला कि उनमें कई समानताएं हैं। मिलफोर्ड की तरह, विलियम्स भी लंदन के निवासी थे, जिनका जन्म वैंड्सवर्थ में हुआ था और वे दक्षिण लंदन के उपनगर इवेल में रहते थे। वे अपने माता-पिता की इकलौती संतान थे और सेना में भर्ती होने से पहले एक इंजीनियरिंग फर्म में काम करते थे।

‘खैर, बहुत बातें हो गईं – इसके लिए हमारे पास बहुत समय होगा!’ विलियम्स ने मज़ाक में कहा। ‘चलिए, देखते हैं आपको यहाँ कैसे बसाया जाए। आपकी झोपड़ी उधर है, जिसकी पहली खिड़की से पैंट लटकी हुई है। बस अंदर चले जाइए – मुझे यकीन है कि लड़के आपको घर जैसा महसूस कराएँगे। मैं थोड़ी देर में आकर देख लेता हूँ कि आप कैसे हैं।’ हाथ हिलाकर जॉन विलियम्स वहाँ से चले गए, और हैरोल्ड को अपने नए रूममेट्स से मिलने के लिए छोड़ दिया।

कमरे में प्रवेश करते ही मिलफोर्ड का नजारा बेहद अफरा-तफरी भरा था। चूल्हे पर रखे बर्तन से भाप के बादल उठ रहे थे और एक छोटा, मोटा कैदी उसमें उबलते हुए मिश्रण को हिला रहा था। एक कोने में, दाढ़ी वाले दो कैदी गुलाब की खेती में विभिन्न उर्वरक तकनीकों की वैधता पर गरमागरम बहस कर रहे थे। दूसरे कोने में, एक बेखबर स्क्वाड्रन लीडर घर में बने झूले की मरम्मत कर रहा था और कारमेन की धुनें गुनगुना रहा था, जबकि ऊपर से एक दुबले-पतले कनाडाई के हाथों में बाइसन की खुरदरी नक्काशी से लकड़ी के बुरादे की बौछार हो रही थी। किसी ने भी नए आए कैदी पर कोई खास ध्यान नहीं दिया, और मिलफोर्ड कमरे के अंत में एक खाली चारपाई की ओर चल पड़ा। चूल्हे के चारों ओर फैले भाप के बादल से निकलते ही उसने एक और कैदी को मेज पर बैठे हुए देखा, जो एक स्केच पैड पर झुका हुआ था। वह लंबा और पतला था, और घने, काले बालों की एक लट उसके माथे पर गिर रही थी क्योंकि वह अपनी ड्राइंग पर ध्यान केंद्रित कर रहा था। वह इतना बेमेल लग रहा था कि हैरोल्ड रुक गया और उसे देखने लगा। कुछ देर बाद युवक ने ऊपर देखा।

“शुभ दोपहर!” उसने हंसमुख स्वर में कहा, “पागलखाने की कोठरियों में आपका स्वागत है! मैं हेटर हूँ – टोनी हेटर। बैठ जाइए, अगर आपको लगता है कि आप यहाँ रह सकते हैं। चिंता मत कीजिए – हमेशा ऐसा नहीं रहता – कभी-कभी तो और भी बुरा होता है!” उसके चेहरे पर एक चौड़ी मुस्कान खिल उठी और दोनों बातें करने लगे। तभी नए आए व्यक्ति की नज़र टोनी के बनाए चित्र पर पड़ी। यह उड़ते हुए वेलिंगटन विमान का एक शानदार और बारीकी से बनाया गया रेखाचित्र था।

‘आपका जहाज?’ मिलफोर्ड ने पूछा।

टोनी ने सिर हिलाया। 'हालांकि जब मैंने उसे छोड़ा था तब वह ऐसी नहीं दिखती थी। सच कहूँ तो मुझे ठीक से याद नहीं कि तब वह कैसी दिखती थी। हम सिसिली के ऊपर लगभग दो हज़ार फीट की ऊंचाई पर थे जब एंटी-एयरक्राफ्ट गोले बरसने लगे। बम बे में एक गोला लगा होगा, क्योंकि उसके बाद मुझे बस इतना याद है कि मैं हवा में तैर रहा था और चारों तरफ विमान के टुकड़े बिखरे हुए थे। अगर यह सब अचानक न हुआ होता तो शायद यह काफी हास्यास्पद होता। मेरे क्रू को पैराशूट खोलने का भी समय नहीं मिला। मुझे लगता है पायलट होना फ़ायदेमंद होता है - मेरा पैराशूट पहले से ही लगा हुआ था और हम दोनों एक साथ बाहर गिर गए। सब कुछ बहुत धीरे-धीरे गिर रहा था और कोई आवाज़ नहीं थी। मुझे नहीं पता कि मुझे कब एहसास हुआ कि क्या हो रहा है और मैंने पैराशूट की रस्सी खींची। काफी समय लगा होगा, क्योंकि मैं जितना चाहता था उससे थोड़ा ज़्यादा ज़ोर से नीचे गिरा।'

हैरोल्ड ने देखा कि टोनी के चेहरे पर उदासी छा गई थी। उसने झट से कहा, 'तुमने बहुत बढ़िया स्केच बनाया है। क्या तुम प्रशिक्षण से कलाकार हो या स्वभाव से?'

“खैर, मैं इसका पूरा श्रेय खुद नहीं ले सकता,” उसने खुशी से कहा, “क्योंकि यह शायद आनुवंशिक है। मेरे परदादा ने महारानी विक्टोरिया के दरबार में चित्रकार के रूप में काम किया था, और उनके भाई, मेरे दादाजी ने उस समय की कई प्रतिष्ठित महिलाओं और कुलीन लोगों के चित्र बनाए थे। हमारे परिवार में कई तरह के वास्तुकार और चित्रकार छिपे हुए हैं। मुझे लगता है कि मैं बस अपने परिवार की इस प्रतिभा का उपयोग कर रहा हूँ!” टोनी बातचीत के दौरान यूँ ही पेंसिल चला रहा था, और अचानक उसने चित्र उठाया, अपने पलंग के बगल वाली दीवार की ओर बढ़ा, और उसे एक खाली जगह पर टांग दिया। वह पीछे हट गया, एक पल के लिए ध्यान से देखा और फिर मुस्कुराया। उसने कुछ नहीं कहा, बस संतुष्टि भरी एक हल्की सी आवाज़ निकाली

और फिर उस मेज पर लौट आया जहाँ हेरोल्ड बैठा था।

'रंग चढ़ाने के बाद ये काफी अच्छा लगेगा। हाँ...' वो सोच में डूबा रुका। 'अच्छा, मुझे अब जल्दी जाना होगा – कुछ ही मिनटों में मेरा फुटबॉल मैच है। आपके साथ होने से खुशी हुई – इस कमरे को थोड़ा और जीवंत बनाने की ज़रूरत है!' हेरोल्ड ने ऊपर देखा तो हेटर के चेहरे पर वही चौड़ी मुस्कान थी, और हेटर खिलखिलाकर हंस पड़ा। इतना कहकर टोनी अपने दुबले-पतले शरीर को भीड़ के बीच से निकालते हुए गलियारे में गायब हो गया। हेरोल्ड मिलफोर्ड को अपना नया रूममेट तुरंत पसंद आ गया, और जैसे-जैसे वो उसके बारे में और जानने लगा, उसके प्रति उसका सम्मान बढ़ता गया।

एंथनी रॉस हेंजेल हेयटर का जन्म 20 मई, 1920 को हैम्पशायर के फ़ार्नबोरो में हुआ था। जब वे केवल दो वर्ष के थे, तब उनके पिता सेवानिवृत्त हो गए और परिवार बर्कशायर के एक बड़े पादरी निवास और छोटे से फार्महाउस, बर्गक्लेयर ग्रेंज में रहने चला गया। टोनी और उनके भाई-बहन अपने पिता द्वारा प्रदान किए गए खेल-कूद के माहौल में पले-बढ़े। उनके पिता एक उत्साही और कुशल घुड़सवार और नौकाचालक थे, और बच्चों ने भी उन्हीं के नक्शेकदम पर चलना शुरू किया। टोनी को गोल्फ, टेनिस, तैराकी और नौका विहार में बहुत रुचि थी और अंततः वे एक असाधारण स्क्वैश खिलाड़ी बन गए। कई लड़कों की तरह, उन्हें स्पोर्ट्स कारों का शौक था और वे निश्चित रूप से पार्टियों का आनंद लेते थे। हालांकि, टोनी का एक संवेदनशील पक्ष भी था, जिसे केवल उनके करीबी ही देख पाते थे। उन्हें प्रकृति से गहरा प्रेम था और वे बर्गक्लेयर ग्रेंज के आसपास के खेतों और झाड़ियों में वनस्पतियों और जीव-जंतुओं को निहारते हुए काफी समय बिताते थे। जैसे-जैसे वे परिपक्व होते गए, उनका कलात्मक पक्ष और साथ ही उनका रोमांटिक स्वभाव भी अधिक स्पष्ट होता गया। वह अपने आसपास की प्रकृति की सुंदरता से भलीभांति परिचित थे, और उनके बाद के पत्रों से इस बात की पुष्टि होती है कि उन्होंने अपने परिवेश के प्रति वह सराहना कभी नहीं खोई।

1929 में टोनी ने अपने सौतेले भाई के छोटे से बाइप्लेन में अपनी पहली उड़ान भरी। छोटा सा विमान पादरी के घर के पास एक खेत में उछलता-कूदता हुआ आया और घर के चक्कर लगाते हुए, टोनी ने ज़मीन पर खड़े अपने भाई-बहनों को उत्साह से हाथ हिलाया। यह एक ऐसे जुनून की शुरुआत थी जो उनके बड़े होने के साथ-साथ बढ़ता गया। टोनी ने 1933 में मार्लबोरो कॉलेज में दाखिला लिया और उसी समय पड़ोसी परिवार की बेटी सिंथिया हेनस्टॉक से उनकी दोस्ती हो गई। टोनी के स्कूल में रहने के दौरान वे एक-दूसरे के संपर्क में रहे और हल्के-फुल्के पत्रों में ग्रामीण इलाकों की सैर, शैम्पेन पार्टियों और नदी में नौका विहार के किस्से सुनाते रहे। टोनी में हास्य की अद्भुत भावना थी और वे हमेशा चीजों का मजाकिया पहलू देख लेते थे, चाहे वह परीक्षा का तनाव हो या नदी पर आक्रामक हंसों से बचने की जद्दोजहद। उनके पत्र जितने प्यारे हैं उतने ही मासूम भी हैं और एक संवेदनशील आत्मा को दर्शाते हैं जो आने वाले संकटों से पूरी तरह बेखबर है।

हेटर ने 1938 में मार्लबोरो से स्नातक की उपाधि प्राप्त की और उड़ान के प्रति अपने जुनून के चलते, आरएएफ में अल्पकालिक कमीशन स्वीकार कर लिया और मार्च 1939 में उड़ान प्रशिक्षण शुरू किया। वे एक उत्साही पायलट और शीघ्र सीखने वाले थे और शांति काल में आरएएफ में एक लंबे और सफल करियर की आशा रखते थे, जहाँ उन्हें अच्छे साथियों का साथ और दूर-दराज के वायु सेना स्टेशनों के बीच यात्रा करना अच्छा लगता था। 1939 की उस सुहावनी गर्मी में, जब सिंथिया के साथ उनका प्रेम और भी गहरा होता जा रहा था, तब उस लंबे, भयावह और खूनी युद्ध की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।

टोनी का तबादला हुलाविंगटन स्थित एडवांस्ड ट्रेनिंग स्क्वाड्रन में हो गया और युद्ध शुरू होने के बाद, उन्होंने ब्लेंहेम विमानों में प्रशिक्षण लेना शुरू किया। अपने बम-निशानेबाज/नेविगेटर सार्जेंट मिजली के साथ एक शीतकालीन गहन प्रशिक्षण के बाद, पायलट ऑफिसर हेयटर को 13 अप्रैल, 1940 को उत्तरी फ्रांस के मोंटडिडियर स्थित 57 स्क्वाड्रन में तैनात किया गया।

यूनिट का तबादला अक्सर होता रहता था, लेकिन टोनी को कोई शिकायत नहीं थी। उन्हें अपने सभी ठिकाने बहुत पसंद थे, खासकर एक ऐसे रूखे स्वभाव वाले बूढ़े किसान के साथ, जो अंग्रेजी नहीं बोलता था। टोनी ने लिखा, 'जब भी वह हमें देखता, वह हमें बैठक में जाने के लिए कहता, जहाँ उसकी पत्नी और बेटी बैठी होती हैं। जैसे ही हम अंदर आते हैं, वे उठ जाती हैं, इधर-उधर भागती हैं और अंत में हमारे लिए कॉफी, कॉन्यैक, बिस्कुट और सिगरेट लाती हैं। वह बूढ़ा आदमी अपने नक्शे निकालता है और हमें पिछले युद्ध के बारे में समझाना शुरू कर देता है, और अंत में अपनी जीवन कहानी सुनाने लगता है!'

10 मई को, हेटर और मिजली ने अपना पहला ऑपरेशन किया, जो जर्मन-डच सीमा का फोटो-रिकॉनेंस स्वीप था। टोनी एक पुल से उड़ान भर ही रहा था कि सार्जेंट मिजली ने चेतावनी देते हुए चिल्लाया: तीन मेसेरश्मिट विमान उनकी ओर बढ़ रहे थे, जिससे टोनी को ब्लेंहेम को स्पाइरल डाइव में उतारना पड़ा। जैसे-तैसे विमान को ऊपर खींचकर वह डेक पर चीख रहा था कि तभी 'हॉलैंड का इकलौता पेड़', जैसा कि उसने कहा, उनके सामने आ गया। उससे बचने में असमर्थ, ब्लेंहेम पेड़ से टकरा गया, जिससे पेड़ के ऊपरी पाँच फीट हिस्से कट गए, और वह बेरोकटोक आगे बढ़ता रहा। 109 विमान पेड़ के चारों ओर से निकलकर लगातार गोलियाँ बरसाते रहे, लेकिन फिर उन्हें बेस पर वापस लौटना पड़ा। हेटर और मिजली को तब तक पता नहीं चला कि उन पर कितने गोले लगे हैं, जब तक कि वे लैंड नहीं कर गए और ब्लेंहेम में हुए छेदों को नहीं गिना; उनमें 237 गोले थे।

थका-हारा टोनी हेयटर 20 मई को इंग्लैंड लौटा। उसने सिंथिया को लिखा, "पिछले एक हफ्ते से बहुत भागदौड़ भरी जिंदगी गुजारने के बाद मैं पूरी तरह से थक चुका था। पूरे हफ्ते में मुझे सिर्फ पांच घंटे की नींद मिली। अभी तो मैं यहाँ सिर्फ अपने कपड़ों के साथ ही हूँ। हमारा बहुत सारा सामान जल गया है और मुझे नहीं पता मेरा बाकी सामान कहाँ है।" टोनी को आराम करने का ज्यादा समय नहीं मिला, क्योंकि दो दिन बाद ही उसे एक बेहद संवेदनशील मिशन पर भेजा गया। उसे आदेश मिला था कि वह एक मेजर को ब्रिटिश अभियान बल के पीछे हटने वाले क्षेत्र के आखिरी बचे हवाई अड्डे तक पहुँचाए; मेजर द्वारा ले जाए जा रहे संदेश में डनकर्क तक पीछे हटने की योजना थी, जहाँ से लोगों को निकाला जाना था। टोनी ने बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हवाई अड्डे पर ब्लेंहेम को सुरक्षित उतारा और उसे कुछ पेड़ों की आड़ में विमान को ले जाने का निर्देश दिया गया। मेजर को तुरंत वहाँ से ले जाया गया, जिससे टोनी जर्मन बमवर्षकों के हमले के बीच फंस गया, जो ब्लेंहेम के आने से सतर्क हो गए थे। एक उथली खाई में शरण लेकर, उन्होंने धैर्यपूर्वक मेजर के लौटने की प्रतीक्षा की और फिर कुशलतापूर्वक अपने ब्लेंहेम विमान को अच्छी तरह से छेदित हवाई पट्टी पर उड़ाया। मिशन सफल रहा और अपने कौशल और साहस के लिए पायलट ऑफिसर हेटर को प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। उन्होंने सिंथिया को लिखा, 'जब मैंने यह सुना तो मुझसे ज्यादा आश्चर्यचकित कोई नहीं था और जब तक मैंने इसे स्वयं नहीं देखा, तब तक मुझे इस पर विश्वास नहीं हुआ।'

24 जून को टोनी को तटीय कमान में तैनाती के लिए स्कॉटलैंड भेजा गया। वहाँ पहुँचे उन्हें अभी एक महीना ही हुआ था कि एक भयानक हादसा हो गया। अभ्यास उड़ान के लिए उड़ान भरने की तैयारी करते समय, उनके ब्लेंहेम विमान को टैक्सी कर रहे एक वेलिंगटन विमान ने टक्कर मार दी, और सार्जेंट मिजली का हाथ प्रोपेलर से कट गया। चकनाचूर विमान में से किसी तरह रास्ता बनाते हुए, टोनी अपने गंभीर रूप से घायल नेविगेटर तक पहुँचे और किसी तरह खून बहते हुए कटे हुए हाथ पर पट्टी बाँधने में कामयाब रहे, जिससे संभवतः सार्जेंट की जान बच गई। दोनों विमान पूरी तरह नष्ट हो गए, और मिजली का हवाई युद्ध यहीं समाप्त हो गया।

टोनी को एक नया क्रू मेंबर मिला और अगले कुछ महीनों तक उन्होंने उत्तरी सागर के ऊपर प्रशिक्षण मिशन और टोही उड़ानें भरीं। हालांकि कभी-कभार उन्हें किसी जर्मन बमवर्षक या तैरती हुई खदान पर गोलीबारी करने का मौका मिल जाता था, लेकिन ये उड़ानें शांतिपूर्ण रहीं। 1940-41 की सर्दियों में उन्होंने वेलिंगटन विमानों का इस्तेमाल करना सीख लिया और 18

मार्च, 1941 को उन्होंने रॉटरडैम में एक तेल संयंत्र पर अपना पहला वेलिंगटन मिशन पूरा किया। यह उड़ान अपेक्षाकृत शांत रही, लेकिन 27 मार्च को कोलोन पर किया गया हमला कम सफल साबित हुआ। क्रू ने एंटवर्प तक तीव्र सर्चलाइट गतिविधि और भारी एंटी-एयरक्राफ्ट गन का सामना किया, लेकिन उपकरण खराब होने के कारण उन्हें बेस पर वापस लौटना पड़ा। 9 अप्रैल, 1941 को वे अपने वेलिंगटन विमान को साफ आसमान में बर्लिन ले गए; यह टोनी का किसी यूरोपीय लक्ष्य के खिलाफ आखिरी सफल मिशन था।

अप्रैल के अंत में खबर आई कि टोनी को तीन महीने के लिए मध्य पूर्व में तैनात किया जाएगा, और 23 अप्रैल को वह जिब्राल्टर के लिए रवाना हो गए। रनवे पर चल रही मरम्मत के कारण चालक दल को वहाँ पाँच दिन तक रुकना पड़ा, और इस समय ने टोनी को युद्ध की असुविधाओं से मुक्त शहर के सुख-सुविधाओं का आनंद लेने का मौका दिया। उन्होंने सिंथिया को लिखा, 'हम यहाँ जी भर कर संतरे, नींबू आदि खा रहे हैं, और निश्चित रूप से यहाँ न तो मक्खन का राशन है और न ही बिजली कटौती।' हालाँकि, यह आराम थोड़े समय के लिए ही था, और 6 मई को टोनी माल्टा के लिए रवाना हो गए। संकटग्रस्त छोटे से द्वीप पर पहुँचने के तीन दिन बाद, टोनी ने मध्य पूर्व में अपना पहला ऑपरेशन किया, जो त्रिपोली पर एक ध्यान भटकाने वाला हमला था।

12 जुलाई को उनका तबादला मिस्र में 253 विंग कम्युनिकेशन फ्लाइट में हो गया और एक महीने बाद उन्हें सबसे बुरी खबर मिली। सिंथिया को लिखे उनके पत्र से पूरी कहानी पता चलती है: 'मुझे खेद है कि मेरा तबादला यहाँ हो गया है, जिसका मतलब है कि मुझे शायद यहाँ तीन साल रहना पड़ेगा। यह एक तरह का धोखा था क्योंकि जब हम इंग्लैंड से निकले थे तो उन्होंने हमसे कहा था कि हम अपना ज़्यादातर सामान यहीं छोड़ दें, क्योंकि हमें तुरंत वापस लौटना था।' यह उन दोनों के लिए एक गहरा सदमा था, लेकिन उनके पत्रों ने उन्हें लगातार जोड़े रखा। टोनी रेगिस्तान से बहुत प्रभावित थे और उन्होंने तूफानों और भूमध्य सागर में नौकायन के बारे में लिखा। उन्होंने अपनी तस्वीरें भेजीं जिनमें वे ढीली रेगिस्तानी वर्दी में एक झबरा, सांवला व्यक्ति दिख रहे थे, या एक हैरान पायलट के रूप में जो एक बालदार अरब वेटर से बात करने की कोशिश कर रहा था। इन सब के बावजूद, उन्होंने अपना आकर्षक हास्यबोध बनाए रखा और भविष्य की योजनाओं के बारे में खूब बातें कीं।

सितंबर 1941 तक टोनी को संचार उड़ान के कमांडर के पद पर पदोन्नत कर दिया गया था और वे मुख्य रूप से विभिन्न लैंडिंग ग्राउंडों के बीच सैनिकों और पुर्जों के परिवहन में शामिल थे। हालांकि, तीन महीने बाद, वे वेलिंगटन यूनिट के साथ फिर से कार्रवाई में लौटने के लिए उत्सुक थे, और 10 जनवरी, 1942 को उन्हें 148 स्क्वाड्रन में तैनात किया गया। अपने पहले ऑपरेशन के एक हफ्ते बाद ही वे मुसीबत में फंस गए। 8 फरवरी को, काब्रेते स्थित बेस जाते समय, एक इंजन ने काम करना बंद कर दिया और टोनी को विमान को रेगिस्तान में उतारना पड़ा। जैसे ही चालक दल बमवर्षक विमान से बाहर निकला, टोनी ने देखा कि ऊंटों पर सवार अरबों का एक समूह पास आ रहा है। उनकी सहानुभूति के बारे में अनिश्चित होकर, उन्होंने अपनी रिवॉल्वर निकाली और उसे अपनी जुराब में इस तरह छिपा लिया कि उसका बट साफ दिखाई दे। अरब इससे बिल्कुल भी विचलित नहीं हुए और उन्होंने बदले में अंडे देने की पेशकश की, जिसे टोनी ने कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार कर लिया। वास्तव में, यूनिट द्वारा उठाए जाने से पहले चालक दल ने अरबों के साथ सुखद समय बिताया।

फरवरी और मार्च के महीनों में अभियान जारी रहे, मुख्य रूप से बेंघाज़ी के खिलाफ। 18 अप्रैल को टोनी हेयटर की लॉगबुक में काब्रेते से फयूम तक तीन विमान लेने की यात्रा दर्ज है। यह आखिरी प्रविष्टि है। छह दिन बाद, टोनी का वेलिंगटन विमान सिसिली में दुर्घटनाग्रस्त हो गया। वह बाल-बाल बच गए और जर्मनों ने उन्हें तुरंत एक स्थायी शिविर में भेज दिया। मई के पहले सप्ताह तक वह सागन में थे और कैदी के जीवन में ढलने की कोशिश कर रहे थे।

अध्याय 7

योजना तैयार हो चुकी है

कुछ युद्धबंदियों के लिए, सागन में शुरुआती कुछ दिन न केवल अजीब थे, बल्कि बेहद परेशान करने वाले भी थे। रोजर बुशेल ने अपने साथी कैदियों को लंबे समय से यही हिदायत दी थी कि आस-पास होने वाली किसी भी अजीब या असामान्य चीज़ को नज़रअंदाज़ कर दें। जैसा कि उन्होंने कहा था, 'अगर आप मुझे अपने नितंबों से पेड़ का तना निकला हुआ घूमते हुए देखें, तो कोई सवाल मत पूछना क्योंकि इसके पीछे कोई बहुत ही ठोस कारण होगा!' सितंबर 1942 में, एक नए युद्धबंदी को इस सलाह का एक सटीक उदाहरण देखने को मिला।

लेस हार्वे एक ऑस्ट्रेलियाई पायलट अधिकारी थे जिनका हैलिफ़ैक्स विमान अगस्त 1942 में दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। वे डुलैग लुफ़्ट से सागन पहुँचे और ठीक समय पर उन्हें सूप पीने को मिला। हालाँकि उस समय उन्हें पता नहीं था, उनके साथ रहने वाले लोग लुफ़्टवाफ़े के सबसे कुख्यात उपद्रवियों में से थे। लंबी ट्रेन यात्रा से थके हुए लेस मेज़ पर बैठ गए और सूप खाने लगे। जैसे ही उन्होंने चम्मच मुँह तक उठाया, ऊनी अंडरवियर पहने दो लोग अंदर आ गए; दोनों ने अपने-अपने अंडरपैंट का एक पैर सिर पर रखा हुआ था। बिना कुछ कहे, माइक केसी और एक अन्य एयरमैन ने मेज़ को उठाया और एक तरफ़ कर दिया; फिर गाय ग्रिफ़िथ्स और बिल गोल्डफ़िंच ने फ़र्श का एक तख़्ता उखाड़ा जिससे झोपड़ी के नीचे एक अंधेरा गड्ढा दिखाई दिया। दोनों रहस्यमयी आदमी गड्ढे में उतर गए, तख़्ता वापस लगा दिया गया और मेज़ को वापस अपनी जगह पर रख दिया गया। यह सब एक मिनट से भी कम समय में हो गया, और लेस को सूप ठंडा होने से पहले ही वापस खाने को मिल गया।

लेस हार्वे ने खुद देखा कि वह हर तरह की भागने की गतिविधियों से घिरा हुआ था, जबकि अन्य लोगों को गार्डों द्वारा कैदियों के छोटे-छोटे समूहों को जेल में ले जाते हुए देखने या रात में तारबंदी की दिशा से गोलियों की आवाज और चीख-पुकार सुनकर स्थिति समझ में आ गई। कुछ नए लोगों ने नापाक कामों में शामिल होने से पहले कुछ समय इंतजार करने का फैसला किया, जबकि अन्य तुरंत ही लड़ाई में कूद पड़े। फ्लाइट लेफ्टिनेंट ब्रैम (बॉब) वैन डेर स्टॉक इन्हीं में से एक थे।

*

डच इंजीनियर के पुत्र, वैन डेर स्टॉक का जन्म 30 अक्टूबर, 1915 को सुमात्रा के प्लाडजो में हुआ था और उन्होंने अपना अधिकांश बचपन दुनिया भर के रमणीय स्थलों में बिताया। बॉब और उनके तीन भाई-बहन बोर्नियो के बालिकपापन में पले-बढ़े और कुछ साल रॉटरडैम में बिताने के बाद कुराकाओ चले गए। हाई स्कूल की पढ़ाई के लिए लड़कों को वापस हॉलैंड भेज दिया गया, और बॉब बाद में उच्च शिक्षा के लिए स्विट्ज़रलैंड चले गए। उन्होंने 1934 में स्नातक की उपाधि प्राप्त की और लीडेन विश्वविद्यालय के चिकित्सा संकाय में दाखिला लिया। हालांकि, बॉब को लगा कि वे मेडिकल स्कूल में सफल होने के लिए आवश्यक मेहनत के लिए अभी तैयार नहीं हैं; उनकी रुचि खेलों में अधिक थी, और उन्होंने अपना समय हॉकी और नौका विहार में लगाया। देखते ही देखते वे एक साल पीछे हो गए और आगे बढ़ने की उम्मीद बहुत कम रह गई थी। अपने पिता के साथ अपने भविष्य पर चर्चा करते हुए, बॉब ने कनाडा में पेशेवर आइस हॉकी खेलने की

संभावना का जिक्र किया। बड़े वैन डेर स्टॉक ने तुरंत इस सुझाव को खारिज कर दिया और कहा कि किसी प्रकार का सैन्य प्रशिक्षण शायद बॉब के लिए सबसे उपयुक्त हो। वह सेना की अन्य खेल शाखाओं में से किसी एक को आजमा सकता था, जैसे कि घुड़सवार सेना, या यहां तक कि विमान उड़ाना।

उड़ान भरना। बॉब ने इस बारे में कभी सोचा भी नहीं था – कुछ साल बिताने के इससे बुरे तरीके भी हो सकते थे। दरअसल, उसके पिता ने पहले ही कुछ ज़रूरी जगहों पर पूछताछ कर ली थी, और देखते ही देखते बॉब प्रशिक्षण शुरू करने के लिए निकल पड़ा। सेवा में उसके दो साल बहुत मज़ेदार रहे। बॉब को स्टंट फ्लाइंग का शौक हो गया, लेकिन दुर्भाग्य से सेना में रहते हुए वह अपने इस शौक को पूरा नहीं कर पाया; एक बार तो उसे पुल के नीचे से उड़ान भरने के आरोप में गिरफ्तार भी किया गया था। एक लड़ाकू विमान इकाई में एक साल बिताने के बाद, बॉब की सेवा अवधि समाप्त हो गई और वह मेडिकल स्कूल लौट आया, इस बार उट्रेक्ट विश्वविद्यालय में। अब वह बड़ा और ज़्यादा समझदार हो चुका था, और उसने अपनी पढ़ाई में पूरा मन लगा दिया – अब न तो खेलकूद और न ही कक्षाओं से भागना। उसने कड़ी मेहनत की और अच्छे अंक प्राप्त किए। बॉब को समझ आने लगा कि चिकित्सा वास्तव में क्या है, और उसे यह पसंद आने लगी। इस बार उसने अंत तक पढ़ाई पूरी करने की योजना बनाई थी।

फिर आया 1939। जब डच सशस्त्र बलों की लामबंदी हुई, तो बॉब को बुलाया गया और उन्हें डेन हेल्डर हवाई अड्डे से फोकर विमान उड़ाने वाले एक लड़ाकू स्क्वाड्रन में तैनात किया गया। कई महीनों तक वे जर्मन-डच सीमा पर गश्त करते रहे और कभी-कभार दुश्मन के विमान को देख लेते थे। और वे यह देखने के लिए इंतजार करते रहे कि आगे क्या होगा। 10 मई, 1940 को घटनाक्रम बदलने लगा। उस सुबह भोर की गश्त के दौरान, बॉब और उनके स्क्वाड्रन के साथियों पर Me 109 विमानों ने हमला कर दिया और एक भयंकर लड़ाई छिड़ गई। बॉब ने एक विमान को नष्ट करने और एक को क्षतिग्रस्त करने का दावा किया, लेकिन संख्या बल भारी पड़ा। हवाई हमले दिन भर जारी रहे और शाम तक सात को छोड़कर बाकी सभी छोटे फोकर विमान नष्ट हो चुके थे।

डच प्रतिरोध महज पाँच दिनों तक चला। 15 मई को बॉब और उनके स्क्वाड्रन के साथियों ने फोकर विमानों को शिफोल ले जाकर उनमें आग लगा दी ताकि वे जर्मनों के हाथ न पड़ें। कुछ ही घंटों बाद जर्मनों की विजय पूरी हो गई। सभी डच सैनिकों को युद्धबंदी के रूप में रखने के लिए जगह न होने के कारण, जर्मनों ने उन्हें सेना से मुक्त करने का आदेश दिया और उन्हें घर जाने को कहा। बॉब वैन डेर स्टॉक मेडिकल स्कूल लौट गए, लेकिन हालात बदल चुके थे। हर समय सतर्क रहना पड़ता था, क्योंकि यह बताना असंभव था कि कौन वफादार है और कौन जर्मन समर्थक। लोगों के गुट बनाने के कारण दोस्ती और यहाँ तक कि परिवार भी टूट गए। विश्वविद्यालय के छात्रों के बीच प्रतिरोध के ऐसे समूह पनपने लगे जो कार्रवाई के लिए तैयार थे। एक गुप्त संदेश तीस मिनट के भीतर एक समूह के माध्यम से आठ सौ लोगों तक पहुँच सकता था। बॉब और अन्य लोगों ने अपनी पढ़ाई जारी रखी, लेकिन लड़ाई जारी रखने के लिए तैयार रहे।

1940 की शरद ऋतु में, दो डच पायलटों ने एक विमान चुराया और उसे इंग्लैंड ले गए। अगले दिन हिटलर ने आदेश दिया कि सभी अन्य डच सैन्य पायलटों को गिरफ्तार कर युद्धबंदी बना लिया जाए। जब गेस्टापो बॉब वैन डेर स्टॉक को पकड़ने आई, तो उन्हें केवल एक खाली अपार्टमेंट मिला; उन्हें गुप्तचर नेटवर्क द्वारा पहले ही सूचित कर दिया गया था। वह रॉटरडैम में छिप गए और इंग्लैंड भागने की योजना बनाने लगे। उनकी पहली योजना, साइकिल से बेल्जियम जाना और फिर दक्षिण की ओर स्पेन जाना, बेल्जियम सीमा पर भारी गोलीबारी में समाप्त हो गई। उनकी दूसरी योजना, एक मित्र द्वारा बनाई गई नाव में भागने की, तब विफल हो गई जब मित्र के गैरेज में मित्र देशों के बमों से नाव नष्ट हो गई। बाद में बॉब ने चार अन्य लोगों के साथ मिलकर बजरी से भरे बजरे में इंग्लैंड पहुँचने की योजना बनाई। सब कुछ ठीक चल रहा था जब तक कि वे एक चट्टान पर नहीं फंस गए, और योजना तब रद्द हो गई जब उन्हें एक जर्मन गश्ती

नौका से उन्हें बाहर निकालने के लिए कहना पड़ा।

2 जून, 1941 को वैन डेर स्टोक एक बार फिर अपने सफर पर निकल पड़े। वे तैरकर रॉटरडैम बंदरगाह में एक तटस्थ मालवाहक जहाज तक पहुँचे और एक चालक दल के सदस्य की मदद से उसके डेक के नीचे छिप गए। हॉलैंड से कुछ ही दिन दूर, जहाज को एचएमएस डेवोनशायर ने रोक लिया, जिसने एक दल भेजा और जहाज को तलाशी के लिए फ़ैरो द्वीप समूह जाने का आदेश दिया। जब बॉब और जहाज पर सवार कुछ अन्य डच नागरिक छिपने की जगह से बाहर आए और मित्र देशों की सेना में शामिल होने की अपनी इच्छा की घोषणा की, तो ब्रिटिश अधिकारियों को संदेह हुआ, लेकिन उन सभी को ब्रिटिश खुफिया विभाग द्वारा जांच के लिए लंदन ले जाया गया। बॉब को बताया गया कि चूंकि डच सरकार ने उन्हें कभी भी आधिकारिक तौर पर सेना से मुक्त नहीं किया था, इसलिए वे अभी भी एक वायु सेना अधिकारी थे।

कुछ समय बाद वैन डेर स्टॉक को टैंगमेरे स्थित 91 स्क्वाड्रन में भेज दिया गया। स्पिटफायर मुख्य रूप से जर्मन घुसपैठिए विमानों के खिलाफ रक्षात्मक मिशन पर थे, और स्क्वाड्रन को इसमें अच्छी सफलता मिली। हालांकि, ब्रिटेन की लड़ाई के बाद से यह स्क्वाड्रन लगभग लगातार कार्रवाई में था और इसे आराम की जरूरत थी। जब इसे पुनर्गठन और तरोताजा होने के लिए लिवरपूल भेजा गया, तो बॉब को 41 स्क्वाड्रन में स्थानांतरित कर दिया गया। जल्द ही वह महाद्वीप पर आक्रामक अभियानों में स्पिटफायर उड़ाने लगे। बॉब को फिर से कुछ सफलता मिली, जिससे 1940 में शुरू हुई उनकी जीतों की सूची में और इजाफा हुआ, लेकिन 12 अप्रैल, 1942 को उन्हें एक अप्रिय घटना का सामना करना पड़ा। उत्तरी फ्रांस के ऊपर एक अभियान के दौरान, बॉब की यूनिट का सामना 190 कैलिबर के विमानों के एक समूह से हुआ। कुछ विमानों को मार गिराने के बाद, डच पायलट बॉब ट्रेसर गोलियों की बौछार की चपेट में आ गए। उनका भरोसेमंद विमान खराब हो गया, और बॉब ज़मीन पर लेट गए और उन्हें पकड़ लिया गया।

*

सागन पहुँचने के बाद, वैन डेर स्टॉक के मन में तुरंत भागने का विचार आया, और इस मामले में उसे अपने साथी कैदियों से एक खास फायदा था: वह जर्मन कब्जे के दौरान रह चुका था। कई कैदी पहले भी भागने के दौरान जर्मनी से होकर गुजरे थे, और कुछ युद्ध-पूर्व यात्राओं के कारण यूरोप को अच्छी तरह जानते थे। लेकिन, यह उपयोगी होते हुए भी, वैसा नहीं था। बॉब एक साल से अधिक समय तक कब्जे वाले देश में रह चुका था। वह जानता था कि कब्जेदार कैसे थे, उनका संगठन कैसा था, वे किस तरह के लोगों से पूछताछ करते थे, और वे क्या पूछते थे। शायद सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि वह जानता था कि युद्धकाल में एक आम यूरोपीय यात्री के लिए कैसा व्यवहार स्वीकार्य था। कई भागने वाले पहले शिष्टाचार की छोटी-छोटी बातों पर पकड़े जा चुके थे क्योंकि किसी गार्ड या पुलिस अधिकारी ने उनके किसी काम को देख लिया था। एक से अधिक भागने वालों को एक बुजुर्ग महिला को अपनी सीट देने के बाद गिरफ्तार कर लिया गया था, जो कब्जे वाले यूरोप में कभी नहीं किया जाता था। बॉब वैन डेर स्टॉक इन सभी छोटी-छोटी बातों को जानता था; और वह आम लोगों से कहीं बेहतर तरीके से घुलमिल सकता था। अगर वह कभी शिविर से बाहर निकल भी गया, तो उसे पकड़ना बहुत मुश्किल होगा।

अपने पहले प्रयास के लिए, उन्होंने और एक कनाडाई अधिकारी ने अंधेरा होने के बाद तार की ओर दौड़कर उसके नीचे सुरंग खोदने की योजना बनाई। रोजर बुशेल ने इस योजना को मंजूरी दे दी, लेकिन उन्हें अपनी सीटी की आवाज़ सुनने के लिए कहा, जो खतरे का संकेत देगी और उन्हें झोपड़ी में वापस बुला लेगी। उस रात दोनों बिना किसी घटना के तार तक पहुँच गए और खोदना शुरू कर दिया। अचानक उन्हें एक भयानक शोर सुनाई दिया और उस शोर के बीच रोजर की चेतावनी भरी सीटी की आवाज़ आई। अनिच्छा से अपने कच्चे गड्ढे को छोड़कर, वे झोपड़ी की ओर भागे और बिस्तर पर चढ़ गए। अगले दिन उन्हें पता चला कि किसी ने उन्हें देखा ही नहीं था;

शोर एक आयरिश व्यक्ति के कारण हुआ था जो अपनी झोपड़ी की छत से एक गार्ड की चोरी हुई टोपी को वापस लेने की कोशिश कर रहा था।

अपनी अगली योजना के लिए, वैन डेर स्टॉक ने एक डच नौसेना अधिकारी के साथ साझेदारी की। उन्होंने कुछ रूसी कामगारों को रिश्वत देकर वोरलागर में स्नान कक्ष की दीवार के सहारे कुछ फावड़े रखवा दिए और एक स्नान पार्टी से चुपके से निकलकर सोवियत वर्दी पहनने और वोरलागर के आसपास तब तक मंडराते रहने की योजना बनाई जब तक कि तार के सहारे भागने का प्रयास करना सुरक्षित न हो जाए। योजना का पहला भाग सुचारू रूप से चला, लेकिन कैदी हाजिरी के समय गिनती में हेराफेरी करने में असमर्थ रहे और जर्मनों को भागने वालों की अनुपस्थिति का पता चल गया। जर्मनों ने तुरंत स्नान कक्ष के आसपास के क्षेत्र की तलाशी ली और दोनों डच लोगों को ढूंढ निकाला।

*

नवंबर का महीना सागन में आ गया और कैदी एक और सर्दी के लिए तैयार हो गए। थिएटर कंपनी का नाटक 'फ्रेंच विदाउट टियर्स' अभी शुरू ही हुआ था और परिसर में हल्की बर्फ़बारी होने लगी थी। फिर भी, भागने की योजनाएँ चलती रहीं, ताकि मौसम के बिगड़ने से पहले कुछ और योजनाएँ बनाई जा सकें। डेस प्लंकेट और इवो टोंडर परिसर में कचरा रखने वाले डिब्बे से कूड़ा निकालने के लिए इस्तेमाल होने वाली एक गाड़ी पर नज़र रखे हुए थे। उनका मानना था कि अगर वे गाड़ी के अंदर छिप जाएँ, तो तारबंदी के बाहर जहाँ भी कूड़ा फेंका जाता है, वहाँ से भाग निकलना संभव हो जाएगा।

क्रम्प केर-रामसे की मदद से, दोनों एक दोपहर बाद गाड़ी में चढ़े और कचरे की मोटी परत से ढक गए। दुर्भाग्य से, यह परत बहुत मोटी साबित हुई; हर बार जब उनमें से कोई हिलता, तो कचरा उन पर और अधिक भारी हो जाता और कुछ ही देर में उन्हें सांस लेना मुश्किल हो गया। अफसोस के साथ, उन्होंने गाड़ी छोड़ने और परिणाम भुगतने का फैसला किया। डिब्बे और कचरे के टुकड़े कूड़ेदान से बाहर गिरने की तेज आवाज के बीच, डेस और इवो ने खुद को ऊपर उठाया और आश्चर्य से पाया कि किसी ने भी शोर नहीं सुना था। उन्होंने कचरे के ढेर को फिर से व्यवस्थित किया और अगले दिन फिर से कोशिश करने का वादा करते हुए अपनी झोपड़ी की ओर वापस चल दिए।

इस बार क्रम्प ने उन्हें कचरे की सही मात्रा से ढक दिया था, लेकिन दुर्भाग्य से किसी ने ढेर के ऊपर गर्म राख का ढेर डाल दिया, और कुछ ही मिनटों में वे दोनों जलते हुए कपड़ों के साथ कूड़ेदान से बाहर कूद पड़े। जर्मनों ने तब भी इस घटना पर कोई ध्यान नहीं दिया, लेकिन डेस और इवो कचरे में दबे रहने से तंग आ चुके थे और उन्होंने योजना रद्द करने का फैसला किया। उसी दिन बाद में, जिस गाड़ी में वे छिपे थे, उसे चेतावनी तार और वैगन के बीच एक जगह पर खींच लिया गया; वे इससे आगे नहीं बढ़ सकते थे।

*

टॉफ्ट और निकोल्स के तारबंदी को पार करने के साहसी प्रयास के बाद, जर्मन सैनिकों ने सुरक्षा के लिए कुछ बदलाव किए ताकि कोई भी सुरक्षा क्षेत्र सुरक्षित रहे। सुरक्षा क्षेत्र की निगरानी के लिए तारबंदी के बाहर अतिरिक्त गार्ड तैनात किए गए और पहरेदार टावरों के चबूतरे बड़े कर दिए गए ताकि संतरी चौकियों के बीच की तारबंदी पर नज़र रखने के लिए चौकियों से बाहर निकल सकें। हालांकि, इतनी सावधानी बरतने के बावजूद, जर्मन सैनिक केवल कुछ और सुरक्षा क्षेत्र बनाने में ही सफल रहे। पहरेदार टावरों के बड़े चबूतरे बनने से अब हर चौकी के ठीक नीचे एक सुरक्षित क्षेत्र बन गया था। अब बस आस-पास के टावरों में तैनात गार्डों का ध्यान भटकाना था

और कोई साहसी व्यक्ति जर्मन सैनिकों की नाक के नीचे से तारबंदी को पार कर जाता।

इस बार बहादुरी दिखाने वाले फ्लाइंग ऑफिसर जॉन गिफोर्ड स्टोवर थे, जो अर्जेंटीना के एक छोटे कद के, मूंछों वाले गन्ना किसान थे। 15 सितंबर, 1916 को ब्यूनस आयर्स में जन्मे स्टोवर ने इंग्लैंड में शिक्षा प्राप्त की, लेकिन अपने शुरुआती जीवन का अधिकांश समय दक्षिण अमेरिका के एक विशाल फार्म में बिताया। युद्ध शुरू होने पर वे इंग्लैंड लौट आए और रॉयल एयर फोर्स (आरएफ) में भर्ती हो गए। अगस्त 1942 तक वे वाल्थम से 142 स्क्वाड्रन के वेलिंगटन विमान उड़ा रहे थे। 1942 की गर्मियों के आखिरी महीनों में ऑपरेशन अक्सर होते रहे, लेकिन अक्टूबर में कुछ समय के लिए युद्ध रुका और स्टोवर ने इस मौके का फायदा उठाते हुए अर्जेंटीना को स्पेनिश में रेडियो प्रसारण किया, जिसमें उन्होंने जर्मनी के ऊपर अपने कुछ अनुभवों को साझा किया। ब्यूनस आयर्स में उनके कई दोस्तों के लिए, अपने ही एक साथी के युद्ध में योगदान के बारे में सुनना एक सुखद अनुभव था। 16 नवंबर, 1942 को जॉनी के दल को उत्तरी सागर तट पर बारूदी सुरंग बिछाने के अभियान में शामिल होने का आदेश दिया गया। यह उस गंभीर और हंसमुख पायलट का छब्बीसवां ऑपरेशन था। शाम ढलते अंधेरे में, वेलिंगटन विमान बेस से उड़ान भरकर निर्धारित स्थान की ओर धीमी आवाज़ के साथ बढ़ने लगा। स्क्वाड्रन विमान की प्रगति की सूचना का इंतज़ार करता रहा, पर कोई खबर नहीं मिली। महीनों बाद, जॉनी की चाची को उनके भतीजे का एक कार्ड मिला जिसमें उत्तरी सागर के ठंडे पानी में उनकी यात्रा के दुर्भाग्यपूर्ण अंत का वर्णन था। जॉनी ने लिखा, 'हम ग्यारह घंटे तक छोटी नाव में बहते रहे। हमें लगा कि हम किसी तटस्थ तट पर बहकर आ रहे हैं, लेकिन वह जर्मनी था और हमें पकड़ लिया गया।'

दिल से घुमक्कड़ और साहसिक प्रवृत्ति से भरपूर जॉनी कैद में बाकी लोगों से कहीं ज्यादा परेशान था। हालांकि वह सागन में नया था, उसने तारबंदी पर होने वाले अगले हमले के लिए तुरंत अपना नाम दर्ज कराने की गुहार लगाई। जरूरी सुरक्षा उपायों की आड़ में, वह बाड़ फांदकर खुले मैदान से जंगल की ओर भागने लगा, तभी एक संतरी ने उसे देख लिया। जैसे ही गार्ड ने चीख मारी, जॉनी का जूता एक पेड़ की जड़ में फंस गया और वह जमीन पर सिर के बल गिर पड़ा। जब तक वह संभला, तब तक कई राइफलों की गोलीबारी से वह बुरी तरह घिर चुका था। संयोग से, स्टोवर का ठोकर खाकर गिर जाना उसकी किस्मत अच्छी थी, क्योंकि गार्ड उसे ज्यादा आगे बढ़ने से पहले ही गोली चला देते। एक उभरी हुई चीड़ की जड़ ने शायद उस नन्हे-मुन्ने को पीठ में गोली लगने से बचा लिया।

*

जॉनी के प्रयास के बाद के हफ्तों में, मौसम लगातार ठंडा होता गया और ज़ोरदार बर्फ़बारी शुरू हो गई। तापमान गिरने के साथ-साथ लंबी अपेल्स और भी असहनीय होती गईं, और एक सुबह, जब जर्मन सामान्य से अधिक सुस्ती दिखा रहे थे, तो कम से कम एक योद्धा का धैर्य थोड़ा कम हो गया। "अब हमारी असंतोष की सर्दी आ गई है," सैनिकों के पीछे से एक बुलंद आवाज़ आई, "जिसे बवेरिया के इस कमीने ने और भी भयानक बना दिया है!"

बिगड़ती परिस्थितियों ने डैनी क्रोल और सिडनी डाउज़ नामक एक हंसमुख टोही पायलट को जोखिम उठाने से नहीं रोका। लंदन में जन्मे डाउज़ जुलाई 1937 में आरएएफ में शामिल हुए और 20 अगस्त 1941 को शार्नहोर्स्ट और ग्नीसेनाउ की तस्वीरें लेते समय 1 पीआरयू स्पिटफायर विमान में सवार होकर दुर्घटना का शिकार हो गए। पैर में घायल सिडनी ब्रेस्ट के पास उतरे और चुपचाप तट पर पहुंचकर प्रतिरोध आंदोलन से संपर्क करने की उम्मीद कर रहे थे। हालांकि, जैसे ही वे समुद्र तट के पास पहुंचे, उन्होंने देखा कि युवा फ्रांसीसी महिलाओं की भीड़ उन्हें हाथ हिलाकर और "अंग्रेजी पायलट का स्वागत है" चिल्लाकर अभिवादन कर रही थी; उन्होंने आसपास के सभी लोगों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया और सिडनी को तुरंत पकड़ लिया गया।

अपनी चोट के बावजूद, डाउज़ ने पहले ही दो बार भागने की कोशिश की थी। 1 दिसंबर, 1941 को, वह लीपज़िग के पास एक जेल शिविर के अस्पताल के गेट पर चढ़ गया और रोअरमंड तक पहुँच गया, जहाँ तीन दिन बाद एक सीमा रक्षक ने उसे पकड़ लिया। फिर, 21 जनवरी, 1942 को, उसने स्टालैग IXC बैड सुल्ज़ा में एक कनाडाई कैदी के साथ जगह बदल ली और बेल्जियम के युद्धबंदियों के एक समूह के साथ शिविर से बाहर निकल गया। सिडनी जर्मन परिसर में समूह से अलग हो गया और एक शौचालय में छिप गया, जहाँ उसने बेल्जियम की वर्दी उतारकर आम नागरिकों के कपड़े पहन लिए। एक मज़दूर का रूप धारण करके, उसने तार के पास एक पानी के पहिये का निरीक्षण करने का नाटक किया और कुछ देर जाँच-पड़ताल करने के बाद सीधे गेट से बाहर निकल गया। सिडनी के पास कोई कागज़ात, नक्शे या कंपास नहीं था, लेकिन उसके पास जर्मन मुद्रा काफ़ी थी और वह स्थानीय स्टेशन तक पैदल गया, जहाँ से उसने एरफर्ट के लिए ट्रेन पकड़ी और वहाँ से कोलोन के लिए रवाना हो गया। बेल्जियम में प्रवेश करने की योजना बनाकर, वह एक स्थानीय ट्रेन से सीमावर्ती कस्बे तक गया और बेल्जियम के स्टेवलोट की दिशा में पैदल चलना शुरू किया। चौबीस घंटे की धीमी चाल के बाद, सिडनी ने एक जंगल में शरण ली और अगली सुबह खुद को पूरी तरह से दिशाहीन पाया। अंततः वह एक छोटे से स्टेशन पर पहुँचा और उसे एहसास हुआ कि वह गलत दिशा में जा रहा था। हिम्मत न हारते हुए, डॉव्स ने ट्रेन से वापस अपने शुरुआती बिंदु पर जाने का सफर तय किया और फिर से कोशिश करने के लिए तैयार हो गया।

हालांकि, यात्रा की थकान अब दिखने लगी थी। कई जगहों पर बर्फ दो फीट गहरी थी, और सिडनी जल्द ही थकावट और बर्फ के कारण आंखों में धुंधलापन महसूस करने लगा। अगले दिन वह स्तब्धता में इधर-उधर भटकता रहा और जब आखिरकार उसे होश आया, तो वह एक रेलवे स्टेशन पर ब्रसेल्स के लिए सीधी टिकट खरीदने की कोशिश कर रहा था। अपनी गलती का एहसास होते ही, डॉव्स ने तुरंत वहां से भागने का फैसला किया और कुछ घंटों के लिए एक जंगल में छिप गया, फिर दोबारा चलना शुरू किया। 26 जनवरी की देर शाम तक वह जर्मन-डच सीमा पर पहुंच गया, जहां सीमा रक्षकों ने उस पर गोली चलाई और उसे गिरफ्तार कर लिया। ठंड से जमने के अलावा, सिडनी को अपनी परेशानियों से सिर्फ अनुभव ही मिला।

भागने के अनुभव के बावजूद, सिडनी की जर्मन भाषा पर पकड़ अच्छी नहीं थी। उसने कुछ प्रचलित वाक्यांश सीखकर और गले पर पट्टी बांधकर इस कमी को छुपाया; फिर, अगर कोई उसके पास आता, तो वह बोलने की कोशिश में खांसने और अटकने लगता, जिससे जिज्ञासु लोग अक्सर डर कर भाग जाते थे। डैनी क्रोल से मिलने के बाद, वह पोलिश भाषा की उसकी क्षमता पर भरोसा कर सकता था।

सागन में तारबंदी पर उनका हमला आसान था। वे अधिकारियों और गैर-कमीशंड कमांडरों के शिविरों के बीच बिना रोशनी और बिना पहरे वाली तारबंदी को पार करते, कंबल का इस्तेमाल करके गैर-कमीशंड कमांडरों के शिविर को पार करते और फिर कम गश्त वाली बाड़ को काटकर आगे बढ़ते जो गैर-कमीशंड कमांडरों के शिविर को कमांडेंटुर से अलग करती थी। उनकी यात्रा का पहला आधा हिस्सा बिना किसी घटना के पूरा हुआ, लेकिन कमांडेंटुर में तारबंदी पार करते समय, एक गार्ड ने उन्हें देख लिया और उन पर गोली चला दी। सिडनी और डैनी को फिर से जेल जाना पड़ा। उनके इस प्रयास के साथ सागन में 1942 के भागने के दौर का अंत हो गया और स्कूली बच्चों की तरह, योद्धाओं ने क्रिसमस की छुट्टी ले ली।

*

पिछली बार की तुलना में यह क्रिसमस कुछ फीका था, बंजर परिसर को रोशन करने के लिए ताज़ा बर्फ़ बहुत कम गिरी थी, लेकिन वायुसैनिकों ने इस मुश्किल परिस्थिति का भरपूर फायदा उठाया। रेड क्रॉस के पार्सलों से एक बढ़िया क्रिसमस केक बनाने के लिए ज़रूरी सामग्री मिल

गई, और सागन में थोड़ी सी मौसमी रौनक लाने के लिए पोलिश गायक मंडली द्वारा प्रस्तुत एक सुंदर मध्यरात्रि प्रार्थना सभा भी आयोजित की गई। नए साल में बर्फ़ गिरी, और तापमान इतना गिर गया कि कैदियों को एक और आइस रिंक बनाने की अनुमति मिल गई। इसका आधिकारिक उद्घाटन 17 जनवरी, 1943 को नए एसबीओ, ग्रुप कैप्टन हर्बर्ट मैसी द्वारा किया गया, और प्रत्येक कैदी के लिए प्रतिदिन तीस मिनट स्केटिंग करने के लिए पर्याप्त रेड क्रॉस स्केट उपलब्ध थे। रिंक के पहले दिन एक हॉकी टूर्नामेंट आयोजित किया गया जिसमें दो कनाडाई टीमों के बीच मुकाबला ड्रॉ रहा। फिर एक अंग्रेजी टीम ने अमेरिकियों के साथ खेला, जिसमें ब्रिटिश टीम ने एक गोल से मामूली अंतर से जीत हासिल की।

जो लोग घर के अंदर की गतिविधियों को ज़्यादा पसंद करते थे, उनके लिए क्रिसमस के बाद थिएटर फिर से शुरू हो गया और जनवरी के अंत में एमलिन विलियम्स के नाटक 'नाइट मस्ट फॉल' का मंचन शुरू हुआ। 1943 की शुरुआत के ठंडे महीनों में पढ़ाई की लोकप्रियता भी बढ़ गई। पीटर फैंशॉ की खगोलीय नेविगेशन की कक्षा में काफी छात्र उपस्थित थे और कई छात्रों ने परीक्षाएँ दीं। ब्रायन इवांस ने नीलामीकर्ताओं और रियल एस्टेट एजेंटों के लिए अपनी मध्यवर्ती परीक्षा उत्तीर्ण की, जबकि जैक ग्रिसमैन ने लंदन विश्वविद्यालय से अंग्रेजी और गणित की परीक्षाएँ सफलतापूर्वक पूरी कीं। इसी बीच, कूकी लॉन्ग ने लंदन के फॉयल्स से अपने परिवार द्वारा भेजी गई पाठ्यपुस्तकों से अर्थशास्त्र का अध्ययन करके अपने नए जीवन की शुरुआत की।

बेशक, भाषा की कक्षाएं पहले की तरह ही लोकप्रिय थीं। कोई टॉम किर्बी-ग्रीन या जॉनी स्टोवर से स्पेनिश सीख सकता था, और डेस प्लंकेट ने बहुभाषी वैली वैलेंता से रूसी सीखी। एक दर्जन कैदियों में से किसी से भी जर्मन भाषा सीखी जा सकती थी। रेने मार्सिंकस द्वारा दी जाने वाली कक्षाएं बहुत लोकप्रिय थीं और उनमें सभी देशों के अधिकारी भाग लेते थे। मार्सिंकस अक्सर प्रत्येक कक्षा को पांच या छह भाषाओं में लेते थे, और छात्रों के प्रश्नों का उत्तर देने के लिए बीच-बीच में भाषा बदलते रहते थे।

दरअसल, लुफ़्ट III में चीनी से लेकर नॉर्वेजियन और उर्दू तक, लगभग हर भाषा सीखी जा सकती थी। नॉर्डिक भाषा सीखने की कोशिश करने वालों में से एक जिम्मी कैटानाच नाम का एक मुस्कुराता हुआ ऑस्ट्रेलियाई स्क्वाड्रन लीडर था। जिम्मी हमेशा कुछ न कुछ करता रहता था। उसके बड़े भाई का कहना था कि उसमें रेडियम के टुकड़े से भी ज़्यादा ऊर्जा थी, और उसके स्क्वाड्रन कमांडर ने टिप्पणी की कि उसने बारह साल से ज़्यादा उम्र के किसी भी व्यक्ति में इतनी ज़्यादा ऊर्जा कभी नहीं देखी। जिम्मी कभी धूम्रपान या शराब नहीं पीता था, और वह अविश्वसनीय गति से बात करता था। बातचीत के दौरान भी वह एक पल भी स्थिर नहीं रह पाता था, बल्कि लगातार हिलता-डुलता और उछलता-कूदता रहता था। अगर वह इतना मिलनसार न होता, तो यह एक बेहद परेशान करने वाली आदत होती।

*

जेम्स कैटानाच एक साधारण बच्चा था। 28 नवंबर, 1921 को मेलबर्न के एक प्रतिष्ठित जौहरी परिवार में जन्मे, वह 1932 में जिलॉन्ग ग्रामर स्कूल में दाखिल हुए अन्य लड़कों से बिल्कुल अलग नहीं थे। उनके दोस्त उन्हें कद में छोटा और किसी भी तरह से असाधारण न होने वाला बताते हैं - वह एक उत्साही खिलाड़ी और स्काउट थे, लेकिन शायद ही कभी प्रथम टीम या टुकड़ी के नेतृत्व तक पहुँच पाए, और उन्हें आमतौर पर सम्मान के बजाय पास ही मिलते थे। सभी को उस हंसमुख, नीली आँखों वाले लड़के की संगति अच्छी लगती थी, लेकिन कुछ ही लोगों ने उनमें कुछ उल्लेखनीय देखा था।

फिर भी, जिमी में कुछ खास बात थी जो स्कूल से दूर रहने पर उभर कर सामने आती थी। उसकी आंखें उसकी मां की तरह खिलखिलाती और मुस्कुराती थीं, और उसमें उसके पिता की तरह हास्यबोध और मनमोहक व्यक्तित्व था - यह एक ऐसा मेल था जो कई लोगों को बेहद पसंद

आता था। गर्मियों की छुट्टियों में, जिमी अक्सर अपने चाचा-चाची, कूली परिवार और उनके बच्चों एलन, बारबरा, मार्जरी और हेलेन के साथ रहने जाता था। यह सर्वविदित था कि जिमी ही श्रीमती कूली से बाकी बच्चों के लिए कुछ न कुछ माँगता था, क्योंकि उन्हें उसे मना करना मुश्किल लगता था। वह एक कल्पनाशील और साहसी लड़का था, और उसे कूली परिवार के बच्चों के साथ माउंट मैसेडन और हैंगिंग रॉक की सैर करना बहुत पसंद था। उन गर्मियों के दौरान पाँचों ने साथ में कई घंटे बिताए, और जिमी को अपने चचेरे भाई-बहनों से बहुत लगाव हो गया।

1938 में गेलॉन्ग से स्नातक होने के बाद, जिमी ने अपने बड़े भाई बिल की राह पर चलते हुए पारिवारिक आभूषण व्यवसाय में कदम रखा और कैटानाच के मरम्मत विभाग में काम शुरू किया। दुकान में शामिल होने से पहले भी वह कर्मचारियों के चहेते थे। उनकी बचपन की आया ने तो उनके साथ रहने के लिए उसी कंपनी में नौकरी कर ली थी। जब युद्ध शुरू हुआ, तो कैटानाच परिवार के दोनों भाइयों ने तुरंत सेना में भर्ती होने का फैसला किया, बिल सेना में और जिम वायुसेना में, और दोनों प्रशिक्षण के लिए मेलबर्न से रवाना होने की तैयारी करने लगे। जाने से पहले, जिम ने अपने अंतिम कुछ दिन अपने चचेरे भाइयों के साथ घर पर बिताए। विदाई उपहार के रूप में, उन्होंने अपनी पसंदीदा प्राचीन नक्काशीदार घड़ी बार्ब कूली को दी। जाते समय उन्होंने उससे कहा, 'इसका ख्याल रखना, और मैं घर आकर इसे तुम्हारे लिए ठीक कर दूंगा।'

अगस्त 1940 में जिम को प्रारंभिक प्रशिक्षण के लिए बुलाया गया और फरवरी 1941 में वे ऑस्ट्रेलिया छोड़कर कनाडा चले गए। अप्रैल तक उन्होंने अपना फ्लाइंग बैज और कमीशन प्राप्त कर लिया और उन्हें इंग्लैंड में तैनात किया गया, जहाँ वे अक्टूबर में 144 स्क्वाड्रन के साथ ऑपरेशनल ड्यूटी पर आ गए। 144 स्क्वाड्रन के साथ नौ मिशनों के बाद, दिसंबर में जिमी का तबादला 455 स्क्वाड्रन आरएएएफ में कर दिया गया, जो ऑस्ट्रेलिया का पहला और सबसे प्रसिद्ध बॉम्बर स्क्वाड्रन था। जिम की क्षमता के बारे में अगर कोई संदेह था, तो 455 स्क्वाड्रन में वह पूरी तरह से दूर हो गया। उन्होंने और उनके दल ने स्क्वाड्रन द्वारा उड़ाए जाने वाले हैम्पडेन विमानों पर जल्दी ही अपनी ख्याति अर्जित कर ली। उनका पहला ऑपरेशन 27-28 दिसंबर 1941 को हुआ, जब स्क्वाड्रन ने डसेलडोर्फ पर एक छापे में भाग लिया। अगले कुछ महीनों में उन्होंने विभिन्न बमबारी और माइन बिछाने के ऑपरेशन पूरे किए और 13 मार्च 1942 को बॉम्बर दल के रूप में अपना अंतिम मिशन कोलोन के लिए पूरा किया। लक्ष्य क्षेत्र छोड़ने के तुरंत बाद, हैम्पडेन विमान पर गोले दागे गए जिससे विमान का अगला हिस्सा बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया और जिम की आंखों की रोशनी आंशिक रूप से चली गई; उसने चालक दल से केवल इतना कहा, 'दोस्तों, मुझे लगता है कि अब हमें घर चलना चाहिए।' यह तीसरी बार था जब वह बुरी तरह क्षतिग्रस्त विमान को वापस लेकर आया था, और 11 अप्रैल को उसे फ्लाइट लेफ्टिनेंट के पद पर पदोन्नति मिली।

लगभग उसी समय, 455 स्क्वाड्रन को तटीय कमान में स्थानांतरित कर दिया गया और टॉरपीडो बॉम्बर स्क्वाड्रन के रूप में प्रशिक्षण शुरू करने के लिए स्कॉटलैंड के ल्यूचर्स में तैनात किया गया। एक पायलट के रूप में जिम की प्रतिष्ठा बढ़ती रही और जून में उन्हें स्क्वाड्रन लीडर के पद पर पदोन्नत किया गया, जिससे वे रॉयल एयर फ़ोर्स (आरएएएफ) और आरएएफ में इस पद को प्राप्त करने वाले सबसे कम उम्र के व्यक्ति बन गए। 26 जून, 1942 को उन्हें डीएफसी से सम्मानित किया गया। केवल बीस वर्ष की आयु में, जिम वायु सेना में भविष्य की सफलता के प्रति आश्वस्त प्रतीत हो रहे थे। ल्यूचर्स में काम में अधिकतर प्रशिक्षण अभ्यास शामिल थे, साथ ही चालक दल को चुस्त-दुरुस्त रखने के लिए उत्तरी सागर के ऊपर कभी-कभार हवाई उड़ानें भी होती थीं। जिमी ने 1942 की शरद ऋतु में ऐसे ही एक मिशन का वर्णन किया: 'पिछली रात हमें नॉर्वे के तट पर एक बड़े व्यापारी जहाज की जांच करने का आदेश दिया गया था। नब्बे मिनट के भीतर, स्क्वाड्रन को ब्रीफिंग दी गई और वे उड़ान भर कर बिना चाँदनी वाले समुद्र के ऊपर 350 मील दूर समुद्र में एक बिंदु की ओर बढ़ गए। हम भोर होते ही नॉर्वे पहुँचे, जहाजी मार्गों की तलाशी ली, कुछ नहीं देखा और घर की ओर चल दिए। आमतौर पर, ऐसा ही होता है।'

अगस्त के अंत में, दल को उस मिशन की विस्तृत जानकारी मिली जिसके लिए वे प्रशिक्षण ले रहे थे। 455 स्क्वाड्रन के सोलह विमान, साथ ही 144 स्क्वाड्रन के सोलह विमान, जिनमें से प्रत्येक में एक अतिरिक्त ग्राउंड क्रू सदस्य था, शेटलैंड्स के सुम्बर्ग और फिर रूस के मरमांस्क के लिए उड़ान भरने वाले थे। वहां से उन्हें मित्र देशों के आर्कटिक काफिलों के खिलाफ सक्रिय जर्मन नौसेना पर टॉरपीडो हमले करने थे। हर लिहाज से यह एक खतरनाक मिशन था। तय की जाने वाली दूरी हैम्पडेन विमान की उड़ान सीमा के लगभग बराबर थी, जिससे नेविगेशन या ईंधन खपत की गणना में त्रुटियों की गुंजाइश न के बराबर थी। क्षेत्र के नक्शे अविश्वसनीय थे, और नेविगेशन और लैंडिंग के लिए रेडियो सहायता उपलब्ध नहीं थी। इन सबके अलावा, मौसम वैज्ञानिकों ने पूरी उड़ान के दौरान खराब मौसम की भविष्यवाणी की थी। कैटानाच के दौरे के इस आखिरी ऑपरेशन के लिए हालात बिल्कुल भी उत्साहजनक नहीं थे।

स्क्वाड्रन 2 सितंबर को ल्यूचर्स से रवाना हुआ और अंतिम तैयारियों और ईंधन भरने के बाद, 4 सितंबर की रात 9:00 बजे सुम्बर्ग से उड़ान भरी। हमेशा की तरह, जिमी अपनी बारी का इंतज़ार नहीं कर सका। वह लाइन में पहले खाली स्थान पर पहुंचा और रनवे पर तेज़ी से दौड़ पड़ा। प्रत्येक दल ने अपना-अपना मार्ग निर्धारित किया था और अन्य की तरह, जिमी के नेविगेटर ने भी ट्रॉनहाइम के पास उत्तर की ओर मुड़ने, पहाड़ों को पार करने के लिए ऊंचाई हासिल करने और सुबह होते ही दिशा का पता लगाने का विकल्प चुना था। यह कोई बहुत अच्छी उड़ान योजना नहीं थी, लेकिन जो भी कर सकता था, उससे बेहतर यही था।

उत्तरी सागर के ऊपर की उड़ान बिना किसी घटना के पूरी हुई और ट्रॉनहाइम से गुजरते हुए, जिमी ने अपने हैम्पडेन विमान को उत्तर की ओर नारविक की ओर मोड़ दिया। भोर होते ही विमान फिनमार्क के ऊपर था, चालक दल अपनी स्थिति का सटीक पता लगाने और मुरमान्स्क तक शेष मार्ग तय करने के लिए किसी पहचान योग्य स्थल की तलाश कर रहा था। उड़ान भरने में एक घंटे से भी कम समय बचा था, और ऐसा लग रहा था कि वे ईंधन की बचत के साथ अपने गंतव्य तक पहुँच जाएँगे।

वाड्सो के ऊपर से उड़ते समय हालात बिगड़ने लगे। ज़मीन से हुई गोलीबारी में टैंकों में छेद हो गए और कंट्रोल पैनल व एक इंजन क्षतिग्रस्त हो गया, जिससे जिमी के सामने विमान की क्रैश लैंडिंग का मुश्किल काम आ गया। सौभाग्य से कुछ खाली जगहें उपलब्ध थीं और वह हैम्पडेन को एक समुद्र तट से कुछ ही दूरी पर स्थित झाड़ियों के समतल मैदान पर उतारने में कामयाब रहा। चालक दल विमान से बाहर निकला, लेकिन खुद को तट से दूर एक छोटी गनबोट और सफेद ओवरऑल पहने सैनिकों के एक दल के बीच फंसा हुआ पाया। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि किस तरफ जाएं, लेकिन नाव की हल्की तोप से कुछ गोलियों की आवाज़ ने पायलटों को सैनिकों से संपर्क करने के लिए प्रेरित किया। चूंकि उनके पास कोई स्पष्ट प्रतीक चिन्ह नहीं था, जिमी को उम्मीद थी कि वे नॉर्वेजियन होंगे और उसने पुकारा, 'स्प्रेचेन सी डॉयच?' (क्या आप जर्मन बोलते हैं?) लेकिन उसे निराशाजनक जवाब मिला, 'जा, इच स्प्रेचे डॉयच - इच बिन डॉयच!' (हाँ, मैं जर्मन बोलता हूँ - मैं जर्मन हूँ!)। चालक दल का भाग्य तय हो गया था।

कैद में उनके शुरुआती दिन सोवियत कैदियों के लिए बने एक कीचड़ भरे श्रम शिविर में बीते, लेकिन जल्द ही उन्हें छुट्टी पर आए कुछ गार्डों के साथ दक्षिण भेज दिया गया। रोवानीमी से, पाँचों को हेलसिंकी ले जाया गया जहाँ उन्होंने एक नागरिक जेल में रात बिताई। अगले दिन उन्हें फ्रैंकफर्ट ले जाया गया और एकांत कारावास में डाल दिया गया। सितंबर के मध्य तक जिमी स्टालैग लुफ्ट III में था। अर्नोल्ड क्रिस्टेंसन की तरह, जिमी कटानाच की उम्र भी केवल बीस वर्ष थी।

*

नए साल के कुछ ही समय बाद, कैदियों ने तारबंदी के उस पार जंगल में हलचल देखी। मज़दूरों

के दल पेड़ काट रहे थे, और जल्द ही एक कच्चा परिसर तैयार हो गया। पूछताछ करने पर, पीबर ने बताया कि परिसर तैयार होते ही, संभवतः मार्च में, वायुसैनिक वहाँ चले जाएँगे। तुरंत ही, रोजर बुशेल के दिमाग में एक योजना बन गई। डुलैग लुफ्ट पहुँचने के बाद से ही वह एक बड़ी पलायन योजना बना रहा था, जिससे जर्मनी में दहशत फैल जाए। व्यक्तिगत प्रयास मामूली परेशानी पैदा कर सकते थे, लेकिन बुशेल जानता था कि एक बड़ा पलायन हज़ारों सैनिकों और सहायक कर्मियों को बांधे रखेगा और युद्ध प्रयासों में सचमुच फर्क लाएगा। अब, नए परिसर में जाने की तैयारी के साथ, बुशेल को अपना मौका मिल गया।

उस दोपहर, रॉजर ने अपने लेफ्टिनेंटों को बुलाया। 'हमें पता है कि गुंडे एक नया अड्डा बना रहे हैं और पीबर का कहना है कि हममें से ज़्यादातर लोगों को वहाँ जाना पड़ेगा। मैं अभी एक कार्य योजना तय करना चाहता हूँ, ताकि हम वहाँ जाते ही काम शुरू कर सकें।' उसने अपने साथियों – वॉली फ्लॉडी, जॉनी बुल, कॉक कैंटन और जॉनी मार्शल – की ओर देखा, जिन्होंने सहमति में सिर हिलाया।

जैसे-जैसे वह बोलता गया, यह स्पष्ट होता गया कि रॉजर ने इस विषय पर पहले ही काफी सोच-विचार कर लिया था। 'इस बार मैं कुछ नए विचार आजमाना चाहता हूँ। सबसे पहले, मैं एक के बजाय तीन सुरंगें बनाना चाहता हूँ। इस तरह, अगर गुंडे एक या दो सुरंगें भी ढूंढ लेते हैं, तो हमारे पास एक सुरंग सुरक्षित रहेगी। अब, इसके लिए एक बड़े संगठन की आवश्यकता होगी, इसलिए स्थिति को नियंत्रण में रखने के लिए मैं सभी निजी सुरंगों पर प्रतिबंध लगा रहा हूँ। मैं नहीं चाहता कि मुख्य योजना को संसाधनों के लिए अन्य आधा दर्जन प्रयासों से प्रतिस्पर्धा करनी पड़े। इसके अलावा, तीन मुख्य सुरंगों से इतनी रेत निकलेगी कि हमें छोटी सुरंगों से और रेत की आवश्यकता नहीं होगी।'

रॉजर ने और भी दृढ़ स्वर में बोलना जारी रखा। "अंत में, हम किसी समय सीमा के भीतर काम नहीं करेंगे। सुरक्षा सर्वोपरि होगी – अगर गुंडे किसी बात पर भड़क गए, तो मैं दो सप्ताह के लिए पूरी तरह से काम बंद करने को तैयार हूँ जब तक कि मामला शांत न हो जाए। और हाँ, मैं फिर कभी 'सुरंग' शब्द नहीं सुनना चाहता – हम तीनों को टॉम, डिक और हैरी कहेंगे। कोई सवाल?"

बुल ने पूछा, 'हम दिशाओं के बारे में कब तक फैसला कर सकते हैं?'

'खैर, हम परोपकारी स्वभाव के लोग हैं, इसलिए मैंने सोचा कि हम नए परिसर के निर्माण में मदद के लिए कुछ कामगारों को भेजेंगे। वे लेआउट का प्रारंभिक सर्वेक्षण कर सकते हैं, जिससे हमें स्थानांतरण से पहले ही सर्वोत्तम स्थानों का अच्छा अंदाजा हो जाएगा,' रोजर ने उत्तर दिया।

'आपने कहा था कि निजी सुरंगों का निर्माण नहीं होगा,' कॉन्क ने सवाल उठाया, 'लेकिन अन्य योजनाओं के बारे में क्या? क्या आप अभी भी इक्का-दुक्का वायरिंग का काम करने की अनुमति देंगे?'

हां, मुझे लगता है कि हमें ऐसा करना ही पड़ेगा – अगर हम इन कोशिशों को पूरी तरह रोक दें, तो गुंडे भी समझ जाएंगे कि कुछ गड़बड़ है। लेकिन उन पर पहले से ज़्यादा कड़ी नज़र रखी जाएगी। मैं चाहता हूं कि एक समग्र योजना समिति हो जो हर एक कोशिश की ज़िम्मेदारी संभाले। कॉक, तुम तार विशेषज्ञ बनोगे, और नॉर्मन क्विल गेट से भागने की योजना बनाएगा। अगर किसी के पास कोई योजना है, तो उसे पहले इन लोगों से होकर गुज़रना होगा। एक बार उस स्तर पर मंज़ूरी मिल जाने के बाद, वे पूरी योजना समिति के सामने आएंगे। मैं ऐसी कोशिशें नहीं चाहता जिनसे गुंडे बेवजह भड़क उठें। हम यहां इसके लिए नहीं हैं।

'वैसे,' रॉजर ने आगे कहा, 'हमारी भागने की टीम पहले से कहीं बड़ी होने वाली है – इस योजना को अमल में लाने के लिए हमें बहुत सारे सामान की ज़रूरत पड़ेगी। नए परिसर में पहुँचते ही, मैं सर्किट पर मौजूद अलग-अलग विभागों के प्रमुखों के साथ सारी बारीकियों पर चर्चा करूँगा। सबसे ज़रूरी बात है कि योजनाएँ अभी तैयार कर ली जाएँ। खैर, अगर अब कोई सवाल नहीं है, तो मुझे लगा कि मैंने जॉनी मार्शल को हम सबको चाय पर बुलाते हुए सुना!'

“शायद मुझसे वो बात छूट गई,” मार्शल ने कराहते हुए कहा, “लेकिन इससे तुम भूखे कमीनों को कोई फर्क नहीं पड़ेगा! पर एक और सवाल है, रॉजर। तुम्हें क्या लगता है हम कितने लोगों को बाहर निकाल सकते हैं?”

‘पहली रात, मैं दो सौ लोगों को भेजने की योजना बना रहा हूँ। फिर हम उस छेद को बंद कर सकते हैं, और अगर वह तलाशी में बच जाता है, तो हम बाद में एक और जत्था भेज सकते हैं।’ उत्साह से भरे आत्मविश्वास के साथ, समूह चाय लेने के लिए रोजर के कमरे से बाहर निकला।

*

जैसे-जैसे नए परिसर का निर्माण आगे बढ़ा, क्रीगी (मज़दूरों) के दल मदद करने के लिए आगे आए। उन्होंने लकड़ी के ढेर इधर-उधर किए, पलंगों को एक के ऊपर एक रखा और पेड़ों के ठूंठ उखाड़े। उन्होंने कंक्रीट के बोरे उठाए, तार पेपर के गट्ठे इधर-उधर किए और गड्ढे भरे। देखने में तो वे बेहद मददगार साबित हो रहे थे।

हालांकि, उन्होंने विभिन्न झोपड़ियों से परिधि तार तक की दूरी नापी और पहरेदार टावरों की सटीक स्थिति का भी ध्यान रखा। उन्होंने नए परिसर का विस्तृत नक्शा तैयार किया और सुरंगों की शुरुआत कहाँ से की जा सकती है, यह देखने के लिए प्रत्येक झोपड़ी के आसपास छानबीन की। और, कमजोरी के एक क्षण में, कैदियों में से एक ने परिसर की भूमिगत जल निकासी प्रणाली का खाका चुरा लिया। वह उसे अपनी पतलून की जेब में छिपाकर वापस ले आया और शाम को गर्व से रोजर को दिखाया। जब बुशेल ने उसे देखा, तो उसके चेहरे पर एक शैतानी मुस्कान आ गई। उसने इसे अपने लेफ्टिनेंटों को दिखाया, और उन्होंने पाया कि कुछ नालियाँ बिल्कुल सही जगह पर बनी हुई थीं। वे सुविधाजनक झोपड़ियों से शुरू होकर परिधि तार के बहुत करीब तक जाती थीं। यदि नालियाँ काफी बड़ी होतीं, तो वे भागने की योजना बनाने वालों को एक तैयार सुरंग प्रदान कर सकती थीं। रोजर ने कहा कि नालियों की जांच एजेंडा का पहला काम होगा।

वसंत ऋतु के हिसाब से अभी भी काफी ठंड थी, और उत्तरी अफ्रीका अभियान से सागान आने वाले कैदियों को अपने रेगिस्तानी कपड़े बिल्कुल अनुपयुक्त लगे। ट्यूनीशिया में लड़ाई से आने वालों में जॉर्ज विलियम वाइली नाम का एक कनाडाई पायलट भी था, जिसका मासूम चेहरा उसे बेहद जवान दिखाता था। घर भेजे गए उसके पहले पत्र में ठंड का जिक्र था, और उसके माता-पिता ने तुरंत गर्म कपड़ों का एक पार्सल तैयार किया। उनके मन में अभी भी अपने बेटे की आवाज़ गूंज रही थी, जो उन्होंने कुछ ही महीने पहले सुनी थी।

प्रत्येक क्रिसमस दिवस पर, राजा के पारंपरिक संदेश से पहले मित्र देशों के कई सैनिकों द्वारा व्यक्तिगत शुभकामनाएँ देने की प्रथा थी। 25 दिसंबर, 1942 को, जब वाइली परिवार के घर में रेडियो चालू हुआ, तो वे अपने बेटे जॉर्ज की आवाज़ सुनने के लिए उत्सुकता से इंतज़ार कर रहे थे, जो काहिरा के एक अस्पताल से बोल रहा था जहाँ उसका पैर टूटा हुआ था। आवाज़ जीवन और आशा से भरी हुई लग रही थी, फिर भी इतनी धीमी और दूर से आ रही थी कि वाइली परिवार को यह याद दिलाकर दुख हुआ कि उनका इकलौता बेटा एक और क्रिसमस घर से दूर बिता रहा है।

24 जनवरी, 1922 को विंडसर, ओंटारियो में जन्मे जॉर्ज वाइली बचपन से ही बेहद खुशमिजाज और बेफिक्र स्वभाव के थे। स्कूल में युवा वाइली ने पढ़ाई में प्रतिभा दिखाई, लेकिन अक्सर उन्हें अन्य गतिविधियों में अधिक रुचि थी। उनके घर के आसपास की गलियाँ उनके लिए मनोरंजन का एक बेहतरीन स्रोत थीं, और जॉर्ज जॉनी जोन्स और गली के अन्य बच्चों के साथ खेलते हुए घंटों बिताते थे। सर्दियों में वे पास के पार्क में स्केटिंग करते या एक-दूसरे पर बर्फ के गोले फेंकते हुए इधर-उधर घूमते। महामंदी का सबसे बुरा दौर अभी आना बाकी था, और बच्चों के लिए वह एक बेहतरीन समय था।

हालांकि, बचपन में ही जॉर्ज को गठिया का बुखार हो गया, जिसके कारण वह महीनों तक बिस्तर पर पड़ा रहा और उसकी एक साल की पढ़ाई छूट गई। इससे उसके पैर में हल्का लंगड़ापन भी आ गया, जो बाद में ठीक हो गया, हालांकि उसका पैर पूरी तरह से ठीक नहीं हुआ। वह बुखार को अपने बचपन के मजे में बाधा नहीं बनने देना चाहता था, और जैसे ही वह दोस्तों से मिलने लायक ठीक हुआ, उसने जॉनी जोन्स को अपनी अमेरिकन फ्लायर इलेक्ट्रिक ट्रेन के साथ आने की अनुमति दी। दोनों लड़के खुशी से चिल्ला उठे जब जॉर्ज का इंजन जॉनी के इंजन के साथ छोटी सी धातु की पटरी पर दौड़ लगाने लगा, और श्रीमती वाइली ने जल्द ही उनके शोर के लिए उन्हें डांटना बंद कर दिया।

जब जॉर्ज वाइली ने हाई स्कूल में दाखिला लिया, तो उसने फुटबॉल और तैराकी में हाथ आजमाने का फैसला किया, लेकिन फिर भी उसका झुकाव पाठ्येतर गतिविधियों की ओर अधिक था। वह और जॉन जोन्स अक्सर साथ में मछली पकड़ने जाते थे, जहाँ वे सरसों के घोल से अपने बिलों से कीड़े निकालकर चारा लगाते थे। वे दोपहर का काफी समय थिएटर में भी बिताते थे, जहाँ वे मूंगफली खाते थे और लड़कों की तरह खूब शोर मचाते थे। जॉर्ज को सुर में गाने का हुनर था और वह शो के बाद हमेशा अपने तुरही पर संगीत की धुनें बजा सकता था।

जैसे-जैसे जॉर्ज बड़ा होता गया, उसका मौज-मस्ती करने का स्वभाव और भी निखरता गया। एक दिन, उसने और उसके कुछ दोस्तों ने क्लास बंक करके शहर से बाहर घूमने का फैसला किया। शहर से निकलते ही, घूमने की तीव्र इच्छा ने उन्हें इतना बांध लिया कि वे लगभग एक हफ्ते तक वापस नहीं लौटे। वे पाँच सौ मील से भी ज़्यादा का सफर तय करके मॉन्ट्रियल पहुँच गए थे। उन्हें अनुशासनात्मक कार्रवाई के लिए प्रधानाचार्य के सामने पेश किया गया, जो जॉर्ज और उसके दोस्तों से पहले से ही परिचित थे। उन्होंने पहले भी एक बार उनसे उनकी मॉडल टी फोर्ड कार के बारे में बात की थी, जो स्कूल के नीले और सुनहरे रंगों में रंगी हुई थी और जिसके लिए उन्होंने पाँच-पाँच डॉलर जमा किए थे। जाहिर है, प्रधानाचार्य को लगा कि इस तरह का प्रचार स्कूल की पार्किंग के लिए ठीक नहीं है।

पिछले वर्षों की तरह, जॉर्ज ने 1939 की गर्मियों के महीने अपनी बड़ी बहन के साथ एरी झील के किनारे पोर्ट स्टेनली में बिताए। इस साल उन्होंने जॉन जोन्स से वहीं मिलने का इंतज़ाम किया था और दोनों को साथ में लिफ्ट लेकर विंडसर वापस जाना था। जॉन सितंबर के पहले दिन वहाँ पहुँचे तो उन्होंने देखा कि उनका दोस्त एक घाट पर मछली पकड़ रहा था, जैसा कि उसने कहा, 'हमारे खाने के लिए'; मंदी अपने चरम पर थी और पैसे खत्म हो जाने के कारण परिवार सचमुच अलमारियों में बचे हुए सामान से ही गुज़ारा कर रहा था। उस रात जॉर्ज और जॉन खाली सूटकेस लेकर ग्रामीण इलाके में टहलने निकल गए। कुछ घंटों बाद दोनों ताज़ी सब्जियों से भरा सूटकेस लेकर वापस लौटे। जॉर्ज ने बेपरवाही से कहा, 'इससे हमारा सप्ताहांत निकल जाएगा।' यह एक महत्वपूर्ण सप्ताहांत था, बिजली जाने से पहले का आखिरी सामान्य सप्ताहांत।

घर लौटते समय, लड़कों ने एक हाइड्रो स्टेशन पर सशस्त्र गार्ड देखे और सेना में भर्ती होने के बारे में बात की। उन्होंने भर्ती के लिए मेडिकल जांच करवाई, लेकिन भर्ती होने वाले लोगों की संख्या अधिक होने के कारण, जॉर्ज को विंडसर में आरसीएएफ में भर्ती होने में 4 दिसंबर, 1940 तक का समय लग गया। वह कुछ ही समय बाद प्रशिक्षण के लिए रवाना हो गए और सितंबर 1941 में, प्रिंस एडवर्ड द्वीप के समरसाइड में उन्हें विंग्स और कमीशन प्राप्त हुआ। सितंबर के अंत में, वाइली इंग्लैंड पहुंचे और मई 1942 में उत्तरी अफ्रीका के लिए रवाना हुए। अगस्त में, उन्हें अलेक्जेंड्रिया के पास 112 स्क्वाड्रन में तैनात किया गया, जहां उन्हें सशस्त्र टोही अभियानों, जमीनी सहायता मिशनों और बमवर्षक हमलों के लिए कवर प्रदान करने के लिए किटीहॉक लड़ाकू विमान उड़ाने का काम सौंपा गया। वह एक शांत अवधि के दौरान यूनिट में पहुंचे, लेकिन स्क्वाड्रन जल्द ही फिर से सक्रिय हो गया।

स्क्वाड्रन के साथ उनके पहले दो महीने बिना किसी घटना के गुज़रे, लेकिन 7 अक्टूबर, 1942 को जॉर्ज के विमान पर लड़ाकू विमानों ने हमला कर दिया और उन्हें मित्र देशों की सेना

की सीमा रेखा के ठीक पीछे उतरने के लिए मजबूर होना पड़ा। उन्होंने किटीहॉक को नीचे उतारने के लिए चक्कर लगाया, लेकिन दुर्भाग्य से उनका विमान बारूदी सुरंगों से भरे क्षेत्र में उतर गया। लड़ाकू विमान एक बारूदी सुरंग से टकरा गया जिससे उसका एक पंख उड़ गया और जॉर्ज के पैर और टखने में फ्रैक्चर हो गया। काहिरा के अस्पताल में उनके पैर में एक पिन डाली गई, लेकिन गठिया के बुखार से कमज़ोर हो चुके उनके पैर को ठीक होने में सामान्य से अधिक समय लगा। उनके माता-पिता को उम्मीद थी कि उनके बेटे को छुट्टी दे दी जाएगी, लेकिन अपने क्रिसमस संदेश में वाइली ने दृढ़ता से कहा कि जैसे ही वह ठीक होंगे, स्क्वाड्रन में वापस लौट आएंगे।

13 जनवरी 1943 को, पैर कमजोर होने के बावजूद, वह वापस लौटे और लगभग तुरंत ही फिर से काम करने लगे। जॉर्ज का दुर्भाग्य पीछा नहीं छोड़ रहा था, क्योंकि युद्ध में लौटने के कुछ ही समय बाद उनका जर्मन लड़ाकू विमानों से फिर से सामना हुआ और वे अपने विमान में चालीस से अधिक छेद के साथ बेस पर वापस लौटे। ग्राउंड क्रू यह देखकर हैरान था कि इतने व्यापक एयर कंडीशनिंग सिस्टम वाला किटीहॉक विमान अभी भी उड़ सकता है।

1943 के शुरुआती महीनों में, स्क्वाड्रन मिस्र, लीबिया और त्रिपोलिटानिया से होते हुए पश्चिम की ओर बढ़ा और मार्च तक ट्यूनीशिया पहुँच गया, जहाँ उसे आठवीं सेना के मारेथ लाइन पर हमले के लिए सहायक मिशनों पर तैनात किया गया। 10 मार्च को, 112 स्क्वाड्रन को एक स्वतंत्र फ्रांसीसी सेना को कवर देने का काम सौंपा गया, जो मित्र देशों से जुड़ने के लिए सहारा रेगिस्तान पार कर रही थी। दो अन्य लड़ाकू स्क्वाड्रन 112 को शीर्ष कवर दे रहे थे, इसलिए यह एक सामान्य मिशन होना चाहिए था, लेकिन किसी तरह सहायक स्क्वाड्रनों का संपर्क टूट गया, और 112 पर दुश्मन के लड़ाकू विमानों ने हमला कर दिया। किटीहॉक स्क्वाड्रन श्रेष्ठ Me 109 के सामने टिक नहीं पाए और जॉर्ज वाइली के विमान सहित छह विमान मार गिराए गए। जॉर्ज के लिए यह तीसरी बार दुर्भाग्यपूर्ण साबित हुआ। दिशा का पता न होने के कारण, वह दो दिनों तक रेगिस्तान में भटकता रहा, जब तक कि एक जर्मन गश्ती दल ने उसे नहीं बचा लिया। यह अच्छा ही हुआ कि उसे ढूंढ लिया गया, क्योंकि उसका कमजोर पैर शायद उसे ज्यादा दूर तक नहीं ले जा पाता। उत्तरी अफ्रीका में एक जर्मन परिसर में कुछ दिन बिताने के बाद, उन्हें इटली ले जाया गया और वहाँ से लुफ़्ट III में भेज दिया गया। वे ठीक उसी समय पहुँचे जब कई बड़ी घटनाएँ घट रही थीं।

अध्याय 8

उत्तरी परिसर खुलता है

1943 की वसंत ऋतु तक, लूफ़्टवाफ़े ने सभी गैर-कमीशन प्राप्त अधिकारियों को सागन परिसर से बाहर निकालने और शिविर को अधिकारियों के लिए एक सुविधा केंद्र में बदलने का निर्णय लिया था। नए कैदियों के आगमन की तैयारी में, श्रम बटालियनें लूफ़्ट III के कमांडेंटुर के चारों ओर नए परिसर बनाने में तेज़ी से लगी हुई थीं, जो धीरे-धीरे युद्धबंदियों के विशाल समूह के बीच एक प्रशासनिक द्वीप बनता जा रहा था। शिविर के कैदियों ने निर्माण कार्य को बड़ी दिलचस्पी से देखा था, और मार्च में उन्हें पता चला कि नया परिसर उनके लिए तैयार है। गार्डों से हुई बातचीत से यह स्पष्ट था कि शिविर के कर्मचारियों का इरादा नए परिसर को उनके पुराने घर की तुलना में भागने से ज़्यादा सुरक्षित बनाने का था। वहीं, भागने वाले नेताओं ने इसे अपने सबसे बड़े भागने के अभियान के लिए युद्धक्षेत्र के रूप में चुना था।

*

सागन का नया परिसर आखिरकार मार्च में तैयार हो गया, और कैदियों को 27 तारीख से वहाँ ले जाना शुरू किया गया। सबसे पहले एक अग्रिम दल गया, उसके बाद पोलिश, अमेरिकी और अंत में बाकी समूह। कुल मिलाकर, 850 क्रीगी (कैदी) उस स्थान पर पहुँचे जिसे बाद में उत्तरी परिसर के नाम से जाना गया। कुछ हफ़्ते बाद, वारबर्ग से पचास और कैदियों को वहाँ लाया गया।

उत्तरी परिसर मूलतः पूर्वी परिसर के समान ही था, जिसे उनका पुराना शिविर कहा जाता था। यह लगभग 350 गज वर्ग में फैला हुआ था, जिसकी परिधि पर नौ फीट ऊँची और पाँच फीट की दूरी पर बाड़ लगी हुई थी और चेतावनी तार मुख्य बाड़ से पूरे तीस फीट की दूरी पर था। लगभग हर 150 गज की दूरी पर एक पहरेदार मीनार थी। पंद्रह बैरक ब्लॉक तीन पंक्तियों में व्यवस्थित थे। द्वार के सबसे निकट झोपड़ियाँ 101 और 103 से 106 थीं; फिर 107 से 110 और 112, और अंत में 119 से 123 थीं। परिसर के मध्य में एक चूल्हा था, और मुख्य रसोई ब्लॉक झोपड़ियों 110 और 112 के बीच स्थित था। उत्तरी परिसर से सटा हुआ एक छोटा सा वोरलागर था जिसमें पहरेदार कक्ष, अस्पताल, कोयला भंडार और, ज़ाहिर है, ठंडा करने का कमरा था।

प्रत्येक ब्लॉक में अठारह कमरे थे, जिनमें से प्रत्येक में चार अधिकारी रहते थे, और तीन या चार कमरे दो पुरुषों के लिए बनाए गए थे। इनमें कंक्रीट के फर्श वाला एक वॉशरूम, एक शौचालय और दो बर्नर वाले कोयले के चूल्हे और एक ओवन से सुसज्जित एक छोटी रसोई भी थी। कुल मिलाकर, कमरे काफी आरामदायक दिखते थे। प्रत्येक कमरे में बंक बेड, बर्तन धोने के लिए एक सूखा सिंक और एक बड़ी मेज थी जो कमरों में गतिविधियों का केंद्र बन गई थी। कैदियों के सामान रखने के लिए सीधे खड़े लॉकर दिए गए थे, और खाना पकाने और गर्म करने के लिए एक छोटा चूल्हा भी था। जर्मनों ने क्रिगीज़ को कमरों को अधिक आरामदायक बनाने के लिए उनमें बदलाव करने की अनुमति दी थी। सभी फर्नीचर चलित थे और उन्हें आसानी से इधर-उधर किया जा सकता था। कुछ कमरों में चूल्हे को दीवार से थोड़ा दूर करके उसके पीछे एक बेंच रख दी गई, जबकि अन्य ने बंक बेड को अलग करके सिंगल बेड बना दिए। बाद में, जब प्रत्येक

कमरे में कैदियों की संख्या छह, आठ और उससे अधिक हो गई, तो कमरे में अतिरिक्त जगह बनाने के लिए कुछ सीधे खड़े लॉकरों को गलियारों में ले जाया गया।

अगर आपको सामान मिल जाता, तो आप अपना फर्नीचर खुद बना सकते थे। कुछ लोगों ने रेड क्रॉस के पैकिंग केस से बढ़िया आर्मचेयर बनाईं, जबकि दूसरों ने स्टूल, बुककेस और शेल्फ बनाए। लगभग हर कमरे की दीवार पर यूरोप का एक बड़ा नक्शा लगा होता था; युद्ध की स्थिति का नक्शा बनाकर उस पर विस्तार से चर्चा की जाती थी। जब भी दिन की बीबीसी न्यूज़ आती, जो गार्डों से रिश्वत लेकर बनाए गए रेडियो पर आती थी और झोपड़ियों में 'न्यूज़कास्टर्स' की टीम द्वारा पढ़ी जाती थी, तो क्रीगीज़ अपने नक्शों के आसपास इकट्ठा होकर मोर्चे की रेखाओं को चिह्नित करने वाली पिन और धागों को बदलते रहते थे।

अपने वादे के मुताबिक, रॉजर ने नए परिसर में पहुँचते ही सबसे पहले हेनरी लैमंड को नालियों की जाँच करने के लिए भेजा। आखिरकार, वह छोटा सा न्यूज़ीलैंडवासी ग्रीस से सना हुआ और चेहरे पर नाराज़गी लिए हुए वापस लौटा।

'बिल्कुल नहीं,' उसने हताशा से कहा और अपने हाथों से लगभग छह इंच का एक घेरा बनाया। वहाँ जमा हुए खुदाई करने वाले लोग आहें भरने लगे।

'सच में, इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है,' रॉजर ने कहा। 'गुंडों ने इस परिसर की बहुत सावधानी बरती है – हमें तो यह सोचना भी नहीं चाहिए था कि वे ऐसी किसी बात पर चूक कर देंगे। चिंता की कोई बात नहीं – जैसे ही लड़के शांत हो जाएंगे और उनके मन की घबराहट दूर हो जाएगी, हम असली काम शुरू कर देंगे।'

एक नए परिसर और संभावनाओं के एक बिल्कुल नए समूह का सामना करते हुए, भागने का जुनून उन लोगों में इस हद तक हावी हो गया कि एक्स संगठन (स्टालैग लुफ्ट III का भागने वाला संगठन) को सभी प्रयासों को अधिकृत करने के अपने पारंपरिक अधिकार को छोड़ना पड़ा। रॉजर किसी भी साहसी योद्धा को अपना आशीर्वाद (एक नक्शे और एक कंपास के साथ) देने के लिए तैयार था, लेकिन अधिकांश लोग पहले उपयुक्त अवसर पर ही कोशिश करने के लिए संतुष्ट थे।

भागने का सबसे आम तरीका उन ट्रकों का इस्तेमाल करना था, जिनका उपयोग परिसर में काटे जा रहे चीड़ के पेड़ों की शाखाओं को ले जाने के लिए किया जाता था। जैसे ही ट्रक झोपड़ियों के पास से गुजरते, दर्जनों युद्धबंदी छतों से सदाबहार पेड़ों की शाखाओं में कूद जाते और जितना हो सके नीचे तक घुस जाते। यह इतना आम तरीका हो गया था कि ऐसा ट्रक मिलना मुश्किल हो गया था जिसमें पहले से ही कई भागने की कोशिश करने वाले लोग शाखाओं में छिपे न हों; जॉनी स्टोवर को चार अन्य लोगों के साथ एक ट्रक से उतारा गया। रेड नोबल किसी तरह एक ट्रक में अकेले घुसने में कामयाब रहा और बिना किसी की नजरों में आए गेट से निकल गया। दुर्भाग्य से, उसे भागने की योजना बनाने वाली संस्था ने जल्द से जल्द ट्रक खाली करने की सलाह दी थी, और वह शिविर से दूर सड़क पर तैनात पहरेदारों की कतार के हाथों में उतर गया।

कुछ लोगों को ट्रकों में चढ़ने से पहले ही देख लिया गया। लेस हार्वे एक ट्रक में चढ़ने ही वाला था कि उसने देखा कि रबरनेक उसे आधी मुस्कान के साथ देख रहा है। सौभाग्य से, हार्वे समय रहते वहाँ से निकल गया और जेल जाने से बच गया। बाकी लोग इतने भाग्यशाली नहीं थे और गार्डों के हाथों में आए भाले का शिकार हो गए। वे लंगड़ाते हुए एकांत कारावास में ले जाए गए, जहाँ उनके शरीर पर गहरे घाव थे और उनकी इज़्ज़त को ठेस पहुँची थी।

ऑस्ट्रेलियाई ज्योफ कॉर्निश और चेक गणराज्य के इवो टोंडर थोड़े ज़्यादा चतुर थे और उन्होंने सोवियत कैदियों के उन समूहों का फ़ायदा उठाने का फ़ैसला किया जो पेड़ काटने के लिए शिविर में आते थे। पोलिश सेना के ओवरकोट पहने और कुछ दिन बढ़ी दाढ़ी के साथ, वे गेट की ओर बढ़ रहे सोवियत कैदियों के एक समूह के विपरीत छोरों में घुस गए और आज़ादी की ओर बढ़ने ही वाले थे कि टोंडर ने टावर के एक गुंडे की आवाज़ सुनी। खेल खत्म होते देख, इवो ने

उधार लिया हुआ ओवरकोट उतारा और पास के सैनिकों के झुंड की ओर भागा। हालांकि, कॉर्निश ने गार्ड की आवाज़ तब तक नहीं सुनी जब तक बहुत देर हो चुकी थी और जल्द ही उसने अपने पूरे समूह को राइफल लिए संतरियों से घिरा पाया जो घुसपैठिए को ढूंढने की कोशिश कर रहे थे। हमेशा की तरह, सोवियत सैनिकों ने अपने ही एक साथी को आगे धकेल दिया, जिसने विरोध करने के बावजूद, दावा किया कि वह अंग्रेज है। इस समय तक गेट गार्ड को थोड़ा शक हो गया था और उसने पीबर को बुलाया, जिसने कॉर्निश को पहचान लिया और उसे समूह से बाहर निकालकर अब फूल चुके कूलर में कुछ देर के लिए रख दिया। वहाँ उसकी बदहाल हालत देखकर कुछ पहरेदारों ने उसे एक उपनाम दे दिया। उन्होंने उसका नाम इवान डेर श्रेक्लिच (इवान द टेरिबल) रख दिया।

इन सभी प्रयासों में से केवल एक ही सफल रहा: आरएएफ ईगल स्क्वाड्रन के दो अमेरिकी सैनिक, जो अपने छोटे कद के कारण कामयाब हुए। झोपड़ी की छत से कूदने के बजाय, वे बचे हुए चीड़ के पेड़ों में से एक पर चढ़ गए और ऊपरी शाखाओं की आड़ से ट्रक की छत पर कूद गए। दोनों पेड़ों की छतरी के नीचे इतनी गहराई तक घुस गए कि किसी की नज़र उन पर न पड़े और जल्द ही वे तारबंदी के बाहर पहुँच गए। हालाँकि, उनके पास पर्याप्त उपकरण नहीं थे, इसलिए वे ज़्यादा दूर नहीं जा सके और अगले दिन उन्हें वापस ले लिया गया और उनके साथी साहसी सैनिकों के साथ जेल में डाल दिया गया।

इसके तुरंत बाद, रेड नोबल ने राख ढोने वाली गाड़ी को संभालने का फैसला किया, जो शिविर के भस्मक संयंत्रों से कचरा इकट्ठा करके उसे तारबंदी के बाहर जमा करती थी। एक बनावटी झगड़े का बहाना बनाकर, नोबल गाड़ी में चढ़ गया और खुद को राख में दबा लिया, ताकि गाड़ी के शिविर से ओझल होते ही वह बाहर निकलने के लिए खुदाई कर सके। लेकिन जब समय आया, तो उसने निराशा से पाया कि वह बहुत गहराई में दब गया था और गीली राख के भारी ढेर के नीचे से बाहर नहीं निकल पा रहा था। मन ही मन कोसते हुए, वह असहाय होकर इंतजार करता रहा क्योंकि गाड़ी योजनाबद्ध भागने के स्थान से आगे निकलकर सीधे ईस्ट कंपाउंड में चली गई, जहाँ राख के नीचे संघर्ष करते हुए उसे देखकर एक गार्ड ने उसे बाहर खींच लिया।

*

उत्तरी परिसर में शुरुआती दिनों में जो दो लोग नहीं पहुँच पाए, उनमें कनाडाई नागरिक किंग्सले ब्राउन और एक हट्टे-कट्टे लड़ाकू पायलट गॉर्डन ब्रेटेल शामिल थे। नए परिसर में निर्माण कार्य चल रहा था, तभी गॉर्डन और किंग्सले ने काम करने वाले दल के कुछ सहायकों से अपनी जगह बदल ली और तारबंदी के पास एक झोपड़ी में छिप गए। पीबर ने बैरक की सरसरी तलाशी ली, लेकिन उन्हें नहीं देखा, जो लकड़ी के गट्ठों के ढेर में छिपे हुए थे। रात होते ही, बिना पहरे वाली तारबंदी से निकल जाना आसान हो गया। भेष बदलने के लिए, जर्मन भाषा में पारंगत गॉर्डन और किंग्सले ने कारखानों के बीच यात्रा करने वाले बल्गेरियाई इस्पात श्रमिकों के रूप में जाने का फैसला किया और उनके पास पासपोर्ट, नक्शे, पैसे और मुलहाउस और स्ट्रासबर्ग में सुरक्षित पते थे। उन्हें पश्चिम की ओर यात्रा का पहला भाग पैदल तय करना था और फिर फ्रांसीसी सीमा तक की शेष यात्रा के लिए ट्रेन पकड़नी थी।

दोनों ने 27 मार्च, 1943 को लुफ़्ट III छोड़ दिया और पश्चिम की ओर जाने से पहले दक्षिण की ओर वापस मुड़ गए। रात साफ़ और सुहावनी थी, यात्रा के लिए आदर्श, और उन्होंने चीड़ के पेड़ों के बीच से अच्छी प्रगति की। एक-दो बार उन्हें गश्ती पुलिसकर्मियों के संकरे रास्ते से साइकिल पर गुजरते समय छिपना पड़ा, लेकिन इसके अलावा, पहली रात बिना किसी घटना के गुज़री। जंगलों में एक और दिन पैदल चलने के बाद, जिसमें कभी-कभार एक छोटी राजमार्ग पर सैर भी शामिल थी, गॉर्डन और किंग्सले ने फैसला किया कि वे सागन से इतनी दूर आ गए हैं कि

ट्रेन से यात्रा करने का जोखिम उठा सकते हैं और सोराऊ शहर के स्टेशन की ओर चल पड़े। उन्होंने कॉटबस के लिए तृतीय श्रेणी के टिकट खरीदे, जहाँ वे उतरे और लीपज़िग जाने वाली ट्रेन में चढ़ने से पहले स्टेशन के रेस्तरां में गर्म भोजन किया।

यात्रा के उस पड़ाव पर एक अजीब घटना घटी। गॉर्डन और किंग्सले खुद को पाँच जर्मन सैनिकों के साथ एक डिब्बे में पाए और कुछ देर बाद एक छठा सैनिक भी उनके साथ आ गया, जिसने गर्व से अफ़्रीका कोर की वर्दी पहन रखी थी। बैठने से पहले उसने उन धूसर वर्दीधारी सैनिकों को घमंडी निगाहों से देखा और थोड़ी देर रुकने के बाद अपनी टुकड़ी की शान-शौकत का बखान करने लगा। अन्य सैनिकों की स्पष्ट ईर्ष्या से प्रेरित होकर, वह और भी जोश में आ गया और न केवल अपनी सेना के साजो-सामान का वर्णन करने लगा, बल्कि उनके वर्तमान ठिकाने और आगामी गतिविधियों के बारे में भी बताने लगा।

भागने वाले लोग उस एकालाप को बड़े चाव से सुन रहे थे, क्योंकि विडंबना यह थी कि वह युवक एक बड़े और भड़काऊ प्रचार पोस्टर के ठीक नीचे बैठा था, जिस पर लिखा था, 'तीसरे व्यक्ति से सावधान!! दुश्मन के कान हैं!!' इस विसंगति ने गॉर्डन के हास्यबोध को गुदगुदाया, और उसने अपने चेहरे के सामने एक अखबार सरसराया ताकि वह किंग्सले से फुसफुसा सके।

'जानते हो,' उसने धीमी आवाज़ में कहा, 'मेरा मन कर रहा है कि उस लड़के के घुटने पर हल्के से थपथपाऊँ, उस बोर्ड की ओर इशारा करूँ और कहूँ: "सावधान रहना, मेरे दोस्त, कहीं हम ब्रिटिश पुलिस वाले न हों।"' यह टिप्पणी उसके स्वभाव के बिल्कुल अनुरूप थी, क्योंकि गॉर्डन ब्रेटेल में दिलेरी की झलक होना तो बहुत कम होगा। दरअसल, वह पहले भी कई बार बाल-बाल बच चुका था, जिनमें से अधिकतर एक प्रबल अंतर्मन की आवाज़ के कारण थीं जो उसे कुछ खतरनाक कारनामे करने के लिए उकसाती थी। हालाँकि वह कभी मूर्खतापूर्ण जोखिम नहीं लेता था, लेकिन वह चुनौतियों से पीछे हटने वालों में से भी नहीं था।

एक बार गॉर्डन को लंदन ओलंपिया में 'वॉल ऑफ डेथ' नामक आकर्षण देखने का मौका मिला, जहाँ 'टॉरनेडो' स्मिथ नाम का एक राइडर एक खड़ी धातु की कटोरी के चारों ओर मोटरसाइकिल चलाता था और प्रदर्शन के अंत में वह कटोरी की ऊर्ध्वाधर दीवार के अंदर चक्कर लगा रहा होता था। रोमांच की भावना जागृत होने पर, गॉर्डन ने और अधिक जानने का फैसला किया और स्मिथ से पूछा कि क्या वह यात्रियों को भी सवारी कराता है। एक मैकेनिक ने कहा कि वह ज़रूर कराता है, लेकिन उसे गैसोलीन टैंक पर बैठना होगा और अपने पैर हैंडलबार पर रखने होंगे, सहारा लेने का कोई और साधन नहीं होगा। ब्रेटेल को वैसे भी मोटरसाइकिलों पर कभी सहज महसूस नहीं होता था, और इस तरह की सवारी की संभावना उसके लिए असहनीय थी; वह भीड़ में गायब हो गया और इधर-उधर भटकने लगा।

जैसे ही गॉर्डन ओलंपिया से निकले, उनका अंतरात्मा उन्हें कचोटने लगा, जैसा कि उन्होंने बाद में अपनी बहन को लिखा। एक अंदरूनी आवाज़ उन्हें बार-बार कह रही थी कि उन्होंने 'वॉल ऑफ़ डेथ' को पार करने से मना कर दिया है, सुबह जगा देती थी और रात को सोने से पहले उन्हें ताने मारती थी। 'तुम हर चीज़ को एक बार आज़माने के लिए तैयार रहते हो। तुम ऊँचे स्वर में कहते हो कि अगर युद्ध हुआ तो तुम वायु सेना में भर्ती हो जाओगे,' वह आवाज़ निर्दयता से कहती थी, 'और तुमने 'वॉल ऑफ़ डेथ' को पार करने से मना कर दिया।' ब्रेटेल इसे और बर्दाश्त नहीं कर सके। उन्होंने लंदन का टिकट खरीदा और सीधे ओलंपिया के लिए रवाना हो गए। क्रू उन्हें वापस देखकर हैरान था, लेकिन उन्होंने उन्हें स्मिथ की मोटरसाइकिल पर बिठाया और दोनों ने 'वॉल ऑफ़ डेथ' का चक्कर लगाना शुरू कर दिया। यह कोई बहुत अच्छी सवारी नहीं थी, क्योंकि जैसे ही वे खड़ी चढ़ाई वाले हिस्से पर पहुँचे, गॉर्डन ने हैंडल पर अपना संतुलन खो दिया और स्मिथ को धीमा होना पड़ा वरना वे नियंत्रण खो देते। फिर भी, 'वॉल ऑफ़ डेथ' को पार कर लिया गया था, और गॉर्डन और उनकी अंतरात्मा का मेल हो गया था। उन्होंने लिखा, 'मुझे कभी न कभी ठीक से दौड़ने के लिए फिर से जाना चाहिए, लेकिन कोई खास जल्दी नहीं है!'

एडवर्ड गॉर्डन ब्रेटेल का जन्म 19 मार्च 1915 को सरे के पिरफोर्ड में हुआ था। वे अपने छोटे

भाई-बहनों सिंथिया और टेरेंस के साथ चेर्टसी में पले-बढ़े। पंद्रह वर्ष की आयु में उन्हें पहली बार गंभीर संक्रमण हुआ, जब उनकी मास्टॉयडाइटिस की सर्जरी हुई। संक्रमण उनके चेहरे के बाईं ओर फैल गया और कई और ऑपरेशन के बावजूद, यह आशंका थी कि वे शायद जीवित न रह पाएं। हालांकि, वे एक जुझारू योद्धा थे और अंततः ठीक हो गए, हालांकि उन्हें कभी-कभी बेहोशी के दौरे पड़ते थे। समय के साथ, उनकी बीमारी के केवल चेहरे पर निशान ही रह गए।

उस दौर के कई लड़कों की तरह, गॉर्डन को भी बचपन से ही उड़ने में दिलचस्पी थी, लेकिन जल्द ही उनकी यह दिलचस्पी एक और चीज़ में बदल गई। 1932 में उनके एक चाचा गॉर्डन को पास के ब्रुकलैंड्स में एक मोटर रेस दिखाने ले गए, और वह उत्साह से भरे घर लौटे। जब वह और टेरेंस उसी साल बाद में फिर से गए, तो उन्हें मोटर रेसिंग का चस्का लग गया। दोनों भाई हर संभव रेस में जाते थे, लेकिन 1936 में जब गॉर्डन ने कैम्ब्रिज के क्लेयर कॉलेज में दाखिला लिया, तब जाकर उन्हें मोटर रेसिंग में शामिल होने का मौका मिला। वह कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी मोटर क्लब के सचिव बने और उन्होंने एक छोटी सी ऑस्टिन सेवन को दो सीटों वाली रेसिंग मशीन में बदल दिया, जिसकी अधिकतम गति सत्तर मील प्रति घंटा थी। हालांकि 1936 की आखिरी रेस में उनकी होनहार एंट्री यांत्रिक समस्याओं के कारण बेकार हो गई, लेकिन गॉर्डन की रेसिंग की भूख और भी बढ़ गई। उन्होंने एक तेज़ कार, ऑस्टिन अल्स्टर, को चुना, जिसे उन्होंने एक बहुत ही संकरी सिंगल-सीटर में बदल दिया, और 1937 की ईस्टर मंडे रेस में उन्होंने पहला और तीसरा स्थान हासिल किया, जिससे आयोजक आश्चर्यचकित रह गए। उनकी अगली रेस प्रतिष्ठित ब्रिटिश माउंटेन हैंडीकैप थी और ईस्टर पर उनके शानदार लेकिन कुछ हद तक बेबाक प्रदर्शन के कारण आयोजकों ने गॉर्डन पर भारी हैंडीकैप लगा दिया। इस कमी को पूरा करने और फाइनल में जगह पक्की करने के प्रयास में, उन्होंने अपनी पूरी ताकत लगा दी और हीट में पूरी रफ्तार से गाड़ी चलाई। ब्रेटेल फाइनल में जगह बनाने के करीब ही थे कि उन्होंने एक मोड़ पर बहुत तेज़ी से गाड़ी मोड़ी और ब्रुकलैंड्स के ऊंचे किनारे से ऊपर उछल गए। एक रिपोर्टर के शब्दों में, उन्होंने 'चरम सीमा पर तब पहुंचे जब धीमी गति से भी काम चल सकता था' और किनारे के ऊपर पेड़ों में उल्टा गिर पड़े। उनकी बाईं बांह छह जगह से टूट गई और गॉर्डन रेस से बाहर हो गए। जिस गति से वह दौड़ रहे थे, उस हिसाब से उनका बच जाना एक चमत्कार ही था।

आश्चर्यजनक रूप से, वह जुलाई की शुरुआत तक फिर से रेस करने के लिए फिट हो गए थे, और उन्होंने 1937 सीज़न के बाकी बचे समय में भी अच्छा प्रदर्शन जारी रखा। अगले वर्ष उन्हें और भी सफलता मिली और अपनी आखिरी रेस में, ब्रेटेल ने कई नई और तेज़ कारों को पछाड़कर चौथा स्थान हासिल किया। दुर्भाग्य से, रेसिंग का बजट हमेशा से ही सीमित था, और 1938 के अंत में पैसा पूरी तरह खत्म हो गया। गॉर्डन 1939 की डोनिंगटन ट्रॉफी रेस के लिए एक दोस्त के साथ टीम बनाने की उम्मीद कर रहे थे, लेकिन युद्ध शुरू होने से उनकी योजनाएँ बाधित हो गईं।

1936 में चिकित्सा कारणों से कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के वायु स्क्वाड्रन में प्रवेश से इनकार किए जाने के बाद, गॉर्डन को अब उड़ान भरने का मौका मिला और उन्होंने और टेरेंस ने आरएएफ में सेवा के लिए स्वेच्छा से आवेदन किया। उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि एक रूखे भर्ती अधिकारी ने उनका गर्मजोशी से स्वागत नहीं किया। अधिकारी ने केवल उनके नाम लिए, उन्हें आगे की सूचना की प्रतीक्षा करने को कहा और उन्हें शुभ दिन की शुभकामनाएं दीं। दोनों ने आज्ञाकारी रूप से सूचना की प्रतीक्षा की, लेकिन जब कोई खबर नहीं आई, तो उन्होंने खुद को उपयोगी साबित करने के लिए ब्रुकलैंड्स स्थित विकर्स कारखाने में नौकरी करने का फैसला किया।

18 जून, 1940 को ही उन्हें मेडिकल जांच के लिए बुलाया गया, और टेरेंस फ्लू के कारण तुरंत ही असफल हो गया। हालांकि, गॉर्डन मेडिकल जांच में पास हो गया और सितंबर में प्रशिक्षण शुरू कर दिया। इंतज़ार करना सार्थक रहा, क्योंकि उसे प्रशिक्षण अभ्यास बहुत पसंद थे और वह मोटर रेसिंग की तरह ही उड़ान भरने का भी आनंद लेता था। एक बार वह टेरेंस को

माइल्स मैजिस्टर ट्रेनर में लेकर गया और कुछ देर उड़ान भरने के बाद उसने परिवार के घर के ऊपर से उड़ने का फैसला किया। जैसे ही छोटा विमान धरती की ओर तेज़ी से बढ़ा, टेरेंस ने एयरस्पीड इंडिकेटर को बड़ी खुशी से देखा, जो 145 मील प्रति घंटे की रफ्तार को पार करते हुए 150 के करीब पहुंच रहा था। ज़मीन पर वापस आकर, गॉर्डन ने बाद में अपनी धीमी उड़ान के लिए माफ़ी मांगी। उसने टेरेंस से कहा, 'मैं बहुत तेज़ नहीं उड़ा। मुझे बताया गया है कि 140 की रफ्तार पर तो पंख टूट सकते हैं!'

फरवरी 1941 तक ब्रेटेल ने अपना प्रशिक्षण पूरा कर लिया था और उन्हें कमीशन मिल गया था। 58 ओटीयू के साथ एक महीने बिताने के बाद, 31 मार्च को उन्हें बिगिन हिल स्थित प्रतिष्ठित 92 स्क्वाड्रन में तैनात कर दिया गया। 1941 के शेष समय में उन्होंने महाद्वीप पर कई हवाई अभियानों में भाग लिया और एक बार युद्ध में घायल भी हुए। सितंबर 1941 में, गॉर्डन अपने साथियों से बिछड़ गए और अकेले घर लौट रहे थे जब उन्होंने दो मेसेरश्मिट विमानों को दूसरी दिशा में उड़ते हुए देखा। जैसे ही उन्होंने हमलावर 109 विमानों से बचने के लिए सूर्य की रोशनी में अपना सिर घुमाया, दुश्मन के नौ विमान चमकते सूरज से निकले और फ्रांसीसी तट तक उनका पीछा किया। वह काफी अच्छी स्थिति में थे जब एक लड़ाकू विमान से बचने के लिए मुड़ते समय, वह दूसरे विमान के रास्ते में आ गए और उनके पंख और कॉकपिट में तोप के गोले लगे। सिर में गंभीर रूप से घायल गॉर्डन ने बिगिन को रेडियो पर सूचना दी कि वह समुद्र में गिर रहे हैं और बेहोश हो गए। जैसे ही स्पिटफायर नीचे की ओर चक्कर लगाते हुए गिरने लगा, वह धीरे-धीरे होश में आया और, उसके अपने शब्दों में, 'मेरी काली दुनिया लाल हो रही थी और मैं धुंधली सी स्पिटफायर की लाल नोक को गहरे लाल समुद्र की ओर इशारा करते हुए देख पा रहा था।' उसने स्पिटफायर को सुस्त पाया और वह अभी भी अपने हमलावरों से पीछा छुड़ाने में असमर्थ था, जो उस पर 'ईंटों के ढेर की तरह' लगातार हमला कर रहे थे, इतनी अंधाधुंध गोलीबारी कर रहे थे कि यह लगभग हास्यास्पद लग रहा था। एक बार फिर, गॉर्डन का भाग्य मेहरबान हुआ, क्योंकि 109 विमानों को जल्द ही वापस लौटना पड़ा, और ब्रेटेल को घायल विमान को इंग्लैंड ले जाने के लिए अकेला छोड़ दिया गया। उसने दिखाई देने वाली पहली समतल भूमि को चुना और बेहोश होने से पहले एक अच्छी लैंडिंग की।

ब्रेटेल को उनकी वीरता के लिए डीएफसी से सम्मानित किया गया और चोटों से उबरने के लिए उन्हें उड़ान कर्तव्यों से आराम दिया गया। 6 जनवरी, 1942 को वे फिर से कार्रवाई में शामिल हुए, इस बार 124 स्क्वाड्रन के साथ, और जुलाई के अंत तक उनके साथ उड़ान भरी। 2 अगस्त को नव पदोन्नत फ्लाइट लेफ्टिनेंट ब्रेटेल, आरएएफ के प्रसिद्ध ईगल स्क्वाड्रनों में से एक, 133 स्क्वाड्रन में शामिल हुए।

अमेरिकी सैनिक गॉर्डन से तुरंत प्रभावित हो गए, क्योंकि वे उन्हें एक आदर्श अंग्रेज सज्जन मानते थे। जल्द ही गॉर्डन ने स्क्वाड्रन में अपनी पहचान बना ली। 19 अगस्त को डाइपे के ऊपर, उन्होंने तीन जर्मन विमानों को नष्ट करने और सात अन्य को क्षतिग्रस्त करने में अहम भूमिका निभाई। हालांकि, उन्होंने एक और तरीके से भी अपनी छाप छोड़ी। बेस पर एक शोरगुल भरी पार्टी में, गॉर्डन ने एक युवा महिला वायुसैनिक को यह वादा करके थोड़ी देर और रुकने के लिए मना लिया कि पार्टी के बाद वह उसे उसके स्टेशन तक वापस छोड़ देंगे। सुबह-सुबह, उन्होंने लड़की को स्पिटफायर के कॉकपिट में बिठाया और वादे के मुताबिक उसे घर पहुँचा दिया। दुर्भाग्य से, वह अपनी टोपी विमान में ही भूल गई थी, और उससे शर्मनाक सवाल पूछे गए। यह देखने में तो एक हानिरहित घटना थी, लेकिन स्टेशन कमांडर ने गॉर्डन को फटकार लगाई और स्क्वाड्रन विमान में एक अनाधिकृत यात्री को ले जाने के लिए उन्हें कोर्ट-मार्शल का सामना करने के लिए कहा। हालांकि, वह कभी उस कोर्ट-मार्शल का सामना नहीं कर पाए।

26 सितंबर, 1942 को, 133 स्क्वाड्रन को ब्रिटनी प्रायद्वीप पर मोरलेक्स स्थित फोक-वुल्फ कारखाने तक अमेरिकी वायु सेना के बी-17 विमानों के एक दल को एस्कॉर्ट करने का आदेश दिया गया था। यूनिट के कमांडिंग ऑफिसर के लंदन में अनुपस्थित होने के कारण,

स्क्वाड्रन की कमान गॉर्डन ब्रेटेल को सौंपी गई, जिन्हें एक अपेक्षाकृत सरल मिशन का नेतृत्व करना था। लेकिन इसके बजाय, त्रासदी घटित हुई। 35 समुद्री मील प्रति घंटे की विपरीत दिशा से आने वाली हवा का पूर्वानुमान था, लेकिन 18,000 फीट की ऊंचाई पर, विमान लगभग 100 समुद्री मील प्रति घंटे की विपरीत दिशा से आने वाली हवा के संपर्क में थे। उन्हें इस बात का अंदाजा नहीं था कि वे घने बादलों के ऊपर से दक्षिण की ओर बह रहे थे, और जब बमवर्षक विमान पाइरेनीज़ की तलहटी तक पहुंचे, तब उन्हें कुछ गड़बड़ का एहसास हुआ और उन्होंने घर की ओर रुख किया। जैसे ही वे उत्तर की ओर मुड़े, 133 स्क्वाड्रन के स्पिटफायर विमान भी उसी दिशा में मुड़ गए।

गॉर्डन और उनके स्क्वाड्रन के साथी वापस उसी रास्ते पर चलते रहे जब तक कि वे इंग्लैंड के तट के पास नहीं पहुँच गए, फिर वे नीचे उतरे और घने बादलों को चीरते हुए आगे बढ़े। स्पिटफायर हेलीकॉप्टर 3,000 फीट की ऊंचाई पर साफ आसमान में आ गए और उन्हें अपने सामने दक्षिणी तटरेखा पर एक बड़ा शहर दिखाई दिया। इसे प्लायमाउथ या पोर्ट्समाउथ मानकर, वे उसकी ओर मुड़े और शहरवासियों के लिए एक प्रभावशाली फ्लाई-बाय करने के लिए घनी संरचना में उड़ान भरने लगे। दुर्भाग्य से, वे अभी भी मौसम संबंधी गलती से अनजान थे और उन्हें यह एहसास नहीं था कि वे सौ नॉट की विपरीत दिशा में चल रही हवा के विपरीत दिशा में उड़ रहे थे। उनके नीचे पोर्ट्समाउथ नहीं बल्कि ब्रेस्ट था, जो ब्रिटनी प्रायद्वीप के दक्षिणी तट पर स्थित है और पश्चिमी फ्रांस का सबसे मजबूत सुरक्षा वाला शहर है।

स्पिटफायर विमानों के घनिष्ठ गठन के कारण जर्मन एंटी-एयरक्राफ्ट गनर का निशाना चूकना असंभव था। उन्होंने 133 स्क्वाड्रन के सभी विमानों को मार गिराया। गॉर्डन ब्रेटेल के स्पिटफायर विमान के पंख के निचले हिस्से में सीधा गोला लगा, जिससे कॉकपिट का ढक्कन जाम हो गया और विमान बेकाबू होकर गिरने लगा। विमान को ज़मीन पर गिरने से बचाने के लिए उन्होंने बड़ी मुश्किल से उसे स्थिर रखा। जब जर्मन सैनिक मलबे तक पहुँचे, तो वे पायलट को ज़िंदा देखकर दंग रह गए और उसे क्षतिग्रस्त विमान से बाहर निकाला। दोनों पैरों में कई फ्रैक्चर और अन्य कई चोटों के साथ, गॉर्डन को तुरंत अस्पताल ले जाया गया। वे अपनी सामान्य गति से ठीक हो गए और क्रिसमस से पहले स्टालैग लुफ्ट III पहुँच गए।

*

सागन पहुँचने के महज चार महीने बाद, गॉर्डन लीपज़िग से चेम्निट्ज़ जाने वाली ट्रेन में भाग रहा था। अगर किस्मत अच्छी रही, तो वह और किंग्सले रात होने तक नूर्नबर्ग पहुँच जाएँगे। लेकिन दुर्भाग्यवश, उस शहर पर हाल ही में भारी बमबारी हुई थी, और वहाँ आना-जाना बुरी तरह प्रतिबंधित था। चेम्निट्ज़ के मुख्य स्टेशन पर टिकट क्लर्क को शक हुआ और उनके जाली कागजात और मनगढ़ंत कहानियों के बावजूद, गॉर्डन और किंग्सले को पूछताछ के लिए हिरासत में ले लिया गया। उन्हें स्टेशन पर एक छोटी सी कोठरी में बंद कर दिया गया, जहाँ गॉर्डन ने दीवार पर रूपर्ट ब्रूक की ये पंक्तियाँ उकेरीं: 'अगर मैं मर जाऊँ, तो मेरे बारे में बस इतना याद रखना: कि किसी दूसरे देश का कोई कोना हमेशा के लिए इंग्लैंड है।' वह एक आदर्श रोमांटिक था।

हालात तब और बिगड़ गए जब दोनों को पूछताछ के लिए गेस्टापो के हवाले कर दिया गया। टेलीफोनों से ढकी एक विशाल मेज के पीछे बैठे पूछताछकर्ता ने उनसे पूरी यात्रा के दौरान उनकी गतिविधियों का सटीक विवरण मांगा। इसके बाद, उन्हें कई जर्मन सैनिक दिखाए गए और प्रत्येक सैनिक का पद पहचानने को कहा गया, संभवतः यह पता लगाने के लिए कि क्या वे सैन्य पद से परिचित हैं। इस चरण को सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद, साक्षात्कार का रुख अचानक बदल गया। गेस्टापो प्रमुख ने पूछा कि वे भागे ही क्यों थे। जब उन्होंने जवाब दिया कि प्रत्येक कैदी का कर्तव्य है कि वह अपनी इकाई में वापस लौटने का प्रयास करे, तो जर्मन अधिकारी अपनी कुर्सी से उछल पड़ा, मुट्ठी से मेज पर मारा और चिल्लाया, 'हाँ, भागना ही तुम्हारा कर्तव्य है!'

जब गॉर्डन और किंग्सले यह समझने की कोशिश कर रहे थे कि वह क्या कहना चाह रहा है, तो चीफ मुस्कुराया और उन्हें बताया कि प्रथम विश्व युद्ध के दौरान उसे पकड़ लिया गया था, लेकिन वह भाग निकला और अपनी यूनिट में वापस आ गया। फिर वह एक मिनट के लिए कमरे से बाहर गया और लगभग उसी उम्र के एक आदमी के साथ लौटा। उसने गर्व से कहा, 'यह आदमी फ्रांस के उस जेल शिविर में मेरा साथी था। वह भी भाग निकला था, लेकिन तुम्हारी तरह उसे भी दोबारा पकड़ लिया गया।' दोनों जर्मन अपनी इस उपलब्धि से काफी खुश थे और कुछ मिनटों तक उनकी बातचीत दोस्ताना माहौल में चलती रही। फिर गेस्टापो चीफ ने कहा कि उन्हें वापस शिविर भेजा जा रहा है और गार्डों को उन्हें बाहर तक छोड़ने का आदेश दिया। जब वे दफ्तर से निकल रहे थे, तो उसने उनकी ओर पुकारते हुए कहा, 'अगली बार किस्मत अच्छी हो!' यह शायद युद्ध के दौरान गेस्टापो की सबसे सुखद पूछताछ थी।

शिविर में वापस आकर, गॉर्डन से भागने की घटना के बारे में और अधिक जानकारी मांगी गई, लेकिन उन्होंने अपनी विशिष्ट संयमित शैली में कहानी सुनाई। वे हमेशा से एक विनम्र, शांत और आत्म-त्यागी व्यक्ति के रूप में जाने जाते थे, और उन्होंने शिविर में कभी भी अपना डीएफसी (डबल फुटमार्क) नहीं पहना और न ही उसका ज़िक्र किया। उन्होंने अपनी शांत, संयमित आवाज़ में भागने की कहानी सुनाई, और अपनी सफलता का अधिकांश श्रेय किंग्सले को दिया।

*

नॉर्थ कंपाउंड में शुरुआती कुछ दिनों के दौरान, रोजर बुशेल ने अपनी नई भागने की समिति के सदस्यों से व्यक्तिगत रूप से और समूह में कई बार मुलाकात की। यह समिति पुराने और नए दोनों चेहरों से बनी थी। हमेशा की तरह, इसमें टिम वैलेन (जाली दस्तावेज़ बनाने वाला), डेस प्लंकेट (नक्शा बनाने वाला) और कॉक कैंटन (भोजन और तार की व्यवस्था का प्रभारी) शामिल थे। समग्र सुरक्षा की जिम्मेदारी जूनियर क्लार्क की थी। सुरंग समिति में पहले की तरह क्रम्प केर-रामसे, जॉनी मार्शल और लेस बुल शामिल थे। टॉमी गेस्ट फिर से दर्ज़ियों के प्रभारी थे, जबकि बॉब स्टैनफोर्ड-टक भागने की सामग्री के नए संरक्षक बने। मुखबिरों से मिली जानकारी संपर्क खुफिया प्रमुख, चेक वैली वैलेंता को दी जाती थी।

अपनी पिछली सैन्य सेवा के कारण, फ्लाइट लेफ्टिनेंट अर्नोस्ट 'वैली' वैलेंता जर्मन निगरानी से बचने के लिए उत्सुक थे और उन्होंने पर्दे के पीछे रहकर लड़ाई जारी रखने का विकल्प चुना। 25 अक्टूबर, 1912 को उत्तरी मोराविया के स्वेबेहोव में जन्मे अर्नोस्ट वैलेंता, जो चेकोस्लोवाकिया का आंशिक रूप से जर्मनकृत क्षेत्र था, अपने आसपास के भाषाई संघर्ष के कारण एक उत्साही देशभक्त के रूप में पले-बढ़े। 1930 के दशक की शुरुआत में जर्मनी में हुई घटनाओं से विचलित होकर, वैलेंता ने 1933 में पैदल सेना के आरक्षित अधिकारियों के स्कूल में कैडेट बनने के लिए आवेदन किया। अगले वर्ष, उन्हें हरानिस में चेक सैन्य अकादमी में प्रवेश मिल गया। जुलाई 1936 में उन्होंने पाठ्यक्रम पूरा किया और ब्रातिस्लावा में 39वीं इन्फैंट्री रेजिमेंट में कमीशन प्राप्त किया। उसी समय, वैलेंता ने ब्रातिस्लावा के कोमेनियस विश्वविद्यालय में सैन्य इतिहास का अध्ययन करने के लिए आवेदन किया और जल्द ही इस विषय के एक मान्यता प्राप्त विशेषज्ञ बन गए। रेजिमेंट के अन्य अधिकारियों के लाभ के लिए, उन्होंने प्रेसबर्ग की संधि से लेकर क्लॉज़विट्ज़ के सिद्धांतों तक के विषयों पर व्याख्यान दिए, चर्चा समूह आयोजित किए और प्रदर्शनियों का आयोजन किया। पीलिया के कारण उनकी पढ़ाई बाधित हुई, लेकिन वैलेंता ने अपनी डिग्री की लगभग सभी आवश्यकताएं पूरी कर ली थीं, तभी कुछ अप्रत्याशित घटनाएँ घटीं।

जब चेक सीमावर्ती जिलों में नाज़ी पार्टी की शाखाओं ने गड़बड़ी पैदा करना शुरू किया, तो जर्मन भाषा में पारंगत वैलेंता को चुनिंदा सैनिकों की एक पलटन के साथ पश्चिमी बोहेमिया भेजा

गया। वे वहाँ व्यवस्था बनाए रखने का प्रयास करते रहे और सितंबर 1938 तक वहीं रहे, जब वे ब्रातिस्लावा में अपनी यूनिट में लौट आए। बाद में, जब हिटलर ने म्यूनिख और एन्स्क्लस के समर्थन के बदले हंगरी के एडमिरल मिक्लोस होर्थी को दक्षिणी स्लोवाकिया के कुछ हिस्से देने की पेशकश की, तो वैलेंता ने स्लोवाकियाई आबादी को निकालने में मदद की। चेकोस्लोवाकिया पर नाज़ी आक्रमण से पहले के महीनों में, वैलेंता ने आरक्षित सैनिकों को भंग करने और अपनी कंपनी को शांतिपूर्ण स्थिति में वापस लाने का काम किया। हिटलर के कठपुतली राज्य, स्वतंत्र स्लोवाकिया के प्रति निष्ठा की शपथ लेने का आदेश मिलने पर, वैलेंता और उनके चार साथी लेफ्टिनेंटों ने इनकार कर दिया क्योंकि यह चेक गणराज्य के प्रति ली गई उनकी मूल अधिकारी शपथ के विपरीत था। अपने इस कदम के लिए गिरफ्तारी के डर से, उन्होंने निकटतम मित्र देश यूगोस्लाविया भागने की योजना बनाई, लेकिन इसके बजाय वे टाट्रा पर्वतमाला से होते हुए उत्तर की ओर पोलैंड चले गए। वे 15 मार्च, 1939 को पहुंचे, जो हिटलर द्वारा प्राग पर आक्रमण करने की तारीख थी।

पोलैंड और चेकोस्लोवाकिया के बीच सीमा बंद होने के कारण, पोलैंडवासियों को अपने दक्षिण में हो रही घटनाओं की बहुत कम जानकारी थी और वे पाँचों चेक नागरिकों से समाचार सुनने के लिए उत्सुक थे। उन्हें शीघ्र ही वारसॉ ले जाया गया, जहाँ वे तुरंत चेक दूतावास गए ताकि सैन्य अटैची से सलाह ले सकें। उन्हें फ्रांसीसी विदेशी सेना या सोवियत संघ में शामिल होने या पोलैंडवासियों का साथ देने का विकल्प दिया गया, और पाँचों ने बाद वाला विकल्प चुना। पोलिश सेना और विदेश कार्यालय द्वारा पूछताछ के बाद, उन्हें चेकोस्लोवाकिया वापस जाकर कब्जे वाली जर्मन सेना के बारे में जानकारी जुटाने का प्रस्ताव दिया गया। वे तुरंत सहमत हो गए और प्रारंभिक खुफिया प्रशिक्षण के बाद, 9 अप्रैल, 1939 को उन्हें चुपके से कब्जे वाले चेकोस्लोवाकिया में वापस भेज दिया गया। वे लगभग पाँच महीने तक देश में रहे और 28 अगस्त, 1939 को भागकर वापस पोलैंड लौट आए।

वेलेंटा और उनके साथियों ने क्राको के पास चेकोस्लोवाक लीजन में भर्ती हुए और पोलैंड पर जर्मन आक्रमण के बाद उन्हें उत्तर-पूर्वी पोलैंड भेज दिया गया। आगे बढ़ती जर्मन और सोवियत सेनाओं के बीच फंसी यह टुकड़ी प्राइपेट दलदल को पार करते हुए लवॉव की ओर बढ़ी, इस उम्मीद में कि वे निकटतम सुरक्षित स्थान रोमानिया पहुंच जाएंगे। 850 सैनिकों का यह दस्ता आसानी से पहचाना जा सकता था, लेकिन लवॉव के दक्षिण में उनका भाग्य साथ नहीं दिया। आगे बढ़ती लाल सेना ने उन्हें घेर लिया, उनके हथियार छीन लिए और उन्हें हुसियातिन में सोवियत सीमा तक ले जाया गया। तारीख 17 सितंबर, 1939 थी। वेलेंटा और उनके साथी चेक सैनिकों को अंततः जारमोलिंसे ले जाया गया, जहां उन्होंने एक खंडहर मठ पर कब्जा कर लिया। 1939-40 की सर्दी इस सदी की सबसे भीषण सर्दियों में से एक थी, और चेक लोगों को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। फिर भी, वे क्रिसमस को एक खुशनुमा अवसर बनाने में कामयाब रहे। सूरजमुखी का तेल तस्करी करके लाया गया ताकि पुरुष टोस्ट बना सकें, और दीवार पर कोयले से सजावट सहित एक क्रिसमस ट्री बनाया गया। फिर पुरुष आधी रात की प्रार्थना के लिए मठ के खंडहर हो चुके, बिना छत वाले चैपल में एकत्र हुए।

वसंत ऋतु में, लंबी बातचीत के बाद, वैध पासपोर्ट वाले लोगों को सोवियत संघ छोड़ने की अनुमति दी गई। 12 मार्च, 1940 को, वैलेंता और चेक लोगों का पहला समूह इस्तांबुल जाने वाले एक यात्री जहाज पर सवार होने के लिए ओडेसा के लिए रवाना हुआ। वहाँ चेक दूतावास ने अगले फ्रांसीसी मालवाहक जहाज पर बेरूत के लिए परिवहन की व्यवस्था की, जहाँ चेक लोग आधिकारिक तौर पर फ्रांसीसी सेना में शामिल हो गए। उन्हें अलेक्जेंड्रिया के रास्ते मार्सिले भेजा गया और फिर उन्हें एग्डे में चेक सेना डिपो जाने की अनुमति दी गई।

वैलेंता को तीसरी इन्फैंट्री रेजिमेंट में तैनात किया गया था, लेकिन उन्होंने इसके बजाय पेरिस में चेक राष्ट्रीय समिति के सैन्य प्रशासन के लिए काम किया, और 15 जून, 1940 को वायु सेना में स्थानांतरित हो गए; उसी महीने के अंत में उन्हें पोर्ट वेंड्रेस से इंग्लैंड भेज दिया गया। 29

जुलाई को, वैली को 311 (चेक) स्क्वाड्रन में तैनात किया गया, और कुछ दिनों बाद उन्हें आरएएफवीआर में कमीशन प्राप्त हुआ। रेडियो ऑपरेटर के रूप में वर्गीकृत वैलेंता अपने नए दल के साथ अच्छी तरह घुलमिल गए। वे उनमें सबसे शांत स्वभाव के थे, आमतौर पर बहुत कम बोलते थे, और कभी शराब या धूम्रपान नहीं करते थे। वे अक्सर अपनी माँ के बारे में बात करते थे, लेकिन अपने पिता का ज़िक्र बहुत कम करते थे, जो प्रथम विश्व युद्ध के दौरान पूर्वी मोर्चे पर मारे गए थे।

वेलेंटा स्क्वाड्रन के आधिकारिक इतिहासकार के रूप में अपने कर्तव्यों में व्यस्त थे, लेकिन 9 दिसंबर, 1940 को ही चालक दल ने बोलोग्ने पर अपना पहला हवाई हमला किया। इसके बाद चार और अभियान हुए, जिसके बाद उन्हें 6 फरवरी, 1941 को बोलोग्ने की वापसी यात्रा पर भेजा गया। चालक दल शाम छह बजे के तुरंत बाद अपने वेलिंगटन विमान में ईस्ट व्रेथम से रवाना हुआ और लक्ष्य पर सफलतापूर्वक बमबारी की, लेकिन घर लौटते समय पायलट को पता चला कि उसका नेविगेटर बेहोश हो गया है। मौसम तेजी से बिगड़ रहा था, इसलिए वैली वेलेंटा ने बेस से दिशा जानने की कोशिश की, लेकिन उन्हें केवल एक ही संदेश मिला। लगभग एक घंटे तक इस दिशा में उड़ान भरने के बाद, पायलट ने निष्कर्ष निकाला कि वे इंग्लैंड के करीब पहुँच रहे होंगे, और जब उन्हें नीचे जमीन दिखाई दी, तो उन्होंने खराब मौसम और ईंधन की कमी के कारण आपातकालीन लैंडिंग करने का फैसला किया। दुर्भाग्य से, वे अभी भी फ्रांस के ऊपर थे, और जैसे ही चालक दल फ्लेर्स के पास क्षतिग्रस्त बमवर्षक से बाहर निकला, उन्हें पकड़ लिया गया।

बार्थ में रहते हुए, वैली वैलेंता को भागने से मना किया गया था क्योंकि चेकोस्लोवाकिया में उनकी खुफिया गतिविधियों के कारण पुलिस के हाथ लगने पर उन्हें भारी खतरा हो सकता था; फिलहाल, वह पर्दे के पीछे रहकर काम करने में खुश थे। उन्होंने चीनी भाषा का अध्ययन शुरू किया, जिमी जेम्स को रूसी भाषा सिखाई और समय-समय पर सैन्य इतिहास पर व्याख्यान दिए।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि वैलेंता संपर्क नेटवर्क चलाती थी, जो एक्स संगठन की सबसे संवेदनशील और क्रूर शाखाओं में से एक थी। भागने के लिए आवश्यक अधिकांश सामग्री शिविर के भीतर ही बनाई जा सकती थी, लेकिन कुछ चीजें (जैसे पहचान पत्रों के लिए तस्वीरें बनाने हेतु कैमरे और फिल्म) बाहर से मंगानी पड़ती थीं। कुछ गार्ड रेड क्रॉस की चॉकलेट, सिगरेट या साबुन के बदले शिविर में लगभग कुछ भी तस्करी करने को तैयार थे। अन्य मामलों में, गार्डों को एक्स संगठन के आदेशों का पालन करवाने के लिए सावधानीपूर्वक ब्लैकमेल किया जाता था। किसी गार्ड को भागने वाले संगठन के लिए उपयोगी बनाने की प्रक्रिया को 'वश में करना' कहा जाता था।

वेलेंटा के हर आदमी को एक गुंडे को काबू में करना होता था, और बाकी कैदियों को उस जर्मन गुंडे से बात करने की इजाज़त नहीं थी। गुंडे को काबू में करने का तरीका काफी आसान था। कभी-कभार उसे कॉफी के लिए बुलाना और बीच-बीच में चॉकलेट देना, जब तक कि उसका भरोसा न जीत लिया जाए, इतना आसान हो सकता था। या फिर इसमें सीधे-सीधे ब्लैकमेल भी शामिल हो सकता था। एक बार, एक गुंडे को कुछ चॉकलेट के बदले में एक प्लायर लाने के लिए राजी किया गया। उसने मूर्खता में यह कहकर रसीद पर हस्ताक्षर कर दिए कि उसके संपर्क के पूरे गिरोह ने चॉकलेट दी है और उन्हें किसी तरह की रसीद चाहिए। एक बार जब संगठन को यह रसीद मिल गई, तो बेचारे गार्ड को मांगी गई चीज़ लानी पड़ी, वरना उसे कोर्ट-मार्शल का सामना करना पड़ता। एक और बार, बॉब वैन डेर स्टॉक को वियना के एक बुजुर्ग गार्ड से दोस्ती करने के लिए कहा गया। उसने ऐसा करने के लिए गुंडे की जेबों में रेड क्रॉस का खाना भर दिया और फिर उसे चोर बताकर रिपोर्ट करने की धमकी दी, जब तक कि वह छह बटन, एक फील्ड कैप और कुछ कढ़ाई वाले शोल्डर पैच लेकर नहीं आया। बेचारा गार्ड मजबूरी में मान गया।

वेलेंटा के विभाग में भर्ती होने के लिए एकमात्र योग्यता जर्मन भाषा का उचित ज्ञान था। हालाँकि, कुछ परिस्थितियों में भाषा की योग्यता को भी नज़रअंदाज़ किया जा सकता था। रूडी

नाम के एक चालाक व्यक्ति की दोस्ती कीवी बिली ग्रिफ़िथ से हो गई, जो उसका संपर्क सूत्र बन गया। हालाँकि रूडी से कभी कोई बड़ी मूल्यवान चीज़ प्राप्त नहीं हुई, लेकिन बिली का उसे परिसर में गश्त के दौरान व्यस्त रखना उतना ही महत्वपूर्ण था। सबसे अच्छे संपर्कों में से एक कॉर्पोरल हेसे था, जो वोरलागर गेट पर ड्यूटी दुभाषिया था और जिसकी दोस्ती सिडनी डाउज़ से हो गई। सिडनी हेसे से ढेर सारी जानकारी और सामग्री प्राप्त करने में सक्षम था, जिसमें टोपी सहित दो पूरे नागरिक सूट, पाँच सप्ताह के लिए भोजन कूपन और दो हज़ार से अधिक रीचमार्क शामिल थे।

*

अन्य प्रमुख बचाव योजनाकारों में से चार विशेष रूप से संवेदनशील पदों पर थे। सुरंगों की डिजाइन और निर्माण का नियंत्रण उत्तरी ओंटारियो के दुबले-पतले पूर्व खनिक वॉली फ्लॉडी के पास था, जो सुरंग समिति के प्रमुख थे। कार्यकारी समिति के दूसरे सदस्य जॉर्ज हार्श थे, जो अमेरिकी वायु सेना में थे और उन्हें तीनों सुरंगों की सुरक्षा का जिम्मा सौंपा गया था।

सैगन में हर्ष की कहानी अनोखी थी। वह जॉर्जिया के एक धनी परिवार का बेटा था और शराबबंदी के दौर में, कॉलेज के अपने चार किशोर मित्रों के साथ एक रात शराब पीने के बाद उसने फैसला किया कि सावधानीपूर्वक योजना और बुद्धिमत्ता से एक आदर्श अपराध को अंजाम देना संभव है। उन्होंने कई छोटी-मोटी लूटपाट की, बारी-बारी से एक-एक करके बंदूक से लूट को अंजाम दिया और पुलिस को पूरी तरह से हैरान कर दिया। फिर, अक्टूबर की एक बरसात वाली रात, हालात बिगड़ गए। जॉर्ज की बारी थी हथियार उठाने की, तभी किराने की दुकान के एक क्लर्क ने घबराकर काउंटर के नीचे से एक रिवॉल्वर निकाल ली। जॉर्ज ने गोली चलाना शुरू कर दिया और जब गोलीबारी रुकी, तो दोनों क्लर्क मृत पड़े थे।

दो हफ्ते बाद, जॉर्ज हार्श को गिरफ्तार कर हत्याओं के आरोप में उन पर मुकदमा चलाया गया। मुकदमा चला और मात्र पंद्रह मिनट की चर्चा के बाद जूरी ने उन्हें दोषी पाया; उन्हें फांसी की सजा सुनाई गई। लेकिन, जैसा कि हार्श ने अपने संस्मरणों में लिखा है, 'आप दस लाख डॉलर को फांसी नहीं दे सकते।' हार्श के परिवार और इस मामले में आरोपी दूसरे व्यक्ति की दौलत और प्रभाव को देखते हुए, न्यायाधीश ने दोषी ठहराए जाने की शर्त पर मौत की सजा को टाल दिया। फांसी के बजाय, जॉर्ज हार्श को जॉर्जिया के एक जंजीर गिरोह में भेज दिया गया। उन्होंने बारह साल जेल में बिताए, जिनमें से अधिकांश समय जंजीर गिरोह में ही बीता, जहां कैदी स्टील के पिंजरों में रहते थे और दिन में चौदह या पंद्रह घंटे मिट्टी खोदते थे। जीवन सस्ता था, और किसी कैदी की मौत पर न तो शोक मनाया जाता था और न ही उसकी जांच की जाती थी। हार्श ने खुद एक बार साबुन की एक टिकिया के लिए हुए झगड़े में एक आदमी को चाकू मारकर मार डाला था। आखिरकार उन्हें जंजीर गिरोह से स्थानांतरित कर दिया गया और एक जेल अस्पताल में एक भरोसेमंद कैदी बना दिया गया। वहां उन्होंने एक अन्य कैदी का आपातकालीन अपेंडिक्स का ऑपरेशन किया और अपनी माफी हासिल कर ली। एक साल के भीतर ही वह आरसीएएफ में अधिकारी बन गए। वॉली फ्लॉडी ही एकमात्र व्यक्ति था जो जॉर्ज हार्श के अतीत के बारे में सच्चाई जानता था। फ्लॉडी जानता था कि अगर किसी के पास उसकी सुरंगों की सुरक्षा करने की धूर्तता और चतुराई थी, तो वह हार्श ही था।

*

कार्यकारी समिति के तीसरे सदस्य पीटर फैंशॉ थे, जो हाल ही में शुबिन से लौटे थे और सुरंगों से रेत के फैलाव को नियंत्रित करने का काम उन्हें सौंपा गया था। पिछले अनुभव से पता चला था कि लापरवाही से रेत का फैलाव ही अक्सर सुरंगों के मिलने का कारण होता था। जैसे ही गुंडों को ताज़ी मिट्टी मिलती, वे सुरंग मिलने तक खोजते रहते। तीन सुरंगें होने के कारण रेत के फैलाव

की समस्या और भी गंभीर हो गई थी, और यह स्पष्ट था कि फैंशॉ का काम बहुत बड़ा होने वाला था।

रॉजर बुशेल, जिसका कोडनेम 'बिग एक्स' था, शीर्ष पर था। वॉली, जॉर्ज और पीटर मिलकर एक्स ऑर्गनाइजेशन के कार्यकारी मंडल का गठन करते थे, जो भागने की योजना को आगे बढ़ाने के लिए सभी उपलब्ध संसाधनों और जनशक्ति को जुटाने के लिए जिम्मेदार था। प्रारंभिक चरण के रूप में, रॉजर ने विभाग प्रमुखों से मुलाकात कर उन्हें योजना की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की। तीनों जाल बिछाने के स्थानों को अंतिम रूप दिए जाने के बाद विस्तृत निर्देश दिए जाएंगे, जिसे सभी ने सर्वोच्च प्राथमिकता बताया था।

कार्य दलों द्वारा किए गए सर्वेक्षणों और एक्स संगठन के इंजीनियरों द्वारा किए गए अधिक विस्तृत अध्ययनों के आधार पर, 11 अप्रैल तक तीन स्थलों का चयन कर लिया गया था। टॉम हट 123 से पश्चिम की ओर जाएगा, जिसे योजनाकारों ने सबसे कम उपयुक्त स्थान माना था। यह सच था कि जंगल तक पहुँचने से पहले वहाँ की दूरी अपेक्षाकृत कम थी, लेकिन इसी कारण यह हट जर्मन खोजों का आसान निशाना बन गया था। उम्मीद थी कि चूंकि हट 123 गेट से सबसे दूर था, इसलिए खोज दल के हट तक पहुँचने से पहले ही ऑपरेशन बंद कर दिए जाएँगे। डिक हट 122 से टॉम के समानांतर चलेगा, इसका फायदा यह था कि जर्मनों को तारबंदी से इतनी दूर स्थित हट में सुरंग के शुरू होने का संदेह होने की संभावना कम थी। हैरी को हट 104 में रहना था, जो मुख्य द्वार के सबसे करीब था और इसलिए सुरक्षा की दृष्टि से सबसे बड़ी समस्या पैदा करता था। हालांकि, समिति ने फैसला किया कि चूंकि यह परिसर के केंद्र की ओर था और सौ फुट चौड़ी वोरलागर नदी द्वारा जंगल से अलग था, इसलिए बदमाशों द्वारा इसे शुरुआती बिंदु के रूप में संदेह करने की संभावना नहीं थी।

अगला काम भागने की योजना के लिए ज़रूरी मज़दूरों को जुटाने का तरीका खोजना था। रॉजर ने इसका हल निकाला और हर झोपड़ी से एक अधिकारी को 'लिटिल एक्स' के रूप में नियुक्त किया। इस अधिकारी की ज़िम्मेदारी थी कि समिति को सौंपने से पहले सभी भागने की योजनाओं की जाँच करे और योजना स्वीकृत होने पर योजना बनाने, समय और ज़रूरी सामान जुटाने में मदद करे। लिटिल एक्स की ज़िम्मेदारी यह भी थी कि वह अपनी झोपड़ी के लोगों से उनकी प्रतिभाओं के बारे में पूछे। जिन लोगों में चित्रकारी, धातु या लकड़ी का काम, मानचित्रकला या किसी अन्य ज़रूरी कौशल में निपुणता थी, उन्हें संगठन की संबंधित शाखा में शामिल कर लिया गया। जिन लोगों के पास कोई विशेष विशेषज्ञता नहीं थी या जो भागने के लिए नए थे, उन्हें सामान्य सहायकों की सूची में डाल दिया गया ताकि ज़रूरत पड़ने पर उनका इस्तेमाल किया जा सके।

सुरंगों के सर्वेक्षण का काम शुरू करने से पहले, पूरे परिसर का एक विस्तृत नक्शा बनाना आवश्यक था। संगठन के गणितज्ञों ने काम शुरू किया और जल्द ही एक ऐसा नक्शा तैयार कर लिया जिसमें हर ब्लॉक, इमारत और पहरेदार टावर के साथ-साथ अन्य महत्वपूर्ण विशेषताएं भी दर्शाई गई थीं, जैसे कि आग बुझाने के लिए इस्तेमाल होने वाला बड़ा पानी का कुंड। फिर, पहरेदार टावरों से दृष्टि रेखाओं को रेखाचित्रित करके, उन्होंने परिसर में किसी भी अनदेखे स्थान को चिह्नित किया। हालांकि, परिसर में घूमने वाले नेवलों से कोई भी स्थान पूरी तरह सुरक्षित नहीं था, इसलिए इन बदमाशों पर नज़र रखने का काम एक्स संगठन की सुरक्षा शाखा को सौंपा गया।

*

बुशेल ने अपने साथियों को सबसे पहला निर्देश दिया कि वे सर्वेक्षण या गणित में अनुभवी लोगों को खोजें। तीन बड़ी सुरंगों का निर्माण शुरू होने वाला था, इसलिए रॉजर को आवश्यक दूरियों के सटीक आंकड़े चाहिए थे। सुरंगों के सर्वेक्षण का कठिन काम कई अलग-अलग टीमों को सौंपा

गया, जिनमें से प्रत्येक ने स्वतंत्र रूप से काम किया। इस तरह, प्रत्येक टीम की गणनाओं की तुलना दूसरी टीमों द्वारा की गई गणनाओं से की जा सकती थी, जिससे सटीकता का स्तर बढ़ जाता था। एक टीम में ब्रायन इवांस और एमेट कुक शामिल थे, जो फोर्ट वर्थ, टेक्सास के एक बमवर्षक थे। एमेट ने युद्ध से पहले टेक्सास ए एंड एम विश्वविद्यालय से इंजीनियरिंग की डिग्री प्राप्त की थी और उन्हें ड्राफ्टिंग का उत्कृष्ट ज्ञान था, जबकि ब्रायन ने रियल एस्टेट एजेंट के साथ काम करके सर्वेक्षण की अच्छी समझ हासिल कर ली थी।

असली सुरंग न होने के कारण, एक्स ऑर्गनाइज़ेशन की वर्कशॉपों ने लकड़ी और टिन के टुकड़ों से सुरंगें बनाई थीं। स्कोप की जगह कच्चे वी-पोस्ट साइट का इस्तेमाल करने से सटीकता में काफ़ी कमी रह गई थी, लेकिन यही सबसे अच्छा विकल्प था। सहायकों की निगरानी में, ब्रायन और एमेट ने जल्दी लेकिन सावधानी से नाप लिया, आमतौर पर हरी झंडी मिलने के बाद ब्लॉक की खिड़कियों से बाहर झुककर। हालाँकि वे अंतिम गणनाओं के लिए केवल शुरुआती नाप ही दे रहे थे, फिर भी यह एक बहुत ही मुश्किल काम था। उन्होंने लगभग 128 फीट की आधार रेखा पर काम किया, जिसका मतलब था कि उन्हें 300 फीट से ज़्यादा दूरी के एज़िमुथ शॉट नंगी आँखों से लेने थे। बात को और जटिल बनाने के लिए, वे किसी सर्वेयर की छड़ी को नहीं, बल्कि लगभग 20 इंच व्यास वाले एक पेड़ को निशाना बना रहे थे। इतने बड़े लक्ष्य के साथ, निशाना लगाने में 1 डिग्री की गलती सुरंग के लिए गणना की गई दूरी में 20 फीट या उससे ज़्यादा का अंतर ला सकती थी।

इसी संभावना को ध्यान में रखते हुए संगठन ने प्रारंभिक माप लेने के लिए एक से अधिक जोड़ी कर्मचारियों को नियुक्त किया था। आशा थी कि व्यापक जाँच-पड़ताल से सभी त्रुटियों को दूर किया जा सकेगा।

ब्रायन और एमेट दोनों ने अलग-अलग समय पर कई बार दृश्य देखे और फिर सभी मापों की तुलना की, जब तक कि दोनों को यह यकीन नहीं हो गया कि उनके द्वारा निकाला गया दूरी का माप यथासंभव सटीक है। दोनों अपने काम को बहुत गंभीरता से लेते थे, हालांकि इसके कारण अलग-अलग थे। ब्रायन इवांस, लगभग तीन साल कैद में रहने के बाद, भागने के कई मामलों में माहिर हो चुके थे और इस काम के प्रति उनका रवैया बहुत ही व्यावहारिक हो गया था। दूसरी ओर, एमेट कुक को कैद में आए हुए केवल तीन महीने से थोड़ा अधिक समय हुआ था और संगठन की कार्यप्रणाली उनके लिए नई थी। यह पहली बड़ी भागने की योजना थी जिसमें वह शामिल थे और वह इसे अच्छे से करने और जितना हो सके सीखने के लिए दृढ़ संकल्पित थे। चाय पर मिलने पर इवांस और कुक अपने काम के अलावा और किसी बात पर चर्चा नहीं करते थे।

*

सर्वेक्षण पूरा होने के बाद, वास्तविक खुदाई शुरू होने से पहले केवल एक ही महत्वपूर्ण कार्य करना बाकी था, और वह था परिसर में एक सुरक्षा प्रणाली स्थापित करना। जूनियर क्लार्क ने एक अस्थायी प्रणाली बना रखी थी, लेकिन जब वह अपने डिप्टी टॉम किर्बी-ग्रीन और जॉर्ज हार्श के साथ परिसर का निरीक्षण कर रहे थे, तो यह स्पष्ट हो गया कि एक बेहतर सुरक्षा व्यवस्था स्थापित करनी होगी। हार्श ने कनाडाई जॉर्ज मैकगिल को अपना डिप्टी चुना, और चारों तुरंत काम में जुट गए। रॉजर ने उन्हें यह काम पूरा करने के लिए एक सप्ताह का समय दिया।

सबसे पहले, उन्होंने परिसर को लगभग दो हिस्सों में बाँट दिया, जिसमें आग के कुंड के बीच से उत्तर से दक्षिण की ओर एक रेखा खींची गई। गेट के सबसे नज़दीक वाले हिस्से को सुरक्षित या 'एस' ज़ोन कहा गया, जबकि दूसरे हिस्से को खतरनाक या 'डी' ज़ोन कहा गया। यह तय किया गया कि अगर गुंडे 'एस' ज़ोन में हों तो जाल बिछाने का काम सुरक्षित रूप से आगे बढ़ सकता है, लेकिन जैसे ही वे 'डी' ज़ोन में प्रवेश करेंगे, सारा काम रोक दिया जाएगा। इसके

अलावा, अगर कोई भी तीन नेवले एक साथ परिसर में प्रवेश करते हैं, तो भी काम रोक दिया जाएगा।

जर्मन सैनिकों की गतिविधियों पर नज़र रखने के लिए, योजनाकारों ने एक पद सृजित किया जिसे ड्यूटी पायलट कहा जाता था। यह व्यक्ति मुख्य द्वार के पास बैठता था और आने-जाने वाले सभी वाहनों का रिकॉर्ड रखता था। उसकी सहायता के लिए एक संदेशवाहक भी होता था, जो समय-समय पर विभाग प्रमुखों को स्थिति रिपोर्ट पहुँचाता था। इसके अलावा, संकेतों की एक ऐसी प्रणाली भी बनाई गई थी जिससे कोई भी एक नज़र में बता सके कि परिसर में कितने सैनिक मौजूद हैं। उदाहरण के लिए, ड्यूटी पायलट के बगल में ज़मीन पर एक रेड क्रॉस का डिब्बा और कोयले की बाल्टी लापरवाही से पड़ी हो सकती है; यदि डिब्बे का ढक्कन खुला हो, तो इसका मतलब हो सकता है कि दो गार्ड परिसर में प्रवेश कर चुके हैं; यदि बाल्टी डिब्बे के ऊपर रखी हो, तो इसका मतलब है कि परिसर सुरक्षित है। शिविर के सभी सुरक्षाकर्मियों को विभिन्न वस्तुओं के संयोजनों के अर्थ पहचानने का प्रशिक्षण दिया गया था।

चूंकि झोपड़ी संख्या 122 और 123 ड्यूटी पर तैनात पायलट की सीधी नज़र में नहीं थीं, इसलिए झोपड़ी संख्या 110 के दक्षिणी छोर पर एक रिले स्टेशन बनाया गया, जिसमें शौचालय की खिड़कियों के शटरों का इस्तेमाल एक तरह के सिग्नल के रूप में किया गया। यदि दोनों शटर खुले होते, तो इसका मतलब था कि परिसर सुरक्षित है; एक शटर बंद होने का मतलब था कि परिसर में एक गुंडा है; और दोनों बंद होने का मतलब था कि दो गुंडे हैं। यदि तीन या अधिक गुंडे गेट से अंदर आ जाते, तो बंद शटरों पर एक रुमाल लटका दिया जाता। झोपड़ी संख्या 122 और 123 के पहरेदारों को निर्देश दिया गया था कि वे हर समय झोपड़ी संख्या 110 के शौचालय पर नज़र रखें ताकि गुंडों के किसी समूह के परिसर में प्रवेश करने पर जाल बंद किया जा सके।

निगरानी करने वालों – या कहें कि उनके सहायकों – का काम थकाऊ लेकिन बेहद ज़रूरी था। गलतियाँ होना लाज़मी था, लेकिन आमतौर पर उनसे बस थोड़ी शर्मिंदगी ही होती थी। एक दिन, एक सहायक की नज़र एक नेवले पर नहीं पड़ी, जो सीधे गलियारे में चला गया जहाँ एक और निगरानी करने वाला कोने से छुपकर देख रहा था। उस गुंडे को देखकर सहायक स्वाभाविक रूप से चौंक गया, लेकिन जल्दी ही संभल गया और उसने बहाना बनाया कि वह मौसम देखने के लिए बाहर देख रहा था। नेवले को ज़रूर आश्चर्य हुआ होगा, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। एक और बार, एक सहायक 101 नंबर की सीढ़ी पर आराम से बैठा था, मासूम दिखने की कोशिश कर रहा था, तभी एक नेवला उसके पास आया और कहा कि वह 107 नंबर की झोपड़ी में एक कैदी से दस मिनट के लिए मिलने जा रहा है। उस साथी ने बेपरवाह दिखने की पूरी कोशिश की, लेकिन वह बस एक फीकी सी मुस्कान ही दे पाया।

हालांकि, जासूसी अभियान में ज़रा सी भी चूक के गंभीर परिणाम हो सकते थे, इसलिए कर्मचारियों को सतर्क रखने के लिए व्यक्तिगत शिफ्टों को यथासंभव छोटा रखा जाता था। परिणामस्वरूप, यह शिविर के सबसे बड़े संगठनों में से एक बन गया। अधिकांश क्रीगी जूनियर क्लार्क, टॉम किर्बी-ग्रीन और 'लिटिल एस' के नाम से जाने जाने वाले ब्लॉक सुरक्षा अधिकारियों की एक समिति की देखरेख में जासूसी का काम करते थे। प्रत्येक लिटिल एस एपेल के बाद झोपड़ी के हर कोने की तलाशी लेने के लिए ज़िम्मेदार था। वह अटारी से होते हुए झोपड़ी के नीचे तक चढ़ जाता था ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि एपेल के दौरान कोई नेवला ब्लॉक में न छिपा हो। प्रत्येक झोपड़ी सुरक्षा अधिकारी द्वारा सब कुछ ठीक होने की पुष्टि मिलने के बाद ही काम शुरू होता था।

अध्याय **9**

जालों को डुबाना

ड्यूटी पायलट और स्टूजिंग सिस्टम को लागू करने और रोजर बुशेल की संतुष्टि के अनुसार परीक्षण करने के बाद, जाल बिछाने का काम शुरू किया जा सका। हालांकि झोपड़ियों का चयन हो चुका था, लेकिन विशिष्ट स्थानों का चुनाव करना बाकी था, और इस मामले में इंजीनियरों के विकल्प सीमित थे। अधिकतम छलावरण प्रदान करने के लिए, जालों को ठोस नींव में गाड़ना आवश्यक था, जो केवल शौचालयों में ही पाई जाती थीं। एक दिन अपनी झोपड़ी के बाहर एक लकड़ी के लट्ठे पर बैठे हुए, वॉली फ्लॉडी को यह विचार आया कि चिमनियों को सहारा देने वाली ईंटों को खोदकर भी जाल बिछाया जा सकता है। इन दोनों संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए, इंजीनियर काम पर लग गए।

टॉम के लिए, उन्होंने रसोई के बगल वाले कमरे की ओर जाने वाले एक छोटे गलियारे के अंत में एक जगह चुनी। चूल्हे की चिमनी के पास एक कम रोशनी वाला कोना था जो जाल बिछाने के लिए एकदम सही था। इसका निर्माण तीन पोलिश अधिकारियों को सौंपा गया, जिन्होंने चोरी की हुई छेनी का उपयोग करके कंक्रीट के फर्श से दो फुट का एक चौकोर टुकड़ा काट दिया। फर्श के नीचे उन्हें रेत के ऊपर ढीले ढंग से जमा हुआ मलबा मिला। उन्होंने जो चौकोर टुकड़ा हटाया था, उसे तोड़कर उसकी जगह चोरी के कंक्रीट से बना एक टुकड़ा लगा दिया। एक बार जब इसे वापस लगा दिया गया और दरारों को सीमेंट से भरकर रेत से ढक दिया गया, तो जाल को बाकी फर्श से अलग करना असंभव हो गया। केवल वही लोग जो सही जगह देख सकते थे, उन्हें ही पतले तार से जुड़े दो धातु के हुक दिखाई दिए जिनका उपयोग जाल का दरवाजा उठाने के लिए किया जाता था। टॉम के जाल का प्रभारी अधिकारी माइक केसी था।

इसके बाद, पोलिश लोग डिक के जाल पर काम शुरू करने के लिए हट 122 की ओर बढ़े। शौचालय में अठारह इंच चौकोर और लगभग तीन फुट गहरा एक नाला था। पानी निकालने वाला पाइप केवल दो-तिहाई ही नीचे था, इसलिए नाले के तल में हमेशा कम से कम एक फुट पानी भरा रहता था। यही डिक के लिए उपयुक्त स्थान था। इंजीनियरों ने लोहे की जाली हटाई, पानी बाहर निकाला और फिर नाले की एक दीवार को तोड़ दिया। दीवार के पीछे कच्ची रेत थी, जो खुदाई के लिए एकदम सही थी। दीवार को जेरज़ी मोंडशाइन द्वारा बनाई गई एक पटिया से बदल दिया गया और दरारों को नीली मिट्टी, साबुन और सीमेंट के मिश्रण से भर दिया गया। फिर जाली को वापस लगा दिया गया और पानी को फिर से अंदर जाने दिया गया। यह अब तक निर्मित सबसे अनोखे जालों में से एक था।

डिक के ट्रैपफ्यूहरर (ट्रैप के नियंत्रक के रूप में जाने जाते थे) फ्लाइंग ऑफिसर लेस्ली चार्ल्स जेम्स ब्रोडरिक थे, जिन्होंने युद्ध का अपना पहला वर्ष तटीय रक्षा की 92वीं हेवी रेजिमेंट में बिताया था। 19 मई, 1921 को लंदन में जन्मे लेस ने 1939 की शुरुआत में सेना में प्रवेश किया और टेरिटोरियल आर्मी की सरे योमनरी को चुना क्योंकि उन्हें वर्दी पसंद थी। अगस्त 1939 में उन्होंने एक बीमा कंपनी में अपनी नौकरी से छुट्टी लेकर एक सेना प्रशिक्षण शिविर में भाग लिया; उन्हें 1 सितंबर को बुलाया गया और अंततः 1940 के अंत में उनका तबादला आरएएफ में हो गया।

लेस ने संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले पहले प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में से एक में भाग लिया, जो टेक्सास के एक फ्लाइंग स्कूल में आयोजित किया गया था। उनके

प्रशिक्षक एक ठेठ काउबॉय थे, या जैसा कि वे खुद को कहना पसंद करते थे, बुश हॉपर, जिन्हें केवल अंधेरे में उड़ान भरने से डर लगता था। उन्होंने लेस के साथ पहले रात्रि उड़ान सत्र में साथ दिया और फिर रनवे के अंत में उतर गए। 'तुम ठीक हो, है ना?' यह कहकर वे चले गए और लेस को अपने हाल पर छोड़ दिया। इसके बावजूद, लेस ने प्रशिक्षण पूरा किया और इंग्लैंड लौट आए, जहाँ उन्होंने पहले एयर ट्रांसपोर्ट ऑक्सिलरी में सेवा की। बाद में उन्होंने चार इंजन वाले बमवर्षक विमानों का प्रशिक्षण लिया और फरवरी 1943 में उन्हें 106 स्क्वाड्रन में तैनात किया गया, जिसकी कमान डैम्बस्टर्स के लिए प्रसिद्ध दिग्गज गाय गिब्सन के पास थी।

इसके बाद बेहद व्यस्तता का दौर आया, जिसमें लेस और उनके दल ने पाँच हफ़्तों में बीस मिशन पूरे किए। 14-15 अप्रैल, 1943 की रात को वे फिर से उड़ान पर निकले और स्टटगार्ट की ओर रवाना हुए। हालाँकि, घने बादलों और बर्फ़बारी के कारण लेस अपने लैंकास्टर विमान को 20,000 फीट की अनुशंसित ऊँचाई तक नहीं ले जा सके, इसलिए उन्होंने गिब्सन के इस सिद्धांत का पालन करने का निर्णय लिया कि या तो बहुत नीचे या बहुत ऊपर उड़ान भरना ही सबसे सुरक्षित होता है। तदनुसार, वे नीचे उतर आए, लेकिन फिर भी बाकी बमवर्षक विमानों के साथ तालमेल बनाए रखना असंभव हो गया। परिणामस्वरूप, जब ब्रॉड्रिक का विमान लक्ष्य के ऊपर देर से पहुँचा, तो ज़मीनी सुरक्षा बलों का पूरा ध्यान उसी पर केंद्रित हो गया।

लैंकास्टर विमान छर्रों से छलनी हो गया था, लेकिन चूंकि कोई भी महत्वपूर्ण अंग क्षतिग्रस्त नहीं हुआ था, इसलिए लेस पेड़ों की ऊँचाई पर गर्जना करते हुए आगे बढ़ गया। दुर्भाग्यवश, वे एक छोटे हवाई अड्डे के ऊपर से भटक गए, जहाँ एक मशीन गनर ने गोलियों की एक छोटी बौछार की जो बाएँ पंख के टैंकों को लगी और भीषण आग लग गई। दूर एक खुला समतल मैदान देखकर, लेस ने दुर्घटनाग्रस्त लैंडिंग करने का फैसला किया। हालांकि, उसी क्षण एयलरॉन और एलिवेटर नियंत्रण विफल हो गए, इसलिए जब लेस ने लैंडिंग के लिए इंजन की शक्ति कम की, तो विमान का अगला हिस्सा तेज़ी से नीचे गिरा और लैंकास्टर दुर्घटनाग्रस्त हो गया।

विमान दुर्घटना में केवल मध्य-ऊपरी तोपची लेस और बेहोश नाविक ही जीवित बचे। सबसे पहली प्राथमिकता घायल चालक दल के सदस्य के लिए चिकित्सा सहायता जुटाना थी। ब्रोड्रिक और तोपची एमिएन्स के ठीक पूर्व में स्थित निकटतम गाँव पहुँचे और जर्मन अधिकारियों के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। तीनों को पास के एक अस्पताल में ले जाया गया और वहाँ से लेस और तोपची को डुलैग लुफ़्ट भेज दिया गया। जब लेस ब्रोड्रिक मई 1943 में नॉर्थ कंपाउंड पहुँचे, तो वे सुरंग खोदने के काम की शुरुआत के ठीक समय पर थे। माइक केसी दूसरे ट्रैप का कार्यभार संभालने के लिए किसी की तलाश कर रहे थे और लेस उन्हें इसके लिए उपयुक्त लगे।

*

सबसे आखिर में हैरी का जाल तैयार हुआ, जो झोपड़ी 104 के कमरा नंबर 23 में था। पोलिश लोगों ने चूल्हे को उसके आधार से हटाया और फर्श की टाइलें एक-एक करके निकालीं, हर टाइल को साफ किया और दोबारा इस्तेमाल के लिए बचा लिया। हालांकि, हैरी का जाल बनाना इतना आसान नहीं था। चूल्हे को सहारा देने वाले चार फुट चौकोर लकड़ी के फ्रेम को दोबारा बनाना पड़ा और इस बीच उस जगह को खुला छोड़ना पड़ा। बढ़ईयों ने जितनी जल्दी हो सके लकड़ी का फ्रेम बनाया और फिर पोलिश लोग टाइलों को दोबारा लगाने में जुट गए। हालांकि, उनमें से पांच टाइलें टूटी हुई थीं और परिसर में किसी भी अन्य चूल्हे में ऐसी फर्श की टाइलें नहीं थीं। कुछ दिनों की अफरा-तफरी के बाद, पूर्वी परिसर से कुछ टाइलें चुपके से मंगवाने का फैसला किया गया और आवश्यक संख्या में टाइलें रसोई के एक कर्मचारी की वर्दी में छिपाकर लाई गईं। पोलिश लोगों ने रसोई की झोपड़ी में काम किया और सात घंटे में जाल तैयार कर दिया। इसे झोपड़ी 104 तक ले जाने के लिए, उन्होंने इस पर डंडे लगाए, इसे खाली बक्सों से भर दिया ताकि यह देखने में लकड़ी के ढेर जैसा लगे, और इसे पूरे परिसर में ले गए। यह बिल्कुल सही

जगह पर फिट हो गया, और दरारों को सीमेंट से भरकर और धूल छिड़ककर, चूल्हे को वापस अपनी जगह पर रख दिया गया। अगले ग्यारह महीनों तक, कमरा नंबर 23 में छोटा सा चूल्हा हमेशा जलता रहा, ताकि गुंडे इसके बहुत करीब न आ सकें।

हैरी के जाल की देखरेख पैट लैंगफोर्ड नाम के एक कनाडाई व्यक्ति को सौंपी गई, जिसने उसे एक बच्चे की तरह अपना लिया। आने वाले महीनों में उसका अपने इस जाल के साथ प्यार-नफरत का रिश्ता बन गया। जाल को नियंत्रित करना आसान काम नहीं था, लेकिन पैट ने पूरी ऊर्जा लगा दी। समय के साथ वह अपनी दिनचर्या में इतना निपुण हो गया कि आपात स्थिति में, खोखली आवाज़ से बचने के लिए कंबल सहित, जाल को बीस सेकंड से भी कम समय में बंद और सील किया जा सकता था।

*

पैट्रिक विल्सन लैंगफोर्ड का जन्म 4 नवंबर, 1919 को एडमंटन, अल्बर्टा में हुआ था। उनके पिता जैस्पर नेशनल पार्क में एक अंग्रेज मूल के वन रक्षक थे। तीन बच्चों में सबसे बड़े, वे एक शांत और मेहनती छात्र थे जो अपना अधिकांश खाली समय स्कीइंग, हाइकिंग या घुड़सवारी में बिताते थे। 1937 में हाई स्कूल से स्नातक होने के बाद, लैंगफोर्ड ने ब्रूस्टर ट्रांसपोर्ट में ड्राइवर की नौकरी शुरू की। यह एक प्रतिष्ठित पद था जिसमें पर्यटकों को स्थानीय रेलवे स्टेशन से लेना और उन्हें एक बड़ी पैकार्ड टूरिंग कार में एमराल्ड लेक, योहो घाटी में ताकाकाव फॉल्स, लेक लुईस और बैन्फ तक ले जाना शामिल था, जहाँ वे दूसरी ट्रेन पकड़ सकते थे या शानदार बैन्फ स्प्रिंग्स होटल में ठहर सकते थे। धनी पर्यटकों के साथ समय बिताना बहुत मजेदार था, और पैट को उन्हें उन पहाड़ों के बारे में बताना बहुत अच्छा लगता था जिनसे उन्हें बचपन से ही प्यार था।

युद्ध शुरू होते ही उन्होंने तुरंत सेना में भर्ती होने का फैसला किया और उड़ान प्रशिक्षक के रूप में प्रशिक्षित होने वाले पहले बैच में चुने गए कुछ लोगों में से एक थे। पैट को इस चुनिंदा समूह में शामिल होने पर बहुत खुशी थी और 29 जनवरी, 1940 को प्रशिक्षण के लिए रिपोर्ट करते समय वे बेहद प्रसन्न थे। उन्होंने प्रशिक्षण में अच्छा प्रदर्शन किया, जल्दी सीखा और 19 अगस्त को जब उन्हें आखिरकार पायलट का लाइसेंस मिला, तो वे अपनी कक्षा में तीसरे स्थान पर रहे। आगे के प्रशिक्षण के बाद, वे डनविल स्थित 6 SFTS में उड़ान प्रशिक्षक के रूप में सोलह महीने के कार्यकाल के लिए चले गए। लैंगफोर्ड को एकल-इंजन येल प्रशिक्षक विमानों पर प्रशिक्षण देने में थोड़ा समय लगा और पहले ही महीने में वे दो टैक्सी दुर्घटनाओं में शामिल हो गए, जिन्हें लापरवाही का परिणाम माना गया। हालांकि, वे जल्दी ही सहज हो गए और जल्द ही छात्रों के चहेते बन गए। वे अन्य कई प्रशिक्षकों की तुलना में अधिक मिलनसार थे और अपने गृहनगर और परिवार के बारे में कुछ दोस्ताना सवाल पूछकर शिक्षक और छात्र के बीच की दूरी को कम करने के लिए हमेशा उत्सुक रहते थे।

एक वर्ष तक प्रशिक्षण देने के बाद, पैट बेचैन होने लगे और डनविले में अपना कार्यकाल समाप्त होने पर उन्होंने एक भारी बमवर्षक स्क्वाड्रन में तैनाती के लिए आवेदन किया। उनका अनुरोध स्वीकार कर लिया गया और 7 अप्रैल, 1942 को वे न्यूफ़ाउंडलैंड के गैंडर से स्कॉटलैंड के प्रेस्टविक के लिए बारह घंटे की उड़ान पर रवाना हुए। वहाँ पहुँचने पर, पैट ने बॉर्नमाउथ स्थित स्वागत केंद्र के लिए ट्रेन पकड़ी, जहाँ उन्होंने अपर हेफोर्ड स्थित 16 OTU में तैनाती से पहले एक महीना बिताया। कुछ अभ्यास उड़ानों के बाद पैट वेलिंगटन विमान उड़ाने के लिए तैयार थे। उन्होंने विमान को अच्छी तरह से चलाना सीख लिया और जून के अंत तक उन्हें अपने पहले मिशन, 25-26 जून, 1942 को ब्रेमेन पर 'हजारों के छापे' के लिए तैयार मान लिया गया।

अगले महीने तक फ्लाइट लेफ्टिनेंट लैंगफोर्ड प्रशिक्षण उड़ानों पर वापस चले गए, लेकिन 28-29 जुलाई को उन्हें आखिरकार हैम्बर्ग में एक ऑपरेशनल मिशन पर फिर से उड़ान भरने का मौका मिला। यह शहर हमेशा से ही एक चुनौतीपूर्ण लक्ष्य रहा है और उस रात तो और भी

मुश्किल था क्योंकि खराब मौसम के कारण हमलावर सेना का अधिकांश हिस्सा अपने हवाई अड्डों से उड़ान नहीं भर सका था। पैट की यूनिट किसी तरह उड़ान भरने में कामयाब रही, लेकिन उड़ान के दौरान मौसम और भी खराब हो गया और ओटीयू के विमानों को बेस पर वापस बुला लिया गया। पैट लैंगफोर्ड और उनके दल को ले जा रहा वेलिंगटन विमान 16 ओटीयू के उन चार विमानों में से एक था जिसे सिग्नल नहीं मिला और वह लक्ष्य की ओर बढ़ता रहा। जैसे-जैसे सेना हैम्बर्ग के पास पहुंची, वह और भी बिखर गई, और केवल अड़सठ बमवर्षक ही लक्ष्य तक पहुंच पाए और अपने बम गिरा सके। बाकी अधिकांश विमानों ने बादलों के बीच जो कुछ भी दिखाई दिया, उस पर अपने बम गिरा दिए। पैट का विमान बमवर्षक विमानों के बचे हुए समूह के साथ रहा, लेकिन ल्यूबेक के ऊपर वेलिंगटन पर कई एंटी-एयरक्राफ्ट गोले लगे और उसमें आग लग गई। पैट ने पैराशूट से छलांग लगाई, पैराशूट में आग लगी हुई थी, और वह ल्यूबेक के बाहरी इलाके में बुरी तरह से गिरा, उसके शरीर के ऊपरी हिस्से पर गंभीर रूप से जलने के निशान थे। हालांकि एक पायलट के रूप में उसके पास एक हजार घंटे से अधिक का अनुभव था, पैट लैंगफोर्ड ने केवल दो ऑपरेशन किए थे। घायल कनाडाई को तुरंत एक जर्मन सैन्य अस्पताल में ले जाया गया, और दो महीने बाद उसके घाव इतने ठीक हुए कि उसे स्टालैग लुफ्ट III में स्थानांतरित किया जा सके।

*

मई का महीना आया और शिविर में फिर से गर्मी का एहसास होने लगा। ज़्यादा से ज़्यादा कैदी परिसर में धूप सेंकने लगे और खेल के सामान को अगले मौसम के लिए साफ़ कर लिया गया। जहाँ ज़्यादातर कैदी धूप का आनंद ले रहे थे, वहीं पहली कुछ टीमें तीनों सुरंगों में खुदाई का काम शुरू कर रही थीं। केवल सबसे अनुभवी खुदाई करने वाले ही सुरंग खोदने का काम कर रहे थे, क्योंकि यह काम का सबसे कठिन हिस्सा था। पुराने मज़दूरों को तीनों सुरंगों में बाँट दिया गया था, जॉनी मार्शल को टॉम के पास, वॉली फ्लॉडी को डिक के पास और क्रम्प केर-रामसे को हैरी के पास। उन्हें जॉनी बुल, कॉक कैंटन और हैंक बर्कलैंड नाम के एक कनाडाई जैसे अन्य अनुभवी खुदाई करने वालों का सहयोग मिल रहा था, जो फ्लॉडी के दोस्त के रूप में काम पर आया था।

फ्लाइट लेफ्टिनेंट हेनरी बर्कलैंड से ज़्यादा साहसी शायद ही कोई रहा होगा। एक बढ़ई के बेटे, उनका जन्म 16 अगस्त, 1917 को मैनिटोबा के छोटे से कस्बे स्पीयरहिल में हुआ था, जहाँ वे और उनके छह भाई-बहन पले-बढ़े। परिवार आर्थिक रूप से संपन्न नहीं था और जहाँ भी काम मिलता, वे इधर-उधर भटकते रहते थे। स्पीयरहिल से वे कैलगरी गए और फिर विन्निपेग, जहाँ हैंक ने हाई स्कूल की पढ़ाई पूरी की। महामंदी के चरम पर होने के कारण, बर्कलैंड ने परिवार की मदद करने के लिए काम करना शुरू कर दिया। उन्होंने स्थानीय खेतों में छोटे-मोटे काम करने वाले के रूप में शुरुआत की, लेकिन एक गंभीर दुर्घटना के साथ उनका यह करियर समाप्त हो गया। एक कार को पास के कस्बे में ले जाते समय, हैंक का ट्रक सड़क से उतर गया और दुर्घटना में उन्हें गंभीर चोट आई। अस्पताल में पता चला कि चोट के अलावा, हैंक को स्कार्लेट फीवर और एक हाथ में गंभीर रक्त विषाक्तता भी थी। हैंक के पिता ने डॉक्टर के हाथ काटने के सुझाव को सिरे से खारिज कर दिया, इसलिए जहर को बाहर निकालने के लिए हैंक की बांह पर चीरे लगाए गए। कई हफ्तों तक हाथ के बचने की उम्मीद अधर में लटकी रही, लेकिन आखिरकार वह ठीक हो गया और हैंक काम पर वापस लौट सका।

काम ढूंढना आसान तो था, लेकिन मुमकिन नहीं। पहले तो उन्हें घर-घर जाकर सामान बेचने का काम ही मिला, लेकिन यह बर्कलैंड के स्वभाव के बिल्कुल अनुकूल नहीं था। फिर उन्होंने एक मांस पैकिंग कारखाने में काम किया, लेकिन कुछ ही महीनों बाद कंपनी के दिवालिया हो जाने से वह नौकरी भी चली गई। मैदानी इलाकों में तुरंत कोई नौकरी मिलने की उम्मीद न होने पर, हैंक ने उत्तरी ओंटारियो जाने वाली एक मालगाड़ी में चढ़कर खानों में काम की तलाश की। यह

इलाका भी बुरी तरह से मंदी से जूझ रहा था, इसलिए उन्होंने दूसरी ट्रेन पकड़ी और दूसरी दिशा में, ब्रिटिश कोलंबिया चले गए। आखिरकार उन्हें शीप क्रीक कस्बे में एक सोने की खान में काम मिल गया और वे आखिरकार बसने में कामयाब हो गए। उन्होंने लैक्रोस का खेल फिर से शुरू किया, जो स्कूल के दिनों में उनका शौक बन गया था, और शीप क्रीक बॉम्बर्स के लिए कोच की भूमिका निभाई। अपने मजबूत शरीर और अपार ताकत के कारण उन्हें 'बिग ट्रेन' के नाम से जाना जाता था।

युद्ध शुरू होने के तुरंत बाद, हैंक बर्कलैंड ने फ्रांसीसी वायु सेना (आरसीएएफ) में भर्ती हो गए; उन्हें सितंबर 1940 में प्रशिक्षण शुरू करने के लिए टोरंटो बुलाया गया। अगले महीने उन्हें प्रारंभिक प्रशिक्षण के लिए क्यूबेक के कैप डे ला मेडेलिन में तैनात किया गया, और फिर जनवरी 1941 में प्रिंस एडवर्ड द्वीप के समरसाइड में। 10 अप्रैल को उन्हें विंग और कमीशन प्राप्त हुआ, जिसके तुरंत बाद वे विदेश रवाना हो गए। वे पहले वेल्स के हावर्डन में 57 ओटीयू गए और फिर 122 स्क्वाड्रन के साथ एक महीना बिताने के बाद 19 सितंबर, 1941 को उन्हें 72 स्क्वाड्रन में नियुक्त किया गया। हैंक लगभग तुरंत ही कार्रवाई में शामिल हो गए, उन्होंने इंग्लिश चैनल पार करने और काफिले की गश्त के लिए स्पिटफायर विमान उड़ाए, लेकिन उन्होंने केवल बारह उड़ानें ही पूरी की थीं कि 7 नवंबर को स्क्वाड्रन को डनकर्क के ऊपर एक ध्यान भटकाने वाले अभियान को अंजाम देने का काम सौंपा गया। फ्रांसीसी तट पर गश्त के दौरान, बर्कलैंड का स्पिटफायर सीधे एक एंटी-एयरक्राफ्ट टावर के ऊपर से गुजरा और उसके पेट में एंटी-एयरक्राफ्ट गोले का पूरा भार आ गया। अपने जलते हुए विमान के बीच, हैंक किसी तरह उसे समुद्र तट पर उतारने में कामयाब रहा, इससे पहले कि वह बेहोश हो जाए।

एंटी-एयरक्राफ्ट गनर ने हैंक को मलबे से बाहर निकाला और कुछ हफ़्ते अस्पताल में बिताने के बाद उसे बार्थ भेज दिया गया। वहाँ उसकी मुलाकात साथी खनिक वॉली फ्लॉडी से हुई और दोनों पक्के दोस्त बन गए। फ्लॉडी लंबा और दुबला-पतला था, जबकि बर्कलैंड गठीला और गठीला था। दोनों देखने में कुछ अजीब से लगते थे, लेकिन ज़मीन के नीचे उनसे ज़्यादा मेहनत और लंबे समय तक काम करना शायद ही किसी के बस की बात हो। और पहले हफ़्ते की खुदाई को देखकर लगता था कि उन सभी को काफ़ी मेहनत करनी पड़ेगी।

*

डिक से ज़्यादा परेशानी नहीं हुई, लेकिन टॉम और हैरी दोनों ने मुश्किलें खड़ी कर दीं। हैरी के जाल के नीचे ईंट और कंक्रीट की एक मोटी परत थी, जिसे बेसबॉल बैट पर लगे चोरी के पिकहेड से तोड़ना पड़ा। ऑपरेशन के शोर को छिपाने के लिए, रॉजर ने 104 के बाहर कुछ मज़दूरों को तैनात कर दिया, जो मासूमियत से बेकिंग डिश और रसोई के अन्य सामान तोड़ रहे थे।

टॉम सबसे मुश्किल साबित हुआ। इंजीनियरों ने पाया कि उनके द्वारा हटाए गए मलबे ने कंक्रीट के फर्श को सहारा दिया हुआ था, इसलिए मुख्य कारीगर जॉनी ट्रैविस, जो एक चुस्त-दुरुस्त और बेदाग व्यक्ति थे और कभी दक्षिण अफ्रीका में खनन इंजीनियर रह चुके थे, को फर्श और रेत के बीच एक सहारा देने के लिए लकड़ी का ढांचा डिजाइन और बनाना पड़ा। फिर उन्होंने ढांचे के ऊपर एक ट्रे लगाई जिसे रेत से भरा जा सकता था। इसके लगने से, अगर कोई उस पर कदम रखता तो ट्रैप से खोखली आवाज नहीं आती।

सुबह 8:00 बजे से लेकर शाम 5:30 बजे तक, दोपहर के भोजन के लिए थोड़े समय के आराम के साथ, खुदाई करने वाले शाफ्ट पर काम करते रहे। पहले तो वे कोयले के फावड़ों से काम करते थे, लेकिन ये इतने कमज़ोर साबित हुए कि ट्रैविस ने चूल्हों से चुराई गई लोहे की प्लेटों का उपयोग करके मज़बूत फावड़े बनाए। वे एक बार में लगभग पाँच फीट खोदते थे, फिर टूटे हुए पलंगों के कोने के खंभों से एक शाफ्ट फ्रेम बनाते थे। फ्रेम के पीछे सहारा देने के लिए पलंग के तख्ते लगाए गए थे, और एक तरफ एक मज़बूत सीढ़ी बनाई गई थी। धीरे-धीरे, तीनों

शाफ्ट अपनी निर्धारित तीस फीट की गहराई तक पहुँच गए।

जब यह स्तर पहुँच गया, तो प्रत्येक शाफ्ट के आधार पर कक्षों को बड़ा करने का मुश्किल काम शुरू हुआ। यह काम कितना मुश्किल था, यह तब स्पष्ट हुआ जब केर-रामसे, फ्लॉडी और कैंटन ने डिक के कक्ष पर काम करना शुरू किया। तीनों ने अभी काम शुरू ही किया था कि कैंटन ने शाफ्ट के ऊपर देखा और शीर्ष के पास तख्तों के बीच से रेत रिसती हुई देखी। कुछ ही सेकंड में जब उसने देखा, तो रिसाव बाढ़ में बदल गया, और पलक झपकते ही वह और क्रम्प सीढ़ी से ऊपर चढ़ने लगे, उनके पीछे-पीछे फ्लॉडी भी आ गया। कॉक और क्रम्प जल्दी से बाहर निकले और वॉली को बाहर निकालने के लिए मुड़े, जिसके पैर पहले ही रेत में दब चुके थे। धीरे से बड़बड़ाते हुए, तीनों नुकसान का जायजा लेने के लिए पीछे हट गए। आधे मिनट से भी कम समय में, तीस फुट का शाफ्ट लगभग ऊपर तक भर गया था। केवल सांस लेने के लिए रुके, और फिर जल्दी से उसे फिर से खोदने में जुट गए। कुछ दिनों बाद, हैरी में भी यही हुआ, और क्रम्प फिर से जॉनी बुल के साथ गड्ढे के पास उदास खड़ा था, उस टन रेत के बारे में सोच रहा था जिसने उनकी सारी मेहनत को बर्बाद कर दिया था। एक बार फिर वे तुरंत काम में जुट गए और शाफ्ट पर बेडबोर्ड की दोहरी परत लगा दी, इस उम्मीद में कि ऐसी दुर्घटना दोबारा न हो।

सुरंगों को ठीक से मजबूत करने के बाद, प्रत्येक सुरंग के निचले हिस्से में बने कक्ष पर काम अधिक सुरक्षित रूप से आगे बढ़ सकता था। एक कक्ष का उपयोग रेत के फैलाव और अस्थायी भंडारण के लिए किया जाना था, और दूसरे का उपयोग विनिर्माण कार्यशाला के रूप में। इस कक्ष में कंकड़ों से भरा एक छोटा डिब्बा भी था, जो ऊपर बैरक तक जाने वाली एक रस्सी से बंधा हुआ था। जब भी कक्ष में मौजूद लोग कंकड़ों की खड़खड़ाहट सुनते, वे तुरंत काम रोक देते और सुरक्षा की सूचना मिलने तक प्रतीक्षा करते। हालांकि वे तीस फीट भूमिगत थे, फिर भी हमेशा यह संभावना बनी रहती थी कि कोई तेज कान वाला बदमाश नीचे की गतिविधि की आवाज सुन ले।

तीसरा कक्ष सबसे महत्वपूर्ण था, क्योंकि इसमें ज़रूरी वायु पंप लगा हुआ था। सुरंगों की लंबाई के कारण, चेहरे तक पर्याप्त ऑक्सीजन पहुँचाने के लिए अतिरिक्त शक्तिशाली वायु पंप लगाने पड़े। अतीत में कई तरीके आजमाए गए थे, जिनमें एक ग्रामोफोन जैसा उपकरण भी शामिल था जो टर्नटेबल घुमाने पर हवा फेंकता था, लेकिन इन्हें अस्वीकार कर दिया गया और पूर्वी परिसर में इस्तेमाल होने वाले पंप को प्राथमिकता दी गई। दरअसल, मूल विचार एक मैकेनिक्स पत्रिका से आया था जो किसी तरह शिविर में पहुँच गई थी।

एयर पंप बनाने वाले व्यक्ति छब्बीस वर्षीय जेन्स आइनार मुलर थे, जो एक लंबे, पतले नॉर्वेजियन थे, जिनका चेहरा गंभीर और नीली आंखें थीं, और जो 19 जून, 1942 को 331 स्क्वाड्रन के साथ उड़ान भरते समय मारे गए थे, और यॉर्कशायर के थॉमस रॉबर्ट नेल्सन थे, जिन्हें सितंबर 1942 में उत्तरी अफ्रीका में तब पकड़ लिया गया था जब उनके वेलिंगटन विमान का इंजन खराब हो गया था।

शुरुआत में, जेन्स, बॉब और अन्य लोगों ने दो किट बैगों को एक साथ सिलकर और उन्हें तार के छल्लों से मजबूत करके बड़े, नलीदार धौंकनी बनाए। फिर पूरे ढांचे को लकड़ी के फ्रेम पर लगे रनर पर स्थापित किया गया और एक सिरे पर एक मजबूत हैंडल लगाया गया। हवा अंदर लेने और बाहर निकालने के लिए वेंट लगाए गए और चमड़े के फ्लैप वाल्व किट बैगों के माध्यम से हवा के प्रवाह को नियंत्रित करते थे। पंप चलाना रोइंग मशीन चलाने जैसा ही था; पंपर एक स्लाइडिंग सीट पर बैठता था और हवा अंदर खींचने के लिए हैंडल को अपनी ओर खींचता था और फिर उसे सुरंग में बाहर निकालने के लिए पीछे धकेलता था। हवा अंदर लेने वाला वेंट ऊपर की झोपड़ी में छिपा हुआ था, जबकि हवा बाहर निकालने वाला वेंट सुरंग की मुख्य वायु लाइन से जुड़ा हुआ था। सुरंग बंद होने पर प्राकृतिक वेंटिलेशन की अनुमति देने के लिए पंप में एक बाईपास वाल्व भी था। इसका परीक्षण करने के लिए, इंजीनियरों ने हवा अंदर लेने वाले वेंट पर एक जलता हुआ कपड़ा रखा और तब तक पंप किया जब तक कि हवा बाहर निकालने वाले वेंट

से गाढ़ा, काला धुआं निकलने लगा। यह अच्छी तरह से काम किया और निर्माण और संयोजन की पूरी प्रक्रिया केवल दस दिनों में पूरी हो गई, जो 104 में एक कार्यशाला में गायन अभ्यास की आड़ में की गई थी।

एयर पंप लग जाने और काम करने के बाद, सुरंगों को सील करके भूमिगत काम करना संभव हो गया, जिससे पकड़े जाने का खतरा काफी कम हो गया। जैसे-जैसे सुरंगों का निर्माण धीरे-धीरे आगे बढ़ता गया, अन्य सभी सुविधाएं तैयार करके स्थापित कर दी गईं। मुख्य बिजली आपूर्ति से बिजली जोड़कर प्रकाश की व्यवस्था की गई। गलियारों से बिजली के उपकरण हटा दिए गए और योग्य इलेक्ट्रीशियन-कर्मियों द्वारा शिविर की विद्युत प्रणाली को पुनर्व्यवस्थित करके पर्याप्त केबल की व्यवस्था की गई। हालांकि दिन के उन समयों में जब बिजली बंद होती थी, तब भी मोटे लैंप का उपयोग करना पड़ता था, लेकिन बिजली के लैंप से सुरंग की हवा काफी हद तक कम घुटन भरी हो गई थी।

हवा की पाइप बनाने के लिए, लिटिल एक्स ने रेड क्रॉस पार्सल में कैदियों को मिले खाली क्लिम के डिब्बे इकट्ठा किए। डिब्बों को तोड़ने वालों ने सावधानीपूर्वक उनके सिरे हटा दिए और सिलेंडरों को एक लंबी पाइप में फिट कर दिया; ढक्कन वाली जगह पर डिब्बे थोड़े संकरे थे, इसलिए वे पूरी तरह से एक-दूसरे में समा गए। फिर, प्रत्येक जोड़ को ग्रीस लगे कागज से कसकर लपेटा गया, और हवा की पाइप को सुरंग के फर्श में खोदी गई नौ इंच गहरी नाली में बिछा दिया गया। इसे मिट्टी और फर्श की पट्टियों से ढक दिया गया और यह उपयोग के लिए तैयार थी। सुरंग के मुहाने पर, हवा को खोदने वाले की ओर ऊपर की ओर निर्देशित करने के लिए एक कोण वाला नोजल हवा की पाइप के सिरे पर लगाया गया था। नोजल हटाने योग्य था और पाइप को बढ़ाते समय इसे आगे-पीछे किया जा सकता था।

सुरंगों में आवागमन सुगम बनाने के लिए रेल की पटरियाँ बिछाई गईं। ये पटरियाँ झोपड़ियों से निकाली गई लकड़ियों से बनाई गईं। ये एक इंच चौड़ी, आधा इंच मोटी और कुछ फीट लंबी थीं, जिन्हें सुरंग के तल पर बने फ्रेमों में मजबूती से कीलों से ठोक दिया गया। जॉनी ट्रैविस और बॉब नेल्सन ने स्वयं ट्रॉलियाँ बनाईं। पहिए बनाने के लिए, उन्होंने लकड़ी की तीन डिस्क को आपस में चिपकाया, जिसमें बाहरी डिस्क बड़ी थी ताकि एक फ्लेंज बन सके। फ्लेंज को घिसाव से बचाने के लिए धातु की पट्टियों से ढका गया था, और पहियों के हब को एक घूमने वाले धुरे से मजबूती से जोड़ा गया था जो ट्रॉली पर लगे मार्जरीन से चिकनाई लगे कठोर लकड़ी के बेयरिंग पर चलता था। धुरों के लिए, ट्रैविस और नेल्सन ने खाना पकाने के चूल्हों से आगे की पटरियाँ निकालीं और उनके सिरों को काटकर पहियों पर बोल्ट से कस दिया। प्रत्येक ट्रॉली एक बार में रेत के दो बक्से या एक मजदूर को ले जा सकती थी और इसे रेड क्रॉस पार्सल से बुनी हुई डोरियों से बनी रस्सियों से खींचा जाता था। रेल की पटरी जल्द ही अपरिहार्य हो गई, जिससे खुदाई करने वाला सुरंग में लंबी चढ़ाई में थके बिना ही खदान तक पहुँच सकता था।

*

शुरुआती दिनों में इंजीनियरिंग का सबसे महत्वपूर्ण काम शायद सपोर्ट फ्रेम का डिज़ाइन और फिटिंग करना था। ये फ्रेम पूरी तरह से चौकोर नहीं थे, नीचे से बीस इंच और ऊपर से अठारह इंच चौड़े थे, और इसी वजह से इन्हें बिना कीलों के लगाया जा सकता था। तख्तों को जीभ और खांचे वाले जोड़ों से काटा गया था, और एक बार जब उन्हें ऊपर और पीछे रेत भरकर अपनी जगह पर लगा दिया गया, तो मिट्टी के वजन ने फ्रेमों पर दबाव डाला और उन्हें मजबूत बना दिया। जैसे ही बढ़ई फ्रेम और तख्तों की आपूर्ति काटने में जुट गए, सुरंग खोदने वाली टीमों ने खुदाई शुरू कर दी।

शुरुआत में खुदाई करने वाली तीन टीमें थीं, जिनमें से प्रत्येक में दस-दस लोग थे और उन्हें दो शिफ्टों में बांटा गया था। जॉनी मार्शल टॉम की टीम का नेतृत्व कर रहे थे, क्रम्प केर-रामसे

डिक की टीम का नेतृत्व कर रहे थे और जॉनी बुल हैरी के खुदाई करने वालों के प्रभारी थे। उनकी टीमों में डैनी क्रोल, कॉक कैंटन, मकल मुइर और हेनरी लैमंड जैसे सबसे अनुभवी खुदाई करने वाले थे, जो लगभग पचास फीट की खुदाई करते थे और रेत की स्थिति पर कड़ी नज़र रखते थे। सुरंग समिति जानती थी कि सागन की रेत बहुत अस्थिर थी और उन्होंने किसी भी नए मजदूर को लाने से पहले सुरंग के पहले हिस्से को अनुभवी मजदूरों को सौंपने का फैसला किया।

हर दिन खुदाई का काम लगभग एक जैसा ही होता था। सुबह की प्रार्थना के बाद और ब्लॉक सुरक्षाकर्मियों से हरी झंडी मिलने के बाद, पहली शिफ्ट के लोग ज़मीन के नीचे चले जाते थे। फिर जालों को सील कर दिया जाता था और एक सहायक को प्रवेश द्वार पर निगरानी के लिए छोड़ दिया जाता था। पंपर एयर पंप पर अपनी जगह ले लेता था और रेत फैलाने वाला सीधे रेत फैलाने वाले कक्ष में चला जाता था, जहाँ वह सहारा देने वाले फ्रेम लगाने की तैयारी का काम भी करता था। पहला खोदने वाला एक ट्रॉली पर चढ़ता और खुद को ऊपर खींचकर खुदाई स्थल तक ले जाता; फिर उसका दूसरा साथी ट्रॉली को वापस खींचता और उस पर चढ़ जाता, जिसे पहला आदमी ऊपर खींच लेता था। खुदाई स्थल पर मौजूद मजदूर एक कोहनी के बल लेटकर रेत को खुरचकर अपने दूसरे साथी को देता था, जो विपरीत दिशा में मुंह करके लेटा होता था। दूसरा साथी रेत इकट्ठा करके ट्रॉली पर रखे बक्सों में भरता था और ट्रॉली भर जाने पर रेत फैलाने वाले को संकेत देता था। यह काम गर्म और गंदा होता था, और खोदने वालों को रेत के निशानों से त्वचा की रक्षा के लिए भारी ऊनी लंबे अंडरवियर पहनने के निर्देश दिए जाने के कारण यह और भी अप्रिय हो जाता था। और जब नंबर एक और नंबर दो के लिए नौकरी बदलने का समय आया, तो उन्हें वापस शाफ्ट के तल तक जाना पड़ा, क्योंकि सुरंग में अदला-बदली करने के लिए पर्याप्त जगह नहीं थी।

इन चुनौतियों के बावजूद, प्रगति अच्छी थी। खुदाई करने वालों को रेत के फैलाव की चिंता नहीं करनी पड़ती थी, इसलिए वे प्रतिदिन सात या आठ फीट तक रेत हटा पाते थे। फिर, रेत से भरे बोरों से भरे फैलाव कक्ष के साथ, पहली शिफ्ट दोपहर के एपेल (धूप सेंकने) के लिए ऊपर आने की तैयारी करती थी। मजदूर शाफ्ट के तल पर अपनी वर्दी बदलते थे और फिर ऊपर जाकर अपने शरीर के हर रोम में घुस चुकी रेत को धोते थे।

एपेल के बाद, दूसरी शिफ्ट मलबे को हटाने के लिए नीचे गई, और इस काम के लिए सुरंग को खुला छोड़ना पड़ा। रेत की बूंदों को रोकने के लिए सुरंग के चारों ओर कंबल बिछा दिए गए, और मिट्टी से भरे भारी किट बैग और एल्यूमीनियम के जग ट्रैपफ्यूहरर्स को सौंप दिए गए; सत्तर-अस्सी सौ पाउंड रेत के ढेर उठाने के बाद, ट्रैपफ्यूहरर्स पूरी तरह से थक चुके थे।

सुरंग वाले कमरे के पास ही तितर-बितर करने वाले सैनिक इंतज़ार कर रहे थे, जिनमें से प्रत्येक के पास कई कैनवास के थैले थे। थैलों को रेत से भरकर सैनिक अपने युद्ध वस्त्र के नीचे गले में लटका लेते थे। फिर वे परिसर में बने निर्धारित तितर-बितर करने के स्थानों में से किसी एक पर जाते, अपनी कमीज़ या ओवरकोट उतारते और थैलों को खाली कर देते। परिसर में बचे हुए कई चीड़ के पेड़ इस अभियान के लिए एक प्रभावी आवरण का काम करते थे, और सर्वेक्षकों द्वारा खोजे गए विभिन्न गुप्त स्थान भी काम आते थे। परिणामस्वरूप, परिसर के निर्माण के दौरान की गई खुदाई वाले रेतीले क्षेत्रों में सुरंग की मिट्टी को ठिकाने लगाना संभव हो जाता था। वहाँ, चमकीली पीली सुरंग की रेत को मिलाकर छिपाया जा सकता था। सामान्य परिस्थितियों में, तितर-बितर करने का अभियान दोपहर के भोजन और शाम के मध्य तक ही सीमित रहता था, जब परिसर में कम जर्मन सैनिक होते थे।

जब मलबे को हटाने का काम चल रहा था, इंजीनियर नीचे जाकर एयर पंप का निरीक्षण करने गए, जिसकी नम भूमिगत परिस्थितियों में प्रतिदिन जाँच करनी पड़ती थी, और एयर पाइप, लाइटिंग केबल और रेलरोड को आगे बढ़ाने का काम भी किया। मलबे को हटाने वाले कक्ष में लकड़ी का एक और भंडार जमा कर दिया गया और सुरंग को बंद कर दिया गया, ताकि अगले दिन काम फिर से शुरू हो सके।

समय-समय पर सर्वेक्षक यह सुनिश्चित करने के लिए जाँच करते थे कि सुरंगों का निर्माण योजना के अनुसार हो रहा है। ट्रैविस ने एक स्पिरिट लेवल बनाया ताकि यह सत्यापित किया जा सके कि वे समतल सतह पर आगे बढ़ रहे हैं, और इंजीनियरों के पास सुरंग की दिशा जाँचने के लिए दो चुराए हुए जर्मन प्रिज्मेटिक कंपास भी थे। लंबाई का मापन एक डोरी से किया गया था जिसे रेड क्रॉस के स्कूली सामान के एक पार्सल से मिले रूलर से पहले ही नाप लिया गया था। डोरी को सुरंग के अंत तक ले जाकर कसकर खींचा गया, और एक्स ऑर्गनाइजेशन के एक गणितज्ञ ने सुरंग के मुख से प्रवेश द्वार तक की दूरी की गणना की। जैसे-जैसे टॉम, डिक और हैरी आगे बढ़ते गए, ये मापन महत्वपूर्ण होते चले गए।

*

सुरंगों का काम दो सप्ताह से बहुत अच्छे से चल रहा था, तभी रॉजर ने अपने लेफ्टिनेंटों को एक बैठक के लिए बुलाया।

उन्होंने कहना शुरू किया, ‘बहुत जल्द ही हमें रेत फैलाने में समस्या आने वाली है। अभी हम जो तरीका अपना रहे हैं, वह संतोषजनक नहीं है – बोरियों को भरना बहुत मुश्किल है, और रेत फैलाने वालों को रेत उतारने के लिए अपने कोट उतारने पड़ते हैं, जो काफी जोखिम भरा है। इसके अलावा, गर्म मौसम में, ओवरकोट पहने इधर-उधर घूमते लोग संदिग्ध लगेंगे।’

पीटर फैंशॉ ने सबसे पहले बोलना शुरू किया। उन्होंने अपनी युद्ध वर्दी से एक अजीबोगरीब दिखने वाला उपकरण निकालते हुए कहा, 'शायद यह ठीक रहेगा।' इस उपकरण में रेड क्रॉस के दो सस्पेंडर्स लगे थे, जो जर्मन तौलियों से बने दो लंबे सॉसेज के आकार के थैलों को जोड़ रहे थे, जिनके निचले हिस्से में पिन लगे थे। पिनों से दो डोरियां लटक रही थीं। उन्होंने आगे कहा, 'अब, अगर मैं करके दिखाऊं। आप इस उपकरण को अपने गले में लटका लें और डोरियों को अपनी जेबों में डाल लें। हर थैली में रेत भर लें और थैलियों को अपनी पतलून के पाँवों में डाल लें। फिर, जितना हो सके मासूम दिखने की कोशिश करते हुए, आप बस परिसर में टहलते हुए बाहर निकलें, पिनों को खींचें और रेत आपकी पतलून के पाँवों से नीचे ज़मीन पर गिर जाएगी। आप बस उसे थोड़ा सा दबा दें और चले जाएं।'

योजनाकारों ने कुछ पल के लिए फैंसहावे को घूर कर देखा और फिर जैसे ही उनका विचार समझ में आया, वे सब मुस्कुरा उठे। 'यह तो कमाल है!' रोजर ने कहा। 'यह ज़रूर काम करेगा!'

‘हाँ, ऐसा ही है,’ हॉर्नब्लोवर ने धीमी आवाज़ में कहा। ‘मैंने इसे पहले आज़माया था। अगर आप बिलकुल बेवकूफ नहीं हैं, तो यह पूरी तरह से कारगर है।’

और इस तरह पेंगुइनों का विचार पैदा हुआ, जिन्हें यह नाम इसलिए दिया गया क्योंकि वे प्रत्येक पतलून के एक पैर में आठ पाउंड रेत लेकर चलते समय एक खास तरह से लड़खड़ाते थे। दरअसल, यह नाम जल्द ही अनुपयुक्त साबित हुआ क्योंकि रेत फैलाने वाले पेंगुइन इतनी सहजता से चलते थे कि कुछ फीट की दूरी से भी यह बताना अक्सर असंभव था कि किसी व्यक्ति ने रेत का बोझ उठाया हुआ है। फैंसहावे ने तुरंत कामगारों की भर्ती शुरू कर दी और पतलून के थैले बनाने शुरू कर दिए और एक सप्ताह के भीतर उनके पास दो सौ पेंगुइनों की एक सेना तैयार हो गई जो टॉम, डिक और हैरी द्वारा लाई गई सारी रेत को संभालने के लिए तैयार थी।

*

पूरे शिविर की तरह ही, सैनिकों को अलग-अलग देशों में भेजने वाली संस्था में भी अनेक प्रकार के लोग शामिल थे, जो सभी मित्र राष्ट्रों से और हर संभव पृष्ठभूमि से आए थे। इसमें छह अलग-अलग टीमें (ब्रिटिश, राष्ट्रमंडल, अमेरिकी, पोलिश, दक्षिण अफ्रीकी और अन्य मित्र राष्ट्रों के अधिकारी) थीं, जिनमें से प्रत्येक स्वतंत्र रूप से काम कर रही थी।

ब्रिटिश टीम में कुछ मूल सैन्यकर्मी भी शामिल थे, जैसे लेफ्टिनेंट डगलस आर्थर पॉयंटर, एक नौसैनिक विमान चालक, जो नवंबर 1938 में रॉयल नेवी में मिडशिपमैन के रूप में भर्ती हुए थे। उन्होंने अगले वर्ष फ्लीट एयर आर्म में ऑब्जर्वर के रूप में योग्यता प्राप्त की और बाद में उन्हें एचएमएस फ्यूरियस के 825 स्क्वाड्रन में तैनात किया गया। 22 सितंबर, 1940 को, डग और उनके पायलट ने अपने स्वोर्डफिश टॉरपीडो बमवर्षक विमान में ट्रॉनहेम बंदरगाह में जर्मन जहाजों पर हमला करने के लिए उड़ान भरी, लेकिन खराब मौसम के कारण उन्हें ट्रॉनहेम के उत्तर में एक द्वीप पर उतरना पड़ा। उन्हें एक नाव मिली और वे ओर्कनी द्वीप समूह के लिए रवाना हुए, लेकिन नॉर्वे के तट के एक अन्य हिस्से पर आ गिरे और जल्द ही उन्हें पकड़ लिया गया।

पोलिश टीम के लगभग सभी सदस्य युद्ध-पूर्व नियमित अधिकारी थे, जिनकी सेवा अवधि औसतन किसी भी अन्य राष्ट्रीय समूह से कहीं अधिक थी। इनमें गंजे और पिता तुल्य दिखने वाले फ्लाइट लेफ्टिनेंट काज़िमिएर्ज़ पावलुक भी थे, जो वारसॉ के मूल निवासी थे और युद्ध से पहले पोलिश वायु सेना में सेवा दे चुके थे। वे 1940 में इंग्लैंड भाग गए, जहाँ उन्हें लिंडहोल्म स्थित 305 स्क्वाड्रन में तैनात किया गया। मार्च 1942 में, ल्यूबेक पर एक हवाई हमले के दौरान नेविगेटर पावलुक का विमान गिरा दिया गया और उन्हें बंदी बना लिया गया। एक अन्य पोलिश नागरिक, फ्लाइट लेफ्टिनेंट पावेल विल्हेम टोबोल्स्की, का जन्म 1906 में ब्यडगोज़्ज़ में हुआ था। वे सुनहरे बालों वाले, गंभीर चेहरे वाले, भारी नैन-नक्श और हंसमुख मुस्कान वाले व्यक्ति थे, जो अक्टूबर 1927 में सेना में शामिल हुए थे। उन्होंने दस वर्षों तक सेवा की और फिर उन्हें ऑब्जर्वर लेफ्टिनेंट के रूप में नियुक्त किया गया। 26 जून, 1942 को, ब्रेमेन पर 'हजारों छापे' के बाद, टोब के 301 स्क्वाड्रन का वेलिंगटन विमान एक जर्मन रात्रि लड़ाकू विमान के हाथों नष्ट हो गया।

पोलैंड के वरिष्ठतम नेता फ्लाइट लेफ्टिनेंट एंटोनी किवनार्स्की थे, जो एक आकर्षक और उत्साही व्यक्ति थे, जिनके बाल सफ़ेद हो रहे थे और चेहरे पर एक अजीब, जिज्ञासु भाव रहता था। 1899 में मॉस्को में जन्मे टोनी ने अगस्त 1917 में सेना में प्रवेश किया और तब से वे पदोन्नति पाते हुए तीन अलग-अलग युद्धों में लड़े और इस दौरान उन्होंने पोलिश और विदेशी पदकों से भरपूर पदक प्राप्त किए। 27 अगस्त 1942 को कैसल पर हुए एक हमले के दौरान, 305 स्क्वाड्रन के वेलिंगटन विमान में नेविगेटर के रूप में उड़ान भरते समय टोनी को बंदी बना लिया गया। शिविर में सभी उनका सम्मान करते थे और वे अपने दयालु हृदय और सरल स्वभाव में अत्यंत मासूम थे। टोनी ने अपने कई साथी पोलिश युद्धबंदियों को प्रशिक्षण दिया था, जो उन्हें पिता तुल्य मानते थे।

इसके विपरीत, दक्षिण अफ्रीकी टीम के प्रमुख, मूंछों वाले अफ्रीकानर जोहान्स स्टीफ़नस गौव्स, इतने युवा थे कि वे किवनार्स्की के बेटे हो सकते थे। 13 अगस्त, 1919 को ऑरेंज फ्री स्टेट के बुल्टफ़ॉन्टेन में जन्मे, वे चार बच्चों में सबसे बड़े थे और परिवार के फ़ार्म में पले-बढ़े। युवा जोहान्स एक हंसमुख और प्रसन्नमिजाज लड़का था जो हमेशा खुद को दुनिया का सबसे सफल व्यक्ति समझता था। उसकी सबसे बड़ी महत्वाकांक्षा पुलिसकर्मी बनने की थी।

जोहान्स ने अपनी शिक्षा स्थानीय कृषि विद्यालय से शुरू की और फिर बुल्टफॉन्टेन हाई स्कूल में दाखिला लिया। वहाँ वे एक उत्साही खिलाड़ी थे और 1937 में केप प्रांत के दौरे पर स्कूल की रग्बी टीम के कप्तान थे। उन्होंने उसी वर्ष स्नातक की उपाधि प्राप्त की और भावी सैनिकों के लिए एक विशेष प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, स्पेशल सर्विस बटालियन में प्रवेश लिया। हालाँकि, एक नई रुचि जागृत हो गई थी और जोहान्स ने दक्षिण अफ्रीकी वायु सेना (SAAF) के लिए आवेदन किया, लेकिन उनकी अंग्रेजी कमजोर होने के कारण उन्हें सफलता नहीं मिली। फिर भी, उन्होंने हार नहीं मानी और अपने पुराने सपने को पूरा करने के लिए वापस लौटे और दक्षिण अफ्रीकी पुलिस में तबादला करवा लिया। पुलिस में एक साल बिताने के बाद, युवा गौव्स ने स्कूल लौटने का फैसला किया और विज्ञान की पढ़ाई के लिए ऑरेंज फ्री स्टेट के यूनिवर्सिटी कॉलेज में दाखिला लिया। इसके साथ ही उन्हें विश्वविद्यालय के छात्र प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से

विमान उड़ाने का अवसर भी मिला। उनकी अंग्रेजी में लगातार सुधार होता रहा और उन्हें पूरा विश्वास था कि वायु सेना उनके अगले आवेदन पर उन्हें स्वीकार कर लेगी।

उनका आत्मविश्वास बिल्कुल सही था, और जोहान्स को 14 मई, 1940 को सेना में भर्ती कर लिया गया। उन्हें प्रशिक्षण अभ्यास बहुत पसंद थे और जब भी वे घर आते, उनके बारे में विस्तार से बातें करते थे। एक बार तो वे अचानक ही आ गए, जब वे एक क्रॉस-कंट्री प्रशिक्षण उड़ान के दौरान गौव्स फार्म की ऊबड़-खाबड़ ज़मीन पर अपना टाइगर मॉथ विमान उतार लाए। वे कुछ ही मिनटों के लिए रुके, लेकिन उनके अचानक आगमन ने काफी सनसनी मचा दी।

29 मार्च, 1941 को जैसे ही उन्हें सैन्य सेवा का लाइसेंस और कमीशन मिला, जोहान्स ने अपनी ट्रेनिंग का सदुपयोग करने के बारे में सोचना शुरू कर दिया। उनकी यह इच्छा जल्द ही पूरी हुई और 7 मई को लेफ्टिनेंट गौव्स को 41 स्क्वाड्रन में तैनात किया गया, जहाँ उन्हें अबीसीनिया में हार्टबी लड़ाकू-बमवर्षक विमान उड़ाने थे। परिवार ने उन्हें रेलवे स्टेशन पर उत्तर की ओर उनकी यात्रा के पहले चरण के लिए विदा किया और जोहान्स युद्ध में शामिल होने की संभावना से बेहद खुश थे। उन्होंने उत्साह से गाया, 'मुझे अलविदा कहते हुए शुभकामनाएँ देना,' और फिर समूह के साथ दक्षिण अफ्रीका का राष्ट्रगान गाया। एक प्रसन्नतापूर्ण हाथ हिलाकर, वे दुश्मन से लड़ने के लिए प्रिटोरिया जाने वाली ट्रेन में सवार हो गए।

41 स्क्वाड्रन द्वारा किए गए अधिकांश ऑपरेशन निम्न-स्तरीय टोही मिशन थे, और विमान अक्सर दुश्मन की खाइयों को नष्ट करने के लिए कुछ बम ले जाते थे। ऐसा ही एक हमला 18 अगस्त, 1941 को हुआ, जब गौव्स और उनके साथी पायलट 'बस्टर' कीटन ने दो अन्य विमानों के साथ भोर में अपने बेस से उड़ान भरी। अबीसीनिया में अपने लक्ष्य तक पहुँचने से काफी पहले, बस्टर ने देखा कि इंजन से रिस रहे तेल ने उनकी आगे वाली मशीन गन को गंदा कर दिया था, जिससे वह बेकार हो गई थी। दुश्मन पर गोलीबारी करने में असमर्थ, वे केवल अपने बम गिरा सकते थे और बाकी उड़ान की प्रतीक्षा करते हुए कुछ हवाई करतब दिखा सकते थे। लौटते समय, कॉकपिट के फर्श पर तेल रिसने लगा और कीटन ने अपने पायलट की ओर मुड़कर देखा तो गौव्स का चेहरा तेल से सना हुआ था। कुछ ही क्षणों बाद इंजन बंद हो गया और गौव्स ने अपने साथियों को इशारा किया कि वह आपातकालीन लैंडिंग करने जा रहे हैं। नीचे उतरते हुए, जोहान्स और बस्टर को उपयुक्त लैंडिंग ग्राउंड न देखकर निराशा हुई। एकमात्र विकल्प लगभग साठ गज चौकोर एक जोता हुआ खेत था। उनके दोनों साथी विमान चालक दल ने दहशत भरी निगाहों से देखा कि छोटा सा बाइप्लेन खेत में उतरा और तुरंत धूल के बादल के साथ पलट गया। बस्टर अपने कॉकपिट से बाहर निकला और जोहान्स को निकालने के लिए संघर्ष करने लगा, जो अभी भी विमान के नीचे फंसा हुआ था। आपातकालीन निकास द्वार खोलने में असमर्थ होने पर, अंततः उसे गौव्स को खोदकर बाहर निकालना पड़ा।

जैसे ही दोनों अपनी मशीन से दूर जाने लगे, एक स्थानीय निवासी, संभवतः खेत का मालिक, उनके पास आया और उन्हें चेहरे से तेल धोने के लिए दूध का कटोरा और पानी की बाल्टी दी। उसने बहुभाषी नोट को उत्सुकता से पढ़ा जिसमें पायलटों की सुरक्षित वापसी के लिए भारी इनाम की घोषणा की गई थी और उसने उन्हें अपनी झोपड़ी में ले जाना उचित समझा। दक्षिण अफ़्रीकी पायलटों को भोजन कराया गया और आराम करने दिया गया, और अगली सुबह वे सभ्यता की ओर वापस जाने के लिए निकल पड़े। अपने फ़्लाइट कमांडर द्वारा गिराए गए सामान के साथ, गौव्स और कीटन ने अपने स्थानीय गाइड के साथ अच्छी प्रगति की और देर दोपहर तक एक बड़े गाँव में पहुँच गए, जहाँ उन्हें अबीसीनियाई पुलिस के हवाले कर दिया गया। अब आधिकारिक सुरक्षा के साथ, दोनों को अगली सुबह सकोटा ले जाया गया और पुलिसकर्मियों की दोहरी कतार के बीच से ले जाया गया, जहाँ बाहरी इलाके में उनका गार्ड ऑफ़ ऑनर द्वारा स्वागत किया गया। स्वागत समारोह के बाद उन्हें पुलिस प्रमुख के घर भोज के लिए ले जाया गया और फिर उन्हें कीड़ों के झुंड के साथ एक बिस्तर पर सुलाया गया। दिनभर पैदल चलने और मित्रवत स्थानीय लोगों की झोपड़ियों में सोने का सिलसिला जारी रहा, और 23

अगस्त को वे अंततः अपने गंतव्य, क्वोरम शहर पहुँच गए, जहाँ उनका फिर से भव्य स्वागत किया गया। अबीसीनियाई लोगों ने जोहान्स और बस्टर का स्वागत करने का भरपूर आनंद उठाया, और एक उत्साही अबीसीनियाई कर्नल ने बड़े दुख के साथ उन्हें वापस उनके दस्ते तक पहुँचाया।

गौव्स लगभग तुरंत ही फिर से कार्रवाई में जुट गए और 25 अगस्त को कैप्टन एस.एफ. डू टोइट (उस मिशन के नेता, जिस पर जोहान्स और बस्टर ने आपातकालीन लैंडिंग की थी) के विंगमैन के रूप में गोंडर के पुल पर छापे के लिए उड़ान भरी। इस बार कैप्टन डू टोइट का विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया, और लेफ्टिनेंट गौव्स मलबे के ऊपर चक्कर लगाते हुए उतरने और बचाव कार्य करने के लिए जगह तलाश रहे थे। दो-तीन बार लगभग लैंडिंग करने के बाद, उन्होंने आपातकालीन लैंडिंग का प्रयास न करने का फैसला किया और डू टोइट के ठिकाने की जानकारी स्क्वाड्रन को देने के लिए बेस पर वापस चले गए। उस जानकारी के बदौलत, कैप्टन और उनके ऑब्जर्वर को अंततः बेस पर वापस लाया जा सका।

सितंबर 1941 में लेफ्टिनेंट गौव्स का तबादला 40 स्क्वाड्रन में हो गया और वे उत्तर की ओर मिस्र चले गए। उन्होंने 9 अप्रैल 1942 तक स्क्वाड्रन के साथ उड़ान भरी, जब उन्होंने रास चिचिबा-एल एज़ेयात क्षेत्र की टोही उड़ान भरी। उनके टोमाहॉक विमान पर दो Me 109 विमानों ने हमला किया और मतेइफेल चेबीर के दक्षिण में आग के बीच विमान को पेट के बल उतारने के बाद गौव्स को पकड़ लिया गया।

*

कुछ दिनों के दौरान, गौव्स, पॉयंटर, पोल्स और बाकी पेंगुइनों को छोटे-छोटे समूहों में इकट्ठा किया गया ताकि फैंसहावे उन्हें पूरी प्रक्रिया समझा सकें। प्रक्रिया सरल थी और, चूंकि रेत भरने के दौरान जाल खुले रखने पड़ते थे, इसलिए किसी भी देरी से बचने के लिए सावधानीपूर्वक योजना बनाई गई थी। रेत के छींटे पकड़ने के लिए जाल के चारों ओर कंबल बिछाए गए थे, और मोटे गत्ते से बने फ़नल का उपयोग करके थैलों को भरा गया था। पेंगुइन सुरंग कक्ष में लगे हुकों से भरे हुए थैले उठाते और परिसर में फैल जाते। समय के साथ यह प्रणाली इतनी उन्नत हो गई कि प्रति मिनट चार पेंगुइनों को रेत से भरा जा सकता था। यदि कोई अलार्म बजता, तो सारा उपकरण दो मिनट में समेट लिया जाता। अंत में, क्योंकि ताज़ी खोदी गई रेत से एक विशिष्ट गंध आती थी, इसलिए गलियारों में सबसे तेज़ गंध वाले तंबाकू का एक डिब्बा सुलगता हुआ छोड़ दिया जाता था ताकि मिट्टी की गंध को छिपाया जा सके।

सुरंग की मिट्टी चमकीले पीले रंग की होने के कारण, उसे ऊपरी मिट्टी में अच्छी तरह मिलाना पड़ता था या पूरी तरह से ढक देना पड़ता था ताकि वह दिखाई न दे। रास्ते मिट्टी फेंकने के लिए उपयुक्त थे क्योंकि मिट्टी लगातार इधर-उधर फेंकी और रौंदी जाती थी। इसी तरह, खेल आयोजनों के दौरान रेत फेंकी जा सकती थी और दर्जनों पैरों से उसमें मिल जाती थी। अभी भी कई ऐसे क्षेत्र थे जहाँ नालियों, शौचालयों या आग के कुंड के लिए खुदाई की गई थी, या जहाँ पेड़ों के ठूंठ उखाड़े गए थे। वहाँ, घर में बने लकड़ी के रेकों का उपयोग करके रेत फेंकी और मिलाई जा सकती थी। कुल मिलाकर ऐसे तेईस ढेर थे, जिनमें से सात एक साथ उपयोग में हो सकते थे। कैदियों के बगीचे भी मिट्टी बिखेरने के लिए उत्कृष्ट थे। एक गहरी खाई खोदी जाती थी और फिर उसे पीली रेत से भर दिया जाता था। फिर गहरे रंग की ऊपरी मिट्टी को वापस डालकर उसमें बीज बो दिए जाते थे। अन्य क्षेत्रों में, जहाँ चीड़ के पेड़ों ने पीट की परतें बना दी थीं, वहाँ मिट्टी को घास के टुकड़ों में खोदा जाता था और घास के टुकड़े के निचले आधे हिस्से को खुरच कर बगीचों में ऊपरी मिट्टी के रूप में उपयोग किया जाता था। फिर गड्ढे को रेत से भर दिया गया और बची हुई पीट घास को वापस लगा दिया गया।

पेंगुइनों के मार्ग की सावधानीपूर्वक योजना बनाई गई थी, ताकि गुंडे एक ही झोपड़ी से

नियमित अंतराल पर आने वाले लोगों के झुंड को न देख सकें। तीस वायुसैनिकों ने पेंगुइनों की गतिविधियों को छिपाने के लिए ध्यान भटकाने का काम किया, और किसी भी सामूहिक गतिविधि, जैसे कि अपील या किसी काम के लिए कतार, का फायदा उठाया गया। उदाहरण के लिए, यदि अपील की जाती, तो पेंगुइन उन चार-पाँच मिनटों का उपयोग करते जब कैदी परिसर में इधर-उधर घूमते थे, ताकि वे अपनी रेत को विभिन्न झोपड़ियों में ले जा सकें, जहाँ उसे चारपाइयों के नीचे बक्सों में छिपा दिया जाता था। फिर, हाजिरी के बाद, पेंगुइन एक ही ब्लॉक के बजाय कई अलग-अलग झोपड़ियों से काम कर सकते थे।

कंधे पर टांगे थैलों का उपयोग करना सबसे आम तरीका था, लेकिन रेत फैलाने के अन्य तरीके भी इस्तेमाल किए जाते थे। ओवरकोट की आस्तीनों में रेत भरकर उसके सिरों को रस्सी से बांध दिया जाता था। ओवरकोट को अपने कंधों पर डालकर, वाहक रेत फैलाने के लिए अपने निर्धारित क्षेत्र की ओर चल पड़ता था। दक्षिण अफ्रीकी टीम एक अलग तरीका अपनाती थी। वे दो पतलून पहनते थे, जिनमें से भीतरी पतलून टखनों के चारों ओर कसकर बंधी होती थी। फिर भीतरी पतलून में रेत डालकर उसे पैरों के चारों ओर फैला दिया जाता था। इसके बाद बाहरी पतलून पहनकर वाहक रेत फैलाने के लिए अपने निर्धारित क्षेत्र की ओर चलता था, जहाँ वह भीतरी पतलून को ढीला करके अपना भार खाली कर देता था। इस विधि से प्रत्येक वाहक एक बार में लगभग तीस पाउंड रेत ले जा सकता था, लेकिन अधिक क्षमता होने के बावजूद प्रत्येक वाहक पर भार लादने में लगने वाला समय इसकी भरपाई नहीं कर पाता था।

अध्याय **10**

जूँ हटाने वाली पार्टी

तीनों सुरंगों से भारी मात्रा में रेत निकाली जा रही थी, वहीं साथ ही साथ उनमें लकड़ी की भी भारी खपत हो रही थी। सुरंग के पहले तीस-चालीस फीट हिस्से को पलंग की तख्तियों से बने ठोस ढांचों से सहारा दिया गया था, लेकिन पलंग की तख्तियों की सीमित आपूर्ति के कारण, ढांचों को लगभग एक फुट की दूरी पर रखने का निर्णय लिया गया। इस अंतराल को भरने के लिए, बढ़ईयों ने फर्श की तख्तियों का इस्तेमाल किया, जो उपलब्ध थीं क्योंकि सभी झोपड़ियाँ दोहरी मंजिलों वाली बनी थीं।

फ्रेमों के बीच की दूरी से लकड़ी की बचत तो हुई, लेकिन इससे गिरने का खतरा भी बढ़ गया। नई प्रणाली के तहत, खदान में काम करने वाले व्यक्ति को फ्रेम लगाने से पहले दो फीट तक बिना सहारे के खुदाई करनी पड़ती थी। परिणामस्वरूप, खदान में गिरने की घटनाएं लगभग रोज़ाना होने लगीं। और स्थिति को और भी असुविधाजनक बनाने के लिए, जब किसी फ्रेम के गिरने की मरम्मत की जाती थी, तो ढही हुई रेत के दो-तिहाई से अधिक हिस्से को सहारे वाले फ्रेम के पीछे भरना असंभव था। नतीजतन, हर बार गिरने से न केवल अतिरिक्त अवांछित मलबा निकलता था, बल्कि एक कमजोर जगह भी बन जाती थी जहाँ दोबारा भरी गई रेत के फिर से धंसने की संभावना बढ़ जाती थी। फिर भी, कई बार गिरने के बावजूद, मई के अंत तक सभी सुरंगें साठ फीट से अधिक गहरी हो चुकी थीं।

नई सहारा प्रणाली के बावजूद, लकड़ी सबसे बड़ी तात्कालिक आवश्यकता बनी रही। रोजर बुशेल ने सुरंग समिति से इस बारे में चर्चा की और बिस्तर की तख्तियों पर कर लगाने का फैसला किया। इस संग्रह का दायित्व स्क्वाड्रन लीडर 'विली' विलियम्स को सौंपा गया, जो एक लंबे, घुंघराले बालों वाले ऑस्ट्रेलियाई थे और उन्होंने अपने देशवासियों के जाने-माने उत्साह के साथ इस काम को शुरू किया।

*

जॉन एडविन एशले विलियम्स शिविर में एक बड़े, हंसमुख और मजाकिया व्यक्ति के रूप में जाने जाते थे, जिनका दृष्टिकोण और व्यवहार पूरी तरह से ऑस्ट्रेलियाई था। विली का जन्म 6 मई, 1919 को न्यूजीलैंड के वेलिंगटन में हुआ था। उनका परिवार उनके बचपन में ही ऑस्ट्रेलिया के मैनली शहर में बस गया और विली और उनके तीन भाई सिडनी के उपनगर में पले-बढ़े। उन्होंने 1932 से 1936 तक सिडनी चर्च ऑफ इंग्लैंड (शोर) ग्रामर स्कूल में पढ़ाई की और फिर सिडनी विश्वविद्यालय में मेडिकल की पढ़ाई करने का फैसला किया। हालांकि, उन्हें यह पसंद नहीं आया और दिसंबर 1937 में वे ऑस्ट्रेलिया छोड़कर इंग्लैंड चले गए और रॉयल एयर फोर्स (आरएएफ) में भर्ती हो गए।

विली ने 17 जनवरी, 1938 को प्रशिक्षु पायलट के रूप में दाखिला लिया और उन्हें आयर स्थित फ्लाइंग स्कूल में तैनात किया गया। दो महीने बाद उन्हें अल्पकालिक सेवा कमीशन प्रदान किया गया। उन्होंने पायलट का सामान्य प्रशिक्षण पूरा किया और फिर उन्हें फ्लाइंग इंस्ट्रक्टर के रूप में प्रशिक्षण के लिए भेजा गया। अंततः विलियम्स को प्रशिक्षण कार्य के लिए रोडेशिया भेजा गया। बाद में वे डरबन, दक्षिण अफ्रीका गए, जहाँ उन्होंने समुद्र मार्ग से अफ्रीका पहुँचने के बाद

पुनर्निर्मित विमानों का परीक्षण किया। अप्रैल 1942 में ही विलियम्स को एक परिचालन इकाई, 112 स्क्वाड्रन में तैनात किया गया।

अगले दो महीनों तक विली ने अनुभव प्राप्त करने के लिए तीन अलग-अलग स्क्वाड्रनों में सेवा की और 14 जून, 1942 को 450 स्क्वाड्रन में शामिल हो गए। उन्होंने जल्दी ही अपनी ख्याति अर्जित कर ली। उनका व्यक्तित्व सशक्त और जीवंत था और वे एक बेहद आक्रामक पायलट थे। हालांकि, उनके स्क्वाड्रन के अधिकांश साथी विली को उनके अच्छे हास्य और हाजिरजवाबी के लिए याद करते हैं। कई नए पायलटों को मजाक में यह धमकी दी जाती थी कि अगर वे अनुशासन में नहीं रहे तो उन्हें चाड या टिटिकाका झील पर तैनात कर दिया जाएगा। स्क्वाड्रन पश्चिमी रेगिस्तान में एक्सिस हवाई अड्डों पर लड़ाकू-बमवर्षक हमलों में किटीहॉक विमान उड़ाता था, और विली का व्यक्तित्व इस प्रकार के मिशन के लिए आदर्श रूप से उपयुक्त प्रतीत होता था। सेवा के लिए जारी वर्दी के बजाय, वे हमेशा एक ही पोशाक में उड़ान भरते थे: ढीली खाकी शॉर्ट्स और शर्ट, और चमड़े की चप्पलें। हालांकि, उनके अपरंपरागत गियर ने उनकी युद्ध क्षमता को प्रभावित नहीं किया। उनकी पहली जीत 18 जून को गम्बुट के ऊपर एक Me 109 को मार गिराना था। सितंबर में विली ने स्क्वाड्रन का नेतृत्व करते हुए स्टुका विमानों के एक समूह में प्रवेश किया और दो और जीत अपने नाम दर्ज कीं। उसी दिन बाद में उन्होंने एक दुश्मन विमान का टोब्रुक तक पीछा किया और उसे मार गिराया, जिससे उनकी कुल मार गिराई गई विमानों की संख्या चार हो गई। कुछ दिनों बाद, एल अदेम के ऊपर एक लंबी और कठिन हवाई लड़ाई के बाद उन्होंने एक Me 109 को मार गिराकर एस (सर्वोत्तम पायलट) का खिताब हासिल किया।

अक्टूबर में स्क्वाड्रन 450 के अभियानों का केंद्र बदल गया। लंबी दूरी के टैंकों से लैस किटीहॉक विमानों को अब दुश्मन के इलाके में मौजूद किसी भी लक्ष्य पर हमला करने के लिए भेजा गया। 18 अक्टूबर को स्क्वाड्रन लीडर के पद पर पदोन्नत हुए विली ने अपने पायलटों को ट्रकों से लेकर ट्रेनों और विमानों तक, हर चलती-फिरती चीज़ के खिलाफ नेतृत्व करने की तैयारी कर ली। हालांकि उनके कई पायलट नए थे, विली को पूरा भरोसा था कि वे काम कर लेंगे। 31 अक्टूबर को उन्होंने स्क्वाड्रन को अबू हग्गाग रेलवे स्टेशन पर हमला करने के लिए भेजा। जिस ट्रेन को गोला-बारूद की ट्रेन बताया गया था, वह असल में एक अस्पताल ट्रेन निकली, इसलिए स्क्वाड्रन ने यात्रा को सार्थक बनाने के लिए एल डाबा पर हमला करने का फैसला किया। दुर्भाग्य से, विली का दुर्भाग्य उनके साथ हुआ। हवाई अड्डे के ऊपर से गुजरते समय, उनके ही विंगमैन ने गलती से उन पर गोली चला दी, जिससे एक बेहद मुश्किल फुल-डिफ्लेक्शन शॉट से कई निशाने लगे। विली का किटीहॉक बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया, लेकिन वह उसे तटीय सड़क के पास क्रैश-लैंड करने में कामयाब रहे। वह बिना किसी चोट के बाहर निकल आए और तुरंत ही उन्हें पकड़ लिया गया।

अब भी ढीले-ढाले गर्मियों के शॉर्ट्स और खस्ताहाल खाकी कमीज़ पहने हुए, विली ने पूरे शिविर में पलंगों की तख्तियाँ ढूँढ़ीं, और कुछ ही दिनों में उसका सारा सामान सुरंगों में इस्तेमाल के लिए सुरक्षित रूप से छिपा दिया गया। शिविर में हर पलंग से दो-दो तख्तियाँ लेकर, उसने लगभग दो हज़ार फुट लकड़ी इकट्ठा कर ली थी, जो टॉम, डिक और हैरी को काफी समय तक संतुष्ट रखने के लिए पर्याप्त थी।

*

भूमिगत रूप से काम जारी रहने के साथ-साथ, एक्स संगठन की अन्य शाखाएँ भी तैयारियाँ कर रही थीं। नॉर्थ कंपाउंड में स्थानांतरित होने के तुरंत बाद, बुशेल ने विभाग प्रमुखों को इकट्ठा किया, अपनी योजना की रूपरेखा प्रस्तुत की और उन्हें कार्य सौंप दिए। फिर उन्हें अपने कार्यों को पूरा करने के लिए पूर्ण स्वतंत्रता दी गई। रोजर नियमित रूप से प्रगति रिपोर्ट मांगते थे और कभी-

कभी सुझाव भी देते थे, लेकिन उन्होंने कभी भी अपने किसी भी सहयोगी पर अपनी राय थोपी नहीं। वे उन्हें अपने-अपने क्षेत्रों में विशेषज्ञ मानते थे और उनके निर्णय का सम्मान करते थे।

जब रॉजर ने बताया कि कम से कम एक हज़ार नक्शों की ज़रूरत होगी, तो डेस प्लंकेट ने कुछ चिंतित भाव से कहा, 'कोई बात नहीं,' और टिम वालेन ने बुशेल द्वारा 240 जाली दस्तावेज़ों के सेट का आदेश दिए जाने पर बस मुस्कुरा दिया। अगर उनमें से कोई भी इस अनुरोध से ज़रा भी विचलित हुआ, तो उसने इसे ज़ाहिर नहीं किया।

इसके बाद, रॉजर ने घने भूरे बालों और घनी भौहों वाले मध्यम कद के एक हट्टे-कट्टे युवक की ओर रुख किया। अल हाके अधिकांश सैनिकों के बीच एक कुशल कारीगर के रूप में जाना जाता था, जिसे विभिन्न स्थानों से इकट्ठा किए गए कबाड़ के टुकड़ों से चीजें डिजाइन करने और बनाने का शौक था। एक बार फिर, उसकी प्रतिभा का उपयोग बचाव सामग्री के निर्माण में किया जाना था।

'अल, कंपास की जिम्मेदारी तुम्हारी होगी,' रोजर ने धीरे से कहा, 'और हमें कम से कम दो सौ कंपास की जरूरत पड़ेगी।'

शांत स्वभाव वाले उस ऑस्ट्रेलियाई ने कोई टिप्पणी नहीं की, जिसने अपनी विशाल भौहें उठाकर अपनी समझ का संकेत दिया। अंत में उसने कहा, 'मैं उत्पादन शुरू करने की कोशिश करूंगा।'

वारंट ऑफिसर अल हेक से आमतौर पर बस इतना ही पता चलता था, जो भागने की तैयारियों में शामिल कुछ गिने-चुने गैर-कमीशन अधिकारियों में से एक थे। वे शांत और कभी-कभी गंभीर स्वभाव के व्यक्ति थे, लेकिन उन पर हमेशा भरोसा किया जा सकता था। बेहद साफ-सुथरे और व्यवस्थित स्वभाव के कारण, वे एक्स संगठन में अपने काम में भी इन्हीं आदतों को अपनाते थे।

*

अल्बर्ट होरेस हेक का जन्म 30 जून, 1916 को सिडनी में हुआ था। बचपन से ही उन्हें हवा से ज़्यादा समुद्र से लगाव था। हेक परिवार सिडनी की पररामट्टा नदी के पास रहता था, और अल और उनके भाई लेस ने उन्हें उपहार में मिली डोंगी में कई खुशनुमा दोपहरें बिताईं। बाद में अल को कुछ बड़ा चाहिए था, इसलिए उन्होंने परिवार के तहखाने में एक पाल नाव बनाना शुरू कर दिया। जब उसे पानी में उतारने का समय आया, तो अल और उनके एक दोस्त ने महसूस किया कि नाव तहखाने के दरवाजे से थोड़ी बड़ी है, लेकिन उन्होंने किसी तरह इस मुश्किल को पार किया और सिडनी बंदरगाह में सैर के लिए निकल पड़े। दुर्भाग्य से, लौटते समय वे शांत पानी में फंस गए और अधिकारियों द्वारा खोज दल भेजे जाने तक उन्हें रात बंदरगाह में ही बितानी पड़ी। संयोग से, अल का दोस्त बाद में एक जापानी युद्धबंदी शिविर से भाग निकला और नाव से ही अपनी स्वतंत्रता की राह पर चल पड़ा।

हेक की सबसे बड़ी प्रतिभा तकनीकी रेखाचित्र और धातु शिल्प में थी। स्कूल में ही उन्होंने इतनी दक्षता दिखाई कि सिडनी टेक्निकल हाई स्कूल में भावी हस्तकला शिक्षकों के लिए विशेष पाठ्यक्रम में उनका चयन हो गया। अल एक गंभीर, मेहनती और कर्तव्यनिष्ठ छात्र थे और उन्होंने प्रशिक्षण में पूरी रुचि दिखाई। उन्हें त्रि-आयामी रेखाचित्र बनाने और छोटे-छोटे उपकरण बनाने का शौक था और स्कूल छोड़ने के बाद उन्होंने एक एयर कंडीशनिंग कंपनी में ड्राफ्ट्समैन और प्रशिक्षु इंजीनियर के रूप में अपने कौशल का सदुपयोग किया। कुछ वर्षों तक यह नौकरी उनके लिए ठीक रही, लेकिन अल बड़े सपने देखते थे। उन्हें उम्मीद थी कि एक दिन वे अपनी खुद की एयर कंडीशनिंग कंपनी शुरू करेंगे।

सन् 1940 की शुरुआत में, स्थानीय आइस स्केटिंग रिंक में घूमने के दौरान अल के जीवन में एक नया मोड़ आया। काम पर उनके एक दोस्त ने उनकी मुलाकात नोएला हॉर्सफॉल नाम की

एक खूबसूरत भूरे बालों वाली लड़की से करवाई, और अल उनकी हंसमुख मुस्कान और खिलखिलाती आंखों पर मोहित हो गए। वे तुरंत एक-दूसरे से मिलने-जुलने लगे और हर सप्ताहांत हाइकिंग, सर्फिंग या पिकनिक मनाने में बिताते थे। हालांकि, वे अक्सर उसी स्केटिंग रिंक में लौटते थे जहां वे पहली बार मिले थे। 1 मार्च, 1941 को उनका विवाह हो गया।

दुर्भाग्य से, दंपति का साथ बहुत कम समय का था। जुलाई 1940 में अल आरएएएफ रिजर्व में शामिल हो गए और 4 जनवरी 1941 को उन्हें प्रशिक्षण के लिए बुलाया गया; चार दिन की छुट्टी के दौरान ही उन्होंने और नोएला ने शादी कर ली। अंततः, हाके को वाग्गा वाग्गा में तैनात किया गया, जो ऑस्ट्रेलिया भर के विभिन्न प्रशिक्षण केंद्रों से नवोदित पायलटों को एक साथ लाने वाला प्रशिक्षण केंद्र था। यह एक तनावपूर्ण वातावरण था, जहां प्रशिक्षु अपने साथियों के बराबर आने के लिए संघर्ष कर रहे थे और साथ ही पाठ्यक्रमों और परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करने की कोशिश कर रहे थे। वाग्गा वाग्गा पहुंचने के तुरंत बाद, अल की दोस्ती एक अन्य युवा रंगरूट जॉन हैनन से हो गई और जब उन्होंने 20 अगस्त 1941 को प्रशिक्षण पूरा किया, तब तक अल और जॉन पक्के दोस्त बन चुके थे।

नए पायलटों को स्नातक होने पर छुट्टी दी गई थी, लेकिन लगभग तुरंत ही उन्हें सिडनी स्थित प्रस्थान डिपो में वापस बुला लिया गया। अल और जॉन को बताया गया कि शिविर प्रतिबंधित है और किसी को भी फोन करने की अनुमति नहीं है। उन्हें कुछ गड़बड़ होने का आभास हो गया था, और अल ने सोचा कि नोएला से मिलने के लिए चुपके से निकल जाना ही बेहतर होगा, कहीं ऐसा न हो कि दोबारा मौका न मिले। वह, जॉन और एक अन्य रंगरूट डिपो के पीछे की बाड़ फांदकर चुपके से निकल गए, और शाम को उसी रास्ते से लौटने की योजना बनाई। दुर्भाग्य से, डिपो में वापस आना उससे कहीं अधिक कठिन था जितना बाहर जाना था, और तीनों को एक असंतुष्ट वरिष्ठ अधिकारी ने पकड़ लिया, जिसने उन्हें तरह-तरह की कड़ी सजा देने की धमकी दी। अल पर इसका कोई असर नहीं हुआ। उसने धीरे से कहा, 'मुझे लगता है कि वे कल हमारे बारे में सोचने के लिए कुछ ज्यादा ही व्यस्त होंगे।'

वह सही था। अगले दिन, 7 सितंबर, 1941 को, वायुसैनिकों को इंग्लैंड जाने वाले एक पुराने आलीशान जहाज़, एथलोन कैसल पर सवार किया गया। जैसे ही अल जहाज़ के डंडे पर चढ़ा, उसे नोएला से मिलने की अपनी यात्रा के लिए पहले से कहीं अधिक कृतज्ञता का अनुभव हुआ। हालाँकि उसने नोएला को आश्वस्त किया कि वे ज़्यादा समय तक अलग नहीं रहेंगे, अल को यह नहीं पता था कि वह ऑस्ट्रेलिया को दोबारा कब देख पाएगा। विशाल जहाज़ पर वायुसैनिकों ने आराम का जीवन व्यतीत किया, और अल और जॉन को एक विशाल प्रथम श्रेणी का केबिन मिला और वे एक सुखद यात्रा के लिए तैयार हो गए। स्कॉटलैंड पहुँचने पर, वायुसैनिकों को बॉर्नमाउथ के स्वागत केंद्र में ले जाया गया।

18 नवंबर को, हाके और हैनन समेत पायलटों का एक दल वेल्स के लैंडो स्थित 53 ओटीयू के लिए ट्रेन में सवार हुआ, जहाँ उन्हें स्पिटफायर विमानों का प्रशिक्षण शुरू करना था। यह कई मित्र देशों के वायुसैनिकों का सपना था, लेकिन लैंडो में उनका स्वागत कुछ खास अच्छा नहीं रहा। जब दल शिविर पहुँचा तो रात काफी ढल चुकी थी, और अल और जॉन नम, अंधेरे परिसर में खाली बैरक की तलाश में इधर-उधर भटक रहे थे। कीचड़ में ठोकर खाने के बाद, उन्हें तीन पलंगों वाला एक कमरा मिला, जिसके कोने में एक छोटा सा लोहे का चूल्हा था। अपनी भौंहों पर पानी की बूँदें लिए अल ने उस छोटे से चूल्हे को उदास निगाहों से देखा। उसने दृढ़ता से कहा, 'अब से, यह चूल्हा दिन-रात काम करेगा!' अगले दिन वह अटारी में चढ़ गया और कुछ बीम नीचे उतारे, जिन्हें उसने एक भारी शिकार वाले चाकू से काटकर जलाने लायक लकड़ी बना ली। उसके बाद से, उनका कमरा हमेशा गर्म और उनके कपड़े हमेशा सूखे रहते थे।

लैंडो में मौसम बेहद खराब था, खासकर उन ऑस्ट्रेलियाई लोगों के लिए जो साफ मौसम के आदी थे। लगातार कोहरे और बारिश के अलावा, उन्हें कार्डिफ और स्वानसी के ऊपर से उड़ते हुए गुब्बारों का भी सामना करना पड़ा। प्रशिक्षण खतरों से भरा था, और पहले तीन हफ्तों में ही साठ

पायलटों में से छह की जान चली गई। सौभाग्य से, अल और जॉन ने स्पिटफायर विमानों को अच्छी तरह से अपना लिया और उन्हें उड़ाने का भरपूर आनंद लिया।

खाना भी उम्मीद के मुताबिक अच्छा नहीं था, लेकिन अल और जॉन ने जैसे-तैसे काम चला लिया। उन्होंने कुछ पौंड मार्जरीन चुराया और उसे अपने गैस मास्क के डिब्बों में भरकर कमरे में ले गए। सार्जेंट के भोजनालय से चुराई गई कुछ रोटियों और अल द्वारा बनाए गए टोस्टिंग फोर्क की मदद से, दोनों हर रात सोने से पहले गरमागरम टोस्ट का आनंद लेते थे।

53 OTU में उनका कार्यकाल आखिरकार 14 जनवरी, 1942 को समाप्त हुआ, और अल को प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के शीर्ष तीन पायलटों में से एक चुना गया; उन्होंने अपनी भौंहें उठाकर इस सम्मान को बड़े ही भावपूर्ण ढंग से स्वीकार किया। इसके बाद उन्हें ऑपरेशनल स्क्वाड्रनों में तैनात किया गया, अल को बिगिन हिल स्थित 72 स्क्वाड्रन में और जॉन को हॉर्नचर्च स्थित 64 स्क्वाड्रन में। हेक ने प्रशांत क्षेत्र में तैनाती का अनुरोध किया था, जहाँ उन्हें छुट्टी के दौरान नोएला से मिलने का मौका मिल सकता था, लेकिन अधिकारियों ने उनका अनुरोध ठुकरा दिया। ऑपरेशन के दबाव के कारण दोनों दोस्तों को एक-दूसरे से मिलने के बहुत कम मौके मिले, लेकिन जॉन एक रात खराब मौसम का बहाना बनाकर बिगिन हिल में उनसे मिलने गए। जॉन और अल ने डैनियल्स डेन नामक एक बदनाम से छोटे क्लब में एक मनोरंजक शाम बिताई, जिसके बाद जॉन अगली सुबह हॉर्नचर्च लौट गए।

4 अप्रैल, 1942 को, 11 ग्रुप को एक विशाल एस्कॉर्ट मिशन का जिम्मा सौंपा गया, जिसमें तीन सौ लड़ाकू विमानों को उत्तरी फ्रांस के सेंट ओमर में बारह बोस्टन विमानों की सुरक्षा के लिए भेजा गया। मौसम एकदम साफ था और दृश्यता असीमित थी, और बमवर्षक विमानों ने रेलवे प्रतिष्ठानों पर बिना किसी नुकसान के अपना हमला सफलतापूर्वक पूरा किया। हालांकि, एस्कॉर्ट विमानों का भाग्य इतना अच्छा नहीं था। लक्ष्य के ऊपर फोक-वुल्फ विमानों के झुंड ने उन पर हमला कर दिया और 20,000 फीट की ऊंचाई पर वे जर्मन लड़ाकू विमानों का मुकाबला नहीं कर सके। दस स्पिटफायर विमान एफडब्ल्यू 190 मिसाइलों के शिकार हो गए, लेकिन अल किसी तरह युद्ध से बच निकला, तभी एक आकस्मिक एंटी-एयरक्राफ्ट गोले ने उसके प्रोपेलर को चकनाचूर कर दिया और उसे बेकाबू कर दिया।

उसने विमान पर दोबारा नियंत्रण पा लिया और अंग्रेजी तट की ओर बढ़ने लगा, लेकिन पांच फोक-वुल्फ विमानों ने उस पर हमला कर दिया। अल ने अपने क्षतिग्रस्त विमान में एक जंगली बिल्ली की तरह संघर्ष किया और अपने एक प्रतिद्वंद्वी को मार गिराने में कामयाब रहा, इससे पहले कि उसे एहसास हुआ कि उसके अपने विमान को हुए नुकसान के कारण उसकी ऊंचाई हजारों फीट कम हो गई है। जैसे-जैसे वह नीचे उतरता गया, इंजन के कवर के नीचे से आग की लपटें निकलने लगीं और अल ने फैसला किया कि अब अपने जलते हुए स्पिटफायर विमान को खाली करने का समय आ गया है। मामूली जलने और छर्रे के कुछ घावों के साथ, वह सुरक्षित पैराशूट जंप के लिए न्यूनतम ऊंचाई पर कॉकपिट से बाहर निकला और जर्मन सैन्य डिपो से कुछ ही दूरी पर भारी लैंडिंग की।

जब अल को अस्पताल ले जाया जा रहा था ताकि उसके ज़ख्मों का इलाज हो सके, तो उसने देखा कि उसकी वर्दी से रैंक के निशान जल गए थे; उसने मन ही मन सोचा, चलो देखते हैं कि वे मुझे पदोन्नति देते हैं या नहीं। जैसा कि अल को उम्मीद थी, उसे पकड़ने वाले जर्मनों ने मान लिया कि स्पिटफायर जैसे पुराने विमान उड़ाने वाला कोई भी व्यक्ति अधिकारी ही होगा, और उन्होंने उसे अधिकारियों के शिविर में भेज दिया। अनौपचारिक रूप से नियुक्त ऑस्ट्रेलियाई अल उन्हें उनकी इस गलतफहमी को दूर करने के लिए कुछ नहीं करने वाला था।

ऑस्ट्रेलिया लौटने पर नोएला को अपने पति के पकड़े जाने की खबर बड़े ही परेशान करने वाले तरीके से मिली। अप्रैल के मध्य में जर्मन रेडियो ने पायलट ऑफिसर अल्बर्ट हाके का एक कथित साक्षात्कार प्रसारित किया, जिनके बारे में कहा जाता था कि ईस्टर रविवार को वेलिंगटन विमान में उनकी हत्या कर दी गई थी। साक्षात्कार के अनुसार, पायलट ने इंग्लैंड द्वारा किए गए

'पाखंडी और अधूरे वादों' की शिकायत की और अपने नए परिवेश से संतुष्टि व्यक्त की। ज़ाहिर है, किसी ने भी इस साक्षात्कार को गंभीरता से नहीं लिया, जैसा कि जॉन हैनन ने नोएला को लिखा था, और अगर अल ने प्रसारण सुना होता तो वह हँसते, क्योंकि उनका नया आवास बिल्कुल भी संतोषजनक साबित नहीं हुआ।

उसके जलने के घाव जल्दी ठीक हो गए थे, और विमान दुर्घटना में घायल होने के एक महीने बाद, हेक ईस्ट कंपाउंड में था, जिससे वह ज़रा भी खुश नहीं था। उसने जॉन को लिखा, 'देखो, मैं यहाँ एक चिड़ियाघर में हूँ, और मुझे इस बात पर ज़रा भी गर्व नहीं है।' क्योंकि शिविर अभी अपेक्षाकृत नया था, इसलिए वहाँ सुविधाएँ कम थीं, लेकिन अल अपने खुद के सब्जी के बगीचे की शुरुआत करने के लिए उत्सुक था। जल्द ही उसने अपना समय बिताने के लिए अन्य काम ढूंढ लिए। उसकी कारीगरी की प्रतिभा को एक बढ़ई ने देखा, और अल को ज़रूरत के हिसाब से छोटे-मोटे उपकरण बनाने का काम पाकर खुशी हुई। जॉनी ट्रैविस को जल्द ही पता चला कि हेक को कंपास बनाने का हुनर है, और उसने यह बात रोजर बुशेल को बताई। बिग एक्स को कंपास लाइन चलाने के लिए हेक से बेहतर कोई नहीं सूझा।

*

बसंत के अंत में सागन परिवार में एक नया सदस्य आया - एक गर्भवती बिल्ली जो एक दिन अचानक आ गई और टॉम किर्बी-ग्रीन से जुड़ गई। उसने बच्चों को जन्म दिया, उन्हें दूध पिलाया और फिर गायब हो गई, जहाँ से आई थी वहीं चली गई, टॉम को भूखे बच्चों के झुंड को पालने के लिए छोड़ गई। उसने कुछ बच्चों को दूसरे बिल्लियों को दे दिया, लेकिन तीन को अपने पास रखा, जिनका नाम उसने ट्वीनी, ग्रुप कैप्टन प्रून और 2/6 रखा। जल्द ही उनके यहाँ आने वालों की संख्या उससे भी अधिक हो गई। काज़ पावलुक, जो बिल्लियों से बहुत प्यार करती थी, लगभग हर दिन बिल्लियों को देखने आती और घंटों उनके साथ बैठी रहती, जब वे धागे के टुकड़ों या कागज़ की गेंदों का पीछा करती थीं। उन्हें खेलते हुए देखकर, कोई भी कांटेदार तार को लगभग भूल सकता था। लेकिन जैसे-जैसे बिल्लियाँ बड़ी होती गईं, वे एक-एक करके इधर-उधर भटकने लगीं, यहाँ तक कि एक दिन टॉम को काज़ को बताना पड़ा कि आखिरी बिल्ली भी तार के पार जंगल में चली गई है। पावलुक उदास होकर मुस्कुराई और चीड़ के पेड़ों की ओर देखने लगी। 'काश हमारे लिए भाग निकलना इतना आसान होता,' उसने टॉम से धीमी आवाज़ में कहा।

*

अगर कोई एक चीज़ थी जिससे जर्मन घबराते थे, तो वो थी जूँ। इन छोटे जीवों का नाम सुनते ही आम तौर पर कोई भी व्यक्ति भाग जाता था। बेशक, उनका डर पूरी तरह निराधार नहीं था। जूँ अक्सर बीमारियाँ फैलाती थीं, और कई सोवियत शिविर पहले ही महामारियों से तबाह हो चुके थे। इसलिए कभी-कभी स्टालैग लुफ्ट III में डर का माहौल छा जाता था, जिससे जर्मन अस्थायी रूप से घबरा जाते थे और पूर्वी परिसर के वोरलागर में स्थित जूँ-निवारण केंद्र पर जाने के लिए दल जुटाने में जुट जाते थे।

जून के पहले सप्ताह में, जूँओं के प्रकोप की एक और चेतावनी जारी की गई, और जर्मनों ने तुरंत समूहों को इकट्ठा करना शुरू कर दिया और उन्हें शिविर से बाहर निकालकर जूँ-निवारण केंद्र तक थोड़ी दूर पैदल ले जाने लगे। अभियान का दूसरा दिन, 12 जून, एक खूबसूरत गर्मी का दिन था, गर्म और शांत, और वातावरण में थोड़ी सी उत्तेजना थी। सभी को जूँ-निवारण दल बहुत पसंद थे, खासकर सुहावने मौसम में, क्योंकि चीड़ के जंगलों से होकर गुजरना एक सुखद सैर होती थी, और शिविर की नीरसता से कोई भी विराम, चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न हो, बहुत सुखद लगता था।

दोपहर करीब दो बजे, कैदियों का एक और दल एक झोपड़ी के बाहर इकट्ठा होने लगा। वे अपने साथ जूँ निकालने के लिए कपड़ों के छोटे-छोटे थैले लिए हुए थे और धूप में अपने अंगरक्षकों का इंतज़ार करते हुए, कुछ नौजवान आपस में थोड़ी शरारत कर रहे थे, जो हानिरहित थी। थोड़ी देर बाद, दो जर्मन गैर-कमीशंड अधिकारी आए और चौबीस कैदियों को तीन-तीन की पंक्तियों में व्यवस्थित करने लगे। आखिरकार उन्होंने व्यवस्था ठीक कर ली और बिखरे हुए समूह को मुख्य द्वार की ओर ले गए, जहाँ पहरेदारों ने उन्हें आगे जाने का इशारा किया, और दिखाए गए पासों पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया। कैदी बेसुरी सीटी बजाते, बातें करते और ज़ोर-ज़ोर से हंसते हुए अंदर चले गए। जैसे ही वे जूँ निकालने के केंद्र की ओर मुड़े, किसी ने उन पर विशेष ध्यान नहीं दिया।

गार्डों की उदासीनता का एक कारण वरिष्ठ अधिकारियों का प्रभावशाली दल था जो मुख्य द्वार की ओर आ रहा था। एक दबंग से दिखने वाले कॉर्पोरल बिल जेनेन्स के नेतृत्व में, बॉब स्टैनफोर्ड-टक, जूनियर क्लार्क और तीन अन्य अधिकारी वॉन लिंडिनर के साथ एक आपातकालीन बैठक के लिए जा रहे थे। पहले द्वार पर तैनात गार्ड ने दल के पास को बड़ी उत्सुकता से देखा, लेकिन दूसरे द्वार पर तैनात गार्ड ने पास की बारीकी से जाँच करने का फैसला किया और उसे बार-बार हाथ में घुमाने लगा। उसने कॉर्पोरल की ओर देखा, फिर पास की ओर देखा और अंत में दल का हथियार दिखाने को कहा। एनसीओ ने कंधे उचकाए और हाथ ऊपर उठा लिए। वह बॉब वैन डेर स्टोक थे।

जब बॉब ने धीरे से अपने हाथ ऊपर उठाए, तो रोजर बुशेल, जो इस दृश्य को ध्यान से देख रहा था, ने गहरी सांस ली और तूफान के थमने का इंतजार किया। वह जानता था कि कुछ ही मिनटों में गुंडों को पता चल जाएगा कि पहला दल अपने गंतव्य तक नहीं पहुंचा है। उनके अंगरक्षकों ने अपने कर्तव्यों में लापरवाही बरती थी - इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं थी, क्योंकि वे जर्मन भाषी बेल्जियम के दो वायुसैनिक थे। अब तक पूरा दल शिविर के आसपास के जंगलों में बिखर चुका था। यदि पास के पीछे एक नया पहचान चिह्न न होता, तो दूसरा दल भी पहले दल की तरह आसानी से निकल जाता। हालांकि, एक दल की विफलता के बावजूद, जूँ मारने वाले दल का भाग निकलना एक बड़ी सफलता थी।

मूल योजना नॉर्थ कंपाउंड में शुरुआती दिनों में ही बन गई थी, जब रॉजर और कुछ अन्य लोगों ने महसूस किया कि गेट पर कागजी जाँच ईस्ट कंपाउंड की तुलना में उतनी सख्त नहीं थी, या जितनी समय के साथ होने की संभावना थी। अगर संगठन को गेट पास मिल जाता, तो वे एक साथ भागने वालों के एक बड़े समूह को बाहर निकाल सकते थे। यह पास सिडनी डाउज़ के संपर्क, वोरलागर गेट पर तैनात दुभाषिया हेसे ने उपलब्ध कराया, और टिम वालेन ने जल्द ही इसकी कुछ बेहतरीन प्रतियाँ बना लीं। अब उन्हें बस इनका इस्तेमाल करने का बहाना चाहिए था, और यहीं से जूँओं का खेल शुरू हुआ। ईस्ट कंपाउंड से पहले भी जूँओं को भगाने वाली पार्टियाँ भेजी गई थीं, इसलिए रॉजर ने खुद ही जूँओं का अलार्म बजाने का फैसला किया। कुछ असली जूँओं को भगाने वाली पार्टियाँ भेजने के बाद, उन्हें विश्वास हो गया कि जर्मन वर्दी में सैनिकों द्वारा एस्कॉर्ट किया गया एक और समूह गेट पर तैनात संतरियों को संदिग्ध नहीं लगेगा - बशर्ते कि एस्कॉर्ट गार्डों को बेवकूफ बनाने के लिए काफी विश्वसनीय लगें।

वर्दी बनाना अपेक्षाकृत आसान था। टॉमी गेस्ट ने पहले भी गुंडों की खालें बनाई थीं और अब कुछ और बनाने में जुट गए। बैज और बेल्ट बकल जेन्स मुलर ने बनाए थे, जिन्होंने लैपल के लिए चील की आकृतियाँ पिघली हुई चांदी की पन्नी से ढाली थीं। जिन सांचों में इन्हें ढाला गया था, वे या तो जेन्स ने खुद बनाए थे या, बकल के मामले में, असली चीज़ से लिए गए निशान थे। जैकेट के लिए प्रतीक चिन्ह बनाने के लिए, टॉम किर्बी-ग्रीन ने अनिच्छा से एक बहुत पुरानी कमीज़ का पिछला हिस्सा कुर्बान कर दिया।

सबसे मुश्किल काम सभी सुरक्षाकर्मियों द्वारा ले जाई जाने वाली राइफलों का था। यह दिनदहाड़े भागने की योजना थी, इसलिए राइफलें बिल्कुल सटीक दिखनी चाहिए थीं। हथियारों

को बनाने का काम जॉनी ट्रैविस को सौंपा गया, जिन्होंने बदले में जेन्स मुलर और फ्लाइट लेफ्टिनेंट इयान अलेक्जेंडर 'डिगर' मैकिन्टोश को काम पर लगाया। मैकिन्टोश युद्ध-पूर्व आरएएफ अधिकारी थे, जो 1940 में मास्ट्रिच में विमान दुर्घटना में बुरी तरह झुलस गए थे। बुशेल ने उन्हें काम पूरा करने के लिए एक सप्ताह का समय दिया।

कुछ भी करने से पहले, जेन्स और डिगर को राइफलों के सही माप की आवश्यकता थी, और इसके लिए उन्होंने हेनरी पिकार्ड से संपर्क किया, जो एक्स ऑर्गनाइजेशन के लिए कुछ भी करने को तैयार थे। इसके अलावा, जाली हथियार बनाने के कारखाने की घुटन भरी जिंदगी से बाहर का काम करना एक सुखद बदलाव होगा, उस काले बालों वाले छोटे बेल्जियन ने सोचा।

*

एक पूर्व सैन्यकर्मी याद करते हैं कि फ्लाइट लेफ्टिनेंट हेनरी-अल्बर्ट पिकार्ड के बारे में उनकी पहली धारणा एक लापरवाह, भारी चेहरे वाले, सुस्त और मंदबुद्धि व्यक्ति की थी। हालांकि, वे तुरंत स्वीकार करते हैं कि पहली धारणाएं अक्सर गलत होती हैं। बहुत जल्द ही यह एहसास हो गया कि हेनरी एक आकर्षक व्यक्ति थे, जिनकी बुद्धि तीव्र थी और ज्ञान का भंडार था। उन्हें भाषाओं का अच्छा ज्ञान था और उनके पास अंग्रेजी शब्दावली का उल्लेखनीय रूप से विस्तृत भंडार था, अक्सर वे ऐसे शब्दों का अर्थ बता देते थे जिन्हें उनके अंग्रेज साथी भी नहीं समझ पाते थे। लेकिन हेनरी की सबसे आकर्षक बात उनका विनोदी स्वभाव और हाजिरजवाबी थी, ये ऐसे गुण थे जिनके कारण उनके चेहरे पर हमेशा मुस्कान रहती थी।

हेनरी का जन्म 17 अप्रैल, 1916 को एटर्बीक में हुआ था। वे चार बच्चों में तीसरे थे और एक मेहनती और प्रतिभाशाली छात्र थे, जिनका असली शौक चित्रकारी था। अधिकांश लड़कों की तरह, उन्हें हवाई जहाज और कारों में गहरी रुचि थी और वे घंटों उनके रेखाचित्र बनाते रहते थे। हेनरी को प्रकृति से और भी अधिक लगाव था, और वे अपने माता-पिता के घर के आसपास के पक्षियों और जानवरों के रंगीन और बेहद यथार्थवादी रेखाचित्र बनाते थे। हाई स्कूल की पढ़ाई पूरी करने के बाद, हेनरी को ब्रुसेल्स के इकोले रॉयल मिलिटेयर में दाखिला मिला और वे 28 नवंबर, 1936 को स्कूल पहुंचे। हेनरी ने स्कूल में अन्य रंगरूटों और छात्रों से जल्दी ही दोस्ती कर ली। एक युवक, रोजर डी वेवर, अगले कुछ वर्षों में हेनरी के जीवन में आता-जाता रहा। एक अन्य युवक, लुई रेमी, भी युद्धबंदी बन गया और कोल्डिट्ज़ से सफलतापूर्वक भाग निकला।

पिकार्ड को स्कूल में खेलों में बहुत आनंद आता था और वे जिम्नास्टिक, घुड़सवारी और तलवारबाजी में निपुण थे। वे एक उत्कृष्ट गोताखोर भी थे और उन्होंने 1938 में अपनी तैराकी टीम को स्कूल की प्रतियोगिता जीतने में मदद की। उन्हें सैन्य जीवन इतना पसंद था कि नवंबर 1937 में उन्होंने तीन साल के लिए सेना में भर्ती हो गए। शुरुआत में, हेनरी पैदल सेना की ओर आकर्षित हुए क्योंकि वे जर्मनी द्वारा बेल्जियम पर हमले की स्थिति में अग्रिम पंक्ति में रहना चाहते थे, इसलिए दिसंबर 1938 में उन्हें चेसर्स आर्डेनैस में कमीशन मिला। हालांकि, जल्द ही, हेनरी की बचपन की उड़ान में रुचि हावी हो गई और उन्होंने सैन्य विमानन में तैनाती का अनुरोध किया। उनका अनुरोध स्वीकार कर लिया गया और पिकार्ड को पर्यवेक्षक प्रशिक्षण के लिए एवेरे भेजा गया। जनवरी 1940 में उन्होंने एक छात्र पायलट के रूप में शुरुआत की। हेनरी को आसमान की आजादी बहुत पसंद थी और प्रशिक्षण उड़ानों के दौरान वे अक्सर अपने परिवार के घर के ऊपर से उड़ान भरते थे, जो बास्तोग्ने जाने वाली सड़क पर एक पुरानी आरा मिल थी। जैसे ही स्थानीय लोगों को हवाई जहाज के इंजन की आवाज सुनाई देती, वे अपने बगीचों में निकल आते और उस छोटे से बाइप्लेन को हाथ हिलाकर अभिवादन करते, क्योंकि उन्हें अपने विमान चालक बेटे पर बहुत गर्व था।

10 मई, 1940 को, जिस दिन जर्मनी ने नीदरलैंड्स पर आक्रमण किया, हेनरी और उनके सहपाठी गोसोनकोर्ट में तैनात थे। उनके विमान के नष्ट होने से पहले वे उड़ान भी नहीं भर पाए

थे। उस दोपहर, जर्मन बमबारी से हुई तबाही का जायजा लेते हुए, उन्होंने लड़ाई जारी रखने का संकल्प लिया। पाँच दिन बाद वे बेल्जियम से निकल रहे थे, कहीं और जाकर फिर से संगठित होकर एक लड़ाकू इकाई बनाने के इरादे से। आदेशों और प्रति-आदेशों के बाद, स्क्वाड्रन उत्तरी फ्रांस के केन-कार्पिकेट हवाई अड्डे पर इकट्ठा हुआ और मार्सिले के लिए ट्रेन में सवार हो गया। 31 मई को वे अल्जीरिया के ओरान पहुँचे, मोरक्को के औजदा में पायलट स्कूल को फिर से स्थापित करने के इरादे से। हालाँकि, आपूर्ति और विमानों के अभाव में, वे दर्शनीय स्थलों को देखने के अलावा कुछ खास नहीं कर सकते थे। हेनरी उत्तरी अफ्रीका के विचित्र और आकर्षक जानवरों से मोहित थे और अक्सर वन्यजीवों को देखने और उनके चित्र बनाने के लिए दिन भर की यात्राओं पर जाते थे। कुल मिलाकर, मोरक्को में उनके शुरुआती दिन बहुत सुखद रहे।

एक महीने की निष्क्रियता के बाद, बेल्जियमवासी बेचैन हो गए। कार्रवाई में शामिल होने और खुद को उपयोगी साबित करने के लिए उत्सुक, हेनरी और एक अन्य पायलट कैसाब्लांका गए और ब्रिटिश दूतावास के माध्यम से इंग्लैंड जाने का प्रबंध कर लिया। 17 जुलाई, 1940 को, पिकार्ड को आधिकारिक तौर पर ग्लूसेस्टर में बेल्जियम सेना में भर्ती कर लिया गया। 22 दिसंबर को उन्हें टाइगर मॉथ विमानों के प्रशिक्षण के लिए पीटरबरो भेजा गया, और जनवरी 1941 तक प्रशिक्षण सुचारू रूप से चला। फिर, उड़ान भरने के लिए टैक्सी करते समय, वह अपने सामने खड़े एक विमान को नहीं देख पाए और उससे टकरा गए, जिससे उनके प्रोपेलर से विमान के पंख में छेद हो गया। आग लग गई, लेकिन सौभाग्य से विमान खाली था और हेनरी को स्टेशन कमांडर से केवल हल्की फटकार मिली। जब वह पीटरबरो से टर्न हिल स्थित फ्लाइंग स्कूल के लिए रवाना हुए, तो यही उनके करियर का एकमात्र दाग था।

टर्न हिल में हेनरी की मुलाकात रोजर डी वेवर से दोबारा हुई और जुलाई 1941 में ग्रेंजमाउथ स्थित 58 ओटीयू में तैनाती के दौरान दोनों साथ रहे। वहां दोनों ने स्पिटफायर उड़ाना सीख लिया और 30 अगस्त को हेनरी को टर्न हिल से स्पिटफायर उड़ाने वाली 131 स्क्वाड्रन की बेल्जियम फ्लाइट में तैनात कर दिया गया। 28 सितंबर को एक बार फिर हादसा हो गया। पहले जैसी ही परिस्थितियों में, हेनरी अपने स्पिटफायर को टैक्सी कर रहे थे, लेकिन रनवे पर उनके सामने खड़े एक विमान को देख नहीं पाए। उनका प्रोपेलर उस छोटे मैजिस्टर ट्रेनर विमान से टकराया और उसे पूरी तरह नष्ट कर दिया। लेकिन इस बार, दूसरा विमान खाली नहीं था। उसमें स्क्वाड्रन के दो पायलट सवार थे और दोनों की इस दुर्घटना में मौत हो गई। दुर्घटना का कारण घोर लापरवाही बताया गया और शोक संतप्त पिकार्ड को खुली गिरफ्तारी में डाल दिया गया, जो आरएएफ की सबसे हल्की सजा थी।

हेनरी के खिलाफ आगे कोई कार्रवाई नहीं की गई और 14 नवंबर को उन्हें एंगलेसी के वैली में स्थित 350 (बेल्जियम) स्क्वाड्रन में स्थानांतरित कर दिया गया। वहां से यूनिट ने ब्लैकपूल और लिवरपूल से आने-जाने वाले काफिलों की सुरक्षा के लिए आयरिश सागर के ऊपर गश्त की। अप्रैल 1942 में स्क्वाड्रन डेब्डेन में 11 ग्रुप में फिर से शामिल हो गया और महाद्वीप के खिलाफ गश्त की तैयारी में नए स्पिटफायर विमानों से लैस हो गया। उस वसंत में स्क्वाड्रन को कई बार स्थानांतरित किया गया, लेकिन इस उथल-पुथल का हेनरी पर कोई असर नहीं पड़ा। 29 जून, 1942 को, हेज़ेब्रुक में बोस्टन विमानों के एक स्क्वाड्रन को एस्कॉर्ट करते समय उन्होंने अपने पहले दो दुश्मन विमानों को मार गिराया। अगले महीने, हेनरी को वीरता पुरस्कार (क्रॉइक्स डे गुएरे विद पाम्स) से सम्मानित किया गया।

अगस्त का महीना इस युवा बेल्जियन पायलट के लिए नाटकीय घटनाओं से भरा रहा। सोलह तारीख को, एक ट्रेन पर हमले से पीछे हटते समय, उनके विमान का एक हिस्सा हाई-टेंशन तार में फंस गया और वे बड़ी मुश्किल से किसी तरह बचकर घर लौट पाए। तीन दिन बाद, डिएप्पे के ऊपर, हेनरी और एक अन्य पायलट ने एक FW 190 विमान को नष्ट करने का दावा किया। फिर, सत्ताईस तारीख को, स्क्वाड्रन को अब्बेविले-डुकाट हवाई अड्डे पर बमबारी करने के लिए बारह बोस्टन विमानों को एस्कॉर्ट करने का काम सौंपा गया। यह एक सीधा-सादा ऑपरेशन

लग रहा था, लेकिन स्पिटफायर विमानों पर 190 मिसाइलों ने हमला कर दिया और बेल्जियन पायलटों को अपनी जान बचाने के लिए संघर्ष करना पड़ा। हेनरी ने दुश्मन के एक विमान को मार गिराया, लेकिन खुद भी गोली लगने से घायल हो गए और उनके पैर में गंभीर चोट आई। वे सोम्मे नदी के मुहाने के पास उतरे और धारा के साथ इंग्लिश चैनल में बह गए। उनके स्क्वाड्रन और अन्य स्क्वाड्रनों ने उनकी खोजबीन की, लेकिन वे हेनरी की छोटी नाव को नहीं ढूंढ पाए। वे पांच दिन और पांच रात तक समुद्र में बहते रहे।

अधिकांश लोगों के लिए यह अनुभव किसी बुरे सपने जैसा होता, लेकिन पिकार्ड के लिए यह एक तरह का सबक था। अपने भाई को लिखे एक पत्र में उन्होंने अपने अनुभवों का वर्णन किया: 'दूसरी रात शानदार थी। डॉल्फ़िन मेरे चारों ओर खेल रही थीं और उनमें से दो मेरी छोटी नाव के पास आकर आराम करने लगीं... उनकी आवाज़ लोकोमोटिव जैसी थी और जब उन्होंने अपनी हवा छोड़ी, तो ऐसा लगा जैसे कोई धमाका हुआ हो!' कुछ और करने को न होने के कारण, उन्होंने पक्षियों और मछलियों को ध्यान से देखा, हालाँकि जितना अधिक समय वह बहते रहे, उतना ही वे उन्हें जीविका का साधन मानने लगे। अंततः, 2 सितंबर को, हेनरी थके-हारे और अर्ध-बेहोश अवस्था में किनारे पर पहुँचे। जर्मनों ने उन्हें तुरंत उठा लिया और एक सप्ताह तक अस्पताल में उनके पैर पर प्लास्टर लगा रहा, जिसके बाद वे इतने स्वस्थ हुए कि उन्हें डुलैग लुफ़्ट भेजा जा सके। विडंबना यह है कि जब वे ओबेरर्सल जाते हुए बेल्जियम से गुज़र रहे थे, तब उनके परिवार और मित्र पुराने आरा मिल की एक कार्यशाला में एक छोटा सा जश्न मना रहे थे। उन्हें अभी-अभी पता चला था कि हेनरी को क्रोइक्स डे गुएरे पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

*

कैद में भी हेनरी ने चित्रकारी के अपने शौक को जारी रखा और अपने परिवार से शिविर में चित्रकारी के लिए कागज और रंगीन पेंसिलें भेजने का अनुरोध किया ताकि वह अपने बेहतरीन व्यंग्यचित्र बना सके। अपने दूसरे शौक, दस्तावेज़ों की जालसाजी के लिए, सामग्री जुटाना उतना आसान नहीं था। लेकिन अब हेनरी को जालसाजी से कुछ समय के लिए राहत मिली थी। अपने पुराने दोस्त रोजर डी वेवर से दोबारा मिलकर, हेनरी को उस राइफल का रेखाचित्र बनाना था जिसे रोजर भागने के दौरान अपने साथ ले जाएगा। अपने हाथ से बने कैलिपर्स से लैस होकर, हेनरी जेन्स मुलर के पीछे-पीछे परिसर में गया और फिर उस जगह पर पहुँचा जहाँ जेन्स एक गार्ड के पास गया और उससे बातचीत करने लगा। जब दोनों खुशी-खुशी बातें कर रहे थे, हेनरी गार्ड के पीछे से अंदर-बाहर आता-जाता रहा, अपने कैलिपर्स से नाप लेता रहा और फिर वापस आकर उन्हें अपनी नोटबुक में लिख लेता। जेन्स ने लगभग अपनी ही ऊँचाई का गार्ड चुना था, इसलिए हेनरी को बस यह देखना था कि राइफल का बट और मुंह गार्ड की जांघों और सिर पर कहाँ आते हैं और फिर बाद में जेन्स का नाप लेना था। यह एक धीमी प्रक्रिया थी, लेकिन कुछ दिनों की निरर्थक बातचीत और सावधानीपूर्वक अवलोकन के बाद, हेनरी के पास गार्डों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली कार्बाइन की एक सटीक और विस्तृत योजना थी।

बंदूक बनाने के लिए, ट्रैविस ने शिविर में मौजूद कुछ गिनी-चुनी बीच की लकड़ी की तख्तियों को खोज निकाला। प्रत्येक राइफल को काटकर दो हिस्सों में बाँटा गया, जिन्हें फिर गोंद से चिपकाया गया (जर्मन ब्रेड उबालकर प्राप्त गोंद का उपयोग करके) और टेबल टेनिस नेट से लिए गए शिकंजे से कस दिया गया। सावधानीपूर्वक रेतने के बाद, बंदूक के धातु के हिस्सों को ग्रेफाइट के एक टुकड़े से तब तक रगड़ा गया जब तक कि वे असली बंदूक से बिल्कुल अलग न दिखने लगें। लकड़ी के हिस्सों को बूट पॉलिश से रंगा गया ताकि वे भी असली दिखें। फिटिंग के लिए, जेन्स ने मुड़ी हुई कीलों और धातु की छोटी पट्टियों का उपयोग किया और यहाँ तक कि चांदी के कागज से एक असली दिखने वाला बैरल सिरा भी ढाला। एक बार तैयार हो जाने पर, राइफलों को छुए बिना यह बताना असंभव था कि वे नकली हैं।

भागने वालों का चयन सबसे आसान काम था। वरिष्ठ अधिकारियों का चुनाव लगभग पूरी तरह से उनके व्यवहार और प्रभावशाली आचरण के आधार पर किया गया था, जबकि पहरेदारों का चयन शिविर में सबसे धाराप्रवाह जर्मन बोलने वालों में से किया गया था। जूँ-नाशक दल बनाने के लिए, बुशेल ने उन कर्मचारियों को चुना जिन्होंने कुछ वर्षों तक विशेष रूप से अच्छी सेवा दी थी। वह स्वयं जाना चाहता था, लेकिन उसे मना लिया गया। वॉली फ्लॉडी भी जाना चाहता था, लेकिन रोजर ने तुरंत उस विचार को खारिज कर दिया। वॉली जेल में रहने की तुलना में भूमिगत संगठन के लिए कहीं अधिक उपयोगी था।

एक सप्ताह के भीतर, गार्डों का वेश पूरी तरह तैयार हो गया था, रेने मार्सिंकस ने उनकी जर्मन भाषा की जाँच कर ली थी, और भागने वाले अपनी अंतिम ब्रीफिंग शुरू कर रहे थे। जाली पास टिम वालेन की कार्यशाला से आए थे और हमेशा की तरह बिल्कुल सटीक थे। सब कुछ आदेश का इंतजार कर रहा था। लेकिन आखिरी क्षण में, एक सैनिक ने देखा कि शिविर से कैदियों को बाहर ले जाने वाले गैर-कमीशन अधिकारी राइफलों के बजाय पिस्तौल पहने हुए थे। ऊपर से आए एक नए आदेश ने राइफल ले जाने पर रोक लगा दी थी।

खबर मिलते ही रॉजर भड़क उठा, जॉनी ट्रैविस और जेन्स मुलर भी भड़क उठे, और सारा काम रोक दिया गया। टॉमी गेस्ट के एक कर्मचारी ने, जो युद्ध से पहले हैंडबैग बनाता था, कुछ होल्स्टर बनाए। उसने गत्ते के कुछ टुकड़ों पर निशान बनाकर उन्हें चमड़े जैसा रूप दिया, उन्हें काटकर और मोड़कर होल्स्टर का आकार दिया और फिर उन पर काले बूट पॉलिश से तब तक रगड़ा जब तक वे चमकने न लगे। होल्स्टर के सिरों में कागज के टुकड़े ठूंस दिए गए, और डिगर मैकिन्टोश ने गत्ते के ऊपर से बाहर निकालने के लिए लकड़ी के पिस्तौल के बट बनाए। राइफलों की तरह, होल्स्टरों को असली चीज़ से अलग पहचानना लगभग नामुमकिन था।

भागने वालों को पता था कि सीमित सामान बिना शक पैदा किए ले जाया जा सकता है, इसलिए भागने में सफल होने की संभावना सामान्य से कहीं अधिक कम थी। हालांकि, इससे जो अफरा-तफरी मचती, वह भी काफी ज्यादा थी, और यही भागने का मुख्य उद्देश्य था। छब्बीस सैनिकों के मुख्य द्वार से बाहर निकलने की बात से कमांडेंटुर में कुछ लोगों में हलचल मचना तय था। और ऐसा ही हुआ। आपातकालीन अपील की गई और शिविर के हर उपलब्ध कर्मचारी को, डॉक्टर से लेकर पार्सल-रूम के कर्मचारी तक, भागने वालों की तलाश में जुटा दिया गया।

*

परिसर छोड़ने के बाद, मुख्य दल लगभग सौ गज तक सड़क पर धीरे-धीरे आगे बढ़ा; फिर सैनिक एक-एक करके या दो-दो करके जंगल में घुस गए। दो अंगरक्षक, रोजर डी वेवर और ओटो गीसिंक, एक झाड़ी के पीछे छिप गए और अपनी खालें उतार दीं, जो उन्होंने वाल्ट मोरिसन और लोर्न वेल्च को दे दीं। बाकी लोगों ने अपने थैलों में हाथ डाला और जूँ से भरे कंबल और जैकेट नहीं, बल्कि मोटे तौर पर सिले हुए आम नागरिक कपड़े, छोटे-छोटे पैकेटों में भरा भोजन, नक्शे और थोड़ी मात्रा में जर्मन मुद्रा निकाली। शिविर छोड़ने के पाँच मिनट के भीतर ही भागने वाले उस इलाके से बाहर निकल रहे थे, कुछ रेलवे स्टेशन की ओर जा रहे थे और बाकी घने जंगल की ओर।

क्योंकि उन्हें बहुत कम समय मिला था, इसलिए अधिकांश लोग ज्यादा दूर नहीं जा पाए और परिसर से कुछ मील की दूरी पर ही उन्हें पकड़ लिया गया। हैंक बर्कलैंड को शिविर के दक्षिण में जंगल से गुजरते समय पकड़ा गया। बाल्टिक सागर की यात्रा कर रहे नॉर्वेजियन मजदूर रेड नोबल की किस्मत बेहतर थी। वह स्टेशन पहुँचने में जरा भी देर नहीं लगाई और एक रेलगाड़ी में सवार हो गए जो अभी-अभी रवाना हो रही थी। जब तक गार्ड अन्य भागे हुए लोगों को पकड़ने के लिए प्लेटफार्म पर पहुँचे, रेड वहाँ से जा चुका था। उसे थोड़ा झटका लगा जब एक लूफ़्टवाफे अधिकारी ने उसकी आरएएफ पैंट में कुछ ज्यादा ही दिलचस्पी दिखाई, लेकिन वह बिना किसी

और कठिनाई के पोज़ेन पहुँच गया। अपनी यात्रा का एक तिहाई हिस्सा पूरा कर लेने के बाद, रेड आत्मविश्वास से भरा हुआ था। हालाँकि, जैसे ही ट्रेन स्टेशन से निकलने वाली थी, पुलिस ने रेड और एक अन्य भागे हुए व्यक्ति सहित, जिसे वह पहचानता था, कुछ दर्जन लोगों को बेतरतीब ढंग से रोक लिया और उन्हें प्रतीक्षा कक्ष में हिरासत में ले लिया। यह स्पष्ट रूप से एक अंदाजे से की गई तलाशी थी, लेकिन जब वे रेड तक पहुँचे, तो पुलिस को शक हुआ। वे उसके पहचान पत्र (ऑस्वेइस) पर नियोक्ता के रूप में दर्ज कंपनी को फोन करने ही वाले थे कि रेड ने आत्मसमर्पण करने का फैसला किया। उसे और दूसरे भगोड़े को नागरिक जेल ले जाया गया और फिर वापस सागन भेज दिया गया।

डिगर मैकिन्टोश, बोहेमिया होते हुए स्विट्ज़रलैंड पहुंचने की उम्मीद में, रेल पटरी के साथ-साथ लगभग पंद्रह मील दक्षिण की ओर गया और फिर दक्षिण की ओर जा रही एक मालगाड़ी में चढ़ गया। सीगर्सडॉर्फ स्टेशन पर उसे पुलिस की भारी मौजूदगी मिली और उसे तुरंत रोककर पूछताछ की गई। उसे छोड़ने ही वाले थे कि तभी एक पुलिसकर्मी ने देखा कि डिगर के पहचान पत्र पर हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी की पास जारी होने से कुछ सप्ताह पहले ही मृत्यु हो चुकी थी। बस, यहीं पर डिगर का भविष्य समाप्त हो गया।

भागने वालों में से कम से कम दो शिविर के डॉक्टर के चंगुल में फंस गए। रोजर डी वेवर कुछ अनजाने रास्तों से भटकने के बाद रेलवे स्टेशन पर पहुंचा, लेकिन उसे पता चला कि उसकी लीपज़िग जाने वाली ट्रेन छूट गई है। सागन से दूर जाने वाली अगली ट्रेन में बैठने का विकल्प चुनकर, उसने बर्लिन का टिकट खरीदा और बुकिंग हॉल में इंतजार कर रहा था जब डॉक्टर आया और उसके कागजात दिखाने को कहा। इससे रोजर का भागने का प्रयास समाप्त हो गया।

कॉन्क कैंटन की किस्मत तो और भी बदकिस्मती भरी थी। वह सागन स्टेशन से ट्रेन में चढ़ा और जैसे ही ट्रेन चलने लगी, एक जर्मन अधिकारी चढ़ा और कॉन्क के डिब्बे में बैठ गया। यह जानकर वह बुरी तरह घबरा गया कि उसका नया साथी शिविर का डॉक्टर है। कॉन्क ने जल्दी से अपना चेहरा अखबार से ढक लिया और पूरी यात्रा के लिए अपनी सांस रोके रखने की तैयारी कर ली। कुछ मिनटों के भयानक इंतजार के बाद, कॉन्क को अपने घुटने पर एक थपकी महसूस हुई। उसने पहली थपकी को नज़रअंदाज़ कर दिया, दूसरी थपकी को भी, लेकिन तीसरी को वह नज़रअंदाज़ नहीं कर सका, इसलिए उसने घबराते हुए अखबार के किनारे से झाँका। डॉक्टर उसे क्षमा याचना भरे लहजे में देख रहा था और बोला, 'मुझे बहुत खेद है, श्रीमान कैंटन, लेकिन मुझे खेद है कि आपको मेरे साथ चलना होगा।' उसे भी, बाकी अधिकांश भागने वालों के साथ, एकांत कारावास में डाल दिया गया।

दरअसल, मूल समूह के केवल तीन सदस्य ही कुछ दिनों से अधिक समय तक फरार रह पाए और फिर उन्हें वापस पकड़ लिया गया। ट्रैविस के दो इंजीनियर, लॉर्न वेल्च और वॉल्ट मॉरिसन, स्वीडन ले जाने के लिए किसी विमान की तलाश में पास के हवाई अड्डे की ओर चल पड़े। (एक्स ऑर्गनाइजेशन के पास दर्जनों जर्मन विमानों के इंस्ट्रूमेंट पैनल के रेखाचित्र थे, जो उन पायलटों द्वारा उपलब्ध कराए गए थे जिन्होंने पकड़े गए विमानों को मार गिराए जाने से पहले उड़ाया था।) हवाई अड्डे पर पहुँचते ही, उनकी नज़र एक पुराने प्रशिक्षण विमान पर पड़ी और वे बेफिक्र होकर उसके पास गए और इंजन को स्टार्ट करने लगे। जैसे ही इंजन स्टार्ट हुआ, एक हट्टा-कट्टा जर्मन पायलट प्रकट हुआ और उन दोनों भगोड़ों पर कुछ अपशब्द बोले, जिनमें से कोई भी जर्मन नहीं बोलता था। अचंभित होकर, वे केवल सलाम कर सके और सम्मानपूर्वक विमान से दूर हट गए। इससे जर्मन पायलट संतुष्ट हो गया और कॉकपिट में चढ़कर विमान उड़ा ले गया। उन्हें एक और विमान तो मिल गया, लेकिन पता चला कि उसमें स्टार्टिंग क्रैंक गायब था। हिम्मत न हारते हुए, दोनों हैंगर में घुस गए और तब तक छानबीन करते रहे जब तक उन्हें एक लॉकर में एक पेंच नहीं मिल गया। रनवे पर लौटकर, वे ट्रेनर को चालू ही कर रहे थे कि तभी एक और जर्मन सैनिक प्रकट हुआ। एक बार फिर, लॉर्न और वॉल्ट ने सार्जेंट की डांट को विनम्रता से सुना, लेकिन इस बार वह सलाम करने से आसानी से शांत नहीं हुआ। खेल खत्म होते देख, दोनों ने हाथ ऊपर उठा

दिए और उन्हें पूछताछ के लिए ले जाया गया। उनके पूछताछकर्ता स्वाभाविक रूप से दो ब्रिटिश कैदियों के अपने हवाई अड्डों पर घूमने से नाराज़ थे, और वेल्च और मॉरिसन को कुछ हफ्तों तक कोठरियों में पसीना बहाते हुए रखा गया, जबकि उन पर तोड़फोड़ के आरोप लगाए गए। आखिरकार जर्मनों ने उन दोनों को कोल्डिट्ज़ भेज दिया।

छब्बीस लोगों में से सबसे बदकिस्मत छोटा जॉनी स्टोवर था। उसे परिसर से लगभग एक मील दूर रोक लिया गया, लेकिन स्पेनिश मजदूर के रूप में पहचान बताने वाले कागजातों ने उसे बचा लिया और वह चेकोस्लोवाकिया के लिए अपनी यात्रा जारी रख सका। खेतों और जंगलों से सावधानीपूर्वक चलते हुए, उसने अच्छी गति से लगभग अस्सी मील की दूरी तय कर ली और लगभग एक सप्ताह में चेकोस्लोवाकिया पहुँच गया। वहाँ पहुँचकर, उसने प्राग हवाई अड्डे के पास एक मित्रवत सराय मालिक के माध्यम से भूमिगत संगठन से संपर्क किया और अगले तीन हफ्तों तक उसे सुरक्षित घरों में रखा गया, जबकि प्रतिरोध आंदोलन स्विट्जरलैंड की ट्रेन यात्रा के लिए कागजात प्राप्त करने का प्रयास कर रहा था। जब यह प्रयास विफल रहा, तो उन्होंने उसे नए कपड़े पहनाए और जर्मन सीमा के पास एक छोटे से स्टेशन का टिकट दिया, और जॉनी पैदल चलकर वापस जर्मनी में प्रवेश करने में सफल रहा।

फिर उसने स्विट्जरलैंड की ओर जाने वाली ट्रेन पकड़ी और लेक कॉन्स्टेंस से लगभग चालीस मील दूर उतर गया। एक्स ऑर्गनाइजेशन ने उसे शाफहाउसेन क्षेत्र का एक विस्तृत नक्शा दिया था, और जॉनी को उम्मीद थी कि वह वहाँ से तटस्थ क्षेत्र में प्रवेश कर जाएगा, जहाँ सीमा एक सूखे नदी-तल से होकर गुजरती थी। उस बिंदु पर सीमा घूमकर मुड़ जाती थी, जिससे नदी के दो हिस्सों के बीच स्विस क्षेत्र का एक छोटा सा हिस्सा बच जाता था। यहाँ तक पहुँचने के बाद, जॉनी का भाग्य अब उसका साथ छोड़ गया, क्योंकि उसने नक्शे पर दूरी का गलत अनुमान लगाया और अनजाने में सूखे नदी-तल की सीमा पार कर गया। स्विस क्षेत्र से गुजरते हुए, वह नदी के दूसरे मोड़ पर पहुँचा, जो जर्मनी की सीमा को चिह्नित करता था, और इतने करीब होने की खुशी में, वह सीमा के जर्मन हिस्से में गश्त कर रहे एक गार्ड से टकरा गया। यह एक भयानक दुर्भाग्य था।

गेस्टापो ने जॉनी को कुछ हफ्तों तक हिरासत में रखा ताकि उससे चेक भूमिगत गतिविधियों के बारे में पूछताछ की जा सके, लेकिन उसने जंगल में अपनी सैर के बारे में बात करना बेहतर समझा और आखिरकार उसे सागन को लौटा दिया गया। जर्मनी से चिट्ठियों का आना अचानक बंद हो जाने से स्टोवर का परिवार चिंतित हो गया और अक्टूबर तक उन्हें पता ही नहीं चला कि क्या हुआ था। जॉनी की चिट्ठी की शुरुआत इस तरह हुई, 'मैं आप सभी से फिर से मिलने के लिए तरस रहा हूँ। जून में मैं लगभग कामयाब हो ही गया था, लेकिन सौ गज से भी कम दूरी से चूक गया... जब मैं आपसे मिलूंगा, तो आपको सब कुछ बताऊंगा, आप इतने करीब होकर भी इतने दूर हैं।'

*

जर्मनों ने भागने की घटना पर हमेशा की तरह सख्त कदम उठाए। उन्होंने प्रतिदिन अप्पेल की संख्या बढ़ाकर चार कर दी और रेड क्रॉस और सिगरेट के पार्सल देना बंद कर दिया। वे यह जानने के लिए भी बहुत उत्सुक थे कि भागने में गार्ड की भूमिका किसने निभाई थी। वे नियमित अंतराल पर कोलाज में आते और हर एक कैदी से पूछते कि क्या उन्होंने गार्ड की खाल पहनी थी। आश्चर्य की बात नहीं है कि डी वेवर और गीसिंक समेत सभी ने इनकार कर दिया। आखिरकार गार्डों ने हार मान ली और सभी को एक ही अवधि के लिए एकांत कारावास की सजा सुनाई। हालांकि, यह वास्तव में उतना एकांत कारावास नहीं था, क्योंकि भागने वालों को कोलाज में तीन-तीन करके ठूंस दिया गया था ताकि वे सभी उसमें समा सकें।

जूँ मारने वाली पार्टी से भागने के बाद जैसे ही डौगी मेलोर जेल से बाहर आया, उसके हट्टे-

कट्टे दक्षिण अफ़्रीकी रूममेट नेविल मैकगार ने उसका पीछा किया, जिसने दो साल की कैद में भी अपनी ताकत ज़रा भी नहीं खोई थी। नेविल भागने की सारी कहानी सुनना चाहता था और डौगी की थोड़े समय की आज़ादी की कहानी को बड़ी उत्सुकता से सुन रहा था। कहानी खत्म होने पर नेविल एक पल के लिए चुप रहा और फिर धीमी आवाज़ में बोलने लगा, 'डौग, मैं युद्ध खत्म होने से पहले इस शिविर से भाग जाऊंगा। तब मेरे पास भी तुम्हारे जैसी ही भागने की कहानी होगी।' इतना कहते ही नेविल के गोल चेहरे पर वह मुस्कान आ गई जो हमेशा उसके होठों पर रहती थी। डौगी मेलोर समझ गया कि उसके दोस्त ने मन बना लिया है, और उस दिन से नेविल मैकगार के अपने वादे से मुकरने का कोई सवाल ही नहीं था, चाहे परिस्थितियाँ कितनी भी प्रतिकूल क्यों न हों।

बेशक, क्लेमेंट एल्डविन नेविल मैकगार के लिए यह पहली बार नहीं था कि परिस्थितियाँ उनके विपरीत थीं। 24 नवंबर, 1917 को जोहान्सबर्ग में जन्मे नेविल, पाँच बच्चों वाले परिवार में दूसरे नंबर के थे। उनका परिवार 1923 में डरबन जाने से पहले ट्रांसवाल में रहता था। युवा मैकगार ने वहीं स्कूल जाना शुरू किया, लेकिन बारह साल की उम्र में उन्हें पोलियो हो गया और कमर के नीचे का पूरा शरीर लकवाग्रस्त हो गया। उन्होंने आठ महीने अस्पताल में बिताए, जहाँ उन्हें दोबारा चलना सीखने के लिए लगातार चिकित्सा करानी पड़ी। कोई और लड़का शायद हार मान लेता, लेकिन नेविल के दृढ़ संकल्प ने उन्हें आगे बढ़ने में मदद की, और उनके पैरों में केवल सपाट तलवे और पैरों में हल्की सुन्नता रह गई। सितंबर 1930 तक वे हाई स्कूल शुरू करने के लिए काफी स्वस्थ हो गए थे और 1935 में स्नातक होने तक, उन्हें शैक्षणिक उपलब्धियों के लिए पुरस्कार मिल चुके थे और वे स्कूल की रग्बी टीम में खेलते थे। नेविल एक बहुत ही मजबूत खिलाड़ी थे, और उनकी ताकत को देखकर यह कल्पना करना मुश्किल था कि वे कभी लकवाग्रस्त भी रहे थे। वह अपने कड़े टैकल के लिए जाने जाते थे और कभी-कभी खुद भी चोटिल हो जाते थे या टैकल करने वाले को सिर में चोट लग जाती थी। एक बार तो बेहद जोरदार टैकल में उनका बेचारा प्रतिद्वंद्वी बेहोश हो गया और उसे कुछ दिनों के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया। नेविल को उसकी सेहत की इतनी चिंता थी कि वह हर दोपहर उससे मिलने अस्पताल जाया करते थे।

अपने पिता की मदद से, मैकगार को लीवर ब्रदर्स की प्रयोगशाला में नौकरी मिल गई और बाद में उन्हें डरबन कॉर्पोरेशन के कोषागार विभाग में क्लर्क के रूप में नियुक्त किया गया। युद्ध से पहले उनका जीवन व्यस्त था; वे अपनी रडज स्पेशल मोटरसाइकिल और बाद में अपनी बीएसए स्काउट मोटरकार में घूमते थे, या अपने तीन दोस्तों के साथ मिलकर बनाए गए एक छोटे से डांस बैंड में ड्रम बजाते थे। उन्होंने कुछ समय नौसेना रिजर्व में बिताया और अपनी वर्दी में काफी प्रभावशाली दिखते थे। उनका छह फुट का कद चौड़ा और बहुत मजबूत था, और नेविल अपने कपड़ों और बालों का बहुत ध्यान रखते थे। वे अपने सुंदर सफेद दांतों की देखभाल भी बहुत करते थे। शिविर में एक दांत निकलवाना उनके लिए बहुत बड़ा झटका था।

युद्ध शुरू होने तक नेविल नौसेना रिजर्व छोड़ चुके थे, लेकिन मैकगार परिवार को पूरा विश्वास था कि वे दोबारा सेना में शामिल होंगे। मई 1940 में नेविल और उनके दो दोस्तों ने पायलट प्रशिक्षण के लिए आवेदकों की मांग वाला एक विज्ञापन देखा और तुरंत भर्ती होने का फैसला कर लिया। तीनों ने मेडिकल परीक्षा पास की, प्रिटोरिया के लिए रेल वारंट का जुगाड़ किया और 23 मई को बिना सूचना दिए एसएएएफ मुख्यालय पहुंच गए। इन उत्साही और साहसी सैनिकों के साथ क्या किया जाए, यह तय न कर पाने के कारण अधिकारियों ने उन्हें अगले पायलट प्रशिक्षण शुरू होने तक एयर मैकेनिक के रूप में तैनात कर दिया। लगभग एक साल बाद, 26 अप्रैल 1941 को, नेविल को कमीशन प्राप्त हुआ और 21 जुलाई को उन्हें मिस्र में तैनात किया गया। अक्टूबर की शुरुआत में उनका तबादला 2 स्क्वाड्रन में कर दिया गया, जहां उन्होंने लीबिया-मिस्र सीमा क्षेत्र में कर्टिस टोमाहॉक लड़ाकू विमान उड़ाए।

6 अक्टूबर को, नेविल के ऑपरेशनल असाइनमेंट के पहले सप्ताह में, स्क्वाड्रन को सिदी

उमर क्षेत्र में गश्त करने का आदेश दिया गया। गश्त का पहला भाग बिना किसी घटना के संपन्न हुआ, लेकिन जैसे ही बारह टोमाहॉक विमान घर लौटने वाले थे, उन पर एक दर्जन मेसेरश्मिट विमानों ने हमला कर दिया। इसके बाद हुई झड़प में, नेविल और उनके एक स्क्वाड्रन साथी को मार गिराया गया। दूसरा पायलट मारा गया, लेकिन नेविल ने पैराशूट का सहारा लिया और रेगिस्तान की सतह पर उतरते हुए लड़ाई के बाकी दृश्य को सामने से देखा। उतरते समय उनका एक जूता खो गया था, फिर भी वे मित्र देशों की सेना की ओर चल पड़े और तीन दिनों तक बिना भोजन और पानी के रहने के बाद, वे सुरक्षित स्थान से कुछ ही मील की दूरी पर पहुँच गए। अपनी यात्रा के अंतिम चरण से पहले कुछ मिनट आराम करने के लिए रुकते समय, मैकगार ने दूर से वाहनों के इंजनों की आवाज़ सुनी। सफलता इतनी करीब थी कि वे पकड़े जाने का जोखिम नहीं उठाना चाहते थे और बंजर रेगिस्तान में छिपने की जगह खोजने लगे। थके हुए दक्षिण अफ्रीकी पायलट ने एक छोटा सा गड्ढा देखा जहाँ से वे मित्र देशों की सेना को आते हुए देख सकते थे और तेज़ी से उस खाई की ओर दौड़ पड़े। जैसे ही ट्रक पहाड़ी की चोटी पर पहुँचे, जर्मन सैनिकों में से एक ने नेविल को देखा और खुशी से चिल्ला उठा। वह आज़ादी से बस कुछ ही घंटों की दूरी पर था।

लीबिया में एक अस्थायी शिविर में कुछ दिन बिताने के बाद, नेविल को डुलैग लुफ़्ट भेज दिया गया। वह बार्थ तब पहुँचे जब सर्दियाँ शुरू हो रही थीं और रेगिस्तानी सेवा किट से अधिक उपयुक्त सामान मिलने पर उन्होंने बाल्टिक तट शिविर की बर्फ का खूब आनंद लिया। बार्थ से, नेविल सागन के पूर्वी शिविर में गए और जैसा कि उन्होंने अपने परिवार को लिखा, यह एक ऐसी यात्रा थी जिसका उन्होंने भरपूर आनंद लिया: 'यहाँ पहुँचने के लिए मैं कुछ खूबसूरत इलाकों से गुजरा... बसंत अपने पूरे शबाब पर है, मुझे गोरिंग को पत्र लिखकर देखना चाहिए कि क्या कोई यात्रा आयोजित की जा सकती है।' बाद में, अप्रैल 1943 में उत्तरी शिविर में पहले अभियान में वह शामिल हुए। जूँ मारने वाली पार्टी के भागने से पहले उन्हें एक्स संगठन के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी, लेकिन उसके बाद उन्होंने इसके बारे में पता लगाना अपना काम बना लिया। डौगी मेलर से उन्होंने सुरंग निर्माण विभाग के बारे में जाना और फैसला किया कि उनकी क्षमता का सबसे अच्छा उपयोग भूमिगत काम में ही हो सकता है। हंसमुख नेविल मैकगार ने खुदाई करने वालों को अपनी सेवाएं देने की पेशकश की, लेकिन इसके बजाय उन्हें सुरंग सुरक्षा कर्मियों की निगरानी में जॉर्ज हर्ष और जॉर्ज मैकगिल के साथ काम करने के लिए कहा गया। यह बात नेविल को बिल्कुल ठीक लगी।

*

जूँ मारने वाली टोली के भागने की घटना का एक छोटा सा सिलसिला जारी रहा। मूल भागने की घटना के कुछ दिनों बाद, तीन सैनिकों ने जर्मन वर्दी पहनी और ट्रैविस द्वारा बड़ी सावधानी से तैयार की गई राइफलों को लेकर गेट की ओर बढ़े। उन्होंने जाली पास आगे बढ़ाए जिन पर वही पहचान चिह्न था जिसने वैन डेर स्टॉक की टोली को पकड़वाया था। दोनों गेट खुल गए और तीनों आसानी से आज़ादी की ओर निकल गए। दुर्भाग्य से, उनमें से दो की मुलाकात रेलवे स्टेशन जाने वाली सड़क पर ग्लेम्निट्ज़ से हो गई और उन्हें तुरंत पहचान कर गिरफ्तार कर लिया गया। तीसरा क्लैप्टन का रहने वाला डेनिस हर्बर्ट कॉकरन (जन्म कॉकरम) था, जो इक्कीस वर्षीय रेडियो ऑपरेटर-एयर गनर था और युद्ध से पहले लंदन के प्रमुख टेबल टेनिस खिलाड़ियों में से एक के रूप में ख्याति प्राप्त कर चुका था। अक्टूबर 1942 में विमान दुर्घटना में घायल होने के बाद, कॉकरन को पकड़े जाने से पहले एक महीने से अधिक समय तक फरार रहा था। इस बार उसका भाग्य और भी बुरा था। जर्मन भाषा पर उनकी उत्कृष्ट पकड़ के बावजूद (जिसका वे स्कूली दिनों से ही गहन अध्ययन कर रहे थे), डेनिस को शिविर छोड़ने के कुछ ही घंटों बाद ट्रेन से उतार दिया गया। युवा अधिकारी ने अपने संक्षिप्त बचाव को धैर्यपूर्वक स्वीकार किया, और इससे अगली बार

बेहतर करने का उनका संकल्प और भी मजबूत हो गया। पहले से ही शांत स्वभाव का यह युवक भागने की योजना में और भी मग्न हो गया और जब वह किसी नापाक साजिश में शामिल नहीं होता था, तो उसे अक्सर अपने बिस्तर पर जर्मन व्याकरण की किताब पढ़ते हुए पाया जाता था।

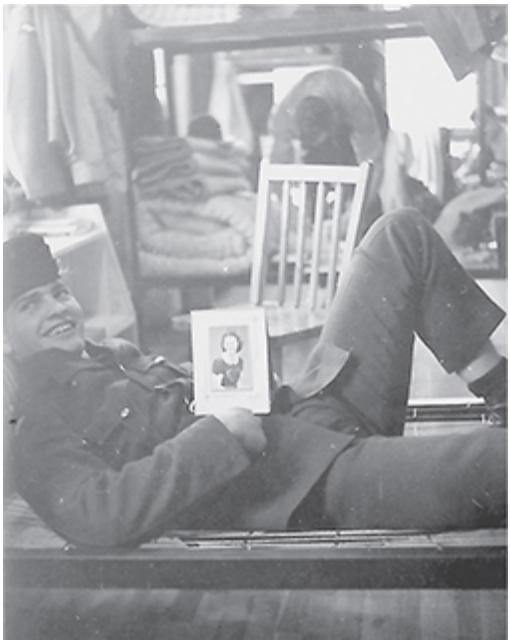

हैंक बर्कलैंड, कनाडा में प्रशिक्षण के दौरान (हंस बर्कलैंड)

मोटर रेसिंग के दिनों में गॉर्डन ब्रेटेल (टेरेंस ब्रेटेल)

लेस बुल, अपनी कैद के शुरुआती दिनों में (कैथलीन एंस्टे)

जिमी कैटानाच (डब्ल्यू.ए. कैटानाच)

युद्ध से पहले के खुशहाल दिनों में डेनिस कॉचरन (बेरिल फिच)

इयान क्रॉस, 1938 में (सर केनेथ क्रॉस)

‘विंटर्स ड्रॉअर्स ऑन’: बाएं से, डेस प्लंकेट, अज्ञात, डडली डेविस, वैली वैलेंता, ‘डिगर’ कार्टर, टिम वालेन, जॉन बोर्डमैन, अज्ञात (एलेक्स कैसी)

जैक ग्रिसमैन (स्टैन ग्रिसमैन)

नोएला और अल हेक (नोएला हेक)

हॉलडोर एस्पेलिड (इंग्रिड एस्पेलिड होविग)

ब्रायन इवांस (नोएल इवांस)

जोहान्स गॉव्स (शीला ओबरहोल्ज़र)

‘सैंडी’ गन (हैमिश गन)

टोनी हेयटर, वेलिंगटन विमानों पर परिचालन शुरू करने के बाद (डेविड हेयटर)

1941 में काहिरा में रेग कीरथ (पीटर कीरथ)

काज़ पावलुक (पीछे बाईं ओर) और टोनी किवनार्स्की (आगे दाईं ओर) (पोलिश संस्थान और सिकोरस्की संग्रहालय)

पैट लैंगफोर्ड 1941 में (डेनिस लैंगफोर्ड)

एडम कोलानोव्स्की की ऑब्जर्वर क्लास की तस्वीर, जुलाई 1942 (पोलिश संस्थान और सिकोरस्की संग्रहालय)

सन् 1942 में सैगन के ईस्ट कंपाउंड का एक कमरा; पीछे की ओर, लॉरेंस रीवेल-कार्टर, अज्ञात व्यक्ति, डिकी एज, अज्ञात व्यक्ति, जैक ग्रिसमैन; आगे की ओर, अज्ञात व्यक्ति, हेनरी लैमंड, 'कॉन्क' कैंटन (जुडिथ मेडमेंट)

1941 में नए युद्धबंदी के रूप में लेस लॉन्ग (डोरोथी गैलप)

'जॉनी' मार्शल, मेरसा मटरुह में, जून 1931 (वेरा हैमर)

नेविल मैकगार, बार्थ में 1941 में (एथलीन स्टीवंस)

जॉर्ज मैकगिल (बाएं), सैगन में अपने कमरे में आराम करते हुए (बेटी गिलिस)

सन् 1944 की शुरुआत में सैगन के नॉर्थ कंपाउंड का एक कमरा: खड़े हुए, बाएं से, पर्विस, जेफ्रीज़ और मुलिन्स; बैठे हुए, बाएं से, हेरोल्ड मिलफोर्ड, जॉन एफ. विलियम्स, टोनी हेयटर, चाज़ हॉल और टॉम व्हिटिंग (सिंथिया क्रूइकशैंक)

सागन में नॉर्वेजियन: बाएं से, जान स्टौबो, पेर बर्गस्लैंड, हॉलडोर एस्पेलिड, और जेन्स मुलर (इंग्रिड एस्पेलिड होविग)

सोतिरिस स्कांत्ज़िकास अपने भाई सारंडिस (सारंडिस स्कांत्ज़िकास) के साथ

हेनरी पिकार्ड आकाश का चिंतन करते हुए (मिमी मार्टिन-पिकार्ड)

जॉन स्टीवंस ने बचपन से ही उड़ान भरने के प्रति प्रेम दिखाया (यूनिटी प्राइस)

‘टॉमी’ थॉम्पसन और ‘वैंक’ मरे को उनकी गिरफ्तारी के तुरंत बाद (नोरा थॉम्पसन)

1942 की क्रिसमस पर सैगन का ईस्ट कंपाउंड: बाएं से, डेस प्लंकेट, 'डिगर' कार्टर, टिम वालेन, डडली डेविस, वैली वैलेंता, जॉन बोर्डमैन और गाय ग्रिफिथ्स (जॉय ट्रॉटन)

पावेल टोबोल्स्की (पोलिश संस्थान और सिकोरस्की संग्रहालय)

जिमी वर्नहम अपनी चचेरी बहन मैरी चार्ल्सन के साथ, विदेश जाने से ठीक पहले (मैरी चार्ल्सन)

जॉर्ज वाइली (जैक्लिन ब्रूम)

अध्याय **11**

सुरंग निर्माण में सफलता और विफलता

कुछ हफ़्तों बाद, पाबंदियों में ढील दी गई और सागन में जीवन लगभग सामान्य हो गया। गर्मी के उन महीनों में खेल का मैदान हमेशा इस्तेमाल में रहता था, क्योंकि फ़ुटबॉल टीमें एक-दूसरे के खिलाफ़ खेलती थीं। एक कड़े मुकाबले में न्यूज़ीलैंड ने ऑस्ट्रेलिया पर मामूली अंतर से जीत हासिल की, जबकि ब्रिटिश द्वीप समूह और डोमिनियन के बीच मैच ड्रॉ रहा। जो लोग आराम से मनोरंजन करना पसंद करते थे, उनके लिए एक ब्रिज टूर्नामेंट था जिसमें गॉर्डन ब्रेटेल और पैट लीसन ने भाग लिया। दोनों ने पहले कभी ब्रिज नहीं खेला था, लेकिन इससे उनका हौसला कम नहीं हुआ। उन्होंने ब्रिज पर कल्बर्टसन की गोल्डन बुक की एक प्रति प्राप्त की और दो दिनों तक उसका गहन अध्ययन किया। उनकी मेहनत रंग लाई और गॉर्डन और पैट ने दर्जनों अनुभवी जोड़ियों को पीछे छोड़ते हुए दूसरा स्थान प्राप्त किया।

टॉम, डिक और हैरी की खाद से उपजाऊ हुई शिविर की सब्जी की बस्तियाँ खूब फली-फूलीं। कैदियों ने अपने आहार को पूरक बनाने के लिए आलू, सलाद पत्ता, पालक, मूली और सरसों उगाईं, और ये बस्तियाँ जल्द ही उनके लिए गर्व का स्रोत बन गईं। हालाँकि, एक कैदी ने अपने साथी कैदियों को नाराज़ करते हुए कुछ ऐसा कर दिया कि उसने अपनी खिड़की के बाहर बगीचे में गंदा पानी डलवा दिया। उसे साफ शब्दों में चेतावनी दी गई कि अगर वह खाद डालने का यह तरीका जारी रखता है, तो उसे कोई दूसरा कमरा ढूंढ लेना चाहिए।

दरअसल, शिविर में जीवन पूरी तरह सामान्य प्रतीत हो रहा था, जो रॉजर का इरादा भी था। सुरंगों में काम जारी था, और जहाँ एक ओर खुदाई करने वाले भूमिगत रूप से मेहनत कर रहे थे, वहीं एक्स संगठन की विभिन्न कार्यशालाएँ अपनी-अपनी समस्याओं को सुलझाने और उत्पादन शुरू करने में लगी हुई थीं। और इस दौरान, संगठन द्वारा निजी तौर पर भागने की योजनाएँ बनाई जा रही थीं और उन्हें मंज़ूरी दी जा रही थी। वास्तव में, योजनाओं की इतनी अधिक संख्या थी कि कई संभावित भागने वालों को कतार में इंतजार करना पड़ा। दो बार, कनाडाई नागरिक पैट लैंगफोर्ड और बिल कीच ने समिति के सामने अपनी योजनाएँ रखीं, पहली बार कचरे की गाड़ी में बैठकर भागने की और दूसरी बार सोवियत कैदियों द्वारा खोदी गई खाई का उपयोग करने की। दोनों बार उन्हें बताया गया कि अन्य लोगों ने पहले ही योजना पंजीकृत करा ली है और इसलिए उन्हें प्राथमिकता दी जाएगी।

नए परिसर में पहले महीने के दौरान सावधानीपूर्वक निरीक्षण करने के बाद, लॉरेंस रीवेल-कार्टर ने देखा कि परिसर से रद्दी कागज़ों से भरे बोरे घोड़े की गाड़ी से मुख्य द्वार से होते हुए पूर्वी परिसर के वोरलागर में रखे जा रहे थे। उसे लगा कि वह एक बोरे में छिपकर, गाड़ी के दो सौ गज लंबे रास्ते से गुज़रते समय उसे काटकर बाहर निकल सकता है। बूढ़ा ड्राइवर ज़्यादा समझदार नहीं लग रहा था, इसलिए रीवेल-कार्टर ने सोचा कि वह बिना किसी की नज़र में आए जंगल की ओर भाग जाएगा। यह योजना विधिवत रूप से नॉर्मन क्विल के सामने प्रस्तुत की गई, जो गेट से भागने की मंजूरी देने के प्रभारी थे। क्विल ने एक दिन इस प्रक्रिया को देखा और उन्हें सफलता की अच्छी संभावना दिखी। इसके बाद वह और रीवेल-कार्टर अंतिम मंजूरी के लिए रोजर बुशेल के पास गए। रीवेल-कार्टर ने अपनी योजना का ब्यौरा देते हुए, माथे पर शिकन और नज़रें झुकाए, बिग एक्स ने ध्यान से सुना। अंत में, बुशेल एक पल के लिए चुप रहे, फिर उन्होंने ऊपर देखा।

‘जानते हो,’ उसने कहना शुरू किया, ‘यह एक बहुत अच्छी योजना है, लेकिन मुझे तुम्हारे साथ ईमानदार रहना होगा। तुम बहुत बड़े आदमी हो और मुझे नहीं लगता कि तुम इसके लिए सबसे उपयुक्त हो। एक बार जब हम तुम्हें उस बोरी में डाल देंगे, तो तुम्हें ढकने के लिए कागज़ की कोई जगह नहीं बचेगी! मुझे सुझाव देना होगा कि हम किसी बेहतर उपयुक्त व्यक्ति को भेजें।’

रीवेल-कार्टर मुस्कुराईं। 'मुझे डर था कि आप यही कहेंगे, रोजर - आप बिल्कुल सही हैं। लेकिन मैं अब भी कमान संभालना चाहूंगी।'

‘अच्छा,’ रॉजर ने जवाब दिया। ‘जब हमें कुछ इच्छुक शिकार मिल जाएंगे, तो हम आपको बता देंगे।’

कुछ हफ़्ते बाद, दो वैकल्पिक भगोड़ों, एक न्यूज़ीलैंडवासी और एक अमेरिकी, जो बोरियों में समाने लायक छोटे थे, को जानकारी दी गई और वे जाने के लिए तैयार हो गए। जुलाई के मध्य में तय दिन पर, रीवेल-कार्टर और डेनिस कॉकरन, जो अपनी पिछली भागने की कोशिश के बाद जेल से छूटे थे, बोरियों को इधर-उधर कर रहे सुरक्षाकर्मियों के साथ मिल गए। उन्हें चेतावनी दी गई थी कि दो बोरियाँ सामान्य से ज़्यादा भारी होंगी और वे बिना किसी खास मेहनत के उन्हें गाड़ी पर लादने में कामयाब रहे। उन्होंने गाड़ी के बूढ़े ड्राइवर को हाथ हिलाकर अभिवादन किया, जो गेट की ओर चल पड़ा। गेट पर गार्ड ने बेमन से कुछ बोरियों को धातु की छड़ से कुरेदा और फिर ड्राइवर को आगे जाने का इशारा किया। रीवेल-कार्टर और कॉकरन ने बड़ी संतुष्टि से यह सब देखा। योजना पूरी तरह से सफल रही। जैसे ही गाड़ी पहले गेट से ओझल हुई, दोनों भगोड़े बोरियों को काटकर बाहर निकल आए और फिर चुपचाप गाड़ी के पीछे से कूद गए। अमेरिकी का दुर्भाग्य बेहद खराब था और उसे शिविर से कुछ ही दूरी पर दोबारा पकड़ लिया गया, लेकिन न्यूजीलैंड का नागरिक पूरी तरह से बच निकलने में कामयाब रहा, जिसे एक हफ्ते बाद बाल्टिक सागर में स्थित रूगेन द्वीप पर पकड़ा गया।

*

जूँ मारने वाली पार्टी के भाग निकलने के बाद के हफ्तों में सबसे बड़ा रोमांच शुबिन से लौटे आखिरी सैनिकों के दल की वापसी से पैदा हुआ। उनके साथ ही शौचालय सुरंग की पूरी कहानी सामने आई, जो 1943 की शुरुआती वसंत ऋतु में आगे बढ़ रही थी। सब कुछ योजना के अनुसार ही चल रहा था। जैसे-जैसे फरवरी की ठंड और नमी धीरे-धीरे मार्च की गर्म हवा में बदलती गई, एडी एसलिन की सुरंग तारबंदी के करीब पहुँच गई। उसी समय, एक प्रतिद्वंद्वी सुरंग परिधि तारबंदी के सबसे नज़दीकी बैरक में स्थित रात्रि शौचालय के नीचे से पश्चिम की ओर बढ़ रही थी। डिकी एज और डेविड स्ट्रॉन्ग की सोच का नतीजा, यह एक पूरी तरह से सुसज्जित सुरंग थी, जिसमें सहारा देने के लिए लकड़ी के तख्ते और मुख्य बिजली से जुड़े बिजली के प्रकाश की व्यवस्था थी, और इसमें एक चालाकी से छिपा हुआ जाल था जो दर्जनों सुरक्षा तलाशी अभियानों को नाकाम कर गया था। दरअसल, यह सरासर लापरवाही ही थी जिसके कारण अंततः सुरंग का पता चला।

मार्च 1943 में, यह अफवाह फैलने लगी कि शुबिन में तैनात युद्धबंदियों को अप्रैल में सागन ले जाया जाएगा। चूंकि रात में शौचालय बनाने के लिए बनाई गई सुरंग एसलिन की सुरंग से कहीं लंबी थी, इसलिए एज और स्ट्रॉन्ग ने युद्धबंदियों को ले जाने से पहले अपनी सुरंग खोदने के लिए काम में तेजी लाने का फैसला किया। जैसे ही उन्होंने काम की गति बढ़ाई, उन्हें दूसरी झोपड़ी में भेज दिया गया, जबकि जर्मन सैनिकों ने भूकंपमापी यंत्रों पर दर्ज सुरंग की तलाश में बैरक को तहस-नहस कर दिया। खोज पूरे एक सप्ताह तक चली, लेकिन कुछ नहीं मिला, इसलिए सुरंग खोदने वालों को अपनी झोपड़ी में वापस जाकर काम करने की अनुमति दे दी गई।

समय की कमी के कारण, डिकी और डेव ने दिन के उजाले में काम शुरू करने का कठिन

निर्णय लिया, उन्हें पूरा भरोसा था कि उनकी जासूसी प्रणाली किसी भी जर्मन सैनिक को पकड़ लेगी जो खतरा पैदा कर सकता था। यह प्रणाली कुछ समय तक ठीक चली, लेकिन ठीक उसी समय जब रेत के आखिरी बक्से खिड़की से बाहर फेंके जा रहे थे और ज़मीन पर फैलाए जा रहे थे, जासूसों के बीच एक गलतफहमी के कारण एक गार्ड बिना किसी की नज़र में आए निकल गया। उसे तब तक नहीं पकड़ा गया जब तक कि एक डिस्पर्सर ने उसे परिधि तार के बाहर खड़े होकर रेत फेंकने की प्रक्रिया देखते हुए नहीं देखा। सुरंग कई हफ्तों से खतरे में थी, और यह तलाशी इतनी गहन थी कि इसे नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता था। जर्मनों ने आखिरकार जाल का पता लगा लिया और उन्हें यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि सुरंग 110 फीट से अधिक लंबी थी और तार के पार पूरे 60 फीट तक फैली हुई थी। यह एक सप्ताह से भी कम समय में टूटने के लिए तैयार थी।

एज/स्ट्रॉन्ग सुरंग की खोज के बाद सामान्य तलाशी अभियान चलाया गया, लेकिन एबॉर्ट सुरंग में बिछाया गया चालाक जाल जर्मनों की नज़रों से बच निकला। मार्च की शुरुआत तक यह सुरंग तैयार थी। आयोजकों की एक बैठक हुई और 5-6 मार्च, 1943 की रात को इसे तोड़ने का फैसला किया गया। दरअसल, यह सुरंग कई प्रयासों वाली एक सुनियोजित पलायन योजना का सबसे बड़ा हिस्सा थी। जिस दिन सुरंग तोड़ी जानी थी, उस दिन दो अधिकारी कूड़े की गाड़ी में शिविर से भाग निकलेंगे; उनकी अनुपस्थिति को छिपाने के लिए एपेल में गिनती का फर्जी रिकॉर्ड बनाया जाएगा। फिर, जिस समय सुरंग तोड़ी जा रही थी, उसी समय दस अधिकारी अलग-अलग झोपड़ियों की छतों में छिप जाएंगे। ये अधिकारी शोरगुल शांत होने का इंतजार करेंगे और उम्मीद करेंगे कि शिविर से चुपके से निकल जाएं।

दिन की शुरुआत अच्छी रही। चेक गणराज्य के जो ब्रिक्स और एक अंग्रेज स्क्वाड्रन लीडर कूड़े की गाड़ी में बैठकर आसानी से भाग निकले, और कुछ युद्धबंदियों के ध्यान भटकाने के कारण एपेल पर पहरेदारों को उनकी कमी का पता भी नहीं चला। (स्क्वाड्रन लीडर कुछ दिनों बाद पकड़ा गया, लेकिन ब्रिक्स पैदल चलकर वारसॉ तक पहुँच गया, जहाँ वह तीन महीने तक फरार रहा और फिर पकड़ा गया।) उस रात, भागने वाले तैंतीस लोग एबॉर्ट के पास की झोपड़ियों में इकट्ठा हुए और आगे बढ़ने की अनुमति का इंतजार करने लगे। दस लोग पहले ही छिप चुके थे और उन्होंने अपने लिए पर्याप्त भोजन की व्यवस्था कर ली थी ताकि वे कुछ हफ्तों तक छिपे रह सकें। एडी एसलिन, टेक्स ऐश, प्रिंस पामर और ड्यूक मार्शल सुबह एपेल पर होने वाली लड़ाई से बचने के लिए उत्सुक थे, जब जर्मनों को पता चलेगा कि दर्जनों कैदी भाग निकले हैं।

सभी लोग सुरंग में असहज स्थिति में लेटे हुए थे, तभी एसलिन ने आखिरी कुछ फीट खोदे और यह देखकर प्रसन्न हुआ कि उनका अनुमान बिल्कुल सटीक था: सुरंग नाले के तल में खुलती थी, जिससे भागने वाले बिना किसी की नजर में आए जंगल की ओर रेंग सकते थे। हालांकि, सुरंग से बाहर निकलना पहले की कल्पना से कहीं अधिक कठिन साबित हुआ। निकास द्वार पर छेद बहुत संकरा था और यद्यपि शाफ्ट केवल कुछ फीट ऊंचा था, प्रत्येक भागने वाले को अपनी पीठ के बल लेटना पड़ा और धीरे-धीरे उठकर बैठने की स्थिति में आना पड़ा। फिर उन्हें ताकत लगाकर छेद से ऊपर चढ़ना पड़ा। सबसे पहले बाहर निकलने वाले चार लोग - एसलिन, ऐश, मार्शल और पामर - बिना किसी खास कठिनाई के बाहर निकल गए। हालांकि, जब तक विंग्स डे, जो तैंतीसवें और अंतिम थे, अंत तक पहुंचे, तब तक निकास द्वार इतनी मिट्टी से भर चुका था कि वे बड़ी मुश्किल से बाहर निकल पाए।

शिविर में भोर होते ही कैदियों को यह स्पष्ट हो गया कि जर्मनों को अभी भी भागने की सूचना नहीं मिली है। इस अवसर का लाभ उठाते हुए, एक दक्षिण अफ्रीकी विंग कमांडर ने अपना भागने का सामान इकट्ठा किया, बड़ी सहजता से अबॉर्ट ब्लॉक की ओर बढ़ा और सुरंग से होते हुए गायब हो गया। वह शुबिन से भागने वाला आखिरी व्यक्ति था, इससे पहले कि अफरा-तफरी मच जाए। इसके बाद मची अफरा-तफरी में गुंडों ने शिविर को तहस-नहस कर दिया और उन्हें दस लापता सैनिकों को ढूंढने में ज्यादा समय नहीं लगा। उन्हें इस खोज पर एक तरह की

भयावह खुशी हुई, लेकिन इससे यह तथ्य नहीं बदला कि उनके छत्तीस सैनिक लापता थे और अबॉर्ट ब्लॉक के नीचे एक लंबा, खाली गड्ढा था।

अधिकांश भगोड़े दो सप्ताह के भीतर वापस आ गए। पैदल यात्री, जिनमें से कई बाल्टिक सागर की ओर जा रहे थे, सबसे पहले आने लगे। विंग्स डे और उसका साथी, सिगरेट के पैकेट के पीछे लिखे कुछ पोलिश वाक्यों के सहारे, रेलवे लाइन के साथ-साथ अस्सी मील दक्षिण में एक छोटे से कस्बे की ओर निकल पड़े, जहाँ उनका एक संपर्क था, लेकिन दूसरे ही दिन एक खलिहान में छिपे होने पर उन्हें पकड़ लिया गया। टेक्स ऐश और एडी एसलिन को जंगल सैनिकों से भरा मिला और वे आगे बढ़ने से पहले एक-दो दिन तक छिपे रहे। उन्हें पाँचवें दिन होहेनसाल्ज़ा इलाके में पकड़ लिया गया। छह लोगों का एक समूह वारसॉ जा रहा था, जहाँ उन्हें पोलिश भूमिगत संगठन से जुड़ने और बाल्कन में तस्करी करके ले जाने की उम्मीद थी। वहाँ से वे एक जर्मन बमवर्षक विमान चुराकर उसे मध्य पूर्व ले जाते। एक जोड़ी को होहेनसाल्ज़ा में फिर से पकड़ लिया गया, लेकिन बाकी चार पोलिश राजधानी तक पहुँचने में कामयाब रहे, इससे पहले कि उन्हें पकड़ लिया गया।

ट्रेन यात्रियों की किस्मत कुछ हद तक बेहतर थी। टोनी बार्बर ने डेनिश व्यवसायी का वेश धारण करके बोर्नहोम स्थित अपने गंतव्य की ओर जाते हुए श्नाइडम्यूहल तक का सफर तय कर लिया, जबकि टॉमी कैलनन और रॉबर्ट की ने कोलोन में पुलिस द्वारा पकड़े जाने से पहले काफी दूरी तय कर ली। प्रिंस पामर और माइक वुड शिविर से कुछ ही दूरी पर एक मालगाड़ी में चढ़ गए और लगभग पूरा दिन उसके चलने का इंतजार करते रहे। आखिरकार वे ट्रेन से उतरकर दूसरी ट्रेन में चढ़े, लेकिन कुछ ही मिनटों बाद पहली ट्रेन छूट गई। अब पूरी तरह से निराश होकर उन्होंने पैदल जाने का फैसला किया, लेकिन ट्रेन से कुछ ही दूरी पर उन्हें बचा लिया गया।

एक-एक करके सभी शुबिन लौट आए – फेस फेसलर, केन टॉफ्ट, इयान क्रॉस और बाकी सभी वायुसैनिक। हालांकि, भागने के तीन हफ्ते बाद भी दो अन्य लापता थे। सम्मानित जिमी बकले और उनके साथी, एक डेनिश वायुसैनिक, के बारे में माना जाता था कि वे डेनमार्क जा रहे थे, जहां वे एक नाव ढूंढकर स्वीडन जाने की योजना बना रहे थे। वे एक छोटी डोंगी चुराने में कामयाब रहे, लेकिन कहानी का अंत दुखद रहा। भागने के हफ्तों बाद, डेनिश वायुसैनिक का शव कोपेनहेगन के पास बहकर आ गया, और यह माना गया कि कैटेगैट नदी पार करते समय उनकी डोंगी किसी बड़े जहाज से टकरा गई थी। जिमी बकले का शव कभी नहीं मिला।

शुबिन वापस आकर, भागने वालों को एक कोठरी में बंद कर दिया गया, हर कोठरी में चार आदमी। लेकिन प्रिंस पामर ने एक जादुई चाबी बनाकर गलियारे में ऊपर-नीचे चक्कर लगाया और सबको उनकी कोठरियों से बाहर निकाल दिया, जिसके बाद उन्हें फिर से दूसरी जगह ले जाया गया। उन्हें पुराने लड़कियों के स्कूल की इमारत की सबसे ऊपरी मंजिल पर ले जाया गया और पूछताछ के लिए बड़े कमरों में रखा गया। इस बार इयान क्रॉस की बारी थी मस्ती करने की। हर कुछ मिनट में, एक गार्ड यह देखने के लिए दरवाजे से अंदर झांकता कि कोई गड़बड़ तो नहीं है। एक बार, इयान उछल पड़ा और चिल्लाया, 'खिड़की से बाहर निकलो!' (खिड़की से बाहर निकलो!) और खिड़की की ओर बेतहाशा हाथ-पैर हिलाने लगा। गार्ड दर्द से कराह उठा और खिड़की की ओर भागा, लेकिन उसे खिड़की पर ताला लगा हुआ मिला। इस बीच, इयान उस बेचारे बदमाश को देखकर हंसते-हंसते लोटपोट हो गया। अगले कुछ दिनों तक क्रॉस ने यही हरकत बार-बार दोहराई, और हर बार इससे बेचारा बदमाश कुछ पल के लिए घबरा जाता था।

भागने के बाद कैदियों से गहन पूछताछ की गई और उन पर कई बार तोड़फोड़ का आरोप लगाया गया। गेस्टापो को यह बात समझ नहीं आ रही थी कि वे बस घर लौटना चाहते थे। पूछताछ के दौरान एक दिलचस्प घटना भी घटी। सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लेने के लिए पुलिस की एक टीम शिविर में गई और इस दौरान वरिष्ठ अधिकारी की नज़र कैदियों को दी जाने वाली पानी मिली बीयर के एक बैरल पर पड़ी। उन्होंने तुरंत जर्मन बीयर की तारीफ करना शुरू कर दिया और जब उन्हें एक गिलास दिया गया तो उन्होंने तुरंत उसे स्वीकार कर लिया। हालांकि,

उन्होंने इसके लिए पैसे देने पर जोर दिया और कुछ सिक्के दे दिए। अपना गिलास खत्म करके वे अपनी जांच में जुट गए, जिसका एक उद्देश्य यह पता लगाना था कि कैदियों को असली जर्मन मुद्रा कहाँ से मिलती थी। यह एक छोटी सी रकम थी, लेकिन इससे यह पता चला कि पेशेवर लोग भी कभी-कभी गलती कर बैठते हैं।

शुबिन समूह के कुछ ही सदस्य, जैसे डे और डॉज, नॉर्थ कंपाउंड में स्थानांतरित हुए; बाकी, जिनमें इयान क्रॉस, प्रिंस पामर और माइक वुड शामिल थे, ईस्ट कैंप में गए। वहाँ, उनमें से कुछ उस अभियान में शामिल हुए जो बाद में वुडन हॉर्स के नाम से प्रसिद्ध हुआ। दक्षिण अफ्रीकी जॉन स्टीवंस के नेतृत्व में, शुबिन समूह के कई लड़कों ने बारी-बारी से उस घोड़े के ऊपर से छलांग लगाई, जिसके नीचे सुरंग का प्रवेश द्वार छिपा था, और इस प्रक्रिया में कई लोगों के घुटने बुरी तरह घायल हो गए। हालाँकि, जब ओलिवर फिलपॉट, एरिक विलियम्स और माइकल कॉडनर ने 29 अक्टूबर, 1943 को आखिरकार सुरंग को तोड़ दिया और स्वीडन भाग निकले, तो छलांग लगाने वालों ने इस बात से अपने घावों को शांत किया कि उन्होंने युद्ध की सबसे सफल सुरंगों में से एक को बनाने में योगदान दिया था।

*

गर्मी के महीने बेहद गर्म और धूप भरे थे, और एक बार फिर नॉर्थ कंपाउंड में छोटे-छोटे समूहों में कसरत करते, गरमागरम बहस करते या बस धूप का आनंद लेते हुए लोग नज़र आ रहे थे। हालांकि, यह सब इतना सीधा-सादा नहीं था जितना दिखता था, क्योंकि इनमें से कई धूप सेंकने वाले अपने साथ ढेर सारी रेत लाए थे और धूप सेंकते हुए धीरे-धीरे उसे ऊपर की रेत में मिलाते जा रहे थे। एक और लोकप्रिय आयोजन था नकली संसद का आयोजन। एक अविस्मरणीय सत्र में, लेबर पार्टी के नेता जॉन कैसन और उनके डिप्टी रोजर बुशेल, जो राजनेताओं पर बिल्कुल भी भरोसा नहीं करते थे, ने सभी निजी संपत्तियों के राष्ट्रीयकरण का प्रस्ताव रखने वाला एक विधेयक पेश किया। जॉन और रोजर खुद भी हैरान रह गए जब उनके भाषण देने के कौशल ने नकली सदन में विधेयक को पारित करवा दिया।

जॉनी डॉज द्वारा हाल ही में गठित अंतर्राष्ट्रीय संबंध समूह बेहद लोकप्रिय हुआ और विविध दृष्टिकोणों का मंच बन गया। वहाँ हमेशा गरमागरम बहसें होती थीं और अतिथि वक्ता अपने-अपने विशेषज्ञता क्षेत्रों पर व्याख्यान देते थे। टॉम किर्बी-ग्रीन ने ब्रिटिश साम्राज्य के लिए अश्वेत बहुसंख्यक आबादी के साथ समझौता करने की आवश्यकता पर बात की, जबकि जॉनी स्टोवर ने अर्जेंटीना में ब्रिटिश समुदाय के अनुभवों पर चर्चा की। सबसे लोकप्रिय वक्ताओं में से एक वैली वैलेंता थे, जो समय-समय पर सैन्य स्थिति पर व्याख्यान देते थे। जब भी वैली बोलते थे, वहाँ बैठने की जगह नहीं होती थी, क्योंकि वे युद्ध के लगभग हर महत्वपूर्ण चरण, विशेष रूप से पूर्वी मोर्चे पर, के परिणामों का सही विश्लेषण और भविष्यवाणी करने में सक्षम थे। जुलाई 1943 में कुर्स्क की लड़ाई के बाद, एक श्रोता ने वैलेंता से पूछा कि क्या जर्मनों के लिए अभी भी युद्ध जीतने का कोई रास्ता है?

'हां...हां,' वॉली ने धीरे से कहा, 'एक रणनीति है जिससे वे जीत सकते हैं, लेकिन मैं इस पर चर्चा करने से इनकार करता हूं।' वह रुका और फिर मुस्कुराते हुए बोला, 'मैं उन्हें कोई संकेत नहीं देना चाहता!'

*

शिविर में एक ऐसी जगह थी जहाँ पागलपन का बोलबाला था: हट 120 का एक कमरा, जिसमें एलेक्स कैसी, टिम वालेन, गॉर्डन ब्रेटेल, डेस प्लंकेट और टोनी हेयटर रहते थे – तीन जालसाज़ और दो नक्शा बनाने वाले। चूंकि वे सभी भागने की योजना में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे थे,

इसलिए एलेक्स, गॉर्डन, टिम, डेस और टोनी ने सुरक्षा के लिहाज़ से अपने कमरे में पाँच लोगों को ही सीमित रखा था। आखिरकार, रोजर बुशेल ने आदेश दिया कि अब यह चाल नहीं चल सकती और एक छठे व्यक्ति को लाना होगा। एलेक्स ने अपने पुराने रूममेट हेनरी पिकार्ड का नाम सुझाया और तब से वे छहों खूब घुलमिल गए। उन सभी का हास्यबोध एक जैसा था और जल्द ही शिविर में उन्हें अच्छे स्वभाव वाले पागलों के समूह के रूप में ख्याति मिल गई।

उनका कमरा आमतौर पर चहल-पहल से भरा रहता था। पिकार्ड अक्सर अपने किसी कैरिकेचर के लिए किसी न किसी को बुलाते रहते थे, जबकि हेटर और प्लंकेट अक्सर टोनी की उस क्रांतिकारी ग्लाइडर की योजनाओं के आसपास पाए जाते थे, जिसे वह युद्ध के बाद बनाना चाहते थे। कैसी के पास हमेशा कोई न कोई कहानी होती थी जिससे उसके रूममेट हंसते-हंसते लोटपोट हो जाते थे, जबकि ब्रेटेल, जो सबसे शांत स्वभाव के थे, हद से ज्यादा विनम्र थे। एक दयालु और सज्जन व्यक्ति, वह बहुत ही सादा जीवन जीते थे, उनके पास बहुत कम सामान था, जबकि अधिकांश कैदियों के लॉकर तरह-तरह के सामान से भरे रहते थे। और फिर थे टिम, हमेशा विनम्र और हंसमुख, अपनी बड़ी-बड़ी, पायलट ऑफिसर प्रून जैसी मूंछों के नीचे हमेशा मुस्कुराते रहते थे।

एक सुबह, विंग कमांडर डिकी मिल्ने, एक युवा, मासूम चेहरे वाला और कई पदकों से सम्मानित व्यक्ति, जो कभी गॉर्डन का कमांडिंग ऑफिसर रह चुका था, कॉफ़ी पीने के लिए आया। उसने देखा कि सब कुछ लगभग वैसा ही था जैसा हमेशा होता था - अव्यवस्था फैली हुई थी और सैनिक इधर-उधर भाग-दौड़ कर रहे थे। कमरे में मौजूद लोगों के सामूहिक पागलपन भरे व्यवहार को देखकर डिकी ने उन्हें 'मिलनसार पागलों का झुंड' कह दिया। छहों के लिए चुनौती शुरू हो गई। उन्होंने डिकी को यह दिखाने की कसम खाई कि जब वे सामान्य होने का दिखावा करना बंद कर देंगे तो वे कितने पागल हो सकते हैं।

अगले सप्ताह डिकी के सम्मान में एक भव्य रात्रिभोज आयोजित करने की जटिल योजनाएँ बनाई गईं। जिस रात का लंबे समय से इंतज़ार था, वह आ गई और मिल्ने को कमरे में लाया गया और चूल्हे के पीछे एक कोने में सबसे अच्छी जगह दी गई। शुरुआती कुछ मिनटों में ही डिकी को आने वाली घटना का अंदाज़ा हो जाना चाहिए था। उसकी सीट के बगल वाली दीवार पर एक बहुत ही अलंकृत नोटिस लगा था जिस पर लिखा था, 'वरिष्ठ अधिकारियों से विनम्र अनुरोध है कि वे इस नोटिस को नुकसान न पहुँचाएँ।' उसके ऊपर, छत पर एक और नोट लगा था जिस पर बस इतना लिखा था, 'ऊब गए हो?' रात्रिभोज से पहले की बातचीत डिकी की सीट के बगल में रखे एक सीधे लॉकर से आती धीमी कराहों से बाधित हो रही थी। उसके अंदर, उन सनकी लोगों ने फ्रैंक नाइट को छिपा रखा था, जो इस योजना में शामिल था। फ्रैंक की कराहें धीरे-धीरे तेज़ होती गईं, जब तक कि डिकी ने आखिरकार उन पर ध्यान देना शुरू नहीं कर दिया।

एक लंबे समय तक चली कराह के बाद उसने पूछा, 'यह कैसी आवाज है?'

'क्या शोर है, महोदय?' बेपरवाही से जवाब आया और बातचीत तुरंत फिर से शुरू हो गई। मिल्ने ने कुछ संदेह के साथ स्वीकार किया कि शायद उन्हें कुछ सुनाई दे रहा था, लेकिन अंततः, लॉकर के अंदर फ्रैंक के ज़ोर से चिल्लाने पर, डिकी ने फिर से बोलना शुरू किया।

'वो उस लॉकर में है!' वो चिल्लाया। 'मुझे देखने दो!' लेकिन चूल्हे के चारों ओर बैठे बाकी लोग अपनी पूरी कोशिश के बावजूद डिकी को उसके कोने से हटने नहीं दे रहे थे। कई मिनट तक ये छटपटाना और इधर-उधर खिसकना चलता रहा; फिर आखिरकार डिकी ने हार मान ली और वापस बैठ गया।

कुछ मिनट बाद, दीवार पर दस्तक हुई और बगल के कमरे से एक आवाज आई, 'लड़कों, फ्रैंक को बता दो कि खाना तैयार है।'

लॉकर का दरवाजा खुला और टिम ने खुशी से कहा, 'फ्रैंक, खाने का समय हो गया है।' तभी नाइट बाहर निकला, जो एकदम सलीके से कपड़े पहने हुए था। उसने डिकी से विनम्रता से कहा, 'शुभ संध्या महोदय,' और कमरे से बाहर चला गया। विंग कमांडर यह सब देखकर दंग रह गया

और उसने पूछा कि नाइट लॉकर में क्या कर रहा था।

‘अरे, कुछ खास नहीं,’ अस्पष्ट सा जवाब आया। ‘उन्हें बस शांति और सुकून पसंद है। लेकिन चलिए अब खाना खाने बैठते हैं...’ और मिल्ने को कमरे के बीचोंबीच रखी मेज की ओर तेजी से ले जाया गया।

सीमित संसाधनों के बावजूद दावत यथासंभव भव्य थी और ब्रेटेल और हेटर ने इसे बड़ी खूबसूरती से तैयार किया था। हालांकि, पूरे भोजन के दौरान कुछ ऐसी घटनाएं हुईं जिनका कोई स्पष्टीकरण नहीं था। लोग अकेले या समूहों में आते रहे, कुछ लोग कुछ मिनटों तक चुपचाप खड़े रहे, तो कुछ लोग अजीब और रहस्यमयी बातें करते रहे। एक समूह मेज के चारों ओर खड़ा होकर हंस रहा था, जबकि कनाडाई लोगों के एक समूह ने लोकगीत गाकर भोजन करने वालों का मनोरंजन किया। मिलनसार पागलों ने इन सब बातों को नजरअंदाज कर दिया और ऐसा व्यवहार किया जैसे यह सब बिल्कुल सामान्य हो, लेकिन डिकी को लगा कि लगातार हो रही इन विचित्र रुकावटों के कारण वह अपने स्वादिष्ट भोजन का आनंद नहीं ले पा रहा है।

खाना खत्म हुआ और डिकी को कॉफी के लिए उसकी खास सीट पर वापस ले जाया गया। सीधे लॉकर के दूसरी तरफ, उसकी नज़र से छिपाकर, डेस प्लंकेट और एक अर्दली, प्राइवेट रयान, बर्तन धो रहे थे। हालांकि, उस रात प्राइवेट रयान नहीं, बल्कि फ्लाइट लेफ्टिनेंट 'फनफ' वॉटसन, अर्दली की नकल करते हुए, कॉकनी लहजे में बात कर रहे थे। मिल्ने के कोने में आराम से बैठे होने पर, वॉटसन ने बातूनी गपशप करने वाले की भूमिका निभाना शुरू कर दिया।

‘और एक और बात जो मैंने सुनी है,’ उसने डेस को कुछ अटपटी अफवाहें सुनाने के बाद आगे कहा, ‘वह नए युवा विंग कमांडर मिल्ने के बारे में है। आप जानते हैं कि मेरा मतलब किससे है, महोदय। जिसका चेहरा बच्चे के नितंब जैसा है...’

'चुप रहो, रयान,' डेस ने जोर से फुफकारते हुए कहा, मानो नाटक कर रहा हो।

'जी नहीं, सचमुच, महोदय,' वॉटसन ने आगे कहा, 'आपको यह बहुत पसंद आएगा।'

इस पूरे समय डिकी कोने में, गपशप करने वालों की नज़रों से दूर बैठा रहा। वह उस अपमानजनक अफवाह को सुनने की तीव्र इच्छा और अपने मेज़बानों से बातचीत जारी रखने के दिखावे के बीच उलझा हुआ था, जबकि वह अफवाह कभी फैली ही नहीं। कुल मिलाकर, मिल्ने ने अपना संयम बखूबी बनाए रखा और शाम के उस उन्मादी माहौल का भरपूर आनंद उठाया।

*

जून की शुरुआत में, शिविर के दक्षिण में एक नए परिसर का निर्माण शुरू हुआ। कुछ हफ़्ते बाद, एक मामूली गुंडे के ज़रिए खबर आई कि यह नया परिसर अमेरिकियों के लिए बनाया जा रहा है, जिन्हें जल्द से जल्द वहाँ स्थानांतरित कर दिया जाएगा। इससे रॉजर के सामने एक दुविधा खड़ी हो गई।

उन्होंने जॉनी बुल से कहा, 'कई अमेरिकियों ने इन सुरंगों को बनाने में कड़ी मेहनत की है। अगर सब कुछ तैयार होने से पहले ही उन्हें निकाल दिया गया तो यह बेहद शर्मनाक होगा। मुझे लगता है कि हम काम में थोड़ी तेजी लाने की कोशिश करेंगे।'

‘ठीक है, रॉजर, बशर्ते सुरक्षा व्यवस्था बरकरार रहे,’ जॉनी ने आगाह करते हुए कहा। ‘अगर कोई मूर्ख जल्दबाजी में सब कुछ बिगाड़ दे तो हालात कहीं ज्यादा खराब हो जाएंगे।’

“बिल्कुल, लेकिन मुझे लगता है कि इसे बिना कोई जोखिम उठाए किया जा सकता है। अभी टॉम सबसे आगे है। क्या होगा अगर हम डिक और हैरी को अलग कर दें और चुने हुए खुदाई करने वालों की टीमों के साथ टॉम पर ध्यान केंद्रित करें? इस तरह शिविर में कोई गतिविधि नहीं होगी और हमारे सबसे अच्छे लोग काम करेंगे। सुरक्षा को कोई नुकसान नहीं होना चाहिए।”

जॉनी ने सिर हिलाया, और रोजर आगे बोला, 'वॉली से कहो कि सुरंग समिति को इकट्ठा करे

और हम उनसे इस बारे में चर्चा करेंगे। अगर किसी को कोई बड़ी आपत्ति नहीं है, तो हम आगे बढ़ेंगे।'

फ्लॉडी, कैंटन, मार्शल और अन्य लोगों के साथ इस विचार पर विस्तार से चर्चा की गई और वे सभी आपत्तियों को दूर करने में सफल रहे। इस प्रकार, अगले कुछ दिनों में डिक और हैरी को सील कर दिया गया और अनुभवी खुदाई टीमों की एक सूची तैयार की गई। टीमों में हेनरी लैमंड, डैनी क्रोल, कुकी लॉन्ग और शैग रीस जैसे अनुभवी सुरंग खोदने वाले शामिल थे, साथ ही कुछ अमेरिकी भी थे ताकि वे अपने नए घर में कुछ अनुभव लेकर जा सकें।

टॉम की ओर संसाधनों का रुख मोड़ने के साथ ही सुरंग का निर्माण तेज़ी से आगे बढ़ा। जब यह चेतावनी तार तक पहुँची, तो वहाँ एक 10 फीट लंबा और सुरंग के बाकी हिस्से से 6 इंच ऊँचा और चौड़ा एक मध्यवर्ती आश्रय बनाया गया। इस आश्रय में रेल की पटरियाँ नहीं थीं, लेकिन दो अतिरिक्त मज़दूरों को वहाँ तैनात किया गया था ताकि वे सुरंग के मुहाने और शाफ्ट के बीच लोगों और सामान को ला-ले जा सकें। इस अतिरिक्त सुविधा के कारण अब खुदाई करने वालों को अपनी स्थिति बदलने के लिए शाफ्ट तक वापस नहीं जाना पड़ता था।

एक और सुझाव, जिसे मंज़ूरी नहीं मिली, यह था कि सुरंग को ऊपर की ओर झुकाकर बनाया जाए, जिससे निकास शाफ्ट के लिए खुदाई की दूरी कम हो जाए। दोनों पक्षों के बीच तीखी बहस हुई, लेकिन अंततः इस विचार को अत्यधिक जोखिम भरा बताकर खारिज कर दिया गया। सभी आवश्यक सावधानियां बरती जा सकती थीं, लेकिन हमेशा यह संभावना बनी रहती थी कि कोई रस्सी छोड़ दे और कोई गाड़ी सुरंग में लुढ़क जाए। ऐसी स्थिति में, इससे रास्ते भर लगे सहारे के ढांचे उखड़ सकते थे और सुरंग का तीस-चालीस फीट हिस्सा ढह सकता था।

प्रगति को देखते हुए, परिसर ने 4 जुलाई मनाने के लिए एक उचित विश्राम लिया। सुबह, एपेल ने दिन का मिजाज तय कर दिया जब दो अमेरिकी पोलिश अधिकारियों द्वारा बनाए गए घोड़े के सूट में परेड ग्राउंड पर दिखाई दिए। घोड़ा सबसे आगे की पंक्ति में खड़ा हो गया और जैसे ही पीबर गिनती कर रहा था, सूट के आगे वाले व्यक्ति ने पीबर की गिनती के साथ अपना सिर हिलाया। ऑस्ट्रियाई भी अपनी हंसी नहीं रोक सका। शाम को, एपेल, भरपूर घर की बनी शराब पीने के बाद, एक और अमेरिकी परेड ग्राउंड पर बिल्कुल नग्न अवस्था में दिखाई दिया, लेकिन एक गार्ड ने उसे तुरंत भगा दिया। विंग्स डे और जॉनी डॉज, आग के कुंड में फेंके जाने के बाद पूरी तरह भीगे हुए और शराब के नशे में लड़खड़ाते हुए, अपनी धुंधली आँखों से उस अपराधी को पहचानने की कोशिश कर रहे थे। वे ऐसा नहीं कर पाए।

जैसे-जैसे काम की रफ़्तार बढ़ी, शायद गलतियाँ होना लाज़मी था। शाम की शिफ्ट में भी खुदाई का काम चल रहा था, इसलिए कर्मचारियों का निकलना पहले की तुलना में थोड़ा कम सुचारू रूप से हो रहा था, और किसी न किसी से गलती होना तय था। वॉलीबॉल खेल रहे लोगों के बीच खड़े एक पेंगुइन ने अपना मल त्याग दिया, और इससे पहले कि कोई उसे उछाल पाता, ग्लेम्निट्ज़ ने पीली रेत देख ली। कुछ बगीचों में रेत मिलने के साथ-साथ इस घटना ने गुंडों को आश्वस्त कर दिया कि कुछ गड़बड़ है। अगले कुछ दिनों तक कुछ खास नहीं हुआ। ग्लेम्निट्ज़ और रबरनेक ने कुछ और बगीचों की छानबीन की और उन्हें और पीली रेत मिली, लेकिन कोई व्यापक तलाशी नहीं हुई। तभी किसी ने एक टावर गार्ड को दूरबीन से परिसर का निरीक्षण करते हुए देखा, जो स्पष्ट रूप से शिविर में लोगों की आवाजाही का पता लगाने की कोशिश कर रहा था। यह सुनकर बुशेल ने तुरंत कर्मचारियों के निकलने के समय हट 123 में आने-जाने पर प्रतिबंध लगा दिया।

आखिरकार वो आ ही गया। गुंडों का एक दल परिसर में घुस आया और शिविर के पश्चिमी हिस्से में बनी झोपड़ियों की तलाशी लेने लगा। पहले दिन उन्होंने झोपड़ी संख्या 106 और 107 की पूरी छानबीन की, जिससे इंजीनियरों को झोपड़ी संख्या 123 की तलाशी से पहले टॉम को पूरी तरह से सील करने का पर्याप्त समय मिल गया। अगले दिन रबरनेक और उसके नेवलों ने झोपड़ी संख्या 123 की पाँच घंटे तक छानबीन की, लेकिन उन्हें कुछ नहीं मिला। रबरनेक बहुत

निराश था। एक दिन बाद, दो छोटे बच्चों (लिटिल एस) को अपनी झोपड़ियों में नेवले छिपे हुए मिले, और तीन दिन बाद रोजर को लगा कि टॉम पर दोबारा काम शुरू करना सुरक्षित है। उस दिन उन्होंने रिकॉर्ड दस फीट तक खुदाई की, लेकिन केवल तीन-चौथाई रेत ही हटा पाए। हालात अभी भी इतने गर्म थे कि और काम करना संभव नहीं था।

शतरंज का खेल जारी रहा। जंगल में झाड़ियों के ढेर के पीछे से नेवले शिविर की जासूसी करते हुए देखे गए, और फिर गुंडों ने रात 2:00 बजे झोपड़ी 101 की अचानक तलाशी लेने की कोशिश की। सौभाग्य से, एक्स संगठन ने रात में खुदाई करने से परहेज किया क्योंकि बार्थ में इसी तरह की तलाशी में वे पकड़े गए थे। बाद में ग्लेम्निट्ज़ को 119 के बगल वाले बगीचों में और रेत मिली। वह जल्दी से परिसर छोड़कर पूरी ताकत के साथ वापस आया। सौ सैनिकों और एक स्थानीय क्रिपो अधिकारी के साथ, उसने 106, 107 और 123 से सभी को बाहर निकाल दिया और उनकी पूरी तरह से तलाशी ली। फिर, उसने अपने आदमियों को 123 और तार के बीच चार फुट गहरी खाई खोदने का काम सौंपा। जब यह काम पूरा हो गया, तो लंबी धातु की नलियों वाले नेवलों के एक झुंड को छोड़ दिया गया, जो सुरंग की छत खोजने की उम्मीद में खाई के तल में कुरेद रहे थे। यह जानते हुए कि उन्हें अभी बीस फुट और खोदना है, रोजर और अन्य साजिशकर्ता मजे से देख रहे थे। आखिरकार, गुंडों में से एक को कुछ मिला और उसने जीत की खुशी में चीख मारी। पलक झपकते ही वे फावड़े लेकर काम पर लौट आए, और जमकर खुदाई करने लगे, पसीना बहाते हुए। जब उन्होंने शर्मिंदा होकर खाई से एक बड़ा पत्थर निकाला, तो कैंटन हंसते-हंसते लोटपोट हो गया।

हालांकि उस समय उन्हें कुछ नहीं मिला, लेकिन यह स्पष्ट था कि गुंडे दबाव बनाए रखेंगे। इसे ध्यान में रखते हुए, एक्स संगठन के शीर्ष अधिकारियों के सामने एक दुविधा खड़ी हो गई। टॉम योजनाबद्ध लंबाई से केवल पचास फीट दूर था, लेकिन दो बड़ी बाधाओं के कारण काम रुका हुआ था: जाल एक सपाट कंक्रीट के फर्श पर लगाया गया था, जिससे वह बहुत अधिक असुरक्षित हो गया था; और, चूंकि झोपड़ी के दोनों दरवाजे पहरेदार टावरों की नज़र में थे, इसलिए पेंगुइनों के निकलने का रास्ता सुरक्षा के लिहाज़ से गंभीर समस्या पैदा कर रहा था। इसके अलावा, यह स्पष्ट था कि गुंडों का ध्यान अब परिसर के पश्चिमी हिस्से में स्थित झोपड़ियों पर केंद्रित था। सामान्य नीति के अनुसार, स्थिति सुधरने तक ऑपरेशन को रोक देना चाहिए था, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं था कि जर्मन तब तक खोज जारी रखेंगे जब तक उन्हें कुछ मिल न जाए, चाहे काम चल रहा हो या नहीं। लंबी चर्चा के बाद जोखिमों को स्वीकार करते हुए टॉम के साथ आगे बढ़ने का निर्णय लिया गया।

जैसा कि उम्मीद थी, नेवलों ने अपनी शरारतें जारी रखीं। एक दिन किसी ने ग्लेम्निट्ज़ को एक झोपड़ी के नीचे छिपा हुआ देखा, इसलिए एक वरिष्ठ विंग कमांडर को उसे चाय पर बुलाने के लिए भेजा गया। गंदा और शर्मिंदा सा ग्लेम्निट्ज़ प्रकट हुआ और चुपके से वोरलागर की ओर चला गया। एक अन्य अवसर पर, ड्यूटी पर तैनात पायलट ने देखा कि रबरनेक को परिसर में तो प्रवेश करने के लिए चिह्नित किया गया था, लेकिन बाहर जाने के लिए चिह्नित नहीं किया गया था। तलाशी अभियान चलाया गया और वह रसोई ब्लॉक में एक खिड़की से बाहर झांकता हुआ मिला। उससे आमना-सामना करने के बजाय, रॉजर ने आदेश दिया कि ब्लॉक की सभी खिड़कियों को बाहर से बंद कर दिया जाए। कुछ ही मिनटों में, रबरनेक अपने चेहरे पर एक दुष्ट भाव लिए परिसर से चुपके से निकल गया।

जैसे-जैसे टॉम आगे बढ़ता गया (अब बिजली का तार खत्म हो जाने के कारण वह चर्बी और पजामे की डोरी से बने लैंप का इस्तेमाल कर रहा था), खेल जारी रहा। परिसर के बाकी पेड़ काट दिए गए, जिससे भागने वालों के लिए उपयोगी छलावरण का काम रुक गया और कई फैलाव क्षेत्रों को बंद करना पड़ा। टॉम के लिए एक और बीच का घर बनाया गया, जो अब जंगल के किनारे तक पहुँच गया था और नियोजित निकास बिंदु से मात्र बीस फीट दूर था। फिर, कामगार दल तार के बाहर जंगल को काटने लगे, और एक्स संगठन के नेता उदास होकर देखते रहे

क्योंकि सोवियत कैदियों ने तीन दिनों में तीस गज की दूरी तय कर ली थी। यह महज़ संयोग था कि उस क्षेत्र को एक और परिसर के लिए चुना गया था, लेकिन इसका मतलब यह हुआ कि टॉम को अब सौ फीट और चलना था। स्पष्ट रूप से, अतिरिक्त रेत से निपटने के लिए एक नई फैलाव प्रणाली की आवश्यकता होगी।

सबसे पहले, फैंसहावे ने ऑपरेशन में थोड़ा बदलाव किया। पहले, प्रत्येक पेंगुइन न केवल रेत का अपना भार पहुंचाने के लिए बल्कि उसे छिपाने के लिए भी जिम्मेदार था। अब से, प्रत्येक पेंगुइन को एक निर्धारित क्षेत्र दिया जाएगा, और रेत को छिपाने का काम एक वितरण अधिकारी को सौंपा जाएगा। इस विधि से पेंगुइनों की आवाजाही में कमी आई और अधिक वितरण क्षेत्रों का उपयोग संभव हो सका। इससे रेत को अधिक सावधानी से छिपाना भी संभव हो गया। फिर किसी ने सुझाव दिया कि रेत को उन हजारों रेड क्रॉस बक्सों में संग्रहित किया जाए जो लोगों के पलंगों के नीचे रखे थे। वे पांच दिनों तक इस तरीके से काम चलाते रहे; फिर ग्लेम्निट्ज़ ने देखा कि 123 नंबर के कमरे से असामान्य रूप से अधिक लोग आ रहे हैं। कुछ दिनों बाद उन्हें 103 नंबर के कमरे में रेत से भरे दर्जनों बक्से मिले। उन्होंने सुरंगों को ढहाने की उम्मीद में परिसर के चारों ओर घुमाने के लिए कुछ भारी गाड़ियां मंगवाईं, लेकिन वे केवल कुछ बगीचों को ही नुकसान पहुंचा पाए।

अब तक टॉम 260 फीट की दूरी पर पहुँच चुका था। जंगल से अभी भी चालीस फीट की दूरी थी, लेकिन जंगल से बाहर निकलने के रास्ते से इतनी दूरी तक रेंगना सुरक्षित माना गया। इसे ध्यान में रखते हुए, रॉजर ने टॉम को घेर लिया और हालात शांत होने के बाद उसे पूरा करने की योजना बनाई। गुंडों का ध्यान भटकाने के लिए, बुशेल ने कुछ युद्धबंदियों को इकट्ठा किया और उनसे रेड क्रॉस के खाली बक्से उठवाए। ग्लेम्निट्ज़ को लगा कि कुछ गड़बड़ है और उसने 119 नंबर की जगह की तलाशी ली, लेकिन कुछ नहीं मिला। उसी समय, कुछ युद्धबंदियों ने ग्लेम्निट्ज़ को चिढ़ाने के लिए यह अफवाह फैला दी कि यह सब एक मज़ाक था।

सौभाग्य से, कैदियों को बीच-बीच में मनोरंजन के अवसर मिलते रहते थे। अगस्त में खबर आई कि विली विलियम्स को डीएफसी से सम्मानित किया गया है, जिसे धूमधाम से मनाया गया। अगले महीने शिविर का ध्यान नए रंगमंच के उद्घाटन की ओर आकर्षित हुआ, जिसे कैदियों ने स्वयं डिजाइन और निर्मित किया था। भव्य उद्घाटन समारोह में जेराल्ड सैवरी के नाटक 'जॉर्ज एंड मार्गरेट' का मंचन किया गया, जिसमें रोजर बुशेल ने अभिनय किया था।

सितंबर में ईस्ट कंपाउंड में हुई सफ़ाई के दौरान एक छोटा समूह भी वहाँ आया। जॉन स्टीवंस और पायलट अधिकारी बर्नार्ड ग्रीन भी उस समूह में थे। 'पॉप' के नाम से मशहूर पॉप ग्रीन कद में छोटे और हट्टे-कट्टे थे, उनकी मुस्कान सौम्य थी और सिर पर बाल कम होते जा रहे थे। सत्तावन साल की उम्र में वे किसी जेल शिविर के बजाय पुस्तकालय की डेस्क पर बैठने के लिए ज़्यादा उपयुक्त लगते थे। अपनी शक्ल-सूरत के बावजूद, पॉप ग्रीन एक साहसी और दृढ़ निश्चयी व्यक्ति थे। प्रथम विश्व युद्ध में मिलिट्री क्रॉस से सम्मानित पॉप 1940 में आरएएफ में शामिल हुए, जब वहाँ 54 साल तक की उम्र के अनुभवी एयर गनर भर्ती किए जा रहे थे। 19 जुलाई, 1940 को उनका पहला ऑपरेशन ही उनका आखिरी ऑपरेशन भी था। बारूदी सुरंगें बिछाते समय एंटी-एयरक्राफ्ट गन की चपेट में आने से हैम्पडेन विमान धीरे-धीरे नीचे गिरने लगा और डेनमार्क के तट पर समुद्र में गिरकर दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिसमें चालक दल के दो सदस्य मारे गए।

इयान क्रॉस भी ईस्ट कंपाउंड से आया और आते ही उसने अपनी मौजूदगी का एहसास करा दिया। गुंडों को चिढ़ाने में माहिर, वह जल्द ही रबरनेक के साथ मुसीबत में पड़ गया क्योंकि उसने तार के पार सोवियत मजदूरों के एक समूह को सिगरेट फेंकी थी। जब दो गार्ड उसे जेल ले जा रहे थे, तो वह चिल्लाया, 'मैं चुपचाप नहीं बैठूंगा जबकि दुनिया की सबसे बेहतरीन लड़ाकू सेना के साथ ऐसा बर्ताव किया जा रहा है!'

शुद्धिकरण के कुछ ही समय बाद, ब्रायन इवांस को एनसीओ परिसर में सार्जेंट पायलट रिचर्ड हचिंसन से मिलने की अनुमति मिल गई, जो उनकी मंगेतर जोन कुक के चचेरे भाई थे। यह

मुलाकात दोनों के लिए सुखद रही और घर के जीवन की कई यादें ताजा कर दीं। उनका साथ थोड़े समय के लिए ही बीता, लेकिन उन्होंने युद्ध के बाद मिलने का वादा किया। हालांकि, हचिंसन युद्ध का अंत नहीं देख पाए; 1945 के जबरन मार्चों में से एक के दौरान उनकी मृत्यु हो गई।

*

टॉम किर्बी-ग्रीन के दल में पतझड़ के मौसम में एक नया सदस्य भी शामिल हुआ। सितंबर में न्यूजीलैंड स्क्वाड्रन लीडर लेन ट्रेंट ने हट 104 में महत्वपूर्ण जिम्मेदारी संभाली। कुछ महीनों तक पेंगुइन के रूप में काम करने के बाद, लेन संगठन में और अधिक भूमिका निभाने के लिए उत्सुक थे, और हट 104 की सुरक्षा की जिम्मेदारी उनके लिए एकदम उपयुक्त थी।

लियोनार्ड हेनरी ट्रेंट 1937 में जब आरएएफ में शामिल हुए तब उनकी उम्र बाईस वर्ष थी और अपने पूरे सैन्य करियर के दौरान, उन्हें हमेशा कठिन मिशन ही मिलते रहे। मई 1940 में उन्होंने मास्ट्रिच के पुलों पर हुए विनाशकारी हमले में ब्लेंहेम विमानों में से एक को उड़ाया, और अपने दूसरे दौरे की पहली यात्रा में, लेन को एक और कठिन मिशन मिला: नीदरलैंड के आइंडहोवेन शहर में स्थित फिलिप्स फैक्ट्री। इस हमले में भी भारी जानमाल का नुकसान हुआ और ट्रेंट की 487 (न्यूजीलैंड) स्क्वाड्रन को भारी क्षति पहुंची; लेकिन फिर भी, लेन भाग्यशाली रहे और सुरक्षित घर लौट आए।

शायद ट्रेंट के लिए तीसरी बार दुर्भाग्य ही था, क्योंकि 3 मई, 1943 को उन्होंने एक और कठिन मिशन का नेतृत्व किया, जिसमें एम्स्टर्डम के बाहरी इलाके में स्थित एक पावर स्टेशन पर बारह लॉकहीड वेंटुरा विमानों द्वारा हमला किया गया। घटनाएँ न्यूजीलैंडवासियों के लिए प्रतिकूल थीं, क्योंकि उसी दिन हॉलैंड के नाज़ी गवर्नर की हारलेम की राजकीय यात्रा थी और शिफोल हवाई अड्डे पर शीर्ष लूफ़्टवाफ़े लड़ाकू पायलटों की बैठक थी। इसके अलावा, जर्मनों का ध्यान एम्स्टर्डम से हटाने के लिए डिज़ाइन किया गया एक भटकाने वाला लड़ाकू विमान समय से पहले ही पहुँच गया, जिससे जब वेंटुरा विमान तंग गठन में तट के पास पहुँचे, तो लूफ़्टवाफ़े के सर्वश्रेष्ठ विमान पहले से ही उड़ान भर कर उनका इंतज़ार कर रहे थे।

जर्मन पायलट वेंटुरा विमानों और उनके लड़ाकू विमानों के कवर के बीच से निकल गए और उन्हें भरपूर फायदा मिला। पहले चार मिनट में ही छह बमवर्षक विमान मार गिराए गए, और जब तक लक्ष्य क्षेत्र तक पहुंचा गया, तब तक केवल दो वेंटुरा विमान - लेन और उनके साथी के - ही हवा में बचे थे। जल्द ही दूसरा विमान भी गायब हो गया, जिससे लेन अकेले ही लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए रह गए। अपने इंस्ट्रूमेंट पैनल पर लगातार ध्यान केंद्रित करते हुए, ट्रेंट ने हमला जारी रखा और बम गिरा दिए। वह विमान का अगला हिस्सा नीचे करके कम ऊंचाई पर घर लौटने ही वाले थे कि एक जोरदार धमाके ने विमान को हिला दिया। नियंत्रण ठप हो जाने पर, लेन ने चालक दल को पैराशूट से कूदने का आदेश दिया और खुद भी संघर्ष करते हुए कॉकपिट से बाहर निकल आए। नेविगेटर सबसे पहले पैराशूट से कूद गया था, और जब दोनों को पकड़ लिया गया तो लेन उसे देखकर खुश हुए; बाकी चालक दल के सदस्य मारे गए। मेथवोल्ड में 487 के बेस पर वापस, स्क्वाड्रन शोक में डूबा हुआ था। एक वेंटुरा विमान यांत्रिक खराबी के कारण समय से पहले ही वापस लौट गया था और दूसरा बुरी तरह क्षतिग्रस्त होकर लड़खड़ाते हुए घर लौटा। दुश्मन के तट को पार करने वाले ग्यारह विमानों में से दस लापता थे।

*

कुछ समय बाद, लेन ट्रेंट सागन पहुँच गया, जहाँ उसे और बाकी लिटिल एस को गुंडों के लगातार दबाव के बीच सतर्क रहना पड़ा। ग्लेम्निट्ज़ ने 8 सितंबर को एक और दिन खोजबीन करने का फैसला किया था, जिसमें उसका ध्यान 104 और 105 नंबर सुरंगों पर केंद्रित होना था, लेकिन

आखिरी समय में उसने अपना इरादा बदल दिया और 123 नंबर सुरंग को चुना। अगर इस बार भी कुछ नहीं मिला, तो वह हार मान लेगा। ऐसा लग रहा था मानो सदियों से, नेवले 123 नंबर सुरंग में खोजबीन करते रहे, जबकि रॉजर और सुरंग समिति के सदस्य यथासंभव उदासीनता से देखते रहे। दोपहर ढलने के बाद ही नेवले झोपड़ी से बाहर निकलने लगे, और बिग एक्स राहत की सांस लेने ही वाला था कि उसने 123 नंबर सुरंग के अंदर से एक चीख सुनी। टॉम का जाल आखिरकार मिल गया था।

बाद में पता चला कि फेरेट झोपड़ी से बाहर निकल रहे थे, तभी उनमें से एक से उसका धातु का नुकीला औजार गिर गया। दुर्भाग्यवश, वह औजार टॉम के पिंजरे के कोने पर गिरा और सीमेंट से बने आवरण का एक टुकड़ा हटा दिया। घुटनों के बल नीचे झुककर, फेरेट ने टॉर्च जलाई और पिंजरे के दरवाजे की धुंधली सी आकृति देखी। टॉम का प्रवेश द्वार हमेशा से सबसे जोखिम भरा था क्योंकि वह एक सपाट फर्श में धंसा हुआ था, लेकिन यह जानकर बहुत दुख हुआ कि वह पूरी तरह से संयोग से मिला।

हालांकि, सैगन में कोई भी टॉम के आखिरी बदले को कभी नहीं भूलेगा। सुरंग को उड़ाने के लिए एक जर्मन इंजीनियर को बुलाया गया था, लेकिन वह स्पष्ट रूप से विध्वंस के मामले में नौसिखिया था। विस्फोट की गड़गड़ाहट सुरंग में गूंजी और हट 123 को उसकी नींव से उखाड़ दिया, जिससे वह एक अजीब कोण पर लटक गई। फिर भी, इकट्ठा हुए कैदियों की जयकार ने भागने वाले कर्मचारियों की निराशा को कम करने में कोई खास मदद नहीं की।

टॉम का पता तो चल गया था, लेकिन फिर भी एक्स ऑर्गनाइज़ेशन के लिए यह एक उल्लेखनीय सफलता थी। पच्चीस फीट गहरा और 260 फीट लंबा टॉम, क्रिगीज़ द्वारा बनाए गए सबसे बड़े सुरंगों में से एक था और पूरी तरह से मजबूत बनाया गया था, जिसमें वेंटिलेशन, बिजली और रेलगाड़ियों जैसी सभी सुविधाएं मौजूद थीं। इससे भी अधिक अविश्वसनीय बात यह थी कि पेंगुइनों द्वारा कितनी रेत बिखेरी गई थी। सुरंग के प्रत्येक साढ़े तीन फीट से लगभग एक टन रेत निकली। इसलिए, झरनों और बीच में बने आश्रयों को ध्यान में रखते हुए और यह मानते हुए कि प्रत्येक सुरंग के शाफ्ट और कक्षों से बारह टन रेत निकली, श्रमिकों ने अप्रैल और सितंबर 1943 के बीच कम से कम 165 टन रेत का निपटान किया। उस अवधि के दौरान, रेत बिखेरने की रिकॉर्ड दर एक घंटे में डेढ़ टन थी। किसी भी मानदंड से, टॉम एक अविश्वसनीय उपलब्धि थी।

*

टॉम के मिलने के बाद के हफ्तों में, कई अन्य बड़ी घटनाओं ने पूरे जर्मन युद्धबंदी शिविर तंत्र को हिलाकर रख दिया। 18 सितंबर को, 132 फ्रांसीसी अधिकारी ओफ्लैग XVIIA में एक सुरंग के रास्ते भाग निकले, और अगली रात, 47 पोलिश अधिकारियों ने डॉसेल के एक शिविर से सुरंग तोड़कर भागने में सफलता प्राप्त की। भागने से संबंधित बढ़ती गड़बड़ियों से निपटने के लिए, जर्मनों ने इस व्यवस्था में अधिक से अधिक लोगों को शामिल किया। 1943 के अंत तक यह अनुमान लगाया गया था कि 400,000 से अधिक लोग सीधे युद्धबंदियों की निगरानी में लगे हुए थे, जबकि बड़े पैमाने पर भागने की स्थिति से निपटने के लिए 100,000 और लोगों को जुटाया जा सकता था। जर्मन दृष्टिकोण से, समस्या स्पष्ट रूप से नियंत्रण से बाहर होती जा रही थी।

हिमलर के सुरक्षा मुख्यालय, आरएसए ने सारा दोष सैन्य अधिकारियों पर मढ़ते हुए कहा कि वे भागने वालों को रोकने के लिए पर्याप्त कदम नहीं उठा रहे थे। हिमलर ने सलाह दी कि शिविरों को पुलिस के हवाले कर दिया जाए, ताकि भागने वालों के साथ सख्ती से निपटा जा सके। यह बात सेना को साफ तौर पर मंज़ूर नहीं थी, लेकिन शिविरों की आंतरिक सुरक्षा में स्थानीय पुलिस अधिकारियों की भागीदारी बढ़ाने के लिए कदम उठाए गए। उसी समय, एक और बड़ा बदलाव आया जब आरएसए ने वर्दीधारी पुलिस, ओर्पो को अपने में मिला लिया और अंततः स्थानीय

क्रिपो कार्यालयों पर पूर्ण नियंत्रण हासिल कर लिया। इसके साथ ही, भागने वाले युद्धबंदियों को दोबारा पकड़ने में सबसे ज़्यादा शामिल दो सेवाएं हिमलर और आरएसए के सीधे नियंत्रण में आ गईं। लुफ़्ट III के कैदियों को इस बात का एहसास नहीं था कि भागना अचानक एक बहुत ही खतरनाक खेल बन गया था।

अध्याय 12

X संगठन का पुनर्गठन

टॉम की खोज के बाद, एक्स संगठन का तात्कालिक लक्ष्य पुनर्गठित होना था। टॉम की जांच के दौरान, किसी ने ग्लेम्निट्ज़ को यह कहते हुए सुना कि उसे संदेह है कि कोई और सुरंग होगी क्योंकि उपलब्ध सारी लकड़ी का इस्तेमाल हो चुका होगा। रॉजर ने तुरंत दो हज़ार पलंगों का एक बड़ा जत्था मंगवाया, जिससे प्रत्येक पलंग पर औसतन पाँच या छह चार इंच की पट्टियाँ रह गईं। इन पट्टियों को दीवारों के पीछे और डिक के नीचे छिपा दिया गया। इस तरह, एक बार जब ग्लेम्निट्ज़ पलंगों की संख्या पर नज़र रखना शुरू कर देगा, तो आगे कोई और गायब होने की घटना नहीं होगी।

सितंबर के पहले सप्ताह के अंत में अमेरिकी सैनिक नवनिर्मित दक्षिणी शिविर के लिए रवाना हो गए, हालांकि आरएएफ या आरसीएएफ में सेवारत सैनिक उत्तरी शिविर में ही रहे। उनके साथ ग्लेम्निट्ज़ भी गया, और भागने की योजना बनाने वाले लोग उसके जाने से खुश थे। सितंबर में ही, इटली के शिविरों से युद्धबंदियों का एक दल पहुंचा। उनकी यात्रा बेहद कठिन रही थी, उन्हें मालगाड़ियों में ठूंस-ठूंस कर भरा गया था, बहुत कम भोजन और पानी था और कोई स्वच्छता सुविधा नहीं थी। यात्रा के कुछ सुखद पलों में से एक म्यूनिख के पास मूसबर्ग के विशाल स्टैलाग में उनका संक्षिप्त ठहराव था। वहां युद्धबंदियों ने साफ-सफाई की और काफी समय बाद अपना पहला ठीक-ठाक भोजन किया, और शिविर से निकलते समय सोवियत कैदियों के एक सामूहिक समूह ने उनका स्वागत किया। नूर्नबर्ग में वायुसैनिकों को उनके सेना साथियों से अलग कर दिया गया और सागन भेज दिया गया।

नए थिएटर ने सैनिकों का ध्यान भटकाने में भी मदद की। 'बिटवीन अवरसेल्व्स' नामक एक नाटक में कई कलाकार शामिल थे, जिनमें कनाडाई जिमी वर्नहम भी थे। फ्रेड एस्टेयर और जिंजर रोजर्स अभिनीत 'शैल वी डांस' जैसी पहली अंग्रेजी फिल्में भी सैगन थिएटर में दिखाई गईं। उसी समय, खेल प्रेमी मौसम खराब होने से पहले और भी मैच खेलने की कोशिश कर रहे थे। लुफ्ट III में कुछ बहुत ही कुशल क्रिकेटर और फुटबॉल खिलाड़ी थे, और समय-समय पर ट्रैक एंड फील्ड प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती थीं। कुछ लोगों के लिए, ये 'मिनी-ओलंपिक' युद्ध-पूर्व वर्षों की आरएएफ एथलेटिक चैंपियनशिप की याद दिलाते थे, जब कई सैनिक पहली बार खेल के मैदान में मिले थे। टॉम किर्बी-ग्रीन और इयान क्रॉस को 1938 की चैंपियनशिप की याद थी, जब टॉम ने मिल्डेनहॉल और इयान ने मरहम के लिए प्रतिस्पर्धा की थी।

सितंबर की एक ठंडी रात में, टॉम की मौत के बाद एक न्यूज़ीलैंडवासी और एक कनाडाई नागरिक ने भागने की पहली कोशिश की। उन्होंने एपेल ग्राउंड के दूसरी तरफ की बाड़ काटने का फैसला किया, जहाँ गुंडों को भागने की कोशिश की उम्मीद भी नहीं थी। खुले मैदान में 250 गज की दूरी रेंगकर तय करने में उन्हें सात घंटे लगे, लेकिन तार तोड़ते हुए वे पकड़े गए और उन्हें जेल में डाल दिया गया। दुर्भाग्य से, कनाडाई नागरिक को बंद जगहों से डर लगता था, और कुछ दिनों तक अकेले कारावास में रहने के बाद, आखिरकार उसका सब्र टूट गया और वह सिर्फ अपने पजामे में दरवाजे की ओर भागा। एक गार्ड ने गोली चलाई, जिससे एयरमैन के कंधे में चोट आई; उसे अस्पताल से छुट्टी मिलने और परिसर में लौटने में कई महीने लग गए।

*

टॉम की मौत के कुछ समय बाद ही हैरी और डिक पर काम फिर से शुरू हुआ, लेकिन 15 सितंबर को फिर से रुक गया। गुंडे अभी भी सतर्क थे, इसलिए रेत फैलाना बेहद खतरनाक था। इसलिए रोजर बुशेल ने श्रमिकों को आराम देने और मामले को शांत होने देने के लिए हैरी को कुछ महीनों के लिए सीलबंद छोड़ने का फैसला किया। इस बीच, सारा ध्यान बचाव उपकरण बनाने पर केंद्रित किया गया।

डिप्थीरिया के हल्के प्रकोप से उबर रहे अल हाके ने ब्लॉक 103 के उत्तरी छोर पर स्थित अपने कमरे में कंपास बनाने का कारखाना स्थापित कर लिया था। यह स्थान श्रमिकों को जूँ मारने वाली पार्टी के भागने का प्रत्यक्ष दृश्य देखने का अवसर प्रदान करता था। अपने रूममेट्स के साथ, इस शांत स्वभाव वाले छोटे ऑस्ट्रेलियाई ने एक मॉडल असेंबली लाइन चलाई, जिसमें सैकड़ों कंपास तैयार किए जाते थे। प्रत्येक कंपास पूरी तरह से जलरोधी था और उस पर नीचे की ओर उसके निर्माण स्थल का नाम गर्व से अंकित था।

प्रत्येक कंपास की शुरुआत बैकेलाइट फोनोग्राफ रिकॉर्ड के एक टुकड़े से हुई। रिकॉर्ड को लगभग 3 इंच व्यास के छोटे-छोटे टुकड़ों में तोड़ा गया और फिर उन्हें मोमबत्ती पर तब तक गर्म किया गया जब तक वे नरम न हो गए। इसके बाद बैकेलाइट को एक तख्ते में बने 1¼ इंच के छेद पर रखा गया और लकड़ी की कील से छेद में धकेल दिया गया। छेद के निचले हिस्से में लगी धातु की डिस्क पर 'मेड इन स्टालैग लुफ्ट III - पेटेंट लंबित' का शिलालेख साफ-सुथरे ढंग से उकेरा गया।

चुम्बकों के लिए, एक्स ऑर्गनाइज़ेशन की खरीद टीम ने रेज़र ब्लेड इकट्ठा किए, जिन्हें (दूध पाउडर से बने गोंद का उपयोग करके) एक बेडबोर्ड पर दो पंक्तियों में चिपकाया गया। फिर एक कर्मचारी ने पूरी दोपहर खरीद टीम द्वारा जुटाए गए घोड़े की नाल के आकार के चुम्बक को ब्लेड की पंक्तियों पर घुमाने में बिताई, यह सुनिश्चित करते हुए कि चुम्बक हमेशा एक ही दिशा में घूमे। कुछ घंटों के बाद उसके पास चुम्बकित रेज़र ब्लेडों का एक गुच्छा था, जिन्हें एक पुराने खिड़की के कब्ज़े की मदद से तोड़कर छड़नुमा चुम्बक बना दिए गए।

कंपास कार्ड बनाने के लिए अल हाके को एक शानदार विचार आया। जर्मनों द्वारा उपलब्ध कराई गई वस्तुओं में छोटे काले गत्ते भी थे, जो रेखाचित्र बनाने या लिखने के साथ-साथ कंपास कार्ड बनाने के लिए भी उतने ही उपयोगी साबित हुए। अल ने अपने द्वारा बनाए गए एक सटीक उपकरण का उपयोग करके, स्लेट पर एकदम गोल घेरे बनाए, उन्हें रेजर ब्लेड से काटा और बीच में एक छेद कर दिया।

कंपास का सबसे महत्वपूर्ण और नाजुक हिस्सा वह दिशासूचक बिंदु था जिस पर कार्ड को टिकाया जाना था; अल हमेशा इस काम को खुद करने पर जोर देता था। कंपास कार्ड के पिछले हिस्से पर बने छेद पर गर्म बैकेलाइट की एक छोटी बूंद रखी जाती थी और उसे एक विशेष आकार की पेंसिल की नोक से दबाया जाता था जिससे कार्ड के ऊपरी हिस्से पर एक छोटा सा उभार बन जाता था। इस तरह बना पॉकेट फोनोग्राफ की सुई के सपोर्ट पर बखूबी संतुलित हो जाता था। फिर कार्ड के निचले हिस्से पर, दिशासूचक बिंदु के दोनों ओर, दो चुंबक चिपकाए जाते थे और कार्ड को नीचे की तरफ दूध पाउडर की छोटी-छोटी बूंदों से संतुलित किया जाता था।

कार्डों पर आकृतियाँ बनाने के लिए, अल ने उच्च गुणवत्ता वाले सफेद रंग (जो खरीद टीम की ओर से मिला था) और मानव बालों से बने एक छोटे ब्रश का इस्तेमाल किया, जिसकी उसके पास कोई कमी नहीं थी। संदर्भ बिंदुओं को पहले पेंसिल से रेखांकित किया गया और फिर उन पर सफेद रंग चढ़ाया गया। क्योंकि यह तेल आधारित रंग था, इसलिए सूखने में समय लगता था, इसलिए अल ने एक छोटी सी जगह बनाई जहाँ एक साथ छह कार्ड रखे जा सकते थे। बाद में कुछ कंपास में चमकदार उत्तर दिशा के बिंदु भी लगाए गए, ये चमकदार चिप्स एक अलार्म घड़ी से लिए गए थे जो कमांडेंटुर से चुराई गई थी।

जब अल कार्डों पर काम कर रहा था, उसी दौरान एक अन्य सैनिक ने कार्डबोर्ड के गोल टुकड़े काटे, जिनमें से प्रत्येक के बीच में फोनोग्राफ की सुई के लिए एक छेद था, ताकि उन्हें

प्रत्येक आवरण के निचले भाग में फिट किया जा सके। आवरण की भीतरी दीवार के लिए कार्डबोर्ड का एक तीसरा टुकड़ा काटा गया, जो कांच के मुखौटे को सहारा देने का काम करता था। मुखौटे के लिए कांच टूटी हुई बैरक की खिड़कियों से लिया गया था और पानी के नीचे, ठीक उसी आकार की धातु की डिस्क पर दबाया गया था। इसे जर्मन सर्जिकल कैंची की एक जोड़ी से तोड़कर एक मोटा-मोटा गोला बनाया गया। किनारों को ईंट पर रगड़कर चिकना किया गया, जब तक कि वह आवरण में ठीक से फिट न हो जाए।

जब सभी पुर्जे तैयार हो गए, तो कारखाना उत्पादन चरण में चला गया। प्रत्येक कंपास के लिए, फोनोग्राफ की सुई को आधार कार्ड पर रखा गया, जिसे फिर आवरण में डाला गया। कांच को सहारा देने वाला कार्ड आवरण के अंदरूनी हिस्से में लगाया गया, और प्रत्येक कंपास कार्ड को उसकी सुई पर संतुलित करके उसकी स्थिरता और संतुलन की जाँच की गई। अंतिम चरण में, कांच के साथ कंपास को सील करने के लिए, अल ने लगभग 5 इंच ऊँचे और 2.5 इंच व्यास वाले एक डिब्बे से ब्लोअर बनाया। कॉर्नड बीफ़ के डिब्बों के ढक्कनों से निकाले गए धातु के टुकड़ों का उपयोग करके, एक पतली नली को भाप निकलने के लिए डिब्बे पर सोल्डर किया गया। डिब्बे में आधा इंच पानी गर्म किया गया, और नली से निकलने वाली भाप का उपयोग कंपास आवरण के ऊपरी किनारे को गर्म करने के लिए किया गया। अल ने चम्मच का उपयोग करके आवरण के किनारे को कांच के ऊपर आकार दिया, जिससे वह सील हो गया। अंतिम रूप देने के लिए, बैरक की खिड़कियों से ली गई थोड़ी सी पुरानी, सूखी पुट्टी को सार्डिन के तेल के साथ मिलाकर सील करने के लिए किनारे के नीचे दबा दिया गया। पुट्टी लगाने के बाद कंपास जलरोधी हो गया। कार्यशाला में काम करते हुए वे एक दोपहर में लगभग बीस कंपास बना लेते थे। उन्हें अक्सर कोई परेशानी नहीं होती थी, लेकिन जब भी कोई चेतावनी मिलती, अल सब कुछ समेटकर अपना बैंजो उठाता और खतरा टलने तक अपने साथियों के साथ गाना गाता रहता।

यह एक चतुराई भरा ऑपरेशन था जिसके तहत उच्च गुणवत्ता वाले, आसानी से छुपाए जा सकने वाले और सटीक कंपास बनाए जाते थे, जिन पर उत्पत्ति स्थान अंकित होता था, ताकि जासूस होने का आरोप न लगे। लेकिन अल हाके ने अपनी प्रतिभा का इस्तेमाल सिर्फ कंपास बनाने के कारखाने में ही नहीं किया। जरूरत पड़ने पर उन्होंने टिन-पत्थर के कारखाने में भी हाथ बटाया। टिन-पत्थर के कारखाने का नेतृत्व डिगर मैकिन्टोश और जॉनी ट्रैविस करते थे, जो पहले एक डिगर हुआ करते थे, लेकिन रोजर ने उन्हें सुरंग से बाहर निकाल लिया क्योंकि उन्हें बंद जगहों से डर लगता था। उनके आसपास कारीगरों की एक टीम थी जो अपने हाथों से लगभग कुछ भी बना सकते थे।

अपने औजार बनाने के लिए, टिन तोड़ने वाले पहरेदारों को रिश्वत देकर पुराने फाइल के टुकड़े या बेकार धातु के टुकड़े मंगवाते थे। उन्हें जरा भी अंदाजा नहीं था कि इन्हीं छोटे-छोटे टुकड़ों से लकड़ी और छेनी, पेंच, बरमा, रंदा और घिसने वाले औजार बनाए जाते थे। टूटे हुए ग्रामोफोन के स्प्रिंग काटकर आरी बनाई जाती थी, और इसी तरह मेज पर रखने वाले चाकू भी बनाए जाते थे। तार काटने के लिए, वे झोपड़ियों से लकड़ी के तख्ते निकालते थे और उन्हें कैंची की तरह जोड़कर तार काटते थे। ब्लेड में खांचे काटने के बाद, जॉनी ट्रैविस उन्हें अपनी घर की बनी भट्टी में सख्त करता था। वह धातु को लाल होने तक गर्म करता था और फिर खांचों के चारों ओर चीनी के कुछ दाने छिड़कता था। फिर से भट्टी में तब तक गर्म किया जाता था जब तक कि चीनी में मौजूद कार्बन धातु में समा न जाए। अंत में उन्हें ठंडे पानी में डुबो दिया जाता था, और प्रक्रिया पूरी हो जाती थी। इसी तरह से छेनी भी बनाई जाती थी। जब टिन तोड़ने वालों की उंगलियां काम से छिल जाती थीं, तो टॉमी गेस्ट के दर्जी उनके लिए खास दस्ताने बनाते थे। जब उन्हें एक मजबूत हथौड़े की जरूरत पड़ी, तो उन्होंने गोबर ढोने वाली गाड़ी के पहिए के जोड़ से एक कील चुरा ली। गाड़ी परिसर से निकलने से पहले ही पहिया निकल गया, लेकिन कचरा गिरने पर जो भयानक बदबू फैली, उसके बावजूद हथौड़ा बहुत काम आया।

*

लकड़ी का काम करने वाली वर्कशॉप, कई महीनों तक एक झोपड़ी से दूसरी झोपड़ी में भटकने के बाद, डिक के शाफ्ट के निचले हिस्से में बने मुख्य कक्ष में जाकर बस गई। दुर्भाग्य से, तंग जगह होने के कारण यह एक अच्छी वर्कशॉप नहीं बन पाई, क्योंकि वहाँ एक समय में केवल एक ही व्यक्ति काम कर सकता था। यह एक अकेला और थकाऊ काम था। हर दिन सुबह की प्रार्थना के बाद, ट्रैप से पानी निकाला जाता और एक मज़दूर सीढ़ी से नीचे उतरकर अपनी शिफ्ट शुरू करता। जैसे ही वह नीचे उतरकर आराम से बैठता, ट्रैप को बंद कर दिया जाता, सील कर दिया जाता और फिर से पानी से भर दिया जाता; इसके बाद मज़दूर सात-आठ घंटे बिना किसी रुकावट के काम कर सकता था। ज़्यादातर समय कक्ष बिजली की रोशनी से जगमगाता रहता था, लेकिन दिन में कुछ समय के लिए बिजली बंद हो जाती थी और कक्ष को मोटे लैंप से रोशन करना पड़ता था। सौभाग्य से, बिजली कभी भी ज़्यादा देर तक बंद नहीं रहती थी, क्योंकि लैंप से भयानक बदबू आती थी और दम घोंटने वाला, तैलीय, काला धुआँ निकलता था।

वर्कशॉप में ज़्यादातर काम सुरंगों के लिए फिटिंग बनाने का था। टिन तोड़ने वालों द्वारा बनाई गई आरी और छेनी, और टूटी हुई प्लेट या कांच के टुकड़ों से बने खुरचनी और चिकना करने वाले औजारों का इस्तेमाल करके, मज़दूर सभी सपोर्टिंग फ्रेम (जिन्हें सुरंग के सामने पहुँचने पर जोड़ा जाना था) काटते और फिट करते थे, और बेडबोर्ड को लगभग दो फुट लंबे नर और मादा भागों में तराशते थे; इन्हें भी सुरंग खोदने वाले आसानी से जोड़ सकते थे। कुछ कामों के लिए असली बढ़ईगीरी के औज़ार अलग-अलग जगहों से 'उधार' लिए गए थे। हालाँकि, उनका इस्तेमाल बहुत कम किया जाता था, क्योंकि उन्हें बदलना नामुमकिन था। बेडबोर्ड और सपोर्टिंग फ्रेम पर घंटों मेहनत करने के बाद, मज़दूर को अपने ऊपर लगे ट्रैप से पानी निकलने की आवाज़ सुनकर सुकून मिलता था। वह अपना दिन भर का काम सुरंगों में ले जाने के लिए सौंप देता था और ज़रूरी आराम के लिए बाहर निकलता था। थोड़ी सफाई के बाद, वह शाम के काम के लिए तैयार हो जाता था।

कार्यशाला कक्ष के छोटे आकार के कारण, सितंबर 1943 में कार्यभार संभालने वाले ऑस्ट्रेलियाई विली विलियम्स ने श्रमिकों की संख्या न्यूनतम रखी और आमतौर पर अपने ही देशवासियों में से भर्ती की। बढ़ईगीरी विभाग में काम करने वाले एक ऑस्ट्रेलियाई व्यक्ति का नाम कीरथ था, जो शिविर के क्रिकेट संयोजक थे और हंसमुख स्वभाव के थे। उनके लाल रंग के घने बाल थे, जिसके कारण उन्हें रस्टी उपनाम मिला था। कीरथ एक मजबूत कद-काठी के व्यक्ति थे, जिन्होंने वर्षों तक युद्ध और कैद में रहने के कारण कठोर और लगभग थके हुए से दिख रहे थे। फिर भी, बढ़ईगीरी की तंग जगह में लंबे समय तक काम करने के बाद भी उनकी चौड़ी मुस्कान कभी नहीं गायब होती थी।

*

20 फरवरी, 1915 को न्यू साउथ वेल्स के नारोमाइन में जन्मे रेजिनाल्ड विक्टर कीरथ नौ बच्चों में सबसे छोटे थे (उनके सबसे बड़े भाई ने प्रथम विश्व युद्ध में भाग लिया था) और उनके दादा-दादी जर्मन मूल के थे जो 1855 में ऑस्ट्रेलिया में आकर बस गए थे। उनका परिवार व्यापारी था और नारोमाइन में एक जनरल स्टोर चलाता था, और रेग अक्सर स्कूल के बाद दुकान में मदद करते थे। 1929 में उन्होंने नारोमाइन छोड़कर शोर स्कूल में दाखिला लिया, जहाँ विली विलियम्स भी पढ़ते थे, और उन्होंने 1933 में औसत शैक्षणिक प्रदर्शन लेकिन उत्कृष्ट खेल करियर के बाद स्नातक की उपाधि प्राप्त की। अपने पिता के थोड़े आग्रह पर, युवा रेग ने अपने भविष्य के बारे में निर्णय लेने तक बैंक ऑफ ऑस्ट्रेलिया की नारोमाइन शाखा में क्लर्क का पद संभाला।

हालाँकि उन्होंने ऑस्ट्रेलियाई सेना की 17वीं बटालियन में एक साल बिताया था, लेकिन उड़ान भरना रेग के खून में ही बसा हुआ था, जब उन्होंने अपनी बड़ी बहन होप और एक पारिवारिक मित्र को नारोमाइन में हवाई अड्डे की जगह तय करने में मदद की थी। सरकार ने हवाई अड्डे के स्थान के लिए सुझाव मांगे थे, और तीनों ने इस चुनौती को स्वीकार किया। स्थानीय किसान की भेड़ों को हटाने और हवा की दिशा का पता लगाने के लिए आग जलाने के बाद, उन्हें पता चल गया कि यह एकदम सही जगह है। जब युद्ध शुरू हुआ, तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि रेग ने ऑस्ट्रेलियाई वायु सेना में शामिल होने का फैसला किया।

2 अगस्त, 1940 को सेना में भर्ती होने के कुछ ही समय बाद, रेग को पता चला कि दक्षिणी रोडेशिया में उड़ान प्रशिक्षण के लिए चुने गए छह सौ ऑस्ट्रेलियाई लोगों में से वह भी एक था। अफ्रीका जाने से पहले उसने ऑस्ट्रेलिया में केवल प्रारंभिक प्रशिक्षण लिया और दिसंबर 1940 तक उसका शुरुआती प्रशिक्षण पूरा हो गया। रेग को प्रशिक्षण में असली मज़ा तब आने लगा जब वह क्रैनबोर्न के फ्लाइंग स्कूल पहुँचा, और तभी उसकी शरारती प्रवृत्ति सामने आने लगी। मई की शुरुआत में एक दिन, वह एक हार्वर्ड विमान में यात्री के रूप में कम ऊँचाई पर बमबारी के अभ्यास के लिए उड़ान भर रहा था। पायलट ने चार धुएँ के बम गिराए और फिर परिणाम देखने के लिए चक्कर लगाया। जैसे ही वह लक्ष्य क्षेत्र के ऊपर से गुजरा, उसने इंटरकॉम से रस्टी की नाराज़गी भरी आवाज़ सुनी: 'क्या तुम इससे बेहतर नहीं कर सकते? मुझे इस ऊँचाई से कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा!' कुछ और चक्कर लगाने और रस्टी की और भी तीखी टिप्पणियों के बाद, पायलट हार्वर्ड को वापस क्रैनबोर्न ले गया, जहाँ उसे एहसास हुआ कि रेग ने उसे कितनी कम ऊँचाई पर उड़ान भरने के लिए उकसाया था। विमान से बाहर निकलने से पहले, उसे बम रखने वाले रैक से मुट्ठी भर घास तोड़नी पड़ी।

रेग कीरथ ने 10 जून को एयरमैन पायलट के रूप में स्नातक की उपाधि प्राप्त की और उन्हें 71 ओटीयू में तैनात किया गया। दो महीने बाद, उनका तबादला 33 स्क्वाड्रन में हो गया, जहाँ उन्होंने मिस्र के अमरिया से किटीहॉक विमान उड़ाए। रेग के लिए ऑपरेशन का पहला महीना उतना आसान नहीं रहा जितना होना चाहिए था। इन हफ्तों में उन्हें दो बार यांत्रिक समस्याओं के कारण उड़ान रद्द करनी पड़ी, टेक-ऑफ के दौरान उन पर हमला हुआ और कई Me 109 विमानों के हमले के बाद उन्हें दुर्घटनाग्रस्त होकर लैंडिंग करनी पड़ी। हालांकि, यह कठिन पहला महीना व्यर्थ नहीं गया, क्योंकि नवंबर में उन्हें काहिरा में छुट्टी दी गई। इस छुट्टी से उन्हें बहुत लाभ हुआ, क्योंकि जल्द ही उन्हें और अधिक सफलता मिलने लगी। 22 नवंबर को उन्होंने दो Ju 88 मध्यम बमवर्षक विमानों को क्षतिग्रस्त किया और दो सप्ताह बाद उन्होंने इतालवी वाहनों के एक काफिले पर हमला करके उसे जला दिया। 20 दिसंबर को उन्होंने एक अन्य पायलट के साथ मिलकर एक इतालवी सैनिक वाहक विमान को मार गिराकर अपनी पहली पुष्ट सफलता हासिल की।

नए साल में रेग के जीवन में बदलाव आया। 8 जनवरी, 1942 को उनका तबादला 450 स्क्वाड्रन आरएएएफ में हो गया और महीने के अंत में उन्हें कमीशन मिल गया। उन्होंने रेगिस्तान में बेड़े की गश्त और निरीक्षण जारी रखा और 31 जुलाई को, एक कार्यकाल पूरा करने के बाद, उन्हें प्रशिक्षक पाठ्यक्रम के लिए बेल्वेडेरे के फ्लाइंग स्कूल में तैनात किया गया। उस पाठ्यक्रम को पूरा करने के बाद, सितंबर 1942 से शुरू होकर, वे पांच महीने के लिए फ्लाइंग इंस्ट्रक्टर के रूप में दक्षिणी रोडेशिया के गिनी फाउल चले गए। प्रशिक्षण देना रेग की इच्छा नहीं थी, क्योंकि वे दुश्मन से लड़ने के लिए सेना में भर्ती हुए थे। उनकी एकमात्र इच्छा युद्ध में वापस लौटना और अपने भाई ग्रेग की मृत्यु का बदला लेना थी, जो टोब्रुक में युद्ध में शहीद हो गए थे।

हालांकि, रेग कभी भी अपनी किस्मत पर अफ़सोस करने वालों में से नहीं थे और उन्होंने परिस्थितियों का भरपूर लाभ उठाया। वे युवा रंगरूटों के बीच लोकप्रिय थे और सप्ताहांत या छुट्टी के दौरान आराम और मनोरंजन के लिए उनके पास पर्याप्त समय होता था, जब वे और कुछ अन्य प्रशिक्षक कुछ दिनों के लिए डरबन चले जाते थे। रेग की हास्य-विनोद की भावना, हंसमुख

स्वभाव और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण के कारण उनकी संगति सभी को पसंद आती थी। चाहे स्थानीय युवतियों के साथ टेनिस खेलना हो या किसी बदनाम नाइटस्पॉट में मौज-मस्ती भरी रात, रेग हमेशा एक अच्छा माहौल बनाने के लिए जाने जाते थे।

23 फरवरी, 1943 को फ्लाइंग ऑफिसर कीरथ आखिरकार दक्षिणी रोडेशिया से निकलकर 450 स्क्वाड्रन में अपने दूसरे कार्यकाल के लिए लौट आए। हालांकि, इस कार्यकाल की पहली उड़ान भरने में उन्हें दो महीने लग गए, जो 23 अप्रैल को एक जहाज-रोधी गश्ती थी। कैप बॉन से लगभग पंद्रह मील दूर, स्क्वाड्रन पर एक जर्मन जहाज से हल्की विमान-रोधी गोलीबारी हुई, और रेग के किटीहॉक विमान के तेल तंत्र में कुछ गोले लगे। जब इंजन जाम हो गया, तो उन्होंने विमान को जमीन की ओर मोड़ा और पैराशूट से कूदने से पहले यथासंभव दूर तक ग्लाइड किया। घर लिखे एक पत्र में, रेग ने इस अनुभव का वर्णन बड़े ही भावहीन ढंग से किया: 'मैं किनारे से कूदा, रस्सी खींची और पानी तक का सफर बहुत ही सुखद रहा। मैंने पानी में लगभग दो घंटे बिताए, इस दौरान मैंने ब्रांडी की एक बोतल पी ली और फिर जर्मनों से भरी एक नाव आई और मुझे उठा लिया।'

हालांकि रेग को कोई चोट नहीं आई थी, फिर भी नाविक उसे ट्यूनिस के एक अस्पताल में ले गए और बाद में शहर के बाहर एक अस्थायी शिविर में भेज दिया गया। उसकी मुश्किलें अभी खत्म नहीं हुई थीं। सिसिली जाते समय, परिवहन जहाज पर मित्र देशों के विमानों ने हमला किया और बाद में वह बाल-बाल टॉरपीडो हमले से बचा। पूरी यात्रा के दौरान, रेग को बेबसी का भयानक एहसास होता रहा और बाद में उसने अपने भाई को लिखा कि यह यात्रा उसके जीवन का सबसे बुरा सपना था। दुबले-पतले ऑस्ट्रेलियाई सैनिक को एक सुरक्षित युद्धबंदी पिंजरा देखकर बहुत खुशी हुई होगी।

*

रस्टी कीरथ और बाकी बढ़ईयों के लिए सबसे महत्वपूर्ण कामों में से एक संवेदनशील सामग्रियों को छुपाने के लिए गुप्त स्थान बनाना था। झोपड़ियाँ पहले से ही तैयार थीं, और कैदियों ने जल्द ही पता लगा लिया कि दीवारों के बीच लगभग पाँच इंच का खाली स्थान था। असली औजारों का उपयोग करके, पाँच या छह दीवार तख्तों को हटाकर उनमें छोटे-छोटे क्लिप लगाए गए। एक बार वापस लगाने के बाद, अगर आपको क्लिप की जगह पता हो तो उन्हें जल्दी से हटाया जा सकता था, लेकिन अनजान लोगों को वे दिखाई नहीं देते थे। माइक केसी की देखरेख में, जिनकी पिछली नौकरी टॉम के पकड़े जाने के कारण समाप्त हो गई थी, पूरे शिविर में जाली कागजात, कंपास, कपड़े और भागने के लिए आवश्यक अन्य सभी सामानों को छुपाने के लिए गुप्त स्थान बनाए गए थे। रॉजर के कमरे में उसका अपना निजी गुप्त स्थान भी था (अंतर्राष्ट्रीय कानून के अनुसार वरिष्ठ अधिकारियों को छात्रावासों के बजाय एकल या दोहरे कमरों में रखा जाना था), हालाँकि उसे उसमें बहुत अधिक सामान रखने से मना किया गया था क्योंकि वह जाँच का एक स्पष्ट लक्ष्य था।

हालांकि, उनके उत्पादों के भारीपन के कारण, टॉमी गेस्ट ने टेलरिंग विभाग के अधिकांश सामान को शौचालय ब्लॉक के अटारी में रखने का विकल्प चुना; केवल निर्माणाधीन सूटों को ही अधिक सुविधाजनक दीवार के गुप्त स्थानों में रखा जाता था।

X संगठन के संचालन में सबसे विकेंद्रीकृत व्यवस्था टेलरिंग शॉप की थी; उनके कटिंग और फिटिंग का काम कैंप के अलग-अलग कमरों में होता था। टेलरों के लिए सामग्री के कई स्रोत थे, जिनमें सबसे उपयोगी सैन्य वर्दी थी। कुछ वर्दी को टुकड़ों में काटकर नागरिक सूट के रूप में फिर से सिला जाता था; पोलिश सेना की वर्दी और RAF के अन्य रैंकों की युद्ध वर्दी, जो दोनों ही भारी सर्ज कपड़े से बनी होती थीं, इस काम के लिए विशेष रूप से उपयोगी थीं। एक बार अलग करने के बाद, कपड़े के विभिन्न टुकड़ों को रेजर ब्लेड से तब तक तराशा जाता था जब तक वे चिकने न हो जाएं और फिर उन्हें चुकंदर के रस, बूट पॉलिश या किताबों के कवर को उबालकर

बनाए गए रंग से रंगा जाता था। सामग्री का एक अन्य स्रोत गार्ड थे, जिन्हें कभी-कभी कपड़े के छोटे-मोटे टुकड़े लाने के लिए राजी किया जा सकता था। इस सामग्री को, कुछ सैन्य ओवरकोट की भारी लाइनिंग के साथ, बहुत अच्छे सूट में सिला जा सकता था।

इन सभी स्रोतों का उपयोग करते हुए, टॉमी और उसके दल ने अविश्वसनीय मात्रा में कपड़े तैयार किए: छह जोड़ी ओवरऑल; बारह जर्मन वर्दी; दो सौ नागरिक जैकेट और पैंट; एक सौ पूरे नागरिक सूट; चालीस ओवरकोट; ढाई सौ टोपियाँ; चालीस टाई; और दस थैले। दर्ज़ियों ने दूसरों को अपनी वर्दी को चिकना करने, कोनों को गोल करने, जेबें हटाने और जेब के फ्लैप लगाने जैसे तरीके भी सिखाए। गेस्ट कैदियों को अपनी वर्दी को फिर से सिलने के लिए अपने अखबार के पैटर्न भी देने को तैयार थे।

सिलाई और बारीक काम का अधिकांश हिस्सा टॉमी करता था, जबकि अन्य सैनिक पुरानी वर्दी को खोलने में मदद करते थे। बाकी नाप-जोख, कटाई और फिटिंग का काम इवो टोंडर और दर्ज़ियों की एक टीम करती थी। यह ऑपरेशन बहुत विकेंद्रीकृत था, इसलिए सुरक्षा को लेकर उन्हें ज़्यादा परेशानी नहीं होती थी। केवल एक बार आपात स्थिति आई। उस मौके पर ग्लेम्निट्ज़ की नज़र इवो द्वारा अभी-अभी तैयार किए गए एक खूबसूरत सूट पर पड़ी। वह उसे गर्व से परिसर से बाहर ले गया, जबकि टोंडर केवल अपना सिर हिलाकर कोसता रहा।

*

सागन में अक्टूबर का महीना आ गया, और शिविर के चारों ओर मौजूद नन्हे-मुन्ने छोटे-छोटे बर्च के पेड़ों पर बची-खुची पत्तियां भी उदास होकर गिरने लगीं। शिविर के अंदर का माहौल कुछ बेहतर था। थिएटर में मैकबेथ का एक शानदार मंचन हो रहा था, जिसमें लॉरेंस रीवेल-कार्टर ने मेंटिथ की भूमिका निभाई थी, और कई सैनिक खेल-कूद छोड़कर पढ़ाई में जुट गए थे। जिमी कैटानाच ने नॉर्वेजियन भाषा का कोर्स पूरा किया और भाषाविदों के संस्थान से प्रथम श्रेणी का प्रमाण पत्र प्राप्त किया, जबकि हेनरी पिकार्ड और अर्नोल्ड क्रिस्टेंसन ने बारी-बारी से अंग्रेजी और फ्रेंच के पाठ पढ़े। हैरी की पढ़ाई पूरी करने की उम्मीद में, जर्मन भाषा अभी भी सबसे लोकप्रिय भाषा थी। लियोनार्ड हॉल ने पावेल टोबोल्स्की से पढ़ाई की, जो जून 1944 में अपनी अंग्रेजी दक्षता परीक्षा देने के लिए उत्सुक थे, जबकि जॉन कैसन को रेने मार्सिंकस ने पढ़ाया। टोनी हेयटर और इयान क्रॉस भी इस विषय पर ध्यान केंद्रित कर रहे थे।

एक्स ऑर्गनाइज़ेशन के सबसे कुशल भाषा प्रशिक्षकों में से एक, और औपचारिक प्रशिक्षण प्राप्त कुछ गिने-चुने प्रशिक्षकों में से एक, गॉर्डन आर्थर किडर नाम के एक शांत और अध्ययनशील कनाडाई थे। एक डिब्बाबंद खाद्य पदार्थ कारखाने के प्रबंधक के पुत्र, किडर का जन्म 9 दिसंबर, 1914 को दक्षिणी ओंटारियो के छोटे शहर सेंट कैथरीन में हुआ था, जहाँ उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की। हाई स्कूल से स्नातक होने के बाद, गॉर्डन ने फ्रेंच और जर्मन का अध्ययन करने के लिए टोरंटो विश्वविद्यालय में दाखिला लिया। शैक्षणिक जगत गॉर्डन के स्वभाव के अनुकूल प्रतीत हुआ, और 1937 में उन्हें बाल्टीमोर के जॉन्स हॉपकिंस विश्वविद्यालय में जर्मन में एमए करने के लिए दाखिला मिल गया। हालाँकि, किडर का मन बदल गया और उन्होंने नौकरी करने का फैसला किया, पहले ओंटारियो शिक्षा विभाग में क्लर्क के रूप में और बाद में टोरंटो की एक बीमा कंपनी में अनुवादक के रूप में। कार्यालय में उन्हें एक कर्तव्यनिष्ठ और सक्षम कर्मचारी के रूप में बहुत सम्मान प्राप्त था, और यदि युद्ध शुरू होने पर वे आरसीएएफ में शामिल न हुए होते तो वे बहुत आगे बढ़ सकते थे।

नेविगेटर के रूप में अपना प्रशिक्षण पूरा करने के बाद, गॉर्डन को क्रू असाइनमेंट के लिए पर्सशोर स्थित ऑपरेशनल ट्रेनिंग यूनिट (ओटीयू) में तैनात किया गया। उन्होंने वहां दो ऑपरेशन किए, जिसके बाद क्रू को शॉर्ट स्टर्लिंग विमान उड़ाने के लिए 149 स्क्वाड्रन में तैनात किया गया। 149 स्क्वाड्रन में पहुंचने पर, उन्हें पता चला कि स्क्वाड्रन के पास उनके लिए पर्याप्त

विमान नहीं हैं, इसलिए उन्हें पाथफाइंडर यूनिट में शामिल होने का विकल्प दिया गया। जवानों ने इस अवसर को तुरंत स्वीकार कर लिया और 8 सितंबर, 1942 को उन्हें वारबॉयज़ स्थित 156 स्क्वाड्रन में शामिल होने के लिए भेजा गया। 156 स्क्वाड्रन के साथ शुरुआती कुछ यात्राओं में क्रू रूर द्वीप समूह में गया, लेकिन 13 अक्टूबर, 1942 को उन्हें कील पर छापे में भाग लेने का आदेश दिया गया; यह किडर का नौवां ऑपरेशन था।

उड़ान का पहला आधा हिस्सा बिना किसी घटना के गुज़रा, लेकिन लक्ष्य क्षेत्र के ऊपर पहुँचते ही वेलिंगटन सर्चलाइटों की चपेट में आ गया। पायलट ने तुरंत तेज़ी से गोता लगाया, जिससे वे सर्चलाइटों की रोशनी से बाहर निकल गए, लेकिन जैसे ही उसने ऊपर उठने की कोशिश की, एक इंजन बंद हो गया। अब काफ़ी ज़्यादा क्षतिग्रस्त हो चुके वेलिंगटन ने लड़खड़ाते हुए उत्तरी सागर के ऊपर से वापस लौटना शुरू किया, लेकिन कुछ ही देर में दूसरा इंजन भी बंद हो गया और पायलट ने चालक दल को दुर्घटनाग्रस्त होने के लिए तैयार रहने का आदेश दिया।

विमान बुरी तरह नीचे गिरा। रेडियो ऑपरेटर-एयर गनर अर्ल मैकडोनाल्ड अपनी जगह पर फंस गए और तेज़ लहरों में विमान के टुकड़े-टुकड़े होने से बेहोश हो गए। जब उन्हें होश आया, तो वे मलबे से बाहर निकल चुके थे और वेलिंगटन के टुकड़ों के बीच अकेले तैर रहे थे। उन्होंने यह जानने के लिए आवाज़ लगाई कि क्या कोई और बच गया है और अंधेरे से गॉर्डन किडर की आवाज़ सुनकर उन्हें राहत मिली। किडर विमान की छोटी नाव (डिंगी) में हवा भरने में कामयाब रहे थे, जो हालांकि लीक हो रही थी, लेकिन काम चलाने लायक थी, और अर्ल खुद को उस पर चढ़ा लिया। उन्हें कोई चोट नहीं आई थी, लेकिन गॉर्डन का टखना टूट गया था और दुर्घटना में उनके फ्लाइंग बूट्स खो गए थे। छोटी नाव के ज़ोर से हिलने-डुलने से किडर को बहुत दर्द हो रहा था, लेकिन जब मैकडोनाल्ड ने अपने फ्लाइंग बूट्स देने की पेशकश की, तो किडर ने तुरंत उन्हें कसकर बांध लिया।

दोनों जीवित बचे लोग पूरी रात छोटी नाव में तैरते रहे और फिर भोर होते ही क्षितिज पर एक जहाज देखकर उन्हें राहत मिली। दुर्भाग्य से वह एक जर्मन माइनस्वीपर था, लेकिन ठंड से मरने से तो बेहतर ही था। अर्ल को कोई चोट नहीं आई थी, इसलिए उसे तुरंत डुलैग लुफ्ट से बार्थ भेज दिया गया, जबकि गॉर्डन को अस्पताल में कुछ समय बिताने के बाद 1942 में क्रिसमस से ठीक पहले सागन पहुँचा दिया गया।

गॉर्डन किडर शिविर में सबसे शांत स्वभाव के कैदियों में से एक के रूप में जाने जाते थे, जबकि हट 120 के मिलनसार पागलों के बारे में ऐसा बिलकुल नहीं कहा जा सकता था। उनमें से दो, एलेक्स कैसी और डेस प्लंकेट, रॉयल रैवियोलीज़ नामक एक जानलेवा कलाबाज़ी टीम के सदस्य के रूप में एक विक्टोरियन संगीत हॉल प्रस्तुति के लिए पूर्वाभ्यास कर रहे थे। एक पेशेवर कलाबाज़ रहे गार्ड द्वारा उपलब्ध कराए गए हार्नेस और लिफ्टिंग गियर की मदद से, एलेक्स टीम के विभिन्न सदस्यों पर संतुलन बनाए रखते थे, जिससे बाकी कलाकारों से वाहवाही मिलती थी। एक दिन पूर्वाभ्यास के दौरान, एलेक्स को प्लंकेट की फैली हुई बांह पर एक शानदार हैंडस्टैंड करने के लिए ऊपर खींचा जा रहा था, तभी उसे लटकाने वाला पियानो का तार टूट गया। डेस की ताकत और फुर्ती ने कैसी को बुरी तरह गिरने से बचा लिया। सौभाग्य से, सार्वजनिक प्रदर्शन बिना किसी रुकावट के हुए, और डेस के सिर पर एलेक्स को बिना हाथों के हेडस्टैंड करते देख दर्शकों ने खूब तालियाँ बजाईं।

अपने दो सदस्यों की सफलता से प्रसन्न होकर, एमिएबल ल्यूनेटिक्स ने जश्न मनाने के लिए एक पार्टी का आयोजन किया और इस अवसर पर एक खास पेय बनाने का निर्णय लिया। उन्होंने किशमिश और अन्य किण्वित होने योग्य खाद्य पदार्थों को इकट्ठा करना शुरू किया और एक कामचलाऊ डिस्टिलर बनाने में जुट गए। सबसे पहले, उन्होंने अपनी कच्ची सामग्री, जिसमें रोटी के कुछ टुकड़े भी शामिल थे, पानी से भरे एक लकड़ी के टब में डाल दी और उसमें पोलैंड से प्राप्त कुछ खमीर मिला दिया। लगभग एक सप्ताह तक किण्वन के बाद, पेय आसवन के लिए तैयार था। डिस्टिलर एक बड़ी केतली थी जिसके टोंटी से तीन फुट लंबी पाइप जुड़ी हुई थी।

पाइप नीचे कंडेंसर तक जाती थी, जो वास्तव में एक ट्रॉम्बोन था जिसे फैलाकर तारकोल से ढकी लकड़ी की नाली में रखा गया था। इसके पुर्ज़ों को रेड क्रॉस के डिब्बों से लिए गए सोल्डर और परिसर में बचे हुए कुछ देवदार के पेड़ों के राल से बने फ्लक्स से जोड़ा गया था।

आसवन प्रक्रिया की निगरानी के लिए एक चखने वाले की आवश्यकता थी, इसलिए किंग्सले ब्राउन, जिन्हें इन मामलों में विशेष विशेषज्ञता प्राप्त थी, ने स्वेच्छा से यह ज़िम्मेदारी संभाली और चौबीसों घंटे विभिन्न पदार्थों का स्वाद चखते रहे। प्रक्रिया के शुरुआती दौर में, उन्होंने सिस्टम में लगे रबर कनेक्शनों के कारण बनने वाले स्वाद के चलते पेय का नाम 'ओ डे डनलप' रख दिया। एक बार खिड़की पर ज़ोर से दस्तक होने से उनका काम बाधित हो गया।

एक कर्कश आवाज ने पुकारा, 'क्या बात है?' (Was ist los?)

'Ruhe, bitte' (कृपया शांत रहें), किंग्सले ने जवाब दिया, जो खिड़की के पास गया, शटर खोले और वहाँ खड़े दो गार्डों से बोला, 'Wohlen Sie ein klein Schnapps trinken?' (क्या आप थोड़ी सी श्नैप्स पीना चाहेंगे?)

'जा, डांके' (हाँ, धन्यवाद), गार्डों ने कहा और झटपट उन्हें दिया गया मग खाली कर दिया। दूसरी बार का पेय थोड़ा धीरे-धीरे पिया और कुछ और घूंट लेने के बाद, दोनों गार्ड बेहद शुद्ध शराब के असर से लड़खड़ाते हुए मुख्य द्वार की ओर लौट गए।

उनके जाने के बाद किंग्सले ने कहा, 'अच्छा हुआ कि वे लोग आ गए। हमें यह सुनिश्चित करना था कि शराब ज़हरीली तो नहीं है!' ज़हरीली तो नहीं थी, लेकिन बहुत तेज़ थी। एलेक्स कैसी ने एक टिन के चम्मच में शराब की कुछ बूँदें लीं और चखने से पहले उसे ठंडा होने के लिए मेज़ पर रख दिया। जब उसने चखा तो देखा कि शराब ने चम्मच के कटोरे में एक साफ़ गड्ढा बना दिया था।

जब एमिएबल ल्यूनेटिक्स ने अपनी शराब पार्टी दी, तो परिणामस्वरूप हुए नशे ने कुछ यादगार पल पैदा किए। आयरिशमैन पैडी बायरन ने कुछ ज़्यादा ही पी लिया और यह कहते हुए कमरे से बाहर भाग गया कि उसे बहुत ज़्यादा तबीयत खराब लग रही है। बाद में, वह माथे पर चोट और नाक से खून बहते हुए पार्टी में लौटा।

उन्होंने बड़ी गंभीरता से कहा, 'मैं शौचालय जा रहा था तभी फर्श ऊपर आ गया और मेरे चेहरे पर जा लगा।'

पैडी की पैंट पर उल्टी हो गई थी और नशे में होने के कारण उसे लगा कि उसे साफ करने के बजाय पैंट को फेंक देना ही बेहतर होगा। इसलिए, जैसे ही मौका मिला, उसने पैंट को मुख्य नाली में फेंक दिया और उसके बारे में फिर कभी नहीं सोचा। हफ्तों बाद, जब एक स्थानीय ठेकेदार नाली को खाली कर रहा था, तो पैंट बाहर निकली, और उस लाश को खोजने के लिए पूरे सीवेज के गड्ढे को खोदा गया जो पैंट के साथ मिली थी।

कुछ देर बाद, पूरा परिसर आयरिश हंसी की गूँज से गूंज उठा। बायरन अपनी झोपड़ी के बाहर बैठा था जब उसकी नज़र नाली ऑपरेटर पर पड़ी। उसे गौर से देखने पर पैडी को यह देखकर हंसी आ गई कि वह आदमी उसकी पैंट पहने हुए था। ज़ाहिर है, वह अपनी अच्छी पैंट को बेकार नहीं जाने देना चाहता था, इसलिए उसने उसे साफ़ किया और खुद पहन लिया। बेचारा जर्मन कभी यह नहीं जान पाया कि पैडी और बाकी लोग जब भी वह टैंक खाली करने के लिए शिविर में आता था, उस पर क्यों हंसते थे।

सितंबर से, X के विस्तारित खुफिया विभाग का नेतृत्व वैली वैलेंता कर रहे थे, जो सर्वज्ञानी प्रतीत होने वाले चेक नागरिक थे और यूरोप के सभी हिस्सों को कवर करने वाले विशेषज्ञों की एक टीम का समन्वय कर रहे थे। पहले की तरह, रोजर बुशेल जर्मनी के विशेषज्ञ थे, और टॉम किर्बी-ग्रीन स्पेन की देखरेख करते थे। बॉब वैन डेर स्टॉक नीदरलैंड्स की स्थितियों के बारे में जानकारी जुटाते थे। वैलेंता स्वयं चेकोस्लोवाकिया और सैन्य मामलों के लिए जिम्मेदार थे, जबकि डेनिस कॉचरन सामान्य सलाहकार के रूप में कार्य करते थे। और, निश्चित रूप से, अपरिहार्य रेने मार्सिंकस भी थे, जो बाल्कन और बाल्टिक बंदरगाहों के विशेषज्ञ होने के अलावा,

यूरोप से संबंधित सभी चीजों के सामान्य विशेषज्ञ भी थे। रेने ने अपनी अद्भुत स्मृति में 1934 में यूरोप के अपने दौरे के दौरान और एक अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल खिलाड़ी के रूप में अपनी यात्राओं के दौरान देखी गई हर चीज को संजो कर रखा था। अब शिविर के समाचार पत्र पाठकों के पर्यवेक्षक के रूप में, रेने ने शिविर में कानूनी रूप से आने वाले प्रत्येक जर्मन प्रकाशन और अवैध रूप से आने वाले कई प्रकाशनों, जिनमें एक बेडेकर और एक रेलवे समय सारिणी शामिल थी, से प्राप्त विवरणों से अपने ज्ञान को पूरक बनाया।

खुफिया नेटवर्क के स्कैंडिनेवियाई हिस्से में अर्नोल्ड क्रिस्टेंसन शामिल थे, जो अभी भी डेनमार्क की निगरानी कर रहे थे, और एक हंसमुख नॉर्वेजियन नागरिक हल्दोर एस्पेलिड थे। उनका जन्म 6 अक्टूबर, 1920 को बर्गन के पास आस्कॉय में हुआ था, और कई नॉर्वेजियन लोगों की तरह उन्हें भी फुटबॉल, क्रॉस-कंट्री दौड़ और अपने घर के आसपास की पहाड़ियों में लंबी पैदल यात्रा जैसी बाहरी गतिविधियों का शौक था। अपने बचपन में हर गर्मियों में, हल्दोर हार्डेंजरफ्योर्ड के आसपास के पहाड़ों में लंबी पैदल यात्रा करने जाते थे, जिसे वे हमेशा पृथ्वी पर सबसे खूबसूरत जगह मानते थे। बाहरी गतिविधियों के प्रति अपने जुनून के बावजूद, उस युवा लड़के को स्कूल पसंद था और खासकर उसे संगीत का प्रशिक्षण बहुत अच्छा लगता था। वह ऑर्गन बजाते थे और स्कूल ऑर्केस्ट्रा के एक उत्साही सदस्य थे।

अप्रैल 1940 में जब जर्मनों ने नॉर्वे पर आक्रमण किया, तो हाल्डोर ने भागने की योजना बनाई और सितंबर के मध्य में, हाई स्कूल के अपने अंतिम वर्ष की शुरुआत के तुरंत बाद, वह और कुछ दोस्त एक छोटी नाव में इंग्लैंड भाग गए। उन्होंने रॉयल नॉर्वेजियन वायु सेना में भर्ती के लिए आवेदन किया और सितंबर 1941 की शुरुआत में हाल्डोर को प्रशिक्षण के लिए सस्केचेवान के मूस जॉ में कनाडा भेजा गया। उनकी हंसमुख मुस्कान और मिलनसार स्वभाव ने उन्हें स्थानीय लोगों का चहेता बना दिया और जब 21 नवंबर को उन्होंने अपनी वर्दी उतारकर मूस जॉ छोड़ा, तो उनके कई नए दोस्त उन्हें विदाई देने के लिए स्टेशन पर मौजूद थे। हाल्डोर ने अपना प्रशिक्षण पूरा करने के लिए टोरंटो के लिटिल नॉर्वे में प्रस्थान किया और अप्रैल 1942 में परिचालन में आने के लिए इंग्लैंड लौट आए।

15 जुलाई को वे नॉर्थ वेल्ड से स्पिटफायर उड़ाने वाली 331 स्क्वाड्रन में शामिल हो गए। दुर्भाग्य से, इस उत्साही युवा नॉर्वेजियन पायलट का ऑपरेशनल करियर छोटा रहा। जुलाई के आखिरी दिन उन्होंने और एक अन्य पायलट ने क्षतिग्रस्त FW 190 को मार गिराने का दावा किया, लेकिन 27 अगस्त, 1942 को डनकर्क के ठीक पूर्व में हाल्डोर के विमान पर हल्की एंटी-एयरक्राफ्ट फायरिंग हुई। शुरुआत में नुकसान मामूली लग रहा था और एस्पेलिड अपने साथियों के साथ उड़ान भरते रहे, लेकिन जब वे ग्रेवलिन्स में घर की ओर मुड़े, तो उन्होंने अचानक अपने विमान को अंदर की ओर मोड़ दिया और तेजी से ऊंचाई खोने लगे। उन्होंने पास डे कैलाइस में क्रैश लैंडिंग की और उन्हें तुरंत बचा लिया गया।

शुबिन में थोड़े समय के लिए कैद रहने के अलावा, हाल्डोर ने अपनी पूरी कैद पूर्वी परिसर में बिताई थी। वहाँ वह एक बहुत ही उपयोगी खुफिया संपर्क के रूप में जाना जाने लगा, क्योंकि उसने वुडन हॉर्स से भागे ओलिवर फिलपॉट को नॉर्वेजियन व्यवसायी के रूप में अपना भेष बदलने के लिए आवश्यक सभी विवरण प्रदान किए थे। जब वह 1943 की गर्मियों के अंत में उत्तरी परिसर में स्थानांतरित हुआ, तो एस्पेलिड की प्रतिष्ठा पहले से ही फैली हुई थी, और उसे नॉर्वे से संबंधित सभी मामलों का विशेषज्ञ माना गया।

*

हल्दोर के साथ जल्द ही उनके हमवतन नील्स जोर्गेन फुगलेसांग भी आ गए, जिनका जन्म 7 अक्टूबर 1918 को हिड्रा के रास्वाग में हुआ था। सीमा शुल्क अधिकारी के इकलौते बेटे नील्स और उनकी चार बहनों का पालन-पोषण और शिक्षा नॉर्वे के पथरीले और खूबसूरत पश्चिमी तट

पर स्थित फ्लोरो में हुई। सितंबर 1935 में नील्स फ्रांस के रूएन स्थित लिस कॉर्नेल विश्वविद्यालय में दाखिला लेने चले गए और फिर 1939 में बर्गन कमर्शियल कॉलेज में एक कोर्स किया, जिसे उन्होंने युद्ध शुरू होने से ठीक पहले पूरा किया। सितंबर 1939 में इस युवक को ओस्लो की एक शिपिंग कंपनी में प्रशिक्षु के रूप में रखा गया, लेकिन जर्मन आक्रमण के बाद सामूहिक छंटनी में उनकी नौकरी चली गई। उन्होंने एक रिश्तेदार के खेत में काम पाया और अंततः फ्लोरो लौट आए, जहाँ उन्होंने और कुछ दोस्तों ने ग्रेट ब्रिटेन भागने की योजना बनाना शुरू किया। 12 मार्च 1941 को, निल्स और ग्यारह अन्य युवक एक मोटर कटर में फ्लोरो से रवाना हुए और दो दिन बाद स्कॉटलैंड पहुंचे। उन्होंने तुरंत रॉयल नॉर्वेजियन वायु सेना में प्रवेश के लिए आवेदन किया।

एक महीने बाद, समूह ने प्रारंभिक प्रशिक्षण के लिए स्कॉटलैंड से टोरंटो के लिए प्रस्थान किया, जहाँ उन्होंने लिटिल नॉर्वे में प्रशिक्षण प्राप्त किया। छह महीने बाद वे पूर्ण रूप से प्रशिक्षित पायलट बनकर इंग्लैंड लौट आए और उन्हें अंतिम प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के लिए तैनात किया गया। 9 जून, 1942 को, निल्स अंततः एक सक्रिय इकाई, 332 स्क्वाड्रन में शामिल हो गए, जो नॉर्थ वेल्ड से स्पिटफायर विमान उड़ाती थी। हाल्डोर एस्पेलिड के विपरीत, निल्स का परिचालन करियर लंबा रहा, और एक विश्वसनीय और स्थिर पायलट के रूप में उनकी प्रतिष्ठा ने उन्हें नॉर्वे के राजा हाकॉन VII का पदक दिलाया और मार्च 1943 में उन्हें पदोन्नति भी मिली।

2 मई, 1943 को, निल्स फ्लशिंग के ऊपर अपने स्पिटफायर विमान को उड़ा रहे थे, तभी दुर्भाग्यवश वे एक दुर्घटना का शिकार हो गए। वे अपने नंबर 1 पायलट के पीछे-पीछे एक FW 190 पर आमने-सामने से हमला करने के लिए गए थे और जैसे ही दोनों विमान तीव्र गति से एक-दूसरे के करीब आए, निल्स के स्पिटफायर विमान पर उनके सेक्शन लीडर को निशाना बनाकर दागे गए तोप के गोले लगे। यह तुरंत स्पष्ट हो गया कि विमान में अब बहुत कम ईंधन बचा है, और निल्स धुएं से भरे कॉकपिट से तेजी से बाहर निकले। वे एक जर्मन सेना प्रशिक्षण इकाई के पास उतरे, जो उनके 85वें हवाई हमले का एक दुर्भाग्यपूर्ण अंत था।

दुलाग लुफ्ट में एक सप्ताह बिताने के बाद, निल्स सागन आया, जहाँ उसकी मुलाकात हाल्डोर एस्पेलिड से हुई, जिसे उसने एक साल से भी पहले लिटिल नॉर्वे में आखिरी बार देखा था। नए क्रिगी ने भागने के काम में शामिल होने की इच्छा व्यक्त की और उसे तुरंत एक्स ऑर्गनाइजेशन में अंशकालिक जासूस और अंशकालिक खुफिया विशेषज्ञ के रूप में भर्ती कर लिया गया। उसे जल्द ही पता चल गया कि खुफिया विशेषज्ञ का काम कितना महत्वपूर्ण था।

*

भागने की योजना बनाने वाले संगठन में, खुफिया विशेषज्ञों की दोहरी भूमिका थी: वे संभावित भगोड़ों को उन देशों के बारे में जानकारी प्रदान करते थे जिनसे होकर वे यात्रा करेंगे, और भगोड़ों द्वारा उपयोग की जाने वाली पृष्ठभूमि कहानियों को तैयार करने में सहायता करते थे। ज़ाहिर है, उन्हें अपनी जानकारी को यथासंभव अद्यतन रखना होता था और वे मार्किंकस के समाचार पत्र पाठकों के कर्मचारियों द्वारा दी गई जानकारियों से अपने ज्ञान को पूरक बनाते थे।

एक बार जब कोई भगोड़ा अपनी पहचान तय कर लेता था, तो उसका पहला पड़ाव उस देश के खुफिया विशेषज्ञ से मिलना होता था। विशेषज्ञ उसे अपने गृह नगर की सलाह देता था और शायद उन कंपनियों की सूची भी दे सकता था जो यात्रा करने वाले व्यापारियों को भेजने के लिए काफी बड़ी हों, लेकिन इतनी छोटी हों कि भगोड़े को कंपनी में काम करने वाले किसी व्यक्ति से सामना न करना पड़े। वह शहर के बारे में बताता था और कुछ खास जगहों और रेस्तरां या कैफे के नाम बताता था, ताकि अगर पूछताछ करने वाला उस इलाके को जानता हो तो उसका इस्तेमाल किया जा सके। बुडापेस्ट के निवासी के वेश में भागने पर अगर किसी पुलिस अधिकारी से सामना हो जाए जो शहर के बारे में ज्यादा जानता हो, जबकि उसने 1937 में सिर्फ एक गर्मी

बिताई हो, तो इससे ज्यादा निराशाजनक कुछ नहीं हो सकता था। अंत में, क्षेत्र विशेषज्ञ स्थानीय रीति-रिवाजों के बारे में भी जानकारी दे सकता था, जैसे कि बेरेट पहनने का तरीका या अभिवादन का पारंपरिक तरीका। ये छोटी-छोटी बातें अक्सर सफलता और असफलता के बीच का अंतर तय करती थीं।

एक बार जब भागने वाले ने अपनी नकली पहचान को अच्छी तरह से तैयार कर लिया, तो अब उन देशों के बारे में जानकारी जुटाने का समय था जिनसे होकर उसे यात्रा करनी थी। इसमें चार-पाँच अलग-अलग लोगों से मिलना शामिल हो सकता था, या शायद केवल एक ही व्यक्ति से। शिविर से तटस्थ क्षेत्र तक पहुँचने के लिए सबसे अच्छा मार्ग जानना, किन स्थानों से बचना है, कर्फ्यू है या नहीं, और मित्र देशों की बमबारी या अन्य कारणों से किसी विशेष क्षेत्र से यात्रा प्रतिबंधित है या नहीं, यह जानना आवश्यक था। मार्ग की योजना बनाते समय, रेने मार्सिंकस से बात करना हमेशा एक अच्छा विचार होता था, जो लगभग हर प्रमुख यूरोपीय रेलवे स्टेशन का वर्णन करने में माहिर थे। उन्हें स्टेशनों तक पहुँचने का रास्ता और वे किन क्षेत्रों को सेवा प्रदान करते हैं, यह पता था; वे टिकट काउंटर कहाँ है और विभिन्न ट्रेनें किस समय चलती हैं, यह भी बता सकते थे। यह सारी जानकारी मिलने के बाद, बस इसे याद करना बाकी रह जाता था, साथ ही जन्मतिथि और नकली नाम की वर्तनी जैसी छोटी-छोटी बातों को भी याद रखना होता था।

*

बेशक, भागने वाले के पास दुनिया की सबसे अच्छी पहचान और सामान हो सकता था, लेकिन जाली कागज़ात के अच्छे सेट के बिना सफल होने की संभावना बहुत कम थी। ये जाली कागज़ात मुहैया कराना डीन एंड डॉसन ट्रैवल ब्यूरो का काम था, जिसके प्रमुख आकर्षक टिम वालेन थे। डीन एंड डॉसन तीन तरह के दस्तावेज़ बनाते थे: असली जाली दस्तावेज़; मनगढ़ंत दस्तावेज़; और टाइप किए हुए दस्तावेज़। असली जाली दस्तावेज़ कई तरह के होते थे: ऑस्वेइस, यानी पहचान पत्र, जो हर नागरिक के पास होना ज़रूरी था; सोलबुच, एक जर्मन सैनिक की वेतन पुस्तिका; उरलॉब्सशाइन, जो किसी विदेशी कामगार को छुट्टी पर घर लौटने की अनुमति देता था; रुककेहर्सशाइन, जो किसी विदेशी कामगार को अपने देश लौटने की अंतिम अनुमति देता था; और अनगिनत अन्य। इन दस्तावेज़ों को बनाने में सबसे ज़्यादा समय लगता था; एक उरलॉब्सशाइन को पूरा करने में एक जाली दस्तावेज़ बनाने वाले को दिन में पाँच घंटे काम करते हुए पूरा एक महीना लग जाता था।

कृत्रिम दस्तावेज़ आधिकारिक दिखने वाले कार्ड या कागज़ होते थे, जिन पर पर्याप्त संख्या में प्रभावशाली रबर स्टैम्प और हस्ताक्षर होते थे। यह उम्मीद की जाती थी कि यदि कोई दस्तावेज़ देखने में विश्वसनीय लगे, तो उसे कम बुद्धिमान पूछताछकर्ता भी स्वीकार कर लेगा। टिम की सबसे गर्वित रचनाओं में से एक लिथुआनियाई ऑस्वेइस थी, जिसका आविष्कार उसने रेने मार्सिंकस की मदद से किया था। टाइप किए गए दस्तावेज़ अंतिम उपाय के रूप में इस्तेमाल किए जाते थे, मुख्य रूप से कठिन परिस्थितियों में काम करने वाले लोग। इन्हें अस्थायी दस्तावेज़ माना जाता था जो तब जारी किए जाते थे जब असली दस्तावेज़ नवीनीकरण या अद्यतन के लिए भेजा जाता था। किसी को ठीक से पता नहीं था कि ये दस्तावेज़ किस रूप में थे, या वास्तव में मौजूद भी थे या नहीं, लेकिन डीन और डॉसन ने कुछ काफी विश्वसनीय अनुमान लगाए।

एक बार जब भगोड़ा अपनी झूठी कहानी तय कर लेता था, तो वह टिम वालेन से मिलने जाता था, जो यह तय करता था कि उसे किन दस्तावेजों की आवश्यकता होगी। यदि वह डेनिश व्यवसायी के रूप में यात्रा कर रहा होता, तो उसे एक ऑस्वेइस (Ausweis) प्रमाणपत्र, कम से कम एक यात्रा परमिट और शायद अपनी कंपनी से एक परिचय पत्र की आवश्यकता होती, ताकि उसकी विश्वसनीयता और बढ़ जाए। टिम को दस्तावेजों के लिए आवश्यक व्यक्तिगत जानकारी मिल जाने के बाद, डीन और डॉसन अपना काम शुरू कर सकते थे।

सबसे पहला काम आवश्यक दस्तावेजों की मूल प्रतियां प्राप्त करना था। जालसाज सीधे मूल प्रतियों से काम करते थे और अपनी प्रतियों की सटीकता सुनिश्चित करने के लिए उनका बार-बार संदर्भ लेते थे। अपने संपर्कों और अन्य लोगों की बदौलत टिम वालेन दस्तावेजों का एक संग्रह बनाने में सफल रहे। इनमें से कई दस्तावेज गार्डों से रिश्वत या ब्लैकमेल के जरिए हासिल किए गए थे, जबकि अन्य विदेशी श्रमिकों से भागने के दौरान या परिसर में दिखाई देने वाले किसी भी वाहन से चुराए गए थे। शिविर के गश्ती कुत्तों के प्रभारी गुंडे, हंडफ्यूहरर से कई कागजात और पास प्राप्त किए गए, जबकि सिडनी डाउज़ ने कॉर्पोरल हेसे से नकल करने के लिए दो असली डच कामगारों के पहचान पत्र और कई अन्य पास प्राप्त किए।

अगला काम था प्रतियां बनाने के लिए आवश्यक सामग्री जुटाना। कागज विभिन्न स्रोतों से मिलता था, जैसे कि गार्डों से या वाईएमसीए और रेड क्रॉस के ड्राइंग सेट से, लेकिन कभी-कभी सही मोटाई और गुणवत्ता वाला कागज मिलना मुश्किल होता था। टिम वालेन शिविर में आने वाली सभी नई किताबों की जांच करने लगे ताकि पता चल सके कि उनके अंतिम पृष्ठों का उपयोग किसी काम में किया जा सकता है या नहीं। विदेशों से आने वाला जलरंग का कागज भी उपयोगी होता था, बशर्ते उसे गर्म रेत, चाय या कॉफी से सही रंग दिया जाए।

स्याही के लिए, कभी-कभी जलरंग का उपयोग करना संभव था, लेकिन चूंकि वे टिकाऊ नहीं थे और उनका रंग बदलने की प्रवृत्ति थी, इसलिए पालतू पहरेदारों से असली स्याही प्राप्त करना बेहतर था। बॉब वैन डेर स्टॉक ने अस्पताल में एक पोलिश रसायनज्ञ की मदद से स्याही बनाने का प्रयास किया। कालिख, ग्लिसरीन, ईथर और खनिज तेल के मिश्रण का उपयोग करके, वह एक काली स्याही बनाने में सक्षम था जिसे ब्रश से लगाया जा सकता था और सूखने पर वह जलरोधी हो जाती थी। स्याही के बाद, जालसाजों को इसे लगाने के लिए किसी चीज़ की आवश्यकता थी। संपर्क संगठन विभिन्न पालतू गुंडों से कलम की निबों का एक संग्रह प्राप्त करने में सक्षम था, इसलिए डीन और डॉसन इस मामले में अच्छी तरह से सुसज्जित थे। कुछ जालसाज पेंटब्रश का उपयोग करना पसंद करते थे, जो रेड क्रॉस या वाईएमसीए पार्सल से आसानी से प्राप्त हो जाते थे; वे ब्रश को इस तरह से काटते थे कि केवल चार या पांच बाल ही रह जाते थे।

जाली नोट बनाने की प्रक्रिया समय लेने वाली, पेचीदा और आँखों के लिए कष्टदायक थी। जाली नोट बनाने वालों की संख्या न्यूनतम रखी जाती थी, आंशिक रूप से सुरक्षा कारणों से और आंशिक रूप से इसलिए कि खिड़की के पास वाली मेज पर काम करने के लिए बहुत कम जगह थी। साथ ही, बेहतर रोशनी के लिए उन्हें खिड़की के पास काम करना पड़ता था, जिससे सुरक्षा संबंधी गंभीर समस्याएँ पैदा होती थीं। शुरुआत में, टिम ने खिड़की पर मलमल का एक टुकड़ा लटका दिया, ऊपरी तौर पर मक्खियों को बाहर रखने के लिए, लेकिन वास्तव में ताक-झांक करने वालों के लिए अंदर देखना मुश्किल बनाने के लिए।

ये दस्तावेज़ शुरू में पूरी तरह से हाथ से तैयार किए जाते थे, और हर एक दस्तावेज़ एक ही जालसाज़ का काम होता था। ऐसा माना जाता था कि पैनी नज़र शैली और छपाई में मामूली अंतर को पहचान सकती है, जिससे जालसाज़ी के सफल प्रयास को नाकाम किया जा सकता था। असली दस्तावेज़ों की जालसाज़ी में इस्तेमाल होने वाली लिखावट के लिए, स्याही से भरे एक महीन कलम या ब्रश का प्रयोग किया जाता था। गॉर्डन ब्रेटेल ने एक महीन कलम की नोक का इस्तेमाल करते हुए इन दस्तावेज़ों के लिए ज़रूरी छपाई में महारत हासिल कर ली थी। कुछ अन्य दस्तावेज़ों में अलंकृत, गॉथिक लिपि की आवश्यकता होती थी; यह एलेक्स कैसी की विशेषता थी, जो वांछित प्रभाव प्राप्त करने के लिए एक बहुत ही महीन ब्रश का उपयोग करते थे।

दस्तावेज़ पर छपाई पूरी हो जाने के बाद, अंतिम रूप देने का काम बाकी रह जाता था। कई प्रकार के यात्रा परमिट और पहचान पत्रों के लिए तस्वीरों की आवश्यकता होती थी, इसलिए ज्योफ कॉर्निश और चाज़ हॉल ने एक छोटा स्टूडियो स्थापित किया। कैमरा, फिल्म, कागज और डेवलपिंग रसायन सभी जुगाड़ू गुंडों द्वारा लाए जाते थे, और स्टूडियो में फोटो सेशन के दौरान

उपयोग के लिए कुछ आम नागरिकों के कपड़े भी रखे गए थे। फिर अधिकांश दस्तावेजों पर किसी न किसी प्रकार की मुहर की आवश्यकता होती थी, और इसके लिए जेन्स मुलर ने साबुन के एक टुकड़े से मुहर का सांचा काटा और चांदी के कागज का उपयोग करके उसकी प्रतिकृति बनाई। जॉनी ट्रैविस ने एक सेंटरिंग डिवाइस वाली एक छोटी सी स्टैम्पिंग मशीन बनाई जो दस्तावेजों पर एकदम सटीक छाप छोड़ती थी। रबर स्टैम्प भी जुगाड़ से ही बनाए जाते थे। टिम वालेन ने जूते की एड़ी या आइस हॉकी पक पर स्टैम्प को उल्टा चित्रित किया; फिर एक ऑस्ट्रेलियाई स्क्वाड्रन लीडर ने उस पर नक्काशी की। वह ऑस्ट्रेलियाई अक्सर खुले परिसर में काम करता था और किसी अन्य युद्धकर्मी की तरह ही शौक पूरा करता हुआ दिखता था। अगर कोई परेशानी होती, तो उसे बस अपने सामान को बगल की रेत में दबाना होता और एक किताब निकालनी होती। स्टाम्प पर तारीख और शहर का नाम लिखने के लिए खाली जगह छोड़ी गई थी, जिसे जरूरत पड़ने पर रंग से भरा जा सकता था।

अंत में, दस्तावेज़ को एक आवरण की आवश्यकता थी। लंबे समय से, कुछ दस्तावेज़ों पर लगे कड़े लिनेन के आवरण जालसाज़ों के लिए समस्या बने हुए थे। कई तरीके आजमाए गए, लेकिन किसी से भी टिम संतुष्ट नहीं हुआ। तभी वालेन को शिविर में लस्टी नाम का एक साथी मिला, जो युद्ध से पहले प्रकाशन व्यवसाय में काम करता था। उसने कड़े आवरणों का उत्पादन अपने हाथ में ले लिया, जिन्हें वह नक्काशीदार और रंगीन ट्रेसिंग पेपर को गत्ते पर चिपकाकर बनाता था; तैयार उत्पाद बिल्कुल लिनेन के आवरण जैसा दिखता था। कुल मिलाकर, लस्टी ने ट्रेन यात्रियों के उपयोग के लिए ऐसे बाईस आवरण तैयार किए।

दस्तावेज़ अब पूरा हो चुका था और केवल हस्ताक्षर बाकी थे। यह काम अंतिम समय में किया गया, ताकि दस्तावेज़ की वैधता अवधि का अधिकतम लाभ उठाया जा सके और हस्ताक्षर करने वाले अधिकारी के बारे में जानकारी अद्यतन रहे। किसी पुलिसकर्मी द्वारा रोके जाने और यह पता चलने से बुरा कुछ नहीं हो सकता कि जिस अधिकारी को पिछले सप्ताह आपके अवकाश पास पर हस्ताक्षर करने थे, वह एक महीने पहले हवाई हमले में मारा गया था।

बाकी ज़रूरी दस्तावेज़ों में से ज़्यादातर हस्तलिखित थे। किसी के पास कंपनी के अध्यक्ष द्वारा हस्ताक्षरित परिचय पत्र हो सकता था। उस पर उकेरी गई सुंदर नक्काशी एक नक्काशीदार टूथब्रश के हैंडल से की गई थी, जबकि कंपनी के अध्यक्ष का नाम मार्किंकस के अख़बार पाठकों में से किसी एक ने पता लगाया था। या किसी के पास किसी उत्साही मंगेतर के प्रेम पत्रों का एक छोटा सा बंडल हो सकता था। डीन और डॉसन भेस को मज़बूत करने में मदद करने वाली हर चीज़ तैयार कर सकते थे।

आखिरकार, कई कैदियों द्वारा ले जाए जाने वाले टाइप किए गए फॉर्म तैयार करने में इतना समय लगने लगा कि टिम ने दूसरा तरीका खोजना शुरू कर दिया। उसने पहले ही इंग्लैंड को एक छोटे टाइपराइटर के लिए गुप्त अनुरोध भेज दिया था, लेकिन चूंकि किसी को नहीं पता था कि वह कब आएगा, इसलिए एक और समाधान की आवश्यकता थी। संपर्क संगठन को एक ऐसा गुंडा मिल गया जो आवश्यक दस्तावेजों के मसौदे हैम्बर्ग में अपनी पत्नी के पास ले जाने को तैयार था। उसकी पत्नी ने उन्हें स्टेंसिल पर टाइप किया, जिन्हें फिर चुपके से शिविर में वापस लाया गया। उनकी प्रतियां बनाने के लिए, टिम ने कंबल के कपड़े से ढके लकड़ी के रोलर से एक प्रिंटिंग प्रेस तैयार किया। खनिज तेल और वसा लैंप से निकले धुएं के मिश्रण से बनी स्याही का उपयोग करके, सैकड़ों की संख्या में बहुत अच्छे टाइप किए गए फॉर्म निकाले जा सकते थे।

जाली संगीत बनाने वालों ने झोपड़ी संख्या 120 के एक खाली कमरे में काम शुरू किया, लेकिन जल्द ही वे ऑर्केस्ट्रा के अभ्यास कक्ष के बगल में स्थित रसोई ब्लॉक में चले गए। इसका एक मुख्य फायदा यह था: यदि कोई भी खतरनाक गुंडा बहुत करीब आ जाता, तो काम को वायलिन के डिब्बे में भरकर एक ऐसे सहायक द्वारा इमारत से बाहर ले जाया जाता, जो केवल अभ्यास से लौटता हुआ प्रतीत होता था। यदि कोई कम खतरनाक गुंडा आ जाता, तो जाली संगीत बनाने वाले अपना काम छुपा लेते और कागज़ पर संगीत लिखने में व्यस्त हो जाते।

अक्टूबर 1943 में टिम ने ऑपरेशन को हट 122 के चर्च रूम में और बाद में हट 110 की लाइब्रेरी में स्थानांतरित करने का निर्णय लिया। उसी समय, जासूसी प्रणाली में एक संशोधन किया गया। यह स्पष्ट हो गया था कि जासूस व्यक्तिगत जासूसों पर नज़र रखने लगे थे और जहाँ भी कोई निगरानीकर्ता दिखाई देता, वहाँ तलाशी शुरू कर दी जाती थी। टिम ने जासूसों को पूरी तरह से हटाने का प्रयोग किया, लेकिन एक दिन एडॉल्फ कुछ ज़्यादा ही करीब आ गया और उसे जाली नोट बनाने वाले कमरे की खिड़की से झाँकते हुए देखा गया। सौभाग्य से, शीशों पर जमी नमी के कारण वह कुछ भी नहीं देख सका। यह महसूस करते हुए कि जासूसों के बिना काम करना बहुत खतरनाक था, टिम, एलेक्स कैसी और पॉल ब्रिकहिल, जो जाली नोट बनाने वालों के सुरक्षा प्रमुख थे, ने एक नई प्रणाली तैयार की।

इस व्यवस्था में, मुखबिरों को 103 के दक्षिणी छोर पर, 109 के पूर्वी हिस्से में और जालसाजों के बगल वाले कमरे में तैनात किया गया था। मुखबिर झोपड़ियों के अंदर ही रहते थे, जो जासूसों की नज़रों से छिपे रहते थे, लेकिन उन्हें परिसर के हर कोने पर स्पष्ट नज़र रहती थी। अगर किसी भी दिशा से कोई गुंडा आता, तो दोनों मुखबिरों में से किसी एक की जगह से जालसाजों के बगल वाले कमरे में मौजूद व्यक्ति को संकेत भेजे जाते। वह व्यक्ति दीवार पर दस्तक देता, और जालसाज कुछ ही सेकंड में अपना सामान समेट लेते। देखने वाले किसी भी व्यक्ति को ऐसा लगता था जैसे कुछ हुआ ही न हो।

भागने से पहले के महीनों में, टिम ने सुरक्षा एहतियात के तौर पर अपना सारा सामान डिक सुरंग में छिपाना शुरू कर दिया था। ट्रैविस ने दस्तावेज़ों को सूखा रखने के लिए स्लाइडिंग ढक्कन वाले चार बड़े वाटरप्रूफ डिब्बे बनाए और सारा सामान उनमें पैक कर दिया गया। लेस ब्रोडरिक सुबह सारे कागज़ात निकालता और डीन और डॉसन को देता, फिर दोपहर के भोजन के समय उन्हें वापस सुरंग में ले जाता। दोपहर के भोजन के बाद यही प्रक्रिया दोहराई जाती और आखिरकार शाम को एपेल के आने से पहले उन्हें वापस डिक सुरंग में पहुँचा दिया जाता। इससे थोड़ा अतिरिक्त काम तो हो जाता था, लेकिन यह ज़्यादा सुरक्षित था।

अध्याय **13**

यात्रा की योजनाएँ बनाई जा रही हैं

नवंबर का महीना सागन में सर्दी लेकर आया, उत्तर से ठंडी हवाएँ चलने लगीं। उनके साथ हल्की बर्फ भी गिरी और देखते ही देखते पूरा परिसर बर्फ की हल्की परत से ढक गया। लेकिन इससे जॉन स्टीवंस का सुबह का व्यायाम समूह जारी रखने का सिलसिला नहीं रुका। पिछले कुछ महीनों से वह एपेल के सामने परेड ग्राउंड में कसरत करवा रहे थे और कुछ सैनिकों को कड़ी मेहनत करवा रहे थे। गर्म महीनों में आमतौर पर उनके साथ पंद्रह-बीस लड़के होते थे, जो अलग-अलग तरह के कपड़े पहने होते थे, जैसे पजामा, शॉर्ट्स और तौलिए। कुछ बेहद उत्साही और ऊर्जावान दिखते थे, जबकि कुछ को जागते रहने में मुश्किल हो रही होती थी। अब, जब तापमान शून्य के करीब पहुँच गया था, जॉन अभी भी बाहर थे, पजामा और अंडरवियर पहने हुए। सर्दी आने के साथ ही उनके साथ आने वालों की संख्या कुछ कम हो गई थी और आजकल उनके साथ आमतौर पर केवल दो-तीन उत्साही लोग ही होते थे। इसके बावजूद, वह उन्हें उसी जोश और उत्साह के साथ व्यायाम करवाते थे, जैसे वह किसी बड़े समूह को करवाते थे।

जॉन के साथी दक्षिण अफ़्रीकी जोहान्स गौव्स को सर्दियों का मौसम कुछ कम पसंद था। उन्हें ठंड से नफ़रत थी और अक्टूबर से मार्च के बीच वे ज़्यादातर समय खुद को कंबल में लपेटे रहते थे। थोड़ी-बहुत हंसी-मज़ाक तो होती ही थी, लेकिन उनके रूममेट्स जल्द ही जोहान्स की रात की इस रस्म के आदी हो गए कि वे कपड़े उतारते, पजामा पहनते और फिर बिस्तर पर जाने से पहले अपने सारे कपड़े पहन लेते और कंबल में लिपट जाते।

*

तब तक डेस प्लंकेट और उनके साथियों ने नक्शों की आसान छपाई के लिए एक प्रणाली को परिपूर्ण कर लिया था। इस प्रक्रिया की कुंजी जेली की पट्टियाँ थीं, जो रेड क्रॉस के पार्सलों में भारी मात्रा में आती थीं, और बाइबिल के पतले छिलके या सेलोफेन के पन्ने विभाजक थे। इन साधारण सामग्रियों की मदद से, प्लंकेट, टोनी हेयटर और पोलैंड के एडम कोलनोव्स्की ने यूरोप के सभी हिस्सों के हजारों नक्शे तैयार कर दिए।

पहला कदम आवश्यक क्षेत्रों के नक्शे प्राप्त करना था। ये नक्शे या तो वैध तरीके से प्राप्त जर्मन नक्शों की नकल करके बनाए जाते थे, या गार्डों से रिश्वत लेकर (सीमा चौकियों जैसे संवेदनशील क्षेत्रों के लिए), या फिर नकली पार्सलों में शिविर में भेजे जाते थे। सागान से प्राग तक का मार्ग दर्शाने वाले नक्शों का एक जत्था पुराने जिम के जूतों में छिपाकर शिविर में लाया गया था। नक्शों को लगातार नई जानकारी के साथ अपडेट किया जाता था, और प्लंकेट के संग्रह को जब भी संभव होता, बढ़ाया जाता था। अंततः उन्होंने सागान से दक्षिण में चेकोस्लोवाकिया के टर्नाऊ तक के मार्ग को दर्शाने वाले बारह नक्शों की एक श्रृंखला तैयार कर ली। डेस के लिए एक और बड़ी उपलब्धि शिविर के आसपास के क्षेत्र का एक अच्छा नक्शा प्राप्त करना था, जिसे उन्होंने एक संपर्क से ब्लैकमेल करके और विभिन्न गार्डों से प्राप्त जानकारी के साथ पूरा करके हासिल किया था।

मुख्य मानचित्र तैयार हो जाने के बाद, हरे, काले, लाल, नीले और बैंगनी रंग की स्याही की आपूर्ति की गई। कुछ स्याही टिम वालेन से मिली, जिनके पास जबरन वसूली किए गए स्टाम्प

पैड का अच्छा भंडार था, जबकि अन्य स्याही अमिट पेंसिलों से सीसे के छिलके खुरचकर और उन्हें पानी में उबालकर तैयार की गई। फिर, एक तेज लकड़ी की कलम का उपयोग करके, मानचित्रों को पतले कागज पर बनाया गया। यह काम एडम कोलनोव्स्की की विशेषज्ञता थी, जो युद्ध से पहले मानचित्रकार थे।

नक्शे बनाते समय, एक अन्य कर्मचारी जेली पाउडर में पानी मिलाकर चीनी घोलता था, जिसे बाद में निकालकर फेंक दिया जाता था। फिर जेली के मिश्रण को रुमाल से छानकर चीनी के बचे हुए अंशों को भी निकाल दिया जाता था। अंत में, इसे गर्म करके क्लिम के डिब्बों से बने एक बर्तन में डाला जाता था, जिसका आकार लगभग कानूनी कागज के पन्ने जितना होता था। जब जेली जम जाती थी लेकिन अभी भी गर्म होती थी, तो प्याज के छिलके जैसी पतली मूल प्रति, जिसकी स्याही अभी भी गीली होती थी, जेली के बर्तन पर रख दी जाती थी। कुछ मिनट बाद जब इसे हटाया जाता था, तो जेली पर नक्शे की छाप रह जाती थी। फिर, इस काम के लिए जुटाए गए पतले कागज का उपयोग करके, बस एक कागज को जेली पर रखकर, हल्के से दबाकर, नक्शे की एकदम सटीक रंगीन प्रति बना ली जाती थी। प्रत्येक मूल प्रति से लगभग बीस प्रतियां तैयार होती थीं और फिर उसे दोबारा बनाकर अगले चरण के लिए जेली के एक नए बर्तन पर रखना पड़ता था। मिश्रण को दोबारा गर्म करके और छानकर जेली का एक या दो बार पुन: उपयोग करना संभव था, लेकिन दूसरे या तीसरे उपयोग के बाद गुणवत्ता खराब हो जाती थी। इसी प्रकार, प्रत्येक पैन से बीस से अधिक प्रतियां निकल सकती थीं, लेकिन जैसे-जैसे अधिक प्रतियां छापी जाती थीं, रंग फीके पड़ते जाते थे और उन्हें ठीक करना पड़ता था।

जब नक्शे पूरे हो गए, तो उन्हें क्रमांकित सेटों में विभाजित किया गया, जिसमें प्रत्येक सेट महाद्वीप के एक अलग हिस्से को दर्शाता था। डेस प्लंकेट ने एक छोटी सी किताब में सावधानीपूर्वक नोट किया कि किस भगोड़े को किस सेट की आवश्यकता थी। फिर नक्शों को क्लिम के डिब्बों से बने सीलबंद कंटेनरों में रखा गया और सुरक्षा के लिए डिक में रख दिया गया। प्लंकेट की महत्वपूर्ण नोटबुक कभी भी उनके पास से अलग नहीं हुई।

प्लंकट के संचालन के मुख्य आधार एडम कोलनोव्स्की और टोनी हेयटर थे, जिनमें से एडम मानचित्रों के रेखाचित्र तैयार करने में लगे थे और टोनी हेयटर उनकी पुनरुत्पादन तकनीकों पर काम कर रहे थे। टोनी ने ही पाँच-रंगों वाले मानचित्र बनाने की विधि विकसित की थी और वे इस प्रक्रिया को बेहतर बनाने के लिए लगातार प्रयासरत रहते थे। वे विभिन्न प्रकार के जेली मिश्रणों के साथ घंटों काम करते थे, इस उम्मीद में कि एक दिन वे एक ऐसी जेली बना लेंगे जिससे हजारों छापें प्राप्त की जा सकें।

*

अन्य कई कॉन्टिनेंटल अधिकारियों की तरह, वलोडज़िमिएर्ज़ एडम कोलानोव्स्की के लिए भी कैद कोई नई बात नहीं थी, जो युद्ध में दूसरी बार युद्धबंदी बने थे। दुबले-पतले, नुकीले चेहरे और काले, सीधे बालों वाले एडम एक पेशेवर सैन्य अधिकारी थे, जो सितंबर 1934 में इक्कीस वर्ष की आयु में पोलिश सेना में भर्ती हुए थे। वे धीरे-धीरे पदोन्नति पाते हुए अक्टूबर 1937 में चेल्मनो में तैनात 66वीं इन्फैंट्री रेजिमेंट में कमीशन प्राप्त किया। एक साल से कुछ अधिक समय बाद, कोलानोव्स्की ने वायु सेना में स्थानांतरित होने का फैसला किया और एक पर्यवेक्षक के रूप में प्रशिक्षण प्राप्त किया, जिसमें हवाई सर्वेक्षण का विशेष प्रशिक्षण शामिल था। अगस्त 1939 में एडम को बियाला पोडलास्का से हल्के बमवर्षक विमान उड़ाने वाली 222 स्क्वाड्रन में शामिल किया गया।

सितंबर के अभियान के दौरान कोलानोव्स्की ने बहुत कम कार्रवाई में भाग लिया और 17 सितंबर को उनकी यूनिट को दक्षिण की ओर निकाला गया, जिसके तीन दिन बाद वे रोमानिया में दाखिल हुए। उन्हें और उनके साथी वायुसैनिकों को ड्रैगसानी के एक सेना शिविर में रखा गया,

और अक्टूबर में एडम को अंततः यूगोस्लाविया और ग्रीस होते हुए फ्रांस जाने की अनुमति मिल गई। हालांकि, अपनी यात्रा शुरू करने के कुछ ही समय बाद, उन्हें रोमानियाई पुलिस ने रोक लिया, जिन्होंने उनका पासपोर्ट जब्त कर लिया और उन्हें टर्नू-सेवरिन के एक शिविर में नजरबंद कर दिया। लगभग दो सप्ताह बाद ही वे अपने यात्रा दस्तावेज वापस ले सके और अपनी यात्रा जारी रख सके। वे बुखारेस्ट में पोलिश दूतावास पहुँचने में कामयाब रहे, जहाँ माल्टा होते हुए मार्सिले जाने की व्यवस्था की गई। वहाँ एडम 13 नवंबर, 1939 को पोलिश वायु सेना में फिर से शामिल हो गए।

फ्रांस की लड़ाई के दौरान, कोलानोव्स्की को 11 स्क्वाड्रन में तैनात किया गया था, लेकिन उपकरणों की कमी के कारण यूनिट निष्क्रिय रही। अंततः, काफी उथल-पुथल के बाद, वह इंग्लैंड जाने के लिए मार्सिले लौट आए और 30 जून को वहाँ पहुँचे। एडम को आरएएफ में भर्ती कर लिया गया और प्रशिक्षण के बाद, 10 अक्टूबर, 1941 को उन्हें हेम्सवेल स्थित 301 स्क्वाड्रन में तैनात किया गया। उन्होंने यूनिट के साथ केवल तीन ऑपरेशन किए और 8 नवंबर, 1941 को मैनहेम पर छापे के दौरान उनके वेलिंगटन विमान के मार गिराए जाने पर उन्हें बंदी बना लिया गया।

जब उन्हें एडम कोलनोव्स्की के बारे में थोड़ी और जानकारी मिली, तो भागने की योजना बनाने वाले आयोजकों को उन्हें अपने साथ शामिल करने पर बहुत खुशी हुई। युद्ध से पहले की अपनी सेवा के दौरान उन्हें मानचित्रण तकनीकों का व्यापक अनुभव तो था ही, साथ ही उनका जन्म भी पावलोविस में हुआ था, जो सागन से लगभग साठ मील दूर था। पावलोविस जर्मनी और पोलैंड की सीमा पर स्थित था, और यह इलाका उन लोगों का पसंदीदा स्थान था जो कब्जे वाले लेकिन मित्रवत पोलैंड की तुलनात्मक सुरक्षा प्राप्त करना चाहते थे। जब भागने की योजना नजदीक आती, तो एडम कोलनोव्स्की से सलाह लेना बहुत उपयोगी साबित होता।

*

दिसंबर की शुरुआत में भारी बर्फबारी हुई, साथ ही क्रिसमस के मौसम के ठीक समय पर चॉकलेट के पार्सल की एक खुशनुमा खेप भी आई। मनोरंजन के भी कई साधन उपलब्ध थे। कैरी ग्रांट और कैथरीन हेपबर्न अभिनीत एक और अमेरिकी फिल्म, ब्रिंगिंग अप बेबी, सागन में आ चुकी थी, और थिएटर कंपनी लेस्ली स्टॉर्म के नाटक टोनी ड्रॉज़ अ हॉर्स का मंचन शुरू करने वाली थी। कलाकारों में अर्नोल्ड क्रिस्टेंसन भी शामिल थे, जो एक नौकरानी की भूमिका निभा रहे थे, जिसके बारे में उन्होंने अपने परिवार को बताया था कि वह 'मुश्किल से एक दर्जन शब्द ही बोल पाती है'।

क्रिसमस के दिन हल्की बर्फबारी हुई और अधिकारियों ने आराम किया और त्योहार मनाया। विंग्स डे, माइक केसी और टॉमी थॉम्पसन जैसे कुछ लोगों के लिए यह कैद में बिताया गया पाँचवाँ दिन था; अन्य लोग पहली बार कांटेदार तारों के पीछे रहने के अप्रिय अनुभव से गुज़र रहे थे। कुछ कमरों ने मिलकर क्रिसमस का खाना तैयार किया और कुछ ने तो सफेद दस्ताने पहने वेटर और रसोइयों को भी सेवा में लगाया। नए साल के बाद ठंड का दौर खत्म हुआ, हालांकि शिविर के आइस रिंक को जमाने के लिए ठंड अभी भी काफी थी। नए साल के पहले मैच में, पुराने कैदियों की एक टीम ने नए कैदियों की टीम को हरा दिया, जिसमें जॉर्ज मैकगिल ने पुराने खिलाड़ियों के लिए दूसरा गोल किया। नए खिलाड़ियों ने तुरंत दोबारा मैच की मांग की, लेकिन वे फिर से हार गए।

*

महीने के अंत में, भागने की योजना के भविष्य पर विस्तार से चर्चा हुई। इस दौरान, सभी X

कर्मचारियों के जनमत से चुने गए पाँच लिटिल X सदस्य, निर्णय लेने की प्रक्रिया में भाग लेने के लिए चार सदस्यीय कार्यकारी समिति में शामिल हो गए। इस कदम से कोई भी निर्णय लेने से पहले सभी की राय पूरी तरह से सुनी जा सकेगी। मौजूदा स्थिति के अनुसार, हैरी की सुरंग लगभग सौ फीट लंबी हो चुकी थी, जबकि डिक की केवल साठ फीट ही थी। इसके अलावा, परिसर के पश्चिम में चीड़ के पेड़ों को हटाने का मतलब था कि जंगल तक पहुँचने के लिए डिक की सुरंग को लगभग पाँच सौ फीट लंबा होना पड़ेगा। यह स्पष्ट था कि काम हैरी पर केंद्रित होना चाहिए, और यह भी तय किया गया कि खुदाई जल्द से जल्द फिर से शुरू की जाए, क्योंकि सर्दियों के महीनों में जर्मनों द्वारा सुरंग खोदने की संभावना कम थी। हालाँकि, काम फिर से शुरू होने पर सुरक्षा बढ़ानी होगी, क्योंकि अब परिसर में लगातार नेवले गश्त कर रहे थे, जो टॉम की एक और विरासत थी।

10 जनवरी 1944 को, रोजर बुशेल ने हैरी को फिर से खोलने का फैसला किया। पैट लैंगफोर्ड ने सुरंग को इतनी अच्छी तरह से सील कर दिया था कि उसे खोलने में पूरे दो घंटे लग गए, लेकिन जब इंजीनियर भूमिगत गए, तो उन्होंने सुरंग को आश्चर्यजनक रूप से अच्छी स्थिति में पाया। पंप पर बाईपास वाल्व खुला छोड़ दिया गया था, इसलिए हवा अभी भी ताज़ी थी, और केवल कुछ छोटे रेत रिसाव और चार सपोर्ट फ्रेम थे जो मुड़ गए थे और जिन्हें बदलने की आवश्यकता थी। सभी ट्रॉली रस्सियों को भी नई चार-प्लाई रस्सियों से बदल दिया गया था। वायु प्रणाली में थोड़ा और काम करने की आवश्यकता थी। एयर पंप पर किट बैग सड़ गया था, शाफ्ट के आधार के पास एयर लाइन अवरुद्ध थी, और अन्य जगहों पर भी कुछ छोटे रिसाव थे। हालांकि, सपोर्ट की बनावट के कारण, एयर लाइन तक पहुंचने के लिए फर्श के तख्तों को हटाना असंभव था। प्रत्येक फर्श के तख्ते के मध्य भाग को काटकर निकालना पड़ा और मरम्मत के बाद उसे वापस लगा दिया गया। वेंटिलेशन सिस्टम को उपयोग के लिए उपयुक्त घोषित किए जाने में चार दिन लग गए।

खुदाई का काम पहले की तरह ही चलता रहा, बस खुदाई करने वाली टीमों में कुछ नए लोग शामिल हो गए थे। आइवो टोंडर ने अपनी क्लॉस्ट्रोफोबिया (बंद जगहों से डर) के बावजूद कुछ रातों तक ज़मीन के नीचे काम किया, और सैंडी गन, कुकी लॉन्ग, सिडनी डाउज़ और जॉनी स्टोवर नियमित रूप से खुदाई करने वाले थे। वॉली फ्लॉडी को दो कनाडाई लोगों, स्क्रफ़ी वियर और हैंक बर्कलैंड (जिन्हें फ्लॉडी का यह आदेश कभी समझ नहीं आया था कि रेत के निशान पड़ने के डर से उन्हें नग्न होकर काम नहीं करना चाहिए) के साथ परेशानी होने लगी। जब भी वे खुदाई करते, स्क्रफ़ी का सिर तेज़ी से बाईं ओर मुड़ जाता, जबकि हैंक का सिर दाईं ओर झुक जाता; वॉली सुरंग को सीधा रखने के लिए उन्हें लगातार दो रातों में काम पर लगाता था।

*

खुदाई करने वालों में से एक वह व्यक्ति भी था जो पिछले अप्रैल में हैरी की सुरंग खोदे जाने के समय भी विमान उड़ा रहा था। 26-27 अप्रैल, 1943 की रात को, जब लड़ाकू विमान नॉर्थ कंपाउंड में बस रहे थे, बॉम्बर कमांड का पूरा जोर डुइसबर्ग पर था, और 77 स्क्वाड्रन के एक हैलिफ़ैक्स विमान के नेविगेटर स्टेशन पर, फ्लाइंग ऑफिसर रॉबर्ट कैंपबेल स्टीवर्ट ने रूर घाटी की ओर एक मार्ग निर्धारित किया, जो सर्चलाइटों और तोपों की चमक से जगमगा रही थी। बमवर्षक विमान उत्तर-पश्चिम से आए और लक्ष्य संकेतकों की ओर बढ़ रहे थे जब विमान एक नीली मुख्य सर्चलाइट की चपेट में आ गया। तुरंत ही, अन्य सर्चलाइटों ने हैलिफ़ैक्स को पकड़ लिया और बम गिराए जाने के तुरंत बाद, सटीक एंटी-एयरक्राफ्ट गोले बरसने लगे। बचाव की कोशिशें भी सर्चलाइटों से नहीं बच पाईं, और जब एक सीधी टक्कर से हैलिफ़ैक्स हिल गया, तो चालक दल समझ गया कि अब निकलने का समय आ गया है।

बॉब स्टीवर्ट ने बम-निशानेबाज डग एटर का कंधा पकड़ा और भागने के रास्ते की ओर इशारा

किया, और दोनों फटी हुई हाइड्रोलिक लाइनों के बीच से निकलने के लिए आगे बढ़े, जो गैस के फव्वारों की तरह जल रही थीं। काफी मशक्कत के बाद, आखिरकार वे उसे खोलने में कामयाब हो गए और खुद को बाहर निकाल लिया। एटर दो दिन तक आज़ाद रहा, फिर पकड़ा गया, लेकिन बॉब स्टीवर्ट इतने भाग्यशाली नहीं थे। वह एक अपार्टमेंट इमारत की छत से नीचे गिर गए और जब पुलिस उन्हें हिरासत में लेने पहुंची, तब भी वह मलबे से खुद को निकालने के लिए संघर्ष कर रहे थे।

बॉब स्टीवर्ट का जन्म 7 जुलाई, 1911 को फिन्सबरी पार्क में हुआ था और उनका पालन-पोषण फिंचली और गोल्डर्स ग्रीन में हुआ। युद्ध से पहले वे एक सड़क निर्माण और सुरंग निर्माण कंपनी में काम करते थे, लेकिन युद्ध शुरू होते ही कंपनी बंद हो गई और बॉब ने रॉयल एयर फ़ोर्स (आरएफ़) में भर्ती होने के लिए आवेदन किया। उन्हें उड़ान भरने में कोई विशेष रुचि नहीं थी, लेकिन उन्हें सेना की तुलना में वायु सेना का माहौल कहीं अधिक अनुकूल लगा। हालांकि, उन्हें भर्ती के लिए बुलावे का इंतजार करना पड़ा और इस बीच उन्हें मेट्रोपॉलिटन पुलिस में विशेष कांस्टेबल के रूप में नियुक्त किया गया। दिसंबर 1940 में बॉब को प्रशिक्षण शुरू करने के लिए स्ट्रैटफ़ोर्ड बुलाया गया। दस महीने बाद, सार्जेंट के रूप में, उन्हें 11 ओटीयू में तैनात किया गया और 5 मार्च, 1942 को वे 77 स्क्वाड्रन के साथ ऑपरेशनल ड्यूटी पर आ गए। इसके तुरंत बाद 77 स्क्वाड्रन को कोस्टल कमांड से जोड़ दिया गया और उन्होंने डेवोन के चिवेनोर से व्हिटली विमान उड़ाने शुरू किए। बॉब ने अठारह ऑपरेशन पूरे किए, जिनमें ज्यादातर जहाजी हमले और पनडुब्बी रोधी गश्त शामिल थे, और अगस्त में उन्हें कमीशन प्राप्त हुआ। कुछ समय बाद 77 स्क्वाड्रन बॉम्बर कमांड में वापस आ गया और यॉर्कशायर के एल्विंगटन में इसका पुनर्गठन किया गया।

एल्विंगटन में बॉब स्टेशन के पास अपनी पत्नी डोरिस के साथ रहते थे, जिनसे उनकी मुलाकात 1938 में फिंचली कंट्री क्लब में गोल्फ खेलते समय हुई थी। हर सुबह डोरिस दरवाजे पर खड़ी होकर बॉब को हवाई अड्डे की ओर जाते देखती थीं। वह हमेशा गेट पर रुककर अलविदा कहते थे और जब वह ऐसा करते, तो डोरिस समझ जाती थीं कि वह रात के ऑपरेशन से लौट आएंगे। अप्रैल के अंत में उस सुबह, वह हमेशा की तरह कॉटेज से निकले और गेट पर रुककर डोरिस को खुशी से हाथ हिलाया। लेकिन इस बार, 77 स्क्वाड्रन के साथ अपने सत्ताईसवें ऑपरेशन में, उनका यह छोटा सा शुभ संकेत काम नहीं आया। आखिरकार खबर आई कि बॉब कैदी हैं। फिर, अपने एक पत्र में, उन्होंने डोरिस से एक अनौपचारिक लेकिन अर्थपूर्ण बात कही। बॉब ने लिखा, 'मैं अपने पुराने काम में फिर से हाथ आजमा रहा हूं।' डोरिस को शायद उस समय इसका एहसास नहीं हुआ होगा, लेकिन बॉब उन्हें बता रहे थे कि उन्होंने सड़कें खोदने के बजाय सुरंगें खोदने का काम शुरू कर दिया है।

*

जनवरी के अंत तक हैरी सौ फुट का निशान पार कर चुका था, और पहला आश्रय स्थल, जिसका नाम पिकाडिली रखा गया, बनकर तैयार हो गया था। इंजीनियरों ने अनुमान लगाया कि यह ठंडे क्षेत्र के नीचे स्थित है, और कभी-कभी, अगर आप ध्यान से सुनते, तो ऊपर कंक्रीट के फर्श पर पहरेदारों के बूटों की आवाज़ सुनाई देती थी। हालाँकि, फैलाव की समस्या एक बार फिर गंभीर हो गई थी। जमे हुए परिसर में अक्सर बर्फ की चादर बिछी रहती थी, इसलिए शिविर के चारों ओर रेत बाँटना अब संभव नहीं था। वैसे भी, दिन काफी छोटे हो गए थे, और अंधेरे में परिसर में इधर-उधर घूमते हुए सैनिकों का होना बहुत ही संदिग्ध था। जब अंततः इसका समाधान निकाला गया, तो वह एक्स संगठन द्वारा अब तक के सबसे लोकप्रिय समाधानों में से एक नहीं था।

शिविर का रंगमंच ठोस ईंटों की नींव पर बना था और ढलानदार फर्श के कारण उसके नीचे ढाई से तीन फुट की खाली जगह थी। नेवले नीचे जाकर ताज़ी रेत की जाँच नहीं कर सकते थे,

और अनुमान लगाया गया था कि उस खाली जगह में दो या तीन सुरंगों से निकली मिट्टी समा सकती है। हालाँकि, रंगमंच एक अत्यंत सुरक्षित विशेषाधिकार था, और अभिनय मंडली ने भागने के उद्देश्यों के लिए अपनी सुविधा का उपयोग किए जाने का विरोध किया। ऐसा नहीं था कि वे भागने के विरोधी थे। उनका मानना था, और यह सही भी था, कि रंगमंच शिविर के मनोबल के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था और वे किसी भी ऐसी चीज़ का विरोध करते थे जिससे इसका अस्तित्व खतरे में पड़ सकता था। रोजर बुशेल ने तर्क के दोनों पक्षों पर सावधानीपूर्वक विचार किया और अपना निर्णय लिया: रंगमंच को ही रहने दिया जाएगा।

सबसे पहले, एक सीट (संयोगवश सीट नंबर 13) के नीचे एक गड्ढा खोदा गया और उसके नीचे कैदियों के निकलने के लिए अलग-अलग क्षेत्र बनाए गए। बीच में एक खाई बनाई गई, और आवागमन में आसानी के लिए दोनों ओर छोटी-छोटी खाइयाँ बनाई गईं। फिर कैदियों को निकालने के लिए नए शिफ्ट बॉस चुने गए। जिमी जेम्स और इयान क्रॉस को पूरी योजना का ज़िम्मा सौंपा गया, जबकि अन्य को कामगारों की अलग-अलग टीमों को नियंत्रित करने के लिए नियुक्त किया गया। कुल मिलाकर लगभग अस्सी कामगार थे: पैंतीस सामान ढोने वाले; थिएटर के फर्श के नीचे काम करने वाले बारह लोग; गड्ढे में रेत हटाने और सामान ढोने में मदद करने वाले पंद्रह लोग; और बाकी नियंत्रक के रूप में काम कर रहे थे। शुरू से ही यह स्पष्ट था कि कैदियों को निकालने का काम केवल शाम के समय ही हो सकता है। अगर वे शाम लगभग 6:00 बजे शुरू करते, तो कैदियों को ठीक 10 बजे उनकी झोपड़ियों में बंद करने से पहले निकालने वालों के पास काम करने के लिए पूरे चार घंटे होते। हालांकि, जब रात में चाँद निकला होता, तो काम रोकना पड़ता था; पहरेदार टावरों से सामान ढोने वालों को आसानी से देखा जा सकता था।

जब सब कुछ व्यवस्थित हो गया, तो सिस्टम ने बढ़िया काम किया। शाफ्ट के निचले हिस्से में, प्रत्येक अस्सी से सौ पाउंड वजन वाले रेड क्रॉस किट बैगों में रेत भरी जाती थी। फिर बैगों को ऊपर खींचा जाता, झोपड़ी के अंत में स्थित कमरे तक ले जाया जाता और रास्ते से होते हुए ब्लॉक 109 तक पहुँचाया जाता, जहाँ उन्हें ढोने वालों पर लादा जाता था। ऐसा सुरंग की झोपड़ी में आने-जाने वाले लोगों की संख्या को यथासंभव कम करने के लिए किया गया था। रेत के दो बोरे ढोने वालों के कंधों पर लटकाए जाते थे और उन्हें एक बड़े कोट से ढक दिया जाता था। नियंत्रकों की कड़ी निगरानी में, वे थिएटर तक पहुँचने के लिए विभिन्न रास्तों का अनुसरण करते थे ताकि यातायात बहुत अधिक न हो। कई मायनों में, ब्लॉक 109 से थिएटर तक की यात्रा इस ऑपरेशन का सबसे कठिन हिस्सा था, जैसा कि पॉप ग्रीन ने अनुभव किया। एक शाम पैंतीस पाउंड रेत ले जाते समय, उनका जूता परिसर में फैली हुई पेड़ों की जड़ों में से एक में फंस गया। वे लगभग गिर ही गए थे और गार्डों के सामने रेत के बोरे बिखर गए थे।

कई बार जब परिसर में गश्त कर रहे फेरेट को उसके संपर्क कैदी द्वारा उसके काम से फुसलाकर हटाया जा सकता था, तो रेत का फैलाव बहुत तेज़ी से हो सकता था। ऐसे समय में रेत को सीधे 104 नंबर कमरे से थिएटर तक ले जाया जाता था। (दरअसल, एक ही रात में रेत के फैलाव का रिकॉर्ड ऐसे ही एक मौके पर बना था, जब फेरेट ने अपने संपर्क कैदी के कमरे में दो घंटे बिताए थे, जो संयोगवश हट 104 में था। उस रात, लगभग चार टन रेत, जो तेरह फीट सुरंग के बराबर थी, थिएटर तक ले जाई गई और डाल दी गई।) थिएटर पहुँचने पर, रेत ढोने वालों ने अपने बोरे सीट 13 के नीचे वाले छेद में डाल दिए। भूमिगत कामगारों ने रेत को स्थानांतरित करने के लिए बेसिन का उपयोग किया, और उसे खाइयों में ऊपर-नीचे विभिन्न फैलाव क्षेत्रों तक पहुँचाया। यह गर्म और गंदा काम था, लेकिन पेंगुइन विधि से कहीं अधिक तेज़ था। रेत के फैलाव की प्रक्रिया का अंतिम चरण अगली सुबह बहुत जल्दी हुआ, जब थिएटर तक जाने वाले सभी रास्तों की रेत के निशान के लिए जाँच की गई। पाई गई किसी भी रेत को सावधानीपूर्वक साफ करके छिपा दिया गया।

इन सबके बीच, थिएटर में पहले की तरह ही रिहर्सल चल रही थी। 20 जनवरी को, 'हिट द

एयर' का उद्घाटन हवाई हमले के सायरन की तेज़ आवाज़ के साथ समाप्त हुआ, क्योंकि आरएएफ ने एक बार फिर बर्लिन पर बमबारी की। अपनी झोपड़ियों में लौट रहे सैनिकों ने दावा किया कि उन्हें दूर से आग की लपटें दिखाई दे रही थीं। 'हिट द एयर' के बाद 'ट्रेजर आइलैंड' का मूक अभिनय प्रस्तुत किया गया, जिसमें संकट में फंसी युवतियाँ और साहसी समुद्री डाकू शामिल थे। यह सब बहुत मनोरंजक था।

*

सुरंगों पर काम फिर से शुरू होने के साथ ही शिविर का माहौल काफी खुशनुमा हो गया। जैक ग्रिसमैन ने अपनी माँ को घर पत्र लिखा, 'हम सब पहले से थोड़ा अधिक आशावादी हैं, इसलिए शायद मैं समय रहते आपकी मदद करने के लिए पहुँच जाऊँ।' युद्ध के बाद की दुनिया में आगे बढ़ने की उत्सुकता में, जैक ने अपनी पढ़ाई जारी रखी और जनवरी में फ्रेंच, मैकेनिक्स और एडवांस्ड मैथ की परीक्षाएँ पास कर लीं।

ऐसा प्रतीत होता है कि इस आशावाद से अप्रभावित रहने वाले एकमात्र लोग पूर्वी यूरोप के कुछ अधिकारी थे। शायद इसलिए कि वे पहले ही बहुत कुछ देख चुके थे, उन्हें यह विश्वास करने की इच्छा कम थी कि युद्ध का अंत निकट है। रेने मार्सिकस ने जॉन कैसन से कहा कि उन्हें उम्मीद है कि युद्ध 1947 तक चलेगा, जबकि वैली वैलेंता को पूरा विश्वास था कि युद्ध समाप्त होने से पहले ही उन सभी को गोली मार दी जाएगी। पावेल टोबोल्स्की ने अपनी पत्नी को, जिनसे उन्होंने फरवरी 1940 में मार्सिले में शादी की थी, पत्र लिखकर कहा कि वे शीघ्र पुनर्मिलन की उम्मीद न करें। इस बात से आश्वस्त कि वे अपनी पत्नी और बच्चे को फिर कभी नहीं देख पाएंगे, जेरज़ी मोंडशाइन अक्सर अवसाद के दौर से गुजरते थे। देर रात, हट 110 में रहने वाले अन्य लोग उन्हें घंटों तक गलियारों में इधर-उधर टहलते हुए सुनते थे।

*

फरवरी के मध्य तक हैरी वोरलागर के दूर वाले तार के नीचे, दो सौ फुट की गहराई तक पहुँच चुका था, और लेस्टर स्क्वायर नामक एक दूसरा मध्यवर्ती स्थान बनाया गया। चूंकि यह पूर्णिमा के समय हुआ, जब वाहकों के लिए परिसर में यात्रा करना और फैलना बहुत जोखिम भरा था, इसलिए पूर्णिमा समाप्त होने तक हैरी को बंद रखने का निर्णय लिया गया। इस दौरान, इंजीनियरों ने समय बचाने के लिए धीरे-धीरे ऊपर की ओर खुदाई करने पर फिर से विचार किया, लेकिन इस सुझाव को खारिज कर दिया गया। इस प्रक्रिया के अंतर्निहित खतरों के अलावा, यह माना गया कि ऊपर की ओर खुदाई करने से सुरंग को सीधा रखना और भी मुश्किल हो जाएगा। उन्हें हाल ही में पता चला था कि हैरी दाईं ओर एक फुट टेढ़ा था, इस गलती को सुधारने के लिए बाईं ओर तीस फुट की सावधानीपूर्वक खुदाई करनी पड़ी थी।

बिजली के तार की कमी के कारण भी उन्हें परेशानी हो रही थी, लेकिन यह समस्या चमत्कारिक रूप से हल हो गई। एक दिन बिजली मिस्त्रियों की एक टीम शिविर में लाउडस्पीकर लगाने आई ताकि युद्धबंदियों को जर्मन युद्ध संगीत और युद्ध संबंधी संदेश सुनने को मिल सकें। एक लड़के ने देखा कि उनके पास तार के दो रील हैं, और उन्हें चुराने का तुरंत फैसला किया गया। कैंटन ने एक टीम इकट्ठा की और चोरी को अंजाम देने के लिए विस्तृत योजनाएँ बनानी शुरू कर दीं, तभी एक झोपड़ी के पीछे से उन्होंने रेड नोबल को जेल से लौटते हुए देखा। उसने भी तार के रील देखे और थोड़ा सा रास्ता बदलकर उनके पास से निकल गया। पलक झपकते ही उसने एक रील उठा ली और लापरवाही से उसे कंबल में छिपाकर अपनी झोपड़ी में ले गया। कैंटन और उसके साथियों ने भी अपनी सावधानीपूर्वक बनाई गई योजना के तहत दूसरा रील चुरा लिया और तार को डिक में छिपा दिया ताकि तलाशी के दौरान उसे छिपाया जा सके। हालांकि, कुछ नहीं

हुआ और कुछ दिनों बाद रोजर ने यह निष्कर्ष निकाला कि इलेक्ट्रीशियन नुकसान की रिपोर्ट करने से बहुत डर गए थे।

हैरी को रोशन करने के लिए पर्याप्त से अधिक तार होने के कारण काम जारी रहा, लेकिन तलाशी की संख्या भी बढ़ा दी गई, और खोजी दल तार के सबसे नज़दीकी झोपड़ियों पर ध्यान केंद्रित करने लगे। टाइल वाले चूल्हे के आधार वाले कमरों पर विशेष ध्यान दिया गया, लेकिन कुछ नहीं मिला। शायद इसका कारण यह था कि मार्सेल ज़िलेसन नामक एक ब्रिटिश वायुसैनिक ने अपने पालतू साथी, कभी सतर्क रहने वाले कीन टाइप को, आने वाली किसी भी तलाशी की सूचना देने के लिए मना लिया था, जिसके बदले में वह कभी-कभार भागने के कुछ उपकरण ढूंढकर देता था। एडॉल्फ नामक खोजी दल, जो लगातार इधर-उधर ताक-झांक करता रहता था और सबसे असुविधाजनक जगहों पर पहुँच जाता था, उसे जिम टायरी नामक एक बड़े, लाल रंग के स्कॉटिश व्यक्ति ने पालतू बना लिया था, जो उसे घंटों तक बातें करने में सक्षम था। एक और कर्तव्यनिष्ठ खोजी दल भ्रष्ट हो गया।

हैरी में काम करने वाले मजदूरों को लगातार दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ा। 10 फरवरी को वॉली फ्लॉडी बुरी तरह दब गए, लेकिन फिर भी उन्होंने रिकॉर्ड 12.5 फीट की खुदाई कर दिखाई। फिर शाफ्ट के ऊपर से एक पलंग गिर गया और कुकी लॉन्ग के सिर पर जा लगा, जिससे उन्हें दो दिन तक बिस्तर पर रहना पड़ा। कुछ दिनों बाद, पैट लैंगफोर्ड ने एक और पलंग गिरा दिया और केर-रामसे बाल-बाल बच गए। फिर किसी ने शाफ्ट में एक धातु का जग गिरा दिया; वह फ्लॉडी के सिर से टकराया और एक गहरा निशान छोड़ गया।

तलाशी जारी रही। हट 104 की पूरी तलाशी ली गई, लेकिन कुछ नहीं मिला। फिर वैलेंता के संपर्क में आए वाल्टर, जो दुबला-पतला और चश्मा पहने गुंडा था और पीबर को एपेल पर नज़र रखने में मदद करता था, ने चेतावनी दी कि 110 अगला निशाना होगा। रॉजर ने अपना ठिकाना खाली कर दिया और कार्रवाई का इंतज़ार करने लगा। अगले दिन एपेल में, उसे, जॉर्ज हार्श, वॉली फ्लॉडी और विंग्स डे को अलग कर दिया गया और उनकी तलाशी ली गई। रॉजर ने चतुराई से कुछ ज़रूरी कागज़ात अपने साथियों को दे दिए। गुंडों ने फिर उसका कमरा तहस-नहस कर दिया और किस्मत से उन्हें उसका ठिकाना मिल गया। वह खाली था।

शायद हताशा में आकर जर्मनों ने एक ज्योतिषी को बुलाया, एक धूर्त और चालाक सा दिखने वाला व्यक्ति जो शिविर में इधर-उधर घूमता हुआ भविष्यवाणी करने वाली छड़ी लहराता था। उसे भी हार माननी पड़ी और उपहास के बीच उसे परिसर से बाहर निकाल दिया गया। अगला नंबर स्नैप ऐपल का था। जर्मनों ने बार्थ में एक बार इसका सफलतापूर्वक प्रयोग किया था, लेकिन इस बार आयोजक किसी भी स्थिति के लिए तैयार थे। जैसे ही गुंडों का दल परिसर में घुसा और गिनती शुरू करने से पहले कतार में खड़े होकर गिनती करने में समय बर्बाद करने लगा, पैट लैंगफोर्ड ने अपने कर्मचारियों को बुलाया और कुछ ही सेकंड शेष रहते जाल बिछा दिया।

*

बसंत ऋतु की शुरुआत तक, मोटे लैंपों से निकलने वाला हानिकारक धुआँ श्रमिकों पर बुरा असर डालने लगा था, जिनमें से कुछ को सांस संबंधी मामूली बीमारियाँ होने लगी थीं। डिक की सुरंग के निचले हिस्से में स्थित लकड़ी के काम की कार्यशाला में लंबे समय तक काम करने के बाद, लेस हार्वे को कंजंक्टिवाइटिस (आँखों की सूजन) का गंभीर दौरा पड़ा और उन्हें सुरंग से बाहर ले जाना पड़ा। उनकी जगह लेने के लिए, संगठन ने पोरोकोरू पटापु पोहे को चुना, जो एक मज़ाकिया स्वभाव का छोटा माओरी था और आमतौर पर जॉनी के नाम से जाना जाता था, हालाँकि वह जर्मनों को भ्रमित करने के लिए सभी आधिकारिक प्रपत्रों पर अपना पूरा नाम लिखता था। जॉनी सैगन में हाल ही में आए लोगों में से एक था, लेकिन जैसे ही विली विलियम्स ने उससे बात की, उन्हें पता चल गया कि पोहे एक अथक कार्यकर्ता है।

10 दिसंबर 1914 को न्यूजीलैंड के वांगानुई में जन्मे जॉनी अपने परिवार के फार्महाउस में छह बहनों के साथ पले-बढ़े। वे स्थानीय क्षेत्र और ते औते कॉलेज में लोकप्रिय छात्र थे और अकादमिक रूप से (उनकी एकमात्र कमजोरी माओरी भाषा थी) और खेलकूद में, रग्बी, क्रिकेट, टेनिस और गोल्फ में उत्कृष्ट थे।

ते औते छोड़ने के बाद, वह खेत में काम करने के लिए लौट आए, लेकिन फिर भी उन्होंने खेल और संगीत के प्रति अपने प्रेम को पूरा करने का समय निकाल लिया। उन्होंने मनावातु माउंटेड राइफल्स के साथ टेरिटोरियल्स में दो साल बिताने का भी समय निकाला। 1937 में जब उनके दूसरे बेटे, कावाना का जन्म हुआ, तो पोहे परिवार के लिए यह एक अप्रत्याशित खुशी थी। हालांकि कावाना से उन्हें दो दशकों से अधिक का अलगाव रहा, जॉनी उस नन्हे बेटे से बहुत प्यार करते थे और निस्संदेह उन सभी लड़कियों के बीच एक और पुरुष साथी पाकर खुश थे। विदेश जाने का समय आने पर जॉनी के लिए कावाना को छोड़ना सबसे कठिन था।

हालांकि उन्होंने 12 सितंबर, 1939 को पायलट प्रशिक्षण के लिए आवेदन किया था, लेकिन सितंबर 1940 में प्रारंभिक प्रशिक्षण के लिए बुलाए जाने से पहले जॉनी को एक साल का तैयारी पाठ्यक्रम पूरा करना पड़ा। नवंबर में वुडबोर्न में उड़ान प्रशिक्षण शुरू हुआ, जहां पोहे को 18 जनवरी, 1941 को अपना फ्लाइंग बैज मिला और अप्रैल में वे यूरोप जाने के लिए तैयार थे। जॉनी ऑकलैंड से मिश्रित भावनाओं के साथ रवाना हुए, जैसा कि उनके सैनिक जहाज आरएमएमएस ओरंगी से लिखे पत्रों से पता चलता है। एक ओर, यह सब बेहद रोमांचक और थोड़ा सस्पेंस से भरा था ('मैं एक बड़े साहसिक कार्य की पूर्व संध्या पर हूँ और शायद फिर कभी आपसे न मिल पाऊँ'), लेकिन दूसरी ओर उन्हें अपने परिवार, विशेष रूप से कावाना को छोड़ने का बहुत दुख था ('मैं उस रात गाड़ी में आकर उन्हें अलविदा नहीं कह सका क्योंकि मैं बच्चे की तरह रो रहा था')। उनकी सबसे बड़ी तसल्ली अपने माता-पिता को उन पर गर्व करने का आसन्न अवसर था।

जॉनी को प्रशांत महासागर पार करके कनाडा की यात्रा बेहद आनंददायक लगी। फिजी में उन्हें कुछ शरारती आदिवासी महिलाएं मिलीं ('ये महिलाएं हमें किसी अंधेरी जगह पर घसीटने की कोशिश कर रही थीं, लेकिन कुछ नहीं हुआ') और ग्रैंड पैसिफिक होटल में शानदार पार्टियां हुईं, वहीं क्रिसमस द्वीप पर शार्क मछली पकड़ने और नारियल के दूध के कई गिलास पीने का मौका मिला। आखिरी पड़ाव फैनिंग द्वीप पर था, और जल्द ही अओरंगी जहाज वैंकूवर पहुँच गया। न्यूजीलैंड के लोग कनाडा में ज्यादा देर नहीं रुके, और मई 1941 के अंत तक जॉनी एबिंगडन स्थित 10 OTU में पहुँच गए; व्हिटली विमानों पर प्रशिक्षण तुरंत शुरू हो गया। 21 जुलाई तक वह अपने पहले ऑपरेशन के लिए तैयार थे, जिसमें उन्होंने पेरिस और ऑरलियन्स पर एक हिट-एंड-रन हमले में सह-पायलट के रूप में उड़ान भरी, और कब्जे वाले यूरोप में किसी लक्ष्य पर बमबारी करने वाले पहले माओरी बने। 24 अगस्त को पोहे को यॉर्कशायर के डिशफोर्थ स्थित 51 स्क्वाड्रन में तैनात किया गया।

अगले आठ महीनों में जॉनी ने बाईस ऑपरेशन पूरे किए, और जो लोग उसे पहले से जानते थे, वे याद करते हैं कि उन हमलों ने उसे बदल दिया था। जॉनी की हाज़िरजवाबी और हंसमुख स्वभाव ज़रा भी कम नहीं हुआ, फिर भी वह प्रशिक्षण के दौरान की तुलना में कहीं अधिक परिपक्व और आत्मविश्वासी प्रतीत होता था। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं, क्योंकि उसने ऐसे कई अनुभव झेले थे। कील के ऊपर, उसके व्हिटली विमान के निचले हिस्से में भारी एंटी-एयरक्राफ्ट हमले हुए और वह किसी तरह लड़खड़ाते हुए डिशफोर्थ वापस आ सका। एक और रात, सिल्ट में पनडुब्बी यार्ड पर बमबारी करने के बाद, जॉनी बेस पर जल्दी वापस आने के लिए इतना दृढ़ था कि उसने पूरी तरह से कोहरे से घिरे होने के बावजूद सीधे डिशफोर्थ में उड़ान भरी। कंट्रोल टावर में एक पुराने दोस्त की धमकियों की एक श्रृंखला ने ही जॉनी को व्हिटली को रनवे पर अंधाधुंध उतारने की कोशिश करने के बजाय किसी अन्य हवाई अड्डे की ओर जाने के लिए राजी किया।

जॉनी की प्रतिभा को अनदेखा नहीं किया गया और उन्हें पदोन्नति के साथ-साथ कई संवेदनशील कार्य सौंपे गए। अक्टूबर 1941 में वे फ्लाइट सार्जेंट बने और 27 फरवरी 1942 को उन्होंने व्हिटली विमान का संचालन किया, जिसने ब्रुनेवल स्थित जर्मन रडार स्टेशन पर पैराट्रूपर्स को उतारा। अगले महीने उन्होंने सेंट नाज़ायर पर कमांडो हमले के समर्थन में अभियान चलाया।

एक कार्यकाल पूरा करने के बाद, जॉनी को अप्रैल 1942 के अंत में हनीबोर्न स्थित 24 ओटीयू में फ्लाइंग इंस्ट्रक्टर के रूप में तैनात किया गया। मई में उन्हें कमीशन प्राप्त हुआ और वे कभी-कभार होने वाले अभियानों में भी हिस्सा लेते थे, जैसे कि 25-26 जून को ब्रेमेन पर हुआ 'हजारों का हमला', लेकिन उनका अधिकांश समय प्रशिक्षण देने में व्यतीत होता था।

उसके पास अपने साथी प्रशिक्षकों के साथ स्थानीय बार घूमने-फिरने के लिए काफी खाली समय होता था। वे साइकिल से एक पब से दूसरे पब जाया करते थे, और जॉनी खुद को एक अच्छा-खासा शराबी समझता था, उसे इस बात पर गर्व था कि वह चार सेकंड में एक पाइंट पी सकता है – लेकिन तभी महिला सहायक वायु सेना की एक अधिकारी पब में आई और बोली कि क्या वह भी एक बार पी सकती है। जॉनी को सबसे ज्यादा हैरानी तब हुई जब उसने साढ़े तीन सेकंड में अपना पाइंट पी लिया!

हालांकि जॉनी को हनीबोर्न में जीवन का भरपूर आनंद आता था, लेकिन वह ऑपरेशन से दूर रहने से स्पष्ट रूप से ऊब चुका था, क्योंकि उसे अपने ओटीयू के साथ कभी-कभार ही कोई यात्रा करने का मौका मिलता था। मार्च 1943 में उसे थोड़ा रोमांच का अनुभव हुआ, जब उसका वेलिंगटन विमान बाईं ओर के पंख में आग लगने के साथ दुर्घटनाग्रस्त हो गया, लेकिन ऐसा प्रतीत होता था कि उसे अपनी यूनिट से कहीं और तैनात नहीं किया जा सका, जहां उसने लगभग एक वर्ष प्रशिक्षण कार्यों में बिताया।

आखिरकार, अगस्त 1943 में, जॉनी का तबादला यॉर्कशायर के रफ़ोर्थ स्थित 1663 हेवी कन्वर्जन यूनिट (एचसीयू) में हैलिफ़ैक्स विमानों के रूपांतरण के लिए कर दिया गया। वह जल्दी ही ऑपरेशन में वापस आ गए और जल्द ही उन्हें एक नए दल के साथ तैनात कर दिया गया। हालांकि, हैलिफ़ैक्स विमानों में बदलाव उतना आसान नहीं रहा जितना होना चाहिए था। 8 सितंबर को, एक क्रॉस-कंट्री प्रशिक्षण उड़ान के बाद, लैंडिंग के दौरान जॉनी को एक लाल फ्लेयर दिखाई दिया और उन्हें विमान को ऊपर खींचकर एक और चक्कर लगाने की कोशिश करनी पड़ी। जल्दी ही विमान की शक्ति कम होने लगी और वह पेड़ों की ऊँचाई पर लगभग चक्कर लगा चुके थे, लेकिन अंत में उन्हें बड़े बमवर्षक विमान को पहियों के बल घास पर उतारना पड़ा। हालांकि कोई घायल नहीं हुआ, लेकिन हैलिफ़ैक्स विमान पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया और स्टेशन कमांडर ने जॉनी को खूब फटकार लगाई। एक बेहद अनुभवी फ्लाइंग ऑफिसर पोहे ने उनकी बात को हल्के में लिया, क्योंकि एक हजार घंटे से अधिक पायलट के रूप में उड़ान भरने के बाद, उन्हें वापस ऑपरेशन में लौटना था।

20 सितंबर की देर शाम को, नन्हा माओरी पायलट और उसका नया दल यॉर्कशायर के स्नेथ स्थित 51 स्क्वाड्रन में पहुंचा। कमांडर जॉनी के अनुभव वाले पायलट को पाकर खुश था और उसने अगली रात उसे ब्रेस्ट में एक वैकल्पिक अभियान पर भेज दिया।

22 सितंबर को बॉम्बर कमांड ने दो साल से अधिक समय में हनोवर शहर पर पहले बड़े हवाई हमले के लिए औद्योगिक केंद्र हनोवर को निशाना बनाया। जब 51 स्क्वाड्रन 23,000 फीट की ऊंचाई पर उस क्षेत्र के ऊपर पहुंचा, तो उन्होंने पाया कि लक्ष्य बिंदु बादलों से मुक्त था, लेकिन पूर्वानुमान से कहीं अधिक तेज़ हवाएं चल रही थीं। जॉनी को सामान्य से अधिक समय तक शहर के ऊपर रहना पड़ा। नीचे मौजूद अन्य विमानों से बचने के लिए पैंतरेबाज़ी करने के बाद, उन्होंने अपना गोला-बारूद गिरा दिया और लक्ष्य क्षेत्र से निकल ही रहे थे कि हैली विमान के मध्य भाग में कुछ गंभीर एंटी-एयरक्राफ्ट गोले लगे, जिससे इंटरकॉम खराब हो गया।

विमान तेज़ी से नीचे गिरने लगा और उसके बाद मची अफरा-तफरी में चालक दल के चार

सदस्य पैराशूट से कूद गए, जिससे जॉनी और बम-निशानेबाज डेव वेल्स क्षतिग्रस्त विमान के साथ रह गए और उनका पिछला तोपची, कनाडा के अल्बर्टा निवासी उन्नीस वर्षीय टॉम थॉमसन, अपने बुर्ज में फंस गया। ऐसा लगा जैसे सदियों बाद, जॉनी बड़े जहाज को गोता लगाने से बाहर निकालने और उसे दो हजार फीट की ऊंचाई पर स्थिर करने में कामयाब रहा। वेल्स ने थॉमसन को पिछले बुर्ज से मुक्त कराया और दोनों घर लौटने का मार्ग तय करने के लिए कॉकपिट की ओर चल पड़े। कुछ देर तक सब कुछ ठीक-ठाक चलता रहा, लेकिन जैसे-जैसे उड़ान बढ़ती गई, तीनों को यकीन होता गया कि कुछ बहुत गलत हो रहा है। अचानक उन्हें एहसास हुआ कि वे इंग्लिश चैनल के पार उड़ने के बजाय उसके समानांतर उड़ रहे थे। यह भाग्य का क्रूर खेल था, क्योंकि वे अपना अधिकांश ईंधन पहले ही इस्तेमाल कर चुके थे। उनके पास उतरने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।

चाँद काफी चमकीला था, और जॉनी ने हैलिफ़ैक्स को पानी पर सुरक्षित उतार दिया, जो विमान के आकार को देखते हुए कोई मामूली उपलब्धि नहीं थी। तीनों डूबते हुए बमवर्षक से बाहर निकले और उस छोटी नाव में चढ़ गए जो पंख से अपने आप अलग हो गई थी। वे दो दिन तक तैरते रहे, फिर एक जर्मन विमान ने उन्हें देख लिया, जिसने एक टॉरपीडो नाव को उन्हें लेने और ब्रेस्ट ले जाने का संकेत दिया। लूफ़्टवाफ़े ने उन्हें तुरंत डुलैग लुफ़्ट भेज दिया, और वहाँ से थॉमसन और वेल्स को स्टालैग लुफ़्ट VI भेज दिया गया, जबकि जॉनी को सागन भेज दिया गया, जहाँ वे 6 अक्टूबर को पहुँचे। अगली वसंत ऋतु में उन्हें डिक के कक्ष में काम पर लगा दिया गया।

*

फरवरी के अंत में एक दिन, बिल जेनेन्स कमांडेंटुर में एसबीओ और शिविर के कुछ कर्मचारियों के साथ बैठक की प्रतीक्षा कर रहे थे। कुछ मिनटों के लिए वे कमांडेंट के कार्यालय में अकेले थे और उन्हें यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि तिजोरी खुली हुई थी। मौका न गँवाना चाहते हुए, जेनेन्स तुरंत तिजोरी के पास गए और उसमें रखी कुछ फाइलों को पलटा। उनमें से कई मानक आपूर्ति अनुरोध और कर्मियों की सूचियाँ थीं, लेकिन एक दस्तावेज़, जिसका शीर्षक 'स्टुफे रोमिश III' था, ने उन्हें चिंतित कर दिया। यह बर्लिन स्थित ओकेडब्ल्यू मुख्यालय से आया था और इसमें लिखा था कि ब्रिटिश और अमेरिकियों को छोड़कर, जो भी अधिकारी या एनसीओ भाग निकले, उन्हें दोबारा पकड़े जाने पर पुलिस के हवाले कर दिया जाएगा। उनके खिलाफ क्या कार्रवाई की जाएगी, यह स्पष्ट नहीं किया गया था। बिल तिजोरी में और अधिक जानकारी खोजने ही वाले थे कि बाहरी कार्यालय में कदमों की आहट से वॉन लिंडाइनर के आने का संकेत मिला। बिल ने जल्दी से फाइलें वापस रख दीं और अपनी सीट पर लौट आए।

जेनेन्स को जो मिला, वह युद्धबंदियों के भागने के संबंध में नाजियों की कठोर नई नीति का नवीनतम उदाहरण था। अगर उन्हें तिजोरी कुछ हफ़्ते बाद खुली मिलती, तो शायद उन्हें एक और दस्तावेज़ मिलता, जो बर्लिन स्थित गेस्टापो मुख्यालय से जारी किया गया था और जिसका शीर्षक था 'एक्शन कुगेल' (गोली का फरमान)। इस आदेश में कहा गया था कि सभी गैर-ब्रिटिश और गैर-अमेरिकी भगोड़ों को एक यातना शिविर में ले जाकर मार डाला जाए। हालांकि, फरमान में स्पष्ट रूप से कहा गया था कि ब्रिटिश और अमेरिकी भगोड़ों को हर हाल में सैन्य अधिकारियों को लौटा दिया जाए। शिविर के कर्मचारी इस आदेश से भली-भांति परिचित थे, क्योंकि सुरंग तोड़ने की योजना से कुछ हफ़्ते पहले शिविर में अशुभ अफवाहें फैल रही थीं।

एक दोपहर, सिडनी डाउज़ की मुलाकात सर्किट पर रोजर बुशेल से हुई। सिडनी ने पूछा, 'क्या मैं आपसे कुछ बात कर सकता हूँ, रोजर?'

'बिल्कुल, डायनेमो। क्या खबर है?'

सिडनी ने बात शुरू करते हुए कहा, 'मैंने अभी-अभी हेसे से थोड़ी बात की है। उन्होंने कहा

कि वॉन लिंडिनर और रबरनेक को पूरा यकीन है कि एक बड़ा मौका आने वाला है - उन्हें यह नहीं पता कि कब, लेकिन वे जानते हैं कि यह आएगा।'

'तो फिर गुंडों को पूरे नंबर!' रोजर ने हंसते हुए कहा।

'हमने तुम्हारे बारे में भी बात की, रोजर। तुम और मैं दोनों जानते हैं कि हेस्से के कितने अच्छे संपर्क हैं – लगता है उसे सब कुछ अच्छी तरह पता है। बात ये है: वो कहता है कि तुम निशाने पर हो – वो कहता है कि गेस्टापो तुम्हारे पीछे पड़ी है और उन्हें बस एक बहाना चाहिए। मुझे लगता है कि तुम्हें यहीं रुकने पर विचार करना चाहिए। तुम शिविर के अंदर रहकर भी उतनी ही परेशानी खड़ी कर सकते हो।'

बुशेल ने फिर बोलने से पहले शायद ही कोई क्षणिक विराम लिया हो। 'माफ़ करना, डायनेमो, लेकिन मैं जा रहा हूँ। मैंने इसके लिए बहुत मेहनत की है। सच तो यह है कि इस बार वे मुझे पकड़ नहीं पाएंगे!'

डाउज़ मुस्कुराया। 'मुझे किसी और जवाब की उम्मीद नहीं थी। मैं बस आपको बताना चाहता था।' दोनों चुपचाप, अपने विचारों में खोए हुए सर्किट का चक्कर लगाते रहे।

इसी दौरान, अन्य अप्रत्यक्ष चेतावनियाँ भी फैल रही थीं। पीबर ने चुपके से जॉनी मार्शल को बताया कि उन्हें सामूहिक पलायन से बचना चाहिए क्योंकि गेस्टापो मामले को अपने हाथ में लेने का बहाना ढूंढ रही थी, और इसी तरह की चेतावनियाँ अन्य गुंडों से भी मिलीं। इन अफवाहों के कारण, शिविर में पलायन के खतरों के बारे में कुछ चर्चा हुई। डेस प्लंकेट ने अपने साथियों से कहा कि उसे जीवित लौटने की उम्मीद नहीं थी, लेकिन उसने जोखिमों और परेशानी के महत्व तथा घर लौटने की संभावना का आकलन किया और फैसला किया कि यह सब कुछ इसके लायक था।

'तुम पागल हो,' टिम वालेन ने विरोध जताते हुए कहा। 'जर्मन कभी भी कैदियों को बेरहमी से गोली मारने जैसी निर्दयी हरकत नहीं करेंगे!' पूरे शिविर में टिम का यही मत सर्वमान्य था। अफवाहें और चेतावनियाँ तो ठीक थीं, लेकिन ऐसा कोई ठोस सबूत नहीं था जिससे यह संकेत मिले कि जर्मन इस भागने की घटना से अन्य घटनाओं की तुलना में अलग तरीके से निपटेंगे। शिविर के सभी सैनिकों के लिए, अफवाहें कैदियों और शिविर कर्मचारियों के बीच तनाव का ही हिस्सा थीं और उनका कोई वास्तविक आधार नहीं था। और भागने वालों का इरादा कुछ अस्पष्ट चेतावनियों से विचलित होने का नहीं था।

इसके बजाय, उन्होंने अपनी यात्रा योजनाओं को अंतिम रूप देने में तेज़ी दिखाई। गॉर्डन ब्रेटेल और किंग्सले ब्राउन पहले भी एक साथ यात्रा कर चुके थे, इसलिए उन्होंने फिर से साझेदारी की, इस बार ब्राउन द्वारा बनाई गई एक शानदार योजना का इस्तेमाल करते हुए। वे बल्गेरियाई वानिकी छात्रों के रूप में जाएंगे और अपनी अधिकांश यात्रा जंगलों से होकर करेंगे, उनकी नोटबुक और स्केच पैड उन्हें जंगलों में छिपकर घूमने का एक विश्वसनीय बहाना प्रदान करेंगे। रेने मार्सिकस ने इस पहचान की सिफारिश की थी क्योंकि जर्मनी में कई बल्गेरियाई लोग काम कर रहे थे, लेकिन संभवतः कुछ ही पुलिसकर्मी उनकी भाषा बोलते थे। यह नकली राष्ट्रीयता उनके अजीब लहजे को भी समझाएगी यदि जिज्ञासु जर्मनों द्वारा किंग्सले को स्प्रूस बडवर्म या पाइन बीटल के बारे में बात करने के लिए कहा जाता। ब्रेटेल और ब्राउन को लगभग दस दिनों की पैदल यात्रा के बाद बाल्टिक तट पर स्थित कोलबर्ग पहुंचने की उम्मीद थी। वहां पहुंचकर, उन्होंने एक छोटी नाव चुराने और स्वीडन जाने की योजना बनाई। यात्रा के अंतिम चरण के लिए खुद को तैयार करने के लिए, दोनों ने एक छोटी सी नाव बनाने की मशीन बनाई, जिसे उन्होंने एक झोपड़ी के बाहर स्थापित किया। परिसर में घंटों तक दो स्पष्ट रूप से पागल अधिकारियों को नाव चलाते हुए देखकर गार्ड जरूर हैरान रह गए होंगे।

लेन ट्रेंट अपने पुराने दोस्त और साथी न्यूज़ीलैंडवासी मिक शैंड से मिले, जो ब्रिटेन युद्ध के एक अनुभवी योद्धा थे और जिन्हें डीएफसी से सम्मानित किया गया था। दोनों ने चेक पर्वतमाला को पार करते हुए दक्षिण की ओर जाने और एक बेकर से संपर्क करने की योजना बनाई, जिससे

उन्हें उम्मीद थी कि वह स्विट्जरलैंड जाने का इंतज़ाम कर सकता है। कूकी लॉन्ग, टोनी बेथेल के साथ यात्रा करेंगी, जो एक सुरंग निर्माणकर्ता और मस्टैंग पायलट थे और एक्स संगठन के सबसे युवा सदस्यों में से एक थे। दोनों ने बर्लिन और फिर स्टैटिन जाने का फैसला किया। उन्होंने फ्रांसीसी कामगारों के रूप में यात्रा करने की योजना बनाई, लेकिन अपनी टूटी-फूटी फ्रांसीसी भाषा का उपयोग करने से बचने के लिए, बाल्टिक तट तक मालगाड़ियों पर सवार होकर जाने की उम्मीद की। दो नॉर्वेजियन नागरिक एस्पेलिड और फुगलेसांग, जो मिलकर पाँच भाषाएँ जानते थे, डेनमार्क के कोलिंग में अर्नोल्ड क्रिस्टेंसन के रिश्तेदारों के रास्ते स्वीडन पहुँचने की उम्मीद कर रहे थे। अर्नोल्ड और जिमी कैटानाच, जो जर्मन भाषा में धाराप्रवाह थे, भी उसी दिशा में जा रहे थे। युद्ध के शुरुआती दौर में, रेने मार्सिंकस ने टिम वालेन से मज़ाक में कहा था कि अगर वह कभी बच निकला, तो वह जालसाज़ को अपने साथ ले जाएगा। अब, जैसे-जैसे भागने का समय नज़दीक आ रहा था, रेने ने अपना वादा निभाया। उन्होंने टिम के साथ मिलकर काम करने का फैसला किया, इस तथ्य के बावजूद कि बाद वाले के कमजोर भाषा कौशल एक बाधा बन सकते थे।

विंग्स डे और पावेल टोबोल्स्की की एक अनोखी योजना थी। डे के पास बर्लिन में रहने वाले एक गैर-राजनीतिक जर्मन दंपति का पता था, जिनके यहाँ एक युवा डेनिश किराएदार रहता था। विंग्स एक भगोड़े आयरिश अधिकारी के वेश में और टोब उसके लूफ़्टवाफ़े एस्कॉर्ट के रूप में, रेलगाड़ी से बर्लिन जाएँगे और दंपति के साथ कुछ रातें बिताएँगे। वहाँ पहुँचने पर, वे उस युवा डेनिश व्यक्ति के जर्मनी से भागने के लिए कुछ संपर्कों की उम्मीद कर रहे थे। अगर यह योजना सफल होती, तो विंग्स एक हंगेरियन मैकेनिक बनकर रेलगाड़ी में सवार हो जाता, जबकि टोब लूफ़्टवाफ़े के वेश में फ्रांस पहुँच जाता। यह एक जोखिम भरी योजना थी, लेकिन शायद इतनी साहसी थी कि काम कर जाए।

जिमी जेम्स भी उतने ही साहसी थे। उन्होंने दक्षिण की ओर जाने और हंगरी और उत्तरी युगोस्लाविया से होते हुए डेन्यूब घाटी का अनुसरण करने की योजना बनाई। फिर वे अलग होकर ग्रीस होते हुए तुर्की पहुँचने की कोशिश करेंगे। वे यह लंबी यात्रा अकेले ही करने वाले थे, लेकिन भागने से कुछ सप्ताह पहले, किसी ने सुझाव दिया कि एक ग्रीक अधिकारी इस यात्रा में एक मूल्यवान सहयोगी साबित हो सकता है। सोतिरिस स्कांट्ज़िकास का नाम सामने आया और जब जिमी उनसे मिले, तो उन्हें पता चल गया कि वही उनके लिए सबसे उपयुक्त व्यक्ति हैं।

*

सोतिरिस – या निक, जैसा कि उन्हें शिविर में जाना जाता था – का जन्म 6 अगस्त 1920 को पेलोपोनेशिया के बंदरगाह शहर कलामाता में हुआ था। वे सात बच्चों में चौथे थे। जब वे मात्र दो वर्ष के थे, तब उनका परिवार एथेंस चला गया, जहाँ निक के पिता एक कॉफी शॉप चलाते थे। उनके पास एक बड़ा घर था जिसमें बच्चों के खेलने के लिए एक आंगन और छोटा बगीचा था, और निक एक हंसमुख और चंचल बच्चे के रूप में बड़े हुए। मार्च 1940 में, हाई स्कूल की पढ़ाई पूरी करने के बाद, निक ने अपने बड़े भाई सारंडिस के नक्शेकदम पर चलते हुए सैन्य वायु अकादमी में भर्ती हो गए। एक साल से कुछ अधिक समय बाद, अप्रैल 1941 में, नाजियों ने ग्रीस पर आक्रमण कर दिया, और अकादमी को क्रेते और फिर वहाँ से गाजा में स्थानांतरित कर दिया गया। निक को दक्षिणी रोडेशिया के सैलिसबरी में प्रशिक्षण के लिए भेजा गया था और मार्च 1942 में जब उनके भाई सारंडिस भी वहाँ पहुँचे तो वे बहुत प्रसन्न हुए। दोनों ने साथ में कई खुशनुमा पल बिताए, इससे पहले कि 1942 के अंत में सोतिरिस का काहिरा के पास एक ओटीयू में तबादला हो गया। वहाँ से निक 5 मार्च 1943 को सिदी बर्रानी से हरिकेन विमान उड़ाने वाली 336 स्क्वाड्रन में शामिल हो गए। इस यूनिट ने इटली में मित्र देशों की सेनाओं के उतरने के समर्थन में अभियान चलाए, और इन्हीं अभियानों में से एक के दौरान निक का विमान

मार गिराया गया। 23 जुलाई 1943 को, क्रीट में दुश्मन के ठिकानों पर गोलाबारी करते समय, स्कांट्ज़िकास के हरिकेन विमान पर ज़मीनी गोलीबारी हुई और उसे दुर्घटनाग्रस्त होना पड़ा। उन्हें तुरंत पकड़ लिया गया और एक लंबी यात्रा के बाद वे सागन पहुँचे।

*

जिमी जेम्स को निक को साथी के रूप में पाकर खुशी हुई। छोटा सा ग्रीक हमेशा हंसमुख रहता था, और घनी मूंछों के नीचे अक्सर उसके चेहरे पर एक बड़ी सी मुस्कान रहती थी। दक्षिण की यात्रा में वह एक बहुमूल्य साथी साबित होगा; उसका सांवला रंग और काले, लहराते बाल इस बात को पुख्ता करते थे कि वे ग्रीस में छुट्टियां मनाने जा रहे मजदूर हैं।

पेर बर्ग्सलैंड इससे पहले भी एक बार जेल से भाग चुका था, हालांकि उसे कोई खास सफलता नहीं मिली थी। उसकी पहली भागने की कोशिश 1943 में हुई थी, जब वॉन लिंडाइनर ने घोषणा की थी कि जर्मन वर्दी में भागने वाले किसी भी कैदी को मौत की सजा दी जा सकती है। चुनौती से पीछे न हटने वाले पेर ने एक वर्दी बनवाई और जाली दस्तावेजों के साथ वह गेट की ओर चल पड़ा, लेकिन पास पर फोटो न होने के कारण उसे रोक दिया गया। अपनी बेजोड़ जर्मन भाषा में पेर ने संकोच से जवाब दिया कि वह नया है और उसे अभी तक फोटो बनवाने का मौका नहीं मिला है। इससे गार्ड संतुष्ट हो गया और उसे आगे जाने दिया, लेकिन उस दिन नॉर्वेजियन का भाग्य साथ नहीं दे रहा था। शिविर से निकलते ही उसकी मुलाकात सड़क पर ग्लेम्निट्ज़ से हुई और जर्मन को यह समझने में कुछ मिनट लगे, लेकिन आखिरकार उसे एहसास हुआ कि वह किसके पास से गुजरा है और वह पेर को गिरफ्तार करने के लिए वापस भागा।

बड़े मौके के लिए, पेर ने जर्मन वर्दी पहनने के बजाय नॉर्वेजियन नाज़ी ओलाफ एंडरसन बनकर यात्रा करने का फैसला किया। ओलाफ एंडरसन को फ्रैंकफर्ट-एन-डेर-ओडर स्थित सीमेंस कारखाने से सागन के पास एक गाँव में काम करने के लिए भेजा जा रहा था। यात्रा के इस हिस्से के लिए उसके पास फ्रैंकफर्ट और सागन के बीच यात्रा करने की अनुमति थी। फ्रैंकफर्ट पहुँचने पर पेर अपना पहला पास नष्ट कर देगा और दूसरा पास इस्तेमाल करेगा, जिसमें उसे स्टैटिन स्थित एक निश्चित कार्यालय में रिपोर्ट करने का आदेश दिया गया था।

पंप बनाने के उस्ताद जेन्स मुलर की भी लगभग यही योजना थी, इसलिए एक्स ऑर्गनाइजेशन ने फैसला किया कि उन्हें साथ यात्रा करनी चाहिए। दोनों की जोड़ी बेहद दमदार थी। युद्ध से पहले दोनों ने यूरोप महाद्वीप में व्यापक यात्रा की थी और वे छह यूरोपीय भाषाओं में धाराप्रवाह बोलते थे।

भागने की तैयारी करते समय, दोनों ने कोई कसर नहीं छोड़ी। उन्होंने अपने साथ ऐसा कुछ भी नहीं रखा जिससे वे दोषी साबित हो सकें। उन्होंने अपने नॉर्वेजियन सूटकेस में मोजे और अंडरवियर का एक जोड़ा, जर्मन ब्रेड और मार्जरीन से बने सैंडविच, नॉर्वेजियन टूथपेस्ट और साबुन, रेड क्रॉस के पार्सल से मिले डेनिश सॉसेज और मांस के एक छोटे डिब्बे तक ही सीमित रखा। यात्रा के लिए उनके पास लगभग 160 रीचमार्क थे।

भागने वाले छह लोगों ने प्राग में एक तरह से फिर से मिलने की योजना बनाई थी। डेस प्लंकेट और उनके साथी, चेक लड़ाकू पायलट बेड्रिच 'फ्रेडी' ड्वोरक, इवो टोंडर और जॉनी स्टोवर, और वैली वैलेंता और जॉनी मार्शल, सभी अलग-अलग तरीकों से दक्षिण की ओर जाने का इरादा रखते थे, लेकिन भागने के कुछ दिनों बाद चेकोस्लोवाकिया की राजधानी गबेल में मिलने की व्यवस्था की थी। उन्हें उम्मीद थी कि उन्हें उस होटल मालिक से मदद मिल सकेगी जिसने जॉनी स्टोवर को भागने के बाद सहायता की थी।

92 स्क्वाड्रन के पुराने साथी रोजर बुशेल और बॉब स्टैनफोर्ड-टक ने एक और जोड़ी बनाई। बुशेल को फ्रेंच और जर्मन भाषा का अच्छा ज्ञान था और स्टैनफोर्ड-टक को रूसी भाषा का ज्ञान था, जो उन्होंने अपनी युवावस्था में अपनी आया से सीखा था। शिविर के बाहर की परिस्थितियों

के आधार पर, ये दोनों पूर्व या पश्चिम की ओर जा सकते थे। दोनों रेलगाड़ी से यात्रा करते थे और अपने नागरिक कपड़ों में बिल्कुल सम्मानित व्यापारियों की तरह दिखते थे।

वॉली फ्लॉडी और जॉर्ज हार्श की योजनाएँ बिल्कुल अलग थीं। दोनों ही भागने की योजना में अहम भूमिका निभा रहे थे, लेकिन यूरोपीय भाषाओं में उनकी पकड़ न के बराबर थी, इसलिए उन्हें सुरंग में शीर्ष स्थान मिलने की उम्मीद नहीं थी। वे ऐसे पैदल यात्री बनना चाहते थे जिनके सफल होने की संभावना बहुत कम थी, लेकिन फिर भी वे उपद्रव मचा सकते थे, जो शायद सफल भागने से कहीं अधिक मूल्यवान था। अगर वे शिविर से निकल जाते, तो वॉली और जॉर्ज को खुले में कुछ ठंडी रातें बितानी पड़तीं।

अध्याय **14**

फेरेटों की हड़ताल

जैसे-जैसे छुट्टियां नज़दीक आती गईं, जिमी कैटानाच, एलन रिघेटी और कुछ अन्य ऑस्ट्रेलियाई लोग घर में बने ओइजा बोर्ड के साथ इकट्ठा हुए और भविष्य के रहस्यों को जानने की कोशिश करने लगे। उन्होंने वेंट्रिलोक्विज़्म (पेट से आवाज़ निकालने की एक कमज़ोर कोशिश) की और मेज़ पर कुछ ऐसे झटके भी मारे जिन्हें कोई मानना नहीं चाहता था, लेकिन बोर्ड से उन्हें बस यही जानकारी मिली कि अगले दिन रात के खाने में शायद उन्हें बुली बीफ़ फ्रिटर्स खाने को मिलेंगे।

लगभग उसी समय, जॉनी पोहे सेंसरशिप को चकमा देने में कामयाब हो गया। उसने अपने परिवार को लिखा, 'एक युद्धबंदी के जीवन की शानदार तस्वीरें इंग्लैंड और शायद न्यूजीलैंड में प्रकाशित हुई हैं, और आप उन्हें 'टिटो' (झूठ) मानकर उन पर विश्वास कर सकते हैं।' चूंकि शिविर के सेंसरशिप अधिकारियों में से कोई भी माओरी भाषा नहीं जानता था, इसलिए उन्हें यह एहसास नहीं हुआ कि 'टिटो' का अर्थ 'झूठ' होता है।

हालांकि, सब कुछ इतना आसान नहीं था। डेनिस कॉचरन कुछ अंग्रेज़ों, एक कनाडाई और उरुग्वे के एक ब्रिटिश नागरिक के साथ एक कमरे में रहता था, जिनमें से सभी डेनिस के संपर्क सूत्र के रूप में उसके काम के महत्व को नहीं समझते थे। जब भी उसका खास आदमी आता, तो यह तय था कि बाकी लोग दूर चले जाएंगे और डेनिस को अपने आदमी से अकेले में बात करने देंगे। दुर्भाग्य से, उसके एक साथी को लगता था कि उसका कमरा उसकी निजी, अछूत जगह है और जब भी वह खास आदमी आता, उसे कमरा छोड़ना पड़ता था, जिससे वह नाराज़ रहता था। धीरे-धीरे कॉचरन और उसके साथी के बीच गहरी दुश्मनी पैदा हो गई और एक दोपहर उनके बीच तीखी बहस हुई। बहस खत्म होने के बाद, साथी कुछ देर तक सोचता रहा और फिर डेनिस के पीछे आकर उसकी पीठ थपथपाई। जब कॉचरन मुड़ा, तो दूसरे ने उसे लगभग बेहोश कर दिया और अपने बिस्तर पर लौट गया। कमरे में बाकी लोग कुछ मिनट बाद लौटे और डेनिस को ज़मीन पर बेहोश और खून बहता हुआ पाया, उसकी आँखें बुरी तरह से सूजी हुई थीं और लगभग बंद थीं। युद्धकालीन जर्मनी में बिना किसी की नजरों में आए यात्रा करने के लिए उनकी शारीरिक स्थिति बिल्कुल भी अच्छी नहीं थी।

*

20 फरवरी की सुबह मौसम सुहावना था, जैसा कि नए साल के अधिकांश दिनों में रहा था। केवल कुछ समय के लिए ही इतनी ठंड पड़ी थी कि कैंप की बर्फ की रिंक जम गई थी। लेकिन वह धुंधली सुबह सामान्य से भी अधिक गर्म थी, क्योंकि उस दिन टनल में जगह पाने के लिए बहुप्रतीक्षित ड्रॉ का आयोजन होना था।

कुल मिलाकर 510 नाम लॉटरी में शामिल थे। पहले 100 नाम विशेष रूप से भागने की योजना के नेताओं द्वारा चुने गए थे, जिन्होंने सबसे अधिक योगदान दिया था या जिनके सफलतापूर्वक भागने की सबसे अधिक संभावना थी। बाकी नाम संगठन के सभी कर्मचारियों में से लिए गए थे। इसके अलावा, शिविर के मनोरंजन और प्रशासनिक कर्मचारियों द्वारा आठ नाम प्रस्तावित किए गए थे। हालांकि इन लोगों ने भागने की तैयारियों में सहायता नहीं की थी, फिर भी शिविर के समग्र संचालन में उनके बहुमूल्य योगदान को मान्यता देना उचित समझा गया।

चयन प्रक्रिया में कई अलग-अलग लॉटरी निकाली गईं। अंतिम निकास क्रम के लिए पहले तीस नाम उन लोगों के थे, जिनके आयोजकों की नज़र में सफलतापूर्वक भागने की सबसे अच्छी संभावना थी। वे बिना किसी आपत्तिजनक रेड क्रॉस भोजन या बड़े नक्शों के ट्रेन से यात्रा करेंगे। इस समूह के बाद, चालीस सबसे प्रमुख कार्यकर्ताओं के नाम डाले गए और उनमें से बीस निकाले गए। फिर अगले तीस सबसे प्रमुख कार्यकर्ताओं के नाम डाले गए और उनमें से बीस निकाले गए। पहले सौ को पूरा करने के लिए, पिछली लॉटरी से बचे हुए नामों को फिर से टोपी में डाला गया और अंतिम तीस स्थान आवंटित किए गए। अंत में, शेष चार सौ दस नाम डाले गए और निकास क्रम को पूरा करने के लिए सौ निकाले गए।

दो सौ भगोड़ों की सूची तैयार हो जाने के बाद भी उसमें संशोधन करना आवश्यक था। भागने की रात, पिकाडिली, लीसेस्टर स्क्वायर और निकास शाफ्ट पर कुछ लोग तैनात किए जाने थे जो भगोड़ों को सुरंग से बाहर खींचने का काम करते। इन लोगों को 'हॉलर' कहा जाता था और प्रत्येक व्यक्ति स्वयं बाहर जाने से पहले बीस भगोड़ों को बाहर खींचता था। अंतिम सूची में इस प्रकार बदलाव किया गया कि बीस लोगों के प्रत्येक समूह में तीन अनुभवी सुरंग खोदने वाले हॉलर के रूप में शामिल हों। रेड नोबल और शैग रीस वास्तव में दूसरे सौ लोगों की सूची में शामिल थे, लेकिन उन्हें क्रमशः अठहत्तर और उनहत्तर नंबर आवंटित किए गए ताकि वे हॉलर के रूप में काम कर सकें। इवो टोंडर, टोनी बेथेल और बॉब नेल्सन को भी हॉलर का काम सौंपा गया था।

*

भागने वालों को उनके अंतिम निकास नंबरों की सूचना मिल जाने के बाद, वे अपनी योजनाओं पर आगे बढ़ सकते थे। बिल फोर्डिस ने टॉम ली के साथ जाने की योजना बनाई थी, जो ऑस्ट्रेलिया में जन्मे हैल्टन के पूर्व प्रशिक्षु थे और 1941 में विमान दुर्घटना में मारे गए थे, लेकिन ली का नंबर 40 के दशक में आया, जबकि बिल का नंबर 86 था। परिणामस्वरूप, उन्होंने रॉय लैंगलोइस के साथ मिलकर यात्रा शुरू की, जिनका नंबर भी बाद का था। पॉल रॉयल का नंबर 55 था और चूंकि उनकी कोई विशेष योजना नहीं थी, इसलिए उन्होंने नंबर 54 वाले व्यक्ति से संपर्क किया, जो संयोगवश एडगर 'हंक' हम्फ्रीज़ थे, जो हैल्टन के एक अन्य पूर्व छात्र और दिसंबर 1940 से कैदी थे। अन्य लोगों ने यह सोचकर कि अकेले भागने से कम ध्यान आकर्षित होगा, अकेले यात्रा करने का विकल्प चुना। इनमें से एक फ्लाइट लेफ्टिनेंट अल्बर्ट 'शॉर्टी' आर्मस्ट्रांग थे, जो बोल्टन के मूल निवासी और पेशे से इलेक्ट्रिकल इंजीनियर थे और अगस्त 1942 में उत्तरी अफ्रीका में विमान दुर्घटना में मारे गए थे। शॉर्टी अकेले यात्रा करने वाले कुछ साहसी लोगों में से एक थे, लेकिन अकेले यात्रा करने की संभावना से उन्हें कोई परेशानी नहीं हुई। इसके विपरीत, वह जाने के लिए उत्सुक था।

जब आखिरकार मजबूरी हावी हो गई, तो भागने वालों में से कुछ घबरा गए और सूची से अपना नाम हटवाने की गुजारिश की। पॉल ब्रिकहिल का नाम दूसरे सौ लोगों में था और उसे हैरी सुरंग में जाकर उसका जायजा लेने की इजाजत दी गई। जैसे ही वह प्रवेश द्वार के निचले हिस्से तक पहुंचा और सुरंग को ऊपर से देखा, उसे पता चल गया कि वह आगे नहीं बढ़ सकता – उसका क्लॉस्ट्रोफोबिया (बंद जगहों से डर) बहुत ज़्यादा था। कुछ शर्मिंदा होकर वह रोजर बुशेल के पास गया और सूची से अपना नाम हटवाने के कारण बताए। भागने की रात सुरंग में किसी का घबरा जाना घातक साबित हो सकता था।

'इतनी ईमानदारी दिखाने के लिए धन्यवाद, पॉल,' रोजर ने कहा। 'आज सुबह सूची से बाहर होने वाले आप ग्यारहवें व्यक्ति हैं।'

*

जैसे ही लॉटरी का नतीजा निकला, कैदियों के लिए भागने का विचार अचानक और भी वास्तविक हो गया, क्योंकि उन्हें जेल शिविर की इस सुनसान जगह से निकलने का मौका दिखने लगा था। कैद में बिताए सालों में उन्होंने बहुत कुछ खो दिया था। बेशक, हर गुजरते महीने के साथ पदोन्नति की संभावनाएं धूमिल होती जा रही थीं, और उनमें से जो साहसी थे, वे युद्ध के उन अनुभवों को याद कर रहे थे जिन्हें शायद उन्हें फिर कभी देखने का मौका न मिले। लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण बात यह थी कि उनका जीवन उनके हाथों से निकल रहा था। जिस घर को उन्होंने अपने आखिरी ऑपरेशन से एक दिन पहले छोड़ा था, वह अब पहले जैसा नहीं रहा था। डेनिस कॉचरन की मां की कैद के दौरान मृत्यु हो गई थी, जॉनी स्टोवर की मां गंभीर रूप से बीमार थीं, और बॉब स्टीवर्ट की दोनों बहनों की भी मृत्यु हो गई थी। जिन पुरुषों ने अपनी मंगेतरों को घर पर छोड़ा था, जैसे कि कूकी लॉन्ग और टॉम ली, उनके लिए यह जुदाई सहना बहुत मुश्किल था।

कुछ लोगों के पुराने जीवन के टुकड़े उनसे छिनते जा रहे थे, वहीं कुछ अन्य लोग असहाय होकर देखते रहे जबकि उनका नया जीवन उनके बिना ही आगे बढ़ता रहा। पावेल टोबोल्स्की ने अपने बेटे को कभी नहीं देखा था, जिसका पालन-पोषण उनकी पत्नी स्कॉटलैंड में कर रही थीं। उनके रूममेट अक्सर मज़ाक करते थे कि पोलैंड लौटने पर लड़के को किल्ट पहनने की आदत छुड़ाना मुश्किल होगा। जैक ग्रिसमैन की बेटी, जिसका जन्म 1941 के आखिरी दिन हुआ था, ने अभी-अभी अपना दूसरा जन्मदिन मनाया था और उसने अभी तक अपने पिता को नहीं देखा था। उसके जुड़वां भाई की जन्म के समय ही मृत्यु हो गई थी, यह दुख मैरी ग्रिसमैन को अकेले ही सहना पड़ा था। ऐसी ही घटनाओं से कैद की असली त्रासदी बनती है।

कुछ लोग भविष्य की योजना बनाना कभी नहीं छोड़ते थे। ब्रायन इवांस और जोन कुक की सगाई 1943 में आधिकारिक तौर पर हो गई थी; ब्रायन ने कहा कि उन्हें सिर्फ एक समझ के बजाय हर बात का निश्चित होना ज़्यादा पसंद था। टॉम किर्बी-ग्रीन टैंजियर में मारिया के साथ एक नए जीवन की उम्मीद कर रहे थे। उन्हें अपने एक अमीर चाचा से कुछ ज़मीन विरासत में मिली थी और वे युद्ध के बाद वहाँ बसने की योजना बना रहे थे। उन्हें यह नहीं पता था कि वे क्या करेंगे, लेकिन उन्हें पूरा यकीन था कि कुछ न कुछ तो हो ही जाएगा।

*

हालांकि, कैदियों और आज़ादी के बीच अभी भी कुछ फीट रेत की दीवार थी, और उसे हटाना सबसे पहला काम था। जब वाल्टर ने वॉली वैलेंता को बताया कि रबरनेक मार्च की शुरुआत में दो सप्ताह की छुट्टी पर जा रहा है, तो आयोजकों को हैरी को पूरी तरह से खत्म करने और उस नफरत भरे नेवले के लौटने से पहले उसे पूरी तरह से कैद करने का मौका मिल गया। फिर, उसकी छुट्टी से एक दिन पहले, रबरनेक ने आखिरी वार किया। बिना किसी चेतावनी के, वह और एक सुरक्षा अधिकारी, ब्रॉइली, गार्डों के एक दल को परिसर में ले आए और गालियां देने लगे।

कुल मिलाकर उन्नीस अधिकारियों को बुलाया गया, उनकी गहन तलाशी ली गई और उन्हें लगभग पाँच मील दूर स्थित सहायक शिविर बेलारिया के द्वार से बाहर ले जाया गया। इस तरह की छंटनी आम बात थी, लेकिन इस बार जर्मनों को किस्मत का साथ मिला, क्योंकि उन्होंने एक्स संगठन के कुछ सबसे महत्वपूर्ण लोगों को चुन लिया: वॉली फ्लॉडी, मुख्य सुरंग अभियंता; पीटर फैंसहावे, प्रमुख वितरण अधिकारी; जॉर्ज हार्श, प्रमुख सुरक्षा अधिकारी; किंग्सले ब्राउन; बॉब स्टैनफोर्ड-टक; जिम टायरी; और तेरह अन्य। अगर गुंडों को एक्स संगठन की पूरी संरचना का पता होता, तब भी वे इससे बेहतर लोगों को नहीं चुन पाते।

यह एक बड़ा झटका था, लेकिन भागने की तैयारियों में हुई प्रगति के कारण इसे सहन किया जा सकता था। केर-रामसे ने मुख्य सुरंग अभियंता का पदभार संभाला, और अन्य विभागों के वरिष्ठ अधिकारी निर्धारित अवकाश तक कुछ दिनों के लिए संचालन की निगरानी कर सके। हालांकि, यात्रा योजनाओं में आई बाधा को दूर करना आसान नहीं था, और कुछ लोगों को तुरंत

कोई वैकल्पिक व्यवस्था करनी पड़ी।

गॉर्डन ब्रेटेल ने अपने रूममेट और साथी जालसाज़ हेनरी पिकार्ड से संपर्क किया और पिकार्ड की मातृभाषा का लाभ उठाते हुए एक नई योजना बनाई। वे फ्रांसीसी मज़दूरों के रूप में डैनज़िग जाएंगे और स्वीडन ले जाने वाले जहाज़ की तलाश करेंगे। डैनज़िग में बड़ी संख्या में फ्रांसीसी मज़दूर मौजूद थे, इसलिए बंदरगाह पहुँचने पर उन्हें कुछ मदद मिलने की उम्मीद थी। टॉम किर्बी-ग्रीन के साथी को भी इस अभियान में शामिल किया गया था, इसलिए उन्हें भी कुछ और इंतज़ाम करने पड़े। गॉर्डन किडर ने डिक चर्चिल के साथ रोमानियाई लकड़हारे बनकर जाने की योजना बनाई थी, लेकिन एक्स ऑर्गनाइज़ेशन ने फैसला किया कि किडर को किर्बी-ग्रीन के साथ मिलकर स्पेनिश मज़दूरों के रूप में जाना चाहिए। डिक चर्चिल इस योजना पर सहमत हो गए और बॉब नेल्सन के साथ जुड़ गए। यह व्यवस्था संतोषजनक थी, हालाँकि इतने देर से इतने बड़े बदलाव करना किसी को पसंद नहीं आया।

*

अपने रूसी भाषी साथी के बिना, रोजर बुशेल ने पहले अकेले यात्रा करने का फैसला किया और फिर लेफ्टिनेंट बर्नार्ड मार्शल विलियम शेइडहाउर के साथ मिलकर यात्रा करने का निर्णय लिया। शेइडहाउर एक मृदुभाषी फ्रांसीसी अधिकारी थे, जो दिखने में बॉब टक जितने अंग्रेज़ नहीं थे। लगभग पाँच फुट नौ इंच लंबे, नीली आँखों और भूरे बालों वाले बर्नार्ड, एक्स संगठन के खुफिया विशेषज्ञों में से एक थे, जो अपने गृह क्षेत्र में विशेषज्ञता रखते थे। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह थी कि वे सीमा के एक विशेष क्षेत्र को अच्छी तरह जानते थे। उनके पिता ने प्रथम विश्व युद्ध के बाद पैलेटिनेट पर कब्ज़ा करने वाली मोरक्को की पैदल सेना रेजिमेंट की एक बटालियन की कमान संभाली थी, और बर्नार्ड का जन्म 28 अगस्त, 1921 को सारब्रुकन के पास लैंडौ में हुआ था।

बर्नार्ड जब छोटे थे तभी उनके पिता सेवानिवृत्त हो गए और परिवार अपने गृहनगर ब्रेस्ट लौट आया, जहाँ बर्नार्ड ने हाई स्कूल में पढ़ाई की। वे एक आकर्षक, उमंगभरे और गरिमामय तथा लगभग कुलीन स्वभाव के लड़के थे और ब्रेस्ट के हाई स्कूल में लोकप्रिय हो गए। युवा शेइडहाउर हाई स्कूल की पढ़ाई पूरी कर रहे थे जब 1940 की गर्मियों में जर्मन सेना ब्रेस्ट पहुँची। उन्होंने स्नातक होने के बाद पायलट प्रशिक्षण लेने की योजना बनाई थी, लेकिन उनके पिता ने उन्हें ब्रिटेन भागने की सलाह दी, इसलिए बर्नार्ड जिब्राल्टर के रास्ते इंग्लैंड पहुँचने की उम्मीद में दक्षिण की ओर बेयोन चले गए। हालाँकि, वे सेंट जीन डी लूज़ से आगे नहीं बढ़ पाए और उन्हें ब्रेस्ट लौटने के लिए मजबूर होना पड़ा।

निडर होकर, बर्नार्ड ने पांच अन्य लोगों के साथ ला पेटिट अन्ना नामक एक छोटी नाव में इंग्लैंड जाने की योजना बनाई। 19 अक्टूबर, 1940 को, वे कॉर्नवाल के लिए डौर्ननेज़ बंदरगाह से रवाना हुए। हालांकि, कुछ ही दिनों में, उनकी नाव एक भयंकर तूफान में फंस गई, और उन्होंने तूफान से बचने के लिए अपना सारा ईंधन खर्च कर दिया। तूफान तो गुजर गया, लेकिन वे छह लोग असहाय थे और कई दिनों तक बहते रहे। कुछ समय बाद, उनका भोजन और पानी खत्म हो गया, और वे फिर भी बहते रहे। आखिरकार, बारहवें दिन, उन्हें एक स्कॉटिश मालवाहक जहाज ने देखा, जिसने उन्हें भूख, प्यास और ठंड से अधमरा अवस्था में बचा लिया और उन्हें इंग्लैंड ले गया।

उस भयानक घटना के एक सप्ताह से भी कम समय में, बर्नार्ड को फ्रांसीसी वायु सेना में भर्ती कर लिया गया। उन्होंने उड़ान प्रशिक्षण पूरा किया और मार्च 1942 में उन्हें 53 OTU में तैनात किया गया। मई के अंत में एक विमान दुर्घटना के बाद उन्हें कुछ समय के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया, लेकिन 24 जून को उन्हें प्रसिद्ध 242 स्क्वाड्रन में तैनात कर दिया गया, जिसके साथ उन्होंने अपना पहला ऑपरेशन किया। 4 सितंबर को बर्नार्ड का तबादला 131

(फ्रांसीसी) स्क्वाड्रन में कर दिया गया। उस शरद ऋतु में यह यूनिट काफिले की गश्त और इंग्लिश चैनल पार करने के अभियानों में व्यस्त थी, और बर्नार्ड ने कुछ ही हफ्तों में चालीस से अधिक उड़ानें पूरी कीं।

11 नवंबर, 1942 को, वह और उनकी यूनिट सोम्मे नदी के मुहाने पर गश्त के लिए अपने स्पिटफायर विमानों में वेस्थैम्पनेट से रवाना हुए। उन्हें कुछ नहीं मिला, लेकिन लौटते समय वे घने क्यूमुलस बादलों के समूह में फंस गए। तीन विमानों के पहले दल ने बाईं ओर मुड़कर बादलों के समूह से बच गए, लेकिन ब्लू सेक्शन, जिसमें बर्नार्ड शेइडहाउर तीसरे स्थान पर उड़ान भर रहे थे, बादलों में एक सीधी रेखा में जा घुसा। यह काफी खतरनाक उड़ान थी, लेकिन तब तक ज्यादा चिंताजनक नहीं हुआ जब तक कि बर्नार्ड ने अचानक अपने सामने एक टेलप्लेन को उभरते हुए नहीं देखा। विमान का अगला हिस्सा नीचे करते हुए, वह बाईं ओर गोता लगाने लगे, लेकिन विमान से टकराने पर उन्हें एक जोरदार धमाके की आवाज सुनाई दी। दो हजार फीट की ऊंचाई पर बादल से बाहर निकलते ही, बर्नार्ड अपनी जान बचाने के लिए भगवान का शुक्र मना रहे थे कि तभी उनका इंजन बंद हो गया। फिर उन्होंने देखा कि उनके प्रोपेलर ब्लेड से लगभग अठारह इंच गायब थे। बिना किसी हिचकिचाहट के शेइडहाउर ने अपने बुरी तरह क्षतिग्रस्त स्पिटफायर को छोड़ दिया, आसानी से पैराशूट से नीचे उतरे और अपनी छोटी नाव में चढ़ गए। बाद में, रॉयल नेवी के वालरस फ्लाइंग बोट ने उसे गीले लेकिन unharmed हालत में बचा लिया।

एक हफ्ते बाद, 18 नवंबर को, बर्नार्ड फिर से सक्रिय हो गए और केन-चेरबर्ग रेल लाइन पर ट्रेनों की तलाश करने लगे। उन्होंने और उनके साथी ने चार इंजनों को निशाना बनाया, लेकिन घर लौटते समय, बर्नार्ड के स्पिटफायर विमान में खराबी आने लगी, संभवतः किसी ट्रेन के मलबे से क्षतिग्रस्त हो गया था। यह महसूस करते हुए कि वह कभी इंग्लैंड नहीं पहुँच पाएंगे, उन्होंने निकटतम भूमि की ओर रुख किया, जो संयोगवश चैनल द्वीप समूह में जर्सी द्वीप था। उन्होंने आपातकालीन लैंडिंग की और जर्मन सैनिकों ने उन्हें बचा लिया।

उनकी पहली पूछताछ थोड़ी पेचीदा थी। उनके नाम से उत्सुक होकर, पूछताछ करने वालों की दिलचस्पी तब और बढ़ गई जब उन्हें पता चला कि बर्नार्ड का जन्म जर्मनी में हुआ था। इस बात को अपनी फाइलों में दर्ज करते हुए, लूफ़्टवाफ़े ने उन्हें सागन के हवाले कर दिया।

शेइडहाउर को एक्स ऑर्गनाइज़ेशन के खुफिया विभाग के लिए उपयोगी होने की खुशी थी, लेकिन रोजर का ध्यान उसकी जन्मभूमि पर केंद्रित हो गया। बचपन में बर्नार्ड लैंडौ के आसपास की पहाड़ियों और खेतों में खेलता था और युवावस्था की पैनी नज़र से अपने आसपास की हर चीज़ को देखता था। उसके अतीत में कुछ ऐसा हो सकता है जो एक दिन फ्रांस में सफलतापूर्वक प्रवेश करने की कुंजी साबित हो।

*

रबरनेक की कुर्सी ठंडी होने से पहले ही, छंटनी की भरपाई के लिए संगठन में बदलाव कर दिए गए थे। अब सुरंग में पहले से कहीं ज़्यादा लोग काम कर रहे थे: दो मुख्य द्वार पर; दो-दो बीच के आश्रय स्थलों में; और एक प्रवेश द्वार पर। मार्च के पहले नौ दिनों में, उन्होंने सुरंग के आखिरी 100 फीट की खुदाई की, जिसमें निकास द्वार के आधार पर अठारह फीट लंबा एक कक्ष भी शामिल था। 4 मार्च को, श्रमिकों ने रिकॉर्ड चौदह फीट सुरंग खोदी। आखिरी कक्ष के पूरा होने के बाद, सर्वेक्षकों ने नीचे जाकर सुरंग को ध्यान से मापा। उन्होंने अनुमान लगाया था कि जंगल के किनारे तक की दूरी 335 फीट है, और उनके मापों से पता चला कि हैरी एक शाफ्ट से दूसरे शाफ्ट तक 348 फीट लंबा था। निकास द्वार पेड़ों के अंदर अच्छी तरह से होना चाहिए।

अब बारी थी सबसे मुश्किल काम की। यह तय किया गया कि लगभग सतह तक खुदाई की जाए, और भागने की रात दो फीट मिट्टी हटाई जानी थी। गिरने का खतरा बहुत ज़्यादा था, इसलिए सबसे अनुभवी खुदाई करने वालों ने यह काम किया। यह इतना मुश्किल काम था कि

इसे पूरा करने में 14 मार्च तक का समय लग गया। उसी दिन एपेल के बाद, जॉनी बुल और रेड नोबल सुरंग में नीचे उतर गए ताकि आखिरी कुछ फीट की खुदाई करके निकास शाफ्ट की छत को सहारा दे सकें। जैसे ही वे निकास सीढ़ी पर चढ़े, सुरंग में एक गहरी और तेज़ गड़गड़ाहट गूंज उठी।

'हे भगवान, ये सब क्या था?' बुल ने फुसफुसाते हुए कहा। कुछ ही सेकंड बाद उनके चारों ओर एक और गड़गड़ाहट सुनाई दी और दोनों ने एक-दूसरे को हैरानी से देखा। नोबल ने सबसे पहले बोलना शुरू किया।

'उस सड़क पर कोई चीज़ ज़रूर चल रही होगी। या तो वह बहुत तेज़ आवाज़ वाला ट्रक था या हम सड़क के बहुत करीब हैं!' कनाडाई ने कहा। 'हमें यह छोटा-मोटा काम निपटाकर रॉजर से बात कर लेनी चाहिए।'

खुदाई शुरू करने से पहले, जॉनी ने टूटी हुई बाड़ की पन्नी ली और उसे ऊपर की ओर उठाकर मिट्टी की मात्रा नापी। तभी उसे दिन का दूसरा झटका लगा। पन्नी सतह से टकराने से पहले छह इंच से ज़्यादा अंदर नहीं जा सकी। वह वापस नीचे उतरकर रेड के पास गया, जो औजारों के साथ बैठा था।

"हमारे और खुली जगह के बीच शायद छह इंच मिट्टी ही बची है," उसने जल्दी से कहा। "अच्छा हुआ कि मैंने फावड़ा चलाना शुरू नहीं किया।" जॉनी सीढ़ी पर वापस चढ़ गया और छत बनाने के लिए दो तख्तों को फंसाया और फिर उनके पीछे रेत भर दी। रेड ने आखिरी सहारा भी लगा दिया, और इस तरह निकास द्वार को सुरक्षित कर दिया गया ताकि कोई आवारा गुंडा उस पर पैर न रख दे।

दोनों चुपचाप काम कर रहे थे, और अपनी खोजों के बारे में सोच रहे थे। सुरंग का सतह के इतने करीब होना चिंताजनक था, लेकिन खतरनाक नहीं। छह इंच मिट्टी इतनी काफी होनी चाहिए कि अगर कोई संतरी उस पर पैर रख दे तो सुरंग खोखली न सुनाई दे। लेकिन ट्रकों की गड़गड़ाहट कहीं ज्यादा खतरनाक थी। अगर ट्रक सच में उतने ही करीब थे जितना सुनाई दे रहा था, तो सुरंग का निकास सड़क से बीस फीट से भी कम दूरी पर, एक खुले मैदान के बीचोंबीच था। इसका मतलब था कि हैरी कम से कम तीस फीट दूर हो सकता था।

उस रात भागने की योजना के नेताओं ने इस खोज पर चर्चा की। उन्होंने सर्वेक्षण टीमों द्वारा लिए गए मापों की फिर से समीक्षा की, और गणितज्ञों ने अपनी गणनाओं की पुष्टि करने के लिए हैरी के पास वापसी की। सब कुछ सही प्रतीत हुआ, और तेज गड़गड़ाहट का कारण रेत के गुणों को माना गया।

जॉनी और रेड के सुरंग से निकलने के बाद, जो भी चीज़ें बिल्कुल ज़रूरी नहीं थीं, उन्हें बाहर निकाल लिया गया और या तो जला दिया गया या डिक में छिपा दिया गया। पैट लैंगफोर्ड ने सुरंग को सील कर दिया और फिर उसके चारों ओर की ज़मीन को रगड़कर साफ़ किया ताकि तख्ते फूल जाएँ और दरारें बंद हो जाएँ। वह यह काम दिन में दो बार तब तक करता रहा जब तक कि सुरंग टूट नहीं गई। अगले दिन, रबरनेक छुट्टी से लौटा और नेवलों के एक झुंड के साथ 104 पर उतरकर अपने आने की सूचना दी। हमेशा की तरह, उन्हें कुछ नहीं मिला।

हैरी की मुहर लगने के साथ ही शिविर में उत्साह और उम्मीद का माहौल छा गया। कई कैदियों ने अपने घर भेजे पत्रों में इस भावना को व्यक्त किए बिना नहीं रह सके। ब्रायन इवांस ने अपनी मंगेतर जोन को लिखा, 'वह महत्वपूर्ण दिन जिसका हम सभी बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं, हमारी सोच से भी कहीं अधिक निकट है।' टिम वालेन ने अपने भाई को लिखा, 'हम सभी कुछ महीनों में घर लौटने की उम्मीद कर रहे हैं।' जॉन एफ. विलियम्स थोड़े अधिक व्यावहारिक थे और उन्होंने अपने माता-पिता से सिगरेट या तंबाकू न भेजने का अनुरोध किया, जबकि हेनरी पिकार्ड ने अपने परिवार को बताया कि उन्हें फिलहाल किसी भी प्रकार की चित्रकारी सामग्री की आवश्यकता नहीं होगी।

फिर भी, सामान्य स्थिति बनाए रखना बेहद ज़रूरी था। इयान क्रॉस थिएटर के नीचे बने

विश्राम क्षेत्रों की सफाई करते हुए थोड़ा समय निकालकर ईस्ट कंपाउंड में एक फुटबॉल मैच देखने गए। वहाँ उन्होंने अपने पुराने दोस्त और भागने में साथ देने वाले रॉबर्ट की से बातचीत की और आने वाली छुट्टियों के बारे में उत्साह से बातें कीं। कैंप थिएटर में 'आर्सेनिक एंड ओल्ड लेस' नाटक चल रहा था और टोनी हेयटर इस साल के बगीचे की योजना बना रहे थे। सब कुछ सामान्य लग रहा था।

हर दिन नए कैदी सागन में आ रहे थे, और डुलैग लुफ्ट से निकाले गए लोगों में से एक हाल ही में पकड़ा गया फ्रीबर्गर नाम का एक कनाडाई भी शामिल था।

'फ्रीबर्ग...' ड्यूटी ऑफिसर ने प्रशंसा भरे स्वर में कहा। 'यह एक अच्छा जर्मन नाम है।'

'मैं कनाडा से हूँ,' नवागंतुक ने बिना रुके जवाब दिया, 'और सारे अच्छे जर्मन वहीं रहते हैं!'

*

20 मार्च की सुबह कड़ाके की ठंड और तेज़ हवा चल रही थी, और जैसा कि अक्सर ऐसी सुबहों में होता था, शुरुआती अपील परेड ग्राउंड में नहीं, बल्कि झोपड़ियों की पहली दो पंक्तियों के बीच खुली जगह में हुई। लोग धीरे-धीरे झोपड़ियों से बाहर निकले और अपनी-अपनी जगह पर बैठ गए; एलेक्स कैसी, डेस प्लंकेट और बाकी के मिलनसार पागल लोग झोपड़ी संख्या 103 और 110 के बीच अपनी-अपनी जगहों पर धीरे-धीरे पहुँचे, ड्यूटी ऑफिसर का इंतज़ार करते हुए बातें करते और हँसते रहे। उस सुबह टिम वालेन उनके साथ नहीं था। पिछले कुछ दिनों से वह अपील के दौरान अपनी चारपाई पर ही सो रहा था ताकि बीमारों की सूची में उसका नाम दर्ज हो। इसके पीछे असली मकसद यह था कि वह डीन और डॉसन द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले रबर स्टैम्प के भारी बैग पर नज़र रख सके। सच कहें तो, उन्हें हर समय डिक में ही रखा जाना चाहिए था, और अगर बुशेल को इस बारे में पता चल जाता तो बहुत बड़ी मुसीबत खड़ी हो जाती। लेकिन टिम को अभी भी बहुत काम बाकी होने की चिंता थी और उसने फैसला किया कि डिक के पास से टिकटों को अंदर-बाहर करने की प्रक्रिया में बहुत अधिक कीमती समय बर्बाद हो रहा था। पूरे परिसर में इसी तरह की सुरक्षा चूकें हो रही थीं, जो केवल गति बनाए रखने के लिए की गई थीं।

प्लंकट और कैसी तैयारियों की प्रगति के बारे में खुशी-खुशी बातचीत कर रहे थे, तभी पहरेदारों का एक दल परिसर में घुस आया और हट 120 को घेर लिया। जाहिर है, तलाशी की योजना बनाई गई थी।

"खैर, ये तो थोड़ा मुश्किल है," एलेक्स ने कराहते हुए कहा। "अब लगता है हमें घंटों यहीं खड़े रहना पड़ेगा। कम से कम आज सुबह हमारे शावर तो चल रहे हैं – इससे थोड़ी राहत तो मिलेगी!"

अचानक, प्लंकेट का चेहरा पीला पड़ गया और उसने कैस्सी का हाथ पकड़ लिया, उसका दूसरा हाथ उसकी कमीज़ की जेब में जमा हुआ था। 'हे भगवान!' उसने हांफते हुए कहा, 'मेरी नक्शे वाली किताब! मैंने उसे अपने बिस्तर पर ही छोड़ दिया होगा। उसमें उन सभी के नाम हैं जो बाहर जा रहे हैं और उन्हें जिन नक्शों की ज़रूरत होगी।' एक पल के लिए, प्लंकेट घबरा गया। अगर वह छोटी सी नोटबुक जर्मनों के हाथ लग जाती, तो पूरी भागने की योजना बर्बाद हो जाती। और बेचारे डेस को ही इसके लिए दोषी ठहराया जाता।

हालांकि, प्लंकेट एक यथार्थवादी व्यक्ति थे और उन्होंने तुरंत खुद को संभाला। उनका दिमाग काम करने लगा और वे उस बहुमूल्य पुस्तक को वापस लाने की योजना बनाने लगे। आश्चर्यजनक रूप से कम समय में, उन्होंने एलेक्स को अपनी योजना का खाका सुनाया। यह सब दो बातों पर निर्भर था: टिम वालेन अभी भी झोपड़ी के अंदर था; और उनकी तयशुदा शावर पार्टी। जल्द ही डेस ने झोपड़ी से कुछ और लोगों को इकट्ठा किया और योजना को अमल में लाया।

बड़े आराम से और एक चंचल सीटी बजाते हुए, वह झोपड़ी संख्या 120 की ओर बढ़ा और

कमरे में मौजूद गार्ड को आवाज़ दी। उसने विनम्रता से गार्ड को बताया कि इस झोपड़ी के लोगों को उस सुबह स्नानघर जाना था, लेकिन वे अपने साथ एपेल पर्वत पर स्नान किट लाना भूल गए थे। क्या गार्ड कृपा करके अपनी किट अपने लॉकर से निकालकर उसे दे देगा? झोपड़ी में आगे बढ़ते हुए, अन्य लोगों ने भी यही सवाल पूछा, और जल्द ही अलग-अलग गार्ड छोटे-छोटे थैले और बंडल बाँटने लगे।

जब प्लंकट का गार्ड अनुमति लेने के लिए अपने वरिष्ठ अधिकारी को बुलाने गया, तो डेस ने खिड़की के ठीक नीचे अपने बिस्तर पर लेटे वालेन के कान में फुसफुसाकर किताब के बारे में बताया और मौका मिलते ही उसे बाहर फेंक देने को कहा। गार्ड डेस की ओर मुड़ा और कहा कि वह ज़रूरी सामान बाँट देगा। प्लंकट ने मुस्कुराते हुए धन्यवाद दिया और गार्ड को गलियारे में बने अपने लॉकर की ओर इशारा किया। गार्ड के कमरे से निकलते ही टिम बिस्तर से उछलकर उठा और नक्शे वाली किताब उठा ली। उसने उसे अपने रबर स्टैम्प वाले बैग में ठूँसाया और सारा सामान अपने शावर बैग में भरकर गलियारे से लौटते ही गार्ड को दे दिया। फिर अनजान संतरी ने खिड़की से सारा सामान डेस को दे दिया, जिसने कृतज्ञतापूर्वक बंडल ले लिया और ज़रूरी बचाव उपकरण को अपनी कमीज़ में सुरक्षित रूप से भरकर वापस आग के कुंड की ओर चल पड़ा। उसके बाद उन दोनों पागलों ने उस बाल-बाल बचने की घटना का ज़िक्र फिर कभी नहीं किया; उसे भूल जाना ही बेहतर था।

*

सुरंग बनकर तैयार हो जाने के बाद, आयोजकों को छुट्टी के लिए सबसे उपयुक्त तारीख तय करनी थी। अमावस्या महीने के अंत में थी, इसलिए 23 से 25 तारीख तक का समय सबसे अच्छा था। 25 तारीख को तुरंत खारिज कर दिया गया। चूंकि यह शनिवार था, इसलिए ट्रेन यात्रियों को रविवार की रेल व्यवस्था का पालन करना पड़ता। इसलिए 23 तारीख की रात या 24 तारीख की रात का विकल्प बचा। शुक्रवार और शनिवार की रेल व्यवस्था में कोई अंतर नहीं था, इसलिए दोनों में से कोई भी दिन उपयुक्त था।

हालांकि, अभी भी कई अंतिम तैयारियां बाकी थीं। 20 मार्च को, क्रम्प केर-रामसे ने भागने वालों द्वारा ले जाए जाने वाले सभी बक्सों का निरीक्षण किया ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे सुरंग से आसानी से गुजर सकें। उनमें से कुछ काफी जर्जर हालत में थे, क्योंकि उन्हें शुबिन में शुरुआती दिनों में ही हासिल किया गया था।

फिर ब्रीफिंग का एक अंतहीन दौर शुरू हुआ। बाईस तारीख से शुरू होकर, क्रम्प और जॉनी मार्शल ने सभी भागने वालों को सुरंग से निकलने का तरीका समझाया।

मार्शल ने गरजते हुए कहा, 'ट्रॉली पर बिल्कुल सीधा लेट जाओ, और भगवान के लिए अपना सिर नीचे रखो। देखने के लिए कुछ नहीं है, इसलिए ऊपर देखने की कोशिश भी मत करो, क्योंकि अगर तुमने देखा तो तुम्हारा सिर टकरा जाएगा और सारा सामान नीचे गिर जाएगा। अपने केस सीधे अपने सामने रखो और अपनी कोहनियों को अंदर रखो, वरना फ्रेम टूट जाएगा। और चाहे कुछ भी हो जाए, ट्रॉली को मत पलटना!'

कमरे के पीछे से एक व्यक्ति ने दबी आवाज़ में हाथ उठाया। एक श्रोता ने पूछा, 'अगर ट्रॉली पलट जाए तो क्या होगा, जॉनी?' कमरे में थोड़ी घबराहट महसूस करते हुए जॉनी मुस्कुराया और शांत स्वर में बोला।

“अगर आप मेरी बताई बातों का पालन करेंगे तो ऐसा नहीं होना चाहिए। लेकिन अगर ऐसा हो जाए, तो सबसे पहले याद रखें, घबराएं नहीं – जैसे ही आप घबराएंगे, आप छटपटाने लगेंगे और कोई फ्रेम गिरा देंगे। जितना हो सके सावधानी से ट्रॉली से उतरें और पास के किसी सुरक्षित ठिकाने तक रेंगकर जाएं। ट्रॉली पर वापस चढ़ने की कोशिश न करें, और ट्रॉली को सुरंग में न छोड़ें – उसे अपने पीछे खींचते हुए ले जाएं! कोई और सवाल?” कोई सवाल न देखकर जॉनी ने

समूह को शुभकामनाएं दीं और कमरे से बाहर निकल गया ताकि क्रम्प अगले समूह को पूरी बात दोबारा समझा सके।

*

सबसे महत्वपूर्ण ब्रीफिंग मार्शलों को दी गई थी, जिन्हें दस-दस लोगों के समूहों को परिसर से दूर ले जाने के लिए नियुक्त किया गया था। अधिकांश को पश्चिम की ओर जाना था, लेकिन कुछ समूह रेल लाइन के साथ दक्षिण की ओर त्शीब्सडॉर्फ की ओर भी जा रहे थे। एक तरह से मार्शल भागने की पूरी प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण कड़ी थे। यदि वे अपने काम में विफल हो जाते और शिविर के पास किसी मुसीबत में फंस जाते, तो पूरा अभियान बर्बाद हो सकता था। इसी कारण टोनी बेथेल, जैक ग्रिसमैन, हैंक बर्कलैंड, लैरी रीवेल-कार्टर और बाकी मार्शलों ने ब्रीफिंग को ध्यान से सुना और बार-बार अभ्यास का अभ्यास किया।

प्रत्येक मार्शल अपने दस आदमियों के आने तक जंगल में इंतज़ार करता और फिर जंगल में निकल पड़ता। कीन टाइप ने मार्सेल ज़िलेसन को जंगल के रास्तों और चारों दिशाओं में पेड़ों के फैलाव के बारे में पूरी जानकारी दी थी, इसलिए उन्हें जाने के रास्ते का अच्छा अंदाज़ा हो गया था। सबसे पहले उन्हें शिविर से कुछ सौ गज की दूरी पर स्थित एक छोटे से रोशन परिसर के चारों ओर से होकर जाना था। ऐसा माना जा रहा था कि यह या तो गोला-बारूद का भंडार था या बिजली का संयंत्र, लेकिन आयोजकों को पूरा यकीन था कि इससे हर कीमत पर बचना चाहिए। फिर समूह को सागन परिसर के अन्य परिसरों को पार करना था, एक संकरी सड़क को पार करना था और रेलवे लाइन की एक शाखा तक पहुँचना था। वे इसका अनुसरण तब तक करते जब तक वे मुख्य उत्तर-दक्षिण लाइन पर नहीं पहुँच जाते, जहाँ वे अलग हो जाते। दूरी एक मील से थोड़ी अधिक थी।

वहाँ से भागने वालों को अपने दम पर आगे बढ़ना था और उन्हें विभिन्न बाधाओं को पार करने का रास्ता खुद ही खोजना था। दक्षिण की ओर जाने वालों को एक मुख्य सड़क और हर्म्सडॉर्फ और त्शिरंडोर्फ के छोटे गाँवों को पार करना था, इससे पहले कि वे अपनी पहली बड़ी बाधा, मुख्य बर्लिन-ब्रेस्लाउ ऑटोबान तक पहुँचें। पश्चिम की ओर जाने वालों को सोराऊ से निपटना था, जो आकार में सागन के समान एक बड़ा शहर था, जबकि पूर्व की ओर जाने वालों को स्प्रॉटौ से निपटना था, जो एक और अच्छा-खासा शहर था। केवल उत्तर की ओर पैदल चलने वालों की यात्रा अपेक्षाकृत आसान थी - जब तक कि वे सागन से लगभग तीस मील उत्तर में स्थित ओडर नदी तक नहीं पहुँच गए। शिविर में हाल ही में मिली जानकारी से पता चला कि नदी में बाढ़ आई हुई थी और इसे पार करना बहुत मुश्किल होगा।

समय का पाबंद होना ज़रूरी था, इसलिए ट्रेन यात्री जंगल से अपना रास्ता खुद बनाते थे और उन्हें यात्रा के लिए स्पष्ट निर्देश दिए जाते थे। उन्हें लगभग एक चौथाई मील उत्तर-पूर्व की ओर चलना होता था और फिर स्टेशन के आगे उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर जाने वाली सड़क ढूंढनी होती थी। इस सड़क के किनारे एक बाड़ थी जो स्टेशन के प्रवेश द्वारों से सटी हुई थी। स्टेशन में प्रवेश के तीन रास्ते थे। सबसे सुविधाजनक रास्ता प्लेटफार्मों के पूर्व में पटरियों के पार जाने वाला रास्ता था, लेकिन अगर यह संभव न होता, तो स्टेशन के पश्चिम में एक ओवरहेड पैदल मार्ग था। केवल तभी भागने वाले लोग सबवे का इस्तेमाल कर सकते थे, जो पटरियों के नीचे से होकर मुख्य बुकिंग हॉल में निकलता था। यह रास्ता सबसे व्यस्त और इसलिए सबसे खतरनाक था और इसका इस्तेमाल केवल अंतिम उपाय के रूप में किया जाना था।

इसके अलावा, प्रत्येक भगोड़े को उनकी यात्रा योजनाओं के अनुसार, क्षेत्र के एक या अधिक विशेषज्ञों द्वारा विशेष जानकारी दी जाती थी। उदाहरण के लिए, जो लोग दक्षिण की ओर चेकोस्लोवाकिया जा रहे थे, उन्हें वैली वैलेंता या रीसेनगेबिर्गे पर्वत श्रृंखला (चेक-जर्मन सीमा पर स्थित पर्वत) से आए किसी अन्य चेक अधिकारी से जानकारी मिलती थी, जो उन्हें अच्छी तरह से

जानते थे। उन्हें चेक भाषा में यह कहना भी सिखाया जाता था, 'मैं अपनी माँ की मृत्यु की कसम खाता हूँ कि मैं एक अंग्रेज अधिकारी हूँ,' और उन्हें आश्वासन दिया जाता था कि इस शपथ पर देश में कहीं भी विश्वास किया जाएगा।

उन्हें विंग कमांडर जॉन एलिस ने भी जानकारी दी, जो खुले में जीवित रहने के विशेषज्ञ थे और उन्होंने कठिन यात्रा को आसान बनाने के लिए कुछ उपयोगी सुझाव दिए। स्विट्जरलैंड जा रहे लोगों ने रोजर बुशेल और जॉनी स्टोवर की बातें सुनीं, जिन्होंने सीमा पर अपने अनुभवों के बारे में बताया, और उन्हें सीमा पर सुरक्षा चौकियों के बारे में जानकारी दी गई जो ज़िलेसन ने कीन टाइप से प्राप्त की थी। उस मददगार सूत्र ने उन्हें उन खाद्य पदार्थों की सूची भी दी जो राशन कार्ड के बिना प्राप्त किए जा सकते थे और डैनज़िग और स्टैटिन में स्वीडिश जहाजों के लिए आरक्षित बंदरगाहों के लिए दिशा-निर्देश भी दिए।

अंत में, रॉजर 104 नंबर के शौचालय में सभी भागने वालों से मिला। उसने मार्शलरों के संबंध में किए गए इंतज़ामों के बारे में आत्मविश्वास से बताया और कुछ संपर्क पते दिए। दक्षिण की ओर जाने वालों के लिए, चेक सीमा के ठीक अंदर एक बेकर का पता और प्राग के उस होटल मालिक का नाम था जिसने पिछले साल जॉनी स्टोवर की मदद की थी। रॉजर ने स्टैटिन में एक वेश्यालय का पता भी दिया, जो स्वीडिश नाविकों द्वारा अक्सर इस्तेमाल किया जाता था। यह पता 1942 में शुबिन को कोड में भेजा गया था। उसने सभी को शुभकामनाएं दीं और फिर ट्रेन यात्रियों में से प्रत्येक से बात करने के लिए रुक गया। बुशेल ने उन्हें विभिन्न जर्मन रीति-रिवाजों की याद दिलाई और समय सारिणी और किराए के बारे में उपलब्ध जानकारी दी। कीन टाइप ने सागन स्टेशन से सभी ट्रेनों का विवरण प्रदान किया था और विभिन्न स्रोतों से वैलेंता समय और कीमतों की एक पूरी अनुसूची बनाने में सक्षम थी। इससे ट्रेन यात्री शिविर छोड़ने से पहले ही अपनी यात्रा की योजना बना सकते थे।

*

इस समय तक, अधिकांश आवश्यक व्यवस्थाएँ हो चुकी थीं। लगभग तीन हज़ार नक्शे छपवाकर समूहों में बाँट लिए गए थे, और जॉनी ट्रैविस ने पुराने खाने के डिब्बों और सोल्डर से धातु की पानी की बोतलें बना ली थीं। हट 112 में, कैंटन के रसोइये सैकड़ों चार-औंस के डिब्बों में तैयार किए जाने वाले भागने के मिश्रण को मिलाने में व्यस्त थे। ये मिश्रण दो प्रकार के थे, दोनों ही आहार विशेषज्ञ डेविड लुबॉक की विधि से बनाए गए थे: एक चीनी और अनाज का मिश्रण; और दूसरा कोको, चॉकलेट, वसा, चीनी और क्लिम से बना एक पूर्व-पका हुआ ठोस पदार्थ। पूर्व-पके हुए मिश्रण का प्रत्येक डिब्बा दो दिनों के लिए आवश्यक पोषण प्रदान करने के लिए पर्याप्त था। कैदियों को छह-छह डिब्बे दिए गए, और ट्रेन यात्रियों को चार डिब्बे दिए गए, हालाँकि कई लोगों ने डिब्बे ले जाने से मना कर दिया, क्योंकि तलाशी लेने पर वे तुरंत भागे हुए युद्धबंदियों के रूप में पहचाने जा सकते थे।

जैसे-जैसे भागने का समय नज़दीक आता गया, कई लड़कों ने घर चिट्ठियाँ लिखीं, कुछ को उम्मीद थी कि यह कैद से उनकी आखिरी चिट्ठी होगी। जॉर्ज वाइली ने कनाडा में अपने एक दोस्त को लिखा, 'मुझे हमारे एक युद्ध नाटक में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है, और मैं अपनी भूमिका को अच्छी तरह निभाने को लेकर थोड़ा घबराया हुआ हूँ... शायद आपसे उम्मीद से जल्दी मुलाकात हो जाए।'

23 मार्च की सुबह तक ज़मीन पर अभी भी छह इंच बर्फ जमी हुई थी, लेकिन ऐसा लग रहा था कि आखिरकार सर्दी का दौर खत्म हो गया है। हवा में एक नई नरमी छा गई थी और हल्की-सी बर्फ पिघलनी शुरू हो गई थी। वसंत का आगमन स्पष्ट था। हवा में अभी भी हल्की ठंडक थी, लेकिन यह ठंड से ज़्यादा बिजली जैसी थी, क्योंकि सभी जानते थे कि अगले कुछ दिनों में सर्दी का दौर खत्म होने वाला है। आशावादियों की यह राय तब और पुष्ट हुई जब एक्स संगठन के

नेताओं को एक और बैठक के लिए धीरे-धीरे और घुमावदार रास्ते से हट 104 की ओर जाते देखा गया। हट 104 की सीढ़ियों पर चढ़ने वालों में से एक व्यक्ति उन बैठकों में नियमित रूप से नहीं आता था और जो लोग उसे जानते थे, उनके लिए उसकी उपस्थिति महत्वपूर्ण थी।

नया चेहरा फ्लाइंग ऑफिसर लेन हॉल का था, जो आरएएफ मौसम विज्ञान शाखा में थे। उन्हें यह दुर्भाग्यपूर्ण गौरव प्राप्त था कि वे सागन में उन गिने-चुने अधिकारियों में से एक थे जो मार गिराए जाने के बजाय डूब गए थे। नाइजीरिया से इंग्लैंड ले जा रहे उनके जहाज को कैरिबियन सागर में टॉरपीडो से उड़ा दिया गया था, और लेन को वापस जमीन पर आने से पहले चार सप्ताह तक एक यू-बोट पर कैदी के रूप में रहना पड़ा। जर्मन स्पष्ट रूप से उनके साथ क्या करें, यह नहीं जानते थे, इसलिए उन्होंने उन्हें लगभग दो महीने तक डुलैग लुफ्ट और एक नौसैनिक पारगमन शिविर के बीच रखा, और अंत में उन्हें लुफ्ट III में रखने का फैसला किया। संगठन इस निर्णय से खुश था, क्योंकि उन्हें एक प्रशिक्षित मौसम पूर्वानुमानकर्ता की सख्त जरूरत थी।

चूंकि संगठन के सभी सरगनाओं को स्थिति का पता था, इसलिए पहला सवाल लेन से पूछा गया।

'लेन, अगले कुछ दिनों के लिए हालात कैसे दिख रहे हैं?' रोजर ने धीमी आवाज़ में पूछा।

'दरअसल, मौसम काफी अच्छा है,' लेन ने कहना शुरू किया। 'जैसा कि आप जानते हैं, अभी अमावस्या है, और अगले कुछ रातों तक घने बादल छाए रहेंगे जिससे अंधेरा और भी गहरा हो जाएगा। मुझे लगता है कि तापमान ज़्यादा मददगार नहीं होगा, लेकिन हवा चलने से शोर दब जाएगा। मेरे पास जो जानकारी है, उसके आधार पर मैं इससे बेहतर कुछ नहीं बता सकता।'

'क्या आप मुझे कुछ दीर्घकालिक योजना दे सकते हैं?' रोजर ने पूछा।

लेन ने सिर हिलाया। 'माफ़ करना, रॉजर। जर्मनी का मौसम बहुत ही खराब हो सकता है, और अभी यह कहना जल्दबाजी होगी कि सर्दी पूरी तरह से खत्म हो गई है।'

रॉजर ने एक हल्की सी आवाज़ निकाली और अपने लेफ्टिनेंटों की ओर देखा। यह स्पष्ट था कि वह आगे बढ़ना चाहता था। 'ठीक है, हमें कल सुबह तक पक्का फैसला करने के लिए इंतजार करना होगा, लेकिन मुझे लगता है कि अगर मौसम नहीं बदला तो हमें कोशिश करनी चाहिए। किसी को कोई आपत्ति है?'

कमरे में मौजूद सभी लोग रॉजर को अच्छी तरह जानते थे और समझ जाते थे कि उसने कब मन बना लिया है, और यह उन्हीं में से एक मौका था। सबने सिर हिलाया। टिम वालेन ने कहा कि उसे सभी जाली दस्तावेजों पर मुहर लगाने और हस्ताक्षर करने के लिए जितना हो सके उतना समय चाहिए, और केर-रामसे को सुरंग में अंतिम तैयारियां करने के लिए कम से कम आधा दिन चाहिए था। इसके अलावा और कुछ नहीं था।

बैठक समाप्त होने के बाद, जॉनी मार्शल रोजर से बात करने के लिए वहीं रुक गया।

'उन मेहनती लोगों का क्या होगा, रोजर?' उसने पूछा। 'जंगलों में अभी भी तीन फीट बर्फ जमी है – इन हालातों में उनके बचने की कोई उम्मीद नहीं है।'

बुशेल दृढ़ थे। 'यह एक जोखिम है जो उन्हें उठाना ही होगा। हम अगली अमावस्या तक हैरी को रोके रखने का जोखिम नहीं उठा सकते। आपने जाल देखा ही होगा - यह हर दिन और विकृत होता जा रहा है। वैसे भी हमारा समय सीमित है। अगर हमने जल्द ही कोई कदम नहीं उठाया, तो संभावना यही है कि हम सब कुछ खो देंगे।'

'ट्रेन से यात्रा करने वालों को अभी बाहर क्यों न निकाल दिया जाए और मौसम सुधरने तक हैरी को बंद क्यों न कर दिया जाए? पैदल यात्रियों के लिए एक महीने बाद बेहतर मौका होगा।'

'चलो जॉनी,' रॉजर ने कहा। 'तुम्हें पता है कि अगर हमने सुरंग का एक बार भी इस्तेमाल किया तो वह किसी बड़े तलाशी अभियान में बच नहीं पाएगी। इसके अलावा, यह सब कुछ या कुछ भी नहीं वाली स्थिति है। पूरी योजना एक ही बार में बड़ी संख्या में भागने वालों को बाहर निकालने पर निर्भर करती है – कुछ ट्रेन यात्रियों से काम नहीं चलेगा।'

इस पर आगे चर्चा करना व्यर्थ था, खासकर तब जब मार्शल जानता था कि बुशेल के सभी तर्क सही थे। फिर भी, इस बातचीत ने बिग एक्स को वॉकरों की समस्या पर पुनर्विचार करने के लिए मजबूर कर दिया, और दोपहर भर इस पर विचार करने के बाद, उसने विंग्स डे से सलाह ली। उसने विंग्स को बताया कि वह ऐसा निर्णय लेने से दुखी है जिससे हार्डर्सर्स के अवसरों को खतरा हो, लेकिन उसके पास कोई अन्य विकल्प नहीं था।

विंग्स ने तुरंत जवाब दिया। 'हम दोनों जानते हैं, रॉजर, कि अच्छे से अच्छे समय में भी हिम्मत दिखाने वालों के खिलाफ हालात हमेशा प्रतिकूल ही होते हैं। हम दोनों ने अतीत में काफी पैदल यात्रा की है - तुम भी मेरी तरह जानते हो कि सबसे अच्छी परिस्थितियों में भी सफलता की संभावना हज़ार में एक होती है। इसके अलावा, कोई ठंड से नहीं मरेगा - अगर हालात बिगड़ते हैं तो वे खुद को पुलिस के हवाले कर सकते हैं। कूलर में आमतौर पर पर्याप्त गर्मी होती है!'

विंग्स की बड़ी सी मुस्कान देखकर रोजर मुस्कुराया। उसने गंभीर स्वर में कहा, 'यह बात बिल्कुल सच है!'

वैसे भी, यहाँ एक बड़ा सवाल है। आपने खुद ही कई बार कहा है कि किसी भी तरह के बचाव अभियान का सबसे बड़ा महत्व उन लोगों की संख्या में होता है जो सबसे पहले बाहर निकलने में कामयाब होते हैं, न कि उन लोगों की संख्या में जो घर पहुँचते हैं। भले ही कोई भी साहसी व्यक्ति दो दिन भी न टिक पाए, लेकिन तार के बाहर पहुँचकर ही उनका प्रभाव जरूर होगा।

बुशेल कुछ पल चुप रहे और फिर ऊपर देखकर बस इतना कहा, 'धन्यवाद, आप सही हैं,' और फिर अपनी झोपड़ी की ओर चले गए।

विंग्स ने उसे परिसर में चलते हुए देखा और दक्षिण अफ्रीकी की उपलब्धियों पर विचार किया। उसने विभिन्न स्वभावों से भरे एक शिविर को एकजुट उद्देश्य प्रदान किया था। जल्द ही वह लगभग दो सौ भगोड़ों को आज़ाद करेगा और सातवीं बार विंग्स डे भी उनमें से एक होगा।

उस रात भारी हिमपात हुआ और जब समिति के सदस्य चौबीस तारीख की सुबह निर्णय लेने के लिए मिले, तो मामला फिर से अधर में था। सुबह 11:30 बजे, वे झोपड़ी संख्या 101 के एक कमरे में एकत्रित हुए। ठीक दस मिनट बाद, वे सभी फिर से बाहर निकले। फैसला हो चुका था।

टिम वालेन तुरंत कागज़ात पर तारीख की मुहर लगाने और हस्ताक्षर करने के लिए चले गए। यह काम आखिरी समय तक टालना ज़रूरी था ताकि भागने वाले अपने सीमित समय के यात्रा दस्तावेज़ों का ज़्यादा से ज़्यादा इस्तेमाल कर सकें। साथ ही, ज़्यादातर दस्तावेज़ों पर हस्ताक्षर करने थे, जिनमें रोजर बुशेल का असली वीज़ा भी शामिल था, जो उन्होंने अपने एक भागने के दौरान हासिल किया था। कैसी ने बैंगनी-गुलाबी रंग के वॉटरकलर से वीज़ा की मुहर लगाई और फिर उस पर एक पुलिस प्रमुख के नाम से हस्ताक्षर किए, जिनके असली हस्ताक्षर उनके पास थे। एलेक्स ने दो दिन तक हस्ताक्षर का अभ्यास किया ताकि वह उसे ठीक से कर सके।

इसी बीच, क्रम्प हैरी सुरंग में अंतिम काम करने के लिए नीचे गया। उसने सबसे पहले निकास कक्ष में दो कंबल लटका दिए ताकि रोशनी और आवाज़ अंदर न आ सके। अतिरिक्त सावधानी के तौर पर, ट्रॉली की पटरी के पहले और आखिरी पचास फीट पर कपड़े की पट्टियाँ ठोक दी गईं। प्रवेश और निकास दोनों शाफ्ट के फर्श पर भी कंबल बिछा दिए गए ताकि कोई आवाज़ न आए और दोनों ही विश्राम गृहों में भी कंबल बिछा दिए गए ताकि सामान ढोने वालों के कपड़े गंदे न हों। इसके बाद, हर पच्चीस फीट पर अतिरिक्त बत्तियाँ लगाई गईं ताकि थोड़ी और रोशनी मिल सके और जिन्हें बंद जगहों से डर लगता था उन्हें आराम मिले। अंत में, ट्रॉलियों को बड़ी संख्या में लोगों के इस्तेमाल के लिए तैयार करने के लिए उनमें बदलाव करना पड़ा। भागने वालों के लेटने के लिए बेहतर प्लेटफॉर्म बनाने के लिए ऊपर अतिरिक्त तख्ते लगाए गए और शिविर के बॉक्सिंग रिंग के लिए इस्तेमाल होने वाली एक इंच मोटी चार सौ फीट लंबी मनीला रस्सी को उतारकर ट्रॉलियों से बांध दिया गया। आखिर में, चार मुड़ी हुई सपोर्टिंग बोर्ड बदल दिए

गए और सुरंग तोड़ने के लिए एक विशेष रूप से बनाया गया लकड़ी का फावड़ा निकास शाफ्ट तक ले जाया गया।

इसी बीच, लिटिल एक्स संगठन के विभिन्न विभागों में घूम-घूम कर भागे हुए लोगों के लिए उनकी झोपड़ी में मौजूद सारा सामान इकट्ठा कर रहे थे। उन्होंने पहले ही हर भागे हुए व्यक्ति से पूछताछ कर ली थी और उसके कपड़े, सामान और कागज़ात की सावधानीपूर्वक जाँच कर ली थी। अब उन्हें सामान का बंडल और कुछ आखिरी सलाह देनी थी। लिटिल एक्स ने हर व्यक्ति को झोपड़ी 104 में कब और कैसे जाना है, इसके बारे में स्पष्ट निर्देश भी दिए। भागने से कई दिन पहले से ही निगरानी करने वाले लोग सामान्य दिनों में उस ब्लॉक में आने-जाने वाले लोगों की संख्या का हिसाब रख रहे थे। भागने वाले दिन भीड़भाड़ से बचने के लिए, इन आंकड़ों का उपयोग मार्गों और समय-सारणी की एक श्रृंखला तैयार करने के लिए किया गया था। हर आवाजाही के बीच तीस सेकंड का अंतराल था, और हर भागे हुए व्यक्ति को जाने का एक निश्चित समय और दिशा दी गई थी। जब वह 104 पर पहुँचता, तो उसे एक चारपाई पर बैठने के लिए कहा जाता और अपने नंबर के आने का इंतज़ार करने के लिए कहा जाता। उस चारपाई पर रहने वाला व्यक्ति फिर दूसरे साथी की झोपड़ी में जाता और अगली सुबह तक वहीं रहता।

शिविर के चारों ओर तनाव बढ़ता जा रहा था। कुछ लोग बनावटी मुस्कान बिखेर रहे थे और कई सैनिक निरर्थक बातचीत करके अपना तनाव कम करने की कोशिश कर रहे थे। लेन हॉल की दोपहर की मौसम विज्ञान की कक्षा पिछले दिनों की तुलना में काफी छोटी थी, और थिएटर के आसपास भी कम ही लोग थे। पिछली रात पिग्मेलियन के नए नाटक का रिहर्सल हुआ था, जिसमें रोजर बुशेल प्रोफेसर हेनरी हिगिंस की भूमिका में थे। मुख्य कलाकार के अनुपलब्ध होने की स्थिति में एक सहायक कलाकार मंच के पीछे इंतजार कर रहा था।

अपने कमरे में लौटकर, हैंक बर्कलैंड अपने परिवार को लिखे आखिरी पत्र पर झुके हुए थे। उन्होंने अपने विशिष्ट सीधे-सादे अंदाज़ में लिखा, 'मुझे पिछले महीने एक पत्र मिला था जिसका मैं जवाब नहीं दे पाऊंगा। मैं लंबे समय तक पत्र-दर-पत्र पत्राचार जारी रखने की स्थिति में नहीं हूं।'

शाम छह बजे के कुछ ही देर बाद, जॉनी ट्रैविस के कमरे में कुछ लोग आखिरी भोज के लिए इकट्ठा हुए, जिसमें बुली बीफ़ फ्रिटर्स और जौ का घोल (जौ, क्लिम, चीनी और किशमिश का मिश्रण) परोसा गया था। रोजर बुशेल, बॉब वैन डेर स्टॉक, डिगर मैकिन्टोश और शॉर्टी आर्मस्ट्रांग सभी वहाँ मौजूद थे, लेकिन बातचीत न के बराबर हुई। ट्रैविस के इस आश्वासन के बावजूद कि यह दावत आपको कई दिनों तक तृप्त रखेगी, किसी को भी भूख नहीं लग रही थी।

हट 112 में, जॉर्ज वाइली हट 104 जाने से पहले कुछ ज़रूरी काम निपटा रहा था। सभी भागने वालों में, जॉर्ज सबसे कम उम्र का दिखता था। हालाँकि वह जनवरी में बाईस साल का हो गया था, लेकिन उसके सुनहरे बाल और सौम्य चेहरे के कारण वह लगभग सोलह साल का लगता था, और जॉर्ज को अधिकारियों द्वारा बच्चों को वायु सेना में भर्ती करने और पुरुषों का काम करवाने के बारे में ताने सुनने की आदत थी। लेकिन आज, जॉर्ज के मासूम चेहरे पर उत्साह के साथ-साथ घबराहट भी साफ झलक रही थी। उसे जर्मन नहीं आती थी और उसे एहसास था कि उसके साफ बच निकलने की संभावना लगभग न के बराबर है, खासकर इसलिए कि ठंड में उसके पैर में फिर से तकलीफ होने लगी थी। उसे उम्मीद थी कि उसे सागन इलाके में पकड़ लिया जाएगा और उसे लगा कि उसे वापस परिसर में डालने से पहले शायद एक या दो हफ्ते जेल में बिताने पड़ेंगे।

जब जॉर्ज अपना बिस्तर साफ़ कर रहा था, तो उसकी एलन रिघेटी से बातचीत हुई, जो कमरा नंबर 112 में रुकने वाला था। ऑस्ट्रेलियाई जॉर्ज समझ गया कि उसका रूममेट बेचैन है और उसने कुछ हौसला बढ़ाने वाले शब्दों से उसका मनोबल बढ़ाने की कोशिश की। एलन इटली में कई बार भागने की कोशिशों में शामिल रहा था और जानता था कि पहली बार भागने की कोशिश करने वाले के लिए भागने से पहले के घंटे कैसे होते हैं। एलन के शब्दों से जॉर्ज को तसल्ली मिली, लेकिन जैसे ही वह कमरा नंबर 104 की ओर जाने के लिए उठा, कनाडाई जॉर्ज

अपने रूममेट की ओर मुड़ा और उसे अपनी घड़ी और कुछ अन्य चीज़ें दिखाईं जो उसने कैद में बिताए एक साल में इकट्ठा की थीं।

'एलन, अगर मैं बच नहीं पाया,' उसने कहना शुरू किया, 'तो क्या तुम यह सुनिश्चित करोगे कि ये बातें विंडसर में मेरी माँ तक पहुँच जाएँ?'

'ठीक है, जॉर्ज,' एलन ने धीरे से कहा। 'क्या तुम उन्हें अपने पास नहीं रखना चाहते? हो सकता है तुम उसे मुझसे पहले देख लो!' उसने खुशी से कहा। वाइली मुस्कुराया और विदाई के शब्दों के साथ अपने दोस्त की पीठ थपथपाई। जैसे ही वह कमरे से बाहर जाने के लिए मुड़ा, रिघेटी के मन में यह ख्याल आया कि जॉर्ज वाइली इतना जवान और मासूम लग रहा था कि मार्च की ठंडी बर्फीली अनजानी रात में बाहर जाना कितना अजीब लग रहा था।

*

जैसे ही शाम ढलने लगी, लोगों का निकलना जारी रहा। अपना ओवरकोट पहनते हुए, माइक केसी ने हट 122 में अपने साथियों को अलविदा कहा। "मैं जा रहा हूँ, दोस्तों," उसने हाथ हिलाते हुए कहा। "अब जंगल में दौड़ने का समय हो गया है!" माइक ने 122 के कंट्रोलर को सूचना दी, जिसने उसकी टाइम शीट देखी, अपने सहायक से सहमति ली और आयरिशमैन को पीठ थपथपाकर दरवाजे से बाहर धकेल दिया। केसी पूर्व की ओर चला, हट 121 के दक्षिणी छोर से होते हुए दक्षिणी दरवाजे से 109 में प्रवेश किया। वह सीधे कमरा नंबर 17 में गया, जहाँ विंग्स नॉर्मन एक और टाइम शीट लेकर बैठा था।

"अरे, माइक," नॉर्मन ने खुशी से कहा, "हमेशा की तरह एकदम समय पर आ गए। अब तुम जाओ, और कोई मुसीबत मत खड़ी करना!" माइक से हाथ मिलाकर उसे विदा कर दिया गया। वह गलियारे से होते हुए 109 नंबर की झोपड़ी के उत्तरी छोर तक पहुँचा, जहाँ एक और नौकर दरवाज़ा बंद करके खड़ा था। उसने दरार से झाँका और फिर जल्दी से दरवाज़ा खोलकर माइक को अंगूठा ऊपर करके इशारा किया। आयरिशमैन ने आग के कुंड के बगल वाले रास्ते को पार किया और झोपड़ी 104 की दक्षिणी सीढ़ियों पर रुक गया।

दरवाजा खुला और केसी ने डेव टॉरेंस को सूचना दी, जिन्होंने उसे एक कमरा और बिस्तर दिया। माइक पहले भी भाग चुका था, लेकिन लगभग पाँच साल की कैद में उसने ऐसा कुछ पहले कभी नहीं देखा था। भीड़भाड़ वाली झोपड़ी के अंदर अजीबोगरीब लोग मौजूद थे, कुछ ने काम के कपड़े पहने थे तो कुछ ने स्मार्ट सूट। कुछ खड़े होकर सिगरेट पी रहे थे, कुछ धीरे-धीरे बातें कर रहे थे और दो जोड़े ब्रिज का खेल खेल रहे थे। कई लोग बस बैठे रहे और कुछ नहीं बोले, माइक के गुजरते समय बस एक पल के लिए मुस्कुराते हुए ऊपर देखा।

हर मिनट दो बार, एक और सैनिक के लिए दरवाजा खुलता, जो चुपचाप अंदर आता और टॉरेंस द्वारा उसकी जाँच की जाती। अब तक सब कुछ योजना के अनुसार ही चल रहा था। फिर, लगभग पौने आठ बजे, दरवाजा फिर से खुला। पल भर में गलियारे में सन्नाटा छा गया और केसी ने यह देखने के लिए कमरे से अपना सिर बाहर निकाला कि क्या हो रहा है। वहाँ, हॉल के अंत में, एक लूफ़्टवाफ़े कॉर्पोरल खड़ा था।

अध्याय 15

बियॉन्ड द वायर

डेव टॉरेंस ने उसी क्षण अपनी सूची से नज़रें उठाईं और कुर्सी से उछलते हुए कागज़ नीचे फेंक दिए। वह गलियारे में इस इरादे से दौड़ पड़ा कि भागने की योजना पूरी होने तक इस गुंडे को काबू में करने के लिए वह हर संभव प्रयास करेगा। तभी वह रुका और लूफ़्टवाफ़े की टोपी के नीचे एक जाना-पहचाना चेहरा देखा। यह पावेल टोबोल्स्की था, विंग्स डे का साथी। डेव को चेतावनी दी गई थी कि टोबोल्स्की गुंडे की वर्दी में आएगा, लेकिन उत्साह में वह भूल गया था। शांति और स्थिरता बहाल होने पर गतिविधियाँ फिर से शुरू हुईं।

कुछ मिनट बाद जिमी वर्नहम अंदर आया और अपने एक साथी कनाडाई के साथ बिस्तर बदलने चला गया। जिमी बहुत खुश था, उसकी आँखें अपनी पहली आज़ादी की उम्मीद से चमक रही थीं, और उसने मज़ाक में कहा कि सीमा पार करने के बाद दोस्ताना चेक लोगों से उन्हें कैसा आतिथ्य मिलेगा। 'डॉजर और मैं शायद पूरी तरह से नहीं पहुँच पाएँगे, लेकिन मुझे यकीन है कि हमारी यात्रा बहुत अच्छी होगी!'

हॉल के दूसरी तरफ, डेस प्लंकेट और फ्रेडी ड्वोरक कुछ आखिरी तैयारियों पर चर्चा कर रहे थे। डेस ने अपनी घड़ी देखते हुए कहा, "अगर सब ठीक रहा, तो हम तीस मिनट में स्टेशन पहुँच जाएँगे।" "अब... अब... दो बजने में दस मिनट बाकी हैं? हम्म। मेरी घड़ी रुक गई लगती है," उन्होंने घड़ी को हिलाते हुए और कान से लगाते हुए निराशा से कहा।

‘बंद हो गई? अब इसका हमारे लिए क्या फायदा?’ फ्रेडी ने घबराते हुए पूछा। ‘वैसे भी ये कैसी सस्ती घड़ी है?’

'सर, वह घड़ी मेरे पिता को 1926 में उनकी सेवानिवृत्ति के अवसर पर भेंट की गई थी,' डेस ने अपमानित होने का पूरा प्रयास करते हुए उत्तर दिया। 'मैं आपसे कुछ सम्मान दिखाने का अनुरोध करता हूँ।'

‘माफ़ करना, डेसमंड,’ ड्वोरक मुस्कुराया। ‘थोड़ा परेशान हो रहा हूँ। मुझे यकीन है कि हम काम चला लेंगे।’

बेल्जियम के हेनरी मार्चल ने बातचीत सुन ली और उन दोनों के पास चले गए। उनका स्थान दूसरे शतक में था।

‘देखो, मैं तुमसे घड़ियाँ बदल लूँगा,’ हेनरी ने डेस और फ्रेडी के विरोध को अनसुना करते हुए कहा। ‘नहीं, ले लो। तुम्हें ट्रेन का समय पता है। मैं तो बस पैदल जा रहा हूँ – अगर मैं अगली रात के अपने ठिकाने पर थोड़ा देर से पहुँचूँ तो कोई फर्क नहीं पड़ता! ले लो – हम दो हफ्ते बाद लंदन में बदल लेंगे।’ डेस ने धन्यवाद के साथ घड़ी ले ली और हेनरी को अपनी घड़ी दे दी। मजबूती से हाथ मिलाकर, छोटा बेल्जियन लड़का धीरे-धीरे अपने बिस्तर पर लौट गया।

जब यह सब चल रहा था, तब नेवला रूडी बिली ग्रिफिथ के साथ हट 112 में बैठा था और बड़े चाव से एक कप असली कॉफी और रेड क्रॉस की कुछ चॉकलेट का आनंद ले रहा था।

रात करीब 8:30 बजे, क्रम्प केर-रामसे आखिरकार हैरी से बाहर निकले और घोषणा की कि सब कुछ तैयार है। प्रवेश शाफ्ट के निचले हिस्से में, जहाँ वे समग्र नियंत्रक के रूप में कार्य करेंगे, क्रम्प ने एयर पंप चला रहे साथी से कुछ बातें कीं। शाफ्ट के शीर्ष पर जिमी डेविसन बैठे थे, जो भागने वालों को सुरंग में नीचे जाने का निर्देश देंगे, और गलियारे में डेव टॉरेंस खड़े थे, जो यह सुनिश्चित करने के प्रभारी थे कि सभी लोग निर्धारित समय पर जाल तक पहुँचें।

सुबह साढ़े आठ बजे, पहले सत्रह भगोड़े सुरंग में प्रवेश करने लगे। सबसे पहले जॉनी मार्शल गए, जो गहरे रंग के साधारण सूट में बेहद आकर्षक लग रहे थे, और फिर जॉनी बुल गए, जो सुरंग का द्वार खोलने वाले थे। उनके पीछे सिडनी डाउज़ गए, जो पहले बीस लोगों के लिए निकास शाफ्ट पर सामान ढोने का काम संभाल रहे थे, और फिर रोजर बुशेल, बर्नार्ड शेइडहाउर और वैली वैलेंता गए।

चालीस मिनट और बीत गए, तब जाकर सुरंग में सभी अपनी-अपनी जगह पर पहुँचे और जॉनी बुल मिट्टी की आखिरी छह इंच परत हटाने लगा। हालाँकि, बीस मिनट बाद भी बुल निकास शाफ्ट की छत बनाने वाले तख्तों से जूझ रहा था। जैसे-जैसे समय बीतता गया, सुरंग में फंसे हुए भागने वालों में बेचैनी बढ़ने लगी।

आधे घंटे बाद, जॉनी धूल से सने पसीने से तर चेहरे के साथ निकास शाफ्ट से नीचे आया। हांफते हुए उसने कहा, 'किसी और को कोशिश करनी होगी - मैं तो थक चुका हूँ। बर्फ से ये तख्ते फूल गए हैं और मैं इन्हें ढीला नहीं कर पा रहा हूँ।' वह कमरे की दीवार से टिक गया, उसका सिर उसके घुटनों के बीच लटक रहा था।

बिना कुछ कहे, जॉनी मार्शल ने अपना साफ-सुथरा सूट उतारा और अंडरवियर में ही शाफ्ट पर चढ़ गया। उसने पंद्रह मिनट तक तख्तों पर मेहनत की, तब जाकर वह एक तख्ते के नीचे उंगली डालकर उसे खींचकर अलग करने में कामयाब हुआ। बाकी तख्ते आसानी से निकल गए, और जॉनी कपड़े बदलने के लिए शाफ्ट से नीचे लौट गया, जबकि बुल आखिरी कुछ इंच का काम पूरा करने के लिए ऊपर चला गया।

अब दस बजकर पंद्रह मिनट हो चुके थे, निर्धारित खुलने के समय से एक घंटे से भी अधिक समय बीत चुका था, और बुल ने और समय बर्बाद होने से बचने के लिए तेज़ी से काम किया। उसने मिट्टी के ढेलों को नीचे गिराया और उन्हें सुरंग के फर्श पर रख दिया, जहाँ उन्हें एक छोटे से फैलाव कक्ष में छिपा दिया गया। सतह पर पहुँचते ही, वह पहले बाहरी नियंत्रक के रूप में काम करेगा, निकास द्वार के पास पेट के बल लेटकर भागने वालों की गतिविधियों पर नज़र रखेगा। जैसे ही प्रत्येक व्यक्ति सीढ़ी के शीर्ष पर पहुँचता, बुल उसके सिर पर हाथ रखता और पेड़ों के तनों के बीच से झाँककर सुनिश्चित करता कि रास्ता सुरक्षित है। फिर वह उसके सिर पर एक हल्की सी थपकी देता और भागने वाला व्यक्ति रस्सी का पीछा करते हुए सत्तर गज दूर जंगल में बने सभा स्थल तक पहुँच जाता।

लेटने के लिए एक कंबल और रस्सी का एक कुंडल लिए जॉनी बुल ने आखिरकार सुरंग से अपना सिर बाहर निकाला। लेकिन उसे काले देवदार के पेड़ों के घने तने नहीं दिखे। इसके बजाय उसे बर्फ से ढकी समतल ज़मीन दिखाई दी, जो डरावनी रूप से खुली थी। उसने एक तरफ देखा तो उसे पेड़ दिखाई दिए, जो लगभग दस फीट दूर थे। दूसरी तरफ, बुल यह देखकर भयभीत हो गया कि गुंडों का कमरा मात्र पैंतालीस फीट दूर था। वह गार्ड को साफ-साफ देख सकता था, जो रोशन परिसर में एक परछाई की तरह दिख रहा था, उसकी सांसों से हेलमेट के चारों ओर बादल बन रहे थे। तमाम सावधानीपूर्वक सर्वेक्षण के बावजूद, हैरी नाकाम रहा था।

जॉनी तेज़ी से शाफ्ट से नीचे उतरा और निकास कक्ष की ओर जाने वाले कंबलों को एक तरफ हटा दिया। बुल के गंभीर चेहरे को देखकर इंतज़ार कर रहे भागने वालों की मुस्कान गायब हो गई।

“हमारे सामने एक समस्या है, रॉजर,” उसने फुसफुसाते हुए जल्दबाजी में कहा। “हम जहाँ पहुँचना चाहते थे, उससे लगभग पच्चीस फीट दूर हैं।” इसके बाद जो सन्नाटा छाया, उसमें जॉनी मार्शल खुद देखने के लिए शाफ्ट में ऊपर की ओर दौड़ा। वह धीरे से बड़बड़ाते हुए लौटा।

‘और इससे भी बुरी बात यह है,’ बुल ने आगे कहा, ‘कि हम गुंडों के अड्डे से सिर्फ पंद्रह गज की दूरी पर हैं।’

*

बुशेल, मार्शल और बाकी लोग सदमे से जल्दी उबर गए और समस्या पर तर्कसंगत रूप से चर्चा करने लगे। रोजर ने कहा, 'मुझे गुंडों के लिए बने बॉक्स की चिंता नहीं है; बल्कि गश्त लगाने वाले गार्डों की चिंता है। टावर में बैठा गुंडा परिसर पर नज़र रख रहा होगा, लेकिन बाहरी सुरक्षाकर्मी सीधे उस छेद के पास से गुजरेंगे। और बर्फ के बीच हमें देखना बहुत आसान होगा।'

किसी ने सुझाव दिया, 'तो हम सब कुछ बंद कर देते हैं और जंगल तक बाकी का रास्ता खोदते हैं, और अगली अमावस्या के दौरान बाहर जाते हैं।'

'या फिर,' दूसरे ने बीच में टोकते हुए कहा, 'हम अभी जाते हैं और जितना हो सके उतना अच्छा करते हैं – हमें पकड़े जाने में सदियां लग सकती हैं।'

इसके बाद जॉनी बुल ने बोलना शुरू किया। 'हम आखिरी कुछ फीट की खुदाई दो-तीन दिनों में कर सकते हैं, लेकिन आप सबने हैरी का जाल देखा – वह इतना टेढ़ा-मेढ़ा हो गया है कि मुझे शक है कि वह एक हफ्ते भी टिक पाएगा, अगले अमावस्या तक तो दूर की बात है। और इसके अलावा, हमें 104 नंबर कमरे से सबको बाहर निकालना होगा, सारा सामान इकट्ठा करना होगा और उसे छिपाना होगा। यह बहुत बड़ा काम होने वाला है।'

'मुझे इससे भी बड़ी समस्या नज़र आ रही है,' रॉजर ने धीरे से फुसफुसाते हुए कहा। 'ये कागज़ात – इन सब पर आज की तारीख की मुहर लगी है। अगर हम अभी नहीं गए, तो हमें सब कुछ रद्द करना पड़ेगा। नहीं, हमें आज रात ही जाना होगा – हमें बस जोखिम को कम करने का कोई तरीका ढूंढना है।'

समूह कुछ देर चुप रहा और फिर जॉनी बुल बोला, 'मेरे पास एक विचार है: तुम्हें याद हैं वे नेवले वाली बाड़ें जिनका इस्तेमाल गुंडे हम पर नज़र रखने के लिए करते थे? उनमें से एक छेद के पास पेड़ों में है। अगर हम उसके पीछे एक नियंत्रक लगा दें, तो वह वहाँ से पहरेदारों पर नज़र रख सकता है और यातायात को नियंत्रित कर सकता है। यह छेद के पास लेटने जैसा ही होगा, बस थोड़ा ज़्यादा आरामदायक होगा!'

किसी ने कहा, 'सुरंग में मौजूद आदमी तक वह संदेश कैसे पहुंचाएगा? वह सीटी बजाकर तो बिल्कुल नहीं पहुंचा पाएगा।'

'हम बस एक और सिग्नल रस्सी जोड़ देंगे,' जॉनी ने जवाब दिया। 'मैं पहली शिफ्ट में रस्सी ले जाऊंगा और उसे नेवले की बाड़ तक ले जाऊंगा। जब आप सीढ़ी के ऊपर इंतज़ार कर रहे हों, तो रस्सी को पकड़ लेना। जब आपको दो झटके महसूस हों, तो नीचे उतरकर रस्सी का पीछा करते हुए बाड़ तक जाना। बाकी सब कुछ योजना के अनुसार ही होगा।'

'हम इससे बेहतर कुछ नहीं कर सकते,' रोजर ने कहा। 'अगर सभी लोग सिग्नल का इंतज़ार करने के लिए पर्याप्त धैर्य रखें, तो इसके काम न करने का कोई कारण नहीं है।' अपनी जेब से पेंसिल का टुकड़ा निकालते हुए, बुशेल ने निकास कक्ष की दीवार पर निर्देश लिखे: 'शाफ़्ट के ऊपर प्रतीक्षा करें। सीढ़ी से बंधी सिग्नल रस्सी को पकड़ें। दो बार झटका लगने पर, बाहर रेंगें। रस्सी का अनुसरण करते हुए आश्रय तक पहुँचें।'

"ठीक है," बुल ने खुशी से कहा, "मैं चलता हूँ – जंगल में मिलते हैं।" रस्सी का एक अतिरिक्त कुंडल लेकर वह शाफ्ट पर चढ़ गया, उसके पीछे-पीछे जॉनी मार्शल भी था, जो सीढ़ी के शीर्ष पर रुककर संकेत की प्रतीक्षा करने लगा। दो झटके महसूस करते ही वह ऊपर चढ़ गया और रस्सी का पीछा करते हुए नेवले की बाड़ तक पहुँच गया।

'बाहर से यह अंदर से कहीं ज्यादा अच्छा दिखता है,' मार्शल ने रोशनी से जगमगाते परिसर को देखते हुए बुल से कहा। 'अपना ख्याल रखना, मेरे दोस्त – अगले मंगलवार को आरएएफ क्लब में मिलते हैं।'

'यह एक तय मुलाकात है,' बुल ने मुस्कुराते हुए कहा। इतना कहते ही जॉनी मार्शल कमर झुकाकर तय जगह की ओर भागा और दौड़ते हुए सत्तर गज की रस्सी फैलाता चला गया। बुल द्वारा सुरंग खोदे जाने के पंद्रह मिनट से भी कम समय बीता था। अब साढ़े दस बज चुके थे और भागने की योजना शुरू हो सकती थी, हालांकि इसमें नब्बे मिनट की देरी हो चुकी थी।

*

104 नंबर के अंदर, जैसे-जैसे समय बीतता गया, तनाव बढ़ता गया। भागने वाले लोग शांत रहने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन यह मुश्किल था। एड्रेनालाईन से भरे शरीर को ऊर्जा निकालने के लिए कुछ न कुछ करना ही पड़ता था, भले ही वह गलियारे में टहलना ही क्यों न हो। डेव टॉरेंस लगातार प्रगति रिपोर्ट देकर सबको सूचित करते हुए शांति बनाए रखने की पूरी कोशिश कर रहे थे। हर कुछ मिनटों में, झोपड़ी में दबी हुई फुसफुसाहटें गूंजती थीं: 'जॉनी बुल ने शुरू कर दिया है,' या 'उन्हें बाहर निकलने में दिक्कत हो रही है।' आखिरकार, डेविसन को शाफ्ट से ठंडी हवा का झोंका आता हुआ महसूस हुआ। 'हम निकल गए,' उन्होंने धीरे से कहा, और राहत की लहर पूरी झोपड़ी में फैल गई।

कुछ ही मिनटों बाद एक और अफवाह फैल गई और सारी उम्मीदें टूट गईं। दर्जनों दबी हुई आवाज़ों ने कहा, 'हैरी बहुत छोटा है,' और झोपड़ी में बातचीत की गूंज सुनाई देने लगी क्योंकि भागने वाले लोग यह समझने की कोशिश कर रहे थे कि आखिर गड़बड़ क्या हुई है। फिर कुछ मिनट बाद वह संकेत मिला जिसका वे सब इंतज़ार कर रहे थे। अभी भी शांत और स्थिर स्वर में, डेविसन ने टॉरेंस से कहा, 'उन्होंने शुरू कर दिया है - चलो अगले कुछ लोगों को तैयार रखें।'

जैसे ही भागने वाले लोग गलियारे से होते हुए 104 नंबर सुरंग के आखिरी कमरे की ओर बढ़े, रास्ते में मौजूद सुरक्षाकर्मियों से उन्होंने कुछ देर जल्दी-जल्दी बात की। टोनी हेयटर अगले समूह में भूमिगत जाने वाला था, और गहरे रंग के आम सूट में वह बेहद आकर्षक लग रहा था। वह एक दरवाजे पर खड़े होकर रास्ता दिखा रहे पैडी बायरन से थोड़ी देर रुका और उनसे बातचीत की, और आने वाले रोमांच को लेकर काफी उत्साहित था। कैद में दो साल की पढ़ाई के बाद टोनी की जर्मन भाषा बहुत अच्छी थी, और उसके पास अपने गंतव्य, फ्रांसीसी सीमा पर स्थित मुलहाउस शहर तक पहुँचने के लिए पैसे और ज़रूरी कागज़ात थे। उसे अकेले यात्रा करने में कोई झिझक नहीं थी और सुरंग वाले कमरे में अपनी जगह लेने से पहले उसने पैडी की शुभकामनाओं और हाथ मिलाने को सहर्ष स्वीकार किया।

कुछ देर बाद, गॉर्डन ब्रेटेल और हेनरी पिकार्ड अपने-अपने निर्धारित बिस्तरों से उठकर गलियारे में आगे बढ़े। हट 120 से निकलने से पहले, गॉर्डन ने अपने साथी जालसाज़ एलेक्स कैसी से कुछ बातें कीं। ब्रेटेल को भी अपनी सफलता पर पूरा भरोसा था और उसे यकीन था कि वह और पिकार्ड फ्रांसीसी मज़दूरों के रूप में अपना भेष सफलतापूर्वक बनाए रख सकते हैं। गलियारे में मुड़ने से ठीक पहले, ब्रेटेल ने कैसी की ओर मुड़कर कहा, 'अगर किसी भी तरह से मैं बच न पाऊं, तो कृपया मेरे माता-पिता को मेरी ओर से पत्र लिख देना।' यह एक सामान्य अनुरोध था, और एलेक्स ने तुरंत सहमति जताते हुए कहा कि गॉर्डन घर पहुँचकर उन्हें खुद भी बता सकता है। एक खुशमिजाज़ मुस्कान के साथ, गॉर्डन चला गया।

एलेक्स कैसी के लिए वह रात बहुत कठिन थी, क्योंकि उसने अपने सभी रूममेट्स को सुरंग की ओर जाते हुए देखा था। वह जानता था कि उनमें से कुछ, या शायद सभी, शिविर में वापस न लौटें। उसे उम्मीद थी कि कुछ लोग घर पहुँच जाएँगे, लेकिन इस बात की भी उतनी ही संभावना थी कि पकड़े जाने पर उन्हें कोल्डिट्ज़ या किसी अन्य दंड शिविर में भेज दिया जाएगा। इसलिए, जब उसने सुरंग की ओर जाते हुए उन सभी को अलविदा कहा, तो वह समझ गया कि उनके साथ बिताए सुखद पलों का अंत हो गया है। अब उसके पास केवल उन प्यारे पागलों और उनकी शरारतों की यादें ही रह जाएँगी।

*

तारबंदी के बाहर हलचल जारी रही, क्योंकि शुरुआती भागने वालों में से बाकी लोग हैरी से बाहर निकले और बुल के पास से होते हुए मार्शल से मिलने के लिए तय स्थान पर पहुँच गए। मार्शल

के साथी वॉली वैलेंता उनके बाद आए, फिर बुशेल और शेइडहाउर, जॉन स्टीवंस और जोहान्स गौव्स, हाल्डोर एस्पेलिड और निल्स फुगलेसांग, और डेस प्लंकेट और फ्रेडी ड्वोरक। जब वे सभी पहुँच गए, तो जल्दी से बातचीत हुई। मूल योजना के अनुसार, पकड़े जाने के जोखिम को कम करने के लिए विभिन्न जोड़ियों को सागन से अलग-अलग ट्रेनों से जाना था। हालाँकि, लंबे विलंब के कारण कई लोग अपनी ट्रेन छूट चुके थे, जिससे समूह के सामने एक ही ट्रेन में जाने की अप्रिय संभावना थी। कोई और विकल्प न होने पर, जोड़ियाँ पाँच-पाँच मिनट के अंतराल पर जंगल से होते हुए रेलवे स्टेशन की ओर चल पड़ीं। यहीं पर कई लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ा। पिछली ब्रीफिंग के बाद से, सबवे के प्रवेश द्वार पर एक शेड बना दिया गया था, जिसे पहचानना आसान नहीं था। यह नया शेड भागने वालों के लिए एक बड़ी बाधा बनने वाला था।

पहले दस लोगों में से केवल बुशेल, शेइडहाउर, प्लंकेट और ड्वोरक ही बिना किसी कठिनाई के जंगल पार कर पाए। रोजर और बर्नार्ड सबसे पहले स्टेशन पहुंचे, समय बचाने के लिए सीधे मेट्रो स्टेशन गए और बर्लिन-ब्रेस्लाउ एक्सप्रेस के लिए दो तृतीय श्रेणी के टिकट खरीदे। ट्रेन आने पर दोनों बिना किसी परेशानी के उसमें सवार हो गए।

डेस और फ्रेडी कुछ मिनट बाद स्टेशन पहुँचे, लेकिन पूर्वी प्रवेश द्वार पर काम पर लगे सोवियत कैदियों का एक गिरोह खड़ा था। फिर भी वे हिम्मत नहीं हारे और पश्चिमी छोर पर बने पैदल पुल की ओर सड़क पर आगे बढ़ते रहे। वे अभी पुल को ढूंढ ही रहे थे कि तभी उन्हें दूर से बमवर्षक विमानों के इंजनों की गड़गड़ाहट सुनाई दी। आवाज़ तेज़ होती गई, और फिर हवाई हमले के सायरन की चीख से रात का सन्नाटा पसरा।

ड्वोरक ने प्लंकेट का हाथ पकड़ा और संक्षिप्त स्वर में 'चलो' कहते हुए उसे मेट्रो की ओर खींच लिया। अंदर पहुँचते ही उन्हें एक रेलवे कर्मचारी ने रोक लिया, जिसने उन्हें टिकट बेचने से इनकार कर दिया। इसके बजाय उसने एक सैनिक को बुलाया, जिसने उन दोनों को मेट्रो में बने हवाई हमले से बचाव के आश्रय स्थल की ओर धकेलना शुरू कर दिया। उसी क्षण बर्लिन-ब्रेस्लाउ एक्सप्रेस आ गई और गार्ड का ध्यान भटकते ही डेस और फ्रेडी चुपके से निकल गए और टिकट बैरियर से होते हुए प्लेटफार्म की ओर दौड़ पड़े। वे ठीक उसी समय प्लेटफार्म पर पहुँचे जब ट्रेन धीमी हो रही थी, और फुटपाथ पर दौड़ते हुए अंतिम डिब्बे की ओर चल दिए।

जब ट्रेन रुकी, तो उनके सबसे नज़दीकी दरवाज़ा ज़ोर से खुला और एक घबराया हुआ कंडक्टर बाहर झाँका। उसने जल्दी से पूछा, 'क्या यहाँ कोई अलार्म है?' 'जी हाँ,' देस ने जवाब दिया और कंडक्टर ट्रेन के अंदर चला गया, जिसके पीछे-पीछे दोनों भागने वाले भी तेज़ी से गए। जैसे ही उन्होंने दरवाज़ा बंद किया, ट्रेन चलने लगी। मेट्रो में प्रवेश करने के बाद से केवल दो मिनट ही बीते थे।

समस्या बस इतनी थी कि उनके पास टिकट नहीं थे, बल्कि केवल दो पेफेनिग के प्लेटफॉर्म पास थे जिन पर स्पष्ट रूप से सागन स्टेशन लिखा हुआ था। सभी डिब्बे भरे होने के कारण, फ्रेडी और डेस अंधेरे गलियारे में खड़े होकर समस्या पर चर्चा करने लगे।

फ्रेडी ने फुसफुसाते हुए कहा, 'हमें अपने प्लेटफॉर्म पास फेंक देने चाहिए। इनसे पता चलता है कि हम सैगन से आए हैं।'

'तो क्या हुआ? हम हमेशा कह सकते हैं कि हमने इन्हें टिकट समझ लिया था और दूसरी तरफ जाकर अंतर की राशि का भुगतान कर देंगे,' डेस ने जवाब दिया।

'नहीं, ये बहुत खतरनाक है। अगर चेतावनी जारी हो जाती है और हमारे पास ऐसे पास हैं जिन पर लिखा है कि हमने सागन से बोर्डिंग की थी, तो हम पर शक होना लाज़मी है। हमें इन्हें खिड़की से बाहर फेंक देना चाहिए। जब हम ब्रेस्लाउ पहुँचेंगे, तो मैं बात करूँगा,' फ्रेडी ने आगे कहा। 'मैं कहूँगा कि हमने लेग्नीट्ज़ से बोर्डिंग की थी। इस तरह हमें ज़्यादा जुर्माना नहीं देना पड़ेगा।'

डेस को अब भी प्लेटफॉर्म पास फेंकना समझदारी भरा नहीं लगा और उसने सोचा कि कोई भी टिकट न होने से बेहतर है। हालांकि, उसने महाद्वीपीय यात्रा में फ्रेडी के अनुभव को ध्यान में

रखते हुए, उन आपत्तिजनक पासों को खिड़की से बाहर फेंक दिया। दोनों चुप हो गए और बर्फ पर पड़ रही हल्की रोशनी में तेज़ी से गुज़रते ग्रामीण इलाकों को देखने लगे।

तभी एक सलीके से कपड़े पहने आदमी धीरे-धीरे आया और प्लंकेट का हाथ पकड़ लिया। ऊपर देखते ही डेस को रोजर बुशेल को देखकर आश्चर्य हुआ, जो ट्रेन में सवार लोगों की संख्या का पता लगाने के लिए चारों ओर नज़र गड़ाए हुए था। वह डेस के पास से गुज़रकर फ्रेडी से हाथ मिलाने के बाद गलियारे में गायब हो गया। बिग एक्स के संक्षिप्त आगमन से उत्साहित होकर, डेस और फ्रेडी ने गंदी खिड़कियों से बाहर देखते हुए नई उम्मीद जगाई।

लगभग चालीस मिनट बाद ट्रेन धीमी हुई। फ्रेडी ने कहा, 'यह ज़रूर लेग्नीट्ज़ होगा।' वे दोनों भीड़ के साथ उतरे और कुछ मिनट प्लेटफार्म पर पैर फैलाकर आराम किया। उनके चारों ओर जर्मन सैनिक और नागरिक जमा थे, जो अपनी पहचान से बेखबर थे। ऐसा लग रहा था मानो आधी आबादी वर्दी में हो।

जब ट्रेन लेग्नीट्ज़ से चली, तो उसमें काफी खाली डिब्बे थे, और डेस और फ्रेडी को उनमें से एक मिल गया। बगल वाले डिब्बे में बर्लिन की एक बेहद परेशान महिला बता रही थी कि हाल ही में हुए हवाई हमले में उसका पूरा परिवार मारा गया था। वह राजधानी छोड़ रही थी क्योंकि वह बमबारी से तंग आ चुकी थी। फिर उसने विस्तार से बताया कि अगर उसे कोई ब्रिटिश सैनिक मिल जाए तो वह उसके साथ क्या करेगी। डेस और फ्रेडी चुपचाप सुनते रहे और अपनी सीटों में थोड़ा और धंसने की कोशिश करते रहे।

लगभग आधी रात को ट्रेन फिर धीमी हुई और ब्रेस्लाउ स्टेशन पर आकर रुक गई। जैसे ही भीड़ ट्रेन से उतरकर टिकट काउंटरों की ओर बढ़ने लगी, भागने वाले लोग इस उम्मीद में रुके रहे कि शायद उन्हें कोई मौका मिल जाए। जल्द ही उन्होंने बीच वाले काउंटर पर एक नागरिक को टिकट कलेक्टर से बहस करते देखा। मौका पाकर वे दोनों भीड़ को चीरते हुए उस आदमी के पीछे घुस गए। पलक झपकते ही वे चेकपॉइंट पार कर गए और मासूमियत से टाइमटेबल देखने लगे। टिकट काउंटरों पर मौजूद रेलवे पुलिस और गेस्टापो ने उनकी तरफ देखा तक नहीं।

जब बुशेल, शेइडहाउर, प्लंकेट और ड्वोरक ब्रेस्लाउ जा रहे थे, तब अन्य भगोड़े सागन स्टेशन पहुंचे तो देखा कि वहां अंधेरा छा चुका था। वे स्टेशन के बाहर सड़क पर इधर-उधर भटकते रहे, अब छिपे हुए सबवे के प्रवेश द्वार को खोजने की व्यर्थ कोशिश करते रहे, और ट्रेनों को आते-जाते बेबसी से देखते रहे। भगोड़ों ने अपनी ट्रेनों को अपने बिना जाते हुए देखा तो अंग्रेज़ी में कुछ सवाल पूछे गए और दबी आवाज़ में गालियां दीं। अहम पल बीतते चले गए।

सुरंग से बाहर निकलने वाले अठारहवें व्यक्ति बॉब वैन डेर स्टॉक, स्टेशन पर थोड़ा घबराए हुए पहुंचे, क्योंकि उनकी मुलाकात एक सशस्त्र सैनिक से हुई थी जिसने उनसे पूछा था कि हवाई हमले के दौरान बॉब जंगल में क्या कर रहे थे।

'मैं एक विदेशी कामगार हूँ,' बॉब ने गाढ़े डच लहजे में जवाब दिया, 'और मैं रेलवे स्टेशन जाने का रास्ता ढूंढ रहा हूँ। लेकिन मैंने हवाई हमले के सायरन सुने और अब मुझे कहीं आश्रय ढूंढना होगा।'

'कोई बात नहीं,' सैनिक ने आश्वस्त करते हुए कहा। 'बस इस रास्ते पर चलते रहिए, यह आपको सीधे स्टेशन तक ले जाएगा – वहाँ एक आश्रय स्थल है।' हाथ हिलाकर उसने बॉब को विदा किया, और डचमैन को बिना किसी और परेशानी के स्टेशन मिल गया।

आखिरकार, सड़क पर सदियों तक चक्कर लगाने के बाद, जॉनी मार्शल और वॉली वैलेंता हिम्मत करके उस जगह में दाखिल हुए जिसे वे औजारों का गोदाम समझ रहे थे और वहाँ उन्हें लंबे समय से खोई हुई सबवे मिल गई। अंदर पहुँचते ही उन्हें एक टिकट निरीक्षक ने रोक लिया।

'क्या तुमने सायरन नहीं सुना?' उसने गुस्से से पूछा। 'अलार्म बजने के दौरान कोई भी स्टेशन में प्रवेश नहीं कर सकता – तुम्हें आश्रय स्थल पर जाना होगा!'

'लेकिन हमें ट्रेन पकड़नी ही होगी,' वॉली ने विनती की। इंस्पेक्टर ने उसकी बात बीच में ही काट दी और उन्हें आश्रय स्थल की ओर इशारा किया। कुछ पल के लिए असमंजस में पड़कर,

वॉली और जॉनी अपने प्लान पर दोबारा सोचने के लिए जंगल की ओर चले गए। स्टेशन से निकलते ही उन्होंने देखा कि कुछ और भागने वाले लोग भी इसी तरह की दुविधा में फंसे हुए सड़क पर खड़े होकर कुछ हल निकालने की कोशिश कर रहे थे। हवाई हमले ने उनके सारे प्लान बिगाड़ दिए थे।

*

हट 104 में वापस आने पर, भागने की योजना में कुछ बाधाएँ भी आ गई थीं। मूल योजना के अनुसार, प्रत्येक भागने वाले को सुरंग की पूरी लंबाई तय करने के लिए दो से तीन मिनट का समय दिया गया था। हालाँकि, किसी ने भी उन समस्याओं का अनुमान नहीं लगाया था जो ट्रेन यात्रियों द्वारा ले जाए जा रहे सामान से उत्पन्न होंगी।

घबराहट और उस पल के रोमांच के कारण, कुछ ही भागने वाले मार्शल और केर-रामसे द्वारा दिए गए निर्देशों को याद रख पाए। कुछ के सामान फ्रेम के पीछे फंस गए और उन्हें निकालने के लिए सुरंग में पीछे की ओर जाना पड़ा, जबकि अन्य ने अपने सामान अपने सामने गिरा दिए, जिससे सामान ढोने वाले को रेंगकर उन्हें उठाना पड़ा। कई लोगों ने सामान बहुत आगे की ओर पकड़ रखा था, जिससे उनका संतुलन बिगड़ गया और ट्रॉली पलट गई। भागने वाले के खुद को छुड़ाकर सुरंग में रेंगकर ऊपर आने का इंतजार करने के बजाय, सामान ढोने वाला आमतौर पर खुद रेंगकर ऊपर जाने और उसे वापस ट्रॉली पर चढ़ाने में मदद करने का फैसला करता था। यह एक मुश्किल काम था, जो घबराहट के कारण और भी कठिन हो गया था। भागने वाले को अपना वजन अपनी उंगलियों और पैर की उंगलियों पर लेना पड़ता था ताकि सामान ढोने वाला उसके नीचे जाकर ट्रॉली को फिर से सही जगह पर रख सके; फिर सामान ढोने वाले को सुरंग में पीछे की ओर रेंगकर खींचना पड़ता था, इस उम्मीद में कि वही गलती दोबारा न हो। इन देरी के कारण, प्रत्येक व्यक्ति को सुरंग से निकलने में पांच या छह मिनट लग रहे थे। कभी-कभी यह गति धीमी होकर बारह मिनट में एक व्यक्ति तक पहुंच जाती थी। ग्यारह बजकर साढ़े दस मिनट तक, सत्रह लोगों के पहले समूह का अनुसरण करने के लिए केवल छह भगोड़ों को ही बुलाया गया था।

फिर हवाई हमला शुरू हो गया। सायरन बजने लगे और कुछ ही मिनटों में कैंप की बिजली कट गई, जिससे सुरंग में अंधेरा छा गया। भागने वालों में से कई लोग पहले कभी भूमिगत नहीं गए थे, और जब हैरी पूरी तरह से रोशन था तब भी घुटन का डर काफी ज्यादा था। घोर अंधेरे में, कुछ भागने वाले घबरा गए। विंग्स डे, जो शाफ्ट के निचले हिस्से में ऊपर खींचे जाने का इंतजार कर रहा था, समझ गया कि घबराहट से बड़ी दुर्घटना हो सकती है और उसने मोटे लैंप जलाने का काम शुरू कर दिया। धीरे-धीरे वह सुरंग में ऊपर की ओर बढ़ता गया, सभी बत्तियों को जलाता गया और लोगों को दिलासा देता गया। काम पूरा करने में पैंतीस मिनट लगे, लेकिन वह कुछ हद तक शांति बहाल करने में सफल रहा।

हालांकि, अभी भी कुछ भ्रम की स्थिति थी। निकास कक्ष में पहुँचकर विंग्स यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि सिडनी डाउज़ अभी भी रस्सियों से सामान खींच रहा था।

'तुम अभी तक यहाँ क्या कर रहे हो?' डे ने फुसफुसाते हुए कहा। 'तुम्हें अब तक यहाँ से निकल जाना चाहिए था!'

सिडनी ने जवाब दिया, 'मुझे पता है। डैनी तो जा चुका है, हालांकि उसे अंदर लाने में मुझे थोड़ी मुश्किल हुई - उसे क्लॉस्ट्रोफोबिया (बंद जगहों से डर) बहुत ज़्यादा है। हैंक बर्कलैंड को मेरी जगह काम संभालना था - पता नहीं वो कहाँ चला गया!'

डे ने जल्दी से कहा, "बर्कलैंड लीसेस्टर स्क्वायर में सामान ढो रहा है – मैं अभी उसके पास से गुजरा हूँ। उसे शायद गलत निर्देश मिल गए होंगे। तुम्हें जल्दी जाना चाहिए। मैं यहाँ से काम संभाल लेता हूँ – टोबोल्स्की मेरे बाद आएगा, इसलिए मैं थोड़ी देर रुक सकता हूँ।" एक झटके में सिर हिलाकर सिडनी शाफ्ट से ऊपर की ओर चल पड़ा।

सुरंग में आगे बढ़ते हुए गॉर्डन ब्रेटेल को भी कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था। वह लेस्टर से पिकाडिली तक एक खाली ट्रॉली खींच रहे थे कि बीच में कहीं रस्सी टूट गई। समझ न आने पर उन्होंने खुद को उलझने से बचाने के लिए रस्सी का बचा हुआ हिस्सा खींच लिया और सुरंग में रेंगते हुए ऊपर चढ़ने लगे। कुछ ही सेकंड बाद पिकाडिली पहुंचे आइवो टोंडर ने वहां मौजूद ट्रॉली खींचने वाले से पूछा कि क्या हुआ था, लेकिन ट्रॉली खींचने वाला अपनी ही टूटी हुई रस्सी को ठीक कर रहा था। इसलिए आइवो को भी ट्रॉली तक रेंगकर जाना पड़ा, रस्सी बांधनी पड़ी और फिर वापस पिकाडिली लौटकर ऊपर चढ़ना पड़ा।

सुरंग के कमरे में, केर-रामसे ने हेनरी लैमंड की सहायता से ज़मीन के ऊपर नियंत्रक का पदभार संभाल लिया था। देरी को ध्यान में रखते हुए, उन्होंने सुरंग में प्रवेश करने वाले प्रत्येक व्यक्ति का निरीक्षण किया और उनकी राह में बाधा डालने वाली हर चीज़ को हटा दिया। जॉनी डॉज, जो ठंड से बचने के लिए ज़रूरत से ज़्यादा कपड़े पहने हुए था, उसे भूमिगत जाने से पहले अपने कुछ कपड़े उतारने के लिए कहा गया, और पॉप ग्रीन की जेबों में रखी जर्मन ब्रेड की दो बड़ी रोटियाँ भी ले ली गईं। हालाँकि, क्रम्प का दिल टिम वालेन को उसका विशाल सूटकेस देने का नहीं हुआ, जिसके बारे में जालसाज़ ने ज़ोर देकर कहा था कि वह किसी भी आपात स्थिति में उसका साथ देगा।

फिर वही हुआ जिसका डर था। टॉम किर्बी-ग्रीन, जिसे पिकाडिली से लीसेस्टर स्क्वायर तक खींचा जा रहा था, ट्रॉली पर थोड़ा सा हिल गया और ट्रॉली का संतुलन बिगड़ गया। पहियों को वापस पटरी पर लाने की कोशिश में, उसने एक बॉक्स फ्रेम को धक्का दे दिया और सुरंग का तीन फुट का हिस्सा उसके ऊपर गिर गया। लीसेस्टर स्क्वायर में मौजूद हैंक बर्कलैंड ने जब रस्सी को कसते हुए महसूस किया, तो वह समझ गया कि कुछ गड़बड़ है। जैसे ही उसने सुरंग में झाँका और महसूस किया कि अब उसे पिकाडिली के मोटे लैंप दिखाई नहीं दे रहे हैं, उसने खुद को सबसे बुरे के लिए तैयार कर लिया।

किर्बी-ग्रीन पहुँचकर उसने देखा कि स्क्वाड्रन लीडर रेत में बुरी तरह दबा हुआ है। उसने सावधानी से उसे रेत के नीचे से बाहर निकाला और उसे सीधा लिटा दिया, जबकि टॉम उसके ऊपर से रेंगता हुआ सुरंग में ऊपर चढ़ गया। फिर हैंक काम पर लग गया।

सौभाग्य से, कोई भी तख्ता टूटा नहीं था, इसलिए बस उन्हें वापस लगाना और रेत भरना बाकी था। हालांकि, अंधेरी सुरंग की तंग जगह में यह काम आसान नहीं था। उसने सिर्फ अंदाजे से काम करते हुए सभी साइडबोर्ड ढूंढे और उन्हें वापस अपनी जगह पर लगा दिया, साथ ही उनके पीछे रेत भरता गया। फिर उसने छत की ओर ध्यान दिया, जहां गिरने से तीन फुट ऊंचा गुंबद खुल गया था। उसने एक-एक करके छत के तख्तों को वापस लगाया और रेत को जितना हो सके अच्छे से भरा। पूरे काम में उसे एक घंटा लगा और जैसे ही बत्तियां वापस आईं, काम खत्म हो गया।

अब रोशन हो चुकी सुरंग में, हैंक को यह देखकर राहत मिली कि गिरने से बिजली का तार क्षतिग्रस्त नहीं हुआ था। हालांकि, उसने यह भी पाया कि काफी रेत बची हुई थी जो सहारे के पीछे नहीं समा पाई थी, इसलिए उसके पास एकमात्र उपाय था कि वह उसे पटरियों के बीच फर्श पर फैला दे। यह करने के बाद, वह वापस लीसेस्टर स्क्वायर गया और फिर से सामान ढोने का काम शुरू कर दिया।

बत्तियाँ तो जल चुकी थीं, लेकिन समस्याएँ जारी रहीं। किर्बी-ग्रीन के गिरने के कुछ ही क्षण बाद, कुकी लॉन्ग पिकाडिली से लगभग बीस फीट पहले दब गया। वह खुद को बचाने और रेंगकर दूर जाने में कामयाब रहा, लेकिन पिकाडिली को खींच रहे बॉब नेल्सन को वापस जाकर मलबे को ठीक करना पड़ा। इसमें तीस मिनट लग गए। फिर दो और लोग फंस गए। उनमें से एक नेविल मैकगार थे, जिन्होंने अपने साथ खाने-पीने का सामान और कपड़े भर रखे थे, और हँसते हुए कहा कि इससे उनका कई महीनों तक गुजारा हो जाएगा। दोनों खुद को बचाने में कामयाब रहे, लेकिन कुछ ही देर बाद, लेस ब्रोड्रिक बीच वाले हिस्से में अस्थायी रूप से फंस गया जब

उसकी ट्रॉली की रस्सी टूट गई। फिर, पिकाडिली और लीसेस्टर स्क्वायर के बीच, सैंडी गन एक मलबे में फंस गया। कुकी लॉन्ग, जो लीसेस्टर स्क्वायर में खींचने वाले की मदद करने के लिए खुद मलबे में दबने से बच गया था, सैंडी को बचाने और मलबे को सहारा देने के लिए वापस आया। इसमें भी बीस मिनट लग गए।

इनमें से कई दुर्घटनाओं में समस्या हार्डर्स द्वारा ले जाए जा रहे कंबल के रोल थे। कुछ रोल बहुत लंबे थे, जिनके सिरे बॉक्स फ्रेम में फंस जाते थे। कुछ कंबल भागने वाले की गर्दन के चारों ओर बहुत ढीले लटके रहते थे, जिससे वे रेल की पटरियों पर घिसटते थे और आगे के पहियों के नीचे फंस जाते थे, जिससे ट्रॉली पटरी से उतर जाती थी और व्यक्ति का दम घुटने लगता था। कभी-कभी कंबल का रोल लिए हुए व्यक्ति को निकलने में चौदह मिनट तक लग जाते थे। इस स्थिति का सामना करते हुए, केर-रामसे ने एक कठिन निर्णय लिया: अब कंबल के रोल की अनुमति नहीं दी जाएगी। इससे हार्डर्स के लिए और भी अधिक कठिनाई पैदा होगी, लेकिन अधिक खतरनाक दुर्घटनाओं से बचने का यही एकमात्र तरीका था। गलियारे में मौजूद डेव टोरेंस और प्रवेश शाफ्ट के निचले हिस्से में मौजूद मकल मुइर सहित अन्य नियंत्रकों ने भी इस बात से पूरी तरह सहमति जताई। कंबल के रोल के बिना, चीजें अधिक सुचारू रूप से चलने लगीं।

लेकिन लेस ब्रोडरिक की मुश्किलें तब भी जारी रहीं जब वह निकास शाफ्ट के तल पर पहुँच गया। घोर अंधेरे में, वह दिशा का अंदाजा नहीं लगा पा रहा था और फिर उसे पता चला कि वह अपना पैर शाफ्ट में फंसे बिना सीढ़ी के डंडों तक नहीं उठा सकता। नतीजतन, उसे अपने हाथों से खुद को ऊपर खींचना पड़ा, और जब भी सीढ़ी पर पैर रखने का मौका मिलता, वह आराम करता। जब वह आखिरकार बाहर निकला, तो लेस थकान से चूर था। खुले में खुद को पाकर उसे जो झटका लगा, उससे उसे फिर से ऊर्जा मिली और वह घिसे-पिटे रास्ते से रेंगते हुए जंगल की ओर गया, जहाँ मार्शलर, हैंक बर्कलैंड, धैर्यपूर्वक उसका इंतजार कर रहा था। एक पेड़ के पीछे छिपकर, लेस ने शिविर की ओर पीछे मुड़कर देखा और सुरंग के मुँह से भाप का एक स्तंभ उठता देखकर दंग रह गया; वह समझ नहीं पा रहा था कि गार्ड इसे कैसे नहीं देख पाए।

कुछ ही देर में डेनिस स्ट्रीट प्रकट हुए, जो इक्कीस वर्षीय लैंकेस्टर बॉम्बर पायलट थे और ब्रिटिश वायु मंत्रालय के स्थायी अवर सचिव और वायु परिषद के सचिव सर आर्थर स्ट्रीट के पुत्र थे। डेनिस के पीछे हंक हम्फ्रीज़, पॉल रॉयल और दस लोगों का शेष समूह भी था। बर्कलैंड ने उन्हें संगठित किया और जंगल की ओर चल दिए। थोड़ी देर बाद उन्हें एक छोटी सी इमारत दिखाई दी, लेकिन वह निहत्थी और जाहिरा तौर पर वीरान थी। राहत की सांस लेते हुए, सभी पश्चिम की ओर आगे बढ़े।

*

रेलवे स्टेशन पर हवाई हमले के कारण हो रही देरी बढ़ती जा रही थी। यह सच था कि गार्डों ने तार और जंगल की बजाय परिसर में किसी भी गड़बड़ी के संकेत पर नज़र रखना शुरू कर दिया था, जिससे भागने वालों की संख्या बढ़ गई थी, लेकिन भागने वाले स्टेशन पर भीड़ बढ़ाते जा रहे थे। जो लोग घंटों पहले ट्रेन पकड़ सकते थे, वे अभी भी टिकट काउंटर पर इंतज़ार कर रहे थे। पहले पहुँच चुके लोगों की तुलना में उन्हें बस यही फ़ायदा था कि दूसरे यात्रियों को देखकर उन्हें पता चल गया था कि ज़्यादातर लोग हवाई हमले से बचाव के उपायों को नज़रअंदाज़ कर रहे थे और रेलवे कर्मचारियों की चौकस निगाहों के सामने से सीधे बुकिंग काउंटर में जा रहे थे। वहाँ पावेल टोबोल्स्की अपनी लूफ़्टवाफ़े वर्दी में टहल रहे थे, जबकि अन्य लोग अपने सिले-सिलाए सूट में छाया में खड़े थे, ताकि किसी का ध्यान उन पर न जाए। स्टेशन के बीच में खड़े डेनिस कॉचरन की गहरे बैंगनी रंग की वर्दी थोड़ी भड़कीली लग रही थी, लेकिन उनके पीले, झाइयों वाले चेहरे पर ज़बरदस्त आत्मविश्वास झलक रहा था। शिविर के कुछ गार्ड इधर-उधर आराम कर रहे थे और लड़कियों का एक समूह खिड़की पर बैठा आपस में धीरे-धीरे गा रहा था।

गॉर्डन किडर और टॉम किर्बी-ग्रीन, जिनमें से टॉम अभी भी अपनी बाल-बाल बची मौत से थोड़ा सहमा हुआ था, शिविर के सेंसर स्टाफ की एक सदस्य के पास पहुँचे। महिला ने मुस्कुराते हुए पूछा कि वे कौन हैं। एक स्पेनिश मजदूर का नाटक करते हुए, टॉम ने स्पेनिश और टूटी-फूटी जर्मन भाषा में सावधानीपूर्वक जवाब दिया, लेकिन महिला संतुष्ट नहीं हुई। उसने एक पुलिसकर्मी को बुलाया, और टॉम ने अपनी कहानी फिर से दोहराई। पुलिसकर्मी ने उदासीनता से सिर हिलाया और दोनों को जाने का इशारा किया। बाद में महिला ने बॉब वैन डेर स्टॉक को परेशान करना शुरू कर दिया, लेकिन वह रात में दूसरी बार बाल-बाल बच गया। महिला को बात करने की इच्छा थी, और बॉब को तब राहत मिली जब उसकी ट्रेन आ गई।

विंग्स डे, जो आखिरकार रात करीब 12:45 बजे स्टेशन पहुंचा, वहां इतने सारे भगोड़ों को देखकर आश्चर्यचकित रह गया और वह गौव्स और स्टीवंस के पास गया, जो एक अखबार के स्टॉल की छाया में खड़े थे।

'यहां सब लोग अभी भी क्या कर रहे हैं?' डे ने धीमी आवाज में जर्मन में पूछा।

जॉन स्टीवंस ने बनावटी घृणा का भाव लिए डे की ओर मुड़ते हुए कहा, जैसा कि कोई भी व्यापारी किसी आवारा व्यक्ति के सामने करता है। “हवाई हमले के कारण सभी ट्रेनें विलंबित हो गई हैं – कौन जाने हम यहाँ से कब निकल पाएंगे!” उसने उत्तर दिया।

अपनी सीमित जर्मन भाषा की और परीक्षा न लेने की इच्छा से, विंग्स ने विनम्रतापूर्वक मुस्कुराते हुए टोबोल्स्की से दोबारा मिलने के लिए प्रस्थान किया।

फिर लाउडस्पीकर बजने लगे: ‘ब्रेस्लाउ, बानस्टाइग फünf, ब्रेस्लाउ, बानस्टाइग फünf’ (ब्रेस्लाउ, ट्रैक पाँच)। इसके साथ ही, बुकिंग हॉल खाली होने लगा क्योंकि भागने वाले और आम नागरिक टिकट बैरियर से होते हुए ऊपर के प्लेटफार्मों की ओर जाने वाली सबवे में प्रवेश करने लगे। बॉब वैन डेर स्टॉक अंदर गए, उनके पीछे गौव्स और स्टीवंस, किडर और किर्बी-ग्रीन, और टोनी हेयटर थे। डेनिस कॉचरन सबसे आखिर में अंदर गए, जो इस पूरे अनुभव से पूरी तरह ऊब चुके थे। रात 1:00 बजे, ट्रेन धीरे-धीरे चलने लगी। यात्रियों का दूसरा समूह अपने रास्ते पर था।

लगभग एक घंटे बाद, एक और एक्सप्रेस ट्रेन आई, जो सुबह 2:04 बजे फ्रैंकफर्ट-एन-डेर-ओडर के लिए थी। सुरंग से आसानी से स्टेशन पहुँचने की खुशी से उत्साहित और सजे-धजे दिख रहे जेन्स मुलर और पेर बर्गस्लैंड आत्मविश्वास से एक डिब्बे में चढ़ गए। उनके बाद रेने मार्सिंकस और तीन जालसाज टिम वालेन, गॉर्डन ब्रेटेल और हेनरी पिकार्ड आए। वह ट्रेन भी धीरे-धीरे चल पड़ी, और टिकट हॉल में इंतज़ार कर रहे लोगों का एक छोटा समूह रह गया। सुबह 3:15 बजे, बर्लिन जाने वाली एक्सप्रेस ट्रेन आई और डे, टोबोल्स्की और सेलर नीली उसमें सवार हो गए। जैसे ही ट्रेन प्लेटफार्म से निकलने लगी, जिमी कैटानाच, अर्नोल्ड क्रिस्टेंसन, हाल्डोर एस्पेलिड और निल्स फुगलेसांग दौड़ते हुए आए और आखिरी डिब्बों में से एक में चढ़ गए।

बुकिंग हॉल में केवल एक ही व्यक्ति बच निकला, जिसका नाम रेमंड वैन वाइमर्स था। वह एक फ्रांसीसी पूर्व रेडियो तकनीशियन था, जो अगस्त 1942 में डाइपे के ऊपर विमान दुर्घटना में घायल हो गया था। इससे पहले, उसे यह जानकर निराशा हुई कि टिकट क्लर्क ने उसे ब्रेस्लाउ का नहीं, बल्कि ब्रेस्लाउ से काफी उत्तर में स्थित लिसा का टिकट दे दिया था। टिकट बदलने की कोशिश करके हंगामा खड़ा करने या बिना टिकट के ट्रेन में चढ़ने से होने वाली परेशानी से बचने के लिए, उसने लिसा ट्रेन के आने का इंतजार किया और उसमें सवार हो गया। वहाँ पहुँचकर उसने ब्रेस्लाउ का टिकट खरीदा और निर्धारित समय से कुछ देरी से वहाँ पहुँचा।

*

रात 1:00 बजे चलने वाली बर्लिन-ब्रेस्लाउ एक्सप्रेस ढाई बजे ब्रेस्लाउ स्टेशन पहुँची, और वहाँ कई लोग फिर से मिले। डेस प्लंकेट और फ्रेडी ड्वोरक, ग्लैट्ज़ जाने वाली अपनी पहली ट्रेन छूट जाने के कारण, छह बजे तक अगली ट्रेन का इंतज़ार कर रहे थे। नींद के लिए बेताब होकर, वे

कुछ घंटों के लिए लेटने की जगह ढूंढते रहे, लेकिन उन्हें कुछ नहीं मिला। आख़िरी उपाय के तौर पर, वे बुकिंग हॉल के किनारे अपने सूटकेस पर बैठ गए और थोड़ी देर झपकी लेने की कोशिश की। ऊपर बालकनी से झुके हुए कई लोगों के कारण बातचीत करना नामुमकिन था। वे बस बैठे रह सकते थे।

वहाँ आए हुए उन्हें ज़्यादा देर नहीं हुई थी कि रोजर बुशेल हॉल में टहलते हुए आ गए। थोड़ी देर बाद, रोजर फिर वहाँ से गुज़रे, रुके और फ्रेडी से विनम्रता से कहा, 'क्या आपके पास माचिस है, महोदय?' माचिस निकालते हुए फ्रेडी ने जवाब दिया, 'ज़रूर, महोदय,' और रोजर ने अपनी सिगरेट जला ली। धीमी आवाज़ में ड्वोरक ने पूछा कि बर्नार्ड शेइडहाउर का क्या हुआ।

“ओह, वो रेस्टोरेंट में एक फ्रांसीसी महिला से मिला,” बुशेल ने जवाब दिया। “वो उसके फ्लैट पर गया है – शायद वो हमारी मदद कर सके।” इतना कहकर, रॉजर ने धुएं का एक बादल उड़ाया, डेस और फ्रेडी को देखकर मुस्कुराया और बुकिंग हॉल में भीड़ में गायब हो गया। चारों ओर देखते हुए, डेस और फ्रेडी ने कैंप के कुछ और लोगों को देखा। जॉन स्टीवंस और जोहान्स गौव्स हॉल के दूसरी तरफ खड़े थे, जबकि प्रतीक्षालय में बॉब वैन डेर स्टॉक बासी बीयर का एक गिलास पी रहा था। कुछ ही घंटों में प्लंकेट और ड्वोरक को छोड़कर बाकी सब चले गए। वे अपने सूटकेस पर बैठे रहे, धैर्यपूर्वक ग्लैट्ज़ जाने वाली ट्रेन का इंतजार करते रहे।

*

शिविर में तड़के ही तनाव बढ़ गया था और काम में और देरी होने लगी थी। लगभग चार बजे, रॉय लैंगलोइस सुरंग से बाहर निकले और फेरेट बाड़ पर जॉर्ज मैकगिल की जगह लेने के लिए तैनात हुए। लैंगलोइस ने अगले दो भागने वालों, डची स्वैन और बॉब स्टीवर्ट को इशारा किया और फिर देखा कि गार्डों के छोटे-छोटे समूह तार के पास इकट्ठा होने लगे हैं। वे दो-तीन के समूहों में खड़े थे और जाने की कोई इच्छा नहीं दिखा रहे थे। तभी लैंगलोइस को एहसास हुआ कि समय बदल रहा है। अगले बीस मिनट तक, ड्यूटी से छुट्टी पर मौजूद गार्ड इधर-उधर घूमते रहे और फिर धीरे-धीरे गार्डहाउस की ओर चले गए। इस दौरान रॉय केवल दो और आदमियों को ही बाहर निकाल पाए।

कुछ मिनट बाद, लैंगलोइस को एक और झटका लगा। उसने गुंडों के कमरे से एक चीख सुनी और सहज ही बाड़ के पीछे थोड़ा और नीचे झुक गया, मानो उसे गोली चलने की आशंका हो। तभी गश्त कर रहे पहरेदारों में से एक ने जवाब दिया, जो धीरे-धीरे चलकर आया और कमरे तक जाने वाली सीढ़ी पर चढ़ गया। टावर का पहरेदार नीचे आया और सीधे सुरंग के मुहाने की ओर चलने लगा। जैसे-जैसे वह करीब आता गया, रॉय और नीचे झुकने की कोशिश करने लगा, उसे सिर्फ अपने धड़कते दिल का एहसास हो रहा था। सुरंग से बस पाँच फीट की दूरी पर, पहरेदार मुड़ा, अपनी पैंट खोली और नीचे बैठ गया। पाँच मिनट तक पहरेदार वहीं बैठा रहा, बेपरवाह होकर अपना काम करता रहा, जबकि रॉय अपने दिल की धड़कन को धीमा करने की कोशिश करता रहा। तभी उसे सीढ़ी पर खड़े उस बदकिस्मत भागने वाले की याद आई, जो गुंडे से बस कुछ ही फीट दूर था। रॉय ने सोचा, सबसे बुरी हालत तो उसी की है। आखिरकार गुंडे ने अपना काम खत्म किया और टावर में लौटने से पहले सावधानी से अपनी पैंट बाँधी। मन ही मन धन्यवाद कहते हुए, रॉय ने रस्सी को दो बार खींचा और अगला आदमी उसके पास से तेज़ी से निकल गया।

*

शाम के लगभग पौने पाँच बजे, हट 104 के नियंत्रकों ने फैसला किया कि आखिरी आदमी, नंबर 87, लगभग पाँच बजे बाहर निकलेगा। भोर होने लगी थी, इसलिए यही आखिरी समय था जब

वे निकल सकते थे। आखिरी बचे लोगों को सुरंग में उतारा गया, और पिकाडिली में टिम न्यूमैन, लीसेस्टर स्क्वायर में रेड नोबल और निकास शाफ्ट में शैग रीस को निर्देश दिया गया कि आखिरी आदमी को बाहर निकालने के बाद वे निकल जाएं।

नेवले की बाड़ के पीछे रॉय लैंगलोइस के लिए पहले से ही बहुत उजाला हो चुका था। उन्हें ऐसा लग रहा था मानो पिछले एक घंटे में उनकी उम्र दस साल बढ़ गई हो, और हालात आसान होते नहीं दिख रहे थे। एक बार फिर गार्ड अपने गश्ती क्षेत्र के अंत तक पहुँच गया और एक बार फिर लैंगलोइस ने सिग्नल की रस्सी खींची। 76वाँ आदमी, लॉरेंस रीवेल-कार्टर, छेद से बाहर निकला और दूसरी रस्सी के सहारे मिलन स्थल की ओर बढ़ने लगा। वहाँ उसकी मुलाकात टोनी बेथेल से हुई, जो रेलवे लाइन की ओर जाने से पहले अपने समूह को इकट्ठा कर रहा था। छेद से अगला निकला कीथ ओगिलवी, जो रॉय के पास से रेंगता हुआ जंगल में रीवेल-कार्टर के पास पहुँच गया। पेड़ों में अपनी सुविधाजनक जगह से, उन्होंने देखा कि 78वाँ आदमी, न्यूजीलैंड का मिक शैंड, हैरी से निकला और उनकी ओर रेंगने लगा। वह नेवले की बाड़ को पार ही कर चुका था कि 79वाँ आदमी, लेन ट्रेंट, बाहर आ गया।

तभी लैंगलोइस और रीवेल-कार्टर दोनों ने गार्ड के रास्ते में एक बदलाव देखा। तार के पास रहने के बजाय, वह चलते-चलते अपना दायरा बढ़ा रहा था और सीधे सुरंग की ओर बढ़ रहा था। तुरंत ही रॉय ने दोनों रस्सियों को ज़ोर से खींचा, और ट्रेंट और शैंड ज़मीन पर जम गए। गार्ड आगे बढ़ता रहा, और लैंगलोइस को पिछली घटना के दोहराव की आशंका थी। लेकिन इस बार गार्ड रुका नहीं। धीरे-धीरे वह सुरंग के मुहाने के पास पहुँचता गया; एक कदम पर उसका पैर मुहाने से कुछ इंच दूर से निकल गया, जबकि अगले कदम पर वह लगभग लेन ट्रेंट पर ही पड़ा। वहीं गार्ड रुक गया।

अध्याय **16**

मौसम की मार झेलते हुए

गार्ड ने शायद नेवले की बाड़ के पार कीचड़ भरे रास्ते पर मिक शैंड को लेटे हुए देख लिया था, क्योंकि उसने अपनी राइफल कंधे से उतारकर मिक पर तान दी थी। बर्फ में सिर दबाए शैंड को इस बात का बिल्कुल भी पता नहीं था, ट्रेंट और लैंगलोइस भी जमीन पर दुबके हुए थे। लेकिन पेड़ों की अपेक्षाकृत सुरक्षित ओट से देख रहे रीवेल-कार्टर ने गार्ड को शैंड पर निशाना साधते हुए देखा। बिना किसी झिझक के वह खुले में कूद पड़ा, हाथ हिलाते हुए चिल्लाया, 'निष्ट शिएसेन!' (गोली मत चलाओ!)। फिर तो हंगामा मच गया।

रीवेल-कार्टर की चीख सुनकर गार्ड चौंक गया और अंधाधुंध फायरिंग करने लगा। गोली की आवाज सुनते ही मिक शैंड उछलकर खड़ा हुआ और जंगल की ओर भाग गया। कीथ ओगिल्वी ने भी ऐसा ही किया। रीवेल-कार्टर धीरे-धीरे हाथ ऊपर उठाकर आगे बढ़ा; फिर ट्रेंट उस गुंडे के ठीक बगल में खड़ा हो गया। लेन को अपने बगल में खड़ा देखकर बेचारा गार्ड एक कदम पीछे हट गया। कोई और चारा न देखकर लैंगलोइस भी नेवले की बाड़ के पीछे खड़ा हो गया और हाथ ऊपर उठा लिए। टॉर्च ढूंढते हुए गार्ड ने उसकी रोशनी सुरंग में डाली, जो नंबर 80 बॉब मैकब्राइड के मुरझाए हुए लेकिन मुस्कुराते चेहरे पर पड़ी। शाफ्ट के नीचे बॉब के पीछे इंतजार कर रहा 'विंग्स' माव पहले ही सुरंग में ऊपर की ओर भाग चुका था। होश में आकर गार्ड ने अपनी सीटी निकाली और पूरी ताकत से बजा दी। सब कुछ खत्म हो चुका था।

*

गोली चलने की आवाज़ सुनते ही 104 नंबर के कंट्रोलर हरकत में आ गए। डेविसन ने सभी निकास आदेशों की सूचियाँ इकट्ठा कीं और उन्हें चूल्हे में डाल दिया, जबकि केर-रामसे सबको बाहर निकालने के लिए सुरंग में नीचे चले गए। हालाँकि, सुरंग में संवाद करना बहुत मुश्किल होता है और क्रम्प लाख कोशिश करने के बावजूद पिकाडिली में टिम न्यूमैन को यह नहीं समझा पाए कि भागने की कोशिश नाकाम हो गई है। आखिरकार उन्होंने रस्सी पकड़ी और टिम को वापस खींचने की कोशिश की, लेकिन इससे केवल रस्साकशी शुरू हुई, जो रस्सी के टूटने पर खत्म हुई। अंत में संदेश तब पहुँचा जब आखिरी भागने वाले सुरंग से वापस ऊपर आने लगे। सबसे पहले न्यूमैन निकले, फिर मकल मुइर और माइकल ऑरमंड। उनके पीछे रेड नोबल और विंग्स माव थे, जिनमें से हर कोई ज़ोर देकर कह रहा था कि कोई गुंडा उनका पीछा कर रहा है। अगला आदमी, शैग रीस, पसीने से तर और हाँफता हुआ बाहर आया और क्रम्प को बताया कि वह आखिरी था।

जाल बंद कर दिया गया, चूल्हा अपनी सामान्य स्थिति में वापस रख दिया गया, और प्रवेश द्वार को छुपाने वाले लॉकरों को वापस दीवार से सटा दिया गया। जाल के चारों ओर बिछे सभी कंबल वापस चारपाइयों पर रख दिए गए, और भागने की कोशिश करने वाले लोग सबूत मिटाने में जुट गए। उनकी पहली प्राथमिकता हर उस चीज़ को जलाना थी जो उन्हें दोषी ठहरा सकती थी, जिसमें कागज़ात, पैसे और नक्शे शामिल थे, और अपने कपड़ों को सेना के सैनिकों के कपड़ों में बदलना था। कुछ ने तो अपने सारे राशन को भी खाने की कोशिश की, हालाँकि कोई भी उसे आधा भी नहीं खा पाया।

कुछ लोगों ने खिड़कियों से निकलकर अपनी झोपड़ियों में वापस जाने की कोशिश की। 109वें दिन, एक सैनिक ने खिड़कियों पर ज़ोर-ज़ोर से खटखटाने की आवाज़ सुनी और खिड़कियाँ खोलकर एक हाँफते हुए भागने वाले को अंदर आने दिया, जिसने अपने आम कपड़े फाड़ दिए और एक चारपाई पर कूद गया, और पूरी झोपड़ी के खाली होने का इंतज़ार करने लगा। पास के एक गुंडे के बक्से से हुई गोलीबारी से पहले, वह ऐसा करने वाले कुछ ही लोगों में से एक था।

सुबह 5:30 बजे, हंडफ्यूहरर, एक सीधा-सादा छोटा सा साथी जिसने पहले भी भागने में मदद की थी, अपने कुत्ते के साथ कमरा नंबर 104 में आया। वह स्थिति से पूरी तरह घबरा गया था और उसने सबको अपने कमरों में रहने को कहा। फिर, कुछ और करने को न सूझने पर, उसने गलियारे से सारे ओवरकोट इकट्ठा किए, उन्हें एक ढेर में रखा और अपने कुत्ते को उनके ऊपर बिठा दिया। अल्सेशियन नस्ल का कुत्ता तुरंत सो गया।

सुरंग वाले कमरे में, क्रम्प केर-रामसे ने चूल्हे के नीचे से हल्की खरोंच की आवाज सुनी। टॉरेंस से यह पुष्टि करने के बाद कि सभी भागे हुए लोगों को बाहर निकाल लिया गया है, क्रम्प ने निष्कर्ष निकाला कि यह कोई गुंडा था और उसने उसे खुद ही बाहर निकलने का रास्ता ढूंढने देने का फैसला किया।

शिविर के बाहर, लेन ट्रेंट, बॉब मैकब्राइड, रॉय लैंगलोइस और लॉरेंस रीवेल-कार्टर को पहरेदारखाने की ओर ले जाया जा रहा था। जब वे वहाँ पहुँचे, तो उनके अंगरक्षक को यह देखकर निराशा हुई कि अधिकांश पहरेदार अभी भी सो रहे थे, और उन्हें जगाना उसके लिए काफी मुश्किल भरा काम था। इसलिए, केवल दो पहरेदारों की निगरानी में, चारों हताश भागने वाले बारी-बारी से छोटे चूल्हे के पास गए और अपने कागजात, नक्शे और पैसे उसमें ठूंस दिए।

अंततः वॉन लिंडिनर ने दरवाजा खोलकर अंदर प्रवेश किया, उसकी आँखें गुस्से से लाल थीं। उसने बड़ी मुश्किल से खुद को संयमित करते हुए चारों से भागने के बारे में पूछताछ शुरू की। कितने लोग बच निकले? साजिशकर्ता कौन थे? सुरंग कहाँ से शुरू होती थी? चारों बस वहीं खड़े रहे, मानो अवाक हों और मुस्कुरा रहे हों। कमांडेंट के मन में यह बिल्कुल नहीं था, और वह बेकाबू होकर आग बबूला हो गया। उसकी बातें लगभग अस्पष्ट हो गईं और वह धमकियाँ, आरोप और अपशब्दों की बौछार करने लगा। 'तुम्हें अंदाजा भी नहीं है कि तुमने क्या किया है,' वह चिल्लाया। 'इसमें गेस्टापो का हाथ होगा, मेरी बात याद रखना!' उसका चेहरा भयानक लाल हो गया था, और उसके हाथ-पैर गुस्से से कांप रहे थे।

पीबर थोड़ा संयमित था। उसने चारों को देखा और उदास होकर सिर हिलाया। उसने दुखी स्वर में कहा, 'तुम्हें शिविर में कभी वापस आने की अनुमति नहीं दी जाएगी।' दो घंटे तक वे पहरेदार कक्ष में इंतजार करते रहे, फिर उनके कपड़े उतार दिए गए, तलाशी ली गई और उन्हें ठंडे कमरे में ले जाया गया। वहाँ उन्हें दो दिनों तक बिना भोजन, गर्मी या नहाने के सामान के रखा गया। संतरी के अनुसार, यह वॉन लिंडेनर का आदेश था।

लगभग सुबह 6:00 बजे, पूरी तरह से हथियारों से लैस एक दंगा रोधी दस्ता परिसर में घुस आया और 104 के चारों ओर घेरा बना लिया। हर दरवाजे पर मशीन गनें तैनात थीं, और कुछ पहरेदार और शिविर अधिकारी थोड़ी दूरी पर खड़े होकर, कुछ शर्मिंदगी के साथ इस दृश्य को देख रहे थे। एक-एक करके भागने वालों को झोपड़ी से बाहर निकाला गया, हर कोई गोली लगने की आशंका से काँप रहा था, और उनके कपड़े उतारकर उन्हें केवल अंडरवियर में छोड़ दिया गया। नागरिक वस्त्रों में थोड़ा सा भी बदला हुआ कोई भी कपड़ा जब्त कर लिया गया और ढेर में फेंक दिया गया, जिसमें भागने का वह सारा सामान भी शामिल था जो नष्ट नहीं हुआ था। भागने वालों में से अधिकांश 104 से बाहर निकलते समय अपने कंपास बर्फ में गिराने में कामयाब रहे थे, लेकिन एक-दो लोगों को कपड़े उतारे जाने के बाद एहसास हुआ कि उनके भागने के नक्शे अभी भी उनकी शॉर्ट्स में दबे हुए हैं। उनके आसपास मौजूद पहरेदारों की मदद से, नक्शों को धीरे-धीरे चबाकर निगल लिया गया।

इसी बीच, कमांडेंट के सहायक सिमोलीट घबरा रहे थे और आखिरकार उन्होंने बिल जेनेन्स को उनके बिस्तर पर ढूंढ लिया। उन्होंने गिड़गिड़ाते हुए कहा कि चार्ली फ़ेल्ज़, एक प्यारा और बिल्कुल हानिरहित नेवला, सुरंग में है और अगर उसे बाहर नहीं निकाला गया तो वह जल्द ही दम घुटकर मर जाएगा। यह जानते हुए कि मुंह से काफी हवा अंदर आती है, जेनेन्स आनाकानी करते रहे और टालमटोल करते हुए पूछते रहे कि फ़ेल्ज़ सुबह के इस समय सुरंग में क्या कर रहा है। धीरे-धीरे उन्होंने अपनी पैंट पहनी और कमरे से बाहर निकल गए, उनके पीछे-पीछे चिंतित सिमोलीट भी चल रहे थे।

स्थिति का पूरा फायदा उठाते हुए, जेनेन्स रुका और परिसर में खड़े कुछ अधनंगे भागने वालों से बातचीत की, फिर आखिरकार रेड नोबल को ढूंढकर जाल खोलने चला गया। चार्ली रोशनी में आंखें झपकाते हुए बाहर निकला और मुस्कुराते हुए उसने रबरनेक और वॉन लिंडेनर को, जो अभी-अभी पहुंचे थे, सुरंग के बारे में बताया। कुछ ही नेवलों को रबरनेक की परवाह थी, और यह पूरी स्थिति उसे स्पष्ट रूप से बहुत असहज कर रही थी।

सुरंग के बारे में सुनकर वॉन लिंडेनर का गुस्सा फिर भड़क उठा और उसने अपनी पिस्तौल निकाल ली, उसे आँखों में पागलपन भरी नज़र से लहराते हुए। सुरक्षा अधिकारी ब्रॉइली अपनी बंदूक को स्थिर रखने की पूरी कोशिश कर रहा था, लेकिन कामयाब नहीं हो पा रहा था। केवल रबरनेक ही शांत दिख रहा था, जिसका चेहरा लाल धब्बों से भरा था, लेकिन उसके चेहरे पर एक अजीब सी मनोरोगी शांति झलक रही थी। ज़ाहिर है, वह किसी पर अपना गुस्सा निकालने की तलाश में था।

तभी उसकी नज़र शैग रीस और रेड नोबल पर पड़ी। वह हमेशा से इन दोनों को अपना कट्टर दुश्मन मानता था, और जब उसने उन्हें 104 के बाहर खड़े देखा, तो वह झपटा और उनके कॉलर पकड़ लिए। सुरंग से वापस आते समय जोश में भरे शैग और रेड ने खुद को छुड़ाया और एक कदम पीछे हट गए, मानो लड़ने के लिए तैयार हों। इसे चुनौती समझते हुए, रबरनेक ने धीरे से अपनी पिस्तौल रेड पर तान दी, जबकि एक दूसरे गुंडे ने शैग पर निशाना साधा। नतीजा कुछ भी हो सकता था, लेकिन अंत में तनाव कम हो गया और शैग और रेड ने खुद को कपड़े उतारने और जेल ले जाने की इजाज़त दे दी।

एक नौजवान शरारती लड़के ने अपनी हंसी रोकने की कोशिश की और गले से अजीब-सी आवाज़ें निकालने लगा। वॉन लिंडिनर ने बिना किसी भाव के उसकी ओर देखा। उन्होंने पत्थर की तरह कहा, 'शांत रहो।' आवाज़ निकालने वाले लड़के के एक दोस्त को यह मज़ाक लगा और जब उसके दोस्त को ले जाया जा रहा था तो वह खिलखिलाकर हंस पड़ा। फिर कमांडेंट ने उसकी ओर मुड़कर कहा, 'शांत रहो।'

कुछ देर बाद एक और गुंडा फोटो पहचान पत्र लेकर आया ताकि 104 नंबर की झोपड़ी से बाहर आए सभी लोगों के नाम सत्यापित कर सके। फिर, लगभग दो घंटे तक, कर्मचारियों ने हर झोपड़ी की तलाशी ली ताकि पता चल सके कि कौन गायब है। हर ब्लॉक के दरवाजे पर सशस्त्र गार्ड तैनात थे, इसलिए बाहर निकलना नामुमकिन था। धीरे-धीरे कर्मचारियों ने भाग निकले लोगों की सूची तैयार की।

पीबर, कमरा नंबर 122 में सैंडी गन के कमरे के दरवाजे पर पहुंचा और थके हुए स्वर में पूछा, 'फ्लाइट लेफ्टिनेंट गन कहां हैं?' बाकी लोगों ने जवाब दिया कि वह किसी दूसरी झोपड़ी में होंगे। पीबर ने यह बात नोट कर ली और बाहर निकल गया। थोड़ी देर बाद उसने झोपड़ी नंबर 106 के एक कमरे में झांका और दरवाजे पर खड़े होकर अलग-अलग चारपाइयों की ओर इशारा करते हुए बोला, 'हम्म, फ्लाइंग ऑफिसर कॉकरन और... आह, मिस्टर लियोन भी इंग्लैंड चले गए हैं!' दुर्भाग्य से, जैक लियोन उस समय परिसर में खड़े थे और बाकी सभी की तरह ठंड से कांप रहे थे।

अंततः, गिनती पूरी होने पर, 104 नंबर के कैदियों का समूह तैयार हुआ और वे ठंडे कमरे की ओर चल पड़े। द्वार पर वे रुक गए। पीबर ने उन्हें एक छोटा सा भाषण दिया और कुछ हल्की-

फुल्की फटकार लगाई, फिर वे अपने जूतों को देखते हुए खड़े हो गए। समूह इंतज़ार करता रहा। आधे घंटे बाद, एक नेवला पीबर के लिए एक संदेश लेकर आया। ऑस्ट्रियाई कैदी ने गहरी साँस ली और फिर कैदियों को जाने के लिए कहा। पता चला कि ठंडे कमरे में उनके लिए पर्याप्त जगह नहीं थी। वास्तव में, उनमें से कुछ ही अपनी पूरी अट्ठाईस दिन की सज़ा काट पाएंगे।

*

गिनती जारी रहने के दौरान, वॉन लिंडिनर खोज प्रक्रिया शुरू करने के लिए अपने कार्यालय में चले गए। हालाँकि उन्हें अभी तक लापता लोगों की संख्या का कोई अनुमान नहीं था, लेकिन उन्हें पूरा विश्वास था कि पूर्ण सतर्कता आवश्यक होगी। सबसे पहले उन्होंने ओकवा युद्धबंदी कार्यालय में अपने वरिष्ठ अधिकारी को फोन किया, जिन्होंने शिविर में एक अधिकारी को भेजा, और फिर उन्होंने लूफ़्टवाफ़े के उच्च अधिकारियों को सूचित किया। सबसे महत्वपूर्ण बात, उन्होंने ब्रेस्लाउ क्रिपो कार्यालय के प्रमुख मैक्स विएलेन को फोन किया, जो खोज के समन्वय के लिए जिम्मेदार थे। विएलेन ने तुरंत एक सामान्य सतर्कता (क्रीग्सफाहंडुंग) का आदेश दिया, और फिर इसे तुरंत राष्ट्रीय सुरक्षा के उच्चतम स्तर की सतर्कता (ग्रॉसफाहंडुंग) में बदल दिया। उन्होंने वॉन लिंडिनर को क्रिपो के उच्च अधिकारियों को सूचित करते हुए खोज उपकरण स्थापित करना जारी रखने का निर्देश दिया।

वॉन लिंडिनर ने सुबह-सुबह उनतीस और फोन किए। उन्होंने स्थानीय रेलवे स्टेशनों को सतर्क किया और यह जाने बिना कि ट्रेन यात्री बहुत पहले ही जा चुके थे, सागन से निकलने वाली हर ट्रेन की तलाशी का आदेश दिया। पास के हवाई अड्डों को अलर्ट पर रखा गया और बाल्टिक बंदरगाहों में क्रिग्समरीन को सूचित किया गया। इलाके में होम गार्ड और स्थानीय रक्षा टुकड़ियों को भी बुलाया गया। उन्हें सड़कों पर हर वाहन को रोकना था, हर गली और सड़क पर गश्त करनी थी और शिविर से पचास मील के दायरे में हर खेत, घर और होटल की तलाशी लेनी थी। सभी अधिकारियों और कई गैर-अधिकारियों को भी भागने वालों को पकड़ने के लिए ग्रामीण इलाकों में जाने का निर्देश दिया गया था। अपने आसपास क्या हो रहा था, इससे बेखबर, साधारण मजदूर बर्फ में चलते हुए शिविर से निकलने की कोशिश कर रहे थे।

*

रात के 1:30 बजे से ठीक पहले, जब ट्रेन के सभी यात्री सुरंग से निकल चुके थे, तभी पैदल भागने वालों में से पहला व्यक्ति विली विलियम्स के रूप में सामने आया। इस लंबे-चौड़े ऑस्ट्रेलियाई को बारह लोगों के एक समूह का नेतृत्व करना था, जो स्थानीय लकड़ी मिल से छुट्टी पर आए मजदूरों के वेश में थे। उन्हें शिविर के दक्षिण-पूर्व में स्थित एक छोटे से स्टेशन, त्शीब्सडॉर्फ की ओर जाना था, जहाँ जेरज़ी मोंडशाइन एक जाली पास का उपयोग करके चेक सीमा पर हिर्शबर्ग के पास स्थित बोबरोहर्सडॉर्फ के लिए टिकट खरीदेगा। वहाँ पहुँचने पर समूह अलग-अलग रास्तों पर निकल जाएगा।

विलियम्स और मोंडशाइन के बाद, दुर्जेय जॉनी डॉज आए, जो अपने भारी शरीर को सुरंग से बाहर निकालने के लिए संघर्ष कर रहे थे, और पॉप ग्रीन, जो भागने में सबसे उम्रदराज व्यक्ति थे (सत्तावन वर्ष)। रस्टी कीरथ और जिम वर्नहम पॉप के पीछे सीढ़ी से चढ़े; फिर आए पोलिश नागरिक टोनी किवनार्स्की और काज़ पावलुक। समूह के नौवें सदस्य डग पॉयंटर थे, और सबसे पीछे जिमी जेम्स थे, जो एक बदली हुई फ्लाइंग ट्यूनिक और रेगिस्तानी पैंट पहने हुए थे, जिसे उन्होंने अपनी झोपड़ी के दरवाजे के अंदर रखकर गंदा दिखाने की कोशिश की थी, और निक स्कैंटज़िकास, जो एक छोटे, रंगे हुए ओवरकोट और कपड़े की टोपी में सजे हुए थे। एक बार जब वे सब इकट्ठा हो गए, तो दल ने अपने बारहवें सदस्य जॉनी बुल को भी शामिल कर लिया, जिन्हें

अभी-अभी सिग्नल रस्सी पर ड्यूटी से मुक्त किया गया था।

कड़ाके की ठंड और तेज़ हवा चल रही थी, और पहले से ही तनावग्रस्त लोगों की हालत और भी बिगड़ गई थी। हर कुछ सौ गज पर भागने वालों में से कोई न कोई फुसफुसाकर कहता कि उसने कुछ आवाज़ें सुनी हैं, लेकिन विली विलियम्स की शांत आवाज़ बीच में आकर सबको चुप करा देती, और उन्हें याद दिलाती कि ऐसी रात में बाहर निकलने की मूर्खता सिर्फ़ दूसरे योद्धाओं की ही हो सकती है। जंगल में लगभग एक घंटे चलने के बाद भी उन्हें रेल की पटरी नहीं मिली। जल्दी से कुछ देर रुककर उन्होंने पूर्व दिशा की ओर जाने का फैसला किया ताकि वे उसे न चूकें। आखिरकार वे पटरी तक पहुँच गए, दक्षिण की ओर बढ़े और त्शीब्सडॉर्फ स्टेशन में प्रवेश किया।

मोंडशाइन बुकिंग विंडो पर गया, पास आगे बढ़ाया और क्लर्क से बोबर्रोहर्सडॉर्फ के लिए बारह टिकट मांगे।

'ज़्वोल्फ़?' क्लर्क ने अविश्वास से पूछा और फिर जेरज़ी से मुंह मोड़कर स्थिति पर गंभीरता से विचार करने लगा। कुछ ही पलों में वह वापस खिड़की पर आ गया।

'बारह टिकट?' उसने दोहराया।

मोंडशाइन का धैर्य टूट रहा था। 'हाँ, बारह!' उसने धमकी भरे लहजे में जवाब दिया, और क्लर्क फिर से अपनी टिकट ट्रे की ओर मुड़ गया। अंत में वह बारह टिकट लेकर लौटा, जिन्हें मोंडशाइन ने बिना कुछ कहे स्वीकार कर लिया।

जब यह सब चल रहा था, तब बाकी के लोग प्रतीक्षाकक्ष में इधर-उधर बैठे थे, मानो बेपरवाह दिख रहे हों, जबकि उनके पेट में अजीब सी बेचैनी हो रही थी। जब जेरज़ी टिकट लेकर लौटा, तो सबने राहत की सांस ली। ट्रेन सुबह करीब 6 बजे आई, और भागने वाले लोग ट्रेन में चढ़ गए और तीन भरे हुए डिब्बों में ठूंस-ठूंस कर बैठ गए। ट्रेन दक्षिण की ओर चल पड़ी, रास्ते में पड़ने वाले हर छोटे गाँव पर रुकती हुई, और धीरे-धीरे मजदूरों और बच्चों से भर गई। ऐसा लग रहा था मानो सभी भागने वालों को नज़रअंदाज़ कर रहे हों, सिवाय एक तगड़ी महिला कंडक्टर के, जिसने अपनी पूरी ताकत लगाकर उनमें से एक को धूम्रपान निषेध क्षेत्र में सिगरेट पीने के लिए डांटा। जब वे नौ बजे के ठीक बाद बोबरोहर्सडॉर्फ पहुँचे, तो स्टेशन से निकलते समय टिकट की जाँच तक नहीं हुई। संक्षिप्त विदाई और हाथ मिलाने के बाद वे अलग हो गए।

*

निक स्कैंट्ज़िकास और जिमी जेम्स गाँव से निकले और सड़क से हटकर रीसेनगेबिर्गे की तलहटी की ओर मुड़ गए। जैसे-जैसे वे पहाड़ियों में ऊपर चढ़ते गए, बर्फ गहरी होती गई और दोपहर तक वह उनकी कमर तक पहुँच गई। कभी-कभार उन्हें कोई ऊबड़-खाबड़ रास्ता मिल जाता था, लेकिन ज़्यादातर समय उन्हें ताज़ी बर्फ में भारी चढ़ाई करनी पड़ती थी। बोबर की घाटी को पार करते हुए, वे पेड़ों की जड़ों और छोटे पौधों का सहारा लेते हुए दूसरी तरफ चढ़ाई करते हुए आगे बढ़े और अंततः घाटी के दूसरी ओर एक छोटे से पठार पर पहुँचे, जहाँ कोई पेड़ नहीं थे। उन्होंने कुछ देर के लिए एक हिरण के बाड़े में शरण ली, एक भूसे से बिछी नाली में लेटा रहा जबकि दूसरा एक छोटी सी आग के चारों ओर बैठा रहा, लेकिन जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि उन्हें रात होने से पहले आगे बढ़ना होगा और बेहतर आश्रय खोजना होगा। जिमी और निक खुद को घसीटते हुए उठे और दक्षिण की ओर, धीरे-धीरे ढलान वाली ज़मीन पर चढ़ते हुए एक और चौड़ी घाटी की चोटी पर पहुँच गए। घाटी के उस पार बर्फ से ढके ऊबड़-खाबड़ पहाड़ों की एक श्रृंखला फैली हुई थी और पूर्व दिशा में हिर्शबर्ग शहर स्थित था। उनके अनुमान के अनुसार, चेक सीमा तक पहुँचने से पहले उन्हें अभी भी चालीस मील की दूरी तय करनी थी।

जिमी जेम्स ने युद्ध से पहले कुछ समय कनाडा में बिताया था और उसे ठंडी सर्दियों की आदत थी, लेकिन उसे अब शक होने लगा था कि क्या वे अपने सीमित राशन और कपड़ों के साथ पहाड़ों को पार कर पाएंगे। निक की हालत और भी खराब थी। एड्रियाटिक सागर के गर्म

मौसम का आदी होने के कारण, वह ठंड से कांप रहा था और उसका रंग नीला पड़ गया था। एकमात्र विकल्प सड़क मार्ग से निकलना था। हिर्शबर्ग जाने वाली घाटी की सड़क पर, दोनों भागने वालों का आत्मविश्वास बढ़ने लगा। ऐसा लग रहा था कि कोई उन पर ध्यान नहीं दे रहा है, और जिन्होंने ध्यान दिया भी, उन्होंने मौसम के बारे में खुशी भरी टिप्पणियां कीं। वे पोलाउन के रास्ते पर थे जब उन्होंने हिर्शबर्ग वेस्ट स्टेशन में जाकर चेकोस्लोवाकिया के पास किसी जगह के लिए टिकट खरीदने का जोखिम उठाने का फैसला किया।

वे टिकट काउंटर तक भी नहीं पहुँच पाए। बुकिंग हॉल में एक पुलिसकर्मी और एक नागरिक अधिकारी ने उन्हें रोक लिया और उनके कागजात मांगे, जिन्हें पुलिसकर्मी ने झट से अपनी जेब में रख लिया। उनके बैग की सरसरी तलाशी के बाद, निक और जिमी को हाथ पकड़कर थाने से बाहर पुलिस मुख्यालय ले जाया गया। देर शाम तक, बाकी बचे लोग भी उनके साथ आ गए थे।

*

टोनी किवनार्स्की और काज़ पावलुक बिना किसी घटना के हिर्शबर्ग पहुँच गए थे, लेकिन दोपहर में कस्बे से गुजरते समय उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। पॉप ग्रीन, अपनी उम्र के कारण कम ध्यान खींचने वाला यात्री होने के बावजूद, बोबरोहर्सडॉर्फ से निकल भी नहीं पाया था। पुराने खाकी रंग के कुर्ते, खाकी रंग की युद्ध वर्दी की पतलून और नीली बालाक्लावा टोपी पहने हुए, पॉप अपने साथ खाने-पीने का सामान और अतिरिक्त कपड़ों से भरा हुआ फेल्ट का एक रोल लिए हुए था और उसके पास ऐसे कागजात थे जिनसे पता चलता था कि वह छुट्टी पर घर जा रहा एक चेक मजदूर है। स्टेशन से बाहर निकलकर, उसने जॉनी बुल और जेरज़ी मोंडशाइन का लगभग तीन सौ गज तक पीछा किया और जब वे उससे अलग हो गए, तो उसने बोबरोहर्सडॉर्फ के मुख्य हिस्से से बचने की अपनी योजना पर अमल किया। कुछ घंटों तक एक सुरक्षित झाड़ी से कस्बे को देखने के बाद, वह इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि यहाँ से निकलने का कोई आसान रास्ता नहीं है और उसने कस्बे के बीच से सीधे पैदल जाने का साहसिक प्रयास करने का फैसला किया। हालाँकि उसकी उम्र और शक्ल-सूरत उसके लिए फायदेमंद साबित हुए, पॉप ज्यादा दूर नहीं जा पाया और उसे रोक लिया गया।

उसे रोकने वाले जर्मन सैनिक को शक हुआ और ग्रीन के कागजात देखने के बाद उसने पूछा कि बोबररोहर्सडॉर्फ में उतरने के बजाय वह सीधे चेकोस्लोवाकिया क्यों नहीं चला गया। पॉप ने शर्मिंदगी का भाव दिखाते हुए दुखी होकर कहा कि उसने जुए में अपने सारे पैसे हार दिए हैं और बोबर के टिकट के लिए ही उधार ले पाया है। सैनिक को उसकी बात पर यकीन नहीं हुआ और उसने पॉप को पास के डाकघर ले जाने पर जोर दिया, जहाँ से हिर्शबर्ग पुलिस स्टेशन में फोन किया गया। दूसरी तरफ मौजूद अधिकारी ने पॉप को हिरासत में लेने का निर्देश दिया और इस तरह उसका भागने का प्रयास विफल हो गया।

*

फ्रांसीसी स्वयंसेवी कार्यकर्ता के रूप में अपनी पहचान बताने वाले कागजातों के साथ यात्रा कर रहे जॉनी डॉज और जिम वर्नहम एक अजीब जोड़ी लग रहे थे। डॉज का भारी-भरकम शरीर आरएएफ के एक सैनिक के संशोधित ओवरकोट और पैंट में लिपटा हुआ था, जबकि दुबले-पतले स्कॉटिश-कनाडाई जिम वर्नहम सौभाग्य से आम नागरिकों के कपड़े पहने हुए थे। समूह से अलग होने के बाद, वे नदी के किनारे-किनारे दक्षिण की ओर हिर्शबर्ग के बाहरी इलाके में एक छोटे से स्टेशन तक गए, जहाँ जिम वर्नहम ने चेक सीमा पर स्थित एक स्टेशन के लिए टिकट खरीदने की कोशिश की। सीमावर्ती क्षेत्रों में यात्रा पर प्रतिबंधों के कारण, उन्हें टिकट नहीं मिले, इसलिए उन्होंने अपनी यात्रा दक्षिण-पश्चिम की ओर जारी रखी, इस बार मुख्य सड़क के साथ। गहरी बर्फ

में बहुत धीमी गति से चलने के बाद, वे अंततः हिर्शबर्ग मुख्य स्टेशन पर पहुँचे, जहाँ वर्नहम ने फिर से टिकट खरीदने की असफल कोशिश की। अंततः डॉज एक छोटे से स्टेशन के लिए दो तृतीय श्रेणी के टिकट खरीदने में सफल रहे, लेकिन शाम 4:00 बजे ट्रेन में चढ़ने के कुछ ही समय बाद उनसे पूछताछ की गई और उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। रेलवे पुलिस कार्यालय ले जाए जाने पर जॉनी और जिम के पास अपनी पहचान स्वीकार करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। उनसे संक्षिप्त पूछताछ की गई और उन्हें क्रिपो कार्यालय ले जाया गया, जहाँ वे सूर्यास्त के कुछ ही समय बाद पहुँचे।

*

डग पॉयंटर हिर्शबर्ग में दल में सबसे आखिर में शामिल हुए। नौसेना का ओवरकोट पहने, जिस पर आम नागरिकों के बटन लगे थे, और टॉमी गेस्ट की एक कपड़े की टोपी लगाए, डग ने बाकी समूह से अलग होने के बाद बोबरोहर्सडॉर्फ के दक्षिण में जंगल में एक छिपने की जगह ढूंढ ली। वह दोपहर तक वहीं रहे; फिर, भीषण ठंड और भारी बर्फबारी से मजबूर होकर, वह दक्षिण-पश्चिम की ओर चलने लगे। लगभग आठ मील चलने के बाद, डग हिर्शबर्ग-पोलौन की मुख्य रेलवे लाइन पर पहुँचे, पास के छोटे स्टेशन पर गए और पोलौन के लिए तृतीय श्रेणी का टिकट खरीदा। जाँच से बचने के लिए, उन्होंने ट्रेन में चढ़ने के लिए बिल्कुल आखिरी मिनट तक इंतजार किया और फिर टिकट निरीक्षक को धक्का देकर भीड़ भरे डिब्बे में जबरदस्ती घुस गए। ट्रेन लगभग तीन घंटे तक धीरे-धीरे दक्षिण की ओर चलती रही, लेकिन रात 9:00 बजे से ठीक पहले, दो आम पुलिसकर्मी और हिटलर यूथ का एक सदस्य उसमें चढ़े। पुलिस डग के कागजात से संतुष्ट थी, लेकिन जैसे ही वे डिब्बे से निकलने वाले थे, हिटलर यूथ के सदस्य ने एक छोटी सी खामी देख ली। पॉइंटर अपने फ्रांसीसी मजदूर होने की कहानी पर अड़ा रहा, लेकिन अगले स्टेशन पर उसे उतारकर हैमर्सडॉर्फ पुलिस स्टेशन ले जाया गया। जब उसे हिर्शबर्ग क्रिपो कार्यालय ले जाने के लिए दूसरी कार आई, तो डग को एहसास हुआ कि उसका खेल खत्म हो गया है और उसने पुलिस प्रमुख के सामने अपनी असली पहचान कबूल कर ली।

बाकी साथियों की किस्मत भी कुछ खास अच्छी नहीं थी। पॉप ग्रीन ने जॉनी बुल और जर्जी मोंडशाइन को बोबर्रोहर्सडॉर्फ रेलवे स्टेशन से पैदल जाते हुए देखा था, और आखिरकार वे विली विलियम्स और रस्टी कीरथ के साथ दक्षिण की ओर यात्रा पर निकल पड़े। चारों रीसेनगेबिर्गे पहुँच गए, लेकिन एक पर्वतीय गश्ती दल ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और चेकोस्लोवाकिया के भीतर स्थित रीचेनबर्ग जेल ले जाया गया।

*

सैगन के पास, गहरी बर्फ और कड़ाके की ठंड बाकी बचे हुए लोगों के लिए भी परेशानी खड़ी कर रही थी। सुरंग से निकलने वाले 54वें और 55वें नंबर के लोग, हंक हम्फ्रीज़ और पॉल रॉयल, लगभग 2:30 बजे शिविर से निकलकर हैंक बर्कलैंड के दल में शामिल हो गए और उस इलाके से दूर जाने के लिए निकल पड़े। एक सुनसान इमारत से थोड़ी सी मुठभेड़ के अलावा उन्हें कोई और कठिनाई नहीं हुई और लगभग एक घंटे पैदल चलने के बाद वे उत्तर-दक्षिण रेलवे लाइन पर पहुँच गए।

हंक और पॉल समूह से अलग हो गए और अपना सामान व्यवस्थित करने और दिशा तय करने के बाद दक्षिण-पूर्व की ओर मुड़ गए। सौभाग्य से उन्हें जंगल में बनी कई फायरब्रेक मिल गईं, जहाँ से आगे बढ़ना काफी आसान था, हालाँकि घुटनों तक गहरी बर्फ ने कभी-कभी उन्हें परेशानी में डाल दिया। उन्हें कभी-कभार हिरण के भौंकने की आवाज़ सुनाई दी, लेकिन और कुछ नहीं। भोर होने तक वे अभी भी ऑटोबान तक नहीं पहुँच पाए थे और उन्होंने दिन भर आराम

करने का फैसला किया। अपने साथ लाए एक छोटे से हीटर पर पानी उबालने की असफल कोशिश के बाद, हंक और पॉल सोने के लिए कंबल ओढ़कर लेट गए। घबराहट और ठंड के कारण, दोनों मुश्किल से एक-एक घंटे ही सो पाए।

शाम ढलते ही दोनों ने दोबारा चलना शुरू किया, लेकिन जल्द ही उन्हें अपनी सूझबूझ के खिलाफ जाकर कीचड़ और चिपचिपी बर्फ से बचने के लिए सड़कों पर उतरना पड़ा। वे बिना किसी घटना के ऑटोबान (हाईवे) तक पहुँच गए (उन्होंने केवल एक संदिग्ध व्यक्ति को देखा जो जंगल से निकला, सड़क पार करके दूसरी तरफ पेड़ों में गायब हो गया - उन्होंने अनुमान लगाया कि वह भी शायद कोई और सैन्य अभियान चला रहा था) और उसे आसानी से पार कर लिया। उन्होंने फिर से खेतों में जाने की कोशिश की, लेकिन जल्द ही उन्हें वापस सड़क पर लौटना पड़ा। चार बार उन्हें आम नागरिकों से बचने के लिए छुपना पड़ा, लेकिन हर बार वे पकड़े जाने से बच गए। पाँचवीं बार, टिफेनफर्ट गाँव से गुज़रने के ठीक बाद, उनकी किस्मत ने साथ छोड़ दिया।

उनके सामने सड़क पर तीन बुजुर्ग जर्मन अचानक आ गए और चूंकि उनसे बचने के लिए जंगल में छिपना असंभव था, इसलिए हम्फ्रीज़ और रॉयल ने उन्हें चकमा देने की कोशिश की। लेकिन तीनों जर्मन उनकी बातों में नहीं आए। हथियार निकालकर उन्होंने भागने वालों की कहानी को सिरे से खारिज कर दिया और अतिरिक्त सहायता बुला ली। जल्द ही एक पुलिसकर्मी और एक सैनिक उस दल में शामिल होने के लिए आ गए।

पुलिसकर्मी और होम गार्ड के जवान गंभीर चेहरे वाले और चुप थे, लेकिन जब वे गाँव की ओर वापस जा रहे थे, तो सैनिक ने हंक और पॉल से उनकी टूटी-फूटी जर्मन में बातचीत की। सहानुभूति जताते हुए उसने उनके प्रयास की सराहना की और उन्हें दूसरों की उदासी को नज़रअंदाज़ करने को कहा। उसने कहा, 'वे हमारे जैसे असली सैनिक नहीं हैं।' उसने आगे कहा, 'उनकी कोई अहमियत नहीं है,' और बूढ़े आदमियों की ओर घृणा भरी नज़र डाली।

26 मार्च को सुबह लगभग 3:00 बजे, दल स्थानीय जेल पहुँचा और हंक और पॉल को सात फुट से भी कम क्षेत्रफल वाली एक छोटी सी कोठरी में ठूंस दिया गया। वे आराम करने के लिए लेट ही रहे थे कि दरवाज़ा खुल गया। सबसे पहले शॉर्टी आर्मस्ट्रांग अंदर आया, जिसने जैक ग्रिसमैन के समूह के साथ शिविर से निकलने से पहले सिग्नल रस्सी पर कुछ समय बिताया था। खेतों में बर्फ इतनी गहरी थी कि उसे पार करना मुश्किल हो रहा था और इसलिए उसे सड़क पर आना पड़ा। संभवतः वही था जिसे हंक और पॉल ने चुपके से ऑटोबान पार करते हुए देखा था। अपनी यात्रा की दूसरी रात, शॉर्टी को स्थानीय सुरक्षा के दो जवानों ने देख लिया और हिरासत में ले लिया।

अगले दो लोगों का आना हंक और पॉल के लिए ज़्यादा चौंकाने वाला था। जॉनी मार्शल और वैली वैलेंता सुरंग से निकलने वाले पहले जोड़े थे और चेक मज़दूरों के रूप में यात्रा कर रहे थे (जॉनी के पास पेट्र कोवाल्कोव के रूप में पहचान पत्र थे, जो एक कांच का काम करने वाला था, और उसने एक गहरे रंग का आम सूट और स्की कैप पहनी हुई थी)। उनके पास चेक सीमा पर स्थित मित्तलवाल्डे के लिए ट्रेन टिकट खरीदने के लिए लगभग दो सौ रीचमार्क थे, जहाँ से उन्होंने पैदल सीमा पार करने की योजना बनाई थी। चेकोस्लोवाकिया पहुँचने पर वे वैलेंता के कुछ संपर्कों से मिलेंगे या, अगर ऐसा नहीं हो पाता, तो युगोस्लाविया की ओर बढ़कर टीटो के पक्षकारों तक पहुँचने की कोशिश करेंगे। सभी को उम्मीद थी कि वे अब तक सागन से मीलों दूर पहुँच चुके होंगे।

हालांकि, रेलवे स्टेशन पर मची अफरा-तफरी के कारण जॉनी और वॉली अपनी योजनाओं पर पुनर्विचार करने के लिए जंगल में लौट गए थे। रात 1:00 बजे एक और ट्रेन थी, लेकिन इसका मतलब था स्टेशन पर लगभग दो घंटे इंतजार करना, जो कि बहुत जोखिम भरा था। इससे वे मित्तलवाल्डे जाने वाली अपनी सुबह 3:00 बजे की ट्रेन भी नहीं पकड़ पाते। अनिच्छा से, दोनों ने चेक सीमा तक लगभग अस्सी मील पैदल चलने का फैसला किया। वहां से उनका अनुभव भी बाकी लोगों जैसा ही रहा। गहरी, कीचड़ भरी बर्फ के कारण मजबूर होकर, वॉली और जॉनी ने

ऑटोबान को आसानी से पार कर लिया, लेकिन दूसरी तरफ एक छोटे से गांव में उन्हें रोक दिया गया। वॉली ने स्थिति को अपने हाथ में लिया और अपनी उत्तम जर्मन भाषा में वहां मौजूद लोगों से लगातार बात करता रहा, लेकिन जल्द ही मार्शल की चुप्पी ने उनका ध्यान आकर्षित कर लिया। उन्होंने उससे सवाल-जवाब शुरू कर दिए, और जॉनी, जिसकी जर्मन भाषा अच्छी नहीं थी, ने फ्रेंच में जवाब देना चुना। दुर्भाग्य से, जर्मनों में से एक फ्रेंच में माहिर था, और खेल यहीं खत्म हो गया।

उन्हें बर्गरमिस्टर के घर ले जाया गया और फिर स्थानीय जेल में रखा गया, जहाँ से उन्हें टिफेनफर्ट ले जाया जाना था। जॉनी अपने कुछ जर्मन नोटों को अपने जूते के तले पर टेप से चिपकाकर बचाने में कामयाब रहा, लेकिन उसने उनके जाली कागजात आग में जला दिए।

*

हम्फ्रीज़, रॉयल, आर्मस्ट्रांग, मार्शल और वैलेंता पूरी रात उस छोटी सी कोठरी में बंद रहे और भोर होते ही छह पुलिसकर्मियों ने उन्हें एक गाड़ी में बिठा दिया। लुफ़्ट III में वापस लौटने की खुशी में डूबे हुए वे लोग जैसे ही गाड़ी शिविर से गुज़रकर सागन के पुलिस स्टेशन के बाहर रुकी, उनकी खुशी तुरंत गायब हो गई। उनकी तलाशी ली गई और उनसे संक्षिप्त पूछताछ की गई, फिर उन्हें तार की जाली से बने बिस्तरों से सुसज्जित एक बदबूदार और कीड़े-मकोड़ों से भरी कोठरी में बंद कर दिया गया।

उनके आगमन के कुछ ही समय बाद, हाल्बौ से एक दल को लाया गया। कीथ ओगिल्वी सुरंग के मुहाने पर हुई झड़प से बच निकलने में कामयाब हो गया था, लेकिन उसे अपने साथी लॉरेंस रीवेल-कार्टर और अपने भागने के अधिकांश सामान को पीछे छोड़ना पड़ा। कनाडाई सैनिक दक्षिण की ओर मुड़ा, घने जंगलों के बीचोंबीच पहुँचा और दिन बिताने के लिए वहीं रुक गया। नींद न आने के कारण, उसने कुछ चॉकलेट खाई और बस इंतज़ार किया। शाम ढलते ही वह फिर से चल पड़ा, लेकिन कई अन्य लोगों की तरह, बर्फ और कीचड़ के कारण उसे सड़कों पर ही रुकना पड़ा। कुछ गाँवों से गुज़रने के बाद, उसे साइकिल पर सवार एक बुजुर्ग व्यक्ति ने रोका, जिसने पिस्तौल निकालकर उसे गिरफ्तार कर लिया। कीथ को हाल्बौ के एक सराय में ले जाया गया, जहाँ उसने आग के सामने बैठकर सुकून पाया। जैसे ही उसे झपकी आने लगी, सराय का दरवाज़ा ज़ोर से खुला और तीन और सैनिक अंदर आ गए, जिनके साथ कुछ अनुभवी रिज़र्व सैनिक भी थे।

ओगिल्वी ने चाज़ हॉल और ब्रायन इवांस को पहचान लिया, जो अपनी लंबी यात्रा के बाद पूरी तरह थके हुए लग रहे थे, और साथ ही छोटे कद के कनाडाई टॉमी थॉम्पसन को भी। तीनों का एक छोटा लेकिन दिलचस्प बचाव हुआ था। थॉम्पसन अपने साथी कनाडाई बिल कैमरून के पीछे सुरंग से निकलने वाले 68वें व्यक्ति थे, और सुरंग के मुहाने पर गोलियों की आवाज सुनने से पहले दोनों ने लगभग 200 गज ही तय किए थे। वे दो-तीन मील तक आगे बढ़े और फिर दिन भर झाड़ियों के ढेर के नीचे छिपे रहे। उस शाम वे फिर से निकल पड़े और चुपचाप जंगल से गुजर रहे थे कि अचानक पेड़ों के झुंड के पीछे से दो आकृतियाँ दिखाई दीं। यह सोचकर कि वे हथियारबंद हो सकते हैं, टॉमी ने भागने की इच्छा को दबाया और जब उसने उन दोनों को गौर से देखा, तो उसे एहसास हुआ कि वे उसे अजीब तरह से परिचित लग रहे हैं। उसने एक कदम आगे बढ़ाया और उन्हें पहचान लिया: ब्रायन इवांस और चाज़ हॉल।

चारों मिलकर बहुत खुश हुए और जल्दी ही एक-दूसरे को अपनी कहानियाँ सुनाने लगे, जो लगभग एक जैसी निकलीं। आगे बातचीत करते हुए उन्होंने तय किया कि साथ यात्रा करने में कोई नुकसान नहीं है, इसलिए वे सब फिर से निकल पड़े। सुबह करीब चार बजे उन्हें एक खेत के किनारे एक खलिहान मिला और वे दिन भर के लिए घास के ढेर में आराम करने लगे। लेकिन इस समय तक बिल कैमरन को ठंड और खुले में रहने का असर महसूस होने लगा था। वह बेकाबू

होकर कांपने लगा और थोड़ी देर में उसे मतिभ्रम होने लगा और वह खुद से बातें करने लगा। उनके पास विकल्प सीमित थे।

यह स्पष्ट था कि बिल यात्रा करने के लिए अस्वस्थ था, लेकिन आसपास कोई ऐसी इमारत नहीं दिख रही थी जहाँ से उसे मदद मिल सके। उन्होंने आत्मसमर्पण करने का भी विचार किया, लेकिन थोड़ी देर छानबीन करने पर भी उन्हें कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जिसके सामने वे आत्मसमर्पण कर सकें। अंततः उन्होंने फैसला किया कि बिल जहाँ है वहीं सबसे सुरक्षित है। उन्होंने उसे अच्छे से लपेट दिया, अपने कुछ राशन वहीं छोड़ दिए और खुद ही निकल पड़े, इस उम्मीद में कि खलिहान का मालिक समझ जाएगा कि अंदर कोई है। योजना कारगर रही: कुछ घंटों बाद, बिल को एक किसान ने जगाया जिसके पास एक पिचफोर्क, एक शॉटगन और एक खूंखार दिखने वाला अल्सेशियन कुत्ता था। उसे पास के एक घर में ले जाया गया और वहाँ से स्थानीय सैन्य चौकी पर पहुँचाया गया। फिर बिल को 26 मार्च की सुबह 7:00 बजे कार से सागन पुलिस स्टेशन ले जाया गया, जहाँ वह हम्फ्रीज़, रॉयल, आर्मस्ट्रांग, मार्शल और वैलेंता के कुछ ही देर बाद पहुँचा।

चाज़, ब्रायन और टॉमी किसी मालगाड़ी पर चढ़ने की उम्मीद में अपनी यात्रा जारी रखे रहे, लेकिन एक छोटे से गाँव के बाहरी इलाके में होम गार्ड ने उन्हें कुछ ही मील की दूरी पर पकड़ लिया। अब, हार मानने को तैयार न होकर, टॉमी थॉम्पसन अपने एक अंगरक्षक से फ्रेंच में बहस कर रहा था, गुस्से से कह रहा था कि वह एक फ्रांसीसी मजदूर है जो अपने घर जा रहा है और यह जानना चाहता था कि उसे इन अपराधियों के साथ क्यों गिरफ्तार किया गया है। टॉमी गार्ड के सवालों का जवाब देने की कोशिश कर रहा था, जो जाहिर तौर पर उससे कहीं बेहतर फ्रेंच बोलता था, इसलिए कीथ ओगिल्वी को अपनी हंसी रोकनी पड़ी। आखिरकार, कई बार शर्मनाक चुप्पी के बाद, जब टॉमी धीरे-धीरे सवाल का अनुवाद कर रहा था और मन ही मन जवाब सोच रहा था, तो कनाडाई ने हार मान ली। हालांकि, उसने सोफे पर एक तकिए के पीछे अपने कागजात छिपाने के लिए पर्याप्त समय निकाल लिया। फिर कीथ, ब्रायन, चाज़ और टॉमी को सागन ले जाया गया, और वे छब्बीस तारीख की सुबह टिफेनफर्ट से आए समूह के कुछ ही समय बाद वहाँ पहुँचे।

*

27 मार्च को दोपहर के करीब, भागने वालों का एक और दल सागन जेल लाया गया। लेस ब्रोडरिक और डेनिस स्ट्रीट ने फ्रांसीसी कामगारों के रूप में एक साथ यात्रा करने की योजना बनाई थी, और हैंक बर्कलैंड, जिसका भी यही विचार था लेकिन कोई साथी नहीं था, उनके साथ शामिल होने का फैसला किया। उनकी यात्रा का पहला भाग उन्हें गहरी बर्फ से ढके खुले मैदान से होकर ले गया, और पहली बाधा, उस मुख्य सड़क को पार करने से पहले लगभग भोर हो गई, जिसके बारे में उन्हें चेतावनी दी गई थी।

खेतों की इमारतों से बचते हुए एक घंटे तक पीछे हटने के बाद, तीनों ने आराम करने का फैसला किया और एक खुले चीड़ के बागान में एक खोखली जगह पर बैठ गए। उन्होंने कुछ गर्म पेय बनाए और, हालांकि उनके कंबल पूरी तरह भीगे हुए थे, फिर भी उन्होंने खुद को कंबल में लपेट लिया और दिन भर के लिए सो गए। कभी-कभी वे आवाजों की आवाज सुनकर चौंककर जाग जाते थे, लेकिन किसी ने उन्हें परेशान नहीं किया।

दूसरी रात भी यही सिलसिला जारी रहा। वे कमर तक गहरी बर्फ में धीरे-धीरे आगे बढ़ते रहे, बीच-बीच में आराम करते और खेतों से बचते हुए चक्कर लगाते रहे। लेस ने दूर से एक-दो लोगों को देखा, लेकिन कोई भी इतना पास नहीं था कि उनसे कोई खतरा हो। ठंड, थकान और भूख से बेहाल तीनों के बीच ज्यादा बातचीत नहीं हुई और भोर होते ही वे फिर से छिप गए, इस बार एक झाड़ी में, और एक कष्टदायक दिन गुजारा। दोपहर ढलते ही, ठंड से बेहाल और निष्क्रियता से

परेशान होकर, लेस, डेनिस और हैंक ने उजाला रहते हुए भी अपनी यात्रा जारी रखने का फैसला किया। कभी-कभी लोग उनसे काफी आगे दिखाई देते थे, और एक बार डेनिस ने दो लोगों को देखा जो देखने में युद्धबंदियों जैसे लग रहे थे। फिर भी, उन्हें किसी ने चुनौती नहीं दी। अंधेरा होने तक वे एक और चीड़ के जंगल में प्रवेश कर चुके थे, और आगे बढ़ना और भी मुश्किल हो गया। पेड़ मानो अंतहीन लग रहे थे, और बर्फ इतनी गहरी थी कि हर आदमी थकान से चूर होकर गिरने से पहले मुश्किल से कुछ सौ गज ही चल पाता था। कुछ ही देर में पीछे से एक और व्यक्ति आकर उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेगा, लेकिन कुछ ही समय बाद वह खुद भी गिर पड़ेगा।

ठंड और नमी से हैंक परेशान होने लगा था, चलते-चलते वो लगातार खुद से बातें करने लगा। डेनिस और लेस ने ठिठुकरी करने और सूखने के लिए कोई जगह ढूंढने का फैसला किया। जिस पहले खेत के पास वे पहुँचे, वहाँ कोई उपयुक्त बाहरी इमारत नहीं थी, इसलिए उन्होंने दूर दिख रहे एक रोशन घर में जाने का सोचा। जर्मन भाषा में पारंगत डेनिस उस झोपड़ी के पास पहुँचा और दरवाजा खटखटाया। जब किसान बाहर आया, तो स्ट्रीट ने बताया कि वे फ्रांसीसी मजदूर हैं जो नई नौकरी पर जाते समय रास्ता भटक गए हैं। किसान एक मिनट तक चुप रहा और फिर घर से बाहर झाँका जहाँ लेस और हैंक छिपे हुए थे। उसने उन्हें इंतजार करने को कहा। लगभग तुरंत ही, फार्महाउस में हलचल मच गई और चार सैनिक बाहर निकले और डेनिस, लेस और हैंक को घेर लिया। उनका भागने का प्रयास विफल हो गया।

उन्हें कल्कब्रुक नाम के छोटे से गाँव के पुलिस स्टेशन ले जाया गया, लेकिन वे रास्ते में अपने कंपास फेंकने में कामयाब रहे। पुलिस स्टेशन वही घर निकला जिसमें पुलिसवाला रहता था, और तीनों को एक अस्थायी कोठरी में डाल दिया गया जो स्पष्ट रूप से कुछ समय से इस्तेमाल नहीं हुई थी। उनका अंगरक्षक, एक सेना सार्जेंट, काफी मिलनसार था और उनकी दयनीय स्थिति को समझते हुए, कमरे में टूटे हुए पुराने चूल्हे में छोटी सी आग जला दी। उन्हें अंदर बंद कर दिया गया और उन्होंने तुरंत हैंक को खुरदुरे बिस्तर पर आराम से लिटा दिया। फिर उन्होंने जल्दी से अपने नक्शे और जाली कागजात आग में डाल दिए और अपने कपड़ों को सैनिक वर्दी में बदलने लगे, जिसका सीधा सा मतलब था कि उन्होंने अपनी युद्ध वर्दी और सैनिकों के ओवरकोट से कपड़े के बटन कवर हटा दिए। उन्होंने अभी आग के सामने अपने कंबल बिछाने का काम शुरू ही किया था कि पुलिसवाला वापस आया और उनके कागजात मांगने लगा। लेस ने खुशी-खुशी और सच्चाई से उसे बताया कि उनके पास कोई कागजात नहीं हैं। वह आदमी संतुष्ट होकर चला गया और कुछ घंटों बाद उन्हें सागन पुलिस स्टेशन ले जाने के लिए वापस आया।

*

सत्ताईस तारीख को, हाल्बाउ से एक और जोड़ा सागन पहुँचा। जैक ग्रिसमैन के दल से अलग होने के बाद, बॉब नेल्सन और डिक चर्चिल दक्षिण की ओर बढ़े और घने चीड़ के जंगलों से होते हुए सुबह तक चलते रहे। फिर, चीड़ के घने जंगल के बीच में, वे दिन भर के लिए रुक गए और बिस्तर बनाने के लिए चीड़ की कुछ शाखाएँ तोड़ लीं। शाखाएँ तोड़ते समय ज़ोरदार चटकने की आवाज़ आई और जैसे ही वे दिन भर आराम करने के लिए लेटे, उन्हें जंगल के दूसरे हिस्से से भी वैसी ही आवाज़ें सुनाई दीं। बाद में उन्हें पता चला कि यह शॉर्टी आर्मस्ट्रांग था, जो ठीक वही कर रहा था। चीड़ की शाखाओं में दुबके बॉब और डिक ने अपने बंडल खोलकर कुछ खाने का सामान खाया, लेकिन नेल्सन यह देखकर हैरान रह गया कि उसके बैग में किसी और के कपड़े और मोज़े थे। तभी उसे याद आया। पिकाडिली को खींचते समय उसने अपना बंडल अपने पीछे छिपा लिया था, बाहर निकलते समय उसे लेने की योजना बनाकर। किसी दूसरे भगोड़े ने गलती से उसका बैग उठा लिया होगा, और अपना बैग वहीं छोड़ दिया होगा। बॉब सोच रहा था कि क्या उसे कभी पता चल पाएगा कि वह किसका उपकरण इस्तेमाल कर रहा है।

शाम ढलते ही वे फिर से चल पड़े और मुख्य सड़क तक पहुँच गए। अँधेरे में पक्की सड़क

नहर जैसी लग रही थी, इसलिए बॉब रेंगते हुए ऊपर चढ़ा और पानी का तापमान जाँचने के लिए अपना हाथ उसमें डालने की कोशिश की। ठंडी डामर को छूते ही उसे थोड़ी शर्मिंदगी महसूस हुई। सड़क पार करके नेल्सन और चर्चिल गहरी बर्फ और कीचड़ में चलते रहे, और 26 मार्च की सुबह भोर के करीब वे एक गाँव के किनारे एक खलिहान के पास पहुँचे। बर्फीले और कीचड़ भरे इलाके में चलने से थके-हारे और भीगे हुए, उन्होंने फैसला किया कि वे तब तक आराम करेंगे जब तक वे सूख न जाएँ और अपनी ताकत वापस न पा लें। अगली रात वे पानी के पंप पर नहाने और पानी पीने के लिए गाँव में गए, जिससे बहुत शोर हुआ। हालाँकि, किसी को पता नहीं चला, और वे चुपके से खलिहान में वापस आ गए।

दिन शांतिपूर्वक बीत गया, लेकिन सत्ताईस तारीख की दोपहर को, कुछ नागरिकों ने खलिहान का दरवाजा तोड़ दिया और फावड़ों से ज़ोरदार तलाशी शुरू कर दी। सौभाग्य से, बॉब और डिक को घायल होने से पहले ही ढूंढ लिया गया। तलाशी दल का नेता, खलिहान का मालिक, एक लाल चेहरे वाला, मोटा-ताज़ा आदमी था, जिसे फावड़े की नोक पर दोनों को गाँव तक धकेलने में बहुत मज़ा आ रहा था। जल्द ही हाल्बाउ का अहंकारी बर्गरमास्टर एक छोटी पिस्तौल लहराते हुए आया और उन दोनों को पास के एक सराय में ले गया, जहाँ उन्हें ले जाने का इंतज़ार किया गया। उन्हें सागन पुलिस स्टेशन ले जाने वाली वैन के आने से पहले, बॉब और डिक अपने जाली कागजात सराय में पियानो के पीछे छिपाने में कामयाब हो गए।

सैगन में दो अधिकारियों ने उनकी तलाशी ली और पूछताछ की, जिसके बाद उन्हें अन्य लोगों के साथ एक बड़ी कोठरी में डाल दिया गया। कुछ ही समय बाद जॉन एफ. विलियम्स वहाँ पहुँचे, और कुछ घंटों बाद जॉर्ज मैकगिल और नेविल मैकगार भी वहाँ आ गए।

सबसे आखिर में फ्लाइट लेफ्टिनेंट एलिसटेयर थॉम्पसन मैकडॉनल्ड को लाया गया, जो 1 पीआरयू के एक छोटे कद के, मजबूत कद-काठी के स्कॉटिश सैनिक थे। उन्हें भी लगभग उन्हीं परिस्थितियों में कुछ होम गार्ड्समैन ने पकड़ा था, जिन्होंने पहले तो उन्हें पीटने की कोशिश की, लेकिन फिर अपनी रणनीति बदलकर उन्हें नजरअंदाज कर दिया। जब वे आखिरकार पुलिस स्टेशन पहुंचे, तब तक वे अपने कागजात नष्ट कर चुके थे और आरएएफ के बटन अपनी वर्दी पर दोबारा लगा चुके थे।

विलियम्स, मैकगार, मैकगिल और मैकडॉनल्ड सभी एक जैसी परिस्थितियों से गुज़रे थे: घुटनों तक गहरी, कीचड़ भरी बर्फ़ जिसने उन्हें सड़कों पर उतरने के लिए मजबूर किया; भूख और भीषण ठंड; और थकावट और दिशाहीनता। सभी बुरी तरह थके-हारे और पूरी तरह भीगे हुए पहुँचे।

*

अब सागन की नागरिक जेल में उन्नीस भगोड़े बंद थे। उनके साथ दुर्व्यवहार तो नहीं किया जाता था, लेकिन उन्हें खाने के लिए सूखी रोटी का एक टुकड़ा और नकली चाय का एक मग ही दिया जाता था। फिर, 28 मार्च को सुबह 2:00 बजे, वर्दीधारी पुलिसकर्मियों का एक दल आया और उन सभी को एक बड़ी वैन में भर दिया। भगोड़ों ने सोचा कि उन्हें वापस शिविर ले जाया जा रहा है, इसलिए जब उन्होंने देखा कि चालक लुफ्ट III से आगे निकलकर सागन से जा रहा है, तो उन्हें थोड़ी घबराहट हुई। वे लगभग चालीस मिनट तक गाड़ी चलाते रहे, एक बड़े कस्बे में पहुँचे और अंततः एक गेट से होते हुए एक छोटे से आंगन में प्रवेश किया। एक बोर्ड पर लिखा था कि यह गोरलिट्ज़ नागरिक जेल है।

कोठरियों की सादगी को कम आंकना भी ठीक नहीं होगा। वे बेहद ठंडी थीं और लगभग दस फीट लंबी और छह फीट चौड़ी थीं, जिनमें बाहरी दीवार पर एक छोटी सी, सलाखों वाली खिड़की थी। सोने के लिए, प्रत्येक दीवार से एक ठोस तख्ता नीचे की ओर मुड़ता था और कोठरी के बीच में मिलता था। कोने में दो पुराने कंबल पड़े थे। प्रत्येक कोठरी में चार लोगों को रखा जाता था

और जब बिस्तर नीचे किया जाता था, तो 'एक की बारी, सबकी बारी' का नियम लागू होता था। हर सुबह उन्हें नकली जैम और कॉफी के साथ ब्रेड का एक पतला टुकड़ा मिलता था, और दोपहर में, ब्रेड का आधा टुकड़ा और पत्तागोभी-चुकंदर का पतला सूप का एक छोटा कप मिलता था। रात का खाना दोपहर के खाने जैसा ही होता था, बस उसमें सूप नहीं होता था। खाना लाने वाला उदास गार्ड हमेशा उस रात सॉसेज देने का वादा करता था, लेकिन खाने में कभी कोई विविधता नहीं होती थी। शौचालय के लिए प्रत्येक कोठरी में एक बाल्टी थी और एक गलियारे के अंत में थी। चूंकि उनके जूते जब्त कर लिए गए थे, इसलिए शौचालय जाना उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं था।

इन सब के बावजूद, सैनिकों का मनोबल काफी ऊंचा था क्योंकि वे युद्ध-पूर्व की बातों पर चर्चा कर रहे थे और काल्पनिक मेनू बना रहे थे। बॉब नेल्सन को तो अपने सामान का एक्सचेंजर भी मिल गया। डेनिस स्ट्रीट ने सुरंग से बाहर निकलते समय गलती से उसका सामान उठा लिया था।

28 मार्च तक, गोरलिट्ज़ जेल में अकेले या दो-दो के समूह में अधिकाधिक भगोड़े लाए गए: माइक केसी, जो जंगल में भाग-दौड़ करने से खुश था लेकिन थोड़ा थका हुआ भी था; सिरिल स्वेन; टॉम ली; जैक ग्रिसमैन; इयान क्रॉस; सैंडी गन; पैट लैंगफोर्ड; हेरोल्ड मिलफोर्ड; जॉर्ज वाइली; और बॉब स्टीवर्ट। कोठरियाँ भरती जा रही थीं और कहानियाँ सुनाई जा रही थीं, हालाँकि सावधानी से, कहीं कोठरियों में जासूसी उपकरण न लगे हों।

उनतीस तारीख की शाम को, सागन पुलिस स्टेशन से एक और दल आया। इस दल के पहले सदस्य, टोनी बेथेल और कूकी लॉन्ग, सुरंग से काफी देर से निकले थे, और टोनी वास्तव में शिविर से निकलने वाले दस लोगों के अंतिम समूह का नेतृत्व कर रहा था। उसने अपने दल को इकट्ठा किया और जंगल की ओर चल पड़ा। वे अभी रेलवे लाइन तक पहुँचने की कोशिश ही कर रहे थे कि गोलियों की आवाज सुनाई दी। दल तुरंत तितर-बितर हो गया और चीड़ के पेड़ों के घने जंगल में अपना रास्ता भटक गया। देखते ही देखते वे सोवियत परिसर की तारबंदी के पास पहुँच गए, जो उन जगहों में से एक थी जहाँ उन्हें जाने से मना किया गया था। बेथेल द्वारा उन्हें इकट्ठा करने के बाद, वे फिर से जंगल की ओर चल पड़े और अंततः रेलवे लाइन पर पहुँच गए, जहाँ वे अलग हो गए। टोनी और कूकी उत्तर-पश्चिम की ओर चल पड़े, लगभग दो मील चलने के बाद वे दिन भर के लिए छिप गए।

अगली रात उन्होंने शानदार प्रगति की और मुख्य रेल लाइन के साथ-साथ लगभग तेरह मील चलकर फ्रैंकफर्ट-एन-डेर-ओडर तक पहुँचे। दुर्भाग्यवश, सभी ट्रेनें इतनी तेज़ गति से चल रही थीं कि उनमें से किसी एक पर चढ़ना संभव नहीं था, और उन्हें बर्लिन होते हुए स्टैटिन तक रेल से जाने की अपनी योजना छोड़नी पड़ी।

26 मार्च की सुबह वे बेनाऊ गाँव पहुँचे, जहाँ उन्हें एक खलिहान में छिपने का मौका मिला। उनकी योजना रात होने तक इंतज़ार करने और फिर अंधेरे की आड़ में गाँव के चारों ओर चक्कर लगाने की थी। अपने पहले प्रयास में, टोनी और कुकी एक जोते हुए खेत में बुरी तरह फंस गए और उन्होंने खलिहान में वापस लौटने और अगली रात फिर से कोशिश करने का फैसला किया। उन्हें वही नतीजा मिला, इसलिए उन्होंने स्थानीय रेलवे यार्ड में एक धीमी मालगाड़ी खोजने की कोशिश की। जब यह भी व्यर्थ साबित हुआ, तो वे निराश होकर खलिहान में लौट आए।

अगली सुबह, अट्ठाईस तारीख को, उन्हें एहसास हुआ कि अंधेरे में गाँव को पार करना असंभव होगा, इसलिए टोनी और कुकी ने दोपहर तक इंतजार किया, जब उन्हें लगा कि अधिकांश मजदूर दोपहर का भोजन कर रहे होंगे, और फिर वे जुते हुए खेत के थोड़े ऊँचे किनारे से होते हुए चल पड़े। अपनी प्रगति से वे उत्साहित थे और लगभग गाँव के चारों ओर पहुँच ही गए थे कि वर्दीधारी होम गार्ड के एक जवान ने उन्हें रोक लिया। वह काफी नासमझ लग रहा था और उसे पता नहीं था कि वे कौन हैं, लेकिन फिर भी उसने उन्हें गिरफ्तार करने का फैसला किया। दोनों ने स्थानीय लॉकअप में कुछ घंटे बिताए और फिर उन्हें सोराऊ में क्रिपो कार्यालय ले जाया गया, जहाँ उनकी पहचान की पुष्टि की गई। जैसे ही उन्होंने भागे हुए युद्धबंदियों होने की बात

स्वीकार की, टोनी और कुकी को सीधे सागन जेल ले जाया गया।

उन्होंने बाकी रात वहीं बिताई, और बाद में सुबह एडम कोलनोव्स्की को लाया गया, जो पास ही में होम गार्ड के साथ झड़प में फंस गया था। दोपहर में जॉनी पोहे और अल हाके आए। उनकी यात्रा बेहद कठिन रही थी और वे ठंड से जम गए थे, अल की हालत सबसे खराब थी।

इस समूह का एक छठा सदस्य भी था। 27 मार्च की रात को, फ्लाइट लेफ्टिनेंट मैक्स एलिस बेलारिया से भाग निकला। वह एक ट्रक के तिरपाल में छिप गया था जो पत्थरों से लदा हुआ शिविर में आया था। एलिस बच निकला और स्टैटिन की ओर उत्तर दिशा में चलने लगा, लेकिन उसे क्रिश्चियनस्टैड में फिर से पकड़ लिया गया और सागन पुलिस स्टेशन ले जाया गया। जब 29 मार्च की शाम को नॉर्थ कंपाउंड के पांचों लोगों को गोरलिट्ज़ भेजा गया, तो उसे भी इस सफ़ाई अभियान में शामिल कर लिया गया।

*

गोरलिट्ज़ जेल में, अल हाके की ठंड से हुई त्वचा चिंता का विषय बन गई थी, और पैट लैंगफोर्ड और जॉनी पोहे अपनी कोठरी में अल के ऊपर झुके हुए थे, दर्द कम करने का कोई उपाय ढूंढने की कोशिश कर रहे थे। अचानक दरवाजा ज़ोर से खुला और मिक शैंड अंदर आया, जो भागने वाली रात को शिविर से निकलने वाला आखिरी आदमी था।

घटनास्थल से भागने के बाद, मिक लगभग एक घंटे तक दक्षिण की ओर चलता रहा और फिर दिन भर छिपा रहा, शाम ढलते ही उसने फिर से चलना शुरू किया। अगले तीन दिनों तक उसने यही सिलसिला दोहराया, रात में चलता और दिन में आराम करता रहा, जब तक कि 29 मार्च की सुबह वह कोहलफर्ट तक नहीं पहुँच गया। वहाँ वह एक मालगाड़ी में चढ़ने के लिए साइडिंग पर इंतज़ार कर रहा था, तभी दो रेलकर्मियों ने उससे पूछताछ की और उसे हिरासत में ले लिया। उसे तुरंत पुलिस के हवाले कर दिया गया, लेकिन अफरा-तफरी में वह अपने उन कागज़ात को फेंकने में कामयाब हो गया जिनसे पता चलता था कि वह एक रोमानियाई मजदूर है।

मिक शैंड गोरलिट्ज़ पहुँचने वाले अंतिम व्यक्ति थे, तब तक वहाँ पैंतीस भगोड़े छोटी-छोटी कोठरियों में ठूंस दिए गए थे। वे काफी फटेहाल दिख रहे थे, लेकिन उनमें से अधिकांश ने कपड़े के बटन कवर हटाकर या सेवा बटन और प्रतीक चिन्ह दोबारा लगाकर अपनी लगभग बदली हुई सेवा वर्दी को फिर से सामान्य कर लिया था। अब वे कमोबेश सामान्य युद्धबंदियों जैसे दिख रहे थे। ओगिल्वी और शैंड दोनों ने सेना की युद्ध वर्दी और ओवरकोट पहने थे, जबकि लेस ब्रोडरिक और जॉर्ज वाइली ने आरएएफ की युद्ध वर्दी के साथ सैनिकों के ओवरकोट पहने थे, जिन्हें कम सैन्य दिखने के लिए छोटा कर दिया गया था। टोनी बेथेल ने इसी तरह के पहनावे को अमेरिकी सेना के बूटों के साथ पूरा किया। बर्फ में भारी यात्रा के बावजूद डेनिस स्ट्रीट सबसे अधिक सलीके से दिख रहे थे। उन्होंने आरएएफ अधिकारी की ट्यूनिक पहनी थी, जिसमें बटन और रैंक की पट्टियाँ लगी थीं, साथ ही सेवा पतलून और सेना का ओवरकोट भी था।

*

जिस सुबह हिटलर भागा, उस सुबह हिटलर के मुख्यालय में चल रही नियमित बैठक की शुरुआत अच्छी नहीं रही। पिछली रात बर्लिन पर हुए हमले के कारण हिटलर का मिजाज खराब था और गेस्टापो प्रमुख हेनरिक हिमलर उदास और गंभीर चेहरे के साथ बैठे थे। ओकव प्रमुख विल्हेम कीटल भी कम ही बोले और उम्मीद कर रहे थे कि हिटलर को भागने की खबर न मिले और बैठक किसी तरह खत्म हो जाए। कीटल का मानना था कि भागने वालों में से अधिकांश को दिन में ही पकड़ लिया जाएगा, जिससे सभी संबंधित पक्षों, खासकर खुद की, को शर्मिंदगी से बचाया

जा सकेगा। इसलिए जब हिमलर ने बैठक के अंत में बोलना शुरू किया, तो कीटल अपनी सीट पर थोड़ा बेचैन हो गए।

'एक और छोटी सी बात, मेरे नेता,' उन्होंने शुरू किया। 'सागन स्थित युद्धबंदी शिविर से एक और कैदी भाग निकला है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस समय सत्तर से अधिक वायु सेना अधिकारी फरार हैं। तलाशी अभियान शुरू कर दिया गया है, लेकिन मुझे लगता है कि इस मामले से निपटने के लिए हमें शायद सत्तर हजार सहायक सैनिकों को जुटाना पड़ेगा।'

कीटल हिमलर द्वारा सच उजागर करने पर बहुत क्रोधित था, लेकिन हिटलर के क्रोध के आगे उसकी क्रोध दब गया। उसने अपने ओकेडब्ल्यू प्रमुख पर चिल्लाते हुए कहा, 'दसवीं बार दर्जनों अधिकारी कैदी भाग निकले हैं! ये अधिकारी बहुत बड़ा खतरा हैं। आपको यह एहसास नहीं है कि जर्मनी में कैदी और मजदूर के रूप में रह रहे 60 लाख विदेशी लोगों के सामने, ये वे नेता हैं जो विद्रोह का आयोजन कर सकते हैं!' एक पल रुककर सांस लेते हुए हिटलर ने शांत स्वर में कहा, 'भागे हुए वायु सेना के अधिकारियों को तुरंत हिमलर के हवाले कर दिया जाए।'

हिमलर ने कीटल के आधे-अधूरे विरोध को सुना, जिससे हिटलर का गुस्सा और भड़क उठा। 'इन सबको गोली मार दी जाए!' वह चिल्लाया। 'इन सबको – ये हमें फिर कभी परेशान नहीं करेंगे!'

इस पर हिमलर ने अंततः बोलते हुए कीटल की आपत्तियों को खारिज कर दिया। उन्होंने शांत भाव से कहा, "मुझे यकीन है कि फ्यूहरर का मतलब उन सभी को फांसी देना नहीं है। इससे तटस्थ देशों के साथ हमारे संबंधों को बहुत नुकसान होगा। फांसी की सजाएं अवश्य होनी चाहिए, लेकिन सभी को नहीं।"

'तो आधे से भी ज़्यादा!' हिटलर गरजते हुए बोला। 'इन भागने वालों में से आधे से ज़्यादा को गोली मार दी जाएगी!'

हिमलर ने सुझाव दिया, 'शायद पचास एक उपयुक्त संख्या होगी।' 'ठीक है, मैं अपने डिप्टी कल्टेनब्रूनर से संपर्क करूंगा और उनसे एक आदेश तैयार करवाऊंगा। मामला मेरे हाथों में छोड़ दीजिए, मेरे फ्यूहरर।'

और इस प्रकार निर्णय लिया गया।

अध्याय **17**

ट्रेन यात्री

गोरलिट्ज़ की कोठरियों में, भागने की घटना का अनौपचारिक विश्लेषण चल रहा था। कैदियों ने अपनी संख्या का अंदाज़ा लगा लिया था और उन्हें पता चला कि पैदल भागने वालों में उनकी संख्या काफी ज़्यादा थी, जो कि अप्रत्याशित नहीं था। लेकिन सभी यह जानने के लिए उत्सुक थे कि ट्रेन से यात्रा करने वालों का क्या हाल है। उन्होंने कहा कि उनमें से कुछ तो अब तक काफ़ी आगे निकल चुके होंगे। अगर गोरलिट्ज़ के कैदियों को सच्चाई पता चल जाती, तो उनका मनोबल गिर जाता, क्योंकि ट्रेन से यात्रा करने वालों की हालत उतनी अच्छी नहीं थी जितनी कई लोगों ने उम्मीद की थी। उन्होंने लंबी दूरी तय की थी, लेकिन कई मामलों में तो वे कुछ कैदियों से भी पहले अपनी आज़ादी खो चुके थे।

*

विडंबना यह है कि ट्रेन से यात्रा कर रहे रॉजर बुशेल और बर्नार्ड शेइडहाउर सबसे पहले पकड़े गए। ब्रेस्लाउ में प्लंकेट और ड्वोरक से बात करने के बाद, उन्होंने पश्चिम की ओर अपनी यात्रा में अच्छी प्रगति की, लेकिन 26 मार्च की सुबह उन्हें सारब्रुकन स्टेशन पर रोक दिया गया और उनके कागजात में हाल ही में हुए बदलाव को देखकर गिरफ्तार कर लिया गया। रॉजर ने अपनी त्रुटिहीन जर्मन भाषा से अधिकारी को प्रभावित करने की कोशिश की, लेकिन उनकी कोशिश नाकाम रही और दोनों को तुरंत हिरासत में ले लिया गया। कई महीनों की सावधानीपूर्वक तैयारी के बाद, बिग एक्स का भाग निकलना एक भयानक निराशा साबित हुआ।

*

ब्रेस्लाउ से निकलते हुए, जॉन स्टीवंस और जोहान्स गौव्स अपनी यात्रा के मध्य भाग के लिए अलग हो गए, और उन्होंने कॉन्स्टान्ज़ के पास फिर से मिलने और एक साथ स्विस सीमा पार करने की योजना बनाई। जर्मन भाषा पर बेहतर पकड़ रखने वाले स्टीवंस ने एक्सप्रेस ट्रेन से यात्रा की, जबकि गौव्स ने लोकल ट्रेन ली। वे दोनों म्यूनिख के दक्षिण में पहुँच गए, लेकिन 29 तारीख की सुबह अलग-अलग स्टेशनों पर कागजी जाँच के बाद उन्हें फिर से पकड़ लिया गया। वे म्यूनिख पुलिस स्टेशन में फिर से मिले, जहाँ जोहान्स और जॉन को दो फीट गुणा पाँच फीट से भी कम आकार की एक छोटी सी कोठरी में ठूंस दिया गया। पुलिस ने उनसे लंबी पूछताछ की और दो गत्ते के बक्सों में रखे उनके थोड़े से सामान की जाँच की, बाद में उन्हें निर्वस्त्र कर उनके कपड़ों की बारीकी से जाँच की। अधिकारियों ने दोनों से पूरी तरह कबूलनामा निकलवाने की कोशिश की, लेकिन दक्षिण अफ़्रीकी नागरिकों ने सहयोग करने से इनकार कर दिया।

*

सागन से बर्लिन जाने वाली ट्रेन पच्चीस तारीख की सुबह लगभग साढ़े सात बजे जर्मन राजधानी पहुँची। कोई कागज़ी चेक नहीं हुआ था, और अर्नोल्ड क्रिस्टेंसन, जिमी कैटानाच, हाल्डोर

एस्पेलिड और निल्स फुगलेसांग ने इसे शुभ संकेत माना। वे डेनमार्क की ओर उत्तर दिशा में बढ़ते रहे, लेकिन 28 मार्च को सीमा के पास फ्लेन्सबर्ग में उनका भाग्य साथ नहीं दिया। एक संदिग्ध पुलिसकर्मी ने उनके ब्रीफकेस के अंदर देखने को कहा, जिसमें भागने के लिए भोजन के डिब्बे थे। फिर उसने उनके बदले हुए ओवरकोट की जाँच की, जो एक ऐसे पदार्थ से बने थे जो आम नागरिकों के कपड़ों में नहीं पाया जाता। इससे संकेत पाकर पुलिसकर्मी ने चारों को पकड़ लिया और उन्हें क्रिपो (पुलिस) के हवाले कर दिया। क्रिपो (पुलिस) अपनी इस हरकत से काफी खुश थी और उसने उनमें से प्रत्येक की तस्वीर खींची, जो थोड़े थके हुए लेकिन फिर भी दृढ़ दिख रहे थे।

*

फ्रैंकफर्ट-एन-डेर-ओडर जाने वाली एक्सप्रेस ट्रेन 25 तारीख को सुबह 6:00 बजे अपने गंतव्य पर पहुंची, लेकिन टिम वालेन, रेने मार्सिंकस, गॉर्डन ब्रेटेल और हेनरी पिकार्ड ट्रेन में ही रुके रहे, जो कुस्ट्रिन की ओर जा रही थी। चारों ने 26-27 मार्च की रात विलेनबर्ग में बिताई, लेकिन अगले दिन उन्हें श्नाइडम्यूहल में एक ट्रेन से उतारकर स्टैलाग XXB मारिएनबर्ग में डाल दिया गया। उनके सिले-सिलाए नागरिक कपड़ों के बदले उन्हें सेना की युद्ध वर्दी दी गई और फिर ट्रक से डेंजिग पुलिस जेल ले जाया गया। एक हंसमुख क्रिपो उप निदेशक ने उनसे कहा कि उन्हें सबसे अच्छी कोठरियाँ और अच्छा व्यवहार दिया जाएगा क्योंकि वे अधिकारी थे।

*

कुस्ट्रिन स्टेशन से ट्रेन के निकलने का इंतजार करते हुए, रेने मार्सिंकस ने प्लेटफार्म के उस पार देखा तो उन्हें भागने वालों में से एक, नॉर्वे का जेन्स मुलर दिखाई दिया। एक परिवर्तित एयरमैन की ट्यूनिक, टॉमी गेस्ट की कफ पैंट और नीले रंग से रंगे कंबल के कपड़े से बनी टोपी में बेहद सजे-धजे दिख रहे मुलर ने कुछ सेकंड के लिए मार्सिंकस को घूरा और फिर अपने साथी पेर बर्ग्सलैंड के पास वापस चले गए, जिन्होंने रॉयल मरीन की वर्दी से बना एक आम सूट, चपटे चमड़े के बटनों वाला आरएएफ का ग्रेटकोट, साधारण जूते और एक काली टाई पहनी हुई थी।

मुलर ने सुझाव दिया कि वे स्टेशन के प्रतीक्षालय में जाकर एक गिलास बीयर पी लें। वहाँ एक अधिकारी ने उनके कागजात देखने को कहा, लेकिन बस सरसरी नज़र डाली। पेर और जेन्स ने सुबह 10:00 बजे स्टैटिन जाने वाली ट्रेन पकड़ी और दोपहर 1:00 बजे के ठीक बाद वहाँ पहुँचे। उन्होंने दोपहर का समय एक सिनेमाघर और एक बीयर बार में बिताया। फिर उन्होंने रॉजर द्वारा बताए गए क्लेन ओडर स्ट्रासे के पते पर जाने का फैसला किया। उन्हें वह जगह याद नहीं थी, लेकिन उन्होंने सोचा कि एक बार देखना तो बनता है। इमारत को देखते हुए, जिस पर 'ज़ुर ओस्टसी' लिखा एक जर्जर बोर्ड लगा था, उन्होंने नाविकों को आते-जाते देखा और यह सोचकर कि यह किसी प्रकार का नाविकों का क्लब होगा, वे अंदर चले गए यह देखने के लिए कि उन्हें क्या पता चलता है।

वे एक लंबे कमरे में दाखिल हुए, जिसके एक तरफ कुर्सियाँ और सोफे थे और दूसरी तरफ एक सुसज्जित बार था। इसे किसी तरह का पब समझकर, जेन्स और पेर बैठ गए और किसी के आने का इंतज़ार करने लगे। आखिरकार, कम कपड़ों में, भारी मेकअप लगाए एक महिला अंदर आई और पेर के पास पहुँची। 'आज मेरे लिए क्या लाए हो?' उसने मुस्कुराते हुए कहा, उसकी दुर्गंध बर्ग्सलैंड पर पड़ रही थी। तुरंत ही, पेर को समझ आ गया: यह एक वेश्यालय था। खुद को संभालते हुए, पेर ने हिचकिचाहट दिखाई।

उन्होंने कहा, 'मुझे डर है कि मेरे पास पैसे नहीं हैं,' और उन्हें उम्मीद थी कि उन्हें बाहर निकाल दिया जाएगा।

महिला ने बेपरवाही से उसके ब्रीफकेस की ओर देखा। 'यह ठीक रहेगा,' उसने दरवाजे की ओर मुड़ते हुए कहा। 'चलो ऊपर चलते हैं।'

'लेकिन मुझे उसकी ज़रूरत है,' पेर हकलाते हुए बोला। 'मैं और मेरा दोस्त एक परिचित से कुछ पैसे उधार लेने जा रहे हैं – हम वापस आ जाएँगे।' हल्के से झुककर दोनों जल्दी से बाहर निकल गए।

सीढ़ियों से नीचे उतरते समय, उन्हें एक युवा पोलिश व्यक्ति ने रोक लिया और जर्मन भाषा में पूछा कि क्या उनके पास बेचने के लिए कोई काला बाज़ारी सामान है। उन्होंने मना कर दिया और बताया कि वे एक स्वीडिश नाविक की तलाश में हैं जो गोटेबोर्ग से रवाना हो रहे उनके एक पुराने दोस्त को ढूंढने में उनकी मदद कर सके। पोलिश व्यक्ति ने पास से गुजर रहे एक व्यक्ति को आवाज़ दी, उसका परिचय पेर और जेन्स से कराया और वहाँ से चला गया। जल्दी से अपनी पहचान बताते हुए, नॉर्वेजियन लोगों ने जहाज़ में छिपकर यात्रा करने की संभावना के बारे में पूछा। पता चला कि स्वीडिश नाविक का जहाज़ उसी रात रवाना होने वाला था, और उसने उन्हें रात 8:00 बजे उसी स्थान पर मिलने के लिए कहा और बताया कि उन्हें चुपके से जहाज़ पर चढ़ा दिया जाएगा। अपनी उत्तेजना को मुश्किल से रोकते हुए, दोनों ने मिलने के लिए वापस लौटने से पहले कुछ घबराहट भरे घंटे बिताए। नाविक उन्हें घुमावदार रास्ते से बंदरगाह तक ले गया और अंततः उन्हें गेट से अंदर ले जाकर माल के ढेर के पीछे अपने संकेत का इंतज़ार करने के लिए कहा। नाविक जहाज़ के तख्ते पर चढ़ गया और पेर और जेन्स इंतज़ार करते रहे। एक घंटे बाद भी कोई संकेत नहीं आया और फिर दोनों को जहाज को रवाना होते देखकर निराशा हुई। जैसे ही वे बक्सों के पीछे छिपे, उनकी आज़ादी का टिकट भाप से भर गया और घाट से दूर चला गया।

नॉर्वेवासियों की निराशा तब चिंता में बदल गई जब उन्हें एहसास हुआ कि वे अब गोदी में फंस गए हैं। अगर वे वहां पकड़े गए तो उन्हें कड़ी सजा मिलेगी। कोई और विकल्प न होने पर, बर्ग्सलैंड और मुलर सीधे द्वार की ओर चल पड़े, और उन्होंने ठान लिया कि वे इस स्थिति का डटकर सामना करेंगे। जहाजों की कतारों के बीच से गुजरते हुए, पेर ने एक नाम नोट कर लिया और उसे याद कर लिया, ताकि जरूरत पड़ने पर काम आ सके। वे द्वार पर पहुंचे, और गार्ड ने तुरंत उनसे पूछा कि वे कौन हैं। पेर ने जवाब दिया, 'हम इलेक्ट्रीशियन हैं, और एक जहाज पर कुछ काम कर रहे हैं।'

'कौन सा?' गार्ड ने पूछा, और पेर ने उसे वह नाम बताया जो उसे याद था। गार्ड ने एक सूची देखी और फिर बिना कागजात मांगे उन दोनों को आगे जाने दिया। वे अपनी किस्मत पर यकीन किए बिना ही अंधेरे में गायब हो गए। कुछ अन्य नाविकों से मिलने की उम्मीद में वे वेश्यालय लौट आए, लेकिन तब तक रात के 2 बज चुके थे और इमारत बंद हो चुकी थी। आराम की सख्त जरूरत होने के कारण, पेर और जेन्स ने एक छोटा सा होटल ढूंढा और एक कमरा मांगा। उनके कागजात देखकर होटल मालिक संतुष्ट हो गया, और वे दोनों अगली दोपहर तक सोए रहे। उन्होंने चेक आउट किया और ग्रामीण इलाकों में घूमने निकल गए, और अंधेरा होने पर ही शहर लौटे।

लगभग छह बजे, पेर और जेन्स वेश्यालय लौट आए, जहाँ उनकी मुलाकात बाहर आ रहे दो स्वीडिश लोगों से हुई। दोनों को उन भगोड़ों को अपने जहाज तक ले जाने की तीव्र इच्छा हुई, जो पारनिट्ज़ में खड़ा था, और वे तुरंत बंदरगाह के लिए रवाना हो गए। द्वार पर पहुँचकर, स्वीडिश लोगों ने पहले अपने कागजात दिखाए, और फिर गार्ड ने मुलर और बर्गस्लैंड से पूछा कि क्या वे एक ही जहाज से हैं। जल्दी से सिर हिलाकर, दोनों नॉर्वेजियन लोगों को द्वार से अंदर जाने दिया गया। सब कुछ बहुत आसानी से हो गया था।

जेन्स और पेर को लंगर की जंजीर वाले डिब्बे में छिपा दिया गया और चुपचाप इंतज़ार करने को कहा गया। जहाज़ के रवाना होने में लगभग छत्तीस घंटे बाकी थे, और तलाशी ज़रूर होगी। अगले डेढ़ दिन में दो-तीन बार पेर और जेन्स ने अपने एक सहायक के कदमों की आहट सुनी, जो डिब्बे के ऊंचे बल्कहेड के ऊपर से खाने-पीने का सामान और कॉफ़ी का थैला नीचे उतारने के लिए अंदर आ रहा था। नॉर्वेजियन लोग अपने सैंडविच चबाते रहे और कभी-कभार बातें करते रहे,

लेकिन ज़्यादातर वे बस बैठे रहे और सोचते रहे।

28 मार्च की सुबह तड़के ही उन्हें अलग-अलग कदमों की आहट सुनाई दी, जर्मन सैनिकों के भारी जूतों की स्पष्ट और गूंजती हुई आवाज। वे जहाज के निचले हिस्से में उतरे और पेर और जेन्स तनाव से सुनते रहे जब कुछ गार्ड टॉर्च की रोशनी में डिब्बे की तलाशी ले रहे थे। धीरे-धीरे सीटी बजाते हुए, जर्मन सैनिक धीरे-धीरे और व्यवस्थित ढंग से काम कर रहे थे और लगभग काम खत्म ही कर चुके थे कि पेर ने अपने सिर के ऊपर स्टील पर एक तेज रोशनी देखी। पेर का दिल धड़क रहा था, उसने देखा कि रोशनी की किरण उसके ऊपर छत पर रुक गई और एक गार्ड देखने के लिए पास आया।

पहले पेर ने दीवार के ऊपर से कुछ उंगलियां देखीं, लेकिन वे तुरंत गायब हो गईं। फिर एक बक्सा घसीटकर उनकी ओर लाए जाने की आवाज़ आई। पेर ने खुद को जंजीर में और नीचे दबाने की व्यर्थ कोशिश की, और डर के मारे देखता रहा कि एक भूरे रंग के कपड़े पहने हाथ दीवार के ऊपर से निकला और टटोलने लगा। आवाज़ करने के डर से हिलने में असमर्थ, वह बस वहीं लेटा रहा जैसे-जैसे हाथ करीब आता गया। जर्मन सैनिक ने अपने सिर के चारों ओर टटोला और फिर सबसे बुरी बात हुई: सैनिक की उंगली सीधे पेर की आंख में जा लगी। दर्द से पलकें झपकाते हुए, पेर को अपनी किस्मत पर मुश्किल से विश्वास हुआ जब हाथ आगे बढ़ा और डिब्बे से बाहर खींच लिया गया। 'कुछ नहीं' (Nichts), गार्ड ने गुस्से से कहा, और दोनों वहां से चले गए, उनके कदमों की आहट धीरे-धीरे दूर होती चली गई। मिनटों में पहली बार, पेर और जेन्स ने चैन की सांस ली।

कुछ घंटों बाद, लगभग सात बजे, जहाज रवाना हुआ। 29 मार्च की रात 11:00 बजे, यह स्वीडन के गोटेबोर्ग शहर में पहुंचा। जेन्स मुलर और पेर बर्ग्सलैंड का महान पलायन पूरा हो गया था, और यह लगभग बिना किसी बाधा के हुआ था। वे तीन मिनट से भी कम समय में सुरंग से निकल गए, पलायन के अगले दिन दोपहर तक स्टैटिन पहुंच गए, और सिर्फ तीन दिन बाद सुरक्षित रूप से स्वीडन में थे। उनका पलायन एकदम सही था।

चालक दल की सलाह पर, पेर और जेन्स अगले दिन स्टॉकहोम पहुँचने तक जहाज पर ही रहे। कोई जोखिम न लेते हुए, वे बंदरगाह की बाड़ फांदकर सीधे ब्रिटिश दूतावास चले गए। दूतावास के अधिकारी ने उन्हें काफी ठंडे लहजे में देखा और सीधे पूछा कि क्या उन्होंने स्वीडिश पुलिस को सूचना दी है। जब पेर और जेन्स ने सिर हिलाकर मना किया, तो उन्होंने उन्हें कड़ी फटकार लगाई। उन्होंने पूरी गंभीरता से पूछा, 'क्या आपको नहीं पता कि युद्ध चल रहा है?'

*

ब्रेस्लाउ स्थित गेस्टापो भवन में बर्लिन से एक गुप्त टेलीटाइप संदेश प्राप्त हुआ था, वही संदेश जो जर्मनी के प्रत्येक जिला गेस्टापो कार्यालय को भेजा गया था। यह संदेश आरएसएचए स्थित कल्टेनब्रूनर के कार्यालय से आया था और इसमें सागन से भागने में विफल रही ढीली सुरक्षा व्यवस्था पर निराशा व्यक्त की गई थी। निवारक उपाय के रूप में, इसमें आदेश दिया गया था कि शिविर में वापस लाए गए आधे से अधिक कैदियों को गोली मार दी जाए। यह सूचना दी जानी थी कि उन्होंने गिरफ्तारी का विरोध किया था या फिर से भागने का प्रयास किया था। अंत में, पकड़े गए सभी कैदियों के नाम बर्लिन स्थित क्रिपो मुख्यालय को भेजे जाने थे, जहाँ यह निर्णय लिया जाना था कि किसे मौत की सजा दी जाएगी। फिर अंतिम फांसी के आदेश संबंधित कार्यालयों को भेजे जाने थे।

*

पश्चिम में नब्बे मील दूर, गोरलिट्ज़ में मौजूद पैंतीस लोग ऊब से बचने की पूरी कोशिश कर रहे

थे। उनका तबादला अक्सर होता रहता था, इसलिए हर किसी ने दूसरे की कहानी सुन रखी थी। अब बस इस बात का इंतज़ार था कि कब पूछताछ के लिए उन्हें बुलाया जाएगा।

लेस ब्रोडरिक और उसके तीन साथी कैदियों ने एक गार्ड से कागज का एक टुकड़ा मांगा और उसे फाड़कर छोटे-छोटे ताश के पत्ते बना लिए। हर सुबह वे रमी खेलते थे ताकि तय कर सकें कि दोपहर के भोजन में रोटी का पहला हिस्सा किसे मिलेगा। एक सुबह वे खेल रहे थे कि तभी बाहर एक कार आकर रुकी। खिड़की से झांकते हुए लेस ने देखा कि चमड़े के ओवरकोट और काली टोपी पहने तीन नागरिक एक छोटी काली कार से उतरे। गार्ड ने कोठरी का दरवाजा खोलकर उसे खिड़की से दूर धकेल दिया, इससे पहले कि वह उन्हें बस एक झलक ही देख पाया, लेकिन उसे उनका चेहरा पसंद नहीं आया।

हॉल के दूसरी तरफ, कीथ ओगिल्वी पॉल रॉयल, नेविल मैकगार और चाज़ हॉल के साथ एक ही सेल में रहते थे। एक सुबह कुछ और करने को न होने पर, चाज़ ने अपनी जेब से पेंसिल का टुकड़ा निकाला और दीवार पर लिखा, 'मोरितुरी ते सैलुटामस' (हम जो मरने वाले हैं, आपको सलाम करते हैं)। उन चारों को इस पर खूब हंसी आई।

नियमित अंतराल पर कैदियों को पूछताछ के लिए बुलाया जाता था और उन्हें शहर से होते हुए एक गंदी, धूसर इमारत तक ले जाया जाता था, जिस पर केवल एक छोटा सा बोर्ड लगा था: गेस्टापो पुलिस। जेल में उनके साथ हुए बर्ताव के विपरीत, लेस ब्रोडरिक को अपनी पूछताछ काफी सभ्य लगी। गेस्टापो की इमारत में, वह एक बड़े और अलंकृत दरवाजे के सामने कुछ घबराहट के साथ रुका, गहरी सांस ली और अंदर चला गया। जिन कोड़ों से लैस हट्टे-कट्टे गुंडों की उसे उम्मीद थी, उनके बजाय लेस को यह देखकर राहत मिली कि कमरे में केवल एक अधेड़ उम्र का, क्लर्क जैसा दिखने वाला आदमी और एक महिला सचिव मौजूद थे। उन्होंने उसे एक कुर्सी पर बैठने का इशारा किया और उससे भागने की योजना के बारे में पूछना शुरू किया।

'मुझे खेद है कि मैं आपकी ज़्यादा मदद नहीं कर पाऊँगा,' लेस ने बड़ी सहजता से कहा। 'मैंने रेत को बस वहीं खिसकाया है जहाँ मुझे बताया गया था।' इतना कहकर उसने थोड़ा शर्मिंदा होकर अपना सिर नीचे कर लिया। उसे पूरी तरह से आश्चर्य हुआ जब क्लर्क ने उसकी बात पर विश्वास कर लिया और लेस से केवल उस बयान पर हस्ताक्षर करने को कहा जिसे सचिव टाइप कर रही थी। लेस ने यह सुनिश्चित करने के बाद कि उसमें कुछ भी आपत्तिजनक नहीं है, तुरंत हस्ताक्षर कर दिए और नए आत्मविश्वास के साथ उसे वापस जेल ले जाया गया।

टोनी बेथेल को पूछताछ कक्ष में दो नागरिक और एक स्टेनोग्राफर मिले। शुरू में कार्यवाही काफी सौहार्दपूर्ण रही, टोनी ने अपना नाम, पद और क्रमांक बताया। फिर माहौल बिगड़ गया। दोनों व्यक्ति उन पर चिल्लाते हुए सवाल पूछने लगे, उन्हें धक्का देने लगे और कुल मिलाकर बहुत बदतमीजी करने लगे। अंत में टोनी ने चिल्लाकर कहा कि वे अपनी आवाज ऊंची न करें क्योंकि यहां एक महिला मौजूद है, और उन्हें आश्चर्य हुआ कि दोनों व्यक्ति चुप हो गए, कुछ देर पलकें झपकाईं और फिर से सभ्य हो गए। टोनी तब काफी मददगार साबित हुए, हालांकि उनके सवालों का जवाब देने के बजाय, उन्होंने एक अधिकारी के कर्तव्य के महत्व पर लंबा भाषण देना शुरू कर दिया। जल्द ही पूछताछ करने वाले इस रवैये से तंग आ गए और हताशा में डेस्क पर रखी फाइल बंद कर दी और टोनी को वहां से जाने का इशारा किया।

हालांकि, पूछताछ हमेशा इतनी आसानी से नहीं हुई। जॉर्ज वाइली को आम नागरिकों से सबसे पहले यही सुनने को मिला कि शायद वह अपने माता-पिता को फिर कभी नहीं देख पाएगा। माइक केसी और सैंडी गन को बताया गया कि उनके सिर काट दिए जाएंगे, जबकि डेनिस स्ट्रीट को गोली मारने की धमकी दी गई। पूछताछ करने वालों ने इयान क्रॉस को चेतावनी दी कि भागने वालों को एक विशेष शिविर में भेजा जा रहा है क्योंकि जाहिर तौर पर लूफ़्टवाफ़े उन्हें रोक नहीं सकता। जैक ग्रिसमैन और हेरोल्ड मिलफोर्ड को बताया गया कि उनकी पत्नियां उन्हें फिर कभी नहीं देख पाएंगी।

जब बॉब नेल्सन को पूछताछ कक्ष में ले जाया गया, तो उन्हें ऐसा लगा जैसे वे किसी

हॉलीवुड फिल्म में आ गए हों। उन पर तेज़ रोशनी पड़ रही थी, जबकि उनके पूछताछकर्ता अर्ध-अंधेरे में थे, और वहाँ गॉलोइस सिगरेट की तेज़ गंध थी। पूछताछ की शुरुआत बॉब के पारिवारिक पृष्ठभूमि से जुड़े सामान्य सवालों से हुई, जिनका जवाब देना उन्हें सुरक्षित लगा। हालाँकि, जब उन्होंने अपनी माँ का नाम रेबेका बताया, तो पूछताछकर्ताओं में से एक ने बॉब पर यहूदी होने का आरोप लगाया और कहा कि उन्हें यातना शिविर में भेज दिया जाएगा। जब उन्होंने भागने के बारे में सवाल पूछना शुरू किया, तो बॉब टालमटोल करने लगे। उन्होंने स्वीकार किया कि वे इंग्लैंड भाग रहे थे, लेकिन जब पूछताछकर्ताओं ने बताया कि उन्हें चेकोस्लोवाकिया जाते समय पकड़ा गया था, तो उन्होंने इस मामले पर बहस न करने का फैसला किया। जैसे-जैसे नेल्सन कम बोलने लगे, उनके पूछताछकर्ता और भी उत्तेजित हो गए और गंभीर सजा, शारीरिक पिटाई और इससे भी बदतर की धमकियाँ देने लगे। अंत में, उन्हें हस्ताक्षर करने के लिए एक पहले से टाइप किया हुआ बयान दिया गया। बॉब ने तुरंत इनकार कर दिया और उन्हें वापस जेल ले जाया गया।

टॉम ली को भी ऐसा ही एक बयान दिखाया गया, जिस पर उन्होंने हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया। उन्हें भी गोली मारने की धमकी दी गई। एडम कोलनोव्स्की ने यह नहीं बताया कि उन्हें क्या कहा गया था, लेकिन वे बेहद उदास होकर अपनी कोठरी में लौट गए। वैली वैलेंता गेस्टापो भवन से वापस आए और एक गंभीर मुस्कान के साथ कहा कि उन्हें उम्मीद है कि पूर्वी यूरोपीय अधिकारियों को कड़ी पूछताछ करनी पड़ेगी। उन्होंने बताया कि पूछताछ करने वाले उनसे बहुत नाराज़ थे और लगातार यही कह रहे थे कि वे फिर कभी भाग नहीं पाएंगे।

दूसरी ओर, पॉल रॉयले को कुछ कहने का ज़्यादा मौका नहीं मिला। उनकी पूछताछ पाँच मिनट के भाषण से शुरू हुई जिसमें उन्होंने बताया कि उन्हें कैसे गायब किया जा सकता है और पुलिस पर शिविर को सूचित करने या यहाँ तक कि यह साबित करने का कोई दायित्व नहीं है कि वह जासूस या विध्वंसक थे। पॉल का एकमात्र जवाब था, 'मुझे डर है कि मैंने आपको वह सब बता दिया है जो मैं बता सकता था।' जर्मन अधिकारी ने एक और लंबा भाषण शुरू कर दिया। वह बड़बड़ाया, 'आपके खिलाफ कुछ भी साबित करना हमारा काम नहीं है। अगर इस इलाके में कोई तोड़फोड़ हुई है, तो स्वाभाविक रूप से यह मान लिया जाएगा कि आप इसके लिए ज़िम्मेदार थे। फिर आपको गायब कर दिया जाएगा।' वह राजनीतिक घटनाओं, सोवियत संघ द्वारा जर्मन कैदियों के साथ किए गए व्यवहार और बमबारी के बारे में अस्पष्ट रूप से बात करता रहा। उसमें कोई शत्रुता नहीं थी, बस एक नीरस स्वर था। फिर अमेरिकी लहजे वाले एक दुभाषिए ने उन्हें खड़े होने और पूछे गए सवालों के जवाब देने के लिए कहा। सवाल काफी सामान्य थे, और पॉल ने भागने की तैयारियों और भागने की घटना के बारे में अपनी यादों को जानबूझकर अस्पष्ट रखा। उसने बस इतना कहा कि वह कैद से तंग आ चुका था, इसलिए उसने भागने का फैसला किया। उसने पूछताछ करने वालों से गंभीरतापूर्वक कहा, 'मुझे यकीन है कि आप भी ऐसा ही महसूस करते।' इसके बाद उसे आगे की कार्यवाही के लिए वापस कोठरियों में भेज दिया गया।

बाद में, बेलारिया के मैक्स एलिस से पूछताछ की गई। वह अभी कमरे में दाखिल भी नहीं हुए थे कि पूछताछकर्ता ने गरजते हुए पूछा, 'नॉर्थ कंपाउंड से भागने की योजना किसने बनाई?' एलिस ने शांत भाव से उत्तर दिया कि वह नॉर्थ कंपाउंड से नहीं बल्कि बेलारिया से भागे थे। इस पर जर्मन अधिकारी ने उनका टेलीफोन छीन लिया, रिसीवर में कुछ चिल्लाया और फिर उसे पटक दिया। 'यह पूछताछ अब समाप्त होती है,' उन्होंने पूरी कोशिश की कि वे शर्मिंदा न दिखें।

*

बर्लिन में, पकड़े गए फरार कैदियों के नाम धीरे-धीरे क्रिपो के मुख्य कार्यालय में पहुँच रहे थे। क्रिपो के प्रमुख आर्थर नेबे ने एक क्लर्क को नामों की सूची बनाने और केंद्रीय फाइलिंग सिस्टम से फोटो पहचान पत्र इकट्ठा करने का निर्देश दिया। जैसे ही ये उनके डेस्क पर पहुँचे, नेबे और क्लर्क अंतिम निर्णय लेने के लिए बैठ गए। आर्थर नेबे के लिए यह अनुभव अजीब था। सोवियत

संघ में कुख्यात आइंज़ैट्सग्रुपें के एक निष्पादन दस्ते के कमांडर के रूप में, उन्होंने हजारों लोगों को त्वरित मृत्युदंड दिया था, लेकिन यह कार्य अलग था। जिन लोगों को उन्हें मृत्युदंड देना था, उनकी तस्वीरों और व्यक्तिगत विवरणों को देखकर नेबे बेचैन हो गए, मानो उन्हें अंततः अपने द्वारा किए जाने वाले भयावह कृत्यों का एहसास हो गया हो। अंत में उन्होंने मुट्ठी भर कार्ड पकड़े और दूसरा ढेर क्लर्क की ओर बढ़ा दिया। उन्होंने संक्षिप्त रूप से कहा, 'देखो, क्या उनकी पत्नियाँ और बच्चे हैं?'

जब क्लर्क ताश के पत्तों को फेंट रहा था, तो बीच-बीच में नेबे की बड़बड़ाहट सुनाई दे रही थी। उसने कहा, 'अरे, वह तो बहुत छोटा है, पर वह इसके लिए काबिल है।' काफी देर तक पत्तों को देखने के बाद, नेबे के सामने मेज पर दो ढेर लग गए और वह कुछ मिनटों तक उन्हें घूरता रहा। अचानक उसने एक ढेर से एक पत्ता उठाया और उसे दूसरे ढेर में रख दिया, और ढेर को क्लर्क की ओर धकेल दिया।

'लो, इनकी एक सूची बनाओ,' उसने कहा। 'जल्दी करो!' क्लर्क दौड़कर नेबे के सचिव को सूची लिखवाने गया, जिसने विभिन्न क्रिपो कार्यालयों को फांसी के आदेश भेज दिए। प्रक्रिया शुरू हो चुकी थी।

*

हिर्शबर्ग पुलिस स्टेशन में, विली विलियम्स के दल के सदस्यों से भी लंबी पूछताछ की जा रही थी। बारी-बारी से, उन्हें पूछताछ के लिए ले जाया गया, जिसमें कभी नरमी बरती गई तो कभी दुर्व्यवहार, और फिर उन्हें या तो एक परिवर्तित शौचालय में बंद कर दिया गया जिसे हिरासत कक्ष के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा था या पूछताछ कक्ष के बाहर गलियारे में छोड़ दिया गया। कुछ समय बाद, भागने वालों को पुलिस स्टेशन से बाहर निकाला गया और शहर की जेल ले जाया गया, प्रत्येक को एक पुलिस अधिकारी से हथकड़ी पहनाई गई थी। जिस कोठरी में उन्हें रखा गया था वह छोटी और सीलन भरी थी, लेकिन वे तुरंत सो गए।

अगली सुबह हालात थोड़े बेहतर लगने लगे। एक आकर्षक पोलिश लड़की काले रंग की रोटी और नकली जैम की ट्रे लेकर आई और पेट भर खाना मिलने से आठों का मन खुश हो गया। उन्होंने अपने भागने की कहानियाँ सुनाईं और कुछ और करने को न होने के कारण डॉजर ने समूह के साथ मिलकर कुछ गाने गाए। संयोगवश, अगली सुबह जॉनी को अगवा कर लिया गया।

आगे क्या होने वाला है, इससे अनभिज्ञ, शेष सात लोग पहले की तरह ही अपना काम करते रहे। जिमी वर्नहम युद्ध के बाद कनाडा में पैसा कमाने की अपनी महत्वाकांक्षी योजनाओं के बारे में बातें कर रहा था, जबकि किवनास्र्की और पावलुक बारी-बारी से खिड़की से नीचे आंगन में काम कर रही रूसी और पोलिश महिलाओं से बातें कर रहे थे। वार्डन ने गुस्से में उन्हें खिड़की से दूर हटने की चेतावनी दी और बाद में कोठरी में आकर डग पॉयंटर को गलियारे में घसीट लिया। उसने डग पर अपनी रिवॉल्वर तान दी और बेतरतीब ढंग से चिल्लाया, लेकिन पॉयंटर ने उसे एक तरफ कर दिया और जेल कमांडेंट से मिलने की मांग की।

हैरानी की बात यह है कि उसी दिन बाद में कमांडेंट सेल में घुस आया, व्यायाम, रेज़र और ज़्यादा खाने की उनकी माँगें सुनीं और उनकी गुस्ताखी पर भड़कते हुए चला गया। फिर भी, मंगलवार, अट्ठाईस तारीख को, उन्हें आँगन में ले जाया गया और आधे घंटे के लिए घूमने की अनुमति दी गई। अगली सुबह वार्डन सेल में आया और जिमी वर्नहम और निक स्कैंटज़िकास को बुलाया। उन्हें अपना सामान इकट्ठा करने और अलविदा कहने के लिए कुछ ही मिनट दिए गए और फिर वे चले गए। उसी दिन बाद में वार्डन फिर से आया, इस बार डग पॉयंटर और पॉप ग्रीन को बुलाते हुए। दो दिन बाद, इकत्तीस तारीख की दोपहर को, काज़ पावलुक और टोनी किवनास्र्की को ले जाया गया। अब केवल जिमी जेम्स ही हिर्शबर्ग में इंतज़ार कर रहा था, उसे नहीं पता था कि बाकी लोग कहाँ गए हैं और भविष्य को लेकर अनिश्चित था।

*

पूछताछ जारी रहने के दौरान, कुछ भगोड़े अभी भी जर्मनी से बाहर निकलने की कोशिश कर रहे थे। नाविक नीली, जो सुरंग से निकलने वाले अट्ठाईसवें व्यक्ति थे, ने नौसैनिक वर्दी पहनी हुई थी जिस पर आम नागरिकों के बटन लगे थे, साथ ही एक ओवरकोट और एक बेरेट भी था। उनके पास एक फ्रांसीसी पहचान पत्र, बर्लिन होते हुए स्टैटिन जाने के लिए आवश्यक कागजात, 500 फ्रैंक और 150 रीचमार्क थे। बर्लिन पहुँचने के बाद, नाविक ने स्टैटिन जाने वाली शाम 4:20 बजे की ट्रेन पकड़ने से पहले पूरे दिन शहर में घूम-फिर किया। लगभग साढ़े सात बजे पहुँचकर, उन्होंने एक छोटा सा होटल ढूँढा और अच्छी नींद ली, और अगली सुबह छब्बीस तारीख को दस बजे चेक आउट किया। नीली ने दिए गए पते पर जाने का फैसला किया और क्लेन ओडर स्ट्रासे की ओर चल पड़े। एक घर में जाकर दो महिलाओं से बात करने के बाद ही उन्हें एहसास हुआ कि वे गलत पते पर आ गए हैं।

नाविक ने रेस्तरां में दोपहर का भोजन करके अपनी ऊर्जा बढ़ाई और फिर क्लेन ओडर स्ट्रासे लौट गया। वहाँ वेश्यालय में एक महिला ने उसे बताया कि इस समय कोई स्वीडिश नागरिक मौजूद नहीं है, लेकिन वह इंतज़ार कर सकता है। वह साढ़े पाँच बजे तक रुका रहा और फिर हार मानकर चला गया। संयोगवश, उसकी मुलाकात एक फ्रांसीसी व्यक्ति से हुई, जो मदद करने के लिए बहुत उत्सुक था और नीली को अस्पताल की रसोई में काम करने वाले अपने एक मित्र से मिलवाने ले गया।

अगली दो रातों तक नाविक अस्पताल में ही पनाह लेता रहा, दिन में छुपकर रहता था लेकिन रात में एक सहायक के साथ स्वीडिश नाविकों की तलाश में निकल जाता था। आखिरकार उनकी मुलाकात एक नाविक से हुई जो बंदरगाह पर काम करता था। उससे उन्हें निराशाजनक खबर मिली कि फिलहाल कोई स्वीडिश जहाज नहीं है, लेकिन जब कोई जहाज आएगा तो वह उन्हें सूचित कर देगा।

हताश होकर सेलर अस्पताल लौट गया और इंतज़ार करने लगा, लेकिन 28 मार्च को पुलिस ने इमारत की तलाशी ली और सेलर किसी तरह पीछे के दरवाज़े से भाग निकला। वह वेश्यालय लौटा, लेकिन वहाँ उसे कोई स्वीडिश नागरिक नहीं मिला। फिर वह शहर के मुख्य पुल पर गया, जहाँ उसने विंग्स डे और पावेल टोबोल्स्की से मिलकर अपने अनुभव साझा करने की योजना बनाई थी। जब वे नहीं आए, तो सेलर ने मान लिया कि उन्हें दोबारा पकड़ लिया गया है। अस्पताल में हुई घटना के साथ-साथ इस बात ने नीली को आश्वस्त कर दिया कि शहर बहुत खतरनाक होता जा रहा है। वह सीधे रेलवे स्टेशन गया और रात 8:00 बजे बर्लिन जाने वाली ट्रेन पकड़ ली।

नीली को आश्चर्य हुआ कि ट्रेन में कोई कागज़ी चेक नहीं थे, और वह बिना किसी घटना के राजधानी पहुँच गया। फ्रांस तक जाने के इरादे से, उसने 29 मार्च को सुबह 11:00 बजे म्यूनिख जाने वाली एक्सप्रेस ट्रेन पकड़ी। भोजन और पैसे की कमी के कारण, सेलर जितना संभव हो सके दक्षिण की ओर जाना चाहता था और उसने एक्सप्रेस ट्रेन में यात्रा करने का जोखिम उठाया, यह जानते हुए भी कि उसमें गश्त होने की संभावना अधिक थी। नूर्नबर्ग में, सादे कपड़ों में एक पुलिसकर्मी ने उसके कागजात की जाँच की और उसे संदेह हुआ क्योंकि सेलर का पहचान पत्र नया लग रहा था, जबकि इसे महीनों पहले जारी किया जाना चाहिए था। उसे भगोड़े फ्रांसीसी कामगार के रूप में गिरफ्तार कर लिया गया और म्यूनिख ले जाया गया।

30 मार्च की दोपहर को नीली से पूछताछ की गई और उसने तुरंत स्वीकार कर लिया कि वह सागन का रहने वाला है। भागे हुए कैदी के रूप में रहना, भागने वाले मजदूर के रूप में रहने से कहीं अधिक सुरक्षित था। एक बहुत ही मिलनसार पुलिसकर्मी ने उसे बताया कि शिविर के दो अन्य लोगों को भी हिरासत में लिया गया है। हालांकि उसने नाम नहीं बताए, बाद में पता चला कि वे गौव्स और स्टीवंस थे।

कुछ घंटों बाद हवाई हमले के सायरन बजने तक पूछताछ बड़े ही सुखद माहौल में चलती रही। इमारत में मौजूद बाकी सभी लोग आश्रय स्थलों की ओर भागे, लेकिन सेलर को वापस उसकी कोठरी में भेज दिया गया। उसके विरोध पर गार्ड ने केवल इतना कहा, 'तुम्हारे देशवासी ही नुकसान पहुंचा रहे हैं - तुम्हें यहीं रहना होगा और इसे सहना होगा!'

विडंबना यह है कि नाविक नीली शायद विंग्स डे और पावेल टोबोल्स्की से कुछ ही मिनटों से चूक गए थे, क्योंकि वे वास्तव में तय समय पर स्टैटिन के पुल पर पहुँच गए थे। बर्लिन पहुँचने के बाद, विंग्स और टोब सीधे अपने संपर्क पते पर गए, जहाँ उनका गर्मजोशी से स्वागत किया गया और उन्हें स्नैप्स और मोसेले वाइन के साथ एक शानदार दोपहर का भोजन कराया गया। उन्होंने थोड़ी देर आराम किया; फिर, अपार्टमेंट से बाहर निकलने के बहाने एक कार्यक्रम का बहाना बनाकर, उन्होंने दोपहर एक छोटे से मज़दूरों के कैफ़े में बिताई। वहाँ टोबोल्स्की को एक अवकाश और ट्रांज़िट केंद्र के बारे में सारी जानकारी मिल गई, जहाँ सैनिकों को मुफ़्त भोजन और बिस्तर मिल सकता था।

वे संपर्ककर्ता के घर लौटे और वहाँ एक शानदार रात्रिभोज देखकर आश्चर्यचकित रह गए। हालाँकि, डेनिश किराएदार निराशाजनक साबित हुआ। वह दिखावटी और स्त्री-समान था और युद्ध में उसकी कोई दिलचस्पी नहीं थी, जबकि उसका देश कब्जे में था। इससे भी बुरा यह था कि उसने शाम का अधिकांश समय अपनी जर्मन प्रेमिका की प्रशंसा करने में बिताया, जो एक कट्टर नाज़ी थी। विंग्स और टोब ने रात वहीं बिताई, लेकिन उन्होंने अगली सुबह निकलने का फैसला कर लिया था।

26 मार्च की सुबह, टोबोल्स्की और डे, जिनमें से डे ने अपने मेज़बान की चुराई हुई टोपी पहन रखी थी, घर से निकले और अपनी अगली चाल तय की। उन्होंने एक कैफे में गरमागरम सब्ज़ी का सूप पिया, जहाँ ज़्यादातर जर्मन अधिकारी मौजूद थे, और फिर अलग-अलग जाँच-पड़ताल के लिए निकल पड़े। टोबोल्स्की छुट्टी केंद्र जाकर यह पता लगाने वाले थे कि क्या पश्चिम की ओर जाने वाली किसी सैन्य ट्रेन में जगह मिल सकती है, जबकि विंग्स स्टैटिन जाने के लिए मुख्य रेलवे स्टेशन जाने वाले थे। अगली सुबह उन्हें विंटरफेल्डप्लात्ज़ पर फिर से मिलना था।

डे ने अपना काम जल्दी से पूरा कर लिया। स्टैटिन पहुँचना आसान था, इसलिए उसने कनेक्शन और समय याद कर लिए और फिर कुछ और करने की तलाश में निकल पड़ा। कोई खास जगह न होने के कारण, वह स्टेशन के बार में गया और एक बियर मंगवाई। अगली ही पल, एक वेटर ने उसे जगाया। वह मेज पर बैठे-बैठे सो गया था। हालाँकि, किसी ने उस पर ध्यान नहीं दिया, इसलिए उसने एक और बियर मंगवाई, उसे गटक लिया और चला गया। विंग्स ने समय बिताने के लिए एक सिनेमाघर खोजने की कोशिश की, लेकिन उसे सफलता नहीं मिली, इसलिए उसने एक बम से तबाह घर के तहखाने में रात बिताने का फैसला किया। वहाँ बहुत ठंड होने के कारण, वह दूसरे बार में चला गया, लेकिन हवाई हमले के सायरन बजते ही उतनी ही जल्दी से वापस आ गया। डे नागरिकों से भरे आश्रय में रात बिताने को लेकर आशंकित था, लेकिन क्षतिग्रस्त घरों की कमी के कारण उसके पास कोई और विकल्प नहीं था। वह लोगों की एक कतार के पीछे-पीछे पास के आश्रय में गया और दो परिवारों के बीच फर्श पर अपना कोट बिछा दिया। जैसे ही खतरे की घंटी बजी, पुलिस कागजी जांच के लिए पहुंची, लेकिन विंग्स उनके पहुंचने से पहले ही वहां से निकल जाने में कामयाब हो गया।

अगला पड़ाव सबवे स्टेशन था, जहाँ डे ने टोबोल्स्की से मिलने जाने से पहले नहाया-धोया और तैयार हुआ। हालाँकि, पोलिश नागरिक तय समय पर नहीं पहुँचा, इसलिए विंग्स पास के एक कैफे में गया, वहाँ उसने एकोर्न कॉफी और कुछ हल्का-फुल्का खाना खाया और अखबार पढ़ा।

दोपहर 2:00 बजे तय समय पर टोबोल्स्की को धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करते देख डे को राहत मिली। उसने अवकाश केंद्र में बड़ी आरामदेह रात बिताई थी, लेकिन उसे पता चला कि पश्चिम जाने वाली सैन्य ट्रेन के लिए आवश्यक कागजी कार्रवाई करवाना बहुत जोखिम भरा था।

हालांकि, उसने अपनी जाली वेतन पुस्तिका पर कुछ असली मुहरें लगवा ली थीं। थोड़ी बातचीत के बाद, उन्होंने स्टैटिन जाने का फैसला किया, जहाँ तीन विकल्प थे: रोजर द्वारा दिया गया पता; शहर में काम कर रहे फ्रांसीसी युद्धबंदी; और टोबोल्स्की की बहन, जिनसे उसने लुफ्ट III में रहते हुए पत्राचार किया था।

रेलवे स्टेशन पर वे अलग-अलग नागरिक और सैन्य फाटकों से होकर गुजरे। वहाँ एक कागज़ी चेक था, लेकिन दोनों बिना किसी कठिनाई के अंदर चले गए। गंतव्य पर पहुँचकर, पावेल ने अपनी वेतन पुस्तिका पर एक और असली मुहर लगवाई और फिर डे को एक कैफे में छोड़कर अपनी बहन से मिलने चला गया। जब डे ने पावेल को देखा, तो बेचारी महिला बहुत डर गई। क्योंकि उसकी शादी एक जर्मन से हुई थी, उसने उससे कहीं और कोशिश करने की विनती की। आख़िरी उपाय के तौर पर, उसने उन्हें अपने औजारों के शेड में छिपने की अनुमति दे दी।

निराश होकर टोब स्टेशन लौट आया और विंग्स को बुरी खबर सुनाई। इसके बाद उन्होंने वेश्यालय जाने की कोशिश की, लेकिन वहाँ कोई स्वीडिश व्यक्ति नहीं मिला। कोई और विकल्प न होने पर वे टोब की बहन के घर लौट आए और रात वहीं बिताई। वहाँ उन्होंने देखा कि बहन ने उनके लिए दूध, अंडे और रोटी छोड़ रखी थी। अगली सुबह दोनों अलग-अलग झोपड़ी से निकले और मुख्य पुल पर मिले, जहाँ उन्हें नाविक नीली से मिलना था। जब वह नहीं आया, तो उन्होंने फैसला किया कि दोनों में से अधिक सभ्य दिखने वाला टोबोल्स्की शहर में ही रहकर सुराग जुटाएगा, जबकि डे गोदी क्षेत्र की छानबीन करेगा। उन्हें दोपहर 12:00 बजे या शाम 6:00 बजे फिर से मिलना था।

विंग्स ने देखा कि गोदी का इलाका खेतों और बारह फुट ऊँची बाड़ से घिरा हुआ है, इसलिए उसने एक पेड़ की डाल उठाई और आसपास के इलाके का जायजा लेने लगा। वह अपनी डाल को नालियों में घुसाता और जब भी कोई पास से गुजरता तो व्यस्त दिखने की कोशिश करता। तभी उसने देखा कि कुछ फ्रांसीसी युद्धबंदी बिना सुरक्षा के सड़क पर आ रहे हैं। जब वे गुजर गए, तो उसने अपनी डाल नीचे रख दी और उनके साथ चल पड़ा। जैसे ही वे शहर की ओर बढ़े, विंग्स ने सब कुछ दांव पर लगाने का फैसला किया।

उन्होंने फ्रेंच में कहा, 'मैं एक अंग्रेज अधिकारी हूं और युद्धबंदी हूं। क्या आप मुझे भागने में मदद कर सकते हैं?'

जिन फ्रांसीसियों से उन्होंने बात की, उन्होंने उत्साहपूर्वक प्रतिक्रिया दी। वे निश्चित रूप से उनकी मदद करेंगे, लेकिन यह आसान नहीं था। छिपकर यात्रा करना कठिन था और सही अवसर मिलने तक छिपने के लिए जगह की आवश्यकता होती थी। हालांकि, अगर अंग्रेज और उसका दोस्त उस शाम नौ बजे पुल पर उनसे मिलने की कृपा करें, तो वे देखेंगे कि क्या किया जा सकता है।

कैफे में भटकते हुए टोबोल्स्की को कोई स्वीडिश नागरिक नहीं मिला, इसलिए दोनों ने फ्रांसीसियों के साथ जाने का फैसला किया। वे पुल पर इंतज़ार कर रहे थे, लेकिन जब बेचारे मज़दूरों ने टोबोल्स्की की लूफ़्टवाफ़े वर्दी देखी, तो वे भाग गए। बड़ी मुश्किल से विंग्स उन्हें पकड़ने में कामयाब हुआ और उन्हें यकीन दिलाया कि टोबोल्स्की उसका दोस्त है। दोनों को फ्रांसीसी बैरकों में ले जाया गया, जहाँ जर्मनों ने कभी कोई दखल नहीं दिया था, और टोबोल्स्की की वर्दी के बावजूद उनका गर्मजोशी से स्वागत किया गया। विंग्स और पावेल ने अपना बचा हुआ खाना और रेड क्रॉस की चॉकलेट बाँटी और अपने नए साथियों से दोस्ती कर ली। वे अपनी सफलता को लेकर नए आत्मविश्वास के साथ सो गए।

अगले दिन सुबह, 29 तारीख को, उनका वह भरोसा बुरी तरह चकनाचूर हो गया। जूतों की धमक और कर्कश आवाजों ने उन्हें जगाया, और कुछ ही मिनटों में छह वर्दीधारी पुलिसकर्मियों और दो सादे कपड़ों वाले पुलिसकर्मियों ने उन्हें बैरक से बाहर खींच लिया। टोब और विंग्स को स्थानीय पुलिस मुख्यालय ले जाया गया, जहाँ डे ने एक लंबा और पूरी तरह से झूठा बयान दिया और एक पुलिसकर्मी से दोस्ताना बातचीत की, जिसने विंग्स के साथ ही शंघाई में सेवा की थी।

इस अधिकारी ने यह भी खुलासा किया कि उन दोनों को एक फ्रांसीसी व्यक्ति ने धोखा दिया था।

'चिंता मत करो,' विंग्स की उस आदमी का गला घोंटने की अनुमति देने की गुहार को अनसुना करते हुए पुलिसकर्मी ने शांत भाव से कहा। 'ये लोग जल्द ही किसी काम के नहीं रह जाते। जब यह मर जाएगा, तो हम इसके साथियों को सूचित कर देंगे, जैसा कि हमने पहले भी किया है। आमतौर पर हमें शव बंदरगाह में तैरते हुए मिलते हैं।'

अधिकारी ने उन्हें जाने दिया और उन्हें दूसरे दफ्तर में ले जाया गया, जहाँ एक लाल चेहरे वाले नागरिक ने उनके जाली कागजातों की जाँच की। जब वह टोबोल्स्की के पास पहुँचा और असली मुहरें देखीं, तो वह भड़क उठा और पोलिश नागरिक से लगभग बेतुके सवाल पूछने लगा। टोबोल्स्की ने बस खाली नज़र से देखा और कुछ नहीं कहा। जर्मन नागरिक अपना गुस्सा डे पर निकालने ही वाला था कि विंग कमांडर ने उसे रोक दिया।

'चिल्लाना बंद करो!' वह गरजते हुए बोला। 'मैं एक अधिकारी और कर्नल हूँ जिसने पच्चीस वर्षों से अधिक समय तक अपने राजा की सेवा की है। मुझसे बात करते समय शालीनता बरतो!'

जर्मन व्यक्ति अचंभित होकर उसे बस घूरता रहा। शायद किसी कैदी ने उससे इस तरह बात नहीं की थी। वह बैठ गया, अपनी मेज पर लगे बजर को दबाया और जब उन दोनों को कमरे से बाहर ले जाया गया तो उसने कुछ नहीं कहा।

अगले चार दिन उन्होंने एक छोटी सी कोठरी में बिताए, जहाँ बिस्तर दिन भर दीवार से जंजीरों से बंधे रहने के कारण वे लेट भी नहीं सकते थे। फिर, पाँचवें दिन, चार पुलिस अधिकारियों की सुरक्षा में उन्हें ट्रेन से बर्लिन ले जाया गया। बर्लिन रेलवे स्टेशन के बाहर, भागने वालों ने दो डिब्बे इंतज़ार करते देखे। डे को एक डिब्बे की ओर और टोबोल्स्की को दूसरे डिब्बे की ओर इशारा किया गया। विंग्स ने तुरंत विरोध किया। वह जानता था कि जर्मन वर्दी में दोबारा पकड़े जाने के कारण पोलिश नागरिक और भी अधिक खतरे में था।

डे ने कहा, 'यह व्यक्ति रॉयल एयर फोर्स का अधिकारी है। मैं उसका वरिष्ठ अधिकारी हूं - उसे मेरे साथ ही रहना होगा।'

'माफ़ कीजिए, कर्नल साहब,' एक अधिकारी ने कहा, 'लेकिन आपको आगे की पूछताछ के लिए बुलाया जा रहा है। आपका साथी शिविर वापस जा रहा है। अब और कोई सवाल नहीं पूछे जाएँगे,' विंग्स के दोबारा बोलने पर उसने जल्दी से कहा। अपनी बेबसी को भांपते हुए डे ने टोबोल्स्की की ओर रुख किया, जिसने तेज़ी से सलाम किया। दोनों ने हाथ मिलाया और कुछ बातें कीं, फिर विंग्स ने टोबोल्स्की को गाड़ी में जाते देखा। उसने देखा कि पोलिश अधिकारी के चेहरे पर अब भी वही शांत और भावहीन भाव था। डे को दूसरी गाड़ी में बिठाकर अल्ब्रेक्टस्ट्रासे ले जाया गया, जो कुख्यात गेस्टापो मुख्यालय था।

वहाँ उसकी मुलाकात आर्थर नेबे से हुई, जो सागन के भागे हुए कैदियों को दोबारा पकड़ने के लिए ज़िम्मेदार था। वह लंबा और दुबला-पतला था, उसकी आँखें काली और नाक पतली थी; उसका चेहरा बिल्कुल भावहीन था। उसने नीरस स्वर में बोलना शुरू किया और डे को बताया कि उसके अपहरणकर्ताओं द्वारा दिखाई गई दया और आतिथ्य के बावजूद, भागने में वह कितना झंझट बन गया था। उसने गंभीर स्वर में कहा, 'ज़ाहिर है, लूफ़्टवाफ़े तुम्हें रोक नहीं सकता, इसलिए अब तुम्हें ऐसी जगह ले जाया जाएगा जहाँ से कोई बच नहीं सकता। बस इतना ही।'

विंग्स ने विरोध करते हुए कहा कि एक ब्रिटिश अधिकारी होने के नाते भाग निकलना उसका कर्तव्य था, लेकिन नेबे को इसमें कोई दिलचस्पी नहीं थी। उसने भावहीन होकर कहा, 'यह मामला अब समाप्त हो चुका है। इसे ले जाओ।'

दो चमड़े के कोट पहने गुंडे डे को बाहर ले गए और एक भूरे रंग की कार में बिठा दिया। जैसे ही वे शहर से निकले और चीड़ के पेड़ों के झुरमुटों से घिरे खुले खेतों से होते हुए उत्तर की ओर बढ़े, विंग्स डे सोचने लगे कि क्या यह उनकी आखिरी यात्रा होगी।

*

गोरलिट्ज़ में पूछताछ का माहौल जानबूझकर भय पैदा करने के उद्देश्य से बनाया गया था। शॉर्टी आर्मस्ट्रांग ने जब किसी भी सवाल का जवाब देने से इनकार कर दिया, तो उसे साफ-साफ बता दिया गया कि उसका सिर काट दिया जाएगा और किसी को कुछ पता भी नहीं चलेगा। सिरिल स्वेन को भी यही कहा गया कि उसे बिना किसी सुराग के ठिकाने लगाया जा सकता है। उसके पूछताछकर्ता ने बताया कि उन्हें हमेशा रात में ही एक जगह से दूसरी जगह ले जाया जाता था, इसलिए किसी को पता नहीं चलता था कि वे कहाँ हैं। अगर कोई अप्रिय घटना होती, तो पुलिस बस यह दावा कर देती कि उसे दोबारा पकड़ा नहीं गया है।

टॉमी थॉम्पसन ने यह बताने से इनकार कर दिया कि भागने की योजना किसने बनाई थी, जिस पर उसके पूछताछकर्ता ने उसे कड़ी फटकार लगाई। उसने एक दुभाषिए के माध्यम से कहा, 'मैं आपको चेतावनी देना चाहता हूं कि आप सैन्य अधिकारियों के हाथों में नहीं हैं, बल्कि उस सुरक्षा बल के हाथों में हैं जिसे आप इंग्लैंड में गुप्त सेवा कहते हैं। उस सुरक्षा के बिना आपके साथ कुछ भी हो सकता है - आप शायद कभी शिविर में वापस न जा पाएं।'

'मुझे परवाह नहीं कि तुम कौन हो,' टॉमी ने पलटवार करते हुए कहा, 'मैं अब भी जिनेवा कन्वेंशन द्वारा संरक्षित हूं।' जर्मन की एकमात्र प्रतिक्रिया हंसी थी।

'खैर, मुझे नहीं लगता कि अगर मुझे कुछ हो गया तो गोरिंग बहुत खुश होंगे,' कनाडाई ने आगे कहा। 'हम एक बार मिले थे, आपको पता है, 1939 में।'

अधिकारी प्रभावित नहीं हुआ। 'जो भी हो, आप नागरिक वस्त्रों में हैं – आप शायद एक जासूस हैं। आप मुझे अपना शिविर पहचान पत्र दिखाएँ, लेकिन मुझे कैसे पता चलेगा कि आपके वरिष्ठ अधिकारियों ने इसे आपको लंदन में जारी नहीं किया था?'

थॉम्पसन ने कहा, 'शिविर में वॉन लिंडेनर को फोन करो - वह तुम्हें बता सकते हैं कि मैं कौन हूं।'

'मेरे पास इन सब बातों के लिए समय नहीं है। नहीं, हम आपके कपड़ों की जाँच करेंगे।' उसने एक घंटी दबाई और एक युवती अंदर आई। उसने टॉमी के कपड़ों को टटोला, सिलाई जाँची और कपड़े को महसूस किया। कुछ मिनट बाद, दुभाषिया ने फिर बात की।

'यह निर्धारित किया गया है कि आपने सैन्य वर्दी पहनी हुई है। आप भाग्यशाली हैं – आपको कोई दंड नहीं दिया जाएगा।' इतना कहकर टॉमी को वापस कोठरियों में ले जाया गया।

कीथ ओगिलवी का भी कुछ ऐसा ही अनुभव रहा। पूछताछ के अंत में, अधिकारी ने एक टाइपिस्ट से बात की और कहा, 'आप भाग्यशाली हैं।'

– तुम सैनिक की वर्दी में भाग निकले हो; इसलिए तुम्हारी सुनवाई सैन्य अदालत में होगी। बाकी लोग इतने भाग्यशाली नहीं होंगे।' जॉन एफ. विलियम्स को यह भी बताया गया कि उन्हें शिविर में वापस जाना होगा क्योंकि उनकी आरएएफ वर्दी पर रैंक की पट्टियाँ थीं। उन्हें बताया गया कि तीन अन्य लोग भी उनके साथ लौटेंगे। वास्तव में, पैंतीस लोगों में से केवल दो ने ही नागरिक वस्त्र जैसे कपड़े पहने थे। परिणामस्वरूप, जॉनी मार्शल और वैली वैलेंता से विशेष रूप से कठिन पूछताछ की गई।

जब भागने वाले लोग अपनी पूछताछ के बारे में बात कर रहे थे, तो उन्हें पता चला कि उनमें से कई लोगों से चेकोस्लोवाकिया के बारे में पूछा गया था: वे सभी प्राग क्यों जा रहे थे, वहाँ उन्हें किससे मिलना था, और अन्य खतरनाक सवाल। हालाँकि गोरलिट्ज़ समूह के कई लोगों के पास चेक सीमा क्षेत्र के नक्शे थे, लेकिन उन्हें यह नहीं पता था कि विली विलियम्स के समूह को सीमा के पास ही पकड़ लिया गया था। उन्हें यह भी नहीं पता था कि अन्य भागने वाले लोग हाल ही में चेकोस्लोवाकिया से होकर गुजरे थे।

*

सुरंग से बाहर निकलने वाले क्रमशः जॉनी स्टोवर और इवो टोंडर थे, जो जॉनी के चेकोस्लोवाकिया होते हुए स्विट्जरलैंड जाने के मार्ग का अनुसरण करने की उम्मीद कर रहे थे। उनके दस्तावेज़ों में उन्हें फोक-वुल्फ विमान कारखाने में इंजीनियर के रूप में दर्शाया गया था, और दोनों जाहिर तौर पर म्लाडा बोलेस्लाव में एक अवकाश शिविर में जा रहे थे। देश में प्रवेश करने के बाद जॉनी और इवो उसी सराय में जाएंगे जहाँ स्टोवर की पहले मदद की गई थी।

वे आधी रात से ठीक पहले सुरंग से निकले और उन्हें सीधे सागन स्टेशन तक पैदल चलकर अपनी यात्रा शुरू करनी थी, लेकिन देरी के कारण, उन्होंने स्टेशन पर भीड़ से बचने का फैसला किया और पैदल ही निकल पड़े। उन्होंने अपना पहला दिन हाल्बाउ के पास छिपकर बिताया और दूसरा दिन कोहलफर्ट के ठीक दक्षिण में एक जंगल में शरण ली, लेकिन 27 मार्च की सुबह दुर्भाग्य से स्टोलज़ेनबर्ग के पास एक युवती ने उन्हें देख लिया। उसने तुरंत स्थानीय अधिकारियों को सूचित किया, लेकिन जॉनी और इवो उन्हें खोजने के लिए भेजे गए तीन नागरिकों से आसानी से बच निकले। उन्होंने रोथवासर के पास खोज के समाप्त होने का इंतजार किया और फिर कोहलफर्ट लौटकर गोरलिट्ज़ के लिए ट्रेन पकड़ ली।

वहाँ पहुँचकर, इवो चेकोस्लोवाकिया के भीतर स्थित राइचेनबर्ग के लिए टिकट खरीदने के लिए बुकिंग हॉल में गया, लेकिन काउंटर से बाहर निकलते ही उसे यह देखकर निराशा हुई कि क्लर्क ने उसे किसी और जगह के टिकट दे दिए थे। स्थिति और भी बिगड़ गई क्योंकि एक युवा एसएस अधिकारी इवो के पीछे लाइन में खड़ा था और अब उन दोनों को कुछ संदेह की नज़र से देख रहा था।

संपर्क से बचने के बजाय, टोंडर ने पहल करने का फैसला किया और अधिकारी के पास जाकर अपने कागजात आगे बढ़ाते हुए जानबूझकर टूटी-फूटी जर्मन में बात की। उसने अपनी परेशानी बताई, यह जताते हुए कि क्लर्क ने उसे गलत समझा होगा, और विनम्रता से अधिकारी से मदद मांगी। अपनी बात पर ज़ोर देने के लिए, उसने जॉनी की पीठ थपथपाई और उसे आगे धकेलते हुए बुदबुदाया, 'मेरे स्पेनिश दोस्त की चेकोस्लोवाकिया की पहली यात्रा'। सौभाग्य से, जॉनी देखने में बिल्कुल वैसा ही लग रहा था, और उस युवा एसएस अधिकारी ने टिकट लेने से पहले उसे सम्मानपूर्वक प्रणाम किया और धक्का-मुक्की करते हुए लाइन में आगे बढ़ गया। खिड़की के पीछे बैठी बेचारी महिला को नासमझ नौकरशाहों द्वारा मूल्यवान विदेशी कामगारों को परेशान करने के बारे में खरी-खोटी सुननी पड़ी और कुछ बार पैर पटकने और मुट्ठी पटकने के बाद, अधिकारी जॉनी और इवो के पास लौटा और उन्हें सही टिकट दिए। एक और सम्मानपूर्वक प्रणाम करते हुए, उसने उन्हें सुखद यात्रा की शुभकामनाएं दीं और प्लेटफार्मों की ओर चल पड़ा।

अपनी किस्मत पर मुश्किल से यकीन करते हुए, टोंडर और स्टोवर झटपट हॉल से निकले और ट्रेन में चढ़ गए। ज़िट्राऊ के ठीक बाद जब क्रिपो के कुछ अधिकारी नियमित कागजी जाँच के लिए उनके डिब्बे में दाखिल हुए, तो उन्होंने खुशी-खुशी अपनी पहचान पत्र सौंप दिए। दस्तावेज़ बिना किसी खास दिलचस्पी के लौटा दिए गए, लेकिन जब पुलिसकर्मी जा रहे थे, तो उनमें से एक ने पीछे मुड़कर जॉनी की पैंट को ध्यान से देखा, जो ऑस्ट्रेलियाई वायु सेना के नीले रंग की थी। विली विलियम्स को पहले भी इसी रंग की पैंट पहने देख चुके पुलिसकर्मियों को शक हुआ और उन्होंने दोनों भगोड़ों की पूरी तलाशी शुरू कर दी। इस बार तो इवो टोंडर भी अपने कपड़ों में अस्तर न होने या ब्रीफकेस में अंग्रेजी चॉकलेट और सिगरेट न मिलने का कारण नहीं बता सका। सिर्फ तीन दिन भागने के बाद ही उनका खेल खत्म हो गया।

इवो और जॉनी को राइशेनबर्ग की नागरिक जेल में ले जाया गया, जहाँ उनकी मुलाकात जॉनी बुल, जेरज़ी मोंडशाइन, विली विलियम्स और रस्टी कीरथ से हुई, जिन्हें पिछले दिन गिरफ्तार किया गया था। दोनों समूहों को अलग-अलग कोठरियों में रखा गया था, लेकिन वे थोड़ी देर बातचीत कर पाए और चारों ने बताया कि उनसे काफी कठोर पूछताछ की गई थी। उनमें से कम से कम एक, विली विलियम्स को बताया गया था कि उसे गोली मार दी जाएगी। हालाँकि, उनके पास बातचीत के लिए ज़्यादा समय नहीं था, क्योंकि 29 मार्च को सुबह 4:00 बजे, चारों

को राइशेनबर्ग से सागन वापस ले जाया गया।

जेल में अकेले छोड़े जाने पर, स्टोवर और टोंडर को पूछताछ के दौरों के बीच अपनी भागने की योजना पर विचार करने का भरपूर समय मिला, जिनमें से अधिकांश पूछताछ शिविर में मौजूद जर्मनों से मिली किसी भी मदद पर केंद्रित थी। फिर, 31 मार्च को सुबह 8:00 बजे, जॉनी स्टोवर को ले जाया गया। इवो टोंडर ने विरोध जताया, यह सोचकर कि उसे इसलिए पीछे छोड़ा जा रहा है क्योंकि वह एक चेक नागरिक है जबकि स्टोवर शिविर लौट रहा है, लेकिन जेलर ने उनकी बात अनसुनी कर दी।

*

चेकोस्लोवाकिया में एक और जोड़े को भी विपत्ति का सामना करना पड़ा। सागन स्टेशन पर शिविर के सेंसर द्वारा पकड़े जाने से बाल-बाल बचने के बाद, टॉम किर्बी-ग्रीन और गॉर्डन किडर सुरक्षित रूप से ब्रेस्लाउ पहुँच गए, जहाँ से उन्होंने चेकोस्लोवाकिया के लिए ट्रेन पकड़ी। उन्हें उम्मीद थी कि वे समय रहते युगोस्लाविया पहुँच जाएँगे। उन्होंने बिना किसी कठिनाई के सीमा पार कर ली, लेकिन 28 मार्च को दक्षिणी मोराविया के होडोनिन में, ऑस्ट्रियाई सीमा के पास, उन्हें फिर से पकड़ लिया गया। ज़्लिन जेल ले जाए जाने पर, वे पूछताछ के दौरान दुर्व्यवहार का शिकार होने वाले एकमात्र कैदी थे। इस बात के सबूत हैं कि उनकी हथकड़ियाँ बिना खोले ही तोड़ दी गईं, और ऐसा लगता है कि उनके साथ अन्य अत्याचार भी किए गए होंगे।

अध्याय **18**

देवताओं की सांझ

गोरलिट्ज़ में, पूछताछ लगभग समाप्त हो चुकी थी, और भागने वाले अधिकांश लोग किसी भी दिन वहाँ से हटाए जाने की उम्मीद कर रहे थे। कीथ ओगिलवी ने अपने पूछताछकर्ता की मेज पर लगभग बीस नामों की एक सूची देखी और अनुमान लगाया कि ये लोग शिविर में वापस भेजे जाने वाले पहले समूह में शामिल होंगे। दुर्भाग्य से, वह सभी नाम पढ़ने के लिए मेज के पर्याप्त करीब नहीं पहुँच सका।

फिर, 30 मार्च की सुबह तड़के, यह सब शुरू हुआ। कार के दरवाज़े ज़ोर से बंद होने की आवाज़ से टोनी बेथेल चौंककर जाग उठा और खिड़की से बाहर झाँककर उसने तीन बड़ी गाड़ियों और आठ-दस सादे कपड़ों में गेस्टापो गुंडों को देखा। गलियारे में, जॉनी मार्शल, कीथ ओगिल्वी, पॉल रॉयल और एलिस्टर मैकडॉनल्ड ने ज़ोर-ज़ोर से कदमों की आहट और कर्कश आवाज़ें सुनीं, और कीथ ने तुरंत दरवाज़े पर ज़ोर से दस्तक दी और हॉल के अंत में बने शौचालय के बाल्टी तक ले जाने की मांग की। इंतज़ार करते हुए, उसने छह नाम पुकारे जाने की आवाज़ सुनी और फिर कोठरियों के दरवाज़े खुलने की आवाज़ आई।

आखिरकार, गार्ड आया और कीथ को शौचालय क्षेत्र में ले गया। उसने तुरंत देखा कि छह लोगों को भारी हथियारों से लैस गार्ड हथकड़ी पहनाकर ले जा रहे हैं। सबसे आगे माइक केसी, इयान क्रॉस, टॉम ली और जॉर्ज वाइली थे, जबकि अल हाके और जॉनी पोहे कुछ कदम पीछे चल रहे थे, ठंड से जमे पैरों के कारण उनकी चाल धीमी हो गई थी। जल्दी से उनके पास पहुँचकर, कीथ ने अल से कुछ फुसफुसाकर पूछा कि वे कहाँ जा रहे हैं।

जवाब मिला, 'कोई जानकारी नहीं। मुझे लगता है कि अभी पूछताछ का एक और दौर बाकी है।'

एक गार्ड की चीख से बातचीत रुक गई और सभी को जल्दी से जेल से बाहर निकाल दिया गया। खिड़कियों से देख रहे अन्य कैदियों ने देखा कि छह लोग आंगन में आए और एक ढकी हुई गाड़ी में बैठ गए। टोनी बेथेल ने एक गार्ड से पूछा कि वे कहाँ जा रहे हैं, लेकिन गार्ड को पता नहीं था। किसी ने सोचा कि पोहे और हाके को उनके पैरों के इलाज के लिए ले जाया जा रहा है। तरह-तरह के कयास लगाए गए, लेकिन कोई भी निश्चित रूप से नहीं कह सका।

चौबीस घंटे बाद, वही घटना फिर से दोहराई गई। गाड़ियों के रुकने की आवाज़ सुनाई दी और फिर गलियारे में कर्कश आवाज़ें गूंज उठीं। इस बार कीथ ओगिल्वी दरवाजे की छोटी सी खिड़की तक पहुँचकर बाहर झाँका, और ठीक उसी समय उसने एक और समूह को ले जाते हुए देखा। उसने हंक हम्फ्रीज़, डची स्वेन, चाज़ हॉल, ब्रायन इवांस और वैली वैलेंता को देखा; उनके पीछे जॉर्ज मैकगिल थे, जो एक लंबे, मुक्केबाज जैसे दिखने वाले नागरिक के साथ हथकड़ी से बंधे हुए थे, पैट लैंगफोर्ड, एडम कोलनोव्स्की, बॉब स्टीवर्ट और हैंक बर्कलैंड भी थे।

फिर, बचे हुए कैदी खिड़कियों की ओर दौड़े और उन्होंने देखा कि समूह को एक ढके हुए ट्रक में ठूंसकर ले जाया जा रहा है। किसी ने चिल्लाकर कहा, 'तुम बड़े भाग्यशाली हो, अब तुम्हें वापस सागन जाना होगा!' लेकिन यह उत्साह भरी पुकार बनावटी और घबराहट भरी लग रही थी। जल्द ही उत्साह शांत हो गया और बचे हुए भागने वालों की आशंका बढ़ती गई।

*

जर्मनी के दूसरे छोर पर, ट्रेन से यात्रा कर रहे एक और व्यक्ति ने हाल ही में अपनी आज़ादी खो दी थी। डेनिस कॉचरन फ्रीबर्ग जाना चाहता था और उसने बेसल में राइन नदी के रास्ते स्विट्जरलैंड में प्रवेश करने की योजना बनाई थी। वह बिना किसी कठिनाई के ब्रेस्लाउ पहुँच गया और 26 मार्च को फ्रैंकफर्ट-एम-मेन में फ्रांसीसी श्रमिकों के एक समूह के साथ एक अन्य भगोड़े ने उसे देख लिया। भागने के ठीक एक दिन बाद, उसने अपनी 550 मील की यात्रा का दो-तिहाई से अधिक हिस्सा तय कर लिया था। दुर्भाग्य से, अंतिम भाग हमेशा सबसे कठिन होता है, और डेनिस को 30 मार्च को लोरैक के ठीक दक्षिण में, स्विस सीमा से पाँच मील की दूरी पर पकड़ लिया गया। उसे कार्लज़ूहे के पास एट्लिंगेन में क्रिपो जेल ले जाया गया और पूरी रात उससे पूछताछ की गई। अगली सुबह हरे रंग की मर्सिडीज में तीन सादे कपड़ों वाले पुलिसकर्मी डेनिस को लेने आए। उन्होंने कहा कि उसे सागन लौटने से पहले एक ट्रांजिट कैंप ले जाया जा रहा है।

डेनिस कॉचरन को देखने वाला व्यक्ति फ्रांसीसी नागरिक रेमंड वैन वाइमर्स था, जो सागन स्टेशन से गलत ट्रेन में चढ़ गया था। हालांकि, इस खराब शुरुआत ने उसे रोका नहीं और ब्रेस्लाउ वापस आकर, रेमंड ने साहसपूर्वक पेरिस के लिए सीधी टिकट खरीद ली। उसने ड्रेसडेन, लीपज़िग और फ्रैंकफर्ट होते हुए यात्रा की, जहां उसकी मुलाकात कॉचरन से हुई लेकिन उसने उससे बात नहीं की, और फिर मेंज में जिला नियंत्रण जांच से गुजरते हुए 26 मार्च को मेट्ज़ पहुंचा। विडंबना यह है कि फ्रांस में प्रवेश करते ही रेमंड की मुसीबतें शुरू हो गईं। बुशेल और शेइडहाउर को सारब्रुकन में अभी-अभी फिर से पकड़ा गया था, और पूरे सीमावर्ती क्षेत्र में पुलिस सतर्क थी। दरअसल, वैन वाइमर्स को उसी तकनीकी खामी के कारण पकड़ा गया था जिसके कारण अन्य दोनों को अपनी आजादी गंवानी पड़ी थी: तीनों दस्तावेजों में एक ही श्रृंखला के स्टाम्प गायब थे।

मेट्ज़ की जेल में ले जाए जाने पर रेमंड के साथ बेहद बुरा बर्ताव किया गया। उसे चार दिनों तक एक छोटी सी कोठरी में हथकड़ी लगाकर बिना खाना-पानी के रखा गया, हालांकि कभी-कभी कोई गेस्टापो गुंडा आकर उसकी पसलियों पर लात मारता या उसे गोली मारने की धमकी देता था, जिससे उसकी नीरसता दूर हो जाती थी। दूसरे दिन, एक चालाक पुलिस अधिकारी आया और उसे एक तैयार बयान पर हस्ताक्षर करने का आदेश दिया। जब रेमंड ने इनकार कर दिया, तो उसे बताया गया कि उसकी माँ को गिरफ्तार कर लिया जाएगा और उसके पिता, जो पहले से ही एक यातना शिविर में थे, को मार दिया जाएगा। आखिरकार, 30 मार्च को, उसे बर्लिन की अलेक्जेंडरप्लात्ज़ जेल ले जाया गया। रास्ते में, उसके साथ चल रहे गेस्टापो इंस्पेक्टर ने शेखी बघारी कि उसने सारब्रुकन में बुशेल और शाइडहाउर को गिरफ्तार किया था। रेमंड ने बस खाली नज़र से देखा और कहा कि वह नहीं जानता कि गेस्टापो वाला किसके बारे में बात कर रहा है।

*

1 अप्रैल को गोरलिट्ज़ से लोगों का पलायन जारी रहा। उस रात, कीथ ओगिल्वी, टॉमी थॉम्पसन, एलिसटेयर मैकडॉनल्ड और पॉल रॉयल को एक ही कोठरी में बंद कर दिया गया। जब उन्होंने पूछा कि ऐसा क्यों किया जा रहा है, तो एक गार्ड ने बताया कि उन्हें वापस शिविर भेजा जा रहा है। उसने कहा, 'आप भाग्यशाली हैं, क्योंकि आपको सैनिक के रूप में पहचाना गया है। बाकी सभी नागरिक जांच के लिए वांछित हैं।' चारों को थोड़ी हिम्मत मिली, लेकिन पिछले कुछ दिनों की घटनाओं के बाद भी वे आशंकित थे। उसी रात, एलिसटेयर मैकडॉनल्ड ने जूतों की आहट सुनी और कोठरी के दरवाजे की खिड़की से बाहर झाँका। उसने देखा कि लूफ़्टवाफ़े के चार गार्ड गलियारे में आए और ठीक उनके सामने वाली कोठरी में बैठ गए। यह अपने आप में ही काफी उत्साहजनक था, लेकिन उससे भी बेहतर बात यह थी कि मैकडॉनल्ड ने उनमें से दो लोगों को शिविर के गार्ड के रूप में पहचान लिया।

इस खबर से चारों को लगा कि उनकी किस्मत बदल रही है। अगली सुबह तड़के, कीथ, टॉमी, पॉल और एलिसटेयर को सुरक्षा घेरे में जेल से बाहर निकाला गया। उनके साथ आए लूफ़्टवाफ़े गार्डों के दल ने रात उसी कोठरी में बिताई थी। उन्हें रेलवे स्टेशन तक ले जाया गया और वहाँ से रेलगाड़ी द्वारा गोरलिट्ज़ से बाहर ले जाया गया।

*

भागने की घटना को एक सप्ताह से अधिक समय बीत चुका था, लेकिन कुछ पायलटों के लिए यह रोमांच अभी खत्म नहीं हुआ था। टोनी हेयटर एक डेनिश व्यवसायी के रूप में यात्रा कर रहे थे और डेनिस कॉचरन की तरह ही स्विस सीमा की ओर जा रहे थे। ब्रेस्लाउ से निकलने के बाद वे पश्चिम की ओर बढ़े और अंततः मुलहाउस पहुंचे, जो फ्रांसीसी सीमा के ठीक अंदर और बेसल के पास स्थित था। उन्होंने वहां कुछ दिन सीमा पर हमले की योजना बनाने में बिताए और 4 अप्रैल को दक्षिण की ओर बढ़ना शुरू किया।

हालांकि, ग्रॉसफाहंडुंग (विदेशी डाक टिकट नियंत्रण) अभी भी लागू था, और जब हेयटर को मुलहाउस और अल्टकिर्च के बीच सड़क पर तीन होम गार्ड्समैन ने रोका, तो उन्हें बताया गया कि सभी विदेशियों को ज़िल्लेशाइम स्थित सीमा पुलिस चौकी ले जाया जा रहा है। वहां इंस्पेक्टर ने देखा कि टोनी के कागजात पर, लीपज़िग के जारीकर्ता कार्यालय का नाम एक जगह गलत तरीके से लीप्सिच लिखा गया था। आगे की जांच से पता चला कि आधिकारिक डाक टिकटों के रंगों में बहुत अधिक भिन्नता थी। टोनी के पास अपनी पहचान स्वीकार करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। उन्हें मुलहाउस के पुलिस स्टेशन ले जाया गया, और फिर स्ट्रासबर्ग में जिला क्रिपो कार्यालय में स्थानांतरित कर दिया गया। वहां से, दो पुलिसकर्मियों ने उन्हें जबरदस्ती एक कार में बिठाया और सागन की ओर पूर्व दिशा में रवाना हो गए।

*

टोनी हेयटर की दोबारा गिरफ्तारी के अगले दिन, गोरलिट्ज़ से एक और समूह को ले जाया गया। 6 अप्रैल की सुबह, टोनी बेथेल ने एक ट्रक के रुकने की आवाज़ सुनी और अपनी कोठरी के दरवाजे के छेद से झाँका तो उसे लूफ़्टवाफ़े का एक सार्जेंट और दो गार्ड दिखाई दिए। सार्जेंट ने अपनी जेब से एक कागज़ निकाला और छह नाम पुकारे: डेनिस स्ट्रीट, नेविल मैकगार, जैक ग्रिसमैन, सैंडी गन, हेरोल्ड मिलफ़ोर्ड और जॉन एफ. विलियम्स। मिक शैंड, जो डेनिस स्ट्रीट और कुछ अन्य लोगों के साथ अपनी कोठरी में यह सब सुन रहा था, उसे एक विचार आया।

'वह लूफ़्टवाफ़े वाला बंदा,' उसने अपने साथी कैदियों से फुसफुसाते हुए कहा, 'ज़रूर वे लोग कैंप वापस जा रहे होंगे। अगर मैं उस समूह में शामिल हो जाऊं, तो शायद रास्ते में ट्रक से उतरने का मौका मिल जाए। वैसे भी, खोने को कुछ नहीं है। कैसा रहेगा डेनिस? क्या तुम एक और खेप का इंतज़ार करोगे ताकि मैं कोशिश कर सकूं?'

डेनिस ने मुस्कुराते हुए कहा, 'माफ़ करना, मिक। मैं शिविर में वापस जाकर आराम करना चाहता हूँ।'

'कोई बात नहीं, दोस्त – पूछने में कोई हर्ज नहीं है,' डेनिस को कोठरी से बुलाए जाने पर शैन्ड ने कहा। 'शिविर में मिलते हैं!' हाथ हिलाकर डेनिस स्ट्रीट गलियारे में बाकी समूह के साथ शामिल होने के लिए चला गया।

*

चौथे समूह के चले जाने के साथ ही गोरलिट्ज़ में माहौल और भी तनावपूर्ण हो गया। वे वहाँ एक सप्ताह से अधिक समय से थे, और कुछ अपने भविष्य को लेकर चिंतित होने लगे थे। कुछ को

लगा कि शायद उनके साथ विशेष व्यवहार किया जा रहा है। वे सभी बस सामान्य शिविर जीवन और अच्छे भोजन की कामना कर रहे थे। पिछली रात, जब गार्ड रात का खाना बाँटने के लिए उनकी कोठरी में आया, तो जॉनी मार्शल ने देखा कि दरवाजे पर चाक से 'S' लिखा हुआ था।

कैदियों में से एक ने कहा, 'बहुत बढ़िया!' 'एस का मतलब सैगन है - यानी हम वापस शिविर में जा रहे हैं!'

'शायद यह 'S' शिएसेन [शूट] के लिए है,' एक अन्य, कम आशावादी व्यक्ति ने सुझाव दिया।

फिर सुबह 9:00 बजे, आखिरी समूह के जाने के कुछ ही घंटों बाद, लूफ़्टवाफ़े के तीन गार्ड गलियारे में दाखिल हुए। वे भी पिछली रात जेल में ही बिता चुके थे और जाने के लिए बेताब थे। बिना किसी औपचारिकता के, उन्होंने मिक शैंड, शॉर्टी आर्मस्ट्रांग, जॉनी मार्शल, डिक चर्चिल, टोनी बेथेल, बॉब नेल्सन, बिल कैमरून और लेस ब्रोडरिक को छाँटा और उन्हें आँगन तक ले गए। उन्हें एक ट्रक के पीछे ठूँसाया गया और जेल से दूर ले जाया गया।

गोरलिट्ज़ जेल में अब केवल दो ही फरार कैदी बचे थे, कुकी लॉन्ग और मैक्स एलिस। पिछले एक सप्ताह से उन्हें गलियारे में दूर-दूर स्थित कोठरियों में स्थानांतरित किया जा रहा था, और अंत में 6 अप्रैल को उन्हें गलियारे के बिल्कुल आखिरी कोठरी में रखा गया। दोनों वहाँ पाँच दिन और रहे, लेकिन 11 अप्रैल को जब कुकी शौचालय का उपयोग कर रही थी, तब एलिस को एक अलग कोठरी में भेज दिया गया।

उसी दोपहर बाद, एलिस ने गलियारे में लॉन्ग को देखा और उससे कंघी उधार लेने की इच्छा जताई। अगले दिन वह कंघी कागज में लिपटी हुई मैक्स की कोठरी में पहुँची। मैक्स ने उसका इस्तेमाल किया और फिर गार्ड से उसे कुकी को लौटाने के लिए कहा और अगले दिन फिर से उधार लेने का अनुरोध किया। तेरह तारीख को जब कंघी नहीं आई, तो मैक्स ने सोचा कि गार्ड कुकी को बताना भूल गया होगा। लेकिन दोपहर में, एलिस की कोठरी का दरवाजा खुला और एक नागरिक ने विनम्रता से पूछा कि क्या वह लॉन्ग है। मैक्स ने मुस्कुराते हुए कहा, 'माफ़ कीजिए,' और वह नागरिक अगली कोठरी में चला गया। एलिस को दोपहर बाद तक कोई खबर नहीं मिली, जब एक ट्रक आँगन में आया। उसे कोई आवाज़ सुनाई नहीं दी, और कुछ ही मिनटों में ट्रक चला गया।

मैक्स इस घटना से हैरान था, लेकिन कोई भी गार्ड उसे कुछ समझा नहीं पाया, इसलिए उसने इसे नज़रअंदाज़ करने और दूसरी बातों के बारे में सोचने की कोशिश की। अगली सुबह उसने फिर गार्ड से कुकी की कंघी उधार मांगी। गार्ड ने बस इतना ही कहा, 'वह कल चला गया।' मैक्स एलिस अचानक बहुत अकेला महसूस करते हुए अपनी कोठरी में लौट आया।

*

6 अप्रैल को, कब्जे वाले यूरोप के रेलवे स्टेशनों और सार्वजनिक भवनों में पुलिस का 'वांटेड' पोस्टर दिखाई दिया। भागने की घटना के बाद जारी किया गया यह तीसरा ऐसा पोस्टर था, लेकिन पिछले सप्ताह हुई गिरफ्तारी के बाद, इस पोस्टर में केवल सात भगोड़ों का विवरण और तस्वीरें शामिल थीं। पहली तस्वीर में सिडनी डाउज़ का मुस्कुराता हुआ चेहरा दिखाई दे रहा था।

शुरू से ही सिडनी डाउज़ के लिए यह पलायन आसान नहीं रहा था। मूल रूप से उनका इरादा बर्लिन जाकर अपने संपर्क हेसे द्वारा व्यवस्थित एक सुरक्षित ठिकाने पर रुकने का था, जिसके बाद वे स्टैटिन के लिए रवाना होने वाले थे। लेकिन सुरंग में अतिरिक्त सामान ढोने के कारण डाउज़ की यात्रा में देरी हो गई। जब वे अंततः बाहर निकले, तब तक हवाई हमला शुरू हो चुका था और स्टेशन पर स्थिति बेहद खराब हो चुकी थी। अपने पुराने दोस्त डैनी क्रोल के साथ मिलकर सिडनी ने अपनी योजना में बदलाव करने का फैसला किया।

सिडनी (डेनमार्क निवासी) और डैनी (स्लाव नागरिक) की जोड़ी पूर्व की ओर पोलैंड तक

पैदल यात्रा करेगी और डैनी के कुछ दोस्तों से मिलेगी। वहां से वे क्रोल के परिवार से संपर्क करेंगे, जो क्राकोव भूमिगत आंदोलन के नेता थे और उनकी यात्रा की व्यवस्था कर सकते थे। उनकी सफलता की अच्छी संभावना थी। डैनी दिशा-निर्देशन में माहिर होने के कारण एक कुशल यात्री था। इसके अलावा, सिडनी के पास हेस्से से प्राप्त तीन सप्ताह के राशन कार्ड थे, जिनसे उन्हें अपनी ऊर्जा बनाए रखने के लिए पर्याप्त भोजन मिल जाएगा। बारह दिनों और बारह रातों तक दोनों ने पूर्व की ओर रेल लाइन का अनुसरण किया। वे एक अजीबोगरीब जोड़ी लग रहे थे, सिडनी ने एक आम नागरिक का सूट (हेस्से से प्राप्त एक और उपहार) और एक सैनिक का गहरे लाल रंग का ओवरकोट पहना था, जबकि डैनी ने बिना रंगे अधिकारी के ट्राउजर, कई पुलओवर और हेनरी लैमंड से उधार लिया हुआ ओवरकोट पहना था।

हालात मुश्किल थे, लेकिन वे लगातार आगे बढ़ते रहे। 6 अप्रैल की शाम ढलते ही सिडनी और डैनी अपने छिपने की जगह से निकलकर फिर से आगे बढ़ने वाले थे। उन्होंने रात केम्पेन से लगभग चार मील पश्चिम में, ब्रेस्लाउ के पास एक खलिहान में बिताई थी और वे पोलिश सीमा के करीब पहुँच रहे थे। तभी वे निकलने ही वाले थे कि खलिहान का मालिक आ गया और उसने उन्हें फावड़े से धमकाया। वे उसे समझाने में कामयाब रहे कि वे पोलिश मजदूर हैं जो छुट्टी मनाने घर जाते समय आराम कर रहे हैं, और किसान ने उन्हें अंधेरा होने तक रुकने की इजाजत दे दी। उसने उन्हें कुछ रोटी और कॉफी का थर्मस भी दिया। इस सफलता से खुश होकर, डॉव्स और क्रोल अपना नाश्ता कर रहे थे कि तभी हिटलर यूथ के एक सदस्य ने खलिहान का दरवाजा तोड़ दिया, होम गार्ड को बुलाया और दोनों को हिरासत में ले लिया। वे पोलिश सीमा और तुलनात्मक सुरक्षा से बस दो मील दूर थे।

सिडनी और डैनी को ओल्स स्थित नागरिक जेल में ले जाया गया और ब्रेस्लाउ गेस्टापो के अधिकारियों ने उनसे मुलाकात की। पूछताछ लंबी और कठिन थी और अंत में सिडनी को बताया गया कि उसे आगे की पूछताछ के लिए बर्लिन जाना होगा। डैनी को आश्वासन दिया गया कि उसे सागन वापस भेज दिया जाएगा। जेल से बाहर ले जाते समय, सिडनी डाउज़ अपने अंगरक्षकों से अलग होकर क्रोल की कोठरी की ओर भागा। उसने फुसफुसाते हुए कहा, 'कोई बात नहीं, डैनी, तुम शिविर वापस जा रहे हो - मुझे आगे की पूछताछ के लिए बर्लिन जाना है।'

पोलिश व्यक्ति के चेहरे पर दहशत छा गई। 'नहीं,' उसने गिड़गिड़ाते हुए कहा। 'अगर तुम मुझे छोड़कर चली जाओगी, तो मेरा अंत हो जाएगा - तुम्हें यहीं रहना होगा, वरना मेरा अंत हो जाएगा!'

अपने दोस्त की स्पष्ट परेशानी देखकर सिडनी चिंतित हो गया और उसे दिलासा देने की कोशिश की, लेकिन उसके साथ आए लोगों ने उसे सेल से बाहर खींच लिया। गलियारे से भागते हुए सिडनी ने पुकारा, 'सब ठीक हो जाएगा, डैनी। कुछ हफ्तों में कैंप में मिलेंगे।' एक आखिरी बार पीछे मुड़कर देखते हुए सिडनी को गलियारे से बाहर धकेल दिया गया।

*

सिडनी और डैनी की पुनः गिरफ्तारी के बाद, केवल पांच लोग ही फरार बचे थे: पेर बर्ग्सलैंड और जेन्स मुलर, जो अब सुरक्षित रूप से स्वीडन में हैं; बॉब वैन डेर स्टॉक; और डेस प्लंकेट और फ्रेडी ड्वोरक।

भागने की सुबह ब्रेस्लाउ स्टेशन पर लंबे इंतजार के बाद, जब आखिरकार उनके जाने का समय आया तो डेस और फ्रेडी को राहत मिली। पच्चीस तारीख को सुबह 5:00 बजे के ठीक बाद, उन्होंने स्टेशन के लाउडस्पीकरों पर स्टर्मबाहनफ्यूहरर सो-एंड-सो और अंडरस्टर्मफ्यूहरर समथिंग-ऑर-अदर की घोषणा सुनी और उन्होंने तुरंत प्लेटफार्म की ओर जाने का फैसला किया। जब वे वहाँ पहुँचे तो प्लेटफार्म पहले से ही भीड़भाड़ वाला था, लेकिन उनका अनुमान सही निकला। टिकट हॉल की ओर पीछे मुड़कर देखते हुए, उन्होंने देखा कि पुलिस ने प्लेटफार्म के

प्रवेश द्वार पर एक चेकपॉइंट स्थापित किया और सभी यात्रियों के कागजात की जाँच शुरू कर दी।

आखिरकार ट्रेन स्टेशन पर रुकी और डेस और फ्रेडी को एक खचाखच भरे डिब्बे में दो सीटें मिल गईं। यह एक लोकल ट्रेन थी जो हर छोटे स्टेशन पर रुकती थी, और सफ़र काफी तनावपूर्ण था। हिटलर यूथ की वर्दी पहने एक बातूनी लड़के ने डेस से बातचीत शुरू करने की कोशिश की, लेकिन प्लंकेट ने थका हुआ और उदासीन होने का नाटक करना आसान समझा। आखिरकार जर्मन लड़के ने हार मान ली और किसी और से बात करने लगा। चार घंटे के सफ़र के बाद ट्रेन ग्लैट्ज़ स्टेशन पर रुकी। बर्फ़बारी रुक गई थी, लेकिन ठंड अभी भी बहुत थी, और दोनों को तीस मील तक चेक सीमा तक गहरी बर्फ़ में पैदल चलने का ख्याल अच्छा नहीं लगा। इसलिए उन्होंने बैड रीनर्ज़ के लिए थर्ड क्लास टिकट खरीदे, जो सीमा से पंद्रह मील करीब था, और वहाँ से पैदल जाने का इरादा किया। उनकी ट्रेन दोपहर करीब 12 बजे बैड रीनर्ज़ पहुँची, और दोनों स्टेशन पर स्की करने वालों की भीड़ देखकर खुश हुए। भीड़ में गुमनामी का फ़ायदा उठाते हुए, वे आगे बढ़ने से पहले पेशाब करने के लिए पुरुषों के शौचालय में चले गए।

पेशाबघर में खड़े होकर डेस ने अपना काम किया और फिर फ्रेडी से खुशमिजाज आवाज में कहा, 'आह, अब ठीक है!' पल भर में उसे अपनी गलती का एहसास हो गया। बगल वाले पेशाबघर में खड़ा एक जर्मन सैनिक मुड़ा और डेस को हैरानी भरी निगाहों से देखने लगा, लेकिन प्लंकेट और ड्वोरक झट से शौचालय से निकलकर सड़क पर आ गए। किस्मत से, भारी बर्फबारी शुरू हो चुकी थी और कुछ ही मिनटों में उनके पैरों के निशान नई गिरी बर्फ से मिट गए। जब तक सैनिक को होश आया, डेस और फ्रेडी बहुत दूर जा चुके थे। उसके बाद से, प्लंकेट सिर्फ चेक भाषा बोलने को लेकर बहुत सचेत रहने लगा, जिसमें वह ठीक-ठाक माहिर था। अगर दोबारा ऐसी गलती हो जाती, तो शायद उनकी किस्मत इतनी अच्छी न होती।

अब भारी हिमपात में पैदल यात्रा की चुनौतीपूर्ण चुनौती का सामना करते हुए, दोनों पश्चिम की ओर, सीमा की ओर चल पड़े। उन्हें उम्मीद थी कि वे चेकोस्लोवाकिया के भीतर स्थित नोवी ह्राडेक गाँव पहुँचकर वहाँ शरण लेंगे। एक बार फिर भाग्य ने उनका साथ दिया और बैड रीनर्ज़ से एक मील दूर जाने से पहले ही बर्फ़बारी रुक गई। मौसम में आए इस बदलाव से उत्साहित होकर उन्होंने अपनी यात्रा जारी रखी। हालाँकि सीमा सीधी रेखा में केवल पंद्रह मील दूर थी, लेकिन उन्हें पहाड़ियों और घाटियों के बीच कम से कम बीस मील पैदल चलना था। पहली पहाड़ी की चोटी पर उन्होंने थोड़ी देर आराम किया और फ्रेडी द्वारा लाए गए भोजन का कुछ हिस्सा खाया। फिर, इलाके का विस्तृत नक्शा निकालकर, डेस ने अपना मार्ग निर्धारित किया। आगे, उन्हें आश्रय देने वाले जंगलों के ठीक पार, एक घाटी थी जिसमें से होकर एक पक्की सड़क गुजर रही थी। समय का सदुपयोग करते हुए, वे सड़क की ओर उतरे, उसे पार किया और दूसरी ओर, अगली पहाड़ी की चोटी की ओर जाने वाले एक पगडंडी मार्ग पर चल पड़े।

चोटी पर पहुँचकर डेस और फ्रेडी जल्द ही सड़क से ओझल हो गए और पश्चिम की ओर पहाड़ी की चोटी पर आगे बढ़ते रहे। जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते गए, इलाका और भी कठिन होता गया। कमर तक गहरी बर्फ बहुत नरम और चिपचिपी थी, लेकिन अगर वे आराम करने के लिए रुकते, तो उनके जम कर मरने का खतरा मंडरा रहा था। फ्रेडी, जो दोनों में दुबला-पतला था, को बर्फ के टीलों से निकलने में ज़्यादा कठिनाई हो रही थी, इसलिए डेस ने कुछ देर तक उनका सूटकेस उठाया। वे बढ़ते अंधेरे में धीरे-धीरे आगे बढ़ते रहे।

कुछ देर बाद उन्हें वर्दी पहने एक व्यक्ति स्की पर सवार दिखाई दिया। उसने प्रसन्नतापूर्वक कहा, 'शुभ दोपहर। आप दोनों को भी अपनी स्की लानी चाहिए थी - इससे आपको बहुत आसानी होती।'

फ्रेडी ने जवाब दिया, 'तुम सही कह रहे हो, लेकिन हमें मौसम इतना खराब होने का अंदाजा नहीं था। वैसे भी हमें ज्यादा दूर नहीं जाना है।'

'और आप कहाँ जा रहे हैं?' उस आदमी ने थोड़ा सतर्क होते हुए पूछा।

ड्वोरक ने निकटतम गाँव का नाम बताते हुए कहा, 'ग्रुनशुबेल चलते हैं। मुझे नहीं लगता कि यह दूर है।'

'लगभग दो मील दूर, आगे घाटी में। आपको जल्दी करनी चाहिए – अंधेरा होने के बाद यहाँ रहना ठीक नहीं होगा।' इतना कहकर वह आदमी अपनी स्की पर मुड़ा और जंगल में गायब हो गया।

डेस और फ्रेडी को लगा कि वह शायद कोई सीमा रक्षक होगा, इसलिए उन्होंने अपनी गति बढ़ा दी और सूर्यास्त तक ग्रुन्शुबेल के ऊपर स्थित पहाड़ी की चोटी पर पहुँच गए। यह एक छोटा सा गाँव था, जिसमें शायद एक दर्जन झोपड़ियाँ थीं, लेकिन आसपास काफी लोग दिखाई दे रहे थे। फ्रेडी ने हिम्मत करके सड़क पर एक बूढ़े देहाती को रोका और पूछा कि क्या आसपास कोई सराय है, और बताया कि उन्हें सुबह कुछ मशीनरी ठीक करनी है। फ्रेडी को आश्चर्य हुआ कि उस व्यक्ति ने एकदम सही चेक भाषा में जवाब दिया और फ्रेडी ने अपनी मातृभाषा में बात जारी रखी। उसने अपना परिचय बोहुमिल दोस्ताल के रूप में और डेस का परिचय अपने सीधे-सादे दोस्त सर्गेई बुलानोव के रूप में दिया, और बताया कि वे इस क्षेत्र में काम करने वाले सीमेंस के तकनीशियन हैं। बूढ़े व्यक्ति ने डेस की चमड़े से ढकी बेल्ट बकल और बटनों वाली रंगी और दोबारा सिली हुई आरएएफ वर्दी को कुछ अजीब नज़रों से देखा, लेकिन कोई टिप्पणी नहीं की।

वह हँसते हुए बोला कि ग्रुनशुबेल में कोई सराय नहीं है और फिर राहगीरों से पूछने लगा कि सबसे सुविधाजनक होटल कहाँ हो सकता है। भागने वालों की हैरानी की बात यह थी कि जल्द ही मुख्य सड़क पर गाँव वालों की भीड़ उमड़ पड़ी और वे आगंतुकों की मदद करने लगे। ठीक उसी समय, एक दुबला-पतला आदमी, जो मददगार लग रहा था, वहाँ आ पहुँचा। पता चला कि वह सेना में भर्ती होने से बचने के लिए जर्मनी में हफ्ते में तीन दिन नाई का काम करता था। वह नोवी ह्राडेक में रहता था और हफ्ते में तीन बार दस मील पैदल चलकर काम पर जाता था। उसने डेस और फ्रेडी की मदद करने की पेशकश की और दोनों ने तुरंत स्वीकार कर लिया। वे गाँव वालों को बातें करते हुए छोड़कर चले गए, जो ग्रुनशुबेल से बाहर निकलकर खुश थे।

नोवी ह्राडेक की ओर चलते हुए, डेस और फ्रेडी को छोटे नाई के साथ तालमेल बिठाने में तुरंत मुश्किल होने लगी। काम पर आने-जाने के लिए प्रतिदिन बीस मील पैदल चलने से उसकी गति काफी बढ़ गई थी और पहाड़ियों में मेहनत करने के बाद, भागने वाले लगभग हार मानने ही वाले थे कि तभी उन्हें दूर सीमा चौकी दिखाई दी। सीमा चौकी से बचने के लिए सड़क छोड़कर, डेस और फ्रेडी खेतों में चढ़ गए और उस नाले को पार कर गए जिसके बारे में नाई ने उन्हें बताया था कि वह चेकोस्लोवाकिया की सीमा है। वे कुछ सौ गज तक खेतों में चलते रहे और फिर सड़क पर लौट आए, जहाँ उनकी मुलाकात नाई से दोबारा हुई। अब वे सुरक्षित रूप से चेकोस्लोवाकिया के अंदर थे। यह 25 मार्च की रात 8:00 बजे के ठीक बाद का समय था।

डेस और फ्रेडी नोवी ह्राडेक गांव के ऊपर एक पहाड़ी पर रुककर स्थिति का जायजा लेने लगे। छोटे नाई ने उन्हें वह सराय दिखाई जहाँ वे ठहर सकते थे और फिर उन्हें शुभकामनाएँ दीं। भागने वालों ने उस आदमी को कुछ पैसे दिए और विदा ली। लगभग पूरी तरह थक चुके और कपड़ों से बर्फ के बड़े-बड़े ढेले लटके हुए डेस और फ्रेडी सराय की तलाश में कस्बे की ओर चल पड़े। बिजली गुल होने के कारण वे जल्दी ही रास्ता भटक गए और कई राहगीरों से रास्ता पूछना पड़ा। मानो सदियों बाद, वे आखिरकार सराय पहुँचे। अंदर गर्म और हल्की रोशनी थी, और फ्रेडी रिसेप्शनिस्ट के पास मैनेजर से मिलने गया जबकि डेस दरवाजे पर इंतजार करता रहा।

जब मैनेजर आया, तो फ्रेडी ने अपना परिचय दिया और मदद मांगी। रिसेप्शनिस्ट (जो संयोग से उसकी बेटी थी) से कुछ देर बात करने के बाद, मैनेजर ने उन दोनों को लाउंज में भेजा और उन्हें एक बड़े, गर्म लोहे के चूल्हे के पास बैठने को कहा। तीस मिनट के भीतर डेस और फ्रेडी गर्म और सूखे हो गए, हालांकि उनके चारों ओर फर्श पर पिघले पानी के बड़े-बड़े गड्ढे थे। लेकिन किसी ने इस पर ध्यान नहीं दिया। लाउंज स्की करने वालों से भरा हुआ था जो खूब शराब पी रहे थे और मौज-मस्ती कर रहे थे और चूल्हे के पास दुबके बैठे उन दो बदहाल लोगों पर किसी का

ध्यान नहीं था।

कुछ देर बाद लाउंज खाली हो गया, और आखिरी ग्राहक के सोने के बाद, मैनेजर फिर से आया और फ्रेडी से आधी रात तक बातें करता रहा। बातचीत के कुछ अंश ही समझ पाने के कारण, डेस शांति से सोता रहा। फिर दोनों को ऊपर एक कमरे में ले जाया गया जहाँ एक बड़ा सा पंखों वाला बिस्तर था। भागने वालों के कमरे से सटे ड्रेसिंग रूम में एक और मेहमान था, लेकिन वह गहरी नींद में सो रहा था। डेस और फ्रेडी, जो भागने से पहले वाली रात से सोए नहीं थे, जल्दी से उसकी नींद में सो गए।

सुबह, मैनेजर ने घबराकर उनसे कहा कि उन्हें जल्द से जल्द निकलना होगा। उसने पूरी रात अपने होटल में दो भागे हुए युद्धबंदियों को पनाह देने के परिणामों के बारे में चिंता करते हुए बिताई थी और फैसला किया था कि यह बहुत जोखिम भरा है। हालांकि, प्लंकेट और ड्वोरक ने उसे बताया कि दिन के उजाले में निकलना बहुत खतरनाक है और उन्हें अंधेरा होने तक इंतजार करना होगा। यह महसूस करते हुए कि वे सही कह रहे हैं, मैनेजर थोड़ा शांत हुआ और अगले एक घंटे तक उन दोनों के साथ संभावनाओं पर चर्चा की। जाहिर है, पहली प्राथमिकता प्राग पहुंचना थी, लेकिन ऐसी यात्रा बहुत जोखिम भरी थी क्योंकि ग्रॉसफाहंडुंग के प्रावधानों के तहत सड़कों पर अभी भी गश्त चल रही थी। आखिरकार, काफी चर्चा के बाद, फ्रेडी मैनेजर को यह समझाने में कामयाब रहा कि जब तक यात्रा करना सुरक्षित न हो जाए, तब तक उन्हें होटल में रहने दिया जाए। उन्होंने पुलिस के आने की स्थिति में एक आपातकालीन भागने की योजना भी बनाई।

मैनेजर ने भागने वालों को प्राग पहुँचाने का रास्ता खोजने के लिए अपने कई दोस्तों की मदद ली थी, और उनमें से एक ने मूर्खता से यह बात अपनी पत्नी को बता दी थी। वह आदमी बहुत घबराया हुआ होटल लौटा और बड़बड़ाने लगा कि उसकी पत्नी ने भागने वालों के ठिकाने के बारे में पुलिस को बताने की धमकी दी है। अब पूरी तरह से डरा हुआ मैनेजर फिर से बोला कि उन्हें सराय छोड़नी होगी। यह जानते हुए कि भागे हुए युद्धबंदियों को शरण देने के लिए उस आदमी और उसकी बेटी को मौत की सज़ा हो सकती है, डेस और फ्रेडी मान गए और उसी रात सराय छोड़कर गाँव से होते हुए दूसरे मददगारों में से एक के घर की ओर चल दिए। दुर्भाग्य से, उस आदमी की पत्नी ने दरवाज़ा खोला, और जब फ्रेडी ने बताया कि वे कौन हैं, तो बेचारी औरत इतनी ज़ोर से चीखी कि मुर्दे भी जाग जाएँ। यह सोचकर कि उसे दिल का दौरा पड़ने वाला है, प्लंकेट और ड्वोरक जल्दी से सराय वापस गए और मैनेजर को सारी बात बताई। बड़े जोखिम पर, मैनेजर उन्हें फिर से अपने यहाँ ठहराने के लिए राज़ी हो गया।

उन्होंने फिर विकल्पों पर चर्चा की। भागने वाले अब भी प्राग के गबेल जाना चाहते थे, जहाँ जॉनी स्टोवर की पहले मदद की गई थी, लेकिन ऐसा लग रहा था कि भागने की घटना सबको पता चल चुकी थी और हर कोई भगोड़ों की तलाश में था। डेस और फ्रेडी ने सुझाव दिया कि वे किसी ट्रक में छिप जाएँ या प्राग जाने के लिए कोई निजी कार किराए पर ले लें, लेकिन मैनेजर ने कहा कि सड़कों पर नियमित गश्त हो रही है और सभी वाहनों की तलाशी ली जा रही है। कई नागरिकों को पहले ही पकड़ लिया गया था, और इधर-उधर घूमना स्पष्ट रूप से असुरक्षित था।

हालांकि, प्रबंधक को एक किसान मिल गया था जो उन्हें अपने खलिहान में ठहराने को तैयार था। यह सराय के आरामदायक बिस्तरों से कितना अलग था, लेकिन कहीं अधिक सुरक्षित था। इसलिए, सत्ताईस तारीख की शाम को, प्लंकेट और ड्वोरक खलिहान तक सात मील की पैदल यात्रा पर निकल पड़े। रात साफ और ठंडी थी और कर्फ्यू के बावजूद, सड़कों पर बहुत से लोग चल रहे थे। किसी ने भी उन्हें केवल एक सुखद 'शुभ संध्या' कहा और वे तीन घंटे की पैदल यात्रा के बाद खलिहान पहुंचे। वहां पर्याप्त भूसा उपलब्ध था, लेकिन सराय की गर्मी के आदी होने के कारण, डेस और फ्रेडी ने बहुत ही असहज रात बिताई, वे ज्यादातर समय कांपते रहे और थोड़ी-थोड़ी देर ही सो पाए।

अगले दिन दोपहर को खलिहान का मालिक आया और फ्रेडी से बात की। उसने बताया कि

गाँव में अफवाहें फैल रही हैं कि कुछ भागे हुए युद्धबंदी पास में ही छिपे हुए हैं और उन्हें तुरंत वहाँ से निकलना होगा। फ्रेडी ने जवाब दिया कि भले ही गश्ती दल उन्हें ढूंढ रहे हों, खलिहान में छिपे रहना खेत से भागने की कोशिश करने से कहीं ज्यादा सुरक्षित है। जब तक कोई उन्हें नहीं देखेगा, वे पूरी तरह सुरक्षित रहेंगे। किसान अनिच्छा से मान गया।

मंगलवार की अट्ठाईस तारीख की सुबह, एक मज़दूर खलिहान में आया और फावड़े से भूसा इधर-उधर करने लगा। डेस और फ्रेडी थोड़ा और नीचे दब गए, लेकिन वह आदमी उनके करीब आता चला गया। आखिरकार, जब वह फ्रेडी को फावड़ा मारने ही वाला था, तभी दोनों कूदकर बाहर निकल आए। उन्हें देखकर बूढ़ा आदमी चौंक गया और साथ ही यह जानकर सदमे में आ गया कि वे कौन हैं। उसने गुस्से में पुलिस को बुलाने की धमकी दी। यह समझकर कि वह उसकी बात नहीं सुनेगा, फ्रेडी ने उसी लहजे में जवाब दिया कि अगर उसने पुलिस को बताया तो वे उसे मार डालेंगे। इससे वह आदमी थोड़ा शांत हुआ और एक घंटे की बहस के बाद, फ्रेडी उसे चुप रहने के लिए मनाने में कामयाब हो गया। हालांकि, जब किसान ने पूरी कहानी सुनी, तो वह भी बहुत उत्तेजित हो गया। वह आदमी कस्बे में अपनी बेबाकी के लिए जाना जाता था और शायद वह अपनी इस खोज को ज्यादा देर तक छुपा नहीं पाएगा।

किसान को और अधिक परेशानी से बचाने और अपनी यात्रा को आगे बढ़ाने के लिए बेचैन डेस और फ्रेडी ने अपनी योजनाओं पर पुनर्विचार किया। मौसम गर्म होने लगा था और बर्फबारी रुक गई थी, लेकिन सड़कों पर अभी भी नियमित गश्त जारी थी। और, चूंकि उनके यात्रा परमिट की समय सीमा समाप्त हो चुकी थी, इसलिए उनके पास यात्रा के लिए केवल जाली पहचान पत्र ही बचे थे। आगे बढ़ना अभी भी बहुत खतरनाक था।

31 मार्च को जाकर उन्हें लगा कि यात्रा करना सुरक्षित है, और उसी दोपहर बाद, डेस और फ्रेडी ने आखिरकार दक्षिण की ओर अपनी यात्रा फिर से शुरू की। किसान और उसका एक दोस्त उन्हें खलिहान से दूर ले गए, और डेस और फ्रेडी उनके पीछे-पीछे पचास गज की दूरी पर चल रहे थे। जब वे पहाड़ी की चोटी पर पहुँचे, तो स्थानीय लोग मुड़कर वापस उनके पास से गुज़रे और उन्हें रास्ता बताते हुए जल्दी से विदाई दी। कुछ ही देर में, प्लंकेट और ड्वोरक स्पिक नाम के एक छोटे से गाँव में पहुँचे, जिसमें बीस से ज़्यादा झोपड़ियाँ नहीं थीं, और हर झोपड़ी में एक कुत्ता था जो किसी के भी पास आने पर भौंकता था। हिम्मत जुटाते हुए, फ्रेडी ने हर झोपड़ी का दरवाज़ा खटखटाया, और हर बार भौंकने की एक कतार शुरू हो जाती, ताकि मदद माँग सके। वे लगभग हार मानने ही वाले थे कि आखिरी घर के किसान ने बहुत मनाने के बाद उन्हें अपने भूसे के गोदाम में सोने की अनुमति दे दी। हालाँकि, उसने कहा कि उन्हें भोर से पहले वहाँ से निकलना होगा।

जब किसान उन्हें जगाने आया, तो फ्रेडी ने हिलने से इनकार कर दिया और कहा कि सुबह निकलना सभी के लिए बहुत जोखिम भरा होगा। किसान मान गया और काफी दोस्ताना व्यवहार करते हुए खाने की टोकरियाँ दीं और उन्हें युद्ध की प्रगति के बारे में जानकारी दी। उसने यह उत्साहवर्धक खबर भी दी कि सड़क गश्त 1 अप्रैल की रात को समाप्त होने वाली है। यह खबर सुनकर प्लंकेट और ड्वोरक ने पहले अवसर मिलते ही निकलने का निश्चय कर लिया।

जब पूरी तरह अंधेरा हो गया, तो डेस और फ्रेडी ने किसान को धन्यवाद दिया और चल पड़े। उन्हें नाचोद के मुख्य रेलवे स्टेशन तक पंद्रह मील की दूरी आठ घंटे के भीतर तय करनी थी। रास्ते में वे एक सराय में रुके और एक बियर पी, लेकिन फ्रेडी को मैनेजर पर भरोसा नहीं था, इसलिए वे जल्दी से वहाँ से निकल गए। सड़क पर वापस आते ही, यात्रा जल्द ही भागने का सबसे कठिन हिस्सा बन गई। रात साफ और ठंडी थी, और दोनों ने थकान और ठंड से जूझते हुए पूरा रास्ता तय किया। उन्होंने कुछ नहीं कहा और शायद आधी दूरी नींद में ही तय कर ली। उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा केवल प्राग पहुँचने की उम्मीद से मिल रही थी। भोर होते-होते वे नाचोद से आधा मील दूर थे और शहर उनके सामने फैला हुआ दिखाई दे रहा था।

'कृपया अपने कागजात दिखाएं।' पुलिसकर्मी की आवाज सुनकर दोनों चौंक गए, क्योंकि

वह अचानक कहीं से प्रकट हो गया था। अगर वे सतर्क होते तो शायद उसे पहले ही देख लेते और उससे बच जाते, लेकिन अब वे उसकी दया पर निर्भर थे।

पुलिसकर्मी ने प्लंकेट की ओर इशारा करते हुए, उसके पहचान पत्र के साथ कहा, 'आपने अपनी मूंछें मुंडवा ली हैं - आपके कार्ड पर लगी तस्वीर अब आपसे उतनी मिलती-जुलती नहीं है।' डेस ने बस कंधे उचका दिए।

पुलिसकर्मी ने गरजते हुए कहा, 'मुझे तुम्हारे सामान के अंदर देखने दो, और जब मैं देख रहा हूँ तो मुझे यह भी क्यों न बता दो कि तुम कौन हो?'

फ्रेडी ने बोलना शुरू किया, “हम ब्रेस्लाउ स्थित सीमेंस कारखाने के तकनीशियन हैं और नोवी ह्राडेक में एक मशीनरी पर काम कर रहे थे। लेकिन काम में उम्मीद से ज्यादा समय लग गया और हमारे यात्रा पास की वैधता समाप्त हो गई। उन्हें नवीनीकृत कराने के बजाय, हमने काम जल्दी खत्म करके सीधे ब्रेस्लाउ वापस जाने का फैसला किया।” बोलते-बोलते फ्रेडी को पहली बार एहसास हुआ कि उनकी कहानी कितनी खोखली लग रही थी।

पुलिसकर्मी ने ध्यान से सुना। कुछ सामान्य प्रश्न पूछने के बाद उसने कहा, “कई युद्धबंदी भागे हुए हैं, इसलिए हमें सतर्क रहने को कहा गया है। और सच कहूँ तो, तुम्हारी कहानी संदिग्ध है। लेकिन,” उसने उन दोनों को घूरते हुए कहा, “मैं तुम्हें फिर भी जाने दे रहा हूँ।” इतना कहकर उसने उनके कागजात वापस कर दिए और चला गया।

कम से कम एक मिनट तक, डेस और फ्रेडी सड़क के बीचोंबीच एकदम स्थिर खड़े रहे, अवाक। शायद पुलिसवाले को भगोड़ों को गिरफ्तार करने से जुड़ी सारी कागजी कार्रवाई करने में कोई दिलचस्पी नहीं थी। सुबह का बहुत समय था; शायद वह बस घर जाना चाहता था। या हो सकता है कि वह मित्र देशों के प्रति झुकाव रखने वाला कोई चेक नागरिक हो। डेस और फ्रेडी को कभी पता नहीं चलेगा; उनके लिए बस इतना ही मायने रखता था कि बीस मिनट बाद वे नाचोद एयरपोर्ट के प्लेटफॉर्म पर परदुबिट्ज़ के टिकट लिए खड़े थे।

ट्रेन सुबह 8:00 बजे चली और रास्ते में पड़ने वाले हर छोटे स्टेशन पर रुकती गई। हालांकि तीसरी श्रेणी की बेंचें सख्त और असुविधाजनक थीं, फिर भी डेस और फ्रेडी को दोबारा यात्रा शुरू करने की बेहद खुशी थी। कोनिग्रेट्ज़ स्टेशन पर ट्रेन लगभग एक घंटे के लिए रुकी और प्लेटफार्म लूफ़्टवाफ़े की वर्दी पहने सैनिकों से भर गया। खिड़की से बाहर देखते हुए डेस और फ्रेडी ने शहर के ऊपर चक्कर लगाते दर्जनों विमानों को देखा और अनुमान लगाया कि आस-पास कोई बड़ा हवाई अड्डा होगा। उन्होंने इस देरी का फायदा उठाते हुए शौचालय में जाकर खुद को थोड़ा तरोताज़ा भी कर लिया।

पारदुबिट्ज़ में फ्रेडी को एक फोन करना था। युद्ध से पहले, उन्होंने वहाँ एक स्थानीय महिला से एक अपार्टमेंट किराए पर लिया था। अब वह उनसे मदद मांगने गए। ड्वोरक उस महिला के साथ मुश्किल से पाँच मिनट ही रहे। उनका अपार्टमेंट गेस्टापो मुख्यालय के ठीक सामने था और फ्रेडी के 1939 में चेकोस्लोवाकिया से भागने के बाद उस महिला को महीनों तक गिरफ्तार करके पूछताछ की गई थी। वह दोबारा उसी यातना से गुजरने से डरी हुई थी, इसलिए फ्रेडी ने उन्हें शांति से छोड़ दिया। वह स्टेशन लौट आए, जहाँ डेस उनका इंतजार कर रही थी, और दोनों प्राग जाने वाली ट्रेन में सवार हो गए।

वे राजधानी पहुँचे और सूर्यास्त से पहले गबेल के उपनगर में आ गए, लेकिन सराय बंद मिली, इसलिए वे पीछे के रास्ते से अंदर जाने का रास्ता खोजने लगे। पीछे की सीढ़ियों पर कुछ अल्सेशियन कुत्ते पहरा दे रहे थे, लेकिन वे काफी दोस्ताना लग रहे थे। उन्हें वहीं छोड़कर, डेस और फ्रेडी अंधेरी सीढ़ियों से ऊपर चढ़ गए, जहाँ उन्हें लगा कि वे सराय में जा रहे हैं। हालाँकि, अंदर जाते ही उन्होंने देखा कि गलियारा लूफ़्टवाफ़े की वर्दी पहने सैनिकों से भरा हुआ था। कुछ मिनटों तक एक नोटिस बोर्ड को देखते हुए स्थिति का जायजा लेने की कोशिश करते हुए, प्लंकेट और ड्वोरक ने चिकित्सा सामग्री से भरी ट्रे लिए हुए दो वार्ड बॉय को देखा और समझ गए कि वे गलती से एक आपातकालीन चिकित्सा क्लिनिक में घुस गए हैं, जो शायद स्थानीय हवाई अड्डे के

लिए था। तुरंत मुड़कर वे इमारत से बाहर निकल गए।

प्लंकट और ड्वोरक लिबेन के बाहरी इलाके में एक सराय में गए और मैनेजर से पता चला कि गबेल होटल का मालिक गुरुवार, 6 अप्रैल तक बाहर है। समय बिताने के लिए, दोनों भागने वाले कोलिन के लिए ट्रेन में सवार हो गए और पूरा दिन वहीं बिताया। प्लेटफार्म से निकलते ही, फ्रेडी यह देखकर भयभीत हो गया कि सादे कपड़ों में एक पुलिसकर्मी ने डेस को रोककर उसके कागजात मांगे। प्लंकट ने अपना पहचान पत्र दे दिया, जिसे अधिकारी ने सेलोफेन पैकेट से निकालकर ध्यान से देखा और बार-बार अपने हाथों में घुमाया। अंत में उसने कार्ड डेस को वापस दे दिया और मुस्कुराते हुए उसे शुभ यात्रा की शुभकामनाएं दीं। बेफिक्र होकर अपने साथी के पास लौटते हुए, डेस ने देखा कि ड्वोरक पूरी तरह से घबराया हुआ था और उसे चेक भाषा में तरह-तरह की गालियां दे रहा था। प्लंकट ने अपने उत्तेजित दोस्त को शांत करने की पूरी कोशिश की और दोनों स्टेशन के रेस्तरां में गए, जहां खाने के कूपन न होने के कारण उन्होंने पूरे दिन नकली कॉफी पी।

उसी दोपहर प्राग लौटकर, दोनों एक नाई के पास गए जिसने जॉनी स्टोवर को पहले भागने में मदद की थी। बाकी सभी ग्राहकों के चले जाने के बाद, फ्रेडी ने अपना परिचय दिया और नाई से मदद मांगी। नाई उनसे मिलकर बहुत खुश हुआ और उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। उसने उन्हें कुछ पैसे दिए और उससे भी ज़रूरी, कुछ राशन कार्ड और खाने का सामान दिया ताकि वे कुछ दिनों तक गुज़ारा कर सकें। उसने यह भी कहा कि वे किसी भी साधारण होटल में ठहर सकते हैं, लेकिन सिर्फ़ एक रात के लिए। एक रात के बाद रजिस्ट्रेशन कार्ड पुलिस को दे दिए जाएंगे, जो उन्हें ढूंढ सकती है। डेस और फ्रेडी ने नाई के साथ लगभग दो घंटे बिताए और अब तक की सबसे बेहतरीन दाढ़ी और बाल कटवाकर वहाँ से निकले।

कुछ और समय बिताने के लिए, दोनों ने ट्रेन से वापस पारदुबिट्ज़ की यात्रा की और नाई के सुझाव को आजमाया। होटल का क्लर्क उनमें बिल्कुल भी दिलचस्पी नहीं दिखा रहा था और उनके पहचान पत्रों पर एक नज़र डालने के बाद, उन्हें ऊपर एक आलीशान कमरे में ले गया जहाँ एक बड़ा सा पंखों वाला पलंग और एक निजी स्नानघर था। उन्होंने शानदार तरीके से साफ-सफाई करवाई और बढ़िया भोजन किया, और कुछ घंटे अपनी यात्रा योजना पर चर्चा करने में बिताए। आखिरकार उन्होंने स्विट्ज़रलैंड जाने का फैसला किया, जो चेक सीमा से केवल एक दिन की दूरी पर था। वे जॉनी स्टोवर के मार्ग का अनुसरण करेंगे और उम्मीद करेंगे कि वे उसकी गलती से बच सकें।

6 अप्रैल की दोपहर को प्लंकेट और ड्वोरक प्राग लौट आए, और उन्हें अपनी सफलता की पूरी उम्मीद थी। कई दिनों में पहली बार वे साफ़-सुथरे, तरोताज़ा और अच्छे से खाए-पिए थे। वे नाई के पास गए और फिर गबेल होटल के मैनेजर से मिलने गए, जो अभी-अभी छुट्टी से लौटे थे। होटल का बार लूफ़्टवाफ़े कर्मियों से भरा होने के बावजूद, मैनेजर उनकी मदद करने के लिए तैयार थे और उन्होंने उन्हें आराम से बैठकर बीयर पीने को कहा। जब पब बंद हुआ, तो उन्हें भीड़ के पीछे-पीछे बाहर निकलने के लिए कहा गया और फिर उस दरवाज़े से अंदर घुसने के लिए कहा गया जिसे मैनेजर थोड़ा खुला छोड़ देंगे।

सब कुछ एकदम योजनाबद्ध तरीके से हुआ। डेस और फ्रेडी ग्राहकों की भीड़ के पीछे छिपकर चुपके से दरवाजे से अंदर चले गए। वे एक और लाउंज से होते हुए एक कमरे में पहुँचे और सोने के लिए दो सोफे चुन लिए। वे लेटने ही वाले थे कि मैनेजर दो बड़ी थालियाँ लेकर वापस आ गया। भागने वाले दोनों ने कृतज्ञतापूर्वक थालियाँ ले लीं और फ्रेडी ने उस मैनेजर से काफी देर तक बात की, और साथ ही डेस को बातें समझाता रहा।

मैनेजर ने पुष्टि की कि सबसे अच्छा विकल्प जॉनी स्टोवर के मार्ग का अनुसरण करते हुए दक्षिण-पश्चिम दिशा में स्विट्ज़रलैंड जाना था। उन्होंने प्लंकेट और ड्वोरक को बताया कि जर्मन सीमा पर स्थित टाउस से स्विट्ज़रलैंड पहुँचने में ज़्यादा से ज़्यादा दो दिन का समय लगेगा। यह सोचकर डेस और फ्रेडी ने अगली सुबह, 7 अप्रैल को, सबसे पहले निकलने का फैसला किया।

शुक्रवार की सुबह तड़के, दोनों भगोड़े मैनेजर द्वारा दिए गए राशन कार्ड और पैसों के साथ गबेल होटल से निकल पड़े। भोर के अंधेरे में वे रेलवे स्टेशन तक थोड़ी दूर पैदल चले और वहाँ पहुँचकर देखा कि स्टेशन लोगों से खचाखच भरा हुआ था। तभी उन्हें समझ आया: यह गुड फ्राइडे था, और ट्रेनें यात्रियों से भरी होंगी। डेस और फ्रेडी ने इसे एक शुभ संकेत माना। ट्रेनों में ज़्यादा लोग होने से, उनके पूछताछ के लिए अलग से चुने जाने की संभावना कम थी।

एक स्थानीय ट्रेन उन्हें प्राग के मुख्य रेलवे स्टेशन तक ले गई, जहाँ से दोनों ने टाउस जाने वाली ट्रेन पकड़ी। दोपहर के भोजन के समय के आसपास ताबोर में एक घंटे का ठहराव था, इसलिए भागने वालों ने इस समय का उपयोग शहर में घूमने और स्थानीय पब में सब्जी का स्टू खाने के लिए किया। पीसेक में फिर से देरी हुई, और शाम के लगभग 6:00 बज गए जब वे टाउस पहुँचे। रात कहाँ बिताएँ, यह तय न कर पाने के कारण, उन्होंने अंततः शहर में घूमने और मुख्य सड़क के किनारे स्थित छोटे-छोटे सराय में से एक में कमरा लेने का फैसला किया। फ्रेडी ने अपने आवास, रात के खाने और नाश्ते का अग्रिम भुगतान कर दिया था, और उन्हें और डेस को बहुत असहज महसूस हुआ क्योंकि प्रबंधक ने उनके पहचान पत्रों की जाँच में बहुत अधिक समय बिताया। अंततः, काफी देर बाद, उसने उन्हें ऊपर एक विशाल और आरामदायक कमरे में ले गया।

भागने वालों ने सराय के रेस्तरां में बहुत अच्छा खाना खाया, हालांकि उनके खाने का पूरा आनंद इस बात से बाधित हो गया कि प्रबंधक का बेटा उनके पहचान पत्रों की जांच कर रहा था, जिन्हें उन्होंने सामान्य प्रक्रिया के अनुसार रिसेप्शन पर छोड़ दिया था। और तो और, खाना खाने के बाद जब डेस शौचालय से लौट रहा था, तो अंधेरे गलियारे में उसने गलती से एक जर्मन अधिकारी को टक्कर मार दी। यह कहना मुश्किल था कि टक्कर से कौन ज़्यादा शर्मिंदा हुआ, और दोनों तरफ से बार-बार माफी मांगने के बाद, डेस और अधिकारी अच्छे दोस्त बनकर अलग हो गए। हालांकि, फ्रेडी इस घटना के बारे में सुनकर बहुत परेशान हो गया और उसने डेस से भविष्य में ज़्यादा सावधान रहने की विनती की।

रात के खाने के बाद, प्लंकेट और ड्वोरक ने अपनी अगली चाल पर चर्चा की और अपनी चौदह दिन की यात्रा में पहली बार रणनीति को लेकर उनके बीच गंभीर मतभेद हुआ। दोनों इस बात पर सहमत थे कि होटल मैनेजर सुबह सबसे पहले पुलिस को उनकी सूचना दे देगा, और डेस का मानना था कि वे सुरक्षित रूप से कस्बे से निकलकर पैदल ही सीमा पार करके जर्मनी के फ़र्थ पहुँच सकते हैं। हालाँकि, फ्रेडी ने ज़िद की कि वे वापस क्लैटाऊ की ओर जाएँ, ताकि पुलिस को यह दिखाकर गुमराह किया जा सके कि वे ईस्टर के लिए चेकोस्लोवाकिया जा रहे हैं। फिर हंगामा शांत होने के बाद वे वापस सीमा पर आकर पैदल ही पार कर सकते थे। शाम के अधिकांश समय तक वे इस बात पर बहस करते रहे, डेस का कहना था कि पिछले साल जॉनी स्टोवर को सीमा पार करने में कोई कठिनाई नहीं हुई थी और फ्रेडी का कहना था कि उन्हें किसी न किसी तरह से ध्यान भटकाना ही होगा। अंत में, ड्वोरक की बात मानी गई। चेकोस्लोवाकिया में रहने के दौरान फ्रेडी के अंतिम निर्णय लेने के समझौते को याद करते हुए, डेस अनिच्छा से क्लैटाऊ वापस जाने के लिए सहमत हो गया।

अगली सुबह दस बजे, डेस और फ्रेडी टाउस से रवाना हुए। शुरुआत में यात्रा बिना किसी घटना के गुज़री, लेकिन क्लैटाऊ स्टेशन से लगभग दो सौ गज पहले ट्रेन रुक गई और सभी यात्री टिकट काउंटर की ओर जाने के लिए ट्रेन से उतर गए। वहाँ भारी भीड़ थी और कोई पुलिसकर्मी नज़र नहीं आ रहा था, इसलिए डेस और फ्रेडी को ज़्यादा चिंता नहीं हुई। ड्वोरक पहले गया और बिना किसी रुकावट के बैरियर पार कर गया, लेकिन डेस को एक चेक रेलवे पुलिसकर्मी ने रोक लिया, जिसने उससे उसका यात्रा परमिट माँगा, जो प्लंकेट के पास नहीं था। बुकिंग हॉल की सुरक्षा से यह सब देखते हुए, फ्रेडी ने नासमझी से वापस जाकर डेस की मदद करने का फैसला किया। उसने पुलिसकर्मी से ज़ोर-शोर से बहस की, लेकिन उसकी बातों को अनसुना कर दिया गया। पुलिसकर्मी ने ज़ोर देकर कहा कि वे स्थानीय पुलिस स्टेशन जाएँ, जहाँ से ब्रेस्लाउ, जो

उनके ऑसवाइस (पता प्रमाण पत्र) पर दर्ज जारीकर्ता कार्यालय है, को उनकी पहचान सत्यापित करने के लिए फोन किया जाएगा।

दो सप्ताह बाद जब डेस को एहसास हुआ कि अब खेल खत्म हो गया है, तो वह लगभग प्लेटफार्म पर ही गिर पड़ा क्योंकि पिछले दो सप्ताहों का तनाव आखिरकार उस पर हावी हो गया था। हालांकि, उसने खुद को संभाला और उसे और फ्रेडी को पुलिस स्टेशन ले जाया गया और कोठरियों में बंद कर दिया गया। एक घंटे बाद, पुलिसकर्मी लौटा और उन्हें बताया कि उनकी पहचान झूठी साबित हो गई है। उसने कहा कि उन्हें उसके साथ गेस्टापो कार्यालय चलना होगा। दोनों को एक साथ एक कोठरी में रखा गया जबकि गेस्टापो उनकी पहचान स्थापित करने की कोशिश कर रही थी। जब उन्हें यकीन हो गया कि भागने वाले वास्तव में इंग्लैंड से उतारे गए पैराट्रूपर्स थे, तो डेस और फ्रेडी ने सच बताने का फैसला किया। हालांकि, क्लाटाऊ में उनकी पूछताछ की शुरुआत खराब रही। जब उनसे उनकी जन्मतिथि पूछी गई, तो डेस और फ्रेडी ने सहयोग करने से इनकार कर दिया और उन्हें बताया गया कि अगर वे असहयोगी बने रहे तो उन्हें गोली मार दी जाएगी। जाहिर तौर पर सच्ची जिज्ञासा के साथ, डेस ने जवाब दिया, 'अगर हम मर चुके हैं तो आप हमारी जन्मतिथि कैसे प्राप्त करने की उम्मीद करते हैं?'

यह वो बात बिल्कुल नहीं थी जो गेस्टापो सुनना चाहता था। पूछताछ कर रहा एजेंट गुस्से से आग बबूला हो गया और उन पर चिल्लाते हुए उन्हें अपना गुस्ताखी भरा व्यवहार बंद करने को कहा। काफी देर तक डांट-फटकार के बाद, आखिरकार वह शांत हुआ और पूछताछ जारी रखने के लिए तैयार हुआ। पूछताछ चेक भाषा में हुई, जिसमें फ्रेडी ने डेस के लिए अनुवाद किया। उन्होंने अपने मददगारों को बचाने के लिए पहले ही एक कहानी तय कर ली थी, और फ्रेडी उस मनगढ़ंत कहानी पर अड़ा रहा, बार-बार इस बात पर ज़ोर देता रहा कि भाग निकलना एक अधिकारी का कर्तव्य होता है। आखिरकार, एक सुरक्षा दल बुलाया गया और भागने वालों को वापस उनकी कोठरी में ले जाया गया। यह समझते हुए कि आगे और पूछताछ हो सकती है, डेस और फ्रेडी ने अपनी कहानी को बार-बार दोहराया, ताकि उसमें कोई कमी न रह जाए। कहानी को सौ से अधिक बार दोहराने के बाद, दोनों लगभग नींद में भी उसे सुना सकते थे।

अगले दिन दोनों को अलग-अलग कोठरियों में डाल दिया गया और उन्हें अपने भाग्य के बारे में सोचने के लिए छोड़ दिया गया। फ्रेडी से एक जर्मन पुलिसकर्मी मिलने आया, जिसने उसे आश्वासन दिया कि दोनों को गोली मार दी जाएगी। डेस थोड़ा अधिक आशावादी था, उसे विश्वास था कि उन्हें गेस्टापो के साथ अनिश्चित काल तक रहना पड़ेगा। इसलिए, इतना समय बिताने के लिए, प्लंकेट ने अपना दिमाग व्यस्त रखने के लिए तरह-तरह की मानसिक समस्याएं गढ़ लीं। उसका एक शौक दस पर आधारित नहीं, बल्कि बारह पर आधारित एक नई संख्या प्रणाली तैयार करना था, जिसमें चार और नौ के बाद अतिरिक्त संख्याएँ हों। इस छोटी सी समस्या ने कई दिनों तक उसके विचारों को व्यस्त रखा। बाद में उसने अपनी छोटी सी मेज को कोठरी की खिड़की के पास खींचकर आंगन में क्या हो रहा है, यह देखने का फैसला किया। जो दृश्य उसने देखा वह भयावह था। आंगन के बीच में एक आदमी खड़ा था जिसकी हड्डियों पर मुश्किल से ही मांस बचा था। कभी-कभी वह कुछ लड़खड़ाते कदम उठाता था, लेकिन हिलने-डुलने मात्र से ही वह थक जाता था। ऐसा लगता था कि उसमें अपनी कब्र में गिरने जितनी ही ऊर्जा बची है। इस दृश्य से क्रोधित होकर, डेस ने अपने गार्ड से उस चलते-फिरते कंकाल के बारे में सवाल किया। उन्हें बताया गया कि खिड़की से बाहर देखना सख्त मना है और अगर उन्होंने दोबारा ऐसा किया तो उन्हें गोली मार दी जाएगी।

अंततः, 4 मई को, एक बड़ी काली टूरिंग कार जेल के सामने आकर रुकी। प्लंकेट और ड्वोरक का थोड़ा-बहुत सामान उन्हें लौटा दिया गया और उन्हें कार की पिछली सीट पर बिठा दिया गया। वह एक खूबसूरत, धूप वाला दिन था, लेकिन जैसे ही कार हरे-भरे और पेड़ों से भरे ग्रामीण इलाके से गुजरी, डेस और फ्रेडी को बस यही चिंता सता रही थी कि क्या क्लाटाऊ में मिली धमकियों को अंजाम दिया जाएगा।

*

एक व्यक्ति का अभी भी पता नहीं चल पाया था। ब्रेस्लाउ से बॉब वैन डेर स्टोक ने साहसपूर्वक हॉलैंड के अल्कमर के लिए सीधी टिकट खरीदी थी। इसका मतलब था तीन बार ट्रेन बदलना - ड्रेसडेन, हनोवर और ओल्डेंज़ाल में - लेकिन बॉब ने सोचा कि शिविर से जितनी जल्दी हो सके दूर जाने के लिए यह जोखिम उठाना उचित है। उसने ड्रेसडेन के लिए ट्रेन पकड़ी और एक घुटन भरे, भीड़भाड़ वाले डिब्बे में सीट ढूंढ ली। बासी खाने और शरीर की दुर्गंध लगभग दम घोंटने वाली थी, लेकिन आज़ादी के एहसास ने बॉब को यात्रा के हर पल का आनंद लेने दिया।

सुबह करीब दस बजे ट्रेन विशाल ड्रेसडेन स्टेशन पर पहुँची, और वैन डेर स्टोक के पास अगली ट्रेन छूटने से पहले पूरा दिन खाली था। उसने एक सिनेमाघर की अंधेरी और गुमनामी भरी जगह ढूंढी और दोपहर कार्टून, छोटी कॉमेडी फिल्में और जर्मन युद्ध की न्यूज़रीलें देखते हुए बिताई। रात के खाने के समय वह वापस स्टेशन पर गया, जहाँ उसने एक गिलास बीयर और ब्रेड व सॉसेज मंगवाया। बीयर बासी थी और सॉसेज बेस्वाद, लेकिन प्लेटफार्म पर बाकी सब लोग पी रहे थे, इसलिए बॉब भी उनके साथ शामिल हो गया। रात 8 बजे से ठीक पहले, लाउडस्पीकर से आवाज़ आई: 'हैनोवर, ओल्डेंज़ाल, बानस्टाइग फूंफ।' आवाज़ दबी हुई और कर्कश थी, लेकिन फिर भी भागने वाले को अजीब तरह से सुकून दे रही थी; सिर्फ एक डच शहर का नाम सुनकर ही बॉब को अपना लक्ष्य और करीब लगने लगा। हैनोवर में एक घंटे का इंतज़ार था, और फिर ट्रेन ओल्डेंज़ाल के लिए रवाना हो गई। यह हॉलैंड में प्रवेश करने वाली सीमा चौकी थी और अब तक की यात्रा का सबसे खतरनाक हिस्सा साबित होने वाला था।

बॉब किसी छोटे स्टेशन पर उतरकर पैदल सीमा पार करना चाहता था, लेकिन ओल्डेंज़ाल हॉलैंड के अंदर होने के कारण उसे पुलिस चौकी से गुज़रना पड़ा। एहतियात के तौर पर उसने अपने ब्रीफ़केस से कॉफी का एक पैकेट निकाला, जिसे वह लेन-देन के लिए रखता था, और उसे शौचालय में छिपा दिया। धड़कन तेज़ होते हुए बॉब बाकी यात्रियों के साथ ट्रेन से उतरा और प्लेटफार्म पर बने काउंटर के सामने कतार में लग गया। कुछ ही मिनटों में वह कतार में सबसे आगे पहुँच गया।

'कापीरेन,' गेस्टापो के आदमी ने रूखेपन से पूछा। बॉब ने अपना ट्रेन टिकट और गॉर्डन ब्रेटेल द्वारा जाली बनाया गया यात्रा पास दिखाया। उस आदमी ने पास को पलटकर पीछे लगी नकली मुहर देखी।

'वोहिन?' (कहाँ जाना है?) उसने पूछा।

'अल्कमर,' बॉब ने अपने डच लहजे को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करते हुए जवाब दिया।

एजेंट ने फिर से टिकट और यात्रा पास देखा। अंत में उसने पास के पीछे अपने हस्ताक्षर किए और दोनों बॉब को वापस दे दिए। 'आगे बढ़ो,' कहते हुए उसने वैन डेर स्टोक को आगे जाने का इशारा किया। बॉब ट्रेन में वापस गया, अपनी कॉफी ली और डिब्बे में फिर से बैठ गया। सब कुछ बहुत आसान था। समय सुबह 6:00 बजे का था, सुरंग की खोज के चौबीस घंटे बाद।

अब हॉलैंड पहुँचकर बॉब ने थोड़ी राहत की साँस ली, लेकिन उसका दिमाग अभी भी बेचैन था। उसने मन ही मन सोचा कि अब तक जर्मनों को सुरंग का पता चल गया होगा और शायद उन्हें भाग निकले कैदियों के नाम भी पता चल गए होंगे। और अगर गेस्टापो को पता चल गया कि एक डच नागरिक भाग निकला है और किसी ने ब्रेस्लाउ से अल्कमर तक का टिकट खरीदा है, तो वे शायद सारी बातें समझकर स्टेशन पर उसका इंतज़ार कर रहे होंगे। जब ट्रेन अल्कमर से पहले वाले स्टेशन उट्रेक्ट पर पहुँची, तो बॉब उतर गया।

जिस शहर में वह कभी छात्र जीवन बिता चुका था, वहाँ भगोड़ा होना एक अजीब एहसास था। वह कई जानी-पहचानी जगहों से गुज़रा, लेकिन उनमें से किसी में भी जाने की हिम्मत नहीं कर पाया। कब्ज़े ने हॉलैंड को बदल दिया था, और यह जानना मुश्किल था कि किस पर भरोसा किया जा सकता है। आखिरकार, बॉब ने अपने दो विश्वविद्यालय प्रोफेसरों से मिलने का फैसला

किया, जिन पर उसे कोई शक नहीं था। जब उसने पहले घर की घंटी बजाई, तो एक युवती ने दरवाज़ा खोला और उसे अंदर बुलाया। प्रोफेसर और उनके परिवार ने उसका गर्मजोशी से स्वागत किया, उसे खाना खिलाया और नहाने दिया। वे उसके आने से ज़्यादा हैरान नहीं हुए। इसके विपरीत, वे एक वांछित व्यक्ति के आने को एक सामान्य घटना की तरह ही देख रहे थे। दूसरे प्रोफेसर को भी बुलाया गया, और तीनों ने घंटों बॉब के आरएएफ और शिविर में बिताए अनुभवों और हॉलैंड की लगातार बिगड़ती स्थिति के बारे में बातें कीं। बॉब के लिए, यह एक पारिवारिक मिलन जैसा था।

एमर्सफोर्ट में उनके लिए एक सुरक्षित ठिकाना बनाया गया, और वैन डेर स्टॉक का स्वागत एक ऐसे परिवार ने किया जिसने उनकी मदद करने के लिए इतना जोखिम उठाया था। उन्होंने वहां तीन सप्ताह बिताए, लेकिन स्थानीय भूमिगत संगठन उनकी सहायता के लिए कुछ खास नहीं कर सका। शायद हाल ही में हुई गिरफ्तारियों से उन्हें ठेस पहुंची थी, या शायद वे बॉब की पहचान को लेकर आश्वस्त नहीं थे। किसी भी स्थिति में, डच नागरिक ने अकेले ही निकलने का फैसला किया और उसी रास्ते पर चलने का निश्चय किया जो उन्होंने 1940 में हॉलैंड से अपने पहले पलायन के दौरान अपनाया था। भूमिगत संगठन ने उन्हें मास्ट्रिच के पास एक सुरक्षित ठिकाने का पता बताया, जहां अन्य प्रतिरोधक बॉब को मास नदी पार करके बेल्जियम पहुंचने में मदद करेंगे। उन्हें रात में चुपके से नदी पार कराया गया, बेल्जियम की तरफ एक फार्म में जलपान कराया गया और हासेल्ट के लिए एक ट्राम में बिठा दिया गया। वहां वह फिर से अकेले थे। यह 20 अप्रैल का दिन था, वैन डेर स्टॉक के सागन में सुरंग छोड़ने के लगभग एक महीने बाद।

बॉब के पास बेल्जियम की मुद्रा नहीं थी और उसे प्राप्त करने की संभावना भी कम थी, इसलिए उसके विकल्प सीमित थे। एक बार फिर हिम्मत दिखाते हुए, वह एक बैंक में घुस गया, कहा कि उसका बटुआ खो गया है, और एंटवर्प में रहने वाले अपने चाचा को फोन करने के लिए कहा, जो उसे कुछ पैसे उधार दे देंगे। तीस मिनट के भीतर, वह फिर से सड़क पर था, उसके पास काफी बेल्जियम की मुद्रा और उसके चाचा द्वारा दिया गया एक सुरक्षित पता था। वैन डेर स्टॉक सीधे उस पते पर गया और अगले तीन सप्ताह ब्रुसेल्स के उपनगर उक्ले में एक बीमा कंपनी के निदेशक और उनके परिवार के साथ बिताए।

उनके नए मेज़बान काफी संपन्न थे और बॉब आराम से रहते थे, परिवार के साथ खाना खाते थे और दोस्तों व मेहमानों के साथ टेनिस भी खेलते थे। सबके लिए वह बस हॉलैंड से आए एक चाचा थे। लेकिन प्रतिरोध आंदोलन में फिर से मुसीबत खड़ी हो गई। स्थानीय गुट के तीन शीर्ष लोगों को एक महीने पहले गिरफ्तार कर लिया गया था, और बाकी सदस्य घबराए हुए थे। वे हर किसी पर शक करते थे, और बॉब भी इसका अपवाद नहीं थे। जब यह स्पष्ट हो गया कि वे उनकी मदद करने को तैयार नहीं हैं, तो बॉब ने फिर से अकेले जाने का फैसला किया।

उसके मेज़बान ने बॉब को वैलेंसिएन्स जाने के लिए एक श्रमिक पास दिलवा दिया और पेरिस में एक संपर्क सूत्र भी दिया, जिससे उसे ओपेरा मेट्रो स्टेशन की सीढ़ियों पर मिलना था। अगला कदम तय हो जाने पर बॉब ने पेरिस के लिए आठ घंटे की ट्रेन यात्रा शुरू की। फ्रांसीसी राजधानी पहुँचने में उसे पूरे चौबीस घंटे लग गए। ट्रेन ने कई घंटे एक बुरी तरह से क्षतिग्रस्त रेलवे स्टेशन पर इधर-उधर भटकते हुए बिताए और बाद में हवाई हमले की आशंका के चलते उसे खाली करा लिया गया। जब वह आखिरकार पेरिस पहुँचा, तो बॉब भूखा-प्यासा था और अपने इकलौते संपर्क सूत्र से होने वाली महत्वपूर्ण मुलाकात भी चूक गया था। वह फिर से अकेला पड़ गया था।

स्टेशन के वेटिंग रूम में रात बिताने के बाद, बॉब ने दक्षिण की ओर, टूलूज़ जाने का फैसला किया। वह गैरे सेंट लाज़ारे स्टेशन गया, अपने यात्रा परमिट पर 'पेरिस' को काटकर 'टूलूज़' लिखवाया और एक टिकट खरीदा, जिसके लिए उसे अपना यात्रा परमिट जमा करना पड़ा। वह केवल अपने टिकट के सहारे प्लेटफार्म की ओर चल पड़ा।

टिकट चेक कर रहे जर्मन सैनिक ने धीमी आवाज़ में कहा, 'कृपया अपना पासपोर्ट दिखाएं।'

'टिकट काउंटर पर मौजूद आदमी ने इसे रख लिया,' बॉब ने जर्मन में जवाब दिया। 'मैं यह टिकट और कैसे खरीदता?' उसने चुनौती देते हुए कहा, उम्मीद थी कि यही सही तरीका होगा।

'बिल्कुल,' सिपाही ने कहा और उसे आगे जाने का इशारा किया। एक और बाधा पार हो गई, लेकिन अब तक का सबसे बाल-बाल बचना यही था।

ल्योंस और रोड्ज़ में ट्रेन बदलने के बाद, बॉब टूलूज़ पहुँचा और वहाँ से स्थानीय ट्रेन लेकर सेंट गौडेंस नामक छोटे कस्बे में गया, जहाँ बेल्जियम के एक प्रतिरोध कार्यकर्ता ने उसे एक संपर्क पता दिया था। दुर्भाग्य से बॉब कैफ़े का नाम भूल गया था, उसे बस इतना याद था कि किसी डच व्यक्ति के लिए इसे पहचानना आसान होगा। गलियों में घूमते हुए उसने देखा कि लगभग हर दूसरी इमारत में एक कैफ़े है। तभी उसकी नज़र उस कैफ़े पर पड़ी – ल'ऑरेंजेरी। उसने खुद से पूछा कि भला वह डच शाही घराने के नाम से इतनी मिलती-जुलती जगह का नाम कैसे भूल सकता है?

वैन डेर स्टोक ने खुद को एक अंग्रेज वायुसैनिक बताया और संरक्षिका ने उन्हें पीछे के कमरे में बुलाया। उनकी पहली गुजारिश थी कि वे अपना पहनावा थोड़ा बदल लें, ताकि वे इतने स्पष्ट रूप से विदेशी न दिखें। उनकी बेरेट को सिर के दाहिनी ओर कर दिया गया और हफ्तों से पहने हुए हल्के रंग के ओवरकोट को उतारकर एक भारी स्वेटर पहना दिया गया। अंत में, उनके आरएएफ के भागने वाले जूतों की जगह उन्हें मजबूत बूट दिए गए। फिर, कुछ रातों बाद, उन्हें शहर से कुछ मील दूर एक फार्महाउस में ले जाया गया, जो भगोड़ों से भरा हुआ था, जिनमें एक कनाडाई, एक अमेरिकी, दो अन्य डच और तेरह जर्मन यहूदी शामिल थे। अब वे फ्रांसीसी भूमिगत सेना, माक्विस के हाथों में थे।

भारी हथियारों से लैस दो गुरिल्लाओं ने समूह को पाइरेनीज़ पर्वतमाला को पार करके स्पेन तक की यात्रा के बारे में जानकारी दी। वे गाइड के पीछे एक कतार में चलेंगे और उनके बीच बातचीत या धूम्रपान वर्जित होगा। जो भी कतार से बाहर निकलेगा या भागने की कोशिश करेगा, उसे गोली मार दी जाएगी। अंत में, समूह के अभियानों के लिए धन जुटाने के लिए, सारा फ्रांसीसी पैसा गाइड को सौंप दिया जाएगा। उसी रात, यात्रा शुरू हुई। अंधेरे में चलना कठिन था और रास्ते में कई बार वे बाड़ और पत्थरों से टकराते हुए ठोकर खा गए। अंततः, थके-हारे और भूखे, वे पाइरेनीज़ की तलहटी में एक सुनसान फार्महाउस पर पहुँचे, जहाँ उन्होंने आराम किया और खुद को तरोताज़ा किया। उनके सामने पहाड़ों से होकर चार दिनों की कठिन चढ़ाई थी।

बॉब और अमेरिकी ने माक्विसार्ड समूह के लिए राशन लेने के लिए एक स्थानीय कैफे में एक व्यक्ति के साथ जाने की पेशकश की। एक चट्टानी टीले के पीछे छिपकर, दोनों भागे हुए लोग देखते रहे कि फ्रांसीसी व्यक्ति नीचे उतरा और कैफे के पिछले दरवाजे से अंदर चला गया। तभी अचानक अफरा-तफरी मच गई। जर्मन सैनिकों से भरी एक गश्ती कार कैफे की ओर तेज़ी से बढ़ी और गोलियों की बौछार शुरू हो गई। जवाबी फायरिंग के लिए कार के रुकने पर दो सैनिक घायल हो गए, लेकिन अतिरिक्त सैनिक पहले ही रास्ते में थे। एक और कार और एक ट्रक पूरी रफ्तार से गोलियां चलाते हुए कैफे की ओर बढ़े और फिर अचानक रुक गए और फायरिंग बंद कर दी। अचानक कैफे के चारों ओर धूल धीरे-धीरे बैठने लगी और शांति छा गई। दोनों भागे हुए लोग फार्महाउस की ओर भागे तो पाया कि उनके गाइडों को पहले ही इस आपदा की खबर मिल चुकी थी। अनिच्छुक किसान से एक भेड़ ली गई और समूह ने खाना खाया जबकि माक्विसार्ड दूसरे गाइड की तलाश में जुट गए। इसके बाद समूह को एक पुराने किले के खंडहरों में ले जाया गया, जो स्पष्ट रूप से माक्विस का एक नियमित गढ़ था।

कुछ देर बाद एक और गाइड आ गया और दल फिर से चल पड़ा। वे पूरी रात चलते रहे और सुबह एक फार्महाउस पहुँचे जहाँ दूध मिलता था। उन्होंने वहाँ दिन भर आराम किया और दोपहर बाद फिर से निकल पड़े। जैसे-जैसे वे पहाड़ों में ऊपर चढ़ते गए, चलना और भी मुश्किल होता गया। अक्सर रास्ता पूरी तरह गायब हो जाता था क्योंकि दल पत्थरों और नदी-नालों को पार

करते हुए आगे बढ़ रहा था। एक बार उन्होंने एक बर्फीली गुफा में शरण ली, जो देखने में सुंदर होती अगर वहाँ इतनी ठंड न होती कि उसका आनंद न लिया जा सके। इस समय तक यात्रा का असर दिखने लगा था। कनाडाई व्यक्ति को तेज़ बुखार था और उसे चलने में कठिनाई हो रही थी, जबकि यहूदी महिलाओं में से एक को चक्कर आ रहे थे और वह बेहोश होने वाली थी। वे एक-दूसरे का सहारा लेकर ही आगे बढ़ते रहे।

समूह पहाड़ की चोटी पर पहुँच गया और तेज़ धूप में बंजर चट्टानों पर धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा। हालाँकि, सूरज की गर्मी भी कड़ाके की ठंड को कम नहीं कर पा रही थी। बर्फीली हवाएँ लगातार चल रही थीं, इसलिए दस मिनट से ज़्यादा आराम करना नामुमकिन था। आखिरकार वे फिर से नीचे उतरने लगे। रास्ता थोड़ा आसान था, लेकिन फिर भी बहुत सावधानी बरतनी ज़रूरी थी। इस समय टखने में मोच या चोट लगने के गंभीर परिणाम हो सकते थे। कुछ घंटों की नीचे की यात्रा के बाद, गाइड रुका और दूर स्थित घास से ढके पहाड़ी दर्रे की ओर इशारा किया।

“उस दर्रे के उस पार स्पेन है,” उसने शांत भाव से कहा। “यहाँ से आपको अपना रास्ता खुद तय करना होगा। आपको शुभकामनाएँ और अलविदा।” इतना कहकर वह चला गया।

समूह ने अलग होने का फैसला किया, जर्मन यहूदी एक समूह में और सैन्यकर्मी दूसरे समूह में गए। इस तरह, अगर किसी भी समूह को परेशानी होती, तो दूसरा समूह सुरक्षित निकल जाता। मंज़िल नज़दीक देखकर उनका हौसला बढ़ गया। चलना भी आसान हो गया था। रास्ता अभी भी ज़्यादातर ऊबड़-खाबड़ था, लेकिन कम से कम अब वे पहाड़ी घास के मैदानों से गुज़र रहे थे और पेड़ों की आड़ में चल रहे थे ताकि इस समय कोई जोखिम न हो। आखिरकार बॉब का समूह घास के मैदान के सबसे ऊँचे स्थान पर पहुँच गया और दूसरी तरफ की घाटी में नीचे देखा।

‘तो दोस्तों,’ बॉब ने कहा, ‘बस यही है – हम स्पेन में हैं!’

*

स्टैलाग लुफ्ट III में, भागने के बाद के सप्ताह आश्चर्यजनक रूप से शांत रहे। सुरंग का पूरी तरह से निरीक्षण किया गया (निरीक्षण के दौरान एक युवा वायुसैनिक ने साहसपूर्वक 104 नंबर की खिड़की से झाँका - वह वॉन लिंडिनर के आमने-सामने आ गया और उसे तुरंत जेल में डाल दिया गया) और फिर उसे भर दिया गया। प्रवेश द्वार को रेत से भर दिया गया और अंतिम ढाई फीट को कंक्रीट से सील कर दिया गया। हैरी को पूरी तरह से बंद करने के लिए दूसरे छोर पर कच्चा सीवेज पंप किया गया।

अपेक्षित प्रतिशोध कभी नहीं हुआ, हालांकि शिविर में गेस्टापो की निरंतर उपस्थिति बनी रही। विशेष तलाशी अभियान शुरू किए गए और प्रतिदिन एक अतिरिक्त अपील जारी की गई। रेड क्रॉस के पार्सलों की आपूर्ति भी कुछ समय के लिए रोक दी गई और शिविर के रंगमंच को अगले आदेश तक बंद कर दिया गया। कैदियों के तौर-तरीकों से अपरिचित गेस्टापो को तलाशी के दौरान कुछ भी नहीं मिला। हालांकि, वे एक टोपी, दो जोड़ी दस्ताने, दो स्कार्फ, एक टॉर्च और कागजों का एक पैकेट छोड़ गए, जिसका जिक्र करने में उन्हें शर्म महसूस हुई।

26 अप्रैल को सागन पुलिस स्टेशन से एक फोन आया जिसमें बताया गया कि कुछ भागे हुए कैदियों को वहाँ रखा गया है। पुलिसकर्मी ने पूछा कि क्या उन्हें मानक प्रक्रिया के अनुसार शिविर में वापस लाया जाना चाहिए। सप्ताहांत की घटनाओं से अभी भी बेहद परेशान वॉन लिंडिनर भड़क उठे। उन्होंने गुस्से में कैदियों को शिविर में वापस लेने से इनकार कर दिया और कहा कि वे बाहर जाना चाहते थे इसलिए उन्हें बाहर ही रहना होगा।

'लेकिन अगर आप उन्हें वापस नहीं लाते हैं तो उन्हें बहुत मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा,' पुलिसकर्मी ने सावधानीपूर्वक कहा।

“तो फिर उन्हें जो परेशानी झेलनी पड़े, झेल लो! अब इससे मेरा कोई लेना-देना नहीं है,” कमांडेंट ने रिसीवर पटकते हुए चिल्लाकर कहा। उसी दोपहर बाद, वॉन लिंडिनर को हल्का दिल

का दौरा पड़ा और वे बिस्तर पर चले गए। अगली सुबह वही खबर आई जिसकी उम्मीद थी: वॉन लिंडिनर को उनके पद से हटा दिया गया था।

*

29 मार्च को डग पॉयंटर और पॉप ग्रीन को हिर्शबर्ग से लाया गया, वे शिविर में लौटने वाले पहले भगोड़े थे। हालांकि, लूफ़्टवाफ़े के एक दुभाषिए ने उन्हें बताया कि उनकी वापसी एक गलती थी और नए कमांडेंट ने उन्हें पुलिस के हवाले करने का आदेश दिया था। एक सुरक्षा दस्ता बुलाया गया और दोनों को सागन पुलिस स्टेशन ले जाया गया। वहां किसी को भी समझ नहीं आ रहा था कि उनके साथ क्या किया जाए, और उन्हें पूछताछ कक्ष में बैठा दिया गया। बाद में एक एसएस अधिकारी आया और उसने डग और पॉप से कुछ सवाल पूछे। उसने उन्हें आश्वासन दिया कि उन्हें वास्तव में शिविर में वापस जाना है, और वह व्यवस्था करने के लिए चला गया। एक घंटे बाद वह वापस आया और उन्हें खुद लूफ़्ट III ले गया और सीधे कोठरियों में डाल दिया। कुछ समय बाद गोरलिट्ज़ से दो समूह उनसे जुड़ गए, पहले कीथ ओगिल्वी, टॉमी थॉम्पसन, पॉल रॉयल और एलिस्टर मैकडॉनल्ड, और फिर मिक शैंड, शॉर्टी आर्मस्ट्रांग, टोनी बेथेल, जॉनी मार्शल, डिक चर्चिल, बॉब नेल्सन, बिल कैमरून और लेस ब्रोडरिक। नाविक नीली को भी बर्लिन से लाया गया था। उन्हें एकांत कारावास में रखा जाना था, लेकिन कूलर इतना भरा हुआ था कि उन्हें एक सेल में तीन या चार लोगों को ठूंस-ठूंस कर रखा गया था।

धीरे-धीरे उनकी कहानियाँ फैल गईं। उन्हें पार्सल स्टोर के ठीक बगल में बने एक आँगन में रोज़ाना व्यायाम करने की अनुमति दी गई थी, इसलिए भागे हुए कैदी बारी-बारी से उस छोटे से आँगन का चक्कर लगाते हुए अपने अनुभवों का ब्यौरा देते थे। पार्सल कार्यालय में काम करने वाले कैदी उनके बयानों को नोट करते थे और वरिष्ठ अधिकारियों को इसकी सूचना देते थे। जब यह बात फैली कि सुरंग से बच निकलने वाले 76 लोगों में से केवल 15 ही शिविर में लौटे हैं, तो चिंता की लहर दौड़ गई। भागने के बाद के सप्ताह में खराब मौसम को देखते हुए, यह अनुमान लगाया गया कि कई और कैदी वापस आ गए होंगे। शायद, कुछ लोगों ने सुझाव दिया, उन्हें कोल्डिट्ज़ भेज दिया गया होगा, जैसा कि पहले भी हो चुका था।

इस बीच, परिसर में तरह-तरह की अफवाहें फैल रही थीं। किसी ने कहा कि उन्होंने सुना है कि शिविर के सुरक्षा अधिकारी, ब्रॉइली को अपमानजनक तरीके से बर्खास्त कर दिया गया है, और एक अन्य कैदी ने बताया कि उत्तरी परिसर और कमांडेंटुर की तलाशी के बाद गेस्टापो ने शिविर के दो कर्मचारियों को गोली मार दी थी। एक कैदी को अपने गुंडे से पता चला कि रोजर बुशेल को डच सीमा पर नन के वेश में फिर से पकड़ लिया गया था।

कुछ परेशान करने वाली घटनाएं भी हुईं। भागने के कुछ ही समय बाद, शिविर के एक अधिकारी ने जॉन कैसन से मुलाकात की और लापरवाही से कहा कि उन्हें खुशी है कि जॉन नहीं भागा क्योंकि भागने वालों के साथ कुछ भयानक होने वाला था। उन्होंने विस्तार से कुछ नहीं बताया, लेकिन कैसन ने गौर किया कि वह सामान्य से अधिक घबराया हुआ लग रहा था।

*

6 अप्रैल का दिन भी वैसे ही शुरू हुआ जैसे भागने की घटना के बाद से बाकी दिन होते आए थे। पुलिस अधिकारियों का वही जाना-पहचाना दल उदास भाव से एपेल को हिरासत में रखे हुए देख रहा था, और आखिरकार कैदियों को उनके मनोरंजन के लिए वापस जाने की अनुमति दे दी गई। हाजिरी के बाद थोड़ी हलचल मची जब भागने वालों का आखिरी समूह गोरलिट्ज़ से लौटा, और एक्स संगठन से जुड़े लोग भागने की घटना के बारे में और खबरें सुनने के लिए उत्सुक थे। दोपहर के भोजन से ठीक पहले, गंभीर मुद्रा में पीबर परिसर में आया और नए कमांडेंट कर्नल

ब्राउन के साथ बैठक में मैसी की उपस्थिति का अनुरोध किया। 'इस बार क्या बात है?' जोशीले समूह के कप्तान ने पूछा। 'और प्रतिशोध?'

पीबर ने जवाब दिया, जो सामान्य से थोड़ा पीला दिख रहा था, 'मैं कुछ कह नहीं सकता, लेकिन यह मामला युद्धबंदी शिविरों में रहने के बाद से मेरे सामने आई सबसे भयानक घटना है।'

मैसी ने अपने दुभाषिए वैंक मरे को बुलाया और पीबर के व्यवहार से थोड़ा असहज महसूस करते हुए, ऑस्ट्रियाई अधिकारी के पीछे-पीछे कमांडेंटुर (प्रवेश कक्ष) में चले गए। उन्हें सीधे ब्राउने के कार्यालय में ले जाया गया और उन्होंने देखा कि लंबा, थका हुआ दिखने वाला कमांडेंट अपनी मेज के पीछे गंभीर मुद्रा में खड़ा था। पीबर और सहायक सिमोलीट ब्राउने के बगल में बैठ गए और फर्श को घूरने लगे। ब्राउने ने झुककर मैसी और मरे को बैठने का इशारा किया।

कमांडेंट खड़े रहे और धीमी, संयमित आवाज़ में बोलने लगे। उन्होंने कहा, 'मुझे उच्च अधिकारी द्वारा आपको कुछ सूचना देने का आदेश दिया गया है।' फिर उन्होंने घबराकर गला साफ़ किया और एक तैयार बयान पढ़ा। 'स्टालैग लुफ़्ट III, सागन के उत्तरी परिसर से हाल ही में हुए पलायन के संदर्भ में, मुझे जर्मन उच्च कमान द्वारा यह बताने का निर्देश दिया गया है कि भागने वालों में से इकतालीस को गिरफ्तारी का विरोध करते समय या पुनः गिरफ्तार होने के बाद दोबारा भागने के प्रयास में गोली मार दी गई।' ऊपर देखे बिना, ब्राउन ने कागज़ के टुकड़े को सावधानीपूर्वक मोड़ा और अपनी मेज पर रख दिया।

जर्मन भाषा न बोल पाने के कारण मैसी को कुछ भी समझ नहीं आ रहा था, लेकिन वैंक मरे ने बयान को स्तब्ध और अविश्वास से सुना। यह सोचकर कि शायद जर्मन भाषा के कारण उसे भ्रम हुआ हो, उसने पूछा, 'कितने लोग मारे गए?'

कमांडेंट ने जवाब दिया, 'इक्तालीस,' और वैंक समझ गया कि उसने पहली बार में ही सही सुना था। धीरे-धीरे और सावधानी से, मरे ने उस कथन का अनुवाद मैसी को किया। ग्रुप कैप्टन की प्रतिक्रिया बिल्कुल वैसी ही थी।

‘कितने लोगों को गोली लगी?’ उसने अचंभित होकर पूछा।

'इकतालीस,' वैंक ने उत्तर दिया।

उसके बाद जो सन्नाटा छाया, वह भयावह था। ब्राउन, जो अभी भी खड़ा था, पहले से कहीं अधिक थका हुआ लग रहा था, और सिमोलीट ने अपनी निगाहें बेस बोर्ड पर टिका दीं। एकमात्र आवाज़ पीबर के पैर हिलाने की हल्की चरमराहट थी। आखिरकार, मानो एक युग बीत गया हो, मैसी ने मुर्रे की ओर मुड़कर बात की।

'उससे पूछो कि कितने लोग घायल हुए,' उसने ब्राउन की ओर सीधे देखते हुए कहा, जबकि वैंक अनुवाद कर रहा था।

कमांडेंट ने मैसी की निगाहों से बचने के लिए थोड़ा हिल-डुल किया। उन्होंने कागज़ पर एक नज़र डाली और फिर खिड़की से बाहर देखने लगे। उन्होंने बेचैनी से कहा, 'मुझे केवल बयान पढ़ने की अनुमति है, और कोई अतिरिक्त जानकारी देने या सवालों के जवाब देने की नहीं।'

ब्राउन के जवाब का अनुवाद होने पर मैसी ने गुस्से से कहा, 'उससे दोबारा पूछो।'

ब्राउन ने पीबर और सिमोलीट की ओर देखा, जिनकी निगाहें ज़मीन से हटी ही नहीं थीं, और फिर खिड़की से बाहर देखने लगा। मैसी की घूरती निगाहों से बचते हुए उसने धीरे से कहा, 'मुझे लगता है कि कोई घायल नहीं हुआ।'

‘कोई घायल नहीं हुआ!’ मैसी ने हैरानी से कहा। ‘क्या आप मुझसे यह मानने को कह रहे हैं कि उन परिस्थितियों में इकतालीस लोगों को गोली मारी गई और एक भी घायल नहीं हुआ? क्या हर आदमी मारा गया?’

ब्राउन ने गंभीरता से कहा, 'मैं केवल विज्ञप्ति पढ़कर ही समझ सकता हूँ। मेरे पास इससे अधिक कोई जानकारी नहीं है।'

'आप मुझे नामों की सूची प्रदान करेंगे,' मैसी ने तीखे स्वर में जवाब दिया।

कमांडेंट ने दोहराया, 'मेरे पास वह जानकारी नहीं है। मेरे पास केवल विज्ञप्ति में दी गई

जानकारी है।'

मैसी ने कहा, 'मुझे उम्मीद है कि मुझे जल्द से जल्द नामों की सूची मिल जाएगी।'

'बिल्कुल।' थोड़ी देर रुकने के बाद ब्राउने ने तेज़ी से बोलना शुरू किया। 'आपको पता होना चाहिए कि मैं केवल आदेशों का पालन कर रहा हूँ। उच्च अधिकारियों ने मुझे निर्देश दिया है कि मुझे क्या बताना है; मैं इससे ज़्यादा कुछ नहीं कह सकता।'

'यह उच्च अधिकारी कौन है?' एसबीओ ने पूछा।

ब्राउन ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'बस एक उच्च अधिकारी।'

मैसी को स्पष्ट हो गया था कि साक्षात्कार जारी रखने का कोई फायदा नहीं है। ब्राउन से यह आश्वासन मिलने के बाद कि सुरक्षा अधिकारी को सूचित कर दिया जाएगा, वह कार्यालय से बाहर निकल गया, उसके पीछे-पीछे मरे और पीबर भी गए।

विदा होने से पहले, पीबर ने समूह के कप्तान की ओर मुड़कर कहा, 'कृपया आश्वस्त रहें कि इस भयानक घटना में लूफ़्टवाफ़े का कोई हाथ नहीं था। हम इसमें किसी भी तरह से शामिल नहीं थे।' उन्होंने धीरे से अपना सिर हिलाया। 'यह एक भयानक घटना है... भयानक।' पीला पड़ा हुआ और स्पष्ट रूप से भयभीत पीबर ने दोनों अधिकारियों को प्रणाम किया और एपेल जहाज पर लौट गए।

खबर को गुप्त रखा गया जबकि मैसी ने प्रत्येक कमरे से वरिष्ठ अधिकारी को शिविर के रंगमंच में बुलाया। जब वे सभी बैठ गए, तो मैसी मंच पर आए, उन्हें खबर सुनाई और साक्षात्कार की संक्षिप्त जानकारी दी। जब वरिष्ठ अधिकारी ने उन्हें जाने दिया, तो वे कुछ मिनटों तक सन्नाटे में बैठे रहे, फिर धीरे-धीरे उठे और बाहर निकल गए। कुछ ही मिनटों में पूरे परिसर को खबर मिल गई। शिविर में एक अजीब सी खामोशी छा गई क्योंकि कैदी दबी आवाज़ में खबर पर चर्चा कर रहे थे या बस बैठे-बैठे उसे समझने की कोशिश कर रहे थे। एक्स संगठन में काम करने वालों को दो सप्ताह पहले की घटनाएँ और भागने की रात की जीत और हार का सिलसिला याद आ गया। लेकिन सबसे ज़्यादा, कैदी यह जानने के लिए उत्सुक थे कि सूची में किन-किन लोगों के नाम होंगे।

*

पीबर की राय शिविर में हुई मौतों के बारे में अकेली नहीं थी, क्योंकि अधिकांश कर्मचारी स्पष्ट रूप से शर्मिंदा थे और कैदियों को यह समझाने में बहुत मेहनत कर रहे थे कि यह मामला पूरी तरह से पुलिस का है और इसका लूफ़्टवाफ़े से कोई लेना-देना नहीं है। वास्तव में, हिटलर के फांसी के आदेश को लेकर तलाशी अभियान के पहले ही दिन से सेना और पुलिस के बीच दरार बढ़ती जा रही थी। ओकेडब्ल्यू युद्धबंदी कार्यालय के प्रभारी अधिकारी, जनरल वाल्थर वॉन ग्रेवेनिट्ज़ और एडॉल्फ वेस्थॉफ, केटल द्वारा हिटलर के आदेशों के बारे में बताए जाने पर तीखी बहस में पड़ गए और मांग की कि पूरी घटना को दस्तावेज़ में दर्ज किया जाए ताकि केटल को इस कदम की गंभीरता का एहसास हो सके। हालांकि, वॉन ग्रेवेनिट्ज़ और वेस्थॉफ कुछ और नहीं कर सके; गेस्टापो ने बहुत तेज़ी से कार्रवाई की और उन्हें इस मामले से अलग कर दिया। हालांकि उन्हें खोज की प्रगति के बारे में सूचित किया जाना चाहिए था, लेकिन न तो OKW और न ही लूफ़्टवाफ़े POW संगठन को ब्रेस्लाउ गेस्टापो कार्यालय स्थित खोज मुख्यालय से, और न ही शिविर में स्थित गेस्टापो कमान चौकी से कोई रिपोर्ट मिली। उन्हें पूरी तरह से अनभिज्ञ रखा गया था।

भागने के बाद के दिनों में, वेस्थॉफ ने दबाव बनाए रखा। वह सीधे बर्लिन में आरएसए के काल्टेनब्रूनर के पास गए और उन्हें साफ-साफ कह दिया कि यह सब पागलपन है। उन्होंने जोर देकर कहा कि इस मामले को तुरंत रोका जाना चाहिए, भले ही इसके लिए फ्यूहरर से संपर्क करना पड़े। काल्टेनब्रूनर ने कुछ नहीं कहा। उन्होंने केवल वेस्थॉफ को अपनी चिंता व्यक्त करने के

लिए धन्यवाद दिया और उन्हें कार्यालय से बाहर भेज दिया।

*

15 अप्रैल को कुछ भागे हुए कैदियों को वापस नॉर्थ कंपाउंड में छोड़ दिया गया, जहाँ उन्हें गोलीबारी की चौंकाने वाली खबर मिली। पहले तो कई लोगों को लगा कि यह एक क्रूर मज़ाक है, लेकिन अन्य कैदियों ने उन्हें जल्द ही यकीन दिला दिया। उन्होंने अपने साथ हुई पूछताछ को याद किया और भयभीत होकर महसूस किया कि उन्हें दी गई धमकियाँ वाकई गंभीर थीं। उस समय यह सोचना भी भयानक नहीं लग रहा था कि वे बच गए जबकि उनके साथ के अधिकांश लोग नहीं बच पाए।

उस दिन शाम ढलने से ठीक पहले, एक अकेला गुंडा परिसर में घुसा और बुलेटिन बोर्ड पर एक कागज़ चिपका दिया। यह कोई असामान्य बात नहीं थी, और कुछ देर तक वह कागज़ हवा में लहराता रहा, इससे पहले कि किसी ने उसे पढ़ने की जहमत उठाई। जब आखिरकार एक आदमी ने उसे देखने का फैसला किया, तो वह चिल्ला उठा।

'ये नामों की सूची है!' उसने गरजते हुए कहा, और कुछ ही पलों में कई कैदी बोर्ड के पास जमा हो गए। वे सूची पढ़ने के लिए चारों ओर मंडराने लगे, तभी आगे खड़े एक कैदी ने सबको चुप रहने को कहा और नाम पढ़कर सुनाए। जब उसने पढ़ना समाप्त किया, तो पीछे से किसी ने कहा, 'ये इकतालीस नहीं, सैंतालीस हैं!' और सूची को बार-बार दोहराए जाने पर अविश्वास की फुसफुसाहट सुनाई दी। वाकई सैंतालीस नाम थे। धीरे-धीरे कैदी अपने दोस्तों और रूममेट्स को खबर देने के लिए चले गए। एक घंटे के भीतर, शिविर में हर कोई सूची जान चुका था।

गोरलिट्ज़ में रह चुके लोगों के लिए यह सदमा शायद सबसे बड़ा था, क्योंकि बाईस नाम उन पुरुषों के थे जिन्हें वहाँ बंदी बनाया गया था। दरअसल, कीथ ओगिल्वी ने उस सुबह अपने पूछताछकर्ता की मेज पर मृत्यु सूची देखी थी। जेल से ले जाए गए पहले दो समूहों को मौत के घाट उतार दिया गया था, और चौथे समूह के साथ भी ऐसा ही हुआ था। गोरलिट्ज़ में रह चुके कई लोगों को उन गार्डों का भयावह रूप याद था जो समूहों को ले जा रहे थे। अगले कुछ दिनों तक, लुफ़्ट III के कैदी मृतकों की अपनी निजी यादों के साथ जीते रहे। सम्मान और शोक के प्रतीक के रूप में, प्रत्येक कैदी ने अपनी आस्तीन पर एक छोटा काला हीरा सिल लिया। मौतों की पूरी कहानी सामने आने में कई साल लग जाएंगे, लेकिन फिलहाल, इस त्रासदी को स्वीकार करना महत्वपूर्ण था।

*

रोजर बुशेल और बर्नार्ड शेइडहाउर को सारब्रुकन के पास एक खेत में गोली मार दी गई थी। रोजर की मौत अप्रत्याशित नहीं थी। सिडनी डाउज़ और अन्य लोगों ने भागने से पहले उसे चेतावनी देने की कोशिश की थी, लेकिन वह फिर भी जाने के लिए दृढ़ था। कई लोगों का कहना था कि प्राग में दोबारा पकड़े जाने के बाद से वह मानो उधार के समय पर जी रहा था।

माइक केसी की 'जंगल में भागने की कोशिश' गोरलिट्ज़ के बाहर गोलियों की बौछार में खत्म हो गई। उनके साथ इयान क्रॉस, टॉम ली, जॉर्ज वाइली (वह युवा दिखने वाला कनाडाई जिसे अपनी जीत की उम्मीद कभी नहीं थी), जॉनी पोहे और अल हक भी मारे गए। गंभीर फ्रॉस्टबाइट से पीड़ित आखिरी दो लोगों ने निश्चित रूप से फिर कभी भागने की कोशिश नहीं की।

माइक केसी को याद करते हुए, कई कैदियों ने उनके रोमन कैथोलिक धर्म के बारे में कही गई बातों को याद किया: 'मुझे आगे बढ़ने की प्रेरणा इस बात से मिलती है कि अगर मेरे साथ कुछ भी हो जाए, तो मुझे पता है कि मेरा विश्वास कभी डगमगाएगा नहीं।' माइक सभी कैदियों में सबसे अधिक धर्मनिष्ठ थे। डुलैग लुफ्ट में वे प्रार्थना सभा के लिए व्यवस्था सुनिश्चित करने के

लिए जिम्मेदार थे, और लुफ्ट III में वे प्रतिदिन पवित्र भोज ग्रहण करते थे। अल हाके की तरह, केसी ने भी कभी यह विश्वास नहीं खोया कि ईश्वर हर परिस्थिति में उनकी रक्षा करेंगे।

डेनिस कॉचरन की हत्या नैट्ज़वीलर यातना शिविर जाते समय रास्ते में कर दी गई थी। अपनी आखिरी यात्रा के दौरान, वह लगातार मज़ाक कर रहे थे। जब उनके एक गार्ड ने उनसे अमेरिकी सेना वायु सेना के फ्लाइंग ऑफिसर के समकक्ष पद के बारे में पूछा, तो डेनिस ने हंसते हुए जवाब दिया, 'पदनाम की परवाह मत करो - असल बात तो यह है कि उसे मुझसे चार गुना ज़्यादा वेतन मिलता है!'

उन दिनों में बहुत आत्ममंथन करने वाले लोगों में से एक एलेक्स कैसी भी थे। सूची देखते ही उन्हें अपने चार रूममेट्स के नाम मृतकों में देखकर गहरी बेचैनी हुई: टिम वालेन, हेनरी पिकार्ड और गॉर्डन ब्रेटेल, इन तीनों की हत्या रेने मार्सिंकस के साथ डैनज़िग के पास कर दी गई थी; और टोनी हेयटर, जिन्हें नैट्ज़वीलर के पास सड़क किनारे गोली मार दी गई थी। एलेक्स के दूसरे रूममेट, डेस प्लंकेट के बारे में कोई खबर नहीं थी। कैसी अपने बिस्तर पर बैठे-बैठे अपने और अपने दोस्तों द्वारा की गई पागलपन भरी हरकतों के बारे में सोचने लगे और खुद को बेहद अकेला महसूस करने लगे।

वॉली वैलेंता और एडम कोलनोव्स्की दोनों के डर सच साबित हुए: गोरलिट्ज़ के ठीक बाहर एक खुले मैदान में हंक हम्फ्रीज़, जॉर्ज मैकगिल, सिरिल स्वेन, पैट लैंगफोर्ड, ब्रायन इवांस, बॉब स्टीवर्ट और हैंक बर्कलैंड के साथ उनकी भी जान चली गई। उनके साथ चाज़ हॉल भी शहीद हो गए, जिन्होंने जेल की दीवार पर मज़ाक में लिखा था, 'हम जो मरने वाले हैं, आपको सलाम करते हैं।'

जॉन स्टीवंस और जोहान्स गौव्स की मौत म्यूनिख के पास हुई, और उन्हें मारने वाले बदमाशों ने भागते समय गोली लगने का भ्रम पैदा करने के लिए एक टेलीग्राफ के खंभे पर गोलियां भी दागीं। टॉम किर्बी-ग्रीन और गॉर्डन किडर को ज़्लिन में बेरहमी से प्रताड़ित करने के बाद, मैरिश ओस्ट्राउ के पास ले जाकर गोली मार दी गई।

जब मिक शैंड ने सूची पढ़ी, तो डेनिस स्ट्रीट का नाम देखकर उसने कसम खाई, जिसकी हत्या नेविल मैकगार, जैक ग्रिसमैन, सैंडी गन, हेरोल्ड मिलफोर्ड और जॉन एफ. विलियम्स के साथ कर दी गई थी। अगर डेनिस की सैगन वापस जाने की इच्छा न होती, तो शैंड उस आखिरी यात्रा में स्ट्रीट की जगह ले लेता।

जिमी वर्नहम को चेक आतिथ्य सत्कार का भी कोई अवसर नहीं मिला था। उन्हें हिर्शबर्ग से ले जाया गया और दो पोलिश नागरिकों टोनी किवनास्र्की और काज़ पावलुक, तथा हंसमुख ग्रीक नागरिक निक स्कैंटज़िकास के साथ गोली मार दी गई। उनसे कुछ ही दूरी पर विली विलियम्स, जॉनी बुल, रस्टी कीरथ और जेरज़ी मोंडशाइन की भी मृत्यु हो गई थी। बेचारे जेरज़ी की भविष्यवाणी सही साबित हुई: वह अपनी पत्नी और बच्चे को फिर कभी नहीं देख पाए। जॉनी स्टोवर की भी उसी क्षेत्र में मृत्यु हो गई, लेकिन सटीक समय और स्थान अज्ञात है। हालांकि उस समय उन्हें इसका एहसास नहीं था, लेकिन इवो टोंडर भाग्यशाली रहे, जो रीचेनबर्ग जेल में ही रहे।

डेनमार्क भाग रहे चार लोग - जिमी कैटानाच, अर्नोल्ड क्रिस्टेंसन, हाल्डोर एस्पेलिड और निल्स फुगलेसांग - सूची में शामिल थे। उन्हें कील जेल से दो कारों में ले जाया गया, जिमी कैटानाच पहली कार में और बाकी तीन लोग दूसरी कार में। कील से गुजरते समय, जिमी के साथ सवार गेस्टापो अधिकारी जोहान्स पोस्ट ने बड़ी सहजता से बातचीत की और दर्शनीय स्थलों की ओर इशारा किया। फिर उसने बेपरवाही से कहा, 'हमें चलना होगा - मुझे तुम्हें गोली मारनी है।'

जिमी को समझ नहीं आ रहा था कि उसने क्या सुना है, इसलिए उसने बस इतना कहा, 'माफ़ कीजिए?'

'मैंने कहा कि मुझे तुम्हें गोली मारनी होगी,' पोस्ट ने बिना किसी भावना के जवाब दिया।

‘बहुत हो गए ये घटिया मज़ाक,’ कैटानाच मुस्कुराया। ‘मुझे सागन में कूलर तक जाना है। मैंने जेल शिविर से भागने के अलावा कुछ भी गलत नहीं किया है – आप मुझे गोली नहीं मार सकते।’

‘ये मेरे आदेश हैं,’ पोस्ट ने प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा करते हुए कहा। कैटानाच चुपचाप बैठा रहा। जब गाड़ी एक घास के मैदान पर रुकी और जिमी को बाहर बुलाया गया, तो उसके मन में कोई संदेह नहीं रह गया। पोस्ट ने फिर से कहा कि उसे गोली मार दी जानी है।

जिमी कैटानाच की आंखें साफ थीं और आवाज स्थिर थी। उन्होंने बस इतना ही कहा, 'क्यों?'

कुछ मिनट बाद दूसरी कार आकर रुकी और हाल्डोर, निल्स और अर्नोल्ड को मैदान में ले जाया गया। वहाँ उन्होंने जिमी का शव गीली घास पर औंधा पड़ा देखा। उनमें से एक चीखते हुए भागा, लेकिन दो कदम चलने से पहले ही गोलियों की बौछार हो गई। पहली ही गोली में तीनों की मौत हो गई। अर्नोल्ड क्रिस्टेंसन अपने पिता की डेनिश जन्मभूमि को देखे बिना ही मर गया।

एक महीने से भी अधिक समय बाद, 18 मई को, बुलेटिन बोर्ड पर दूसरी सूची दिखाई दी, जिसमें केवल तीन नाम थे: डैनी क्रोल, कुकी लॉन्ग और पावेल टोबोल्स्की। डैनी और टोब का डर सही साबित हुआ, और जब कुकी की मृत्यु की खबर बेलारिया पहुंची, तो मैक्स एलिस को याद आया कि अप्रैल के मध्य में उस दिन ट्रक आंगन में आया था और कुकी के अब उनके दुखों को साझा करने के लिए न होने की बात जानकर उन्हें कितनी निराशा हुई थी।

अध्याय **19**

‘वायु मंत्रालय खेद व्यक्त करता है...’

गोलीबारी की खबर लुफ्ट III के बाकी हिस्सों में जंगल की आग की तरह फैल गई। ईस्ट कंपाउंड में, सुबह की प्रार्थना सभा आमतौर पर ड्यूटी ऑफिसर के परेड ग्राउंड में आकर 'सुप्रभात, सज्जनों!' कहने से शुरू होती थी, जिस पर वहां मौजूद युद्धबंदियों ने बड़े ही सौहार्दपूर्ण ढंग से 'सुप्रभात, महोदय!' कहा। हत्याओं की खबर फैलने के अगले दिन, ड्यूटी ऑफिसर प्रार्थना सभा के मैदान में प्रकट हुए और अपने विशिष्ट, हंसमुख अंदाज में चिल्लाए, 'सुप्रभात, सज्जनों!' लगभग एक हजार युद्धबंदियों ने सीधे खड़े होकर सावधान की मुद्रा अपनाई, लेकिन वहां सन्नाटा पसरा रहा।

अगले दिन यह तय किया गया कि ईस्ट कंपाउंड में सभी की दोबारा तस्वीरें ली जाएं, ताकि भागने की स्थिति में पहचान आसान हो सके। प्रक्रिया के बीच में ही, कुछ लड़कों ने फोटो एरिया के पास झगड़ा शुरू कर दिया और हाथापाई में कैमरा चोरी हो गया। कैमरा लौटाने से पहले, उन्होंने डरे हुए फोटोग्राफर को अपने कैमरे के लिए कुछ फिल्म रोल देने के लिए मजबूर किया।

बाद में शिविर में पचास लोगों के सामान की नीलामी हुई, जिससे प्राप्त धनराशि उनके परिवारों को दी गई। बोलियाँ पाउंड में लगाई गईं और शिविर के वित्तीय मामलों को संभालने वालों को सादे कागज़ पर लिखे चेक दिए गए। यह जानते हुए कि लाभ कहाँ जा रहा है, लोगों ने तेज़ी से बोली लगाई और उत्तरी परिसर में अस्थायी रूप से तैनात ग्लेम्निट्ज़ ने उन्हें और भी प्रोत्साहित किया। वह कमरे के पीछे खड़े होकर समय-समय पर 'बिएटन, माइन हेरेन, बिइटन!' (बोली लगाइए, सज्जनों, बोली लगाइए!) कहकर बोली लगाने वालों का हौसला बढ़ाते रहे। पैट लैंगफोर्ड के निजी कपड़ों की 104 पाउंड की बोली लगी, जबकि जैक लियोन ने टॉम किर्बी-ग्रीन के लकड़ी के सूटकेस के लिए 25 पाउंड का भुगतान किया। अगले कुछ महीनों तक यह सूटकेस जैक के लिए बहुत उपयोगी साबित हुआ, लेकिन 1945 में मार्च के दौरान उसे इसे छोड़ना पड़ा।

भागने के कुछ हफ्तों बाद, कूकी लॉन्ग के लिए एक आधिकारिक संदेश आया। उसमें लिखा था, 'हमें आपको यह सूचित करते हुए खुशी हो रही है कि आपने अर्थशास्त्र में कला स्नातक की डिग्री की सभी आवश्यकताओं को सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है।'

बाद में, शायद यह याद दिलाने के लिए कि गेस्टापो का इरादा कितना गंभीर था, मारे गए वायुसैनिकों के बिस्तरों को उन युद्धबंदियों से भर दिया गया जिन्होंने यातना शिविरों में समय बिताया था। पैट लीसन के कमरे में रहने वालों के साथ एक अमेरिकी बमवर्षक भी था जो ऑशविट्ज़ से आया था। उसने वहाँ जो कुछ देखा था उसके बारे में ज़्यादा कुछ नहीं कहा, लेकिन उसकी उपस्थिति से दिया गया संदेश बिल्कुल स्पष्ट था।

कर्नल ब्राउन के आश्वासनों के बावजूद, सुरक्षा बलों को भागने वालों की मौत की सूचना नहीं दी गई थी और उन्हें 17 अप्रैल को शिविर के नियमित निरीक्षण तक इसकी जानकारी नहीं मिली। उसी समय, ग्रुप कैप्टन मैसी, जिन्हें पैर में चोट लगने के कारण इंग्लैंड वापस भेजा जा रहा था, ने स्विस अधिकारियों को घटना के बारे में और जानकारी दी। उनके पास मौजूद सीमित जानकारी के आधार पर, स्विस अधिकारियों ने जर्मन विदेश मंत्रालय से मामले की जांच करने का आग्रह किया, लेकिन विदेश मंत्रालय ने यह कहते हुए इनकार कर दिया कि आरएसएचए (RSHA) गोपनीयता के आवरण में काम करता है। अस्थायी रूप से टालमटोल का सामना करने के बाद, स्विस अधिकारियों ने अपने पास मौजूद थोड़ी सी जानकारी लंदन भेजने का फैसला किया।

परिजनों को सूचित किए जाने के बाद, एंथोनी ईडन ने हाउस ऑफ कॉमन्स के समक्ष हत्याओं की घोषणा की। उनका बयान संक्षिप्त था, लेकिन इस खबर ने मित्र देशों को स्तब्ध कर दिया और दुनिया भर में सुर्खियां बटोरीं। हालांकि, इसका सबसे अधिक प्रभाव उन पचास लोगों के घरों पर पड़ा।

*

मई की एक शाम, कार्डिफ़ में ब्रायन इवांस की माँ अपने घर में भयानक डर के मारे जाग उठीं। एक डरावने सपने में उन्होंने ब्रायन को अपने बेडरूम की खिड़की पर खून बहते हुए देखा था। उन्होंने बत्ती जलाई, लेकिन ज़ाहिर है, बाहर रात के अंधेरे के सिवा कुछ नहीं था। उस सुबह एक टेलीग्राम आया: 'वायु मंत्रालय आपको यह सूचित करते हुए खेद व्यक्त करता है...'

टॉन्टन के ऑक्टागन चैपल में स्थानीय बच्चे संडे स्कूल के लिए इकट्ठा हुए थे। कुछ मिनट देरी से, सेसिल लॉन्ग हॉल में दाखिल हुए, जो हमेशा की तरह बहुत गंभीर दिख रहे थे। उन्होंने शांति बनाए रखने का अनुरोध किया और फिर कांपती हुई आवाज़ में घोषणा की कि उनका बेटा लेस्ली उन वायुसैनिकों में शामिल था जिनकी सैगन से भागने के बाद हत्या कर दी गई थी। सभा में मौजूद कई लोग लेस को अच्छी तरह जानते थे, और वे यह खबर सुनकर सन्नाटे में बैठ गए। फिर, आँखों से आँसू बहते हुए, सेसिल ने पचास मृतकों के लिए प्रार्थना की, जिसकी शुरुआत उन शब्दों से हुई जिन्हें ऑक्टागन चैपल के बच्चे अच्छी तरह जानते थे: 'सिर झुकाएँ, आँखें बंद करें, कृपया बात न करें...'

हत्याओं की घोषणा के बाद के महीने उन पचास लोगों के परिवारों के लिए बेहद कठिन थे। न तो मोर्ले वाइली और न ही विलियम कैटानाच अपने बेटों की मृत्यु के बाद लंबे समय तक जीवित रहे, और केसी और शेइडहाउर परिवारों के लिए भी दोहरी त्रासदी थी। मार्जरी केसी ने न केवल अपने पति को खोया, बल्कि उनकी बहन ने भी मार्च 1944 में बर्मा में अपने पति को खो दिया। कम से कम जीन शेइडहाउर को अपने बेटे बर्नार्ड के खोने का दुख ज्यादा समय तक नहीं सहना पड़ा। सितंबर में, मित्र देशों के बम से ब्रेस्ट में उनके परिवार का अपार्टमेंट नष्ट हो जाने पर उनकी मृत्यु हो गई।

ब्रिटेन में रहने वाले उन रिश्तेदारों को 20 जून, 1944 को लंदन के सेंट मार्टिन इन द फील्ड्स में आयोजित एक स्मारक सेवा में सांत्वना मिली। गणमान्य व्यक्ति, परिवार, मित्र और स्वदेश लौटे युद्धबंदियों ने सुबह के मध्य में ही पहुंचना शुरू कर दिया था। वे डोमिनियन एयर क्रू के जवानों की दो पंक्तियों के बीच से प्रवेश कर रहे थे, और दोपहर तक जब सेवा शुरू हुई, तब तक चर्च खचाखच भरा हुआ था। चर्च के दक्षिणी भाग में पचास मृतकों के रिश्तेदार, माता-पिता, भाई-बहन, पत्नियां और बच्चे, मित्र और प्रियजन बैठे थे। कार्डिफ से कैप्टन और श्रीमती इवांस और ब्रायन के भाई नोएल, डरहम लाइट इन्फैंट्री की वर्दी में आए थे। हेयटर परिवार बर्गक्लेयर ग्रेंज से आया था, और उनके बगल में एंथोनी की अनौपचारिक मंगेतर सिंथिया हेनस्टॉक बैठी थीं। चेर्टसी से ब्रेटेल, गोल्डर्स ग्रीन से वालेन, हियरफोर्ड से ग्रिसमैन और औचटरार्डर से डॉ. और श्रीमती गन - सभी चर्च की पहली बेंचों पर बैठे थे। उनके साथ सर आर्थर और लेडी स्ट्रीट भी बैठे थे, जिन्होंने मारे गए वायुसैनिकों के अन्य परिवारों के साथ रहने के लिए गणमान्य व्यक्तियों के साथ अपनी सीटें छोड़ दीं।

रिश्तेदारों के पीछे स्वदेश लौटे कैदी और उनके साथी सैनिक बैठे थे, सभी ने पूरी सैन्य वर्दी पहनी हुई थी। पहली सीट पर ग्रुप कैप्टन मैसी बैठे थे, उनका लंगड़ा पैर गलियारे में निकला हुआ था, और उनके बगल में पैडी बायरन थे, जिन्होंने स्वदेश वापसी पाने के लिए पागलपन का नाटक किया था। इन दोनों को ही पिछले एक साल में सागन में जो कुछ हुआ था, उसके बारे में ब्रिटिश द्वीपों में किसी और से ज़्यादा जानकारी थी।

चर्च के उत्तरी भाग में, गलियारे के पार, रॉयल एयर फ़ोर्स के सर्वोच्च अधिकारी बैठे थे: वायु

सेना प्रमुख सर चार्ल्स पोर्टल; बमवर्षक कमान प्रमुख सर आर्थर हैरिस; परिवहन कमान प्रमुख सर फ्रेडरिक बोहिल; वायु राज्य सचिव सर आर्चीबाल्ड सिंक्लेयर; और आरसीएएफ, आरएएएफ और आरएनजेडएएफ के कमांडर। लॉर्ड डाउडिंग और लॉर्ड ट्रेंचर्ड भी उपस्थित थे, जो अब अस्सी वर्ष से अधिक आयु के हो चुके थे, लेकिन फिर भी उस सेवा में गहरी व्यक्तिगत रुचि रखते थे जिसकी स्थापना में उन्होंने मदद की थी, साथ ही एडमिरल्टी और सेना परिषद के प्रतिनिधि भी मौजूद थे।

सैन्य प्रतिनिधियों के पीछे राजनीतिक प्रतिनिधि मौजूद थे, जिनमें बेल्जियम, चेकोस्लोवाकिया, ग्रीस, नॉर्वे और पोलैंड के राजदूत, साथ ही दक्षिण अफ्रीका संघ, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, दक्षिणी रोडेशिया और न्यूजीलैंड के उच्चायुक्त शामिल थे। फ्रांसीसी राष्ट्रीय समिति के एक सदस्य और डोमिनियन और भारत के राज्य सचिव भी उपस्थित थे। महत्वपूर्ण बात यह है कि महानगर के पुलिस आयुक्त, सेना के न्यायाधीश-महाधिवक्ता और केंद्रीय आपराधिक न्यायालय के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे।

ठीक दोपहर 12 बजे, प्रार्थना सभा शुरू होते ही एल्गर के 'निम्रोद थीम एंड वेरिएशन्स' की मधुर धुन से पूरा गिरजाघर गूंज उठा। फिर, एयरमैन द्वारा बजाए गए स्ट्रिंग और ऑर्गन वाद्ययंत्रों की संगत में, सभा ने पहला भजन, 'उन सभी संतों के लिए जो अपने परिश्रम से विश्राम करते हैं' गाया। फूलों से सजे मंच से, रेवरेंड एरिक लवडे ने भजन 23, 'प्रभु मेरा चरवाहा है, इसलिए मुझे किसी चीज की कमी नहीं हो सकती' पढ़ा। इसके बाद सर चार्ल्स पोर्टल ने आगे आकर सुलेमान की बुद्धि और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक से लिया गया पाठ पढ़ा। उन्होंने पढ़ा, 'बुद्धिमानों की दृष्टि में वे मरते हुए प्रतीत होते हैं, और उनका प्रस्थान दुख माना जाता है, और उनका हमसे बिछड़ना पूर्ण विनाश समझा जाता है, परन्तु वे शांति में हैं। क्योंकि यद्यपि उन्हें मनुष्यों की दृष्टि में दंडित किया जाता है, तो भी उनकी आशा अमरता से परिपूर्ण है।'

'लेट सेंट्स ऑन अर्थ इन कॉन्सर्ट सिंग' भजन के बाद, आरएएफ के मुख्य पादरी, रेवरेंड जे.ए. जैगो ने भाषण दिया। उन्होंने बुलंद और स्पष्ट स्वर में पढ़ा, "उनके बलिदान में ईश्वर की कृपा थी। उनके अदम्य साहस, अटूट आशा और सर्वोच्च बलिदान में, आज के समय में भी, जब वीरता के अनेक उदाहरण मौजूद हैं, कुछ ऐसा अनूठापन था। अपनी स्वतंत्रता को कुछ हद तक खो देने के बावजूद, वे लड़ते रहे, अपने कर्तव्य को दुगनी शिद्दत से निभाते रहे।" यह एक मार्मिक और भावपूर्ण श्रद्धांजलि थी, जिसे अंतिम भजन, 'आई वाउ टू थी, माई कंट्री, ऑल अर्थली थिंग्स अबव' ने और भी प्रभावशाली बना दिया। फुलहम के बिशप द्वारा दिए गए आशीर्वाद के बाद, 'लास्ट पोस्ट' और 'रेवेली' की स्पष्ट और मधुर तुरही की ध्वनि चर्च में गूंजी और उपस्थित लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। पर्सेल के 'ट्रम्पेट वॉलंटरी' की धुन पर, शोक संतप्त लोग धीरे-धीरे चर्च से बाहर निकले।

भागने की घटना के बाद के महीनों में, सर आर्थर स्ट्रीट ने परिवारों के बीच संपर्क बनाए रखा और अपने आधिकारिक पद का उपयोग करते हुए उन्हें मामले की जानकारी देते रहे। उन्होंने यथासंभव अधिक से अधिक परिवारों से संपर्क बनाए रखा और मामले से संबंधित जो भी खबर उन्हें मिलती, उसे सावधानीपूर्वक आगे पहुंचाते रहे।

*

जैसे-जैसे आक्रोश का तूफान बढ़ता गया और तटस्थ देशों में फैलने लगा, जर्मन सरकार ने फैसला किया कि वह अब इस मामले को नजरअंदाज नहीं कर सकती। कीटल ने विदेश मंत्रालय के एक संपर्क अधिकारी को जर्मन पक्ष की ओर से जवाब तैयार करने का निर्देश दिया, लेकिन उस अधिकारी को मामले की कोई जानकारी नहीं थी और न ही उसे कीटल या ओकवाग युद्धबंदी कार्यालय से कोई सूचना मिली। अंतिम उपाय के रूप में, अधिकारी आरएसएएचए गया और उसे अलग-अलग गेस्टापो कार्यालयों द्वारा तैयार की गई मौतों की फर्जी रिपोर्टें दी गईं। ये रिपोर्टें विदेश

मंत्री जोआचिम वॉन रिबेंट्रोप को सौंप दी गईं और निर्देश दिया गया कि इनका उपयोग जर्मन जवाब के आधार के रूप में किया जाए। न तो वॉन रिबेंट्रोप और न ही उनके अधीनस्थ आरएसएएचए द्वारा बताई गई हत्याओं पर गंभीरता से विश्वास करते थे, लेकिन अन्य कोई जानकारी न होने के कारण, उन्हें अपना बयान तैयार करने के लिए इनका उपयोग करना पड़ा।

जून में जब वह बयान आखिरकार सामने आया, तो उसमें यही कहानी दोहराई गई कि कैदियों को गिरफ्तारी का विरोध करने या भागने की कोशिश करते समय गोली मार दी गई थी। इसके अलावा, उसमें दावा किया गया कि यह भागने की योजना लंदन से बनाई गई थी और इसका समन्वय जर्मनी को अस्थिर करने और उसके प्रशासन को पंगु बनाने के प्रयास के रूप में किया गया था। विदेश मंत्रालय के बयान को ब्रिटिश सरकार ने सिरे से खारिज कर दिया और एंथनी ईडन ने वादा किया कि हत्यारों को कड़ी से कड़ी सजा दी जाएगी। एक बार फिर, मित्र देशों और तटस्थ देशों में जनमत की लहर दौड़ गई। पुर्तगाल, स्विट्जरलैंड और स्वीडन में जनमत पूरी तरह से उनके खिलाफ होने के कारण, नाजियों को एक और स्पष्टीकरण देने के लिए मजबूर होना पड़ा।

बेर्चटेसगाडेन में, विदेश मंत्रालय और आरएसए के प्रतिनिधियों ने फ्यूहरर से मुलाकात कर वाकयुद्ध की अगली रणनीति पर चर्चा की। गहन विचार-विमर्श के बाद, वॉन रिबेंट्रोप ने हिटलर को एक मसौदा प्रस्तुत किया, जिसे हिटलर ने अस्वीकार कर दिया और उसे पुनः लिखने की मांग की। फ्यूहरर को वह मसौदा भी संतोषजनक नहीं लगा और कुछ देर की खामोशी के बाद उन्होंने आदेश दिया कि इस मामले पर आगे कोई चर्चा नहीं होगी। मामला यहीं समाप्त माना गया।

अंतिम प्रहार के रूप में, जुलाई के अंत में लंदन को एक अंतिम आरोपात्मक टेलीग्राम भेजा गया। इसमें जर्मनी के मूल रुख की पुष्टि की गई और गर्वपूर्वक कहा गया कि लंदन में नियोजित 'व्यवस्थित कार्रवाई' को सुरक्षा बलों ने विफल कर दिया है। अंत में, संदेश में कहा गया कि इस मामले पर आगे कोई पत्राचार स्वीकार नहीं किया जाएगा।

कुल मिलाकर देखा जाए तो विदेश मंत्रालय इस मामले से छुटकारा पाकर शायद खुश था। तटस्थ देशों में जनमत को लेकर चिंतित वॉन रिबेंट्रोप को संभवतः गेस्टापो के कृत्यों का दुनिया के सामने बचाव करना पड़ रहा था, जबकि सुरक्षा सेवा गोपनीयता की आड़ में छिपी हुई थी। विदेश मंत्रालय और आरएसएएचए के बीच, ग्रेट एस्केप के बाद केवल मनमुटाव ही रह गया था।

*

शब्दों का युद्ध छिड़ा हुआ था, लेकिन लुफ्ट III और मित्र देशों में सभी संबंधित पक्षों के मन में अभी भी गहरी आशंकाएं थीं। पचास भागने वालों की मौत की पुष्टि हो चुकी थी और पंद्रह शिविर में लौट आए थे, जिससे ग्यारह लापता रह गए थे। जल्द ही खबर आई कि जेन्स मुलर, पेर बर्ग्सलैंड और बॉब वैन डेर स्टॉक इंग्लैंड जा रहे हैं, लेकिन बाकी आठ लोगों का क्या हुआ, यह युद्ध समाप्त होने तक पता नहीं चल सका। उनकी कहानियां कई मायनों में सबसे विचित्र थीं।

क्लाटाउ से डेस प्लंकेट और फ्रेडी ड्वोरक को लेने वाली काली कार उन्हें प्राग के कुख्यात पैंकराक जेल तक ले गई। क्लाटाउ से निकलने से पहले, डेस को अंतिम पूछताछ के लिए गेस्टापो मुख्यालय ले जाया गया। अपनी कहानी को कई बार दोहराए जाने के कारण, वह अब उसे बेझिझक और बिना किसी झिझक के बता सकता था। उसने राशन कार्ड उपलब्ध कराने वाले व्यक्ति का झूठा विवरण दिया और जब उससे पूछा गया कि उनके जाली कागजात किसने बनाए, तो उसने कहा कि उसे भागने का सारा सामान एक ही पैकेट में मिला था और उसे नहीं पता था कि यह किसने बनाया था। पूरी पूछताछ के दौरान, डेस लगातार दुभाषिए को टोककर और अंग्रेजी व्याकरण और उच्चारण के बिंदुओं पर उसे सुधारकर पूछताछ की कड़ी को तोड़ता रहा। दोपहर तक, पूछताछकर्ताओं ने हार मान ली और प्लंकेट को वापस जेल भेजने का निर्देश दिया।

अगले दो महीनों तक कुछ नहीं हुआ। डेस और फ्रेडी अपनी कोठरियों में बैठे सज़ा का इंतज़ार करते रहे। फिर, जुलाई की शुरुआत में एक दिन, जेल के उनके हिस्से को खाली करके आँगन में भेज दिया गया और सैनिकों ने कोठरियों में प्रतिबंधित सामान की तलाशी ली। घास पर धूप का आनंद लेते हुए डेस को अचानक एक धीमी सी आवाज़ सुनाई दी, 'प्लंक! प्लंक!' और उसने ऊपर देखा तो ऊपरी खिड़कियों में से एक में एक जाना-पहचाना चेहरा दिखाई दिया। वह इवो टोंडर था।

डेस अपने पुराने दोस्त और भागने में साथ देने वाले साथी को देखकर बहुत खुश हुआ और अगले एक घंटे तक वे अपनी यात्राओं के किस्से सुनाते रहे। टोंडर 17 अप्रैल तक राइशेनबर्ग जेल में बंद रहा, जब एक गार्ड उसकी कोठरी में आया और घोषणा की कि उसे वापस सागन ले जाया जा रहा है। हालांकि, उसे इसके बजाय प्राग ले जाया गया, जहां उसे अपने अपहरणकर्ताओं को, जो पहले कभी उस शहर में नहीं आए थे, पैंकराक का रास्ता बताने की जिम्मेदारी सौंपी गई।

वहाँ एक सप्ताह बिताने के बाद, उन्हें पूछताछ के लिए शहर के दूसरी ओर गेस्टापो मुख्यालय ले जाया गया, जो आश्चर्यजनक रूप से सुखद रहा। इवो को एक सुंदर कार्यालय में ले जाया गया, जहाँ एक प्यारी सचिव भी मौजूद थीं, और उन्हें पूछताछकर्ता की मेज के सामने एक छोटे से स्टूल पर बैठने का इशारा किया गया। यह जानते हुए कि इससे उनकी स्थिति स्पष्ट रूप से प्रतिकूल हो जाएगी, वे मेज की ओर बढ़े और एक ही झटके में पास की एक सीधी पीठ वाली कुर्सी को अपने पैर से फंसाकर मुस्कुराते हुए बैठ गए। अधिकारी ने उन्हें लगभग न के बराबर आँख मारी, और उसके बाद साक्षात्कार सौहार्दपूर्ण ढंग से आगे बढ़ा। वह व्यक्ति 1939 में इवो के इंग्लैंड भागने में सबसे अधिक रुचि रखता था और उसने सागन से संबंध टूटने का जिक्र केवल सरसरी तौर पर किया। कोई जान से मारने की धमकी या गंभीर चेतावनी नहीं दी गई। सब कुछ बहुत ही सभ्य तरीके से हुआ। बाद में, इवो को गेस्टापो के तौर-तरीकों का दूसरा पहलू तब देखने को मिला जब जेल के नाई ने उसे एक चिट्ठी थमा दी जिसमें लिखा था कि उसकी माँ, उसका भाई, उसके भाई की नई पत्नी और उसके माता-पिता, जिनसे इवो कभी नहीं मिला था, को भी गिरफ्तार कर पैंकराक में डाल दिया गया है। माता-पिता को छह सप्ताह और भाभी को दो महीने तक हिरासत में रखा गया। इवो की माँ और भाई युद्ध समाप्त होने तक पैंकराक में ही रहे।

21 नवंबर को इवो और फ्रेडी ड्वोरक को प्राग की सैन्य जेल में स्थानांतरित कर दिया गया और महीने के अंत में उन्हें बार्थ ले जाया गया। उन्हें मुख्य परिसर में रिहा कर दिया गया, लेकिन दो सप्ताह बाद उन्हें फिर से गिरफ्तार कर लिया गया और राजद्रोह के मुकदमे के लिए लीपज़िग भेज दिया गया। आश्चर्य की बात नहीं है, दोनों को मौत की सजा सुनाई गई (इवो ने उस समय कहा था कि एक उत्कृष्ट वकील की सेवाएं लेने के बावजूद) और उन्हें अपनी सजा के क्रियान्वयन की प्रतीक्षा करने के लिए कोल्डिट्ज़ भेज दिया गया। समय उनके पक्ष में था, क्योंकि 16 अप्रैल, 1945 को, इवो के जन्मदिन पर, शिविर को मुक्त कर दिया गया और उन्हें और फ्रेडी को रिहा कर दिया गया।

*

इवो और फ्रेडी के चले जाने के बाद डेस प्लंकेट पैंकराक में ही रहे और उनका समय बहुत कठिन बीता। कई बार उनसे जानकारी निकालने के लिए जासूसों को उनकी कोठरी में भेजा गया, लेकिन डेस अपनी और फ्रेडी की तय कहानी पर अडिग रहे। उनके दृढ़ संकल्प के कारण ही युद्ध में उनकी मदद करने वाले सभी प्रतिरोधक बच पाए। 1 दिसंबर को प्लंकेट को ह्रादसिन सैन्य जेल में स्थानांतरित कर दिया गया और वहाँ से 25 जनवरी, 1945 को बार्थ भेज दिया गया।

बार्थ पहुँचने तक डेस को गोलीबारी की घटनाओं के बारे में पता ही नहीं चला। वह सदमे से व्याकुल हो गया। कई दिनों तक वह इस जानकारी को समझ नहीं पाया और फिर उसे लगने लगा कि पूछताछ के दौरान उसने कुछ ऐसा कह दिया होगा जिससे उसके साथी भागने वाले फँस गए।

उसने पैंकराक में बिताए अपने महीनों को अनगिनत बार याद किया, घटनाओं को अपने दिमाग में दोहराया और यह याद करने की कोशिश की कि क्या उसने किसी जासूस को कुछ बता दिया था। स्थिति और भी खराब हो गई क्योंकि बार्थ में कोई भी डेस को नहीं जानता था, और एक अधिकारी ने उस पर जर्मन जासूस होने का आरोप लगाया। पचास लोगों की मौत का कारण बनने के अपने ही किसी काम को लेकर आश्वस्त डेस ने अपनी जान देने की तैयारी कर ली।

अपने आखिरी पार्सल से कुछ रेज़र ब्लेड निकालकर, वह शौचालय गया और अपनी कलाई काटने ही वाला था कि तभी उसके भीतर से एक आवाज़ आई, 'तुम इतने कायर क्यों बन रहे हो? अपने किए की सच्चाई का सामना क्यों नहीं करते?' उस आवाज़ ने उसे झकझोर दिया, और डेस ने रेज़र ब्लेड गिरा दिए और अपने कमरे में वापस भाग गया, इस एहसास से बुरी तरह कांप रहा था कि वह खुद को मारने के कितना करीब आ गया था। अगले दिन प्लंकेट को शिविर के अस्पताल ले जाया गया। दो कनाडाई सैनिकों ने उससे घंटों बात की और आखिरकार डेस को यह समझाने में कामयाब हो गए कि इन मौतों में उसका कोई हाथ नहीं था, खासकर इसलिए कि पचास में से अड़तालीस लोगों की हत्या उसके और फ्रेडी के दोबारा पकड़े जाने से पहले ही हो चुकी थी। जब उसने आखिरकार इस सच्चाई को स्वीकार किया, तो डेस प्लंकेट ने अपने ठीक होने की राह में सबसे बड़ी बाधा को पार कर लिया था।

*

जिमी जेम्स को 6 अप्रैल की सुबह साढ़े चार बजे तक हिर्शबर्ग जेल में इंतज़ार कराया गया, जब उनकी कोठरी का दरवाज़ा ज़ोर से खुला और दो नागरिकों ने उन्हें बाहर बुलाया। वे उन्हें भोर के समय रेलवे स्टेशन तक ले गए, जहाँ से उन्होंने बर्लिन जाने वाली ट्रेन पकड़ी। जर्मन राजधानी पहुँचकर, जिमी को अल्ब्रेक्टस्ट्रासे स्थित गेस्टापो मुख्यालय ले जाया गया और एक बाहरी कार्यालय में छोड़ दिया गया। वहाँ एक सुंदर सचिव का ध्यान उन पर गया, जो उन्हें देखकर काफी खुश लग रही थी। उसकी तीखी निगाहों से बचने के लिए, उन्होंने एक पुलिस पत्रिका उठाई, लेकिन तभी पास से गुज़र रहे एक क्लर्क ने उसे उनके हाथों से छीन लिया और चिल्लाकर कहा कि यह केवल आंतरिक उपयोग के लिए है। काफी देर इंतज़ार के बाद, जेम्स को फिर से बाहर ले जाया गया और एक बातूनी पुलिसकर्मी उन्हें गाड़ी में बिठाकर ले गया, जो बर्लिन से बाहर निकलते समय रास्ते में दिखने वाली जगहों, या जो कुछ भी बचा था, उसे दिखाता रहा। एक घंटे की ड्राइव के बाद वे घने चीड़ के जंगल में पहुँचे, जो अचानक टूटकर एक ऊँची, छलावरण वाली दीवार के सामने आ गया, जिसके ऊपर बिजली के तार और पहरेदार बुर्ज लगे थे। मुख्य द्वार पर एक एसएस गार्ड खड़ा था, जो अपने सीधे, क्रोम के दांतों की कतार के बीच से चौड़ी मुस्कान बिखेर रहा था।

जेम्स को गार्डरूम से आगे ले जाकर एक छोटे से परिसर में पहुँचाया गया, जो लगभग सत्तर गज लंबा और तीस गज चौड़ा था, जिसमें दो झोपड़ियाँ थीं और चारों ओर बिजली के तार लगे हुए थे। वहाँ उसने सबसे पहले विंग्स डे को देखा।

"आपको देखकर बहुत खुशी हुई, जिमी!" डे ने मुस्कुराते हुए जेम्स से गर्मजोशी से हाथ मिलाते हुए कहा। "आपके नए घर में आपका स्वागत है!"

'क्या यह कोल्डिट्ज़ है?' जेम्स ने पूछा।

'नहीं, मुझे खेद है। यह सैक्सेनहाउसेन यातना शिविर है। हम सोंडरलागर ए में हैं। हमारे बगल वाले छोटे से परिसर में कुछ बहुत महत्वपूर्ण कैदी हैं, या कम से कम कुछ ऐसे लोग हैं जिन्हें गुंडे हमें दिखाना नहीं चाहते। शिविर का बाकी हिस्सा राजनीतिक कैदियों, प्रतिरोधियों और अन्य 'अवांछित' लोगों के लिए है। हम उनमें से भी बहुतों को नहीं देख पाते, हालांकि कभी-कभी उनकी चीखें सुनाई देती हैं।' विंग कमांडर गंभीर दिख रहा था।

'तो इस परिसर में और कौन-कौन है?' जिमी ने पूछा।

खैर, कुछ बागी आयरिश लोग हैं जिन्होंने कुछ समय के लिए सहयोगियों की भूमिका निभाई – हमें अभी भी ठीक से पता नहीं है कि उनमें से किस पर भरोसा किया जा सकता है। फिर हमारे पास कुछ रूसी हैं – ज्यादातर व्लासोव की श्वेत रूसी सेना से, वे लोग जो पूर्व में जर्मनों के साथ लड़ने के लिए भर्ती हुए थे और फिर उन्होंने अपना इरादा बदल दिया। कुल मिलाकर वे काफी अच्छे लोग हैं। कुछ इतालवी अर्दली, आरएएफ में दो पोलिश लोग जो आपूर्ति पहुंचाने गए थे... ओह, और यह आदमी यहाँ है।

जिमी ने मुड़कर देखा तो जॉनी डॉज का मुस्कुराता हुआ चेहरा नज़र आया। डॉजर ने मुस्कुराते हुए कहा, 'फिर से नमस्कार, जिमी।'

एक सप्ताह बाद एक और नया सदस्य शामिल हुआ। अल्ब्रेक्टस्ट्रासे में पूछताछ के बाद सिडनी डाउज़ को परिसर में लाया गया। वह बिल्कुल स्वस्थ लग रहा था और एक और भागने की योजना पर काम शुरू करने के लिए उत्सुक था।

सिडनी को तुरंत समझ आ गया कि सुरंग ही बाहर निकलने का एकमात्र रास्ता है। ज़मीन काफी मज़बूत थी, इसलिए सहारा देने की ज़रूरत नहीं थी, और कैदियों को दिन के समय पूरी तरह से अपने हाल पर छोड़ दिया गया था। हालांकि, सुरक्षा एक बड़ी समस्या बनने वाली थी क्योंकि किसी को नहीं पता था कि परिसर में मौजूद अन्य लोग पूरी तरह से भरोसेमंद हैं या नहीं। सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए, सुरंग के अस्तित्व के बारे में केवल ब्रिटिश सैनिकों और उनके दो इतालवी सहायकों को ही पता था।

सिडनी और जिमी के साझा कमरे के कोने में एक दांतेदार टेबल चाकू से एक छेद बनाया गया और वहाँ से लगभग 5 फीट की गहराई तक सुरंग खोदी गई। सुरक्षा तक पहुँचने के लिए, एक अधूरे और खाली परिसर तक पहुँचने के लिए, उन्हें लगभग 120 फीट खोदना था। फिर वे परिसर में रखी 15 फीट की सीढ़ी का उपयोग करके बाहरी दीवार पर चढ़ते और तेजी से निकल जाते। सारी खुदाई सिडनी और जिमी ने की। डे और डॉज मदद करना चाहते थे, लेकिन वे बहुत ज्यादा ध्यान आकर्षित कर रहे थे; परिसर से उनकी अनुपस्थिति से सवाल उठ सकते थे और व्यापक तलाशी शुरू हो सकती थी। हालाँकि, दो अनुभवी खोदने वालों के लिए यह कोई समस्या नहीं थी। उन्होंने ठोस मिट्टी को खुरच कर झोपड़ी के गलियारे के नीचे छिपा दिया। यह एक बहुत ही साधारण सुरंग थी। इसमें कोई सहारा नहीं था, कोई बिजली की रोशनी नहीं थी, कोई एयर पंप नहीं था और कोई ट्रॉली सिस्टम नहीं था। फिर भी, यह बाहरी दुनिया की ओर जा रही थी, और यही सबसे महत्वपूर्ण था।

जुलाई के एक दिन, विंग्स डे की नज़र संयोगवश वोल्किशर बेओबाख्तर अखबार में एक लेख पर पड़ी। यह लेख एंथनी ईडन के हाल ही में हाउस ऑफ कॉमन्स में दिए गए भाषण की कड़ी निंदा करता था, जिसमें उन्होंने सैगन से बच निकले पचास वायुसैनिकों की हत्या का विरोध किया था। विंग्स ने उस अनुच्छेद को दोबारा पढ़ा और फिर ध्यान से प्रत्येक शब्द का अनुवाद किया ताकि उन्हें सही अर्थ समझ आ सके। अर्थ स्पष्ट था। गंभीर भाव से उन्होंने डॉक्स, जेम्स और डॉज को अपने कमरे में बुलाया और उन्हें यह खबर सुनाई। उन्हें यह नहीं पता था कि उन तीनों ने ही उस नरसंहार में अपने साथी को खो दिया था। उन्होंने भागने के अधिक खतरे और आगे बढ़ने के फायदों के बारे में संक्षेप में बात की, लेकिन उनके निर्णय में कभी कोई संदेह नहीं था। सिडनी और जिमी खुदाई जारी रखेंगे।

कुछ ही समय बाद, कमांडो कर्नल 'मैड जैक' चर्चिल के रूप में परिसर में एक और सदस्य शामिल हो गया। वह खुदाई दल में शामिल हो गया, और अतिरिक्त मदद से काफी फायदा हुआ, हालांकि सुरंग इतनी बड़ी थी कि उसमें एक समय में केवल एक ही व्यक्ति काम कर सकता था। जैसे ही सुरंग तार के पास पहुंची, उन्होंने उसे थोड़ा और गहरा खोदना शुरू कर दिया, लगभग आठ फीट तक। अफवाहें थीं कि परिधि के चारों ओर विद्युतीकृत जांच उपकरण गाड़े गए थे।

सितंबर तक सुरंग बनकर तैयार हो गई थी, और तेईस तारीख को पांचों भगोड़े सुरंग से बाहर निकल आए। जगह सीमित होने के कारण सुरंग बहुत छोटी थी, लगभग दो फुट चौकोर, और

वास्तव में सड़क के नीचे तक जाती थी, जिससे भगोड़ों को भागने से पहले एक नया निकास मार्ग खोदना पड़ा। अंत में सुरंग के मुहाने से बाहर निकलकर, वे खाली परिसर को पार कर गए और देखा कि निर्माणकर्ता की सीढ़ी ठीक उसी जगह पड़ी थी जहाँ वह हफ्तों से थी। कुछ ही मिनटों में सभी पांचों सीढ़ी के ऊपर से होते हुए दीवार के दूसरी ओर नरम जमीन पर आसानी से उतर गए।

*

सिडनी डाउज़ और विंग्स डे के पास एक स्थानीय ठेकेदार का नाम था, जिसकी एक आयरिश व्यक्ति से दोस्ती थी। उसने उस व्यक्ति को अपने ट्रक में कभी भी फ्रांस छोड़ने की पेशकश की। डाउज़ और डे को यह बात अविश्वसनीय लगी। वे ओरानियनबर्ग स्टेशन से बर्लिन के दक्षिण में स्थित महल्सडॉर्फ तक एक उपनगरीय ट्रेन लेंगे और फिर उस व्यक्ति के घर तक पैदल जाएंगे। वहाँ से सब कुछ आसान हो जाएगा। दुर्भाग्य से, जब वे ओरानियनबर्ग स्टेशन पहुँचे, तो उनकी आखिरी ट्रेन छूट गई थी और उन्हें सुबह 6:00 बजे पहली ट्रेन का इंतज़ार करना पड़ा। यात्रा बिना किसी घटना के पूरी हुई, हालाँकि उन्हें यह एहसास होने पर डिब्बा बदलना पड़ा कि वे अपने पीछे कंकड़ और सुरंग की मिट्टी छोड़ रहे हैं। वे सुबह 9:00 बजे तक महल्सडॉर्फ पहुँच गए, लेकिन उनकी उम्मीदें टूट चुकी थीं। उनके संपर्क का घर पूरी तरह से खंडहर बन चुका था। आगे क्या करें, यह समझ न आने पर, वे एक बम से तबाह घर के तहखाने में छिप गए और दूसरी योजना पर काम करने लगे। इसी बीच, बगल के तहखाने में रहने वाली एक महिला ने उनके लिए फैसला कर लिया। उसने पुलिस को बुलाया और सिडनी और विंग्स को पुलिस ने पकड़ लिया।

उन्हें पहले दो बेहद दोस्ताना गार्डों द्वारा लेहर्टर स्टेशन के पास एक सैन्य जेल में ले जाया गया, लेकिन एक दिन बाद गेस्टापो आई और उन्हें अल्ब्रेक्टस्ट्रासे ले गई। फिर उन्हें अलग-अलग कारों में वापस सैक्सेनहाउसेन ले जाया गया और ज़ेलनबाउ, या सेल ब्लॉक में फर्श से जंजीरों से बांध दिया गया। सैक्सेनहाउसेन में, ज़ेलनबाउ फांसी से पहले का आखिरी पड़ाव था।

*

जॉनी डॉज की योजना सरल और सीधी थी: पश्चिम की ओर चलना और मुक्ति की आशा करना। शिविर छोड़कर, वह रॉस्टॉक जाने वाली मुख्य रेल लाइन को ढूंढने में कामयाब रहा और लगभग बीस मील तक उसका पीछा किया, जहाँ उसकी मुलाकात कुछ फ्रांसीसी मजदूरों से हुई। उन्होंने उसे एक सुअरबाड़े के ऊपर बने भूसे के गोदाम में छिपा दिया और प्रतिदिन उसे आवश्यक राशन पहुँचाते रहे। इस दुर्गंधयुक्त ठिकाने में डॉज ने चार सप्ताह बिताए, जिसके बाद उसे दोबारा पकड़ लिया गया।

*

जिमी जेम्स और जैक चर्चिल ने मालगाड़ियों से बाल्टिक बंदरगाहों में से किसी एक तक जाने और वहाँ से एक स्वीडिश जहाज़ लेने की योजना बनाई थी, और शुरुआत में उनकी यात्रा अच्छी चल रही थी। चौथी रात को वे डैननवाल्डे के छोटे से स्टेशन पर पहुँचे और जंगल से इकट्ठा किए गए कुछ फल और सब्जियाँ खाते हुए, यार्ड में यह देखने के लिए नज़र रखने लगे कि कोई मालगाड़ी रुकती है या नहीं। जब कोई नहीं रुकी, तो दोनों ने यार्ड में खड़ी विभिन्न ट्रेनों को देखा और स्टैटिन जाने वाली तीन बोगियाँ देखीं। वे एक बोगी में चढ़ गए, और कुछ देर तक बोगियों के आगे-पीछे होने के बाद, आखिरकार उत्तर की ओर चलने लगे। ट्रेन न्यूस्ट्रेलिट्ज़ से आगे निकल गई और जब दोबारा बोगियाँ रुकने लगीं, तो जेम्स और चर्चिल ने उतरने और बाद में फिर से

कोशिश करने का फैसला किया। दुर्भाग्य से, बोगी से कूदते समय जैक के टखने में मोच आ गई, इसलिए दोनों ने कुछ दिनों तक आराम करने और उसे ठीक होने देने का फैसला किया। आठवीं रात को जैक का टखना ठीक हो गया, इसलिए कुछ बोगियों पर गंतव्य नंबर प्लेट बदलने के बाद, वे फिर से चलने लगे। वारेन के ठीक दक्षिण में उन्होंने कुछ सोवियत लकड़हारों के साथ एक बड़ा ही आनंददायक भोजन किया, लेकिन अगली रात एक तटबंध पर बने सिग्नल पोस्ट से लैंप का तेल चुराने की कोशिश में वे थोड़ी मुसीबत में पड़ गए। 5 अक्टूबर की सुबह, जिम्मी और जैक को पोलिश महिला कामगारों के एक समूह की देखरेख कर रहे एक फोरमैन ने रोक लिया, लेकिन वे कोहरे का फायदा उठाकर भागने में कामयाब रहे। हालांकि, उनकी किस्मत अब साथ नहीं दे रही थी, और उसी दोपहर उन्हें होम गार्ड ने फिर से पकड़ लिया और गुस्ट्रोव के रास्ते वापस सैक्सेनहाउसेन ले जाया गया, जहां वे ज़ेलनबाउ में बाकी लोगों के साथ शामिल हो गए।

समय बीतने के साथ उन्हें पता चला कि ज़ेलनबाउ, या बंकर (जैसा कि कैदी इसे कहते थे), में और कौन-कौन था। सिगिसमंड पायने-बेस्ट, जो नवंबर 1939 में हॉलैंड में जर्मन एजेंटों द्वारा अगवा किए गए ब्रिटिश अधिकारियों में से एक थे (कुख्यात वेनलो घटना), बंकर में सबसे लंबे समय तक रहने वाले कैदी थे। वहाँ चार विध्वंसक भी थे जिन्हें 1941 में कोरिंथ नहर को उड़ाने की कोशिश करते हुए पकड़ा गया था, और कई अन्य ब्रिटिश और यूरोपीय एजेंट भी थे। स्पेन में जर्मन राजदूत डॉ. फ्रिट्ज़ हेबरलीन, उनकी पत्नी और ड्यूक ऑफ मेक्लेनबर्ग, जिन्हें नाजियों द्वारा अविश्वसनीय माना जाता था, को भी बंकर में रखा गया था। एक अन्य प्रमुख कैदी पादरी मार्टिन नीमोल्लर थे, जो 1937 से नाजियों के बंदी थे।

1945 की शुरुआत में एक और नया व्यक्ति आया: जनरल आर्थर नेबे, वही व्यक्ति जिसने पचास लोगों को मौत के घाट उतारने के लिए चुना था और बाकी लोगों को सैक्सेनहाउसेन भेजा था। कुछ लोग कहते हैं कि चयन प्रक्रिया में अपनी भूमिका से वे बहुत प्रभावित हुए थे, जबकि अन्य कहते हैं कि उन्होंने बदलाव की शुरुआत होते देख ली थी और उसका फायदा उठाना चाहते थे। चाहे जो भी कारण रहा हो, वे हिटलर की हत्या की जुलाई की साजिश में शामिल हो गए और उन्हें फांसी के लिए यातना शिविर भेज दिया गया। पियानो के तार के फंदे पर लटककर उनकी मृत्यु हो गई, जबकि सैक्सेनहाउसेन भेजे गए उनके द्वारा भागे हुए लोग जीवित बच गए।

*

फरवरी में अजीबोगरीब घटनाएँ घटने लगीं। जर्मनों ने सिडनी डाउज़ से संपर्क किया और उन्हें भागने और इंग्लैंड को शांति का संदेश पहुँचाने का प्रस्ताव दिया। उन्होंने इस प्रस्ताव को साफ तौर पर ठुकरा दिया। अगले हफ्ते यही प्रस्ताव डॉजर को भी दिया गया, लेकिन उनके पास कोई विकल्प नहीं था। एक सुबह वह अचानक गायब हो गए, और बाकी लोगों को बताया गया कि उन्हें विदेश मंत्रालय से मिलने के लिए बर्लिन ले जाया गया है। फिर, 15 फरवरी को, अकल्पनीय घटना घटी। भागने वालों को सूचित किया गया कि वे सोंडरलागर ए लौट रहे हैं। अपने पुराने घर में वापस आकर, वहाँ के कैदियों ने उनका हार्दिक स्वागत किया, जिन्होंने उन्हें मृत मान लिया था। समूह में उन्हें एक और जाना-पहचाना चेहरा दिखा, वह था छोटा फ्रांसीसी रेमंड वैन वाइमर्स। कई मायनों में, वह भी मौत के मुंह से वापस आया था।

रेमंड को बर्लिन की अलेक्जेंडरप्लात्ज़ जेल में बहुत ही कठिन समय बिताना पड़ा था। उसे सभी राष्ट्रीयताओं के 150 अन्य कैदियों के साथ एक कमरे में रखा गया था और उचित व्यवहार की मांग के बावजूद उसे एक अपराधी की तरह रखा गया था। वह हफ्तों तक उस विशाल कोठरी में रहा, लेकिन 24 मई की सुबह जेल पर एक भटकता हुआ अमेरिकी बम गिरा। तीन फ्रांसीसी चोरों के साथ, रेमंड मलबे में से सामान ढूंढकर सड़कों पर भाग निकला और एक चोर के घर में शरण ली। हालांकि, अगले ही दिन वे फिर से कैद में थे, इस बार कुख्यात प्लॉत्ज़ेंसी जेल में। वैन वाइमर्स अगले पांच महीनों तक वहीं पड़ा रहा, मानो उसके कैदियों ने उसे भुला दिया हो, जब

तक कि 7 नवंबर को उसे सैक्सेंहौसेन नहीं ले जाया गया। वह एक मुसीबत से निकलकर दूसरी मुसीबत में फंस गया था।

*

इसी बीच, शिविर की आबादी को व्यवस्थित रूप से कम किया जा रहा था। 3 अप्रैल को अंत की शुरुआत हुई। सुबह-सुबह कैदियों को जगाया गया और उन्हें स्थानांतरण के लिए तैयार रहने को कहा गया। पहला पड़ाव फ्लोसेनबर्ग यातना शिविर था, जहाँ समूह लगभग दो सप्ताह तक रहा। 15 अप्रैल को वे फिर से स्थानांतरित हुए, इस बार ट्रक द्वारा, डचाऊ यातना शिविर ले जाए गए। वहाँ वे पूरे यूरोप के कई प्रतिष्ठित कैदियों के समूह में शामिल हो गए, जो सभी यह जानने के लिए प्रतीक्षा कर रहे थे कि नाजियों ने उनके लिए क्या योजना बनाई है।

जब यह समूह इकट्ठा हुआ, तो ऐसा लगा मानो यह यूरोपीय समाज के सर्वप्रसिद्ध व्यक्तियों का संग्रह हो। इसमें हेस्से के राजकुमार फिलिप, प्रशिया के राजकुमार फ्रेडरिक लियोपोल्ड और राजकुमार जेवियर डी बॉर्बन जैसे रईस, और नीमोल्लर जैसे प्रसिद्ध पादरी, क्लेरमोंट-फेरैंड के बिशप गैब्रियल पिगुएट और म्यूनिख के कैनन जोहान न्यूहौस्लर शामिल थे। रिचर्ड श्मिट्ज़ जैसे अन्य प्रतिरोधक भी थे, जो वियना के पूर्व मेयर थे और जिन्होंने Anschluss के खिलाफ आवाज़ उठाई थी। ज़ेलनबाउ के हेबरलीन भी वहाँ मौजूद थे, और कर्नल जॉन मैकग्राथ भी थे, जिन्होंने नाज़ी समर्थक आयरिश ब्रिगेड का नेतृत्व किया था, जब तक कि जर्मनों को यह पता नहीं चल गया कि वह वास्तव में भागने और तोड़फोड़ की योजना बना रहे थे। इसके अलावा, फैबियन वॉन श्लाब्रेनडॉर्फ भी थे, जो असफल जुलाई षड्यंत्र के बाद हिटलर के प्रकोप से बचने वाले कुछ लोगों में से एक थे।

17 अप्रैल की शाम को, वे फिर से रवाना हुए, इस बार म्यूनिख से होते हुए कोचों में इंसब्रुक के पास एक एसएस शिविर की ओर। वहाँ उनका साथ प्रोमिनेंटेन (जैसा कि उन्हें बाद में जाना जाने लगा) के एक और काफिले ने ले लिया। नए आने वालों में हिटलर के शासन के कुछ वरिष्ठ अधिकारी शामिल थे: डॉ. हजलमार शाच्ट, रीच्सबैंक के पूर्व अध्यक्ष और अर्थशास्त्र मंत्री; उद्योगपति फ्रिट्ज थिसेन और उनकी पत्नी और बेटी; जनरल अलेक्जेंडर वॉन फाल्केनहॉसन, जो कभी कब्जे वाले बेल्जियम और उत्तरी फ्रांस के गवर्नर-जनरल थे और जुलाई की साजिश में शामिल थे; जनरल फ्रांज हाल्डर, जो पूर्व में जनरल स्टाफ के प्रमुख थे, और उनकी पत्नी; और कर्नल बोगिस्लाव वॉन बोनिन, जिन्हें वारसॉ की हार के लिए बलि का बकरा बनाया गया था। अन्य लोग कार्ल गोएर्डेलर और क्लॉस वॉन स्टॉफेनबर्ग जैसे प्रतिरोधियों के रिश्तेदार थे, और बाकी वे व्यक्ति थे जिन्हें नाजियों द्वारा 'अवांछनीय' करार दिया गया था: डॉ. कर्ट वॉन शुशनिग, ऑस्ट्रिया के एक समय के चांसलर; हंगरी के पूर्व प्रधानमंत्री मिक्लोस कल्ले और उनके मंत्रिमंडल के सदस्य; सोवियत विदेश मंत्री के भतीजे वासिली मोलोटोव; ग्रीस के फील्ड मार्शल अलेक्जेंडर पापागोस; फ्रांस के पूर्व प्रधानमंत्री लियोन ब्लम; पायने-बेस्ट के साथ वेनलो में पकड़े गए रिचर्ड स्टीवंस; और हंगरी के पूर्व जर्मन समर्थक शासक एडमिरल मिक्लोस होर्थी के पुत्र। इनके अलावा दर्जनों अन्य लोग भी थे, जो विभिन्न देशों से थे और नाजियों को उम्मीद थी कि वे किसी दिन उनके काम आ सकते हैं।

27 अप्रैल को यात्रा फिर से शुरू हुई। मोटरकोचों में सवार होकर, भारी हथियारों से लैस एसएस गार्डों के एक दल के साथ समूह दक्षिण की ओर बढ़ता रहा। बसें ब्रेनर दर्रे से होते हुए इटली की ओर बढ़ीं और फिर खूबसूरत टायरोलियन घाटी पुस्टर्टल की ओर मुड़ गईं। बर्फ से ढकी पर्वत चोटियों पर सूरज की चमक से नजारा बेहद खूबसूरत था। नीचे, हरे-भरे जंगलों में छोटे-छोटे अल्पाइन कॉटेज बसे हुए थे। अगर उनके साथ ये सुरक्षाकर्मी न होते, जो तुरंत मौत का खतरा लेकर चल रहे थे, तो यात्रा सुखद हो सकती थी। आखिरकार, काफिला तब रुक गया जब दो बसों का ईंधन खत्म हो गया और तीसरी का टायर पंचर हो गया। कैदी घबराए हुए इंतजार करते

रहे जबकि उनके गार्ड कुछ दूरी पर बैठक कर रहे थे। कैदियों को यह बात अच्छी तरह पता थी कि यह उन सभी को खत्म करने का सही मौका था।

इसी बीच, विंग्स डे स्थानीय गुरिल्ला नेता का पता लगाने के लिए समूह से अलग हो गया, जो समूह की सुरक्षा कर रहे एसएस दल पर त्वरित और क्रूर हमला करने के लिए उत्सुक था। योजना से उत्साहित होकर, विंग्स जल्द ही होश में आया और उसने तुरंत हमले के खिलाफ सलाह दी। उसने कहा कि इसमें बहुत अधिक जानमाल का नुकसान होगा और उसने गुरिल्ला सैनिकों को अपनी योजना को कुछ समय के लिए स्थगित करने के लिए मना लिया।

पार्टी के कुछ धनी सदस्यों ने एसएस नेताओं को रिश्वत देकर उन्हें स्विस सीमा तक ले जाने का विचार किया, लेकिन यह योजना अमल में लाना असंभव साबित हुआ। अधिकांश गार्ड नशे में चूर थे और हर घंटे उनकी चेतना और भी बिगड़ती जा रही थी, और शायद वे और भी खतरनाक होते जा रहे थे। किसी ने एसएस नेताओं में से एक का बटुआ चुरा लिया। उसमें हिमलर द्वारा हस्ताक्षरित एक आदेश था, जिसमें मित्र देशों के हाथों में पकड़े जाने की स्थिति में पूरी पार्टी को मौत की सजा देने का निर्देश था।

अंततः पूरा समूह टोनी डुसिया द्वारा व्यवस्थित आवास में चला गया। टोनी डुसिया एक स्थानीय व्यक्ति था जो जर्मनों के लिए आवास अधिकारी के रूप में काम करता हुआ प्रतीत होता था, लेकिन वास्तव में वह उस क्षेत्र में प्रतिरोध आंदोलन का प्रमुख था। एक बार फिर, स्थानीय गुरिल्ला सैनिक हमला करने के लिए उत्सुक थे, लेकिन यह जानकर शांत हो गए कि वॉन बोनिन ने अपने एक पुराने मित्र को फोन किया था जो उस क्षेत्र में जर्मन सेना की एक इकाई की कमान संभाल रहा था। उसने अपनी दुर्दशा बताई और वॉन बोनिन के मित्र ने उसे आश्वासन दिया कि वेहरमाच्ट की एक टुकड़ी एसएस के चंगुल से बंदियों को छुड़ाने के लिए भेजी जाएगी।

29 अप्रैल की सुबह, वेहरमाख्त की टुकड़ी आखिरकार पहुँच गई और एसएस के साथ तनावपूर्ण गतिरोध उत्पन्न हो गया। दो भारी मशीनगनों के हमले से एसएस के सैनिक हथियार डालने पर विवश हो गए। उनमें से आधे सैनिकों ने एक कार पर कब्जा कर लिया और ऑस्ट्रिया की ओर उत्तर दिशा में चल दिए, लेकिन गाँव से कुछ दूर जाने से पहले ही पक्षपाती सैनिकों ने उन्हें पकड़ लिया और टेलीग्राफ के खंभों से लटका दिया। बाकी बचे आधे सैनिकों ने बंधकों के साथ आत्मसमर्पण कर दिया।

अगले दिन समूह फिर से आगे बढ़ा और प्रागसर वाइल्डसी होटल पहुंचा, जो एक खूबसूरत अल्पाइन रिसॉर्ट था और जिसमें वाइन का अच्छा भंडार था। बाकी लोग घटनाक्रम का इंतजार कर रहे थे, तभी विंग्स डे और टोनी ड्यूसिया, ड्यूसिया की खस्ताहाल फॉक्सवैगन में बैठकर मित्र देशों की सेना की ओर चल पड़े। खराब हो चुकी कार और कई अन्य वाहनों को पीछे छोड़ते हुए, जिनमें वे कुछ सौ गज से लेकर दो मील तक का सफर तय कर चुके थे, उन्होंने आखिरकार ट्रेंटो के पास अमेरिकी सेना की एक इकाई से संपर्क साधा।

4 मई को, 339वीं इन्फैंट्री रेजिमेंट की एक सैन्य टुकड़ी प्रोमिनेंटेन को राहत देने के लिए प्रागसर वाइल्डसी होटल पहुंची। सिडनी डाउज़, जिमी जेम्स, विंग्स डे और रेमंड वैन वाइमर्सच के लिए, यह एक अजीब साल का अजीब अंत था, जिसकी शुरुआत तेरह महीने से भी अधिक समय पहले लुफ्ट III की सुरंग से बाहर निकलने के साथ हुई थी।

*

कैद में बिताए जॉनी डॉज के आखिरी हफ्ते, अगर कुछ कहें तो, उनके साथियों से भी कहीं ज़्यादा विचित्र थे। फरवरी की शुरुआत में सैक्सेनहाउसेन से ले जाए जाने के बाद, डॉज को एक मिलनसार युवा अधिकारी बर्लिन ले गया, जिसने उसके लिए नए नागरिक कपड़ों का पूरा सेट खरीदा और उसे एक खूबसूरत अपार्टमेंट में ठहराया, जिसमें एक एसएस मेजर और उसका परिवार रहता था। स्थिति इतनी अजीब थी कि जॉनी को समझ ही नहीं आ रहा था कि क्या

सोचे।

नागरिक वस्त्र स्वीकार करने से उनकी पहचान उजागर नहीं होगी, इस आश्वासन के बाद डॉज को विदेश मंत्रालय के डॉ. हंस थोस्ट से मिलवाया गया। थोस्ट ने जॉनी को एक कार में बिठाया और उन्हें बर्लिन के सबसे शानदार होटल, एडलॉन ले गए। जॉनी अभी भी यह जानने के लिए उत्सुक थे कि क्या हो रहा है, तभी उन्हें भव्य लेकिन बम से क्षतिग्रस्त होटल के एक निजी कमरे में ले जाया गया, जहाँ उनका सामना एक बड़े, हट्टे-कट्टे, बुलंद आवाज़ और चौड़ी मुस्कान वाले व्यक्ति से हुआ। थोस्ट ने उनका परिचय डॉ. श्मिट के रूप में कराया, जो हिटलर के दुभाषिया थे। अभी भी थोड़े स्तब्ध डॉज ने संशयपूर्वक स्कॉच व्हिस्की का एक गिलास लिया और अपने भविष्य के बारे में सोचने लगे। श्मिट की बुलंद आवाज़ ने उन्हें होश में लाया।

'मेजर डॉज, आप घर जा रहे हैं,' उसने गरजते हुए कहा, 'और मुझे यकीन है कि लौटते ही आपकी मुलाकात अपने रिश्तेदार श्री चर्चिल से होगी।' डॉज के कान खड़े हो गए और श्मिट उसके करीब झुक गया। 'मैं चाहता हूं कि इंग्लैंड लौटते ही आप तीन बातें याद रखें। पहली, बिना शर्त आत्मसमर्पण नहीं। दूसरी, जातीय सीमाएं। तीसरी, हम सबकी सुरक्षा के लिए यूरोप में शक्ति संतुलन बनाए रखना जरूरी है। मुझे यकीन है कि आप समझ गए होंगे कि मेरा क्या मतलब है,' उसने हल्की मुस्कान के साथ कहा।

अंततः, डॉजर को समझ आ गया। उसे युद्ध के अंतिम दिनों में शांति दूत बनना था। उसने मन ही मन संतोष के साथ सोचा, जर्मन सचमुच हताश होंगे।

कुछ दिनों बाद, थोस्ट और डॉज ड्रेसडेन के लिए रवाना हुए, जहाँ भीषण बमबारी के दौरान वे बाल-बाल बचे। उनका होटल पूरी तरह तबाह हो चुका था, फिर भी वेइमर की ओर बढ़ते रहे और वहाँ उन पर दोबारा बमबारी हुई। जॉनी ने भागने की कोशिश करने के बारे में सोचा, लेकिन उसे यकीन नहीं था कि इससे क्या हासिल होगा। उसने थोस्ट के साथ रहने और आगे क्या होता है, यह देखने का फैसला किया।

रेगेन्सबर्ग में, एक छोटे से कैफे में थोस्ट और डॉज को अंग्रेजी बोलते हुए किसी ने सुन लिया और पुलिस को बुला लिया। पुलिस कुछ ही मिनटों में पहुँच गई और उन्हें जासूस समझकर गिरफ्तार कर लिया। जॉनी के लिए यह कोई नई बात नहीं थी, लेकिन थोस्ट बेहद गुस्से में था, पुलिसकर्मियों पर चिल्ला रहा था और तरह-तरह की भयानक सजाओं की धमकी दे रहा था। अंत में, विडंबना यह थी कि उन्हें स्थानीय गेस्टापो ने रिहा कर दिया, जिन्हें बर्लिन से इस संबंध में एक तत्काल संदेश मिला था।

म्यूनिख में कुछ दिन बिताने के बाद, डॉज और थोस्ट ब्रेगेंज़ के पास स्विस सीमा पर पहुँचे। यह 25 अप्रैल, 1945 का दिन था। उसी रात दोनों अलग हो गए और जॉनी सीमा पार करके सेंट मार्ग्रेथेन में चले गए। दो दिन बाद वे बर्न में खुफिया अधिकारियों के साथ दोपहर का भोजन कर रहे थे और एक सप्ताह के भीतर इंग्लैंड वापस आ गए। वीई दिवस से दो दिन पहले, जॉनी डॉज ने आखिरकार चर्चिल के साथ भोजन किया और अपने कारनामों की कहानी सुनाई। प्रधानमंत्री ने पूरी कहानी बड़े चाव से सुनी।

*

भागने और हत्याओं के बाद, विंग कमांडर जॉन एलिस के नेतृत्व में लुफ्ट III में एक्स संगठन का पुनर्गठन बिग एक्स के रूप में किया गया। कॉक कैंटन और क्रम्प केर-रामसे ने सुरंग निर्माण अनुभाग के प्रमुख के रूप में कार्यभार संभाला, जबकि एलेक्स कैसी को डीन और डॉसन का पुनर्निर्माण करने के लिए कहा गया। हालाँकि कोई बड़ी भागने की योजना नहीं थी, फिर भी आवश्यकता पड़ने पर सक्षम जालसाजों की एक टुकड़ी तैयार रखना उचित समझा गया।

इस बीच, कॉन्क और क्रम्प ने थिएटर ब्लॉक से एक और सुरंग खोदनी शुरू कर दी थी। जॉर्ज नाम की इस सुरंग का जाल एक सीट के नीचे था, इसलिए रेत फैलाना आसान था। सुरंग से रेत

निकालकर थिएटर के फर्श के नीचे फैला दी गई, जहाँ हैरी के फैलाए हुए कचरे के ऊपर अभी भी काफी जगह थी। हालाँकि भागने की कोई पक्की योजना नहीं थी, फिर भी सुरंग को पूरा करना और इस बीच आगे क्या होता है, यह देखना समझदारी भरा कदम समझा गया।

नॉर्मंडी आक्रमण के बाद जर्मनी की सैन्य शक्ति धीरे-धीरे कम होने लगी और शिविर के कुछ कर्मचारियों ने संकेत देना शुरू कर दिया कि जर्मनी के पतन की स्थिति में कैदियों को गंभीर खतरा होगा। इसी बात को ध्यान में रखते हुए, नए सब-बेडमैन (एसबीओ), ग्रुप कैप्टन विल्सन ने क्लिम क्लब का गठन किया, जो शिविर के लिए एक तरह की अंतिम रक्षा टुकड़ी थी। नॉर्थ कंपाउंड में सभी को क्लब की एक इकाई में शामिल किया गया और प्रत्येक इकाई को एक विशिष्ट कार्य सौंपा गया, जैसे कि कूलर या किसी एक गार्ड टावर पर कब्ज़ा करना। किसी को भी यह नहीं लगता था कि अगर एसएस सभी को खत्म करने के लिए आ जाए तो निहत्थे क्रीगी (सैनिक) कुछ खास कर पाएंगे, लेकिन लड़ते हुए मरना हमेशा बेहतर होता था।

गर्मी के मौसम में, कमांडेंटुर के एक स्टेनोग्राफर ने संदेश भेजा कि अब यह आधिकारिक नीति बन गई है कि भागे हुए सभी युद्धबंदियों को दोबारा पकड़े जाने पर गोली मार दी जाए। फिर भी, दुबले-पतले स्कॉट मैककुलोच ने हिम्मत नहीं हारी और उसने बिग एक्स से अनुमति मांगी, जो काफी विचार-विमर्श के बाद अनिच्छा से दी गई। मैककुलोच कूड़ेदान में रखे डिब्बों के नीचे छिपकर शिविर से भागने में कामयाब हो गया, लेकिन कुछ घंटों बाद ही कुछ जर्मन सैनिकों ने उसे पकड़ लिया। वे उसे शिविर में वापस ले आए, लेकिन अगर वह एसएस या गेस्टापो के हाथों में पड़ जाता तो स्कॉट के लिए हालात और भी बदतर हो सकते थे।

सितंबर की शुरुआत में, एक और, अधिक स्पष्ट चेतावनी दी गई जब शिविर के बुलेटिन बोर्ड पर एक छोटा लाल और काला पोस्टर लगाया गया। उस पर लिखा था, 'कैदखानों से भागना अब कोई खेल नहीं है!' और आगे बताया गया कि जर्मनी में कुछ प्रतिबंधित क्षेत्र बनाए गए हैं, जिन्हें मृत्यु क्षेत्र कहा जाता है। जो भी इन अज्ञात क्षेत्रों में प्रवेश करेगा, उसे देखते ही गोली मार दी जाएगी। पोस्टर के अंत में लिखा था, 'शिविर में ही रहो, जहाँ तुम सुरक्षित रहोगे! इससे बाहर निकलना अब एक बेहद खतरनाक काम है। अपनी जान बचाने की संभावना लगभग शून्य है!'

इस समय तक मित्र देशों के विमानों के लिए जर्मनी के ऊपर लगभग बेरोकटोक उड़ान भरना संभव हो गया था, और शिविर के ऊपर से बमवर्षक विमानों के कई समूह गुजरते हुए देखे गए। एक बार अमेरिकी विमानों के एक छोटे से दल ने शिविर से कुछ मील दूर एक लक्ष्य पर बमबारी की और, भले ही पहरेदारों ने बैरकों के अंदर रहने की चेतावनी दी थी, फिर भी सैनिकों ने इस हमले पर अपनी खुशी जाहिर की। हालांकि, कुछ ही समय बाद माहौल तब गंभीर हो गया जब बमबारी में उड़े जले हुए कागजों के टुकड़े परिसर में गिरने लगे। वे बाइबिल के पन्ने थे।

*

नवंबर में फिर से बर्फबारी शुरू हो गई और भागने की योजना बनाने वाली संस्था ने जॉर्ज पर काम रोक देने का फैसला किया। वह अब तारबंदी के पार पहुँच चुका था, और यह पहले ही तय हो चुका था कि उसका इस्तेमाल केवल तभी किया जाएगा जब परिसर में हालात बिगड़ेंगे। विडंबना यह है कि जॉर्ज के पूरा होने का समय एक ऐसी घटना के साथ मेल खा गया जिसने पिछली वसंत ऋतु में हुए बड़े पलायन की यादें ताजा कर दीं।

4 दिसंबर, 1944 को, शिविर के ठीक बाहर, कर्नल वॉन लिंडिनर द्वारा दान की गई सामग्री का उपयोग करके कैदियों द्वारा निर्मित स्मारक टीले पर पचास लोगों के लिए अंतिम संस्कार सेवा आयोजित की गई। एंग्लिकन रेवरेंड ई.बी. जोन्स और रोमन कैथोलिक फादर पी. गौड्रेउ ने अंतिम संस्कार संपन्न कराया, और उपस्थित लोगों की संख्या तीस अधिकारियों तक सीमित थी: ग्रुप कैप्टन विल्सन और पंद्रह अन्य, जो मृतकों के राष्ट्रों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे, नॉर्थ कंपाउंड से; और ईस्ट कंपाउंड और बेलारिया से सात-सात अधिकारी। किसी भी अमेरिकी को उपस्थित होने

की अनुमति नहीं थी। स्विस दूतावास के श्री नविल और फेल्डशर ने संरक्षक शक्ति की ओर से भाग लिया, और कर्नल ब्राउन के सहायक ने शिविर कर्मचारियों का प्रतिनिधित्व किया। सेवा संक्षिप्त थी, केवल पंद्रह मिनट तक चली, लेकिन गरिमामय और भावपूर्ण थी। दोनों पादरियों के संबोधन के बाद, प्रत्येक कंपाउंड के एक कैदी ने टीले पर पुष्पांजलि अर्पित की, जिसके बाद फेल्डशर ने संरक्षक शक्ति की ओर से पुष्पांजलि अर्पित की। नॉर्थ कंपाउंड के ऑर्केस्ट्रा के एक तुरही वादक ने 'लास्ट पोस्ट' बजाया; इसके बाद शिविर के पहरेदारों की एक सम्मान टुकड़ी ने सलामी के रूप में गोलियों की बौछार की, जब कैदी वापस अपने परिसर में लौट रहे थे।

*

नए साल के साथ ही पूर्व में सोवियत संघ के एक और बड़े आक्रमण की खबर आई, और लुफ्ट III में बंद कैदी अपने रेडियो पर बीबीसी की खबरें ध्यान से सुन रहे थे, इस उम्मीद में कि आक्रमण में वे हार जाएंगे। लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

काफी अफरा-तफरी के बाद, 27 जनवरी, 1945 की सुबह पूरे सागन परिसर को खाली करने का अभियान शुरू हुआ। कैदियों के छह दल भयावह परिस्थितियों में पश्चिम की ओर स्प्रेम्बर्ग की ओर बढ़े। मौसम बेहद खराब था और जर्मनों ने बहुत कम आपूर्ति की। कई कैदी थकान से सड़क किनारे गिर पड़े, जिन्हें पीछे-पीछे चल रहे बचाव दलों ने उठाया। सैकड़ों लोग बीमार पड़ गए और कुछ की मौत हो गई।

स्प्रेमबर्ग में, युद्धबंदियों को अलग-अलग जगहों पर ले जाने के लिए मवेशी गाड़ियों की व्यवस्था थी। अमेरिकी सैनिक दक्षिण में, म्यूनिख के पास मूसबर्ग गए, जबकि बेलारिया और पूर्वी परिसर के कैदी उत्तर में, बर्लिन के दक्षिण में लुकेनवाल्डे स्थित स्टालैग IIIA गए। उत्तरी परिसर के कैदियों को ब्रेमेन के पास स्थित नौसैनिक शिविर मारलाग अंड मिलाग नॉर्ड ले जाया गया, जहाँ उन्हें पूर्व नौसैनिकों के परिसर में रखा गया। शिविर की हालत बहुत खराब थी, लेकिन इन सबके बावजूद, सैनिकों का मनोबल ऊंचा था, क्योंकि अब अंत स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था।

फिर, 9 अप्रैल को, पूर्व की ओर वापस मार्च करने का आदेश आया। इस मार्च के दौरान मौसम काफी बेहतर था और सैनिकों के पास रेड क्रॉस का पर्याप्त सामान था जिससे वे रास्ते में भोजन और आपूर्ति का आदान-प्रदान कर सकें। हालांकि सहयोगी लड़ाकू विमानों ने काफिले पर गोलाबारी की और कुछ सैनिक मारे गए, लेकिन यह मार्च पिछले मार्च जितना बुरा नहीं था।

कैदियों ने ल्यूबेक से लगभग दस मील की दूरी तक यात्रा की और फिर रुककर जर्मनों द्वारा उनके लिए व्यवस्थित आवासों का निरीक्षण करने के लिए अग्रिम दल भेजे। इमारतों को कीड़े-मकोड़ों से भरा और मानव निवास के अनुपयुक्त पाकर, कैदियों ने आगे बढ़ने से इनकार कर दिया और वुलमेनाउ और ट्रेंथोर्स्ट नामक दो बड़े फार्मों पर डेरा डाल लिया। एहतियात के तौर पर, कुछ कैदियों ने ऐसे बैनर लगाए जिन पर लिखा था 'आगे आरएएफ के युद्धबंदी हैं' और 'टैंकों के लिए अच्छी जगह - 100 गज'। 2 मई को, पश्चिम की ओर से गोलीबारी की आवाज सुनाई देने के बाद, दो टैंक फार्म तक गर्जना करते हुए आए और धमकी भरे अंदाज में अपने बुर्ज घुमाने लगे। यह सुनिश्चित न कर पाने पर कि वे जर्मन थे या मित्र देशों के, कैदी सांस रोककर इंतजार करते रहे। तभी एक हैच खुल गया और काले रंग की बेरेट पहने एक टॉमी (जर्मन सैनिक) बाहर निकला। इससे पहले कि कैदी सामूहिक रूप से प्रतिक्रिया कर पाते, उनमें से एक आगे बढ़ा और कांपती हुई आवाज में बोला, 'मैं इस पल का पांच साल से इंतजार कर रहा था।'

‘अरे, नॉबी!’ टॉमी ने हैच के नीचे से आवाज़ लगाई। ‘यह कमीना यहाँ पूरे पाँच साल से है!’ उसी क्षण क्रिगीज़ को एहसास हुआ कि वे फिर से सभ्य हाथों में आ गए हैं।

उपसंहार

युद्ध के बाद, ब्रिटिश सरकार ने एंथनी ईडन के उस वादे पर अमल किया कि स्टालैग लुफ्ट III हत्याकांड के लिए मिसाल कायम करने वाला न्याय किया जाएगा। आरएएफ की विशेष जांच शाखा की एक छोटी टुकड़ी को अपराधों का पुनर्निर्माण करने और अपराधियों का पता लगाने का कार्य सौंपा गया। इसमें वे बेहद सफल रहे, उन्होंने बहत्तर हत्यारों की पहचान की और उनसठ का हिसाब जुटाया।

1 जुलाई 1947 को, स्टैलाग लुफ्ट III मामले में पहला मुकदमा हैम्बर्ग के क्यूरियो हाउस में शुरू हुआ। यह पचास दिनों तक चला और इसने कई सनसनीखेज घटनाएँ उत्पन्न कीं, जिनमें से एक कर्नल वॉन लिंडाइनर की गवाही भी थी।

भागने की घटना के बाद वॉन लिंडिनर को उनके पद से हटा दिया गया और उनका कोर्ट मार्शल किया गया। भागने की घटना को रोकने में नाकाम रहने के लिए नाजियों ने उन्हें कारावास की सजा सुनाई थी। अब उन्हें बचाव पक्ष के गवाह के रूप में बुलाया गया, जो यह जानना चाहते थे कि उन्होंने कैदियों को भागने के खतरों के बारे में क्या चेतावनी दी थी। कर्नल ने जवाब दिया कि उनके पास सीधे तौर पर कोई जानकारी नहीं थी, लेकिन फिर भी उन्होंने एसबीओ को चेतावनी दी थी क्योंकि भागने की घटनाओं को लेकर बदलते माहौल को लेकर वे चिंतित थे। इसके बाद, उन्हें याद दिलाते हुए कि उन्होंने फ्यूहरर के प्रति बिना किसी सवाल के आज्ञापालन की शपथ ली थी, बचाव पक्ष के वकील ने वॉन लिंडिनर से पूछा कि अगर उन्हें खुद अधिकारियों को गोली मारने का आदेश दिया जाता तो वे क्या करते।

वॉन लिंडिनर, जिन्होंने अपना सैन्य अनुशासन जरा भी नहीं खोया था, बचाव पक्ष के वकील को ऐसे घूर रहे थे मानो वह कोई अछूत हों। उन्होंने शांत भाव से कहा, 'मैं अपने सिर में गोली मार लेता।'

अंततः, पहले अठारह आरोपियों में से चौदह को फांसी की सजा सुनाई गई। समीक्षा के बाद एक फैसले को आजीवन कारावास में बदल दिया गया, लेकिन 27 फरवरी, 1948 को बाकी तेरह को हैमलन जेल में फांसी दे दी गई। इनमें स्ट्रासबर्ग गेस्टापो के कट्टर अल्फ्रेड शिमेल भी शामिल थे, जिन्होंने गुड फ्राइडे को अपराध करने के कलंक से बचने के लिए मौंडी थर्सडे को टोनी हेयटर की हत्या का आदेश दिया था, और कार्लज़ूहे गेस्टापो के तीन सदस्य, जिन्हें डेनिस कॉचरन की हत्या के लिए दोषी ठहराया गया था। टॉम किर्बी-ग्रीन और गॉर्डन किडर की हत्या के लिए, ज़्लिन गेस्टापो के एरिक ज़ाकारियास को भी फांसी दी गई। अपराध में उसके साथी ने अपना गला काटकर फांसी से बचने की कोशिश की। जॉन स्टीवंस और जोहान्स गौब्स के हत्यारों को भी फांसी दी गई, साथ ही एमिल शुल्ज़ को भी, जिसने रोजर बुशेल और बर्नार्ड शेइडहाउर पर गोली चलाई थी। अंततः, जिमी कैटानाच, अर्नोल्ड क्रिस्टेंसन, हाल्डोर एस्पेलिड और निल्स फुगलेसांग की हत्याओं के लिए जोहान्स पोस्ट और उसके तीन साथियों को फाँसी दे दी गई। पोस्ट एकमात्र ऐसा आरोपी था जो अंत तक अपने किए पर अडिग रहा और दावा करता रहा कि काश वह और अधिक टेररफ्लीगर्स और 'अमानव' (जैसा कि वह उन्हें कहता था) का सफाया कर पाता। जब उससे पूछा गया कि वह अपनी सज़ा कम करने के लिए कोई हलफनामा क्यों नहीं देना चाहता, तो पोस्ट ने तीखे शब्दों में जवाब दिया कि वह इतने वर्षों तक राष्ट्रीय समाजवादी रहकर अचानक कम्युनिस्टों, यहूदियों या 'स्वतंत्र विचारकों' के हलफनामे पेश नहीं कर सकता।

अगले बीस वर्षों तक, शेष हत्यारों का पता लगाने और उन्हें मुकदमे के कटघरे में लाने के

प्रयास जारी रहे। मई 1968 में, स्टालैग लुफ्ट III मामले में अंतिम मुकदमा समाप्त हुआ, जिसमें कील गेस्टापो के फ्रिट्ज श्मिट को कैटानाच, क्रिस्टेंसन, एस्पेलिड और फुगलेसांग की हत्याओं में उनकी भूमिका के लिए दो साल की जेल की सजा सुनाई गई।

दुर्भाग्यवश, एसआईबी को गोरलिट्ज़ जेल के अधिकारियों की हत्याओं के लिए ज़िम्मेदार ब्रेस्लाउ गेस्टापो के सदस्यों का पता लगाने में अपेक्षाकृत कम सफलता मिली। गेस्टापो कार्यालय के प्रमुख विल्हेम शार्पविंकेल को सोवियत संघ ने पकड़ लिया था और उन्हें सौंपने से इनकार कर दिया था। बाद में उन्होंने दावा किया कि उनकी जेल में मृत्यु हो गई, लेकिन जांच में शामिल कई लोगों का मानना है कि उन्होंने बस एक नई वर्दी पहन ली और सोवियत पुलिस में नौकरी कर ली। मैक्स विएलेन को हैम्बर्ग में मुकदमे के दौरान आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई और दो अन्य लोगों पर एक साल बाद मुकदमा चलाया गया, हालांकि उनमें से कोई भी जेल नहीं गया। हत्यारे दस्ते के बाकी सदस्यों का बहुत कम सुराग मिला। संभवतः उनमें से कई 1945 में ब्रेस्लाउ की भीषण रक्षा के दौरान मारे गए थे, जबकि अन्य बस गायब हो गए थे।

*

सन् 1945 के अंत में, न्यूज़ीलैंड के निवासी ज्योफ़ फैलोस को छुट्टी मिली और उन्होंने जॉनी पोहे के परिवार से मिलने का अपना वादा पूरा किया। वहाँ पहुँचकर उन्होंने पाया कि उनका परिवार अभी भी अपने बेटे के गम में डूबा हुआ था। जॉनी के पिता ने धीमी और संयमित आवाज़ में पूछा कि क्या इस अपराध का बदला (उतु) लिया गया है। ज्योफ़ ने कहा कि उन्हें नहीं पता, लेकिन वे अधिकारियों से संपर्क करके पता लगाएंगे। महीनों बाद उन्हें रक्षा मंत्रालय से जवाब मिला कि एक आधिकारिक जाँच चल रही है, लेकिन कुछ समय तक कोई नतीजा आने की उम्मीद नहीं है। ज्योफ़ पोहे के खेत में वापस गए और जॉनी के पिता से दोबारा मिले। बेटे की मृत्यु ने उन्हें बूढ़ा कर दिया था और उनकी बहुत सी ऊर्जा क्षीण हो गई थी। यह बात ध्यान में रखते हुए, ज्योफ़ ने गंभीरता से कहा कि वास्तव में बदला लिया गया है। बूढ़ा किसान तुरंत थोड़ा सीधा हुआ और ज्योफ़ से हाथ मिलाया। जब पोहे वापस अपने खेत जोतने लगे, तो ज्योफ़ ने देखा कि उनमें एक नई शक्ति आ गई थी।

एलन रिघेटी जॉर्ज वाइली से किया अपना वादा पूरा करने में 1946 के अंत तक का समय लग गया। वह इंग्लैंड के लीड्स विश्वविद्यालय में पढ़ाई करने के बाद ऑस्ट्रेलिया लौट रहे थे और संयुक्त राज्य अमेरिका से गुजरते हुए विंडसर, ओंटारियो में रुके। अंधेरा छा रहा था और बड़े-बड़े बर्फ के टुकड़े गिर रहे थे जब एलन वाइली के साधारण से घर के पास पहुंचे।

जॉर्ज की मां और बहन ने हिम्मत दिखाने की कोशिश की, लेकिन यह साफ था कि वे अपने बेटे और भाई को खोने के गम से अभी भी गहरे सदमे में थीं। एलन ने जॉर्ज द्वारा भागने वाली रात को सौंपी गई घड़ी और कुछ अन्य निजी सामान उन्हें सौंप दिए और कैद के दौरान की अपनी यादें उन्हें बताईं। वे जानकारी के लिए बेताब थीं और एलन से जॉर्ज के सैगन में कहे गए हर शब्द के बारे में पूछताछ कर रही थीं। उन्होंने जॉर्ज के कैदी होने की खबर सुनकर मिली राहत और इस विश्वास के बारे में बताया कि युद्ध से बाहर आने के बाद वह सुरक्षित घर लौट आएगा। लेकिन सबसे ज्यादा उन्होंने हत्याओं की सूचना मिलने पर लगे सदमे और उस दुख के बारे में बताया जिसने उनके परिवार को तबाह कर दिया था और जिसके कारण मॉर्ले वाइली की असमय मृत्यु हो गई थी। वह एक मुश्किल शाम थी, आंसुओं और गुस्से से भरी हुई।

एलन इस भयानक अनुभव से थककर सो गया और सुबह जल्दी उठकर देखा तो उसकी कार मोटी, गीली बर्फ में दबी हुई थी। जल्दी-जल्दी नाश्ता करने के बाद जब उसने कार को बर्फ से बाहर निकाला, तो वह सोचने लगा कि क्या विली परिवार को कुछ सामान लौटाने के लिए पुराने ज़ख्मों को कुरेदना उचित था। गाड़ी आगे बढ़ाने से पहले उसने घर की तरफ देखा और धुंधली खिड़की से जॉर्ज की माँ और बहन के दुखी चेहरे देखे। एलन रिघेटी ने फिर कभी विली

परिवार से संपर्क नहीं किया।

*

और कैदियों का क्या हुआ? ट्रेंथॉर्स्ट में रिहा हुए लोगों को हवाई जहाज से इंग्लैंड वापस भेज दिया गया और डीडीटी पाउडर की कुछ बूंदों और चाय-बिस्किट के भोजन के साथ उन्हें अपने परिवारों से मिलने की छुट्टी दे दी गई। कुछ लोग सेवा में बने रहे, और कुछ ने पहले ही मौके पर रिहाई का लाभ उठाया। कुल मिलाकर, शांति के वर्षों ने महान पलायन से बचे लोगों के लिए अच्छा जीवन दिया।

स्वीडन से इंग्लैंड लौटने के बाद, पेर बर्ग्सलैंड को कनाडा में एक फ्लाइंग इंस्ट्रक्टर के रूप में तैनात किया गया। सात महीने बाद, उनका तबादला ट्रांसपोर्ट कमांड में हो गया और उन्होंने मॉन्ट्रियल से उड़ान भरते हुए युद्ध समाप्त किया। 1945 के अंत में वे नॉर्वे वापस गए और फ्रेड ओल्सेन एविएशन के पहले पायलट बने, और अंततः 1968 में कंपनी के अध्यक्ष बन गए। अगले वर्ष, ओल्सेन एविएशन ने एक दिवालिया एयरलाइन कंपनी को खरीद लिया और पेर ने अपनी खुद की कंपनी, विडेरोएस फ्लाईवेसेल्सकैप की स्थापना की, जो अंततः नॉर्वे के सैंतीस हवाई अड्डों को अपनी सेवाएं देने लगी। पेर ने चालीस से अधिक वर्षों तक अपने जीवन का उद्देश्य रहे इस काम से कुछ समय के लिए सेवानिवृत्ति का आनंद लिया और 1992 में उनका निधन हो गया।

पेर बर्गस्लैंड की तरह, बॉब नेल्सन और जेन्स मुलर दोनों ने युद्ध के बाद एयरलाइंस में पायलट की नौकरी शुरू की, बॉब ने केएलएम में और जेन्स ने एसएएस में। वे समय-समय पर यूरोप के विभिन्न हवाई अड्डों पर मिलते रहे, लेकिन बड़े विमानों और अंतरमहाद्वीपीय मार्गों पर काम करने के कारण उनका संपर्क टूट गया। जेन्स ओस्लो में सेवानिवृत्त हुए, जबकि बॉब ने पुर्तगाल में कुछ समय बिताने के बाद इंग्लैंड लौटकर अपना जीवन व्यतीत किया। दोनों का निधन 1999 में हुआ।

टॉमी थॉम्पसन ओंटारियो के पेनेटांगुइशीन स्थित अपने घर लौट आए और उन्होंने कानून की पढ़ाई की। उन्होंने अपने गृहनगर में वकालत की, वहां के मेयर के रूप में एक कार्यकाल पूरा किया और अंततः 1967 में सिम्को काउंटी के सहायक जिला अटॉर्नी नियुक्त हुए। टॉमी 1980 में सेवानिवृत्त हुए और 1985 में अपनी मृत्यु तक पेनेटांगुइशीन में ही रहे।

जिमी जेम्स 1958 तक रॉयल एयर फ़ोर्स (आरएफ़) में रहे और उन्होंने बर्लिन में विदेश कार्यालय में अटैची सहित विभिन्न पदों पर कार्य किया। सेवानिवृत्ति के बाद वे कुछ समय के लिए कनाडा लौट आए और फिर घाना की एक लकड़ी निर्यात कंपनी में नौकरी कर ली। 1960 में जिमी लंदन में ग्रेट ब्रिटेन/यूएसएसआर एसोसिएशन के महासचिव बने, यह विदेश कार्यालय द्वारा प्रायोजित एक संगठन था जिसका उद्देश्य दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक संपर्क को बढ़ावा देना था। चार साल बाद जेम्स का तबादला विदेश कार्यालय में हो गया और पश्चिम बर्लिन, प्राग, बर्न, पेरिस, लागोस और डरबन में सेवा देने के बाद वे 1975 में सेवानिवृत्त हो गए। उनका निधन 2008 में हुआ।

युद्ध के बाद जॉनी डॉज इंग्लैंड लौट आए और कैद में किए गए अपने कार्यों के लिए उन्हें मिलिट्री क्रॉस से सम्मानित किया गया। उन्होंने केंट के गिलिंगहैम से कंजर्वेटिव पार्टी के उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ा, लेकिन जुलाई 1945 में लेबर पार्टी की भारी जीत में उन्हें हार का सामना करना पड़ा। इसी के साथ डॉज का राजनीतिक करियर समाप्त हो गया। वे व्यापार जगत में लौट आए और लंदन की एक स्टॉक ब्रोकरेज फर्म में काम करने लगे, लेकिन जर्मनी में जिन लोगों से उनकी मुलाकात हुई थी, उनसे संपर्क बनाए रखा, विशेष रूप से डुलैग लुफ्ट के कमांडेंट थियो रुम्पेल और हैंस थोस्ट से, जिन्होंने 1945 में जॉनी को उनकी स्वतंत्रता यात्रा में साथ दिया था। डॉज का नवंबर 1960 में दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया।

तटस्थ क्षेत्र में प्रवेश करने के बाद, बॉब वैन डेर स्टॉक और उनके साथी कैनेजन गाँव में दाखिल हुए, जहाँ वे अवांछित घोषित किए जाने से बाल-बाल बच गए। हालाँकि, बॉब ने अपने शत्रुतापूर्ण मेज़बानों को उन्हें मैड्रिड स्थित ब्रिटिश दूतावास तक पहुँचाने के लिए मना लिया। वहीं उन्हें पचास लोगों की हत्या के बारे में पता चला, और यह जानकारी उन्हें सर आर्थर स्ट्रीट से मिली।

जिब्राल्टर के रास्ते इंग्लैंड लौटने पर, बॉब को शुरू में 1942 में हुए विमान हादसे में कान में लगी चोट के कारण सक्रिय सेवा के लिए अयोग्य घोषित कर दिया गया था, लेकिन नीदरलैंड के राजकुमार बर्नहार्ड ने कुछ जुगाड़ किया और देखते ही देखते बॉब हुलाविंगटन स्थित 67 ओटीयू में शामिल हो गए, जहाँ उन्होंने अपनी पुरानी यूनिट, 91 स्क्वाड्रन के साथ कभी-कभार ऑपरेशनल उड़ानें भरीं। अंततः स्क्वाड्रन लीडर के पद पर पदोन्नत होकर, वैन डेर स्टॉक को 322 (डच) स्क्वाड्रन की कमान सौंपी गई, जो हॉलैंड के ऊपर स्पिटफायर विमान उड़ाती थी।

जब बॉब की जन्मभूमि आज़ाद हुई, तो वह अंततः अपने माता-पिता से दोबारा मिल सका। जब बॉब सागन से भागा, तो उसके पिता को गिरफ्तार कर लिया गया और यातनाएं दी गईं, जिससे उनकी आंशिक दृष्टि चली गई। फिर, जब बॉब के दो भाइयों की पहचान प्रतिरोध आंदोलन के सदस्यों के रूप में हुई, तो बड़े वैन डेर स्टॉक को फिर से हिरासत में ले लिया गया और उन्हें और यातनाएं दी गईं। हालांकि उन्हें अंततः रिहा कर दिया गया, लेकिन बॉब के दोनों भाइयों की नाज़ी जेलों में हत्या कर दी गई। इसलिए जब बॉब ने 1945 में उस दिन अपने पिता को देखा, तो वह पूरी तरह टूट चुके थे, दो बेटों को खोने के गम से व्याकुल थे। ऐसा लग रहा था कि वह केवल अपने तीसरे बेटे की वापसी के लिए जी रहे थे, क्योंकि बॉब के जाने के अगले दिन बड़े वैन डेर स्टॉक का देहांत हो गया।

हेग में डच जनरल स्टाफ में कुछ समय सेवा देने के बाद, बॉब वैन डेर स्टॉक ने केएलएम के उड़ान सेवाओं के प्रमुख बनने का प्रस्ताव ठुकरा दिया और अपनी चिकित्सा की पढ़ाई फिर से शुरू कर दी। उन्होंने 1951 में उट्रेक्ट विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की और फिर संयुक्त राज्य अमेरिका में आकर न्यू मैक्सिको में अपना निजी क्लिनिक खोला। उन्होंने नासा के स्काईलैब प्रोजेक्ट पर काम किया और फिर अपनी पत्नी के साथ हवाई चले गए, जहाँ उन्होंने अपना चिकित्सा कार्य जारी रखा। वैन डेर स्टॉक का 1993 में वर्जीनिया में निधन हो गया।

युद्ध के बाद फ्रेडी ड्वोरक चेकोस्लोवाकिया लौट आए, लेकिन नए कम्युनिस्ट शासन के तहत उन्हें जीवन कठिन लगा। वे अपने कई साथी कैदियों के संपर्क में रहे, लेकिन अंततः अस्वस्थ हो गए। 1960 के दशक की शुरुआत में ब्राइट रोग से पीड़ित होकर उनका निधन हो गया।

युद्ध के बाद भी डेस प्लंकेट रॉयल एयर फ़ोर्स में रहे और पाकिस्तान के कराची में 10 स्क्वाड्रन में सेवा दी। भारत में लॉर्ड माउंटबेटन के पायलट बनने का प्रस्ताव ठुकराने के बाद, उन्हें 1947 में बॉम्बे में सेवामुक्त कर दिया गया। इसके बजाय, उन्होंने हिंदुस्तानी एयरक्राफ्ट कंपनी में विक्रेता के रूप में काम शुरू किया और फ्लाइंग बोट बेचीं, लेकिन जल्द ही उन्हें एहसास हुआ कि इस काम में कोई भविष्य नहीं है। फिर डेस बैरकपुर स्थित बंगाल फ्लाइंग क्लब में प्रशिक्षक के रूप में लौट आए और जनवरी 1949 में उन्होंने सर्वेक्षण उड़ान में अपना करियर शुरू किया। वे रोडेशिया (अब जिम्बाब्वे) में जाकर बस गए और 1972 तक उड़ान भरना जारी रखा। उनका निधन 2002 में हुआ।

युद्ध के बाद इवो टोंडर चेकोस्लोवाकिया की वायु सेना में लौट आए, लेकिन जब यह स्पष्ट हो गया कि कम्युनिस्ट देश पर कब्ज़ा कर लेंगे, तो उन्होंने सेवामुक्ति ले ली। उन्होंने और उनकी पत्नी ने मारिएनबाद के पास एक खेत खरीदा और शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करने लगे। लेकिन यह शांति कुछ ही वर्षों तक चली। 1948 में कम्युनिस्टों की चुनावी जीत के बाद, इवो और उनकी पत्नी ने अपने दो छोटे बच्चों के साथ चेकोस्लोवाकिया से भागने का फैसला किया और एक दोस्त को ऑस्ट्रियाई सीमा के पास एक स्थान तक छोड़ने के लिए राजी कर लिया। हालांकि, उनके पास न तो नक्शा था और न ही कंपास, इसलिए परिवार रात में रास्ता भटक गया

और सीमा रक्षकों ने उन्हें पकड़ लिया। टोंडर की पत्नी और बच्चों को जल्द ही रिहा कर दिया गया, लेकिन इवो को जेल में डाल दिया गया। कई अन्य असफल प्रयासों के बाद, टोंडर अंततः दिसंबर 1949 में वियना भाग निकले; उनकी पत्नी अक्टूबर 1950 में उनके पीछे आईं, लेकिन उनके बच्चों को जून 1951 तक चेकोस्लोवाकिया से नहीं निकाला जा सका। टोंडर परिवार अंततः इंग्लैंड में बस गया, जहाँ इवो ने कपड़ा व्यवसाय चलाया। उनका निधन 1995 में हुआ।

मुक्ति के बाद लेस ब्रोडरिक ने एक और वर्ष आरएएफ में बिताया और फिर अध्यापन कार्य शुरू किया। 1955 में वे दक्षिण अफ्रीका चले गए, जहाँ उन्होंने जोहान्सबर्ग और नेटाल के प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ाया। 2013 में उनका निधन हो गया, और उसके बाद 2015 में ऑस्ट्रेलियाई पॉल रॉयल का भी निधन हो गया। इसके साथ ही, डिक चर्चिल ग्रेट एस्केप के अंतिम जीवित व्यक्ति बन गए।

युद्ध के बाद लेन ट्रेंट ने परिवहन कमान में तैनाती का अनुरोध किया और इसी तैनाती के दौरान उन्हें पता चला कि उन्हें एम्स्टर्डम हमले के लिए विक्टोरिया क्रॉस से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान समारोह 12 अप्रैल, 1946 को बकिंघम पैलेस में हुआ था। ट्रेंट वायु सेना में विभिन्न पदों पर कार्यरत रहते हुए पदोन्नति पाते रहे और फिर उन्हें 214 स्क्वाड्रन की कमान सौंपी गई, जहाँ उन्होंने मारहम से वैलिएंट जेट उड़ाए। लेन ने अपना अंतिम ऑपरेशनल मिशन, अक्टूबर 1956 के स्वेज संकट के दौरान एक बमबारी हमला, वैलिएंट जेट में ही पूरा किया। अप्रैल 1958 में ट्रेंट मिल्डेनहॉल स्थित 3 ग्रुप मुख्यालय में प्रशिक्षण के लिए विंग कमांडर बने। उस समय उनके कमांडिंग ऑफिसर केनेथ क्रॉस थे, जो इयान के बड़े भाई थे। जून 1962 में लेन ट्रेंट वाशिंगटन स्थित ब्रिटिश दूतावास में बॉम्बर कमांड के प्रतिनिधि बने। वहाँ तीन साल बिताने के बाद उन्होंने सेवा छोड़ दी और अपने सेवानिवृत्ति का अधिकांश समय न्यूजीलैंड के मैथेसन बे में बिताया। ट्रेंट सेवानिवृत्ति के दौरान भी सक्रिय रहे, गोल्फ खेलते रहे और दुनिया भर में विक्टोरिया क्रॉस और बॉम्बर कमांड से संबंधित विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए यात्रा करते रहे। उनके परिवार और कई दोस्तों के लिए गहरे सदमे के बीच, मई 1986 में उनका अचानक निधन हो गया।

1949 में लेन स्कीइंग के लिए सेंट मोरित्ज़ गए थे। एक कुशल स्कीयर होने के नाते, वे अपने गाइड के साथ चैंटारेला ढलान पर उतरने ही वाले थे कि उनकी नज़र एक बोर्ड पर पड़ी, जो अंग्रेज़ी में लिखा एकमात्र बोर्ड था, जिस पर 'बुशेल रन' लिखा था। स्वाभाविक रूप से उत्सुक होकर उन्होंने अपने गाइड से इसके बारे में पूछा।

गाइड ने गर्व से कहना शुरू किया, ‘उस ढलान का नाम एक ऐसे व्यक्ति के नाम पर रखा गया है, जिसने इस खतरनाक ढलान पर सबसे कम समय में स्कीइंग का रिकॉर्ड बनाया था। वह बहुत बहादुर और कुशल स्कीयर थे, लेकिन युद्ध के दौरान जर्मनों ने उन्हें मार डाला। मुझे उन्हें अपना मित्र कहने का सौभाग्य प्राप्त था।’ उसने धीरे से कहा।

'अजीब संयोग है,' लेन ने कहा। 'मैं रोजर बुशेल के साथ जेल शिविर में था, और मुझे भी उन्हें दोस्त कहने का सौभाग्य प्राप्त था।'

गाइड ने अपनी स्की पोल जमाते हुए कहा, 'तो हम यहीं रुकेंगे, और तुम मुझे शिविर में मिले हमारे दोस्त रॉजर के बारे में जो कुछ भी याद है, सब बताओगे।' लेन ने खुशी-खुशी X संगठन और उसके भागने की कहानी गाइड को सुनाई, जो बड़ी दिलचस्पी से सुन रहा था। लेन के सुनाने के बाद, गाइड ने गर्मजोशी से उसका हाथ मिलाया।

उन्होंने कहा, 'मुझे यह कहानी सुनाने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। मैंने कई बार अपने पुराने दोस्त के बारे में सोचा है और अक्सर यह जानने की उत्सुकता रही है कि शिविर में उसका जीवन कैसा रहा होगा। अब हम चांटारेला पर स्कीइंग करते हुए उसके बारे में सोचेंगे। और शायद किसी दिन,' उन्होंने लेन को एक बड़ी मुस्कान देते हुए कहा, 'तुम भी इतने कुशल हो जाओगे कि खुद बुशेल रन पर स्कीइंग कर सको!'

सुझाई गई पठन सामग्री

एलन एंड्रयूज, अनुकरणीय न्याय (लंदन: हैरैप, 1976)
टेड बैरिस, द ग्रेट एस्केप: ए कैनेडियन स्टोरी (टोरंटो: थॉमस एलन, 2013)
पैट्रिक बार्थ्रोप, पैडी: विंग-कमांडर पैट्रिक बार्थ्रोप, डीएफसी, एएफसी का जीवन और समय (लंदन: हॉवर्ड बेकर, 1987)
पॉल ब्रिकहिल, द ग्रेट एस्केप (लंदन: फेबर एंड फेबर, 1951)
पॉल ब्रिकहिल और कॉनरैड नॉर्टन, एस्केप टू डेंजर (लंदन: फेबर एंड फेबर, 1948)
किंग्सले ब्राउन, बॉन्ड्स ऑफ वायर: ए मेमोइर (टोरंटो: कॉलिन्स, 1989)
टी.डी. कैलनन, फ्री ऐज़ अ रनिंग फॉक्स (लंदन: मैकडोनाल्ड एंड कंपनी, 1970)
टिम कैरोल, द डोजर: चर्चिल के चचेरे भाई और महान पलायन की असाधारण कहानी (लंदन: मेनस्ट्रीम पब्लिशिंग, 2012)
अल्बर्ट पी. क्लार्क, स्टालैग लुफ्ट III में युद्धबंदी के रूप में 33 महीने (गोल्डन, सीओ: फुलक्रम, 2004)
एडन क्रॉली, जर्मनी से पलायन: द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान आरएएफ के वायुसैनिकों द्वारा अपनाए गए पलायन के तरीके (लंदन: एचएमएसओ, 1985)
यूजीन एल. डैनियल, मेरे दुश्मनों की उपस्थिति में: द्वितीय विश्व युद्ध के जर्मन जेल शिविरों में एक अमेरिकी पादरी (निजी तौर पर प्रकाशित, 1985)
आर्थर ए. ड्यूरंड, स्टालैग लुफ्ट III: द सीक्रेट स्टोरी (लंदन: पैट्रिक स्टीफेंस, 1988)
डॉन एडी, गून इन द ब्लॉक (निजी तौर पर प्रकाशित, 1961)
लैरी फॉरेस्टर, फ्लाई फॉर योर लाइफ: द स्टोरी ऑफ विंग-कमांडर आर.आर. स्टैनफोर्ड-टक, डीएसओ, डीएफसी और दो बार (लंदन: फ्रेडरिक मुलर, 1956)
एंटोन गिल, द ग्रेट एस्केप: द फुल ड्रामैटिक स्टोरी विद कंट्रीब्यूशन्स फ्रॉम सर्वाइवर्स एंड देयर फैमिलीज (लंदन: रिव्यू, 2002)
लॉरेंस ग्रीन, ग्रेट वॉर टू ग्रेट एस्केप: द टू वॉर्स ऑफ फ्लाइट लेफ्टिनेंट बर्नार्ड 'पॉप' ग्रीन, एमसी (हिचिन: फाइटिंग हाई, 2011)
जॉन आर. हैरिस, सेवा और उत्तरजीविता: एक वायुसैनिक के संस्मरण (निजी तौर पर प्रकाशित, 2004)
जॉर्ज हार्श, लोनसम रोड (न्यूयॉर्क: डब्ल्यू.डब्ल्यू. नॉर्टन, 1971)
बारबरा हेनर, द टनल किंग: द टू स्टोरी ऑफ वैली फ्लॉडी एंड द ग्रेट एस्केप (टोरंटो: हार्पर ट्रॉफी, 2004)
बी.ए. जेम्स, मूनलेस नाइट: वन मैन्स स्ट्रगल फॉर फ्रीडम, 1940-45 (लंदन: विलियम किम्बर, 1983)
रॉबर्ट की, भीड़ कोई कंपनी नहीं है (लंदन: आयर एंड स्पॉटिसवुड, 1947)
मुर्दो इवेन मैकडोनाल्ड, पैड्रे मैक: द मैन फ्रॉम हैरिस (निजी तौर पर प्रकाशित, 1992)
डोनाल्ड मैकडोनेल, फ्रॉम डॉगफाइट टू डिप्लोमेसी: ए स्पिटफायर पायलट लॉग, 1932-1958 (बार्न्सले: पेन एंड स्वॉर्ड, 2005)
ग्विन मार्टिन, अप एंड अंडर (निजी तौर पर प्रकाशित, 1989)
वाल्टर मोरिसन, फ्लैक एंड फेरेट्स: वन वे टू कोल्डिट्ज़ (लंदन: सेंटिनल पब्लिशिंग,

1995)
कीथ सी. ओगिल्वी, द स्पिटफायर लक ऑफ स्कीट्स ओगिल्वी: फ्रॉम द बैटल ऑफ ब्रिटेन टू द ग्रेट एस्केप (टोरंटो: हेरिटेज हाउस, 2017)
साइमन पियर्सन, द ग्रेट एस्केपर: द लाइफ एंड डेथ ऑफ रोजर बुशेल। लव, बिट्रेयल, बिग एक्स एंड द ग्रेट एस्केप (लंदन: हॉडर एंड स्टॉटन, 2013)
ओलिवर फिलपॉट, स्टोलन जर्नी (लंदन: हॉडर एंड स्टॉटन, 1950)
रोलैंड प्लेट, जिंजर की महान पलायन (निजी तौर पर प्रकाशित, 2011)
जैक रे, कीवी स्पिटफायर ऐस: द्वितीय विश्व युद्ध की एक रोमांचक कहानी, जिसमें कार्रवाई, कैद और स्वतंत्रता शामिल है (लंदन: ग्रब स्ट्रीट, 2001)
साइमन रीड, ह्यूमन गेम: द टू स्टोरी ऑफ द 'ग्रेट एस्केप' मर्डर्स एंड द हंट फॉर द गेस्टापो गनमैन (न्यूयॉर्क: बर्कले कैलिबर, 2012)
केन रीस, लाइ इन द डार्क एंड लिसन: द रिमार्केबल एक्सप्लॉइट्स ऑफ ए डब्ल्यूडब्ल्यूआईआई बॉम्बर पायलट एंड ग्रेट एस्केपर (लंदन: ग्रब स्ट्रीट, 2004)
जेरी सेज, सेज: द मैन दे कॉल्ड 'डैगर' ऑफ द ओएसएस (वेन, पीए: टोबे पब्लिशिंग, 1985)
जेम्स सैंडर्स, साहसी उद्यमकर्ता: ग्रुप कैप्टन लियोनार्ड ट्रेंट, वीसी, डीएफसी (ऑकलैंड: हचिंसन, 1983)
सिडनी स्मिथ, विंग्स डे: वह व्यक्ति जिसने जर्मन कैद में आरएएफ की ऐतिहासिक लड़ाई का नेतृत्व किया (लंदन: कॉलिन्स, 1968)
डेलमार टी. स्पाइवे, युद्धबंदी यात्रा: द्वितीय विश्व युद्ध में सेंटर कंपाउंड, स्टालैग लुफ्ट III और गुप्त जर्मन शांति मिशन की यादें (निजी तौर पर प्रकाशित, 1984)
मार्क एच. स्टीवंस, पलायन, बचाव और बदला: एक जर्मन-यहूदी आरएएफ पायलट की सच्ची कहानी जिसने बर्लिन पर बमबारी की और युद्धबंदी बन गया (बार्न्सले: पेन एंड स्वॉर्ड, 2009)
जॉर्ज स्वेनोर, इट्स ऑल पेंशनेबल टाइम: रॉयल कैनेडियन एयर फोर्स में 25 साल (निजी तौर पर प्रकाशित, 1981)
निक थॉमस, केनेथ 'हॉकआई' ली: बैटल ऑफ ब्रिटेन एंड डेजर्ट एयर फोर्स फाइटर ऐस (बार्न्सले: पेन एंड स्वॉर्ड, 2011)
टायलर ट्रैफर्ड, ऑलमोस्ट अ ग्रेट एस्केप: अ फाउंड स्टोरी (फ्रेडरिकटन, एनबी: गूज लेन, 2013)
बॉब वैंडरस्टॉक, ऑरेंज के युद्ध पायलट (मिसौला, एमटी: पिक्टोरियल हिस्ट्रीज़, 1987)
मर्लिन जेफर्स वाल्टन और माइकल सी. एबरहार्ट (संस्करण), फ्रॉम कमांडेंट टू कैप्टिव: द मेमॉयर्स ऑफ स्टैलाग लूफ़्ट III कमांडेंट कर्नल फ्रेडरिक विल्हेम वॉन लिंडेनर जेनेंट वॉन वाइल्डौ (निजी तौर पर प्रकाशित, 2015)
जेफ्री विलैट, बॉम्ब्स एंड बार्बेड वायर: माई वॉर इन द आरएएफ एंड स्टालैग लुफ्ट III (टनब्रिज वेल्स: पैराप्रेस, 1995)
लुईस विलियम्स, ए टू स्टोरी ऑफ द ग्रेट एस्केप: ए यंग ऑस्ट्रेलियन इन द मोस्ट ऑडेशियस ब्रेकआउट ऑफ WWII (सिडनी: एलन एंड अनविन, 2015)

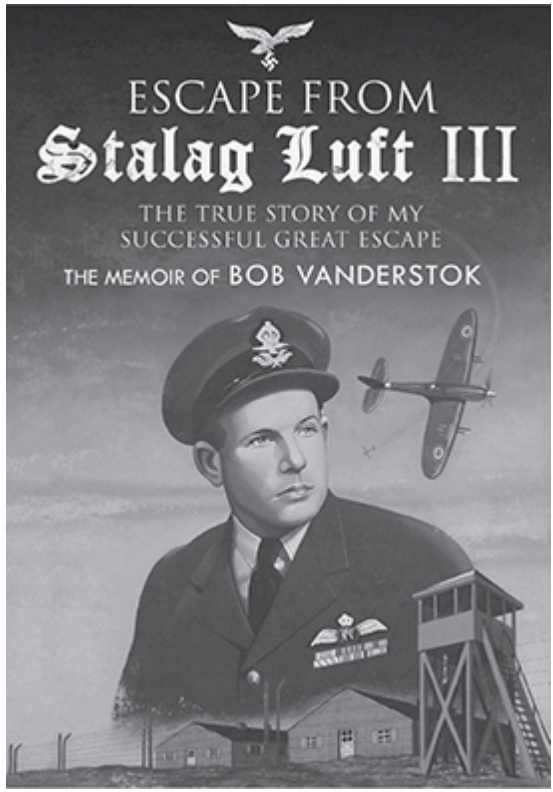

'जल्दी से मैं सतह पर चढ़ गया और तुरंत रस्सी मिल गई... मुझे कोई संकेत नहीं मिला, इसलिए अभी सुरक्षित नहीं था। फिर मुझे तीन अलग-अलग झटके महसूस हुए और मैंने धीरे-धीरे अपना सिर ऊपर उठाया... निकटतम "गूनबॉक्स" कम से कम दो सौ फीट दूर था; लेकिन, वास्तव में, मैं जंगल के किनारे से बीस फीट दूर था।'

24 मार्च 1944 की रात को, ब्रैम (बॉब) वैंडरस्टॉक उन 76 लोगों में से 18वें नंबर पर थे, जो स्टालैग लुफ्ट III की कांटेदार तार की बाड़ को पार करने में कामयाब हुए थे। यह कहानी 1963 की मशहूर फिल्म 'द ग्रेट एस्केप' में दर्शाए गए वास्तविक 'ग्रेट एस्केप' का विस्तृत वर्णन करती है।

इस संस्मरण में वेंडरस्टॉक के अविश्वसनीय कारनामों का वर्णन है, जो स्टालैग लुफ्ट III में कैद होने से पहले ही शुरू हो गए थे। डच वायु सेना में पायलट के रूप में उन्होंने नीदरलैंड पर कब्जे को देखा और कई असफल प्रयासों के बाद ब्रिटेन भागने में सफल रहे, जहां वे आरएएफ में शामिल हो गए और स्पिटफायर पायलट बन गए।

अप्रैल 1942 में फ्रांस के ऊपर विमान गिराए जाने के बाद, उन्हें पकड़ लिया गया और स्टालैग लुफ्ट III में भेज दिया गया। उन्होंने असाधारण विस्तार से भागने के विभिन्न प्रयासों का वर्णन किया है, जिसका अंत मार्च में प्रसिद्ध पलायन में हुआ।

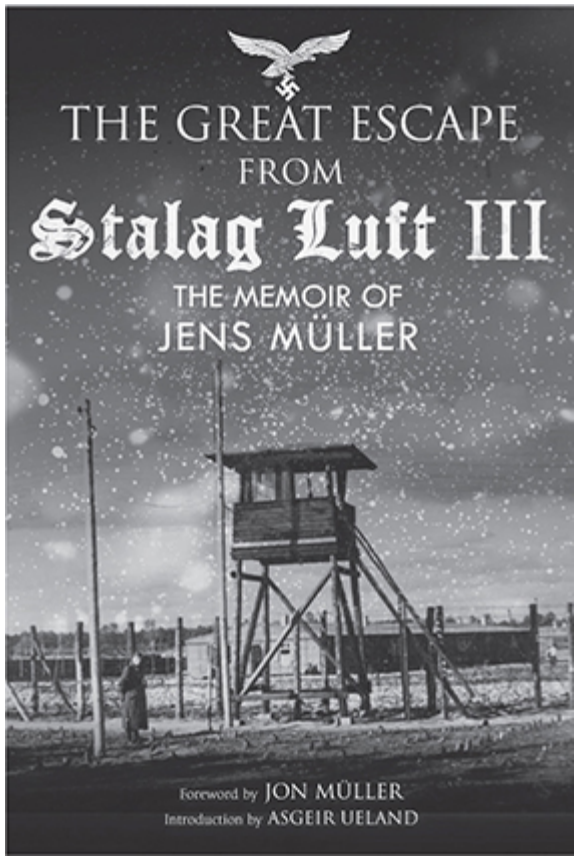

'सुरंग पार करने में मुझे तीन मिनट लगे। ज़मीन के ऊपर मैं रस्सी पकड़कर कई फीट तक रेंगता रहा: रस्सी एक पेड़ से बंधी थी। बर्न्सलैंड ने एक आम नागरिक का सूट पहना हुआ था जिसे उसने रॉयल मरीन की वर्दी से खुद बनाया था, साथ ही एक आरएएफ ओवरकोट भी पहना था जिसके बटनों पर भूरे रंग का चमड़ा सिला हुआ था। एक काली आरएएफ टाई, टोपी नहीं। उसके पास एक छोटा सूटकेस था जो नॉर्वे से भेजा गया था। उसमें नॉर्वेजियन टूथपेस्ट और साबुन, सैंडविच और 163 रीचमार्क थे जो उसे एस्केप कमेटी ने दिए थे।'

जेन्स मुलर उन तीन लोगों में से एक थे जो मार्च 1944 में स्टालैग लुफ्ट III से सफलतापूर्वक भाग निकले थे - यही घटना बाद में प्रसिद्ध फिल्म 'द ग्रेट एस्केप' का आधार बनी।

अपने एक जीवंत और जानकारीपूर्ण संस्मरण में, वह शिविर में जीवन कैसा था, भागने की योजना कैसे बनाई गई और उसे कैसे अंजाम दिया गया, इसका विस्तृत वर्णन करते हैं और स्कॉटलैंड में आरएएफ ल्यूचर्स बेस तक पहुंचने में अपनी व्यक्तिगत सफलता और भागने की कहानी बताते हैं।

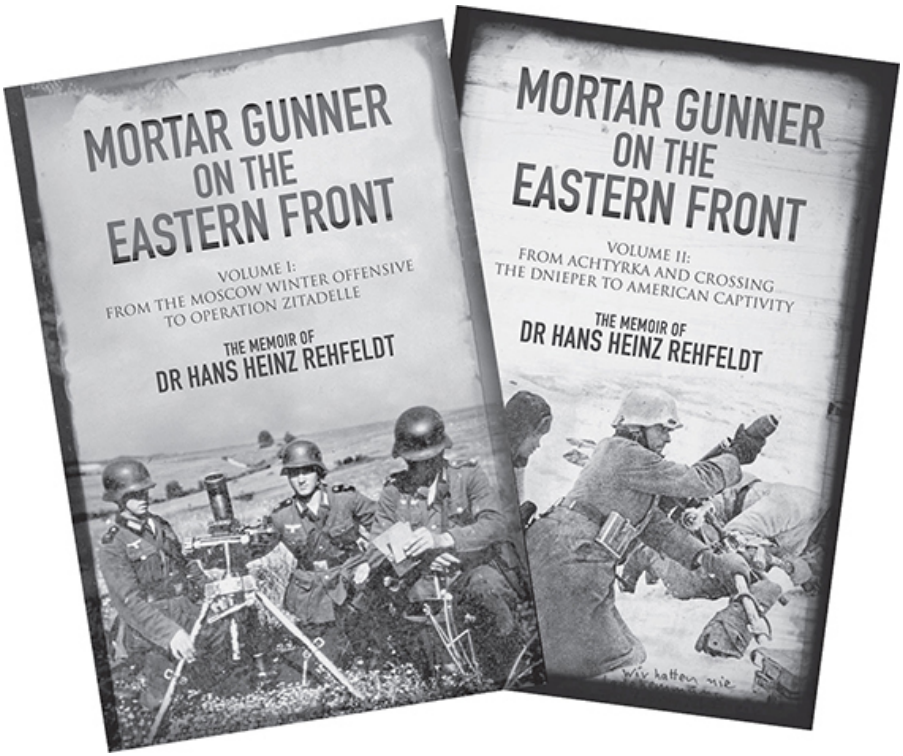

'वह शापित रूसी एमजी अभी भी हमारे किनारे पर गोलियां चला रही थी... मैं गांव से लगभग 500 मीटर दूर एक खलिहान का निरीक्षण कर रहा था, तभी संयोग से मुझे एक रूसी स्टील का हेलमेट और तोप की नली से निकलती आग दिखाई दी। मैंने अपनी इस खोज के बारे में तोपखाने के चौकीदार को बताया। उसने तुरंत नए आदेश दिए... अगले गोले ने खलिहान को उड़ा दिया, तख्ते और बीम हवा में उड़ने लगे। सीधा निशाना!'

रेहफेल्ड ने ग्रॉसड्यूशलैंड डिवीजन में भारी मोर्टार और भारी मशीनगन का प्रशिक्षण प्राप्त किया था। महज 18 वर्ष की आयु में ही वे 1941 में पूर्वी मोर्चे पर थे और मॉस्को के दक्षिण में स्थित तुला शहर के लिए लड़ रहे थे। इन डायरियों में वर्णित कष्टों का वर्णन सजीव और भयावह है, क्योंकि वे जमा देने वाली ठंड में, -52 डिग्री सेल्सियस के न्यूनतम तापमान पर, बिना शीतकालीन वर्दी के, बर्फ में ठंड से कांपते हुए और बिना किसी छलावरण के लड़ रहे थे।

240 से अधिक तस्वीरों और लेखक द्वारा हाथ से बनाए गए नक्शों से सजी यह आकर्षक कहानी, एक ऐसे व्यक्ति की है जो मौत के मुंह से बार-बार वापस लौटता रहा, और यह लेखक के अदम्य साहस का प्रमाण है।

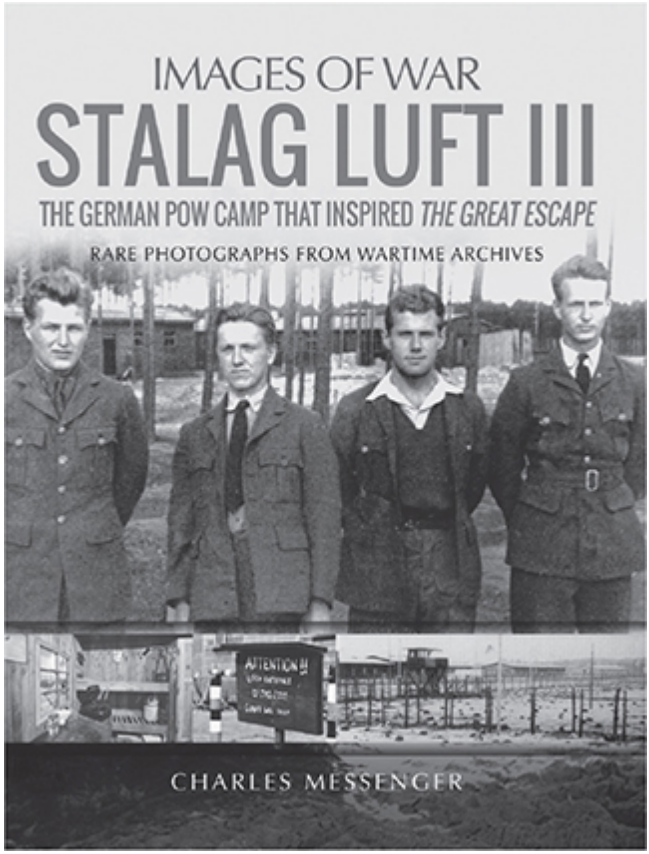

1942 की शुरुआत में, थर्ड रीच ने लोअर सिलेसिया में पकड़े गए मित्र देशों के वायुसैनिकों के लिए एक अधिकतम सुरक्षा वाला युद्धबंदी शिविर खोला। स्टालैग लुफ्ट III कहलाने वाला यह शिविर जल्द ही कुछ सबसे चतुर भागने वालों का घर बन गया।

स्क्वाड्रन लीडर रोजर बुशेल, जिनका कोडनेम 'बिग एक्स' था, ने अपने गार्डों की जानकारी के बिना सुरंग के रास्ते सैकड़ों युद्धबंदियों को चुपके से निकालने की योजना बनाई। इस असाधारण पलायन को हॉलीवुड की मशहूर फिल्म 'द ग्रेट एस्केप' में अमर कर दिया गया, जिसमें इन सैनिकों की बहादुरी की उचित सराहना की गई।

चार्ल्स मैसेंजर ने रॉयल टैंक रेजिमेंट में बीस वर्षों तक सेवा की, जिसके बाद वे सेवानिवृत्त होकर सैन्य इतिहासकार और रक्षा विश्लेषक बन गए। उन्होंने लगभग चालीस पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें से अधिकांश बीसवीं शताब्दी के युद्ध पर आधारित हैं।

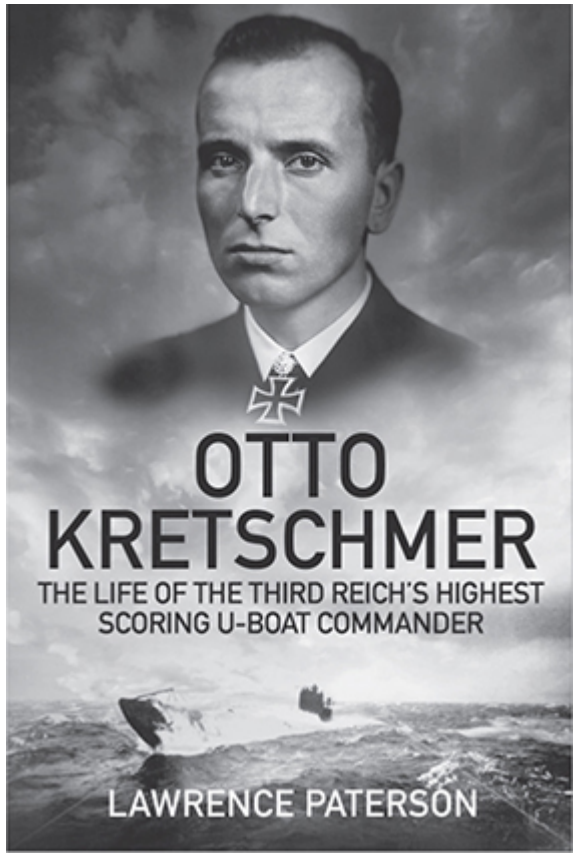

ओटो क्रेट्स्मर ने सितंबर 1939 से मार्च 1941 तक ही युद्ध में भाग लिया, लेकिन वह जर्मनी के सबसे सफल यू-बोट कमांडर थे, जिन्होंने कुल 274,333 टन के 47 जहाजों को डुबोया।

उनका उपनाम 'साइलेंट ओटो' उनकी बिना पता चले रहने की क्षमता और डोनिट्ज़ द्वारा अपेक्षित नियमित रेडियो रिपोर्ट प्रदान करने की उनकी अनिच्छा को दर्शाता था: उन्होंने अनुमान लगाया था कि मित्र देशों ने जर्मन कोड को तोड़ दिया था।

बोमनविले युद्धबंदी शिविर में उन्होंने अक्टूबर 1942 में तीन दिनों तक चले 'बोमनविले युद्ध' में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बंदीगृह के पीछे उनके कारनामों से प्रेरित होकर 1970 में फिल्म 'द मैकेंज़ी ब्रेक' बनाई गई। युद्ध के बाद, बुंडेसमरीन की स्थापना के अवसर पर उन्होंने स्वयंसेवकों के रूप में सेवा देने का आह्वान स्वीकार किया।

यह प्रामाणिक कृति उनके व्यक्तिगत जीवन और उनके प्रारंभिक दिनों की राजनीतिक पृष्ठभूमि का विस्तृत वर्णन करती है।

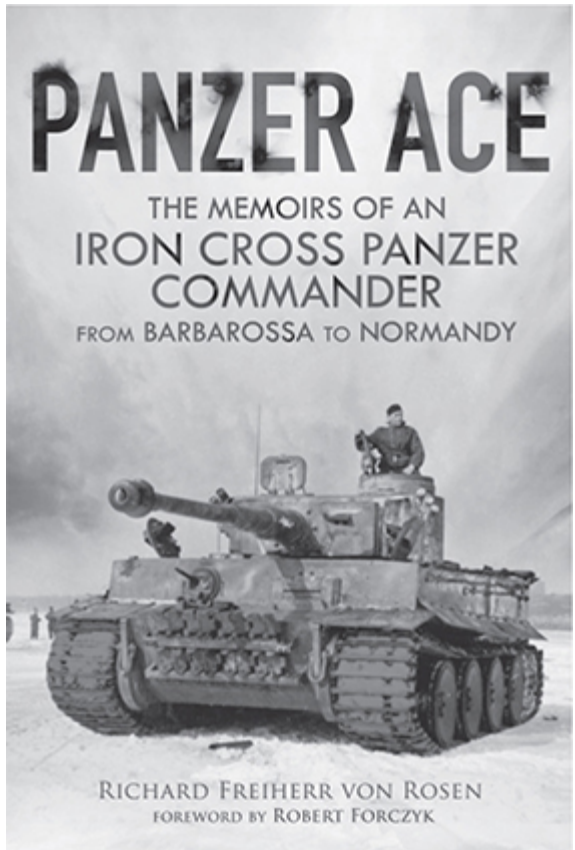

रिचर्ड फ्रीहेर वॉन रोसेन एक उच्च पदक प्राप्त वेहरमाक्ट सैनिक और उत्कृष्ट पैंजर कमांडर थे। उनके संस्मरण समकालीन तस्वीरों से भरपूर हैं, जिनमें द्वितीय विश्व युद्ध के प्रमुख संघर्षों की तस्वीरें भी शामिल हैं।

बारबारोसा के दौरान एक Pz.Mk.III पर गनलेयर के रूप में सेवा करने के बाद, उन्होंने कुर्स्क में टाइगर्स की एक कंपनी का नेतृत्व किया। बाद में उन्होंने नॉर्मंडी में किंग टाइगर पैंजर की एक कंपनी का नेतृत्व किया और 1944 के अंत में हंगरी में रूसियों के खिलाफ एक युद्ध समूह (12 किंग टाइगर्स और एक एंटी-एयरक्राफ्ट कंपनी) की कमान संभाली, उस समय वे जूनियर लेफ्टिनेंट थे, बाद में सीनियर लेफ्टिनेंट बन गए (नवंबर 1944 से उनका अंतिम पद यही था)।

लेखक की स्मृति और सूक्ष्म विवरणों पर गहरी नज़र है। उनका विवरण सरल भाषा में लिखा गया है, तकनीकी नहीं है, और द्वितीय विश्व युद्ध में जर्मन पैंजर सेना के संचालन के बारे में जानकारी में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

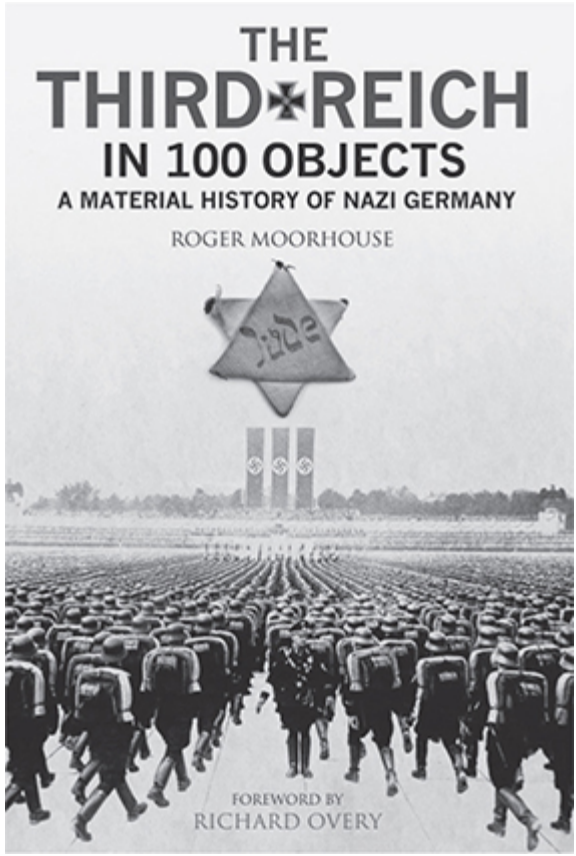

हिटलर का तृतीय रैह आज भी अनेक लेखों, पुस्तकों और फिल्मों का केंद्र बिंदु है: बीसवीं शताब्दी के किसी भी शासन ने इतनी रुचि या इतने व्यापक साहित्य को जन्म नहीं दिया है। यह तृतीय रैह का एक सुलभ, आकर्षक, कभी-कभी चौंकाने वाला और अक्सर रहस्योद्घाटन करने वाला मार्गदर्शक है, जिसे नाज़ी जर्मनी के विश्व के अग्रणी इतिहासकारों में से एक ने संकलित और प्रस्तुत किया है।

इन तस्वीरों में दस्तावेज़ों और पोस्टकार्ड से लेकर हथियार और व्यक्तिगत सामान तक शामिल हैं, जिनमें परविटिन, हिटलर की मर्सिडीज, हिटलर की ग्रूमिंग किट, मेसेरस्मिट 262, लूगर पिस्तौल, टाइगर टैंक, ईवा ब्राउन का लिपस्टिक केस, रुडोल्फ हेस की अंडरपैंट और, निश्चित रूप से, स्वस्तिका और मीन कम्फ शामिल हैं।

रोजर मूरहाउस तृतीय रैह के इतिहासकार हैं। वे प्रशंसित पुस्तकों 'बर्लिन एट वॉर', 'किलिंग हिटलर' और 'द डेविल्स अलायंस' के लेखक हैं और उनकी रचनाएँ बीस से अधिक भाषाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं।